द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल

हारुकी मुराकामी

हारुकी मुराकामी की कृति
द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल की प्रशंसा
"द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल के साथ, मुराकामी अपने शानदार, काल्पनिक पंख फैलाते हैं और उड़ान भरते हैं।"
— फिलाडेल्फिया इन्क्वायरर
"मोहक... एक उस्ताद द्वारा रचित भूलभुलैया, जो एक ही समय में परिचित और अविश्वसनीय रूप से विचित्र है।"
— सैन फ्रांसिस्को क्रॉनिकल
"एक महाकाव्य... जो ब्रांकुसी द्वारा बनाए गए पक्षी की तरह ही तराशा हुआ और अटल है।"
— न्यूयॉर्क पत्रिका
"मंत्रमुग्ध कर देने वाला, मौलिक... आकर्षक, साहसी, रहस्यमय और अत्यंत सार्थक।"
— बाल्टीमोर सन
"द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल में रहस्य का एक मोहक एहसास व्याप्त है जो हमें दर्द और स्मृति के मायाजाल में अप्रतिरोध्य रूप से और लगातार गहराई तक खींचता है... सम्मोहक [और] विश्वसनीय।"
— लॉस एंजिल्स टाइम्स बुक रिव्यू
"जापान के अतीत के दफन रहस्यों की अथक खोज करता है... नवीनतम बोलचाल की भाषा में शानदार ढंग से अनुवादित।"
— पिको अय्यर, टाइम
“एक साहसिक और उदार पुस्तक… इसमें वर्णित घटनाएँ चाहे कितनी भी काल्पनिक क्यों न हों, इसकी सीधी-सादी कहानी कहने की शैली कभी भी अपनी प्रेरक शक्ति नहीं खोती।”
— न्यूयॉर्क टाइम्स बुक रिव्यू
“बेहद आकर्षक।”

— लॉस एंजिल्स टाइम्स
"एक ऐसी कल्पना जिसे कोई भी अमेरिकी उपन्यासकार गढ़ नहीं सकता था... [मुरकामी] का उद्देश्य केवल बेचैनी की एक झनझनाहट पैदा करना नहीं है, बल्कि एक गहरी, अधिक महत्वपूर्ण बेचैनी पैदा करना है।"
— न्यूज़डे
“एक उत्कृष्ट कृति… मंचूरिया से माल्टा तक फैले कैनवास पर, और साइबरस्पेस में विचित्र पक्षियों की आवाजों से लेकर स्लेज की घंटियों तक के ध्वनि प्रभावों के साथ, यह व्यक्तिगत और राष्ट्रीय नियतियों के आपस में गुंथे होने की एक पूर्ण विकसित, मनोरंजक कहानी है। इसे पार करना मुश्किल होगा।”
— किर्कस रिव्यूज़
“एक अवास्तविक, विस्तृत नाटक… जो मुराकामी की अब तक की सबसे महत्वाकांक्षी कृति है।”
— पब्लिशर्स वीकली
"महत्वाकांक्षी... मुरकामी के उत्कृष्ट नियंत्रण और मानव स्वभाव के उनके जटिल, परेशान करने वाले दृष्टिकोण के कारण 'द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल' ऊंचाइयों को छूती है।"
— टाइम आउट
“[द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल] में सब कुछ एक दूसरे से जटिल रूप से जुड़ा हुआ है… यह हमारे समय में, पूरे इतिहास में, व्यक्तियों के भीतर गूंजता है।”
— बोस्टन ग्लोब

द
विंड-अप
बर्ड
क्रॉनिकल

हारुकी मुराकामी

जापानी से जे रुबिन द्वारा अनुवादित

विंटेज इंटरनेशनल
पुरानी किताबें
रैंडम हाउस, इंक. का एक प्रभाग
न्यूयॉर्क

पुस्तक एक **:** चोर मैगपाई **(**जून और जुलाई **1984)**

मंगलवार का विंड-अप बर्ड

•

छह उंगलियाँ और चार स्तन
जब फोन की घंटी बजी, मैं रसोई में थी, एक बर्तन में स्पेगेटी उबाल रही थी और रॉसिनी के 'द थीविंग मैगपाई' के ओवरचर के एफएम प्रसारण के साथ सीटी बजा रही थी, जो पास्ता पकाने के लिए एकदम सही संगीत है।
मैं फोन को नज़रअंदाज़ करना चाहता था, न केवल इसलिए कि स्पेगेटी लगभग पक चुकी थी, बल्कि इसलिए भी कि क्लाउडियो अब्बाडो लंदन सिम्फनी को उसके संगीतमय चरम पर ले जा रहे थे। लेकिन अंत में, मुझे हार माननी पड़ी। हो सकता है कोई नौकरी की खबर लेकर आया हो। मैंने आँच धीमी की, लिविंग रूम में गया और रिसीवर उठाया।
दूसरी तरफ से एक महिला ने कहा, "दस मिनट दीजिए, कृपया।"
मैं लोगों की आवाजों को पहचानने में माहिर हूं, लेकिन यह आवाज मुझे जानी-पहचानी नहीं लगी।
"माफ़ कीजिए? आप किससे बात करना चाहते थे?"
“बेशक, आपके लिए। दस मिनट, कृपया। एक-दूसरे को समझने के लिए बस इतना ही समय चाहिए।” उसकी आवाज़ धीमी और कोमल थी, लेकिन बाकी सब कुछ सामान्य सा था।
"एक दूसरे को समझना?"
एक दूसरे की भावनाओं को समझना।
मैंने झुककर रसोई के दरवाजे से अंदर झाँका। स्पेगेटी का बर्तन बढ़िया भाप छोड़ रहा था, और क्लाउडियो अब्बाडो अभी भी 'द थीविंग मैगपाई' का संचालन कर रहे थे।

"माफ़ कीजिए, लेकिन आपने मुझे स्पेगेटी बनाते समय बीच में ही पकड़ लिया। क्या आप बाद में कॉल कर सकते हैं?"
“स्पैगेटी!? सुबह साढ़े दस बजे तुम स्पैगेटी क्यों बना रहे हो?” मैंने कहा, "इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है। मैं खुद तय करता हूँ कि मैं क्या खाऊँगा और कब खाऊँगा।"
“हाँ, बिल्कुल। मैं बाद में कॉल करूँगी,” उसने कहा, उसकी आवाज़ अब सपाट और भावहीन थी। मनोदशा में थोड़ा सा बदलाव भी किसी व्यक्ति की आवाज़ के लहजे में अद्भुत परिवर्तन ला सकता है। फोन रखने से पहले ही मैंने कहा, "एक मिनट रुकिए। अगर यह कोई नया सेल्स हथकंडा है, तो भूल जाइए। मैं बेरोजगार हूँ। मुझे अभी कुछ भी खरीदने की ज़रूरत नहीं है।"
“चिंता मत करो। मुझे पता है।”
“तुम्हें पता है? तुम्हें क्या पता है?”
“तुम बेरोजगार हो। मुझे पता है। तो जाओ और अपनी प्यारी स्पेगेटी बनाओ।”
“आखिर कौन है भला—”
उसने कनेक्शन काट दिया।
अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का कोई ज़रिया न मिलने पर, मैं अपने हाथ में पकड़े फ़ोन को तब तक घूरती रही जब तक मुझे स्पेगेटी याद नहीं आ गई। रसोई में वापस आकर, मैंने गैस बंद कर दी और बर्तन में बची हुई स्पेगेटी को छलनी में डाल दिया। फ़ोन कॉल की वजह से स्पेगेटी थोड़ी नरम हो गई थी, लेकिन पूरी तरह से पक तो नहीं गई थी। मैंने खाना शुरू किया और सोचने लगी।
एक-दूसरे को समझना? दस मिनट में एक-दूसरे की भावनाओं को समझना? वो क्या कह रही थी? शायद ये कोई मज़ाकिया कॉल हो। या फिर कोई नई सेल्स पिच। खैर, इसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं था।

दोपहर के भोजन के बाद, मैं लिविंग रूम के सोफे पर बैठकर अपनी लाइब्रेरी की किताब पढ़ने लगी, बीच-बीच में फोन पर नज़र डालती रही। दस मिनट में हम एक-दूसरे के बारे में क्या समझ सकते थे? दस मिनट में दो लोग एक-दूसरे के बारे में क्या समझ सकते हैं? सोचने पर पता चलता है कि वह उन दस मिनटों को लेकर बहुत आश्वस्त लग रही थी: यही बात उसने सबसे पहले कही थी। मानो नौ मिनट बहुत कम हों या ग्यारह मिनट बहुत ज़्यादा। जैसे स्पेगेटी को अल डेंटे पकाना। मैं अब और पढ़ नहीं पा रही थी। मैंने सोचा कि क्यों न शर्ट इस्त्री कर लूँ। जब भी मैं परेशान होती हूँ, मैं यही करती हूँ। ये मेरी पुरानी आदत है। मैं काम को बारह चरणों में बाँटती हूँ, कॉलर (बाहरी सतह) से शुरू करके बाएँ हाथ की कफ़ पर खत्म करती हूँ। क्रम हमेशा एक जैसा रहता है, और मैं हर चरण को गिनकर पूरा करती हूँ। नहीं तो, इस्त्री ठीक से नहीं हो पाएगी।
मैंने तीन कमीज़ें इस्त्री कीं, उनमें सिलवटें नहीं देखीं और उन्हें हैंगर पर टांग दिया। इस्त्री बंद करके उसे और इस्त्री बोर्ड को हॉल की अलमारी में रखने के बाद, मेरा मन काफी शांत हो गया।
मैं पानी का गिलास लेने रसोई की ओर जा ही रही थी कि फोन फिर बज उठा। मैंने एक पल के लिए सोचा, लेकिन फिर फोन उठा लिया। अगर वही महिला होती, तो मैं उसे बता देती कि मैं कपड़े इस्त्री कर रही हूँ और फोन काट देती।
इस बार कुमिको की बारी थी। दीवार घड़ी में ग्यारह बजकर साढ़े ग्यारह बजे थे। उसने पूछा, "कैसे हो?"
“ठीक है,” मैंने अपनी पत्नी की आवाज सुनकर राहत महसूस करते हुए कहा।
"आप क्या कर रहे हो?"

“अभी-अभी इस्त्री का काम खत्म किया।”
“क्या हुआ?” उसकी आवाज़ में तनाव झलक रहा था। वह जानती थी कि मेरे लिए इस्त्री करने का क्या मतलब है।
“कुछ नहीं। मैं बस कुछ कमीज़ें इस्त्री कर रहा था।” मैं बैठ गया और रिसीवर को अपने बाएं हाथ से दाएं हाथ में ले लिया। “क्या बात है?”
“क्या तुम कविता लिख सकते हो?” उसने पूछा।
“कविता!?” कविता? क्या उसका मतलब… कविता ही था?
“मैं लड़कियों की कहानियों की पत्रिका के प्रकाशक को जानती हूँ। उन्हें पाठकों द्वारा भेजी गई कविताओं को चुनने और संशोधित करने के लिए किसी की तलाश है। साथ ही, वे चाहते हैं कि वह व्यक्ति हर महीने मुखपृष्ठ के लिए एक छोटी कविता लिखे। आसान काम के हिसाब से वेतन बुरा नहीं है। बेशक, यह अंशकालिक काम है। लेकिन अगर वह व्यक्ति—”
“आसान काम?” मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा। “अरे, एक मिनट रुको। मैं कानून में नौकरी ढूंढ रहा हूँ, कविता में नहीं।” मुझे लगा था कि तुमने हाई स्कूल में कुछ लेखन का काम किया था। “हाँ, ज़रूर, स्कूल के अखबार के लिए: फुटबॉल चैंपियनशिप में कौन सी टीम जीती या भौतिकी के शिक्षक सीढ़ियों से कैसे गिर गए और अस्पताल में भर्ती हो गए—इस तरह की चीज़ें। कविता नहीं। मैं कविता नहीं लिख सकता।”
“ज़रूर, लेकिन मैं महान कविता की बात नहीं कर रहा, बस हाई स्कूल की लड़कियों के लिए कुछ चाहिए। इसे साहित्यिक इतिहास में जगह बनाने की ज़रूरत नहीं है। आप इसे आँखें बंद करके भी कर सकते हैं। समझ में नहीं आया?”

“देखिए, मैं कविता लिख ही नहीं सकता—चाहे आंखें खुली हों या बंद। मैंने कभी कविता नहीं लिखी है, और मैं अब शुरू भी नहीं करने वाला।”
“ठीक है,” कुमिको ने थोड़ी निराशा के साथ कहा। “लेकिन कानूनी काम मिलना मुश्किल है।”
“मुझे पता है। इसीलिए मैंने इतने सारे लोगों से संपर्क किया है। मुझे इस हफ्ते कुछ सुनने को मिल जाना चाहिए। अगर बात नहीं बनी, तो मैं कुछ और करने के बारे में सोचूंगा।”
अच्छा, तो बस बात यहीं खत्म होती है। वैसे, आज क्या दिन है? सप्ताह का कौन सा दिन है?
मैंने एक पल सोचा और फिर कहा, "मंगलवार।"
"तो क्या आप बैंक जाकर पेट्रोल और टेलीफोन का बिल चुका देंगे?" “ज़रूर। मैं वैसे भी रात के खाने के लिए खरीदारी करने ही जा रही थी।”
आप क्या बनाने की योजना बना रहे हैं?
मुझे अभी पता नहीं है। मैं खरीदारी करते समय फैसला कर लूंगी। वह थोड़ी देर रुकी। फिर उसने नए अंदाज़ में गंभीरता से कहा, "अगर इस बारे में सोचें तो, नौकरी ढूंढने में कोई खास जल्दी नहीं है।" यह सुनकर मैं चौंक गया। मैंने पूछा, "ऐसा क्यों?" क्या दुनिया भर की महिलाओं ने मुझे फोन पर चौंकाने के लिए आज का ही दिन चुना था? "मेरी बेरोजगारी भत्ता कभी न कभी खत्म हो ही जाएगा। मैं हमेशा के लिए ऐसे ही नहीं रह सकता।"
“हाँ, ठीक है, लेकिन मेरी बढ़ी हुई तनख्वाह, कभी-कभार मिलने वाले अतिरिक्त काम और हमारी बचत से, अगर हम सावधानी बरतें तो हमारा गुजारा ठीक-ठाक चल जाएगा। कोई खास आपात स्थिति नहीं है। क्या

तुम्हें इस तरह घर पर रहना और घर के काम करना पसंद नहीं है? मेरा मतलब है, क्या यह जीवन तुम्हारे लिए इतना बुरा है?”
मैंने ईमानदारी से जवाब दिया, "मुझे नहीं पता।" मुझे सचमुच नहीं पता था।
“ठीक है, आराम से सोच-विचार कर लो,” उसने कहा। “वैसे, क्या बिल्ली वापस आ गई है?”
बिल्ली। मैंने सुबह से बिल्ली के बारे में सोचा ही नहीं था। "नहीं," मैंने कहा। "अभी नहीं।"
“क्या आप कृपया आस-पड़ोस में एक नज़र डाल सकते हैं? यह एक सप्ताह से अधिक समय से गायब है।”
मैंने एक अस्पष्ट सी आवाज़ निकाली और रिसीवर को वापस अपने बाएं हाथ में ले लिया। उसने आगे कहा:
मुझे लगभग पूरा यकीन है कि वह गली के दूसरे छोर पर स्थित खाली घर के आसपास घूम रहा है। वही घर जिसके आंगन में चिड़िया की मूर्ति है। मैंने उसे वहां कई बार देखा है।
“गली? तुम कब से गली में जाने लगे? तुमने तो कभी कुछ कहा ही नहीं

— ”

“ओह! मुझे जाना पड़ेगा। बहुत काम है। बिल्ली को मत भूलना।” उसने फोन काट दिया। मैंने खुद को दोबारा रिसीवर को घूरते हुए पाया। फिर मैंने उसे उसके स्टैंड पर रख दिया।
मुझे आश्चर्य हुआ कि कुमिको उस गली में क्यों आई थी। हमारे घर से वहाँ जाने के लिए ईंटों की दीवार फांदनी पड़ती थी। और एक बार इतनी मेहनत कर लेने के बाद, वहाँ रहने का कोई मतलब नहीं था।
मैं पानी का गिलास लेने रसोई में गई, फिर बिल्ली के खाने का बर्तन देखने के लिए बरामदे में गई। सार्डिन मछलियों का ढेर पिछली रात से वैसा ही पड़ा था। नहीं, बिल्ली वापस नहीं आई थी।

मैं वहीं खड़ी होकर अपने छोटे से बगीचे को देखती रही, जिसमें गर्मियों की शुरुआत की धूप छनकर आ रही थी। ऐसा नहीं था कि हमारा बगीचा ऐसा हो जिसे देखकर मन को शांति मिले। सूरज दिन के बहुत थोड़े समय के लिए ही वहाँ पहुँच पाता था, इसलिए ज़मीन हमेशा काली और नम रहती थी, और बगीचे में बस एक कोने में कुछ फीके से हाइड्रेंजिया के फूल थे—और मुझे हाइड्रेंजिया पसंद नहीं हैं। पास ही पेड़ों का एक छोटा सा झुंड था, और वहाँ से एक चिड़िया की मशीनी आवाज़ सुनाई देती थी, मानो वह कोई स्प्रिंग घुमा रही हो। हम उसे चाबी भरने वाली चिड़िया कहते थे। कुमिको ने उसे यह नाम दिया था। हमें नहीं पता था कि उसका असली नाम क्या है या वह दिखती कैसी है, लेकिन इससे उस चाबी भरने वाली चिड़िया को कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। हर रोज यह हमारे पड़ोस के पेड़ों के झुंड में आता और हमारी शांत छोटी सी दुनिया में वसंत ऋतु की ताजगी भर देता।
तो अब मुझे बिल्ली ढूंढने जाना ही था। मुझे बिल्लियाँ हमेशा से पसंद थीं। और मुझे यह खास बिल्ली भी बहुत पसंद थी। लेकिन बिल्लियों का अपना ही तरीका होता है। वे बेवकूफ नहीं होतीं। अगर कोई बिल्ली आपके आस-पास न रहे, तो इसका मतलब है कि उसने कहीं और जाने का फैसला कर लिया है। अगर वह थक जाए या भूखी हो जाए, तो वापस आ जाएगी। लेकिन आखिर में, कुमिको को खुश रखने के लिए, मुझे अपनी बिल्ली को ढूंढना ही पड़ेगा। मेरे पास करने के लिए और कुछ नहीं था।

•

मैंने अप्रैल की शुरुआत में अपनी नौकरी छोड़ दी थी—वह कानून की नौकरी जो मैं स्नातक होने के बाद से कर रहा था। ऐसा नहीं था कि मैंने कोई खास वजह से नौकरी छोड़ी थी। मुझे काम नापसंद नहीं था।

यह रोमांचक तो नहीं था, लेकिन वेतन ठीक-ठाक था और दफ्तर का माहौल दोस्ताना था।
सीधे शब्दों में कहूँ तो, उस फर्म में मेरी भूमिका एक पेशेवर सहायक की थी। और मैं इसमें माहिर था। मैं कह सकता हूँ कि ऐसे व्यावहारिक कार्यों को निभाने में मुझमें एक खास हुनर है। मैं जल्दी सीखता हूँ, कुशल हूँ, कभी शिकायत नहीं करता और यथार्थवादी हूँ। यही कारण है कि जब मैंने नौकरी छोड़ने की इच्छा जताई, तो वरिष्ठ साझेदार (इस पिता-पुत्र की लॉ फर्म में पिता) ने मुझे वेतन में थोड़ी बढ़ोतरी की पेशकश भी की।
लेकिन मैंने फिर भी नौकरी छोड़ दी। ऐसा नहीं था कि नौकरी छोड़ने से मेरी कोई खास उम्मीदें या संभावनाएं पूरी हो जातीं। उदाहरण के लिए, मैं घर में बंद होकर बार परीक्षा की तैयारी करना बिल्कुल नहीं चाहती थी। मुझे पहले से कहीं ज़्यादा यकीन था कि मैं वकील नहीं बनना चाहती। मैं यह भी जानती थी कि मैं जहाँ थी वहीं रहकर अपनी नौकरी जारी नहीं रखना चाहती थी। अगर मुझे नौकरी छोड़नी ही थी, तो यही सही समय था। अगर मैं उस फर्म में और ज़्यादा समय तक रहती, तो मुझे अपनी बाकी ज़िंदगी वहीं बितानी पड़ती। आख़िरकार, मेरी उम्र तीस साल थी।
मैंने खाने की मेज पर कुमिको को बताया था कि मैं अपनी नौकरी छोड़ने के बारे में सोच रही हूँ। उसकी प्रतिक्रिया केवल इतनी थी, "मैं समझ गई।" मुझे समझ नहीं आया कि उसका क्या मतलब था, लेकिन कुछ देर तक उसने और कुछ नहीं कहा।
मैं भी चुप रहा, जब तक कि उसने यह नहीं कहा, "अगर तुम छोड़ना चाहते हो, तो छोड़ दो। यह तुम्हारी ज़िंदगी है, और तुम्हें इसे अपनी मर्ज़ी से जीना चाहिए।" इतना कहकर वह अपनी चॉपस्टिक से

मछली की हड्डियाँ निकालने लगी और उन्हें अपनी प्लेट के किनारे पर रखने लगी।
कुमिको एक स्वास्थ्यवर्धक पत्रिका की संपादक के रूप में अच्छी कमाई करती थी, और अतिरिक्त आय के लिए वह कभी-कभी अन्य पत्रिकाओं में काम करने वाले संपादक मित्रों से चित्र बनाने का काम भी ले लेती थी। (उसने कॉलेज में डिज़ाइन की पढ़ाई की थी और एक स्वतंत्र चित्रकार बनने की ख्वाहिश रखती थी।) इसके अलावा, अगर मैं नौकरी छोड़ देती, तो मुझे कुछ समय के लिए बेरोजगारी बीमा से अपनी आय मिलती रहती। इसका मतलब यह था कि अगर मैं घर पर रहकर घर की देखभाल भी करती, तब भी हमारे पास बाहर खाना खाने और सफाई का बिल भरने जैसे अतिरिक्त खर्चों के लिए पर्याप्त पैसे होते, और हमारी जीवनशैली में शायद ही कोई बदलाव आता।
और इसलिए मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी।

•

मैं फ्रिज में किराने का सामान रख रही थी तभी फोन की घंटी बजी। इस बार घंटी में कुछ बेचैनी सी झलक रही थी। मैंने अभी-अभी टोफू का एक प्लास्टिक पैकेट खोला था, जिसे मैंने पानी को फैलने से बचाने के लिए सावधानी से रसोई की मेज पर रख दिया था। मैं बैठक में गई और फोन उठाया।
"अब तक तो तुमने अपनी स्पेगेटी खत्म कर ली होगी," महिला ने कहा। “आप सही कह रहे हैं। लेकिन अब मुझे बिल्ली को ढूंढने जाना होगा।”
"मुझे यकीन है कि यह दस मिनट तक इंतजार कर सकता है। यह स्पेगेटी पकाने जैसा तो है नहीं।"

न जाने क्यों, मैं उसका फोन काट नहीं सका। उसकी आवाज़ में कुछ ऐसा था जिसने मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया। "ठीक है, लेकिन दस मिनट से ज़्यादा नहीं।"
“अब हम एक-दूसरे को समझ पाएंगे,” उसने शांत आत्मविश्वास से कहा। मैंने महसूस किया कि वह आराम से कुर्सी पर बैठ गई और अपने पैर मोड़ लिए।
मैंने कहा, "मुझे आश्चर्य होता है। आप दस मिनट में क्या समझ सकते हैं?"
"दस मिनट शायद आपकी सोच से ज्यादा लंबा समय हो सकता है," उसने कहा।
क्या आपको यकीन है कि आप मुझे जानते हैं?
“बिल्कुल करता हूँ। हम सैकड़ों बार मिल चुके हैं।”
"कहां कब?"
“कहीं न कहीं, कभी न कभी,” उसने कहा। “लेकिन अगर मैं उस बारे में बात करने लगूँ, तो दस मिनट भी काफी नहीं होंगे। महत्वपूर्ण तो वो समय है जो हमारे पास अभी है। वर्तमान। क्या आप सहमत नहीं हैं?”
"शायद। लेकिन मुझे इस बात का सबूत चाहिए कि आप मुझे जानते हैं।" “किस तरह का सबूत?”
"मेरी उम्र, बताइए?"
“तीस,” उसने तुरंत जवाब दिया। “बत्तीस महीने। काफी है?”
इससे मैं एकदम चुप हो गया। जाहिर है वह मुझे जानती थी, लेकिन मुझे उसकी आवाज बिल्कुल याद नहीं थी।
“अब तुम्हारी बारी है,” उसने मोहक स्वर में कहा। “मेरी छवि बनाने की कोशिश करो। मेरी आवाज़ से। कल्पना करो कि मैं कैसी

दिखती हूँ। मेरी उम्र। मैं कहाँ हूँ। मैंने कैसे कपड़े पहने हैं। शुरू करो।”
मैंने कहा, "मुझे कोई जानकारी नहीं है।"
“अरे, चलो भी,” उसने कहा। “कोशिश करो।”
मैंने अपनी घड़ी देखी। केवल एक मिनट और पाँच सेकंड ही बीते थे। "मुझे कुछ नहीं पता," मैंने फिर कहा।
“तो चलिए मैं आपकी मदद करती हूँ,” उसने कहा। “मैं बिस्तर पर हूँ।
मैं अभी-अभी नहाकर निकली हूँ, और मैंने कुछ भी नहीं पहना है।” ओह, बढ़िया। टेलीफोन पर सेक्स।
या फिर आप मुझे कुछ पहने हुए देखना पसंद करेंगे? कुछ लेस वाला।
या फिर स्टॉकिंग्स। क्या वो आपके लिए बेहतर रहेगा?
“मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। जो चाहो करो,” मैंने कहा। “अगर चाहो तो कपड़े पहन लो। अगर चाहो तो नंगे रहो। माफ करना, लेकिन मुझे इस तरह के फोन पर खेले जाने वाले खेलों में कोई दिलचस्पी नहीं है। मुझे बहुत सारे काम करने हैं—”
“दस मिनट,” उसने कहा। “दस मिनट से तुम्हारी जान नहीं जाएगी। इससे तुम्हारी जिंदगी में कोई दरार नहीं आएगी। बस मेरे सवाल का जवाब दो। क्या तुम मुझे नग्न देखना चाहते हो या कुछ पहने हुए? मेरे पास पहनने के लिए कई तरह की चीजें हैं। काली लेस वाली पैंटी…”
"नग्न रहना ठीक है।"
"अच्छा, बढ़िया। तुम मुझे नग्न देखना चाहते हो।"
“हाँ। नग्न। अच्छा।”
चार मिनट।

“मेरे गुप्तांग के बाल अभी भी गीले हैं,” उसने कहा। “मैंने खुद को अच्छे से सुखाया नहीं। ओह, मैं कितनी गीली हूँ! गर्म और नम। और मुलायम। अद्भुत रूप से मुलायम और काली। मुझे छुओ।”
देखिए, मुझे खेद है, लेकिन—”
और नीचे भी। एकदम नीचे तक। वहाँ तो बहुत गर्म है, जैसे मक्खन। बहुत गर्म। हम्म। और मेरी टांगें। आपको क्या लगता है मेरी टांगें किस स्थिति में हैं? मेरा दाहिना घुटना ऊपर है, और मेरी बाईं टांग थोड़ी सी खुली है। मान लीजिए, घड़ी में दस बजकर पाँच मिनट हो रहे हैं।
उसकी आवाज़ से मुझे पता चल गया कि वह दिखावा नहीं कर रही थी। उसने सचमुच अपने पैर पूरी तरह फैला रखे थे, और उसकी योनि गर्म और नम थी।
“होंठों को छुओ,” उसने कहा। “धीरे-धीरे। अब उन्हें खोलो। बस। धीरे-धीरे, धीरे-धीरे। अपनी उंगलियों से उन्हें सहलाओ। बहुत धीरे-धीरे। अब, अपने दूसरे हाथ से, मेरे बाएं स्तन को छुओ। उससे खेलो। उसे सहलाओ। ऊपर की ओर। और निप्पल को हल्का सा दबाओ। फिर से करो। और फिर से। और फिर से। जब तक मैं चरम सुख के करीब न पहुँच जाऊँ।”
बिना कुछ कहे मैंने रिसीवर नीचे रख दिया। सोफे पर लेटकर मैंने घड़ी को देखा और एक लंबी, गहरी साँस छोड़ी। मैंने उससे लगभग छह मिनट बात की थी।
दस मिनट बाद फोन फिर बजा, लेकिन मैंने उसे रिसीवर पर ही छोड़ दिया। वह पंद्रह बार बजा। और जब वह बंद हुआ, तो कमरे में एक गहरी, ठंडी खामोशी छा गई।

•

दो बजने से ठीक पहले, मैं ईंटों की दीवार फांदकर गली में उतर गया — या यूँ कहूँ कि हम उसे गली कहते थे। सही मायने में वह "गली" नहीं थी, लेकिन शायद उस समय उसके लिए कोई शब्द ही नहीं था। वह न तो "सड़क" थी, न "रास्ता" और न ही "मार्ग"। सही मायने में, "मार्ग" एक ऐसा मार्ग या नहर होता है जिसका प्रवेश और निकास द्वार होता है, और अगर आप उस पर चलते हैं तो वह आपको कहीं ले जाता है। लेकिन हमारी "गली" का न तो प्रवेश द्वार था और न ही निकास द्वार। आप उसे बंद गली भी नहीं कह सकते थे: बंद गली का कम से कम एक सिरा खुला होता है। गली के एक नहीं बल्कि दो सिरे बंद थे। मोहल्ले के लोग उसे "गली" कहकर काम चलाते थे। वह लगभग दो सौ गज लंबी थी और दोनों ओर बने घरों के पीछे के बगीचों के बीच से होकर गुजरती थी। इसकी चौड़ाई मुश्किल से तीन फीट से थोड़ी अधिक थी, और इसमें कई ऐसे स्थान थे जहां आपको बाड़ के रास्ते में निकले होने या लोगों द्वारा रास्ते में छोड़ी गई चीजों के कारण किनारे से होकर गुजरना पड़ता था।
इस गली के बारे में जो कहानी प्रचलित थी—जो मैंने अपने चाचा से सुनी थी, जिन्होंने हमें लगभग मुफ्त में घर किराए पर दिया था— वह यह थी कि इसमें पहले एक प्रवेश द्वार और एक निकास द्वार हुआ करता था और वास्तव में यह दो सड़कों के बीच एक शॉर्टकट का काम करती थी। लेकिन 1950 के दशक के मध्य में तीव्र आर्थिक विकास के साथ, सड़क के दोनों ओर खाली पड़े भूखंडों पर नए घरों की कतारें बन गईं, जिससे यह संकरी होकर एक संकरे रास्ते में सिमट गई। लोगों को अपने घरों और आंगनों के इतने करीब से अजनबियों का गुजरना पसंद नहीं था, इसलिए जल्द ही रास्ते के एक छोर को एक साधारण बाड़ से बंद कर दिया गया—या यूं कहें कि घेर दिया गया। फिर एक स्थानीय नागरिक ने अपने आंगन को बड़ा करने का फैसला किया

और गली के अपने हिस्से को ईंटों की दीवार से पूरी तरह से बंद कर दिया। मानो इसके जवाब में, दूसरे छोर पर कांटेदार तार की बाड़ लगा दी गई, जिससे कुत्ते भी अंदर नहीं जा सकते थे। किसी भी पड़ोसी ने शिकायत नहीं की, क्योंकि उनमें से कोई भी गली का इस्तेमाल आने-जाने के लिए नहीं करता था, और वे अपराध से बचाव के लिए इस अतिरिक्त सुरक्षा से खुश थे। परिणामस्वरूप, वह गली किसी परित्यक्त नहर की तरह बेकार पड़ी रही, दो कतारों में बने घरों के बीच एक बफर ज़ोन से ज़्यादा कुछ नहीं। मकड़ियों ने झाड़ियों में अपने चिपचिपे जाले फैला रखे थे।
कुमिको ऐसी जगह पर बार-बार क्यों जाती थी? मैं खुद उस "गली" से दो बार से ज़्यादा नहीं गुज़री थी, और कुमिको तो वैसे भी मकड़ियों से डरती थी। चलो छोड़ो—अगर कुमिको कहती है कि मैं गली में जाकर बिल्ली को ढूंढूं, तो मैं गली में जाकर बिल्ली को ढूंढ लूंगी। बाद में जो होगा, वो बाद में सोच लूंगी। इस तरह बाहर घूमना घर में बैठकर फोन की घंटी बजने का इंतज़ार करने से कहीं बेहतर था।
गर्मी के मौसम की शुरुआत की तेज़ धूप गली की सतह पर छलक रही थी, ऊपर फैली शाखाओं की गहरी छायाएँ पड़ रही थीं। हवा न चलने के कारण शाखाएँ हिल नहीं रही थीं, इसलिए छायाएँ पक्के धब्बों जैसी लग रही थीं, मानो हमेशा के लिए फुटपाथ पर छपी रह जाएँ। इस जगह पर किसी भी तरह की कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। मुझे ऐसा लग रहा था मानो मैं धूप में घास की पत्तियों की साँसें सुन रहा हूँ। आकाश में कुछ छोटे बादल तैर रहे थे, उनकी आकृतियाँ साफ़ और सटीक थीं, जैसे मध्ययुगीन नक्काशी में बादल होते हैं। मुझे सब कुछ इतनी स्पष्टता से दिखाई दे रहा था कि मेरा शरीर धुंधला, असीम, बहता हुआ... और गर्म महसूस हो रहा था!

था। दूसरा हाथ कमर जितनी ऊँची बांस की बाड़ पर टिका था, जिससे उसे शायद ही कोई सहारा मिल रहा था। हमारे बीच सिर्फ तीन फीट— शायद चार फीट—की दूरी थी।
“गर्म,” उसने मुझसे कहा।
“हां, बिल्कुल,” मैंने जवाब दिया।
विचारों के इस संक्षिप्त आदान-प्रदान के बाद, वह वहीं खड़ी मुझे देखती रही। फिर उसने अपनी पैंट की जेब से होप रेगुलर्स का एक डिब्बा निकाला, एक सिगरेट निकाली और उसे अपने होठों के बीच रख लिया। उसका मुंह छोटा था, ऊपरी होंठ थोड़ा ऊपर की ओर मुड़ा हुआ था। उसने माचिस जलाकर सिगरेट जलाई। जब उसने अपना सिर एक तरफ झुकाया, तो उसके बाल हट गए और उसका सुंदर आकार का कान दिखाई दिया, जो मानो अभी-अभी बना हो, और उसके किनारे पर मुलायम बालों की लटें चमक रही थीं।
उसने माचिस फेंक दी और होंठ सिकोड़कर धुआं छोड़ा। फिर उसने मेरी तरफ ऐसे देखा मानो वह भूल गई हो कि मैं वहां हूं। उसके धूप के चश्मे के गहरे, चमकदार लेंसों के कारण मैं उसकी आंखें नहीं देख पा रहा था।
“आप यहीं आसपास रहते हैं?” उसने पूछा।
“हम्म।” मैं अपने घर की ओर इशारा करना चाहता था, लेकिन यहाँ तक पहुँचने के लिए मैंने इतने अजीब-अजीब रास्ते अपनाए थे कि मुझे ठीक से याद ही नहीं था कि वह कहाँ है। आखिरकार मैंने बेतरतीब ढंग से किसी भी जगह इशारा कर दिया।
मैंने पसीने से भीगी हथेली को अपनी पैंट पर पोंछते हुए समझाया, "मैं अपनी बिल्ली को ढूंढ रहा हूँ। वह एक हफ्ते से गायब है। किसी ने उसे यहीं कहीं देखा होगा।"
“किस तरह की बिल्ली?”

“एक बड़ा सा घाव। भूरी धारियाँ। पूंछ का सिरा थोड़ा मुड़ा हुआ।” "नाम?"
"नोबोरू. नोबोरू वाटया।"
नहीं, तुम्हारा नाम नहीं। बिल्ली का नाम।"
“यह मेरी बिल्ली का नाम है।”
वाह! बहुत ही शानदार!
दरअसल, यह मेरे जीजाजी का नाम है। बिल्ली हमें उनकी याद दिलाती है। हमने मजे-मजे में बिल्ली का नाम उन्हीं के नाम पर रख दिया। "यह बिल्ली आपको उसकी याद कैसे दिलाती है?"
मुझे नहीं पता। बस सामान्य तौर पर। जिस तरह से यह चलता है। और इसकी निगाहें एकदम खाली-खाली सी हैं।
अब वह पहली बार मुस्कुराई, जिससे वह पहले की तुलना में कहीं अधिक मासूम लग रही थी। उसकी उम्र पंद्रह या सोलह से ज़्यादा नहीं रही होगी। उसके होंठ हल्के से मुड़े हुए थे और एक अजीब से कोण पर ऊपर की ओर उठे हुए थे। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई आवाज़ कह रही हो, "मुझे छुओ"—फोन पर बात कर रही महिला की आवाज़। मैंने अपने माथे से पसीना अपने हाथ के पिछले हिस्से से पोंछा।
“एक भूरे रंग की धारीदार बिल्ली जिसकी पूंछ झुकी हुई है,” लड़की ने कहा। “हम्म। क्या इसके गले में कोई पट्टा या कुछ और है?”
"एक काला पिस्सू कॉलर।"
वह दस-पंद्रह सेकंड तक वहीं खड़ी सोचती रही, उसका हाथ अभी भी गेट पर टिका हुआ था। फिर उसने सिगरेट का बचा हुआ हिस्सा गिरा दिया और उसे अपनी चप्पल से कुचल दिया।
"शायद मैंने वैसी ही कोई बिल्ली देखी थी," उसने कहा। "मुझे नहीं पता कि उसकी पूंछ झुकी हुई थी या नहीं, लेकिन वह भूरे रंग की बाघ

जैसी दिखने वाली बड़ी बिल्ली थी, और मुझे लगता है कि उसके गले में पट्टा था।"
"तुमने इसे कब देखा?"
“मैंने इसे कब देखा? हम्म। तीन-चार दिन पहले से ज़्यादा नहीं। हमारा आंगन पड़ोस की बिल्लियों के लिए एक तरह का राजमार्ग बन गया है। वे सभी ताकितानी के घर से मियावाकी के घर तक यहीं से होकर गुजरती हैं।”
उसने उस खाली घर की ओर इशारा किया, जहाँ पत्थर की चिड़िया अब भी अपने पंख फैलाए खड़ी थी, लंबा सुनहरा पौधा अब भी शुरुआती गर्मियों की धूप का आनंद ले रहा था, और कबूतर टीवी एंटीना के ऊपर अपनी नीरस गुटरगू करता जा रहा था।
“मेरे पास एक सुझाव है,” उसने कहा। “क्यों न तुम यहीं रुक जाओ? सारी बिल्लियाँ मियावाकी के घर जाते समय आखिरकार हमारे यहाँ से होकर गुजरती हैं। और अगर किसी ने तुम्हें इस तरह घूमते हुए देखा तो पुलिस को ज़रूर बुला लेगा। ऐसा पहली बार नहीं होगा।”
मैं झिझक गया।
“चिंता मत करो,” उसने कहा। “मैं यहाँ अकेली हूँ। हम दोनों धूप में बैठकर बिल्ली के आने का इंतज़ार कर सकते हैं। मैं मदद करूँगी। मेरी नज़र बिल्कुल साफ़ है।”
मैंने अपनी घड़ी देखी। दो बजकर छब्बीस मिनट हो रहे थे। आज अंधेरा होने से पहले मुझे बस कपड़े अंदर ले जाने थे और रात का खाना बनाना था।
मैं फाटक से अंदर गया और लॉन पार करते हुए उस लड़की के पीछे-पीछे चलने लगा। वह अपना दाहिना पैर थोड़ा घसीट रही थी। उसने कुछ कदम चले, रुकी और मेरी ओर मुड़कर देखने लगी।

"मैं मोटरसाइकिल की पिछली सीट से गिर गई थी," उसने ऐसे कहा जैसे कि इससे कोई फर्क ही नहीं पड़ता हो।
आंगन के लॉन के खत्म होने वाली जगह पर एक बड़ा सा ओक का पेड़ खड़ा था। पेड़ के नीचे दो कैनवस की कुर्सियाँ रखी थीं, जिनमें से एक पर नीले रंग का बीच टॉवल लिपटा हुआ था। दूसरी कुर्सी पर होप रेगुलर्स का एक नया डिब्बा, एक ऐशट्रे और लाइटर, एक पत्रिका और एक बड़ा सा बूम बॉक्स बिखरा पड़ा था। बूम बॉक्स में धीमी आवाज़ में हार्ड रॉक संगीत बज रहा था। उसने संगीत बंद किया और मेरे लिए कुर्सी से सारा सामान निकालकर घास पर रख दिया। कुर्सी से मैं खाली घर के आंगन को देख सकता था—पत्थर की चिड़िया, गोल्डनरोड का पौधा, चेन-लिंक बाड़। शायद वह लड़की मेरे वहाँ रहने के पूरे समय मुझे देख रही थी।
इस घर का आंगन बहुत बड़ा था। इसमें पेड़ों के झुंडों से भरा एक चौड़ा, ढलानदार लॉन था। डेक कुर्सियों के बाईं ओर कंक्रीट से बना एक बड़ा सा तालाब था, जिसका निचला हिस्सा धूप में खुला हुआ था। उसके हरे रंग को देखकर लग रहा था कि उसमें काफी समय से पानी नहीं था। हम घर की ओर पीठ करके बैठ गए, जो पेड़ों की ओट से दिखाई दे रहा था। घर न तो बहुत बड़ा था और न ही भव्य बनावट का। केवल आंगन ही बड़ा होने का आभास देता था, और वह अच्छी तरह से सजा- संवरा था।
मैंने चारों ओर देखते हुए कहा, "कितना बड़ा आंगन है! इसकी देखभाल करना कितना मुश्किल होगा।"
"ज़रूर होगा।"
"जब मैं बच्चा था, तब मैं लॉन काटने वाली कंपनी में काम करता था।"
“ओह?” जाहिर है, उसे लॉन में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

मैंने पूछा, "क्या तुम हमेशा यहाँ अकेले ही रहते हो?"
“हाँ। हमेशा। बस सुबह और शाम को नौकरानी आती है। दिन में मैं अकेला होता हूँ। कोई ठंडा पेय चाहिए? हमारे पास बीयर है।”
"जी नहीं, धन्यवाद।"
“सच में? शर्माओ मत।”
मैंने सिर हिलाया। "क्या तुम स्कूल नहीं जाते?"
क्या तुम काम पर नहीं जाते?
"कोई काम नहीं है।"
“क्या आपकी नौकरी चली गई?”
"कुछ हद तक। मैंने कुछ हफ़्ते पहले ही नौकरी छोड़ दी।"
"किस तरह की नौकरी?"
“मैं एक वकील का सहायक था। मैं अलग-अलग सरकारी दफ्तरों में जाकर दस्तावेज लाता था, सामग्री को व्यवस्थित करता था, कानूनी मिसालों की जांच करता था, अदालती कार्यवाही संभालता था—इस तरह के काम करता था।”
लेकिन तुमने छोड़ दिया।
"हाँ।"
क्या आपकी पत्नी नौकरी करती है?
"वह करती है।"
सामने बैठा कबूतर शायद गुटरगू करना बंद करके कहीं उड़ गया होगा। मुझे अचानक एहसास हुआ कि मेरे चारों ओर गहरी खामोशी छाई हुई है।
“बिल्कुल वहीं से बिल्लियाँ निकलती हैं,” उसने लॉन के दूर वाले हिस्से की ओर इशारा करते हुए कहा। “ताकितानी के आँगन में भट्टी दिख रही है? वे वहीं से बाड़ के नीचे से आती हैं, घास के बीच से

होकर गुजरती हैं और सामने वाले आँगन के गेट के नीचे से निकल जाती हैं। वे हमेशा बिल्कुल उसी रास्ते से जाती हैं।”
उसने अपने धूप के चश्मे माथे पर टिकाए, आंगन की ओर तिरछी नज़र से देखा और फिर धुआं छोड़ते हुए चश्मा नीचे कर लिया। इसी बीच मैंने देखा कि उसकी बाईं आंख के पास दो इंच का गहरा घाव था—ऐसा घाव जिसका निशान शायद ज़िंदगी भर रह जाता। गहरे रंग के धूप के चश्मे शायद घाव को छिपाने के लिए थे। लड़की का चेहरा वैसे तो बहुत सुंदर नहीं था, लेकिन उसमें कुछ तो आकर्षण था, शायद उसकी जीवंत आंखें या होठों की अनोखी बनावट।
“क्या आप मियावाकी परिवार के बारे में जानते हैं?” उसने पूछा। मैंने कहा, "बिल्कुल नहीं।"
“वे ही लोग उस खाली मकान में रहते थे। एक बहुत ही सभ्य परिवार। उनकी दो बेटियाँ थीं, दोनों एक निजी बालिका विद्यालय में पढ़ती थीं। श्री मियावाकी के कुछ पारिवारिक रेस्तरां थे।”
वे क्यों चले गए?
“शायद वो कर्ज में डूबा हुआ था। ऐसा लगा जैसे वो भाग गए हों—एक रात में सब कुछ खाली कर दिया। करीब एक साल पहले की बात है। जगह को सड़ने और बिल्लियों के प्रजनन के लिए छोड़ दिया। मेरी माँ हमेशा शिकायत करती रहती है।”
क्या वहां इतनी सारी बिल्लियां हैं?
होंठों में सिगरेट लिए, लड़की ने आसमान की ओर देखा।
“हर तरह की बिल्लियाँ। कुछ के बाल झड़ रहे हैं, कुछ की एक आँख नहीं है... और जहाँ दूसरी आँख हुआ करती थी, वहाँ कच्चा मांस का एक टुकड़ा है। छी!”
मेंने सिर हिलाया।

“मेरी एक रिश्तेदार हैं जिनके दोनों हाथों में छह-छह उंगलियां हैं। वो मुझसे थोड़ी बड़ी हैं। उनकी छोटी उंगली के बगल में एक अतिरिक्त उंगली है, बिल्कुल बच्चे की उंगली जैसी। वो उसे इस तरह मोड़ कर रखती हैं कि ज़्यादातर लोगों को पता ही नहीं चलता। वो बहुत सुंदर हैं।”
मैंने फिर से सिर हिलाया।
“क्या आपको लगता है कि यह खानदानी बात है? इसे क्या कहते हैं... वंश का हिस्सा?”
मुझे आनुवंशिकता के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है।
उसने बोलना बंद कर दिया। मैंने अपनी लेमन कैंडी चूसी और बिल्ली के रास्ते पर ध्यान से देखा। अभी तक एक भी बिल्ली दिखाई नहीं दी थी।
“क्या आप कुछ पीना नहीं चाहेंगे?” उसने पूछा। “मैं एक कोक लूंगा।”
मैंने कहा कि मुझे पेय की जरूरत नहीं है।
वह अपनी डेक चेयर से उठी और पेड़ों के बीच से गायब हो गई, उसका चोटिल पैर थोड़ा घिसटता हुआ चल रहा था। मैंने घास से उसकी पत्रिका उठाई और उसके पन्ने पलटे। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह पुरुषों की पत्रिका थी, एक चमकदार मासिक पत्रिका। पन्ने पर छपी महिला ने पतली पैंटी पहनी हुई थी जिससे उसकी योनि और गुप्तांग के बाल दिख रहे थे। वह एक स्टूल पर अजीब कोणों पर पैर फैलाकर बैठी थी। एक गहरी सांस लेकर मैंने पत्रिका वापस रख दी, सीने पर हाथ बांधे और फिर से बिल्ली के रास्ते पर ध्यान केंद्रित किया।

•

काफी देर बाद वो लड़की हाथ में कोक का गिलास लिए वापस आई। गर्मी मुझे परेशान कर रही थी। धूप में बैठे-बैठे मेरा दिमाग सुन्न पड़ने लगा था। मैं सोचना बिल्कुल नहीं चाहता था।
“मुझे बताओ,” उसने अपनी पिछली बातचीत को आगे बढ़ाते हुए कहा। “अगर तुम किसी लड़की से प्यार करते हो और पता चले कि उसके छह उंगलियां हैं, तो तुम क्या करोगे?”
मैंने जवाब दिया, "उसे सर्कस को बेच दो।"
"वास्तव में?"
“नहीं, बिलकुल नहीं,” मैंने कहा। “मैं मजाक कर रहा था। मुझे नहीं लगता कि इससे मुझे कोई फर्क पड़ेगा।”
"भले ही आपके बच्चे इसे विरासत में पा सकते हों?"
मैंने इस बारे में सोचने के लिए कुछ समय लिया।
नहीं, मुझे नहीं लगता कि इससे मुझे कोई परेशानी होगी। एक अतिरिक्त उंगली से क्या नुकसान होगा?
"अगर उसके चार स्तन होते तो क्या होता?"
मैंने भी इस बारे में सोचा था।
"मुझें नहीं पता।"
चार स्तन? इस तरह की बातें तो कभी खत्म ही नहीं होंगी। मैंने विषय बदलने का फैसला किया।
मैंने पूछा, "तुम्हारी उम्र कितनी है?"
“सोलह,” उसने कहा। “अभी-अभी मेरा जन्मदिन था। हाई स्कूल में मेरा पहला साल है।”
"क्या आप लंबे समय से स्कूल से बाहर हैं?"
“ज़्यादा चलने पर मेरे पैर में दर्द होता है। और मेरी आँख के पास एक निशान है। मेरा स्कूल बहुत सख्त है। अगर उन्हें पता चला कि मैं मोटरसाइकिल से गिरकर घायल हो गई थी, तो वे शायद मुझे

परेशान करना शुरू कर देंगे। इसलिए मैं 'बीमार' होने का बहाना बनाकर स्कूल से छुट्टी ले रही हूँ। मैं एक साल का ब्रेक ले सकती हूँ। मुझे अगली कक्षा में जाने की कोई जल्दी नहीं है।”
“नहीं, मुझे नहीं लगता,” मैंने कहा।
खैर, आप पहले जो कह रहे थे, कि आपको छह उंगलियों वाली लड़की से शादी करने में कोई आपत्ति नहीं होगी, लेकिन चार स्तनों वाली लड़की से नहीं...
मैंने ऐसा नहीं कहा। मैंने कहा कि मुझे नहीं पता।
आपको क्यों नहीं पता?
मुझे नहीं पता—ऐसी बात की कल्पना करना मुश्किल है।
क्या आप छह उंगलियों वाले किसी व्यक्ति की कल्पना कर सकते हैं? "हाँ, मुझे लगता है ऐसा ही है।"
“तो फिर चार स्तन क्यों नहीं? क्या फर्क है?”
मैंने इस बारे में सोचने के लिए कुछ पल और लिए, लेकिन मुझे कोई जवाब नहीं मिला।
"क्या मैं बहुत ज्यादा सवाल पूछता हूँ?"
"क्या लोग आपसे ऐसा कहते हैं?"
"हां, कभी-कभी।"
मैं फिर से बिल्ली के रास्ते की ओर मुड़ा। मैं यहाँ क्या कर रहा था? पूरे समय एक भी बिल्ली दिखाई नहीं दी थी। सीने पर हाथ रखे हुए, मैंने लगभग तीस सेकंड के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। मुझे अपने शरीर के अलग-अलग हिस्सों पर पसीना आता महसूस हो रहा था। सूरज की किरणें मुझ पर एक अजीब सी भारीपन लिए हुए पड़ रही थीं। जब भी लड़की अपना गिलास हिलाती, उसमें जमी बर्फ़ घंटी की तरह बजती।

“अगर तुम सोना चाहते हो तो सो जाओ,” उसने फुसफुसाते हुए कहा। “अगर कोई बिल्ली दिखाई दी तो मैं तुम्हें जगा दूंगी।”
आंखें बंद करके मैंने चुपचाप सिर हिलाया।
हवा एकदम शांत थी। कोई आवाज़ नहीं थी। कबूतर बहुत पहले ही गायब हो चुका था। मैं फ़ोन पर बात कर रही उस औरत के बारे में सोचता रहा। क्या मैं उसे सच में जानता था? उसकी आवाज़ या बोलने का तरीका बिल्कुल भी जाना-पहचाना नहीं था। लेकिन वह मुझे ज़रूर जानती थी। ऐसा लग रहा था जैसे मैं डी चिरिको की किसी पेंटिंग का दृश्य देख रहा हूँ: उस औरत की लंबी परछाई एक खाली सड़क को चीरती हुई मेरी तरफ बढ़ रही है, लेकिन वह खुद मेरी चेतना से बहुत दूर कहीं और है। मेरे कान के पास एक घंटी लगातार बजती रही।
"क्या तुम सो रहे हो?" लड़की ने इतनी धीमी आवाज में पूछा कि मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि मैं उसकी आवाज सुन पा रहा हूँ।
“नहीं, मैं सो नहीं रहा हूँ,” मैंने कहा।
“क्या मैं थोड़ा और पास आ सकता हूँ? अगर मैं अपनी आवाज़ धीमी रखूँ तो… आसानी होगी।”
मैंने आंखें बंद रखते हुए कहा, "मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" उसने अपनी कुर्सी को तब तक खिसकाया जब तक कि वह मेरी कुर्सी से एक सूखी, लकड़ी की खटखटाहट के साथ टकरा नहीं गई।
अजीब बात यह थी कि लड़की की आवाज पूरी तरह से अलग सुनाई देती थी, इस बात पर निर्भर करता था कि मेरी आंखें खुली थीं या बंद। “क्या मैं बात कर सकता हूँ? मैं बिल्कुल चुप रहूँगा, और आपको जवाब देने की ज़रूरत नहीं है। आप चाहें तो सो भी सकते हैं। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।”
“ठीक है,” मैंने कहा।
"जब लोग मरते हैं, तो यह बहुत अच्छा लगता है।"

अब उसका मुंह मेरे कान के बिल्कुल पास था, इसलिए उसके गर्म, नम सांसों के साथ-साथ शब्द भी मेरे भीतर समाते चले गए।
मैंने पूछा, "ऐसा क्यों?"
उसने मेरे होंठों पर उंगली रख दी, मानो उन्हें बंद करना चाहती हो।
“कोई सवाल नहीं,” उसने कहा। “और अपनी आँखें मत खोलना। ठीक है?” मेरा सिर हिलाना उसकी आवाज़ जितना ही छोटा था।
उसने अपनी उंगली मेरे होठों से हटाकर मेरी कलाई पर रख दी।
काश मेरे पास एक स्केलपेल होता। मैं उसे काटकर अंदर देखता। लाश नहीं... मौत का वो पिंड। मुझे यकीन है कि उसमें कुछ ऐसा ज़रूर होगा। गोल-मटोल, जैसे सॉफ्टबॉल, जिसके अंदर मृत नसों का एक छोटा सा सख्त कोर हो। मैं उसे किसी मरे हुए इंसान के शरीर से निकालकर अंदर देखना चाहता हूँ। मैं हमेशा सोचता हूँ कि वह कैसा होगा। शायद वो पूरी तरह से सख्त हो, जैसे टूथपेस्ट ट्यूब के अंदर सूख गया हो। बस यही होगा, है ना? नहीं, जवाब मत दो। बाहर से तो वो नरम होगा, और जितना अंदर जाओगे, उतना ही सख्त होता जाएगा। मैं त्वचा को काटकर उस नरम चीज़ को निकालना चाहता हूँ, स्केलपेल और किसी तरह के स्पैचुला से उसे चीरना चाहता हूँ, और जितना केंद्र के पास पहुँचोगे, उतना ही नरम चीज़ सख्त होती जाएगी, जब तक कि उस छोटे से कोर तक न पहुँच जाऊँ। वो इतना छोटा है, जैसे कोई छोटी सी बॉल बेयरिंग, और बहुत सख्त। ऐसा ही होगा, है ना?
उसने कुछ बार अपना गला साफ किया।
“आजकल मैं बस इसी बारे में सोचता रहता हूँ। शायद इसलिए क्योंकि मेरे पास हर दिन इतना खाली समय होता है। जब आपके पास करने के लिए कुछ नहीं होता, तो आपके विचार बहुत ही अजीबोगरीब हो जाते हैं— इतने अजीब कि आप उन्हें अंत तक समझ ही नहीं पाते।”

उसने मेरी कलाई से उंगली हटाई और अपना बचा हुआ कोला पी गई। बर्फ की आवाज़ से मुझे पता चल गया कि गिलास खाली हो गया है।
“बिल्ली की चिंता मत करो—मैं उस पर नज़र रख रहा हूँ। अगर नोबोरू वटाया दिखाई दिया तो मैं तुम्हें बता दूँगा। अपनी आँखें बंद रखना। मुझे यकीन है कि नोबोरू वटाया यहीं कहीं आसपास घूम रहा है। वह किसी भी पल यहाँ आ सकता है। वह आ रहा है। मुझे पता है कि वह आ रहा है—घास के बीच से, बाड़ के नीचे से, रास्ते में फूलों को सूंघते हुए, धीरे-धीरे नोबोरू वटाया करीब आ रहा है। उसकी ऐसी कल्पना करो, उसकी छवि अपने मन में बिठा लो।”
मैंने बिल्ली की छवि को अपने मन में संजोने की कोशिश की, लेकिन जो कुछ मैं सोच पाया, वह धुंधली, पीछे से आती रोशनी वाली तस्वीर थी। मेरी पलकों से छनकर आती सूरज की रोशनी ने मेरे भीतर के अंधेरे को बिखेर दिया, जिससे मेरे लिए बिल्ली की स्पष्ट छवि को याद करना असंभव हो गया। इसके बजाय, मैंने जो कल्पना की, वह एक असफल चित्र था, एक अजीब, विकृत तस्वीर, जिसमें कुछ विशिष्ट विशेषताएं मूल से मिलती-जुलती थीं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण हिस्से गायब थे। मुझे यह भी याद नहीं आ रहा था कि चलते समय बिल्ली कैसी दिखती थी।
लड़की ने फिर से मेरी कलाई पर अपनी उंगली रखी और उसकी नोक से एक अजीब, अस्पष्ट आकृति बनाई। मानो प्रतिक्रिया स्वरूप, एक नए प्रकार का अंधकार—उस अंधकार से भिन्न, जिसका अनुभव मैं उस क्षण तक कर रहा था—मेरी चेतना में घर करने लगा। शायद मुझे नींद आ रही थी। मैं ऐसा नहीं चाहता था, लेकिन मैं इसका विरोध नहीं कर सकता था। मेरा शरीर किसी लाश जैसा लग रहा था—किसी और की लाश—जो कैनवास की कुर्सी में धंस रहा हो।

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

घर आकर मैंने कपड़े धोकर अंदर रखे और सादा खाना बनाने की तैयारी की। साढ़े पाँच बजे फ़ोन बारह बार बजा, लेकिन मैंने उठाया नहीं। घंटी बजना बंद होने के बाद भी, शाम के धुंधलके में उसकी आवाज़ हवा में तैरती धूल की तरह गूंजती रही। मेज पर रखी घड़ी अपने कठोर पंजों से हवा में तैरते एक पारदर्शी तख्ते पर दस्तक दे रही थी।
चाबी से चलने वाली चिड़िया पर कविता क्यों न लिखी जाए? यह विचार मन में आया, लेकिन पहली पंक्ति सूझ ही नहीं रही थी। भला हाई स्कूल की लड़कियाँ चाबी से चलने वाली चिड़िया पर लिखी कविता का आनंद कैसे ले सकती हैं?

•

कुमिको साढ़े सात बजे घर आई। पिछले एक महीने से वह लगातार देर से आ रही थी। उसका आठ बजे के बाद, और कभी-कभी तो दस बजे के बाद लौटना आम बात हो गई थी। अब जब मैं घर पर खाना बना रही थी, तो उसे जल्दी लौटने की ज़रूरत नहीं थी। वैसे भी, उनके यहाँ कर्मचारियों की कमी थी, और हाल ही में उनकी एक सहकर्मी बीमार होने के कारण छुट्टी पर थीं।
“माफ़ कीजिए,” उसने कहा। “काम खत्म ही नहीं हो रहा था, और वह पार्ट-टाइम काम करने वाली लड़की किसी काम की नहीं है।”
मैं रसोई में गई और खाना बनाने लगी: मक्खन में तली हुई मछली, सलाद और मिसो सूप। कुमिको रसोई की मेज पर आराम से बैठी रही। “साढ़े पाँच बजे तुम कहाँ थे?” उसने पूछा। “मैंने फोन करके बताने की कोशिश की थी कि मुझे देर हो जाएगी।”
“मक्खन खत्म हो गया था। मैं दुकान गया था,” मैंने झूठ बोला। क्या आप बैंक गए थे?
"ज़रूर।"

और बिल्ली?
“मुझे वो नहीं मिला। मैंने तुम्हारे कहे अनुसार खाली घर में जाकर देखा, लेकिन उसका कोई निशान नहीं था। मुझे यकीन है कि वो उससे भी कहीं दूर चला गया होगा।”
कुछ बोली नहीं।
रात के खाने के बाद जब मैंने नहाकर खत्म किया, तो कुमिको लिविंग रूम में बैठी थी और लाइटें बंद थीं। अपनी ग्रे शर्ट पहने, अंधेरे में झुकी हुई, वह किसी सामान की तरह लग रही थी जिसे गलत जगह पर छोड़ दिया गया हो।
मैंने नहाने के तौलिए से अपने बाल सुखाए और कुमिको के सामने सोफे पर बैठ गई।
मुझे मुश्किल से सुनाई देने वाली आवाज में उसने कहा, "मुझे यकीन है कि बिल्ली मर चुकी है।"
“ऐसी बेवकूफी मत करो,” मैंने जवाब दिया। “मुझे यकीन है कि वह कहीं खूब मज़े कर रहा होगा। उसे भूख लगेगी और वह जल्द ही घर लौट आएगा। याद है, पहले भी ऐसा ही हुआ था? जब हम कोएंजी में रहते थे…”
“इस बार बात अलग है,” उसने कहा। “इस बार तुम गलत हो। मुझे पता है। बिल्ली मर चुकी है। वह घास के ढेर में सड़ रही है। क्या तुमने उस खाली घर की घास में देखा?”
“नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया। घर भले ही खाली हो, लेकिन वह किसी का तो है। मैं यूं ही उसमें जबरदस्ती घुस नहीं सकता।”
“तो फिर तुमने बिल्ली को कहाँ ढूँढा? मुझे यकीन है तुमने कोशिश भी नहीं की होगी। इसीलिए तुम्हें वो नहीं मिली।”
मैंने आह भरी और तौलिए से अपने बाल फिर से पोंछे। मैंने बोलना शुरू किया, लेकिन कुमिको को रोते देख चुप हो गई। यह स्वाभाविक

था: कुमिको को बिल्ली से बहुत प्यार था। शादी के कुछ समय बाद से ही वह हमारे साथ थी। मैंने अपना तौलिया बाथरूम के बास्केट में फेंक दिया और ठंडी बीयर लेने रसोई में चली गई। कितना बेवकूफी भरा दिन था: एक बेवकूफी भरे महीने का बेवकूफी भरा दिन, एक बेवकूफी भरे साल का।
नोबोरू वाटाया, तुम कहाँ हो? क्या चाबी भरने वाली चिड़िया तुम्हारी स्प्रिंग में चाबी भरना भूल गई?
ये शब्द मेरे मन में कविता की पंक्तियों की तरह आए।
नोबोरू वाटाया, तुम कहाँ हो? क्या चाबी भरने वाली चिड़िया अपनी स्प्रिंग में चाबी भरना भूल गई?
जब मैं अपनी बीयर आधी पी चुका था, तभी फोन बजने लगा।
“समझोगे ना?” मैंने बैठक के अंधेरे में चिल्लाकर कहा।
“मैं नहीं,” उसने कहा। “तुम समझ गए।”
मैं ऐसा नहीं करना चाहता।
फोन लगातार बजता रहा, अंधेरे में तैरती धूल को हिलाता हुआ। हम दोनों में से किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा। मैंने अपनी बियर पी और कुमिको चुपचाप रोती रही। मैंने बीस घंटियाँ गिनीं और फिर गिनना बंद कर दिया। हमेशा गिनते रहने का कोई फायदा नहीं था।

पूर्णिमा और सूर्य ग्रहण

•

अस्तबलों में घोड़ों की मौत पर
क्या अंततः एक मनुष्य के लिए दूसरे मनुष्य को पूर्ण रूप से समझना संभव है?
हम किसी दूसरे व्यक्ति को जानने के लिए बहुत समय और ऊर्जा लगा सकते हैं, लेकिन अंत में हम उस व्यक्ति के सार को कितना समझ पाते हैं? हम खुद को यकीन दिलाते हैं कि हम दूसरे व्यक्ति को अच्छी तरह जानते हैं, लेकिन क्या हम वास्तव में किसी के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानते हैं?
मैंने लॉ फर्म में अपनी नौकरी छोड़ने के एक हफ्ते बाद इन बातों पर गंभीरता से सोचना शुरू किया। तब तक—अपने पूरे जीवन में— मैंने कभी ऐसे सवालों पर विचार नहीं किया था। और क्यों नहीं? शायद इसलिए क्योंकि मैं बस अपनी जिंदगी जीने में ही इतना व्यस्त था कि अपने बारे में सोचने का समय ही नहीं मिला।
एक छोटी सी बात से मेरी शुरुआत हुई, ठीक वैसे ही जैसे दुनिया की अधिकांश महत्वपूर्ण चीजों की शुरुआत छोटी ही होती है। एक सुबह कुमिको ने जल्दी-जल्दी नाश्ता किया और काम पर चली गई, तो मैंने कपड़े धोने की मशीन में डाले, बिस्तर ठीक किया, बर्तन धोए और वैक्यूम क्लीनर से सफाई की। फिर, बिल्ली को अपने पास बिठाकर, मैं बरामदे में बैठ गई और दुकानों के विज्ञापन और छूट की चीजें देखने लगी। दोपहर में मैंने खाना खाया और सुपरमार्केट चली गई। वहाँ मैंने रात के खाने का सामान खरीदा और छूट वाली मेज से डिटर्जेंट, टिशू पेपर और टॉयलेट पेपर भी खरीद लिए। घर आकर मैंने

अकेले खाने के बारे में सोच रहा था, लेकिन मैं ऐसा करने के लिए तैयार नहीं था। यह बिल्कुल सही नहीं लग रहा था।
मैं रसोई की मेज पर बैठा था, बीयर की चुस्कियाँ ले रहा था और अलमारी के पीछे मिले थोड़े गीले सोडा क्रैकर्स चबा रहा था। मैं घड़ी की छोटी सुई को धीरे-धीरे साढ़े सात बजे की ओर बढ़ते और उसे पार करते हुए देख रहा था।
नौ बज चुके थे जब वह अंदर आई। वह थकी हुई लग रही थी। उसकी आँखें लाल थीं: एक बुरा संकेत। जब भी उसकी आँखें लाल होती थीं, कुछ बुरा ही होता था।
ठीक है, मैंने खुद से कहा, शांत रहो, इसे सरल, सहज और स्वाभाविक रखो। उत्तेजित मत हो।
“मुझे बहुत खेद है,” कुमिको ने कहा। “यह एक काम ठीक से नहीं हो पा रहा था। मैंने आपको फोन करने के बारे में सोचा था, लेकिन हर बार कुछ न कुछ बाधा आ ही जाती थी।”
“कोई बात नहीं, कोई फर्क नहीं पड़ता, परेशान मत हो,” मैंने जितना हो सके सहजता से कहा। और सच कहूँ तो, मुझे बुरा नहीं लग रहा था। मुझे कई बार ऐसा अनुभव हो चुका था। काम पर जाना मुश्किल हो सकता है, यह उतना सुखद और शांतिपूर्ण नहीं होता जितना कि अपने बगीचे से बीमार दादी के लिए सबसे सुंदर गुलाब तोड़ना और उनके साथ पूरा दिन बिताना, जो दो गलियाँ दूर रहती हैं। कभी-कभी आपको अप्रिय लोगों के साथ अप्रिय काम करने पड़ते हैं, और घर पर फोन करने का मौका ही नहीं मिलता। “आज रात देर से घर आऊँगा” कहने में बस तीस सेकंड लगते हैं, और हर जगह टेलीफोन हैं, लेकिन आप ऐसा कर ही नहीं सकते।
मैंने खाना बनाना शुरू किया: गैस चालू की, कड़ाही में तेल डाला। कुमिको ने फ्रिज से एक बियर और अलमारी से एक गिलास निकाला,

मैंने जो खाना पकाने वाली थी उसे सरसरी तौर पर देखा और चुपचाप रसोई की मेज पर बैठ गई। उसके चेहरे के भाव से लग रहा था कि उसे बियर पसंद नहीं आ रही थी।
“तुम्हें मेरे बिना ही खाना खा लेना चाहिए था,” उसने कहा।
कोई बात नहीं। मुझे उतनी भूख नहीं थी।
जब मैं मांस और सब्जियां तल रहा था, कुमिको नहाने चली गई। मुझे उसकी चेहरा धोने और दांत ब्रश करने की आवाज सुनाई दी। थोड़ी देर बाद, वह कुछ लेकर बाथरूम से बाहर आई। ये टॉयलेट पेपर और टिशू थे जो मैंने सुपरमार्केट से खरीदे थे।
“तुमने ये सब सामान क्यों खरीदा?” उसने थकी हुई आवाज में पूछा। कड़ाही पकड़े हुए मैंने उसकी तरफ देखा। फिर मैंने टिशू के डिब्बे और टॉयलेट पेपर के पैकेट को देखा। मुझे बिलकुल समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कहना चाह रही है।
“तुम्हारा क्या मतलब है? ये तो बस टिशू और टॉयलेट पेपर हैं। हमें इनकी ज़रूरत है। हमारे पास इनकी कमी तो नहीं है, लेकिन अगर ये थोड़ी देर पड़े रहें तो सड़ेंगे नहीं।”
“नहीं, बिलकुल नहीं। लेकिन आपको नीले रंग के टिशू पेपर और फूलों के डिज़ाइन वाला टॉयलेट पेपर क्यों खरीदना पड़ा?”
मैंने खुद को संभालते हुए कहा, "मुझे समझ नहीं आ रहा। ये तो छूट पर थे। नीले टिशू पेपर से नाक नीली तो नहीं हो जाती। इसमें बड़ी बात क्या है?"
“यह बहुत बड़ी बात है। मुझे नीले रंग के टिशू पेपर और फूलों के डिज़ाइन वाले टॉयलेट पेपर से नफरत है। क्या आपको यह पता नहीं था?”
“नहीं, मैंने नहीं किया,” मैंने कहा। “तुम उनसे इतनी नफरत क्यों करते हो?”

मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं उनसे नफरत क्यों करती हूँ? बस करती हूँ। तुम्हें टेलीफोन के कवर, फूलों से सजी थर्मस की बोतलें, रिवेट वाली बेल-बॉटम जींस और मेरे नेल पॉलिश करवाने से नफरत है। तुम भी नहीं बता सकते कि क्यों। ये तो बस पसंद की बात है। दरअसल, मैं उन सब बातों के पीछे के अपने कारण बता सकती थी, लेकिन ज़ाहिर है मैंने नहीं बताया। “ठीक है,” मैंने कहा। “यह तो बस पसंद की बात है। लेकिन क्या आप मुझे बता सकती हैं कि हमारी शादी के छह सालों में आपने कभी नीले टिशू पेपर या फूलों के डिज़ाइन वाला टॉयलेट पेपर नहीं खरीदा?”
“कभी नहीं। एक बार भी नहीं।”
"वास्तव में?"
“हां, बिल्कुल। मैं जो टिशू खरीदती हूं, वे या तो सफेद होते हैं, या पीले, या गुलाबी। और मैं कभी भी पैटर्न वाले टॉयलेट पेपर नहीं खरीदती। मुझे बस इस बात पर हैरानी है कि आप इतने समय तक मेरे साथ रहे और आपको इस बात का पता ही नहीं चला।”
मुझे भी यह जानकर बहुत हैरानी हुई कि छह लंबे वर्षों में मैंने कभी भी नीले रंग के टिशू पेपर या पैटर्न वाले टॉयलेट पेपर का इस्तेमाल नहीं किया था।
“और इसी सिलसिले में, मैं यह भी कहना चाहूंगी,” उसने आगे कहा। “मुझे हरी मिर्च के साथ भुना हुआ गोमांस बिल्कुल पसंद नहीं है। क्या आपको पता था?”
“नहीं, मैंने नहीं किया,” मैंने कहा।
“हाँ, यह सच है। और मुझसे यह मत पूछो कि क्यों। मुझे उन दोनों के एक ही बर्तन में खाना पकाने की गंध बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होती।”

"क्या आपका मतलब यह है कि आपने छह साल में कभी भी गोमांस और हरी मिर्च को एक साथ नहीं पकाया?"
उसने सिर हिलाया। “मैं सलाद में हरी मिर्च खा लूंगी। मैं प्याज के साथ गोमांस तल लूंगी। लेकिन मैंने गोमांस और हरी मिर्च को कभी एक साथ नहीं पकाया है।”
मैंने एक गहरी आह भरी।
“क्या आपको कभी यह अजीब नहीं लगा?” उसने पूछा।
“क्या आपको यह अजीब लगा? मैंने तो कभी ध्यान ही नहीं दिया,” मैंने कहा, और एक पल रुककर सोचने लगी कि क्या शादी के बाद मैंने कभी गोमांस और हरी मिर्च वाली कोई तली हुई चीज़ खाई भी थी। ज़ाहिर है, मुझे याद करना नामुमकिन था।
“तुम इतने समय से मेरे साथ रह रहे हो,” उसने कहा, “लेकिन तुमने मेरी तरफ शायद ही कभी ध्यान दिया हो। तुम सिर्फ अपने बारे में सोचते हो।”
“ज़रा एक मिनट रुकिए,” मैंने गैस बंद करते हुए और कड़ाही को चूल्हे पर रखते हुए कहा। “ज़रा ज़्यादा मत सोचिए। आप सही हो सकती हैं। शायद मैंने टिशू, टॉयलेट पेपर, बीफ़ और हरी मिर्च जैसी चीज़ों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मैंने आप पर ध्यान नहीं दिया। मुझे इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि मेरे टिशू किस रंग के हैं। ठीक है, काले रंग से थोड़ी दिक्कत हो सकती है, लेकिन सफ़ेद, नीला—कोई फ़र्क नहीं पड़ता। बीफ़ और हरी मिर्च के साथ भी ऐसा ही है। साथ में हों या अलग-अलग—किसे फ़र्क पड़ता है? बीफ़ और हरी मिर्च को भूनने की प्रथा अगर दुनिया से गायब भी हो जाए तो भी मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा। इसका आपसे, आपके व्यक्तित्व से, उस चीज़ से कोई लेना- देना नहीं है जो कुमिको को कुमिको बनाती है। क्या मैं गलत हूँ?”

मुझे जवाब देने के बजाय, उसने दो बड़े घूंटों में अपनी बीयर खत्म कर दी और खाली बोतल को घूरने लगी।
मैंने कड़ाही में रखा सारा सामान कूड़ेदान में फेंक दिया।
बीफ़, हरी मिर्च, प्याज़ और अंकुरित बीन्स सब बेकार हो गए। अजीब बात है। एक मिनट खाना था, अगले ही मिनट कूड़ेदान। मैंने एक बीयर खोली और पूरी पी ली।
“तुमने ऐसा क्यों किया?” उसने पूछा।
"तुम्हें इससे इतनी नफरत है।"
तो तुम इसे खा सकते थे।
"मुझे अचानक गोमांस और हरी मिर्च खाने की इच्छा नहीं रही।" उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "जो भी तुम्हें खुशी दे।"
उसने अपनी बाहें मेज पर रखीं और अपना चेहरा उन पर टिका दिया। कुछ देर तक वह उसी तरह रही। मैं देख सकता था कि वह न तो रो रही थी और न ही सो रही थी। मैंने चूल्हे पर रखे खाली कड़ाही को देखा, कुमिको को देखा और अपनी बियर पी ली। अजीब बात है। टॉयलेट पेपर और हरी मिर्च की परवाह कौन करता है?
लेकिन मैं उसके पास गया और उसके कंधे पर हाथ रखा। “ठीक है,” मैंने कहा। “अब मैं समझ गया। मैं अब कभी नीले टिशू पेपर या फूलों वाले टॉयलेट पेपर नहीं खरीदूंगा। वादा करता हूँ। मैं कल ये सामान सुपरमार्केट में वापस ले जाकर बदलवा लूंगा। अगर वे नहीं बदलेंगे, तो मैं इसे आंगन में जला दूंगा। राख को समुद्र में फेंक दूंगा। और अब कभी गोमांस और हरी मिर्च नहीं। कभी नहीं। जल्द ही बदबू चली जाएगी, और हमें इसके बारे में फिर कभी सोचना नहीं पड़ेगा। ठीक है?”
लेकिन फिर भी उसने कुछ नहीं कहा। मैं एक घंटे की सैर पर जाना चाहता था और वापस आने पर उसे खुश देखना चाहता था, लेकिन मुझे पता

था कि ऐसा होने की कोई संभावना नहीं है। मुझे इस समस्या का समाधान खुद ही निकालना होगा।
“देखो, तुम थके हुए हो,” मैंने कहा। “तो थोड़ा आराम कर लो और हम पिज्जा खाने बाहर चलते हैं। हमने आखिरी बार पिज्जा कब खाया था? एंकोवी और प्याज वाला। हम एक पिज्जा आधा-आधा बाँट लेंगे। कभी- कभार बाहर खाने में कोई बुराई नहीं है।”
इससे भी बात नहीं बनी। उसने अपना चेहरा अपनी बाहों पर ही दबाए रखा।
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। मैं बैठ गया और मेज के उस पार बैठी उसे घूरने लगा। उसके छोटे काले बालों में से एक कान दिख रहा था। उसमें एक ऐसी बाली थी जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थी, मछली के आकार की एक छोटी सी सोने की बाली। उसने ऐसी चीज़ कहाँ से खरीदी होगी? मुझे सिगरेट पीने की तलब हो रही थी। मैंने कल्पना की कि मैं अपनी जेब से सिगरेट और लाइटर निकाल रहा हूँ, एक फिल्टर सिगरेट अपने होठों के बीच रख रहा हूँ और जला रहा हूँ। मैंने गहरी साँस ली। भुने हुए गोमांस और सब्जियों की तेज़ गंध ने मुझे बुरी तरह जकड़ लिया। मुझे बहुत भूख लगी थी।
मेरी नज़र दीवार पर लगे कैलेंडर पर पड़ी। इस कैलेंडर में चंद्रमा की कलाएँ दिखाई गई थीं। पूर्णिमा नज़दीक आ रही थी। ज़ाहिर है: कुमिको के मासिक धर्म का समय आ गया था।
शादी के बाद ही मुझे यह एहसास हुआ कि मैं पृथ्वी का निवासी हूँ, जो सौर मंडल का तीसरा ग्रह है। मैं पृथ्वी पर रहता हूँ, पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है, और पृथ्वी के चारों ओर चंद्रमा घूमता है। चाहे मुझे पसंद हो या न हो, यह अनंत काल तक चलता रहेगा (या मेरे जीवनकाल की तुलना में जिसे अनंत काल कहा जा सकता है)। मेरी पत्नी के उनतीस दिनों के मासिक धर्म चक्र की पूर्ण सटीकता

ने मुझे इस बात को इस तरह से देखने के लिए प्रेरित किया। यह चंद्रमा के घटने-बढ़ने के साथ पूरी तरह से मेल खाता था। और उसके मासिक धर्म हमेशा कष्टदायक होते थे। मासिक धर्म शुरू होने से कुछ दिन पहले वह अस्थिर—यहाँ तक कि उदास—हो जाती थी। इसलिए उसका चक्र मेरा चक्र बन गया। मुझे महीने के गलत समय पर कोई अनावश्यक परेशानी न पैदा करने के लिए सावधान रहना पड़ता था। शादी से पहले, मैं चंद्रमा की कलाओं पर शायद ही ध्यान देता था। आकाश में चंद्रमा कभी-कभार दिख जाता था, लेकिन किसी भी समय उसका आकार मेरे लिए कोई मायने नहीं रखता था। अब चंद्रमा का आकार हमेशा मेरे दिमाग में बसा रहता था।
कुमिको से पहले मैं कई महिलाओं के साथ रह चुका था, और ज़ाहिर है, हर किसी को मासिक धर्म होता था। कुछ के साथ मुश्किल होती थी, कुछ के साथ आसान, कुछ तीन दिन में खत्म हो जाती थीं, कुछ को एक हफ़्ते से ज़्यादा समय लगता था, कुछ नियमित होती थीं, कुछ दस दिन तक लेट हो जाती थीं और मुझे बहुत डरा देती थीं; कुछ महिलाओं का मिजाज खराब रहता था, कुछ पर इसका कोई असर नहीं पड़ता था। लेकिन कुमिको से शादी करने से पहले, मैं कभी किसी महिला के साथ नहीं रहा था। तब तक, प्रकृति के चक्र का मतलब मौसमों का बदलना ही होता था। सर्दियों में मैं अपना कोट निकाल लेता था, गर्मियों में सैंडल पहनने का समय होता था। शादी के साथ, मुझे न केवल एक साथी मिला, बल्कि चक्रीयता की एक नई अवधारणा भी मिली: चंद्रमा की कलाएँ। केवल एक बार उसका मासिक धर्म कुछ महीनों के लिए रुका था, उस दौरान वह गर्भवती थी।
"मुझे माफ़ करना," उसने चेहरा ऊपर उठाते हुए कहा। "मेरा इरादा तुम पर गुस्सा निकालने का नहीं था। मैं थकी हुई हूँ और मेरा मूड खराब है।"

मैंने कहा, "कोई बात नहीं। इसे लेकर परेशान मत हो। जब तुम थके हुए हो तो किसी पर अपना गुस्सा निकाल लो। इससे तुम्हें अच्छा महसूस होगा।"
कुमिको ने एक लंबी, धीमी सांस ली, उसे थोड़ी देर रोके रखा और फिर छोड़ दिया।
“आपका क्या ख्याल है?” उसने पूछा।
"मेरा क्या?"
“जब आप थके होते हैं तो आप किसी पर अपना गुस्सा नहीं निकालते। मैं निकालता हूँ। ऐसा क्यों?”
मैंने अपना सिर हिलाया। "मैंने कभी ध्यान नहीं दिया," मैंने कहा। "मजेदार।"
"हो सकता है कि आपके अंदर एक गहरा कुआँ हो, और आप उसमें चिल्लाएँ, 'राजा के गधे के कान हैं!' और फिर सब ठीक हो जाएगा।"
मैंने कुछ देर तक इस बारे में सोचा। "शायद ऐसा ही हो," मैंने कहा।
कुमिको ने खाली बीयर की बोतल को फिर से देखा। उसने लेबल को देखा, फिर बोतल के मुंह को, और फिर उसने अपनी उंगलियों से बोतल का मुंह घुमाया।
“मुझे पीरियड्स आने वाले हैं,” उसने कहा। “मुझे लगता है इसीलिए मेरा मूड इतना खराब है।”
मैंने कहा, "मुझे पता है। इसे लेकर परेशान मत हो। तुम अकेली नहीं हो। पूर्णिमा की रात को बहुत सारे घोड़े मर जाते हैं।"
उसने बोतल से अपना हाथ हटाया, अपना मुंह खोला और मेरी तरफ देखा। "अब ये अचानक से कहां से आ गया?"
मैंने इसे कुछ दिन पहले अखबार में पढ़ा था। मैं आपको इसके बारे में बताना चाहता था, लेकिन भूल गया। यह किसी पशुचिकित्सक का

साक्षात्कार था। ऐसा लगता है कि घोड़े चंद्रमा की कलाओं से शारीरिक और भावनात्मक दोनों तरह से बहुत प्रभावित होते हैं। पूर्णिमा नजदीक आने पर उनकी मस्तिष्क तरंगें अनियंत्रित हो जाती हैं और उन्हें तरह-तरह की शारीरिक समस्याएं होने लगती हैं। फिर, पूर्णिमा की रात को, उनमें से बहुत से बीमार पड़ जाते हैं और उनमें से बड़ी संख्या में मर जाते हैं। वास्तव में कोई नहीं जानता कि ऐसा क्यों होता है, लेकिन आंकड़े इसकी पुष्टि करते हैं। घोड़े के पशुचिकित्सकों को पूर्णिमा की रातों में सोने का समय ही नहीं मिलता, वे इतने व्यस्त होते हैं। "दिलचस्प," कुमिको ने कहा।
“लेकिन सूर्य ग्रहण तो और भी बुरा होता है। घोड़ों के लिए तो किसी त्रासदी से कम नहीं। आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि पूर्ण सूर्य ग्रहण के दिन कितने घोड़े मर जाते हैं। खैर, मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि इस समय पूरी दुनिया में घोड़े मर रहे हैं। इसकी तुलना में, अगर आप अपना गुस्सा किसी पर निकालते हैं तो यह कोई बड़ी बात नहीं है। इसलिए इसे अपने ऊपर हावी न होने दें। मरते हुए घोड़ों के बारे में सोचें। सोचिए, पूर्णिमा की रात में किसी अस्तबल में भूसे पर पड़े हुए, मुँह से झाग निकलते हुए, दर्द से कराहते हुए।”
ऐसा लग रहा था कि वह कुछ पल रुककर अस्तबलों में मर रहे घोड़ों के बारे में सोच रही थी।
“खैर, मुझे यह स्वीकार करना होगा,” उसने निराशा भरे लहजे में कहा, “आप शायद किसी को भी कुछ भी बेच सकते हैं।”
“ठीक है,” मैंने कहा। “अपने कपड़े बदल लो और चलो पिज्जा खाने चलते हैं।”

•

उस रात, हमारे अंधेरे कमरे में, मैं कुमिको के बगल में लेटी छत को घूर रही थी और खुद से पूछ रही थी कि मैं इस औरत के बारे में सच में कितना जानती हूँ। घड़ी में रात के 2 बज रहे थे। वह गहरी नींद में सो रही थी। अंधेरे में, मैं नीले टिशू पेपर, डिज़ाइन वाले टॉयलेट पेपर, गोमांस और हरी मिर्च के बारे में सोच रही थी। मैं इतने समय से उसके साथ रह रही थी, इस बात से अनजान कि वह इन चीजों से कितनी नफरत करती थी। अपने आप में ये छोटी-मोटी बातें थीं। बेवकूफी भरी। हँसी-मज़ाक वाली बातें, बड़ा मुद्दा बनाने की ज़रूरत नहीं। हमारी थोड़ी कहा-सुनी हुई थी और हम कुछ दिनों में इसे भूल गए होते।
लेकिन यह अलग था। यह मुझे एक अजीब से नए तरीके से परेशान कर रहा था, जैसे गले में फंसी मछली की छोटी सी हड्डी मुझे कुरेद रही हो। शायद—बस शायद—यह जितना दिख रहा था उससे कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण था। शायद यही वह निर्णायक प्रहार था। या शायद यह उस निर्णायक प्रहार की शुरुआत मात्र थी। मैं शायद किसी विशाल चीज़ के प्रवेश द्वार पर खड़ा था, और उसके अंदर एक ऐसी दुनिया थी जो केवल कुमिको की थी, एक विशाल दुनिया जिसे मैंने कभी नहीं जाना था। मैंने उसे एक बड़े, अंधेरे कमरे के रूप में देखा। मैं वहाँ सिगरेट लाइटर पकड़े खड़ा था, जिसकी छोटी सी लौ मुझे कमरे का केवल एक छोटा सा हिस्सा दिखा रही थी।
क्या मैं कभी उसका पूरा जीवन देख पाऊँगा? या मैं बूढ़ा होकर मर जाऊँगा, बिना उसे ठीक से जाने? अगर यही मेरी नियति थी, तो इस वैवाहिक जीवन का क्या अर्थ? अगर मैं अपना जीवन एक अनजान साथी के साथ बिस्तर पर ही गुज़ार रहा हूँ, तो मेरे जीवन का क्या मतलब?

•

उस रात मैंने यही सोचा था और उसके बाद भी काफी समय तक समय-समय पर यही सोचता रहा। बहुत बाद में जाकर मुझे एहसास हुआ कि मैं समस्या की जड़ तक पहुँच गया था।

माल्टा कानो की टोपी

•

शेरबेट टोन और एलन गिन्सबर्ग और क्रूसेडर्स
मैं दोपहर का खाना बना रही थी तभी फोन की घंटी फिर बज उठी। मैंने ब्रेड के दो टुकड़े काट लिए थे, उन पर मक्खन और सरसों का पेस्ट लगाया, टमाटर के टुकड़े और पनीर भरकर, पूरे मिश्रण को काटने वाले बोर्ड पर रख दिया था, और जैसे ही मैं उसे आधा काटने वाली थी, तभी घंटी बजने लगी।
मैंने फोन को तीन बार बजने दिया और सैंडविच को बीच से काट लिया। फिर मैंने उसे एक प्लेट में रखा, चाकू को पोंछा और उसे कटलरी दराज में रख दिया, उसके बाद मैंने अपने लिए गर्म की हुई कॉफी का एक कप डाला।
फिर भी फोन बजता रहा। शायद पंद्रह बार। मैंने हार मानकर फोन उठा लिया। मैं जवाब देना नहीं चाहती थी, लेकिन शायद कुमिको का फोन होता।
“हैलो,” एक महिला की आवाज़ सुनाई दी, ऐसी आवाज़ जो मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी। यह न तो कुमिको की थी और न ही उस अजनबी महिला की जिसने मुझे उस दिन फोन किया था जब मैं स्पेगेटी बना रही थी। “मुझे आश्चर्य है कि क्या मैं श्री टोरन ओकाडा से बात कर रही हूँ?” आवाज़ ने ऐसे कहा जैसे कोई टेक्स्ट पढ़ रहा हो।
मैंने कहा, "तुम हो।"
"कुमिको ओकाडा का पति?"
“जी हां,” मैंने कहा। “कुमिको ओकाडा मेरी पत्नी है।”
“और श्रीमती ओकाडा के बड़े भाई का नाम नोबोरू वटाया है?”

मैंने सराहनीय आत्मसंयम दिखाते हुए कहा, "फिर से सही। नोबोरू वाटाया मेरी पत्नी के बड़े भाई हैं।"
“सर, मेरा नाम कानो है।”
मैंने उसके बोलने का इंतज़ार किया। कुमिको के बड़े भाई का अचानक ज़िक्र होने से मैं सतर्क हो गया था। फ़ोन के पास पड़ी पेंसिल के कुंद सिरे से मैंने अपनी गर्दन के पीछे खुजली की। पाँच सेकंड से ज़्यादा समय बीत गया, इस दौरान महिला ने कुछ नहीं कहा। रिसीवर से किसी भी तरह की कोई आवाज़ नहीं आई, मानो महिला ने माइक्रोफ़ोन को हाथ से ढक लिया हो और पास में किसी से बात कर रही हो।
मैंने चिंतित होकर कहा, "हैलो।"
“कृपया मुझे क्षमा करें, महोदय,” महिला की आवाज अचानक निकली। “ऐसी स्थिति में, मुझे आपसे बाद में बात करने की अनुमति लेनी होगी।”
“अब एक मिनट रुकिए,” मैंने कहा। “यह तो—”
उसी क्षण कनेक्शन कट गया। मैंने रिसीवर को घूरकर देखा, फिर उसे दोबारा कान से लगाया। इसमें कोई शक नहीं था: उस महिला ने फोन काट दिया था।
थोड़ी असंतुष्टि के साथ, मैं रसोई की मेज की ओर मुड़ा, अपनी कॉफ़ी पी और सैंडविच खाया। फ़ोन की घंटी बजने तक मैं कुछ सोच रहा था, लेकिन अब मुझे याद नहीं आ रहा था कि क्या था। मेरे दाहिने हाथ में चाकू था, सैंडविच को दो हिस्सों में काटने के लिए तैयार। मैं निश्चित रूप से कुछ सोच रहा था। कुछ महत्वपूर्ण। कुछ ऐसा जिसे मैं लंबे समय से याद करने की असफल कोशिश कर रहा था। यह मुझे ठीक उसी क्षण याद आया जब मैं सैंडविच को दो हिस्सों में काटने वाला था, लेकिन अब यह गायब हो गया था।

सैंडविच चबाते हुए, मैंने इसे वापस लाने की बहुत कोशिश की। लेकिन यह याद नहीं आया। यह मेरे दिमाग के उस अंधेरे कोने में लौट गया था जहाँ यह उस पल तक रह रहा था।

•

मैंने खाना खत्म कर लिया था और बर्तन साफ कर रही थी कि तभी फोन की घंटी बजी। इस बार मैंने तुरंत फोन उठा लिया।
मैंने फिर से एक महिला को "हैलो" कहते हुए सुना, लेकिन इस बार वह कुमिको थी।
“कैसी हो?” उसने पूछा। “लंच कर लिया?”
“हाँ। तुमने क्या खाया?”
“कुछ नहीं,” उसने कहा। “बहुत व्यस्त हूँ। शायद बाद में अपने लिए एक सैंडविच खरीद लूँगी। तुमने क्या खाया?”
मैंने अपने सैंडविच का वर्णन किया।
“ठीक है,” उसने बिना किसी ईर्ष्या के कहा। “ओह, वैसे मैं आज सुबह आपको बताना भूल गई थी। आपको मिस कानो का फोन आने वाला है।” मैंने कहा, “उसने पहले ही फोन किया था। कुछ मिनट पहले। उसने बस हमारे नाम लिए—मेरा, तुम्हारा और तुम्हारे भाई का—और फोन काट दिया। उसने यह नहीं बताया कि उसे क्या चाहिए था। आखिर बात क्या थी?”
"क्या उसने फोन काट दिया?"
उसने कहा कि वह दोबारा फोन करेगी।
“ठीक है, जब वह ऐसा करे, तो मैं चाहता हूँ कि तुम वह सब करो जो वह तुमसे कहे। यह बहुत ज़रूरी है। मुझे लगता है कि तुम्हें उससे मिलने जाना पड़ेगा।”
"आज कब?"

“क्या हुआ? क्या तुमने कुछ प्लान किया है? क्या तुम्हें किसी से मिलना है?”
“नहीं। कोई योजना नहीं।” न कल, न आज, न कल: बिल्कुल कोई योजना नहीं। “लेकिन ये कानो वाली औरत कौन है? और वो मुझसे क्या चाहती है? मुझे उसके दोबारा फोन करने से पहले कुछ पता होना चाहिए। अगर बात तुम्हारे भाई से जुड़ी किसी नौकरी की है, तो भूल जाओ। मैं उससे कोई वास्ता नहीं रखना चाहता। तुम ये तो जानते ही हो।” “नहीं, इसका नौकरी से कोई लेना-देना नहीं है,” उसने थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा। “यह बिल्ली के बारे में है।”
"बिल्ली?"
ओह, माफ़ कीजिए, मुझे जाना पड़ेगा। कोई मेरा इंतज़ार कर रहा है। मुझे ये कॉल करने में समय नहीं लगाना चाहिए था। जैसा कि मैंने कहा, मैंने अभी तक लंच भी नहीं किया है। क्या मैं फ़ोन रख दूं? मैं फ़्री होते ही आपको कॉल कर लूंगी।
“देखिए, मुझे पता है आप कितने व्यस्त हैं, लेकिन मुझे थोड़ी राहत दीजिए। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या चल रहा है। बिल्ली का क्या मामला है? क्या यह कानो की महिला—”
“बस वही करो जो वो तुमसे कहे, प्लीज़? समझे? ये बहुत ज़रूरी है। मैं चाहती हूँ कि तुम घर पर रहो और उसके फ़ोन का इंतज़ार करो। मुझे जाना होगा।”
और वह चली गई।

•

जब ढाई बजे फोन की घंटी बजी, मैं सोफे पर झपकी ले रहा था। पहले तो मुझे लगा कि अलार्म बज रहा है। मैंने बटन दबाने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन घड़ी वहां नहीं थी। मैं बिस्तर पर नहीं, बल्कि

सोफे पर था, और सुबह नहीं, बल्कि दोपहर का समय था। मैं उठा और फोन के पास गया।
मैंने कहा, "हैलो।"
“हैलो,” एक महिला की आवाज़ आई। ये वही महिला थी जिसने सुबह फोन किया था। “श्री तोरू ओकाडा?”
“वो मैं हूँ। तोरू ओकाडा।”
“सर, मेरा नाम कानो है,” उसने कहा।
“वह महिला जिसने पहले फोन किया था।”
“यह सही है। मुझे खेद है कि मैं बहुत असभ्य था। लेकिन श्रीमान ओकाडा, क्या आप आज दोपहर को खाली रहेंगे?”
"आप ऐसा कह सकते हैं।"
"अच्छा, तो ऐसे में, मुझे पता है कि यह बहुत अचानक है, लेकिन क्या आपको लगता है कि हमारे लिए मिलना संभव हो सकता है?"
“कब? आज? अभी?”
"हाँ।"
मैंने अपनी घड़ी देखी। वैसे तो मुझे देखने की ज़रूरत नहीं थी— मैंने तीस सेकंड पहले ही देखी थी—लेकिन बस यह सुनिश्चित करने के लिए। और अभी भी ढाई बज रहे थे।
मैंने पूछा, "क्या इसमें ज्यादा समय लगेगा?"
“मुझे नहीं लगता कि इतना लंबा समय लगेगा। हालांकि, मैं गलत भी हो सकता हूं। इस समय मेरे लिए पूरी सटीकता से कुछ कहना मुश्किल है। मुझे खेद है।”
चाहे कितना भी समय लगे, मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। कुमिको ने मुझे उस महिला की बात मानने को कहा था: यह एक गंभीर मामला था। अगर उसने कहा था कि यह गंभीर मामला है, तो यह वाकई गंभीर मामला था, और मुझे उसकी बात माननी ही थी।

मैंने कहा, "ठीक है। हम कहाँ मिलें?"
क्या आप संयोगवश शिनागावा स्टेशन के सामने स्थित पैसिफिक होटल से परिचित हैं?
"मैं करूँगा।"
“पहली मंजिल पर एक चायघर है। अगर आपको ठीक लगे तो मैं चार बजे वहाँ आपका इंतज़ार करूँगा, महोदय।”
“ठीक है,” मैंने कहा।
"मेरी उम्र इकत्तीस साल है, और मैं लाल विनाइल की टोपी पहनूंगा।"
बहुत बढ़िया। इस महिला के बात करने के तरीके में कुछ अजीब सा था, जिसने मुझे कुछ पल के लिए उलझन में डाल दिया। लेकिन मैं ठीक-ठीक यह नहीं बता सकता था कि उसमें अजीब क्या था। और न ही इकत्तीस साल की महिला के लाल विनाइल टोपी पहनने पर कोई कानून था।
मैंने कहा, "ठीक है। मुझे पूरा यकीन है कि मैं तुम्हें ढूंढ लूंगा।"
"श्री ओकाडा, मैं जानना चाहता हूँ कि क्या आप कृपया मुझे अपने मामले में मौजूद किसी बाहरी विशिष्ट लक्षण के बारे में बता सकते हैं।"
मैंने अपने अंदर मौजूद किसी भी "बाहरी विशिष्ट लक्षण" के बारे में सोचने की कोशिश की। क्या वास्तव में मुझमें कोई ऐसे लक्षण थे?
“मैं तीस साल का हूँ, मेरी लंबाई पाँच फुट नौ इंच है, मेरा वज़न एक सौ चालीस पाउंड है, मेरे बाल छोटे हैं, मैं चश्मा नहीं पहनता।” ये सब बातें बताते हुए मुझे लगा कि ये तो बस बाहरी तौर पर मुझे अलग करने वाली चीज़ें हैं। पैसिफिक होटल के चायघर में ऐसे पचास आदमी हो सकते थे। मैं पहले भी वहाँ जा चुका था, और वह

काफ़ी बड़ा होटल था। उसे कुछ और ज़्यादा ध्यान खींचने वाली चीज़ चाहिए थी। लेकिन मुझे कुछ सूझ नहीं रहा था। इसका मतलब यह नहीं कि मुझमें कोई अलग करने वाली चीज़ें नहीं थीं। मेरे पास माइल्स डेविस की ‘स्केचेस ऑफ स्पेन’ की हस्ताक्षरित प्रति थी। मेरी नाड़ी सामान्य रूप से सैंतालीस थी, और तेज़ बुखार में भी सत्तर से ज़्यादा नहीं होती थी। मैं बेरोज़गार था। मुझे करामाज़ोव भाइयों के सारे नाम पता थे। लेकिन इनमें से कोई भी अलग करने वाली चीज़ बाहरी नहीं थी।
“तुमने क्या पहना होगा?” उसने पूछा।
मैंने कहा, "मुझे नहीं पता। मैंने अभी तक फैसला नहीं किया है। यह सब अचानक हुआ है।"
“तो कृपया पोल्का डॉट वाली टाई पहनें,” उसने दृढ़ता से कहा। “क्या आपको लगता है कि आपके पास पोल्का डॉट वाली टाई होगी, महोदय?”
“मुझे लगता है मेरे पास है,” मैंने कहा। मेरे पास क्रीम रंग के छोटे-छोटे बिंदुओं वाली गहरे नीले रंग की टाई थी। कुमिको ने कुछ साल पहले मेरे जन्मदिन पर मुझे यह टाई दी थी।
“तो कृपया इसे पहन लीजिएगा,” उसने कहा। “चार बजे मुझसे मिलने के लिए धन्यवाद।” और उसने फोन काट दिया।

•

मैंने अलमारी खोली और अपनी पोल्का-डॉट टाई ढूंढी। टाई रैक पर उसका कोई नामोनिशान नहीं था। मैंने सभी दराजों में देखा। मैंने अलमारी में रखे सभी कपड़ों के डिब्बों में देखा। पोल्का-डॉट टाई कहीं नहीं मिली। ऐसा हो ही नहीं सकता था कि वो टाई हमारे घर में मेरे देखे बिना हो। कुमिको कपड़ों को रखने के मामले में इतनी परफेक्शनिस्ट थी कि मेरी टाई अपनी सामान्य जगह के अलावा

कहीं और हो ही नहीं सकती थी। और सच तो ये है कि मुझे सब कुछ - उसके और मेरे दोनों के कपड़े - एकदम सही क्रम में मिले। मेरी कमीज़ें करीने से तह करके दराज में रखी थीं। मेरे स्वेटर इतने सारे कपूर की गोलियों से भरे डिब्बों में थे कि ढक्कन खोलते ही मेरी आँखों में दर्द होने लगा। एक डिब्बे में वो कपड़े थे जो उसने हाई स्कूल में पहने थे: एक नेवी यूनिफॉर्म, एक फूलों वाली मिनीड्रेस, जिन्हें पुराने एल्बम में तस्वीरों की तरह संभाल कर रखा गया था। ऐसी चीज़ें रखने का क्या मतलब था? शायद वो उन्हें अपने साथ इसलिए लाई थी क्योंकि उसे उन्हें फेंकने का कभी कोई सही मौका नहीं मिला था। या शायद वो उन्हें बांग्लादेश भेजने की योजना बना रही थी। या फिर इन्हें भविष्य में सांस्कृतिक धरोहर के रूप में दान कर दें। खैर, मेरी बिंदीदार टाई कहीं नहीं मिली। अलमारी के दरवाजे पर हाथ रखकर, मैंने याद करने की कोशिश की कि मैंने आखिरी बार यह टाई कब पहनी थी। यह काफी स्टाइलिश टाई थी, बहुत ही बढ़िया डिज़ाइन की, लेकिन ऑफिस के लिए थोड़ी ज़्यादा ही थी। अगर मैं इसे पहनकर ऑफिस जाता, तो लंच के समय कोई न कोई इसकी तारीफ करता रहता, इसके रंग या इसके आकर्षक लुक की प्रशंसा करता। जो एक तरह की चेतावनी होती। जिस कंपनी में मैं काम करता था, वहाँ टाई की पसंद की तारीफ सुनना अच्छा नहीं माना जाता था। इसलिए मैंने इसे कभी वहाँ नहीं पहना। बल्कि, मैं इसे ज़्यादा निजी— भले ही कुछ औपचारिक—मौकों पर पहनता था: किसी कॉन्सर्ट में, या किसी अच्छे रेस्टोरेंट में डिनर पर, जब कुमिको चाहती थी कि हम "ठीक से कपड़े पहनें" (हालांकि ऐसे मौके ज़्यादा नहीं आते थे)। यह टाई मेरे नेवी सूट के साथ अच्छी लगती थी, और कुमिको को यह बहुत पसंद थी। फिर भी, मुझे याद नहीं आ रहा था कि मैंने इसे आखिरी बार कब पहना था।

मैंने अलमारी में फिर से सब कुछ देखा और हार मान ली। पता नहीं क्यों, मेरी बिंदीदार टाई गायब हो गई थी। चलो कोई बात नहीं। मैंने अपना नेवी सूट, नीली शर्ट और धारीदार टाई पहन ली। मुझे ज़्यादा चिंता नहीं थी। शायद वो मुझे देख न पाए, लेकिन मुझे बस एक तीस साल की महिला को लाल विनाइल टोपी में ढूंढना था।
बाहर जाने के लिए तैयार होकर मैं सोफे पर बैठ गया और दीवार को घूरने लगा। मैंने बहुत दिनों से सूट नहीं पहना था। आम तौर पर, तीन मौसमों में पहनने वाला यह नेवी ब्लू सूट इस मौसम के लिए थोड़ा भारी होता, लेकिन उस दिन बारिश हो रही थी और हवा में ठंडक थी। यही सूट मैंने अपने काम के आखिरी दिन (अप्रैल में) पहना था। अचानक मुझे ख्याल आया कि शायद किसी जेब में कुछ है। अंदर की जेब में मुझे पिछली शरद ऋतु की तारीख वाली एक रसीद मिली। यह किसी टैक्सी की रसीद थी, जिसका पैसा मुझे ऑफिस से वापस मिल सकता था। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। मैंने उसे मसलकर कूड़ेदान में फेंक दिया।
मैंने दो महीने पहले नौकरी छोड़ने के बाद से यह सूट एक बार भी नहीं पहना था। अब इतने लंबे अंतराल के बाद, मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी अनजान चीज़ के चंगुल में हूँ। यह भारी और कड़ा था, और मेरे शरीर के आकार से मेल नहीं खा रहा था। मैं कमरे में इधर-उधर घूमता रहा, शीशे के सामने रुककर आस्तीन और कोट के पिछले हिस्से को खींचकर उसे ठीक करने की कोशिश करता रहा। मैंने अपनी बाहें फैलाईं, गहरी साँस ली और कमर से आगे झुककर यह देखने की कोशिश की कि क्या पिछले दो महीनों में मेरे शरीर का आकार बदल गया है। मैं फिर से सोफे पर बैठ गया, लेकिन फिर भी मुझे असहज महसूस हो रहा था।

इस वसंत ऋतु तक, मैं हर दिन सूट पहनकर काम पर जाता था और मुझे कभी अजीब नहीं लगता था। मेरी कंपनी का ड्रेस कोड काफी सख्त था, जिसमें मुझ जैसे निचले स्तर के क्लर्कों को भी सूट पहनना अनिवार्य था। मैंने इस बारे में कभी कुछ नहीं सोचा था।
लेकिन अब, सूट पहनकर सोफे पर बैठना भी किसी अनैतिक कार्य जैसा लगने लगा था, मानो कोई फर्जी बायोडाटा बना रहा हो या खुद को महिला बता रहा हो। अपराधबोध से ग्रस्त होकर, मुझे सांस लेना भी मुश्किल होता जा रहा था।
मैं सामने वाले हॉल में गया, शेल्फ पर रखे अपने भूरे जूते उठाए और शू हॉर्न की मदद से उन्हें पहन लिया। उन पर धूल की एक पतली परत चिपकी हुई थी।

•

जैसा कि बाद में पता चला, मुझे उस महिला को ढूंढने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वह खुद मुझे ढूंढ लाई। जब मैं चायघर पहुँचा, तो मैंने लाल टोपी वाली महिला को ढूंढने के लिए चारों ओर जल्दी से चक्कर लगाया। वहाँ लाल टोपी वाली कोई महिला नहीं थी। मेरी घड़ी में चार बजने में दस मिनट बचे थे। मैं बैठ गया, जो पानी वे लाए थे उसे पिया और एक कप कॉफ़ी मंगवाई। वेट्रेस के मेरे टेबल से जाते ही मैंने अपने पीछे एक महिला को कहते सुना, "आप श्री तोरू ओकाडा होंगे।" चौंककर मैं मुड़ गया। कमरे का जायज़ा लेने के बाद से तीन मिनट भी नहीं बीते थे।
सफेद जैकेट के नीचे उसने पीले रंग का रेशमी ब्लाउज पहना था और सिर पर लाल विनाइल की टोपी थी। सहज ही मैं खड़ा हो गया और उसकी ओर देखने लगा। "सुंदर" शब्द उस पर पूरी तरह से लागू होता था। कम से कम वह उसकी फोन पर सुनाई देने वाली आवाज़ से कहीं ज़्यादा सुंदर थी। उसका शरीर सुडौल और आकर्षक था और वह मेकअप का

इस्तेमाल बहुत कम करती थी। उसे कपड़े पहनने का तरीका आता था— सिवाय उस लाल टोपी के। उसकी जैकेट और ब्लाउज की सिलाई बहुत अच्छी थी। जैकेट के कॉलर पर पंख के आकार का सोने का ब्रोच चमक रहा था। उसे देखकर कोई भी कॉर्पोरेट सेक्रेटरी समझ सकता था। बाकी कपड़ों पर इतना ध्यान देने के बाद, उस बिल्कुल बेमेल लाल विनाइल की टोपी को क्यों पहना था, यह मेरी समझ से परे था। शायद वह हमेशा इसे पहनती थी ताकि ऐसे हालातों में लोग उसे आसानी से पहचान सकें। अगर ऐसा है, तो यह बुरा विचार नहीं था। अगर मकसद अजनबियों से भरे कमरे में उसे अलग दिखाना था, तो टोपी ने अपना काम बखूबी किया।
वह मेरी कुर्सी के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई, और मैं फिर से बैठ गया।
मैंने कहा, "मुझे हैरानी है कि आपको कैसे पता चला कि मैं ही हूँ। मुझे अपनी बिंदीदार टाई नहीं मिल रही थी। मुझे पता है कि वह कहीं तो है, लेकिन मिल नहीं रही थी। इसीलिए मैंने यह धारीदार टाई पहनी थी। मुझे लगा था कि मैं आपको ढूंढ ही लूंगा, लेकिन आपको कैसे पता चला कि मैं ही हूँ?"
“मुझे पता था कि तुम ही हो,” उसने अपना सफेद पेटेंट-लेदर बैग मेज पर रखते हुए कहा। उसने अपनी लाल विनाइल टोपी उतारकर बैग के ऊपर रख दी, जिससे बैग पूरी तरह ढक गया। मुझे लगा जैसे वह कोई जादू दिखाने वाली है: जैसे ही वह टोपी उठाएगी, बैग गायब हो जाएगा। “लेकिन मैंने गलत टाई पहनी हुई थी,” मैंने विरोध किया।
“गलत टाई?” उसने मेरी टाई की तरफ हैरानी भरे भाव से देखा, मानो कह रही हो, ये अजीबोगरीब इंसान क्या कह रहा है? फिर उसने सिर हिलाया। “कोई बात नहीं। चिंता मत कीजिए।”

उसकी आँखों में कुछ अजीब सा था। उनमें रहस्यमय ढंग से गहराई का अभाव था। आँखें सुंदर तो थीं, लेकिन ऐसा लगता था मानो वे किसी चीज़ को देख ही नहीं रही हों। वे बिल्कुल सतही थीं, जैसे काँच की आँखें हों। लेकिन ज़ाहिर है, वे काँच की आँखें नहीं थीं। वे हिलती थीं और पलकें झपकाती थीं।
इतने व्यस्त चायघर में भीड़ में से वो मुझे कैसे पहचान पाई? लगभग हर कुर्सी भरी हुई थी, और उनमें से कई पर मेरी उम्र के पुरुष बैठे थे। मैं उससे इसका कारण पूछना चाहता था, लेकिन मैंने खुद को रोक लिया। बेहतर होगा कि बेवजह के मुद्दे न उठाऊं।
उसने पास से गुजर रहे एक वेटर को आवाज़ दी और पेरिएर (एक प्रकार का पेय) माँगा। वेटर ने कहा कि उनके पास पेरिएर नहीं है, लेकिन वह उसे टॉनिक वॉटर ला सकता है। उसने एक पल सोचा और उसका सुझाव मान लिया। टॉनिक वॉटर आने तक वह चुप रही, और मैंने भी ऐसा ही किया।
एक पल रुककर उसने अपनी लाल टोपी उठाई और उसके नीचे रखे पर्स का हुक खोला। पर्स से उसने एक चमकदार काले चमड़े का डिब्बा निकाला, जो कैसेट टेप से थोड़ा छोटा था। यह एक बिजनेस कार्ड होल्डर था। पर्स की तरह इसमें भी एक हुक था—मैंने पहली बार किसी कार्ड होल्डर में हुक देखा था। उसने डिब्बे से एक कार्ड निकाला और मुझे दे दिया। मैंने अपनी जेब में अपना कार्ड ढूंढने के लिए हाथ डाला, तभी मुझे एहसास हुआ कि मेरे पास कोई कार्ड नहीं है।
उसका नाम कार्ड पतले प्लास्टिक का बना था, और उसमें से हल्की अगरबत्ती की खुशबू आ रही थी। जब मैंने उसे नाक के पास लाया, तो खुशबू और तेज़ हो गई। इसमें कोई शक नहीं था: यह अगरबत्ती ही थी। कार्ड पर छोटे-छोटे, गहरे काले अक्षरों में एक पंक्ति लिखी थी: माल्टा कानो

माल्टा? मैंने कार्ड को पलट कर देखा। वह खाली था।
जब मैं वहाँ बैठकर इस नाम कार्ड के अर्थ के बारे में सोच रहा था, तभी वेटर आया और उसके सामने बर्फ से भरा गिलास रखा, फिर उसे आधा टॉनिक वॉटर से भर दिया। गिलास में नींबू का एक टुकड़ा भी था। वेट्रेस अपनी ट्रे में चांदी के रंग की कॉफी पॉट लेकर आई। उसने मेरे सामने एक कप रखा और उसे कॉफी से भर दिया। जैसे कोई चुपके से किसी के हाथ में अशुभ संकेत थमा रहा हो, वैसे ही उसने बिल मेज पर रखा और चली गई।
माल्टा कानो ने मुझसे कहा, "यह खाली है।"
मैं अब भी उसके नाम कार्ड के पीछे वाले हिस्से को घूर रहा था। "बस मेरा नाम काफी है। मुझे अपना पता या टेलीफोन नंबर देने की कोई जरूरत नहीं है। मुझे कोई फोन नहीं करता। मैं ही फोन करता हूँ।"
“मैं समझ गया,” मैंने कहा। यह अर्थहीन प्रतिक्रिया मेज के ऊपर हवा में ऐसे मंडराती रही जैसे गुलिवर ट्रेवल्स में तैरता हुआ द्वीप।
दोनों हाथों से गिलास पकड़े हुए, उसने स्ट्रॉ से एक छोटा सा घूंट लिया। उसके चेहरे पर हल्की सी शिकन आई, जिसके बाद उसने गिलास को एक तरफ फेंक दिया, मानो उसमें उसकी कोई दिलचस्पी ही न रह गई हो।
“माल्टा मेरा असली नाम नहीं है,” माल्टा कानो ने कहा। “कानो तो असली नाम है, लेकिन माल्टा एक पेशेवर नाम है जो मैंने माल्टा द्वीप से लिया है। क्या आप कभी माल्टा गए हैं, श्री ओकाडा?” मैंने कहा कि मैं नहीं गया था। मैं कभी माल्टा नहीं गया था, और निकट भविष्य में भी माल्टा जाने की मेरी कोई योजना नहीं थी। वहाँ जाने का ख्याल भी मेरे मन में कभी नहीं आया था। माल्टा के

बारे में मुझे बस इतना ही पता था कि मैंने हर्ब अल्बर्ट का गाना "द सैंड्स ऑफ माल्टा" सुना था, जो कि एक बेहद घटिया गाना था। “मैं एक बार माल्टा में रही थी,” उसने कहा। “तीन साल तक। वहाँ का पानी बहुत खराब है। पीने लायक नहीं। बिल्कुल खारे पानी जैसा। और वहाँ जो रोटी बनती है वो नमकीन होती है। नमक डालने की वजह से नहीं, बल्कि जिस पानी से रोटी बनती है वो नमकीन होता है। वैसे रोटी बुरी नहीं होती। मुझे माल्टा की रोटी काफी पसंद है।” मैंने सिर हिलाया और अपनी कॉफी की चुस्की ली।
“भले ही इसका स्वाद कितना भी खराब हो, माल्टा के एक खास स्थान का पानी शरीर के तत्वों पर अद्भुत प्रभाव डालता है। यह बहुत ही खास — यहाँ तक कि रहस्यमय—पानी है, और यह द्वीप पर केवल एक ही जगह पर उपलब्ध है। यह झरना पहाड़ों में है, और वहाँ पहुँचने के लिए आपको तलहटी में स्थित एक गाँव से कई घंटों की चढ़ाई करनी पड़ती है। झरने के स्थान से पानी का परिवहन नहीं किया जा सकता। अगर इसे कहीं और ले जाया जाता है, तो इसकी शक्ति कम हो जाती है। इसे पीने का एकमात्र तरीका है कि आप स्वयं वहाँ जाएँ। इसका उल्लेख धर्मयुद्ध के समय के दस्तावेजों में मिलता है। वे इसे आध्यात्मिक जल कहते थे। एलन गिन्सबर्ग एक बार इसे पीने के लिए वहाँ आए थे। कीथ रिचर्ड्स भी आए थे। मैं वहाँ तीन साल तक रहा, पहाड़ की तलहटी में स्थित उस छोटे से गाँव में। मैंने सब्जियाँ उगाईं और बुनाई सीखी। मैं हर दिन झरने तक चढ़ता और वह खास पानी पीता था। 1976 से 1979 तक। एक बार, पूरे एक हफ्ते तक, मैंने केवल वही पानी पिया और कुछ नहीं खाया। आपको पूरे एक हफ्ते तक उस पानी के अलावा कुछ भी अपने मुँह में नहीं डालना चाहिए। यह एक प्रकार का अनुशासन है।” वहाँ इसकी आवश्यकता होती है। मेरा मानना है कि इसे धार्मिक तपस्या कहा जा सकता है। इस तरह आप अपने शरीर को

शुद्ध करते हैं। मेरे लिए यह वास्तव में एक अद्भुत अनुभव था। इसी कारण मैंने जापान लौटने पर पेशेवर उद्देश्यों के लिए माल्टा नाम चुना।
“क्या मैं आपसे आपका पेशा पूछ सकता हूँ?”
उसने सिर हिलाया। “सच कहूँ तो, यह मेरा पेशा नहीं है। मैं अपने काम के लिए पैसे नहीं लेती। मैं एक सलाहकार हूँ। मैं लोगों से शरीर के तत्वों के बारे में बात करती हूँ। मैं पानी पर भी शोध कर रही हूँ, जिसका शरीर के तत्वों पर लाभकारी प्रभाव पड़ता है। पैसा कमाना मेरे लिए कोई समस्या नहीं है। मेरे पास ज़रूरत की सारी संपत्ति है। मेरे पिता डॉक्टर हैं, और उन्होंने मेरी छोटी बहन और मुझे एक तरह के लिविंग ट्रस्ट के तहत शेयर और अचल संपत्ति दी है। एक अकाउंटेंट हमारे लिए इनका प्रबंधन करता है। इनसे हमें हर साल अच्छी आमदनी होती है। मैंने कुछ किताबें भी लिखी हैं जिनसे थोड़ी-बहुत आमदनी होती है। शरीर के तत्वों पर मेरा काम पूरी तरह से गैर-लाभकारी है। इसीलिए मेरे कार्ड पर न तो पता है और न ही फ़ोन नंबर। कॉल मैं खुद करती हूँ।”
मैंने सिर हिलाया, लेकिन यह महज़ सिर हिलाने की एक औपचारिक क्रिया थी: मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रही है। मैं उसके बोले गए हर शब्द को समझ सकता था, लेकिन उनका पूरा अर्थ समझना मेरे लिए नामुमकिन था।
शरीर के अंग?
एलन गिन्सबर्ग?
मेरी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जिनके पास कोई विशेष अंतर्ज्ञान शक्ति होती है, लेकिन जितना अधिक समय मैंने इस महिला के साथ बिताया, उतना ही मुझे कुछ गड़बड़ होने का आभास होने लगा।

मैंने कहा, “मुझे माफ़ करना, लेकिन मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप मुझे सब कुछ शुरू से, एक-एक करके समझाएँ। मैंने कुछ देर पहले अपनी पत्नी से बात की थी, और उसने बस इतना कहा कि मुझे आपसे मिलना चाहिए और हमारी लापता बिल्ली के बारे में बात करनी चाहिए। सच कहूँ तो, मुझे आपकी बात पूरी तरह समझ नहीं आई। क्या इसका बिल्ली से कोई संबंध है?”
“जी हां, बिल्कुल,” उसने कहा। “लेकिन इससे पहले कि मैं उस बारे में बात करूं, श्री ओकाडा, मैं आपको कुछ बताना चाहती हूं।” उसने अपने पर्स का धातु का कुंडा फिर से खोला और एक सफेद लिफाफा निकाला। लिफाफे में एक तस्वीर थी, जो उसने मुझे दे दी। “मेरी बहन,” उसने कहा। यह दो महिलाओं की रंगीन तस्वीर थी। एक माल्टा कानो थी, और तस्वीर में भी उसने टोपी पहन रखी थी—पीली बुनाई वाली टोपी। एक बार फिर, यह उसके पहनावे से बेमेल लग रही थी। उसकी बहन—मुझे लगा कि यह वही छोटी बहन है जिसका उसने जिक्र किया था— ने हल्के रंग का सूट और उससे मिलती-जुलती टोपी पहन रखी थी, जो साठ के दशक की शुरुआत में काफी लोकप्रिय थी। मुझे याद आया कि उस समय ऐसे रंगों को “शरबत टोन” कहा जाता था। हालांकि, एक बात निश्चित थी: इन बहनों को टोपियों का बहुत शौक था। छोटी बहन का हेयरस्टाइल बिल्कुल जैकलीन कैनेडी जैसा था, व्हाइट हाउस के दिनों में, बालों में खूब सारा हेयर स्प्रे लगा हुआ था। उसने थोड़ा ज्यादा मेकअप किया हुआ था, लेकिन उसे खूबसूरत कहा जा सकता था। उसकी उम्र बीस से पच्चीस के बीच थी। मैंने तस्वीर माल्टा कानो को वापस सौंप दी, जिसने उसे वापस उसके लिफाफे में और लिफाफे को हैंडबैग में रखकर उसका कुंडी बंद कर दिया।
“मेरी बहन मुझसे पांच साल छोटी है,” उसने कहा। “नोबोरू वटाया ने उसके साथ दुष्कर्म किया। उसके साथ बेरहमी से बलात्कार किया।”

बहुत बुरा। मैं वहाँ से तुरंत निकलना चाहता था। लेकिन मैं यूँ ही उठकर जा नहीं सकता था। मैंने अपनी जैकेट की जेब से एक रुमाल निकाला, उससे अपना मुँह पोंछा और वापस उसी जेब में रख दिया। फिर मैंने अपना गला साफ़ किया।
“यह तो बहुत दुखद है,” मैंने कहा। “मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता, लेकिन अगर उसने आपकी बहन को चोट पहुँचाई है, तो मेरी हार्दिक संवेदनाएँ आपके साथ हैं। हालाँकि, मुझे आपको यह बताना होगा कि मेरे जीजाजी और मेरा आपस में कोई संबंध नहीं है। इसलिए यदि आप किसी तरह की उम्मीद कर रहे हैं तो...”
“बिल्कुल नहीं, श्री ओकाडा,” उसने स्पष्ट कहा। “मैं आपको किसी भी तरह से ज़िम्मेदार नहीं ठहराती। अगर इस घटना के लिए किसी को ज़िम्मेदार ठहराया जाना चाहिए, तो वह मैं हूँ। लापरवाही के लिए। उसकी रक्षा न कर पाने के लिए, जैसा मुझे करना चाहिए था। दुर्भाग्यवश, कुछ घटनाओं के कारण ऐसा करना मेरे लिए असंभव हो गया। श्री ओकाडा, ऐसी चीजें हो सकती हैं। जैसा कि आप जानते हैं, हम एक हिंसक और अराजक दुनिया में रहते हैं। और इस दुनिया में, ऐसी जगहें भी हैं जो इससे भी अधिक हिंसक, इससे भी अधिक अराजक हैं। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं, श्री ओकाडा? जो हुआ सो हुआ। मेरी बहन अपने घावों से, अपने अपमान से उबर जाएगी। उसे उबरना ही होगा। शुक्र है कि वे जानलेवा नहीं थे। जैसा कि मैंने अपनी बहन से कहा है, इससे भी कहीं अधिक बुरा होने की संभावना थी। मुझे सबसे ज़्यादा चिंता उसके शरीर के अंगों की है।”
मैंने कहा, "उसके शरीर के अंग।" यह "शरीर के अंग" वाली बात स्पष्ट रूप से उसकी रचनाओं का एक निरंतर विषय था।
“मैं आपको विस्तार से यह नहीं समझा सकता कि ये सभी परिस्थितियाँ आपस में कैसे जुड़ी हैं। यह एक बहुत लंबी और जटिल कहानी होगी, और

यद्यपि मैं आपका अनादर नहीं करना चाहता, श्री ओकाडा, इस समय आपके लिए इस कहानी के सही अर्थ को समझना लगभग असंभव होगा, क्योंकि इसमें वह दुनिया शामिल है जिससे हम पेशेवर तौर पर निपटते हैं। मैंने आपको यहाँ इस संबंध में कोई शिकायत करने के लिए आमंत्रित नहीं किया है। आप निश्चित रूप से जो कुछ भी हुआ है उसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं। मैं बस आपको यह बताना चाहता था कि, भले ही यह अस्थायी स्थिति हो, मेरी बहन के साथ श्री वटाया ने दुर्व्यवहार किया है। आप दोनों का भविष्य में कभी न कभी एक-दूसरे से संपर्क हो सकता है। जैसा कि मैंने पहले बताया, वह मेरी सहायक है। ऐसे समय में, आपके लिए यह बेहतर होगा कि आप उसके और श्री वटाया के बीच हुई घटना से अवगत रहें और यह समझें कि ऐसी बातें हो सकती हैं।”
कुछ देर सन्नाटा छा गया। माल्टा कानो ने मेरी तरफ ऐसे देखा मानो कह रही हो, "कृपया मैंने जो कुछ कहा है उस पर विचार करो।" और मैंने वैसा ही किया। नोबोरू वटाया द्वारा माल्टा कानो की बहन के साथ बलात्कार के बारे में। उस घटना और शरीर के अंगों के बीच संबंध के बारे में। और उन दोनों का हमारी बिल्ली के गायब होने से संबंध के बारे में।
मैंने हिम्मत करके पूछा, "क्या मैं यह समझ रहा हूँ कि आप या आपकी बहन इस मामले में औपचारिक शिकायत दर्ज कराने का इरादा नहीं रखतीं... पुलिस के पास जाने का इरादा नहीं रखतीं...?"
“नहीं, बिल्कुल नहीं,” माल्टा कानो ने भावहीन चेहरे से कहा। “सच कहें तो, हम किसी को ज़िम्मेदार नहीं ठहरा रहे हैं। हम बस यह जानना चाहते हैं कि आखिर ऐसा क्यों हुआ। जब तक हम इस सवाल का जवाब नहीं ढूंढ लेते, तब तक इससे भी बुरी घटना होने की पूरी संभावना है।”

यह सुनकर मुझे थोड़ी राहत मिली। ऐसा नहीं है कि नोबोरू वटाया को बलात्कार के आरोप में दोषी ठहराकर जेल भेज दिया जाता तो मुझे ज़रा भी फ़र्क पड़ता। ऐसा किसी भले इंसान के साथ ही हो सकता था। लेकिन कुमिको का भाई काफ़ी मशहूर था। उसकी गिरफ़्तारी और मुक़दमे की ख़बरें ज़रूर सुर्खियों में आतीं, और यह कुमिको के लिए बहुत बड़ा सदमा होता। कम से कम अपनी मानसिक सेहत के लिए तो मैं यही चाहती थी कि यह सब मामला यहीं खत्म हो जाए।
माल्टा कानो ने कहा, "निश्चिंत रहिए, मैंने आज आपसे मिलने का अनुरोध केवल लापता बिल्ली के बारे में किया है। श्री वटाया ने इसी मामले पर मुझसे सलाह मांगी थी। श्रीमती ओकाडा ने उनसे इस बारे में परामर्श लिया था, और उन्होंने बदले में मुझसे परामर्श लिया।"
इससे बहुत कुछ स्पष्ट हो गया। माल्टा कानो किसी प्रकार की भविष्यवक्ता या संदेशवाहक थी, और उन्होंने बिल्ली के ठिकाने के बारे में उससे सलाह ली थी। वटाया परिवार इस तरह की चीजों में विश्वास करता था—भविष्यवाणी और घर की "शारीरिक बनावट" वगैरह। मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं थी: लोगों को जो चाहे मानने की स्वतंत्रता थी। लेकिन उसे अपनी आध्यात्मिक सलाहकार की छोटी बहन का बलात्कार क्यों करना पड़ा? बेवजह इतना बवाल क्यों खड़ा करना पड़ा?
मैंने पूछा, "क्या यही आपकी विशेषज्ञता का क्षेत्र है? लोगों को चीजें ढूंढने में मदद करना?"
उसने अपनी उन भावहीन आँखों से मुझे घूरा, मानो किसी खाली घर की खिड़की से झाँक रही हो। उसकी आँखों के भाव से ऐसा लग रहा था कि वह मेरे प्रश्न का अर्थ समझ नहीं पाई थी।

सवाल का जवाब दिए बिना उसने कहा, "आप बहुत ही अजीब जगह पर रहते हैं, है ना, श्री ओकाडा?"
“क्या मैं?” मैंने कहा। “किस तरह से अजीब?”
जवाब देने के बजाय, उसने अपने लगभग बिना छुए टॉनिक वॉटर के गिलास को खुद से छह-आठ इंच और दूर सरका दिया। "बिल्लियाँ बहुत संवेदनशील प्राणी होती हैं, तुम्हें पता है।"
हम दोनों के बीच फिर से सन्नाटा छा गया।
“तो हमारा घर अजीब है, और बिल्लियाँ संवेदनशील जानवर होती हैं,” मैंने कहा। “ओह… लेकिन हम दोनों और बिल्ली यहाँ बहुत समय से रह रहे हैं। अब अचानक ही इसने हमें छोड़कर जाने का फैसला क्यों किया? पहले क्यों नहीं गई?”
“मैं आपको यह नहीं बता सकता। शायद प्रवाह बदल गया हो। शायद किसी चीज ने प्रवाह को अवरुद्ध कर दिया हो।”
"प्रवाह।"
मुझे अभी तक यह नहीं पता कि आपकी बिल्ली जीवित है या नहीं, लेकिन मैं एक बात निश्चित रूप से कह सकता हूँ: वह अब आपके घर के आसपास नहीं है। आपको वह बिल्ली उस इलाके में कभी नहीं मिलेगी।
मैंने अपना कप उठाया और अपनी अब गुनगुनी हो चुकी कॉफी की एक घूंट ली। चायघर की खिड़कियों के बाहर हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। आसमान काले, नीचे लटके बादलों से घिरा हुआ था। बाहर बने पैदल पुल पर लोगों और छतरियों का एक उदास जुलूस ऊपर-नीचे आ-जा रहा था।
“मुझे अपना हाथ दो,” उसने कहा।
मैंने अपना दाहिना हाथ मेज पर हथेली ऊपर की ओर करके रखा, यह सोचकर कि वह मेरी हथेली पढ़ने की योजना बना रही है। लेकिन उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और अपनी हथेली मेरी हथेली से सटा दी। फिर

उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और एकदम स्थिर खड़ी रही, मानो किसी बेवफा प्रेमी को चुपचाप फटकार रही हो। वेट्रेस आई और मेरा कप फिर से भर दिया, मानो उसने माल्टा कानो और मुझे कुछ करते हुए देखा ही न हो। पास की मेजों पर बैठे लोग हमारी तरफ चोरी-छिपे देख रहे थे। मैं लगातार यही उम्मीद करता रहा कि आस-पास मेरा कोई परिचित न हो।
माल्टा कानो ने कहा, "मैं चाहता हूं कि आप अपने मन में उस एक चीज की कल्पना करें जो आपने आज यहां आने से पहले देखी थी।"
“एक बात?” मैंने पूछा।
बस एक बात।
मुझे कुमिको के कपड़ों के डिब्बे में रखी फूलों वाली मिनीड्रेस याद आ गई। आखिर उसी का ख्याल मेरे मन में क्यों आया, मुझे खुद भी नहीं पता। बस आ गया।
हमने पांच मिनट तक उसी तरह अपने हाथ एक-दूसरे से सटाए रखे—ये पांच मिनट मुझे बहुत लंबे लगे, ऐसा इसलिए नहीं कि लोग मुझे घूर रहे थे, बल्कि इसलिए कि माल्टा कानो के हाथ का स्पर्श मुझे बेचैन कर रहा था। उसका हाथ छोटा था, न गर्म, न ठंडा। उसमें न तो प्रेमी के हाथ का अंतरंग स्पर्श था, न ही डॉक्टर के हाथ का औपचारिक स्पर्श। उसका मुझ पर वही असर हुआ जो उसकी आँखों का हुआ था, मुझे एक खाली घर में बदल दिया। मुझे खालीपन महसूस हुआ: न फर्नीचर, न पर्दे, न कालीन। बस एक खाली पात्र। आखिरकार, माल्टा कानो ने अपना हाथ मेरे हाथ से अलग किया और कई गहरी साँसें लीं। फिर उसने कई बार सिर हिलाया।
“श्री ओकाडा,” उसने कहा, “मुझे विश्वास है कि आप अपने जीवन के एक ऐसे चरण में प्रवेश कर रहे हैं जिसमें कई अलग-अलग चीजें घटित होंगी। आपकी बिल्ली का गायब होना तो बस शुरुआत है।”

मैंने कहा, "अलग-अलग बातें। अच्छी बातें या बुरी बातें?"
वह सोच में डूबी हुई सी सिर झुकाकर बोली, “अच्छी बातें और बुरी बातें। बुरी बातें जो पहले अच्छी लगती हैं, और अच्छी बातें जो पहले बुरी लगती हैं।”
मैंने कहा, "मुझे तो यह बहुत सामान्य लग रहा है। क्या आपके पास कोई और ठोस जानकारी नहीं है?"
“हाँ, मुझे लगता है कि मैं जो कह रही हूँ वह बहुत सामान्य लग रहा है,” माल्टा कानो ने कहा। “लेकिन आखिरकार, श्री ओकाडा, जब कोई चीजों के सार की बात करता है, तो अक्सर ऐसा होता है कि वह केवल सामान्य बातें ही कर सकता है। ठोस चीजें निश्चित रूप से ध्यान आकर्षित करती हैं, लेकिन वे अक्सर तुच्छ बातों से ज्यादा कुछ नहीं होतीं। छोटी-मोटी बातें। जितना अधिक कोई दूर तक देखने की कोशिश करता है, चीजें उतनी ही सामान्य होती जाती हैं।”
मैंने चुपचाप सिर हिलाया—मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह किस बारे में बात कर रही थी।
“क्या मुझे आपको दोबारा कॉल करने की अनुमति है?” उसने पूछा। “ज़रूर,” मैंने कहा, हालाँकि वास्तव में मैं किसी से भी फ़ोन आने की इच्छा नहीं रखता था। “ज़रूर” ही एकमात्र उत्तर था जो मैं दे सकता था।
उसने मेज से अपनी लाल विनाइल टोपी उठाई, उसके नीचे छिपा हुआ हैंडबैग निकाला और खड़ी हो गई। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं इस पर क्या प्रतिक्रिया दूं, इसलिए मैं वहीं बैठा रहा।
माल्टा कानो ने अपनी लाल टोपी पहनने के बाद मेरी ओर देखते हुए कहा, "मेरे पास आपके साथ साझा करने के लिए एक छोटी सी जानकारी है। आपको अपनी पोल्का-डॉट टाई मिल जाएगी, लेकिन आपके घर में नहीं।"

ऊंचे टावर और गहरे कुएं (या, नोमोनहान से दूर)

•

घर लौटकर मैंने कुमिको को बहुत खुश पाया। बेहद खुश। माल्टा कानो से मिलने के बाद जब मैं घर पहुँचा तो लगभग छह बज चुके थे, यानी मेरे पास ठीक से खाना बनाने का समय नहीं था। इसलिए मैंने फ्रीजर में जो कुछ भी मिला, उससे एक साधारण खाना बनाया और हम दोनों ने एक-एक बियर पी। उसने काम के बारे में बातें कीं, जैसा कि वह हमेशा अच्छे मूड में करती थी: ऑफिस में किससे मिली, उसने क्या किया, उसके सहकर्मियों में से कौन प्रतिभाशाली है और कौन नहीं। इस तरह की बातें।
मैं सुनती रही और उचित जवाब देती रही। उसने जो कहा, उसका आधा ही मुझे समझ आया। ऐसा नहीं था कि मुझे उसकी बातें सुनना बुरा लगता था। बातचीत के विषय को छोड़ दें तो, मुझे उसे खाने की मेज पर अपने काम के बारे में उत्साह से बात करते देखना अच्छा लगता था। मैंने खुद से कहा, यही तो "घर" है। हम घर पर सौंपी गई जिम्मेदारियों को ठीक से निभा रहे थे। वह अपने काम के बारे में बात कर रही थी और मैं, खाना बनाने के बाद, उसकी बातें सुन रही थी। शादी से पहले मैंने अपने लिए घर की जो धुंधली सी कल्पना की थी, उससे यह बहुत अलग था। लेकिन यही वह घर था जिसे मैंने चुना था। बेशक, बचपन में मेरा एक घर था। लेकिन वह ऐसा घर नहीं था जिसे मैंने खुद चुना था। मैं उसमें पैदा हुई थी, एक स्थापित तथ्य के रूप में। लेकिन अब, मैं एक ऐसी दुनिया में रहती थी जिसे मैंने अपनी इच्छाशक्ति से चुना था। यही मेरा घर था। यह शायद परिपूर्ण न हो, लेकिन अपने घर के प्रति मेरा मूल दृष्टिकोण इसे, इसकी सभी

कमियों के साथ, स्वीकार करना था, क्योंकि यह वह चीज थी जिसे मैंने खुद चुना था। अगर इसमें कोई समस्या थी, तो लगभग निश्चित रूप से वह समस्या मेरे भीतर ही उत्पन्न हुई थी।
“तो बिल्ली का क्या हुआ?” उसने पूछा। मैंने उसे शिनागावा के होटल में माल्टा कानो से हुई अपनी मुलाकात का सारांश बताया। मैंने उसे अपनी बिंदीदार टाई के बारे में बताया: कि अलमारी में उसका कोई नामोनिशान नहीं था। फिर भी माल्टा कानो ने मुझे भीड़ भरे चायघर में ढूंढ लिया था। उसका पहनावा और बोलने का तरीका अनोखा था, जिसका मैंने वर्णन किया। कुमिको को माल्टा कानो की लाल विनाइल टोपी के बारे में सुनकर अच्छा लगा, लेकिन जब मैं हमारी खोई हुई बिल्ली के बारे में कोई स्पष्ट जवाब नहीं दे पाया, तो वह बहुत निराश हुई।
“तो उसे भी नहीं पता कि बिल्ली कहाँ है?” कुमिको ने पूछा। “ज्यादा से ज्यादा वो बस इतना ही कह पाई कि वो अब हमारे मोहल्ले में नहीं है?”
“बस इतना ही,” मैंने कहा। मैंने तय किया कि मैं अपने घर की “रुकावट” के बारे में कुछ नहीं कहूँगी, न ही इस बात का कि इसका बिल्ली के गायब होने से कोई संबंध हो सकता है। मुझे पता था कि इससे कुमिको परेशान होगी, और मैं खुद भी अपनी चिंताओं को बढ़ाना नहीं चाहती थी। अगर कुमिको इस जगह को “खराब” बताकर कहीं और जाने की ज़िद करती, तो हमारे सामने एक बड़ी समस्या खड़ी हो जाती। हमारी मौजूदा आर्थिक स्थिति को देखते हुए, हमारे लिए कहीं और जाना नामुमकिन था।
मैंने कहा, "वह मुझे यही बताती है। बिल्ली अब यहाँ नहीं है।" "तो इसका मतलब है कि यह कभी घर नहीं लौटेगा?"

मैंने कहा, "मुझे नहीं पता। वह हर बात को लेकर अस्पष्ट थी। उसने बस कुछ इशारे ही किए। हालांकि, उसने इतना जरूर कहा कि जब उसे और जानकारी मिलेगी तो वह मुझसे संपर्क करेगी।"
क्या आप उस पर विश्वास करते हैं?
“कौन जाने? मुझे इस तरह की चीजों के बारे में कुछ नहीं पता।” मैंने अपने लिए थोड़ी और बीयर डाली और झाग को बैठते हुए देखा। कुमिको ने अपनी कोहनी मेज पर टिकाई और ठुड्डी हाथ में रख ली। "उसने आपको बताया होगा कि वह किसी भी प्रकार का भुगतान या उपहार स्वीकार नहीं करेगी," उसने कहा।
“हाँ। यह तो बहुत अच्छी बात है,” मैंने कहा। “तो फिर समस्या क्या है? वह हमारा पैसा नहीं लेगी, हमारी आत्माएँ नहीं चुराएगी, राजकुमारी को हमसे नहीं छीनेगी। हमारे पास खोने के लिए कुछ नहीं है।”
“मैं चाहती हूँ कि तुम एक बात समझ लो,” कुमिको ने कहा। “वह बिल्ली मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। या यूँ कहूँ कि हमारे लिए। हमने उसे शादी के एक हफ्ते बाद पाया था। साथ में। तुम्हें याद है?”
"बेशक मैं।"
“वह बहुत छोटा था और मूसलाधार बारिश में पूरी तरह भीगा हुआ था। मैं छाता लेकर स्टेशन पर आपसे मिलने गई थी। बेचारा नन्हा सा बच्चा। घर लौटते समय हमने उसे देखा। किसी ने उसे शराब की दुकान के बगल में रखे बीयर के डिब्बे में फेंक दिया था। वह मेरी पहली बिल्ली है। वह मेरे लिए बहुत खास है, एक तरह का प्रतीक। मैं उसे खो नहीं सकती।”
“चिंता मत करो। मुझे पता है।”

“तो वो कहाँ है? वो दस दिनों से लापता है। इसीलिए मैंने अपने भाई को फोन किया। मुझे लगा कि शायद वो किसी माध्यम या भविष्यवक्ता को जानता हो, कोई ऐसा जो लापता बिल्ली को ढूंढ सके। मुझे पता है कि आप मेरे भाई से कुछ भी माँगना पसंद नहीं करते, लेकिन उसने मेरे पिता के नक्शेकदम पर ही चला है। उसे इन सब चीजों के बारे में काफी जानकारी है।”
“अहा, हाँ, वटाया परिवार की परंपरा,” मैंने एक खाड़ी पर बहने वाली शाम की ठंडी हवा की तरह शांत भाव से कहा। “लेकिन नोबोरू वटाया और इस महिला के बीच क्या संबंध है?”
कुमिको ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मुझे यकीन है कि वह बस एक ऐसी शख्सियत है जिससे उसकी अचानक मुलाकात हो गई। आजकल उसके इतने सारे संपर्क लगते हैं।"
मुझे पूरा यकीन है।
“वह कहता है कि उसके पास अद्भुत शक्तियां हैं, लेकिन वह काफी अजीब है।” कुमिको ने अपनी मैकरोनी कैसरोल को कुरेदते हुए पूछा, “उसका नाम क्या था?”
मैंने कहा, "माल्टा कानो। वह माल्टा में किसी प्रकार की धार्मिक तपस्या करती थी।"
“बस इतना ही। माल्टा कानो। आपको वह कैसी लगी?”
“कहना मुश्किल है।” मैंने मेज पर रखे अपने हाथों को देखा। “कम से कम वो उबाऊ तो नहीं थी। और ये अच्छी बात है। मतलब, दुनिया ऐसी चीजों से भरी पड़ी है जिन्हें हम समझा नहीं सकते, और उस खालीपन को भरने के लिए किसी न किसी को तो होना ही चाहिए। उबाऊ इंसान से बेहतर है कि कोई ऐसा हो जो उबाऊ न हो। है ना? जैसे मिस्टर होंडा, उदाहरण के लिए।”

श्री होंडा का नाम सुनते ही कुमिको जोर से हंस पड़ी। “वह एक अद्भुत बुजुर्ग व्यक्ति थे, है ना? मैं उन्हें बहुत पसंद करती थी।”
मैंने कहा, "मैं भी।"

•

हमारी शादी के लगभग एक साल बाद तक, कुमिको और मैं हर महीने बूढ़े श्री होंडा के घर जाया करते थे। आत्माओं से संपर्क स्थापित करने में माहिर, वे वटाया परिवार के पसंदीदा संपर्ककर्ताओं में से एक थे, लेकिन उन्हें सुनने में बहुत तकलीफ होती थी। श्रवण यंत्र लगाने के बावजूद भी, वे हमारी बातें मुश्किल से समझ पाते थे। हमें इतनी ज़ोर से चिल्लाना पड़ता था कि हमारी आवाज़ से शोजी का कागज़ हिलने लगता था। मैं सोचता था कि अगर उन्हें इतनी कम सुनाई देती है, तो क्या वे आत्माओं की बातें सुन पाते होंगे। लेकिन शायद यह उल्टा होता था: कान जितने कमज़ोर हों, आत्माओं के शब्द उतने ही बेहतर सुनाई देते हों। उन्होंने युद्ध में अपनी सुनने की शक्ति खो दी थी। जापान की मंचूरिया चौकी, क्वांगतुंग सेना में एक गैर-कमीशन अधिकारी के रूप में, बाहरी मंगोलिया और मंचूरिया की सीमा पर नोमोनहान में सोवियत-बाहरी मंगोलियाई संयुक्त इकाई के साथ एक लड़ाई के दौरान पास में ही तोप का गोला या हथगोला फटने से उनके कान के पर्दे फट गए थे।
श्री होंडा के घर हमारी यात्राएँ उनकी आध्यात्मिक शक्तियों में हमारे विश्वास से प्रेरित नहीं थीं। मुझे इन चीजों में कभी दिलचस्पी नहीं थी, और कुमिको भी अपने माता-पिता या भाई की तुलना में ऐसी अलौकिक बातों पर बहुत कम विश्वास करती थी। उसमें थोड़ा- बहुत अंधविश्वास जरूर था, और वह किसी अशुभ भविष्यवाणी से

प्रयासों में सबसे कम कष्टदायक श्री होंडा के साथ वे मासिक मुलाकातें थीं।
श्री होंडा को सभी भुगतान कुमिको के पिता करते थे। हमें बस महीने में एक बार मेगुरो स्थित श्री होंडा के घर जाना होता था, साथ में खातिरदारी के लिए साके की एक बड़ी बोतल ले जानी होती थी, उनकी बातें सुननी होती थीं और वापस घर आ जाना होता था। बस इतना ही।
हमें श्री होंडा से तुरंत ही लगाव हो गया। वे एक भले-बुजुर्ग व्यक्ति थे, जिनका चेहरा हमारे द्वारा लाई गई शराब देखकर खिल उठता था। हमें उनकी हर बात पसंद आई—सिवाय शायद इस बात के कि वे कम सुनने के कारण अपना टेलीविजन पूरी आवाज़ में चलाते रहते थे। हम हमेशा सुबह उनके घर जाते थे। सर्दी हो या गर्मी, वे धँसी हुई चूल्हे पर पैर फैलाकर बैठते थे। सर्दियों में वे अपनी कमर के चारों ओर रजाई लपेट लेते थे ताकि कोयले की आग की गर्मी बनी रहे। गर्मियों में वे न तो रजाई का इस्तेमाल करते थे और न ही आग का। वे जाहिर तौर पर एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे, लेकिन उनका जीवन बहुत ही सादा था—यहाँ तक कि तपस्वी जैसा। उनका घर छोटा था, जिसमें एक छोटा सा प्रवेश कक्ष था जो मुश्किल से एक व्यक्ति के जूते बाँधने या खोलने के लिए पर्याप्त जगह देता था। उनके फर्श पर बिछी चटाईयाँ बुरी तरह घिसी हुई थीं, और टूटे हुए खिड़कियों के शीशे टेप से चिपकाए गए थे। गली के उस पार एक कार मरम्मत की दुकान थी, जहाँ हमेशा कोई न कोई ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता रहता था। श्री होंडा एक किमोनो पहनते थे जो सोने के वस्त्र और पारंपरिक कारीगर की जैकेट के बीच का था। ऐसा लगता था कि उसे हाल ही में धोया नहीं गया था। वे अकेले रहते थे और खाना पकाने और सफाई के लिए एक महिला को काम पर रखा हुआ था। लेकिन किसी कारण से,

उन्होंने उसे कभी भी अपना वस्त्र धोने नहीं दिया। उसके धंसे हुए गालों पर बिखरी हुई सफेद मूंछें लटक रही थीं।
श्री होंडा के घर में अगर कोई चीज़ वाकई प्रभावशाली थी, तो वह था उनका विशाल रंगीन टेलीविजन सेट। इतने छोटे से घर में उसकी विशाल उपस्थिति वाकई चौंकाने वाली थी। वह हमेशा सरकारी चैनल एनएचके पर ही चलता रहता था। चाहे इसका कारण एनएचके के प्रति उनका प्यार हो, या चैनल बदलने की जहमत न उठाना हो, या फिर यह कोई खास सेट हो जिस पर सिर्फ एनएचके ही आता हो, मुझे ठीक से पता नहीं, लेकिन वे हमेशा एनएचके ही देखते थे।
फूलों की सजावट या सुलेख वाली पांडुलिपि के बजाय, बैठक कक्ष के औपचारिक आले में यह विशाल टेलीविजन सेट रखा हुआ था, और श्री होंडा हमेशा इसके सामने बैठे रहते थे, अपने धँसी हुई भट्टी के ऊपर रखी मेज पर रखी जादुई छड़ियों को हिलाते रहते थे, जबकि एनएचके लगातार खाना पकाने के शो, बोन्साई की देखभाल के निर्देश, समाचार अपडेट और राजनीतिक चर्चाएँ प्रसारित करता रहता था। “बेटे, कानूनी पेशा शायद तुम्हारे लिए सही नहीं है,” श्री होंडा ने एक दिन या तो मुझसे कहा, या मुझसे बीस गज पीछे खड़े किसी व्यक्ति से कहा।
"यह हो सकता है?"
“हाँ, हो सकता है। अंततः, इस दुनिया की हर चीज़ पर नियम का ही राज चलता है। वह दुनिया जहाँ परछाई परछाई है और प्रकाश प्रकाश है, यिन यिन है और यांग यांग है, मैं मैं हूँ और वह वह है। ‘मैं मैं हूँ और / वह वह है: / शरद ऋतु की पूर्व संध्या।’ लेकिन तुम उस दुनिया से संबंध नहीं रखते, बेटा। जिस दुनिया से तुम्हारा संबंध है, वह या तो उससे ऊपर है या उससे नीचे।”

मैंने सामान्य जिज्ञासावश पूछा, "कौन सा बेहतर है? ऊपर या नीचे?"
“ऐसा नहीं है कि दोनों में से कोई एक बेहतर है,” उन्होंने कहा। थोड़ी देर खांसने के बाद, उन्होंने बलगम का एक बड़ा टुकड़ा टिश्यू पेपर पर थूका और उसे ध्यान से देखा, फिर टिश्यू पेपर को मसलकर कूड़ेदान में फेंक दिया। “यह बेहतर या बदतर का सवाल नहीं है। बात यह है कि प्रवाह का विरोध न करें। जब ऊपर जाना हो तो ऊपर जाएं और जब नीचे आना हो तो नीचे आएं। जब ऊपर जाना हो, तो सबसे ऊंचे टावर को ढूंढें और चोटी पर चढ़ें। जब नीचे आना हो, तो सबसे गहरे कुएं को ढूंढें और उसकी तलहटी तक जाएं। जब प्रवाह न हो, तो स्थिर रहें। यदि आप प्रवाह का विरोध करते हैं, तो सब कुछ सूख जाता है। यदि सब कुछ सूख जाता है, तो दुनिया अंधकारमय हो जाती है। ‘मैं वह हूं और / वह मैं हूं: / बसंत की रात।’ स्वयं को त्याग दें, और आप वहीं हैं।”
"क्या यह उन समयों में से एक है जब प्रवाह नहीं है?" कुमिको ने पूछा।
"यह कैसा रहा?"
"क्या यह उन समयों में से एक है जब प्रवाह नहीं है?" कुमिको चिल्लाई।
श्री होंडा ने खुद की ओर इशारा करते हुए कहा, “अभी पानी का बहाव नहीं है। अभी शांत रहने का समय है। कुछ मत करो। बस पानी से सावधान रहो। भविष्य में कभी इस नौजवान को पानी से जुड़ी असली तकलीफ झेलनी पड़ सकती है। ऐसा पानी जो अपनी सही जगह पर न हो। ऐसा पानी जो अपनी गलत जगह पर मौजूद हो। किसी भी हालत में, पानी से बहुत-बहुत सावधान रहना।”

मेरे बगल में बैठी कुमिको अत्यंत गंभीरता से सिर हिला रही थी, लेकिन मैं देख सकती थी कि वह अपनी हंसी रोकने के लिए संघर्ष कर रही थी।
मैंने पूछा, "किस तरह का पानी?"
श्री होंडा ने कहा, "मुझे नहीं पता। पानी।"
टीवी पर, एक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कह रहे थे कि जापानी व्याकरण का लोगों द्वारा अव्यवस्थित उपयोग उनकी जीवनशैली में व्याप्त अव्यवस्था से बिल्कुल मेल खाता है। “सही मायने में, हम इसे अव्यवस्था नहीं कह सकते। व्याकरण हवा की तरह है: कोई उच्च अधिकारी इसके उपयोग के लिए नियम बनाने की कोशिश कर सकता है, लेकिन लोग जरूरी नहीं कि उनका पालन करें।” यह सुनने में दिलचस्प लगा, लेकिन श्री होंडा पानी के बारे में ही बात करते रहे। उन्होंने कहा, "सच कहूं तो, मुझे पानी के लिए बहुत कष्ट सहना पड़ा।" “नोमोनहान में पानी नहीं था। मोर्चे पर अफरा-तफरी मची हुई थी और आपूर्ति ठप हो गई थी। पानी नहीं, राशन नहीं, पट्टियाँ नहीं, गोलियाँ नहीं। हालात बेहद भयानक थे। पीछे तैनात बड़े सैनिकों को सिर्फ एक ही बात में दिलचस्पी थी: जितनी जल्दी हो सके इलाके पर कब्जा करना। आपूर्ति के बारे में कोई सोच ही नहीं रहा था। तीन दिनों तक मेरे पास लगभग पानी नहीं था। अगर आप एक कपड़ा भी बाहर छोड़ देते, तो सुबह तक वह ओस से भीगा होता। आप पीने के लिए कुछ बूँदें निचोड़ सकते थे, बस इतना ही। पानी का कोई और स्रोत ही नहीं था। मैं मरना चाहता था, हालत इतनी खराब थी। इस तरह प्यासा रहना दुनिया की सबसे बुरी चीज है। मैं बाहर जाकर गोली खाने को भी तैयार था। पेट में गोली लगने वाले सैनिक पानी के लिए चीखते थे। उनमें से कुछ प्यास से पागल हो जाते थे। यह एक जीती-जागती नरक जैसी स्थिति थी। हम अपने ठीक सामने एक बड़ी नदी

बहते हुए देख सकते थे, जिसमें इतना पानी था कि कोई भी पी सकता था। लेकिन हम उस तक नहीं पहुँच सकते थे। हमारे और नदी के बीच फ्लेमथ्रोअर से लैस विशाल सोवियत टैंकों की एक कतार थी। मशीन गन के ठिकाने ऐसे धधक रहे थे जैसे... गोलियों की बौछार हो रही थी। निशानेबाजों ने ऊँची जगह पर मोर्चा संभाल रखा था। वे रात में फ्लेयर्स छोड़ते थे। हमारे पास सिर्फ मॉडल 38 इन्फैंट्री राइफलें और हर एक के पास पच्चीस गोलियां थीं। फिर भी, मेरे ज्यादातर साथी नदी की ओर चले गए। वे इसे सहन नहीं कर सके। उनमें से एक भी वापस नहीं आया। वे सब मारे गए। तो देखा आपने, जब आपको स्थिर रहने को कहा जाए, तो स्थिर ही रहें।
उसने एक टिश्यू निकाला, जोर से नाक साफ की और टिश्यू को मसलकर कूड़ेदान में फेंकने से पहले उसके परिणाम की जांच की। उन्होंने कहा, "प्रवाह शुरू होने का इंतजार करना मुश्किल हो सकता है, लेकिन जब इंतजार करना ही पड़े तो करना ही पड़ता है। इस बीच, मान लीजिए कि आप मर चुके हैं।"
“क्या आपका मतलब है कि मुझे अभी मृत ही रहना चाहिए?” मैंने पूछा।
"यह कैसा रहा?"
"क्या तुम्हारा मतलब है कि मुझे अभी मरा हुआ ही रहना चाहिए?" “बस यही है, बेटे। ‘मरना ही एकमात्र रास्ता है / जिससे तुम मुक्त होकर तैर सको: / नोमोनहान’।”
वह अगले एक घंटे तक नोमोनहान के बारे में बात करते रहे। हम बस बैठे सुनते रहे। हमें "उनकी शिक्षा ग्रहण करने" का आदेश दिया गया था, लेकिन उनके घर पर एक साल तक हर महीने जाने के बावजूद, उन्होंने हमें शायद ही कभी कोई "शिक्षा" दी हो। वह शायद ही कभी भविष्यवाणी करते थे। उन्होंने जिस एक चीज़ के बारे में बात की,

वह थी नोमोनहान की घटना: कैसे एक तोप के गोले ने उनके बगल में खड़े लेफ्टिनेंट की आधी खोपड़ी उड़ा दी, कैसे वह एक सोवियत टैंक पर कूदे और उसे मोलोटोव कॉकटेल से जला दिया, कैसे उन्होंने एक गिरे हुए सोवियत पायलट को घेरकर गोली मार दी। उनकी सभी कहानियाँ दिलचस्प थीं, यहाँ तक कि रोमांचकारी भी, लेकिन किसी भी चीज़ की तरह, जब आप उन्हें सात-आठ बार सुनते हैं तो उनका आकर्षण कुछ कम हो जाता है। और न ही वह अपनी कहानियाँ केवल "सुनाते" थे। वह उन्हें चीख-चीखकर सुनाते थे। ऐसा लगता था जैसे वह किसी तूफानी दिन में किसी चट्टान के किनारे पर खड़े होकर, गहरी खाई के पार से हम पर चिल्ला रहे हों। यह किसी जर्जर थिएटर की सबसे आगे वाली पंक्ति में बैठकर कुरोसावा की कोई पुरानी फिल्म देखने जैसा था। उनके घर से निकलने के बाद कुछ देर तक हम दोनों को कुछ भी ठीक से सुनाई नहीं दिया।
फिर भी, हम—या कम से कम मैं—श्री होंडा की कहानियाँ सुनने का आनंद लेते थे। उनमें से अधिकतर कहानियाँ खूनी थीं, लेकिन एक मरते हुए बूढ़े व्यक्ति के मुँह से, गंदे पुराने चोगे में, युद्ध के विवरण वास्तविकता से परे हो जाते थे। वे परियों की कहानियों की तरह लगते थे। लगभग आधी सदी पहले, श्री होंडा की टुकड़ी ने मंचूरियन-मंगोलियाई सीमा पर एक बंजर जंगल में भयंकर युद्ध लड़ा था। श्री होंडा से इसके बारे में सुनने से पहले, मुझे नोमोनहान के युद्ध के बारे में लगभग कुछ भी नहीं पता था। और फिर भी यह एक शानदार युद्ध था। लगभग निहत्थे होकर, उन्होंने श्रेष्ठ सोवियत मशीनीकृत बलों को चुनौती दी थी, और वे कुचल दिए गए थे। एक के बाद एक टुकड़ी नष्ट हो गई, कतई हो गई। कुछ अधिकारियों ने अपनी पहल पर, अपने सैनिकों को विनाश से बचने के लिए पीछे हटने का आदेश दिया था; उनके वरिष्ठों ने उन्हें

आत्महत्या करने के लिए मजबूर किया। सोवियत द्वारा पकड़े गए अधिकांश सैनिकों ने युद्ध के बाद कैदियों के आदान-प्रदान में भाग लेने से इनकार कर दिया, क्योंकि वे दुश्मन के सामने भगोड़ा होने के मुकदमे से डरते थे। इन लोगों की हड्डियाँ अंततः मंगोलिया की धरती में समा गईं। अपनी सुनने की शक्ति खो देने के बाद सम्मानजनक रूप से सेना से मुक्त होकर घर भेजे जाने पर, श्री होंडा भविष्यवाणियों के अभ्यासी बन गए।
“शायद यह सब अच्छा ही हुआ,” उसने कहा। “अगर मेरी सुनने की शक्ति खराब न हुई होती, तो शायद मैं दक्षिण प्रशांत में ही मर गया होता। नोमोनहान से बच निकले ज़्यादातर सैनिकों का यही हाल हुआ। नोमोनहान शाही सेना के लिए बहुत बड़ी शर्मिंदगी थी, इसलिए उन्होंने बचे हुए सैनिकों को वहीं भेज दिया जहाँ उनके मारे जाने की सबसे ज़्यादा संभावना थी। नोमोनहान में इतनी गड़बड़ करने वाले कमांडिंग अधिकारियों ने केंद्रीय कमान में शानदार करियर बनाया। उनमें से कुछ तो युद्ध के बाद राजनेता भी बन गए। लेकिन जिन्होंने उनके लिए अपनी जान की बाजी लगाई, वे लगभग सभी मारे गए।”
मैंने पूछा, “नोमोनहान सेना के लिए इतनी शर्मिंदगी का कारण क्यों बना? सभी सैनिकों ने बहादुरी से लड़ाई लड़ी और उनमें से कई शहीद भी हुए, है ना? फिर बचे हुए सैनिकों के साथ इतना बुरा बर्ताव क्यों किया गया?”
लेकिन श्री होंडा ने मानो मेरा सवाल सुना ही नहीं। उन्होंने अपनी पानी खोजने वाली छड़ियों को हिलाया और खड़खड़ाया। उन्होंने कहा, "पानी से सावधान रहना।"
और इस तरह आज का सत्र समाप्त हुआ।

•

कुमिको के पिता से झगड़े के बाद, हमने श्री होंडा के यहाँ जाना बंद कर दिया। मेरे लिए उनके यहाँ जाना नामुमकिन था, क्योंकि मुझे पता था कि इसका खर्च मेरे ससुर उठा रहे हैं, और हम खुद उन्हें भुगतान करने की स्थिति में नहीं थे। उन दिनों हम बड़ी मुश्किल से अपना गुजारा कर रहे थे। आखिरकार, हम श्री होंडा को भूल गए, ठीक वैसे ही जैसे व्यस्त युवा अक्सर बुजुर्गों को भूल जाते हैं।

•

उस रात बिस्तर पर लेटे-लेटे मैं श्री होंडा के बारे में सोचता रहा। उन्होंने और माल्टा कानो दोनों ने मुझसे पानी के बारे में बात की थी। श्री होंडा ने मुझे सावधान रहने की चेतावनी दी थी। माल्टा कानो ने पानी पर अपने शोध के सिलसिले में माल्टा द्वीप पर कठिन तपस्या की थी। शायद यह एक संयोग था, लेकिन दोनों ही पानी को लेकर बहुत चिंतित थे। अब यह बात मुझे भी परेशान करने लगी थी। मेरे विचार नोमोनहान के युद्धक्षेत्र की छवियों की ओर मुड़ गए: सोवियत टैंक और मशीन गन के ठिकाने, और उनके पीछे बहती नदी। असहनीय प्यास। अंधेरे में, मुझे नदी की आवाज़ सुनाई दे रही थी। “टोरू,” कुमिको ने मुझसे धीमी आवाज में कहा, “क्या तुम जाग रहे हो?”
"अहां।"
“उस टाई के बारे में। मुझे अभी याद आया। मैंने उसे दिसंबर में लॉन्ड्री में दिया था। उसे प्रेस करने की ज़रूरत थी। शायद मैं भूल ही गया था।”
“दिसंबर? कुमिको, वो तो छह महीने से भी ज्यादा पहले की बात है!” “मुझे पता है। और तुम्हें पता है कि मैं कभी ऐसी चीजें भूलती नहीं हूँ। वैसे भी, वह टाई बहुत प्यारी थी।” उसने मेरे कंधे पर

हाथ रखा। “मैंने उसे स्टेशन के पास वाले लॉन्ड्री में दे दिया था। क्या तुम्हें लगता है कि अब भी उनके पास होगी?”
मैं कल जाऊंगा। शायद वह वहीं होगा।
“आपको ऐसा क्यों लगता है? छह महीने बहुत लंबा समय होता है। ज़्यादातर सफाई कंपनियां तीन महीने में न बिकने वाली चीज़ों को हटा देती हैं। वे ऐसा कर सकती हैं। यह कानून है। आपको ऐसा क्यों लगता है कि वह अभी भी वहीं है?”
“माल्टा कानो ने कहा था कि मुझे वह मिल जाएगा। घर के बाहर कहीं।” मुझे महसूस हो रहा था कि वह अंधेरे में मुझे देख रही है।
"क्या आपका मतलब है कि आप उसकी बातों पर विश्वास करते हैं?" मैं ऐसा करने लगा हूँ।
"बहुत जल्द आप और मेरा भाई एक दूसरे से सहमत होने लगेंगे," उसने अपनी आवाज में खुशी का भाव लिए कहा।
मैंने कहा, "शायद ऐसा हो सकता है।"
कुमिको के सो जाने के बाद भी मैं नोमोनहान युद्धक्षेत्र के बारे में सोचता रहा। वहाँ सभी सैनिक सो रहे थे। ऊपर आकाश तारों से भरा था और लाखों झींगुर चहचहा रहे थे। मुझे नदी की आवाज़ सुनाई दे रही थी। नदी की आवाज़ सुनते-सुनते मुझे नींद आ गई।

लेमन ड्रॉप्स का आदी

•

उड़ने में असमर्थ पक्षी और पानी रहित कुआँ
नाश्ते के बर्तन धोने के बाद, मैं साइकिल से स्टेशन के पास वाली लॉन्ड्री की दुकान पर गया। दुकान का मालिक—लगभग चालीस साल का एक दुबला-पतला आदमी, जिसके माथे पर गहरी झुर्रियाँ थीं—शेल्फ पर रखे बूम बॉक्स पर पर्सी फेथ ऑर्केस्ट्रा का टेप सुन रहा था। वह एक बड़ा सा जेवीसी बूम बॉक्स था, जिसमें कुछ अतिरिक्त वूफर लगे थे और उसके पास कैसेट टेपों का ढेर लगा था। ऑर्केस्ट्रा "ताराज़ थीम" बजा रहा था, जिसमें स्ट्रिंग वाद्ययंत्रों का भरपूर इस्तेमाल किया गया था। दुकान का मालिक खुद दुकान के पीछे था, संगीत के साथ सीटी बजाते हुए एक कमीज़ पर इस्त्री चला रहा था, उसकी हरकतें तेज़ और ऊर्जावान थीं। मैं काउंटर के पास पहुँचा और उचित माफी मांगते हुए कहा कि मैं पिछले साल के अंत में एक टाई लाया था और उसे लेना भूल गया था। सुबह साढ़े नौ बजे उसकी शांत दुनिया में, यह किसी ग्रीक त्रासदी के भयानक समाचार लाने वाले दूत के आगमन के समान रहा होगा।
“लगता है, मेरे पास टिकट भी नहीं है,” उसने एक अजीब सी बेरुखी भरी आवाज़ में कहा। वह मुझसे नहीं, बल्कि काउंटर के पास दीवार पर लगे कैलेंडर से बात कर रहा था। जून की तस्वीर में आल्प्स पर्वतमाला दिखाई दे रही थी—एक हरी-भरी घाटी, चरती गायें, और मोंट ब्लैंक या मैटरहॉर्न जैसी किसी पर्वतमाला के सामने तैरता हुआ एक सफ़ेद बादल। फिर उसने मेरी तरफ ऐसे देखा मानो कह रहा हो, “अगर तुम्हें इस चीज़ को भूलना ही था, तो अब तक भूल जाना!” उसकी नज़रें सीधी और स्पष्ट थीं।

“साल के अंत में, है ना? ये तो मुश्किल सवाल है। हम छह महीने से भी ज़्यादा पहले की बात कर रहे हैं। ठीक है, मैं देख लूँगा, लेकिन मुझसे इसे ढूंढने की उम्मीद मत करना।”
उसने अपनी इस्त्री बंद की, उसे इस्त्री बोर्ड पर रखा और 'ए समर प्लेस' के थीम सॉन्ग की धुन गुनगुनाते हुए पीछे वाले कमरे में अलमारियों में सामान खोजना शुरू कर दिया।
हाई स्कूल के दिनों में, मैं अपनी गर्लफ्रेंड को 'ए समर प्लेस' दिखाने ले गया था। इसमें ट्रॉय डोनह्यू और सैंड्रा डी ने अभिनय किया था। हमने इसे एक पुराने थिएटर में कॉनी फ्रांसिस की फिल्म 'फॉलो द बॉयज़' के साथ देखा था। जहाँ तक मुझे याद है, फिल्म बहुत खराब थी, लेकिन तेरह साल बाद अब एक सफाईकर्मी की दुकान में इसका संगीत सुनकर मुझे उस समय की सिर्फ अच्छी यादें ही ताजा हो गईं। “क्या वह नीले रंग की बिंदीदार टाई थी?” मालिक ने पूछा। “नाम ओकाडा?”
मैंने कहा, "बस इतना ही।"
आपकी किस्मत अच्छी है।

•

घर पहुंचते ही मैंने कुमिको को उसके ऑफिस में फोन किया। मैंने कहा, "उनके पास वो टाई थी।"
“अद्भुत,” उसने कहा। “बहुत बढ़िया!”
यह बनावटी लग रहा था, जैसे किसी बेटे के अच्छे नंबर लाने पर उसकी तारीफ की जा रही हो। इससे मुझे बेचैनी हुई। मुझे उसके लंच ब्रेक तक फोन करने का इंतजार करना चाहिए था।
“मुझे बहुत राहत मिली,” उसने कहा। “लेकिन अभी मैं किसी से बात कर रही हूँ। माफ कीजिए। क्या आप मुझे दोपहर 12 बजे वापस कॉल कर सकते हैं?”

मैंने कहा, "मैं ऐसा करूंगा।"
फोन रखने के बाद, मैं सुबह का अखबार लेकर बरामदे में चला गया। हमेशा की तरह, मैं पेट के बल लेट गया और नौकरी के विज्ञापन मेरे सामने फैले हुए थे। मैं उन्हें एक सिरे से दूसरे सिरे तक पढ़ने में पूरा समय लेता था, जिनमें अस्पष्ट कोड और सुराग भरे हुए थे। इस दुनिया में पेशों की विविधता अद्भुत थी, हर पेशा अखबार की साफ-सुथरी पंक्तियों में अपनी जगह बनाए हुए था, मानो किसी नए कब्रिस्तान के नक्शे पर हो।
हर सुबह की तरह, मुझे कहीं पेड़ की चोटी पर चाबी से चलने वाली चिड़िया की आवाज़ सुनाई दी। मैंने अखबार बंद किया, एक खंभे से पीठ टिकाकर बैठ गया और बगीचे की ओर देखा। थोड़ी देर में चिड़िया ने फिर से कर्कश आवाज़ निकाली, एक लंबी, चरमराहट जैसी आवाज़ जो पड़ोसी के चीड़ के पेड़ की चोटी से आ रही थी। मैंने डालियों के बीच से देखने की कोशिश की, लेकिन चिड़िया का कोई निशान नहीं था, केवल उसकी आवाज़ सुनाई दी। हमेशा की तरह। और इस तरह दुनिया की दिनभर की नींद पूरी हो गई।
दस बजने से ठीक पहले बारिश शुरू हो गई। तेज़ बारिश नहीं थी। बूँदें इतनी बारीक थीं कि यह कहना मुश्किल था कि बारिश हो रही है, लेकिन अगर ध्यान से देखते तो पता चल जाता। दुनिया दो अवस्थाओं में बंटी होती है, बारिश और बिना बारिश के, और इन दोनों के बीच एक स्पष्ट रेखा होनी चाहिए। मैं कुछ देर बरामदे में बैठा रहा, उस रेखा को देखता रहा जो वहाँ होनी चाहिए थी।
दोपहर के भोजन तक मैं क्या करूँ? पास के स्विमिंग पूल में तैरने जाऊँ या गली में बिल्ली को ढूँढने जाऊँ? बरामदे के खंभे से टेक लगाकर, बगीचे में बारिश को देखते हुए, मैं इन दोनों बातों के बीच उलझा रहा।

पूल।
बिल्ली।
बिल्ली जीत गई। माल्टा कानो ने कहा था कि बिल्ली अब मोहल्ले में नहीं है। लेकिन उस सुबह मुझे उसे ढूंढने के लिए बाहर जाने की एक अजीब सी बेचैनी हुई। बिल्ली को ढूंढना मेरी दिनचर्या का हिस्सा बन गया था। और वैसे भी, कुमिको को यह जानकर थोड़ी खुशी हो सकती थी कि मैंने कोशिश की। मैंने अपना हल्का रेनकोट पहन लिया। मैंने छाता न लेने का फैसला किया। मैंने अपने टेनिस शूज़ पहने और चाबी और कुछ नींबू की कैंडी कोट की जेब में रखकर घर से निकल गया। मैं आंगन पार कर रहा था, लेकिन जैसे ही मैंने एक हाथ ईंट की दीवार पर रखा, एक फोन बज उठा। मैं वहीं खड़ा रहा, कान लगाकर सुनने की कोशिश की, लेकिन पता नहीं चल पाया कि यह हमारा फोन था या पड़ोसी का। घर से निकलते ही सारे फोन एक जैसे बजने लगते हैं। मैंने हार मान ली और दीवार फांद कर अंदर चला गया।
मेरे टेनिस शूज़ के पतले तलवों से मुझे नरम घास का एहसास हो रहा था। गली हमेशा की तरह शांत थी। मैं कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा, अपनी सांस रोककर सुनता रहा, लेकिन मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दिया। फोन बजना बंद हो गया था। मुझे न तो पक्षियों की चहचाहट सुनाई दी और न ही सड़क का शोर। आसमान एकदम एक समान धूसर रंग में रंगा हुआ था। ऐसे दिनों में बादल शायद धरती की सतह से आने वाली आवाज़ों को सोख लेते हैं। और सिर्फ़ आवाज़ें ही नहीं, बल्कि हर तरह की चीज़ें। जैसे कि अनुभूतियाँ।
अपने रेनकोट की जेबों में हाथ डाले, मैं संकरी गली में सरक गया। जहाँ कपड़े सुखाने के खंभे गली में निकले हुए थे, मैं दीवारों के बीच से निकल गया। मैं दूसरे घरों की छतों के ठीक नीचे से गुजरा। इस तरह मैं चुपचाप उस रास्ते से नीचे उतरता गया जो किसी

सुनसान नहर जैसा लग रहा था। घास पर मेरे टेनिस के जूतों से कोई आवाज़ नहीं हुई। मेरी इस छोटी सी यात्रा में मुझे बस एक घर में बज रहे रेडियो की आवाज़ सुनाई दी। वह एक टॉक शो पर चल रहा था जिसमें कॉल करने वालों की समस्याओं पर चर्चा हो रही थी। एक अधेड़ उम्र का आदमी होस्ट से अपनी सास के बारे में शिकायत कर रहा था। जितना मैंने सुना, उससे लगा कि वह औरत अड़सठ साल की थी और घुड़दौड़ की दीवानी थी। घर से आगे निकलने के बाद, रेडियो की आवाज़ धीरे-धीरे कम होती गई और अंत में पूरी तरह बंद हो गई, मानो धीरे-धीरे गायब हो रही हो न सिर्फ रेडियो की आवाज़, बल्कि वह अधेड़ उम्र का आदमी और उसकी घुड़दौड़ की दीवानी सास भी, जो दोनों दुनिया में कहीं न कहीं जरूर मौजूद होंगे।
आखिरकार मैं उस खाली घर तक पहुँच गया। वह हमेशा की तरह खामोश खड़ा था। धूसर, नीचे लटके बादलों की पृष्ठभूमि में, जिसकी दूसरी मंजिल के तूफ़ान रोधी शटर बंद थे, वह घर एक अंधेरे, रहस्यमयी सा साये की तरह लग रहा था। ऐसा लग रहा था मानो कोई विशाल मालवाहक जहाज़ बहुत पहले किसी तूफ़ानी रात में चट्टान से टकराकर सड़ने के लिए छोड़ दिया गया हो। अगर पिछली बार आने के बाद से घास की ऊँचाई न बढ़ी होती, तो शायद मैं मान लेता कि इस जगह पर समय रुक गया है। कई दिनों की बारिश के कारण घास की पत्तियाँ गहरे हरे रंग की चमक से दमक रही थीं, और उनसे जंगलीपन की वह अनोखी महक आ रही थी जो धरती में जड़ें जमा लेने वाले पौधों में पाई जाती है। घास के इस विशाल सागर के ठीक बीच में पक्षी की मूर्ति खड़ी थी, ठीक उसी मुद्रा में जिसमें मैंने उसे पहले देखा था, पंख फैलाए, उड़ने के लिए तैयार। यह एक ऐसा पक्षी था जो कभी उड़ नहीं सकता था, बेशक। मैं यह जानता था, और पक्षी भी यह जानता था। वह वहीं इंतज़ार करता रहेगा जहाँ उसे रखा गया था, जब तक कि उसे या तो

कहीं ले जाया न जाए या टुकड़े-टुकड़े न कर दिया जाए। इस बगीचे से निकलने का उसके पास कोई और रास्ता नहीं था। वहाँ बस एक छोटी सी सफेद तितली ही चल रही थी, जो मौसम से कुछ हफ्ते बाद घास पर मंडरा रही थी। उसकी चाल अनिश्चित थी, मानो कोई खोजकर्ता अपना लक्ष्य भूल गया हो। पाँच मिनट की इस व्यर्थ खोज के बाद, तितली कहीं उड़ गई।
नींबू कैंडी चूसते हुए, मैं जालीदार बाड़ से टिककर बगीचे को देखने लगा। बिल्ली का कोई निशान नहीं था। किसी भी चीज़ का कोई निशान नहीं था। वह जगह एक शांत, स्थिर तालाब की तरह लग रही थी जिसमें किसी विशाल शक्ति ने प्राकृतिक प्रवाह को रोक दिया हो। मुझे अपने पीछे किसी की मौजूदगी का आभास हुआ और मैं तेज़ी से मुड़ी। पर वहाँ कोई नहीं था। गली के दूसरी तरफ़ बस बाड़ थी, और बाड़ में एक छोटा सा फाटक था, वही फाटक जिसमें वह लड़की खड़ी थी। पर अब वह बंद था, और आँगन में किसी का कोई निशान नहीं था। चारों ओर नमी थी और सन्नाटा छाया हुआ था। और वहाँ कुछ गंधें थीं: घास की। बारिश की। मेरे रेनकोट की। मेरी जीभ के नीचे आधी पिघली हुई नींबू की कैंडी की। ये सभी गंधें एक गहरी साँस में समा गईं। मैंने एक बार फिर अपने आसपास का जायज़ा लिया, पर कोई नहीं था। ध्यान से सुनने पर मुझे दूर से एक हेलीकॉप्टर की धीमी सी आवाज़ सुनाई दी। लोग ऊपर बादलों के ऊपर उड़ रहे थे। पर वह आवाज़ भी दूर जाकर गायब हो गई, और एक बार फिर सन्नाटा छा गया।
खाली पड़े मकान के चारों ओर लगी जालीदार बाड़ में एक जालीदार गेट था, जो कि कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। मैंने उसे धीरे से धक्का दिया। वह बड़ी आसानी से खुल गया, मानो मुझे अंदर आने के लिए उकसा रहा हो। मानो कह रहा हो, "कोई बात नहीं। बस अंदर आ जाओ।" मुझे आठ वर्षों में अर्जित कानून के विस्तृत ज्ञान पर निर्भर

के लिए शांत बैठना होता था, और आप धूसर रंगों की इस अद्भुत विविधता को देख सकते थे।
अपनी ग्रे रंग के नमूनों की किताब को देखते हुए, मैं बिना कुछ सोचे-समझे फिर से सीटी बजाने लगा।
“हे,” किसी ने कहा।
मैंने आँखें झट से खोल दीं। एक तरफ झुककर मैंने हाथ फैलाकर झाड़ियों के ऊपर बने गेट को देखा। वह खुला हुआ था। पूरी तरह खुला हुआ। कोई मेरे पीछे अंदर आ गया था। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा।
“हे,” किसी ने फिर कहा। एक महिला की आवाज़। वह मूर्ति के पीछे से निकली और मेरी तरफ बढ़ने लगी। यह वही लड़की थी जो गली के उस पार वाले आँगन में धूप सेंक रही थी। उसने वही हल्के नीले रंग की एडिडास टी-शर्ट और शॉर्ट्स पहने हुए थे। वह फिर से थोड़ा लंगड़ाकर चल रही थी। पहले से बस एक ही फर्क था कि उसने अपने धूप के चश्मे उतार दिए थे।
“तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” उसने पूछा।
मैंने कहा, "मैं बिल्ली को ढूंढ रहा हूँ।"
“क्या आपको यकीन है? मुझे तो ऐसा नहीं लगता। आप बस आँखें बंद करके बैठे सीटी बजा रहे हैं। इस तरह से कुछ भी ढूंढना मुश्किल होगा, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?”
मुझे अपने चेहरे पर शर्म महसूस हुई।
“मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता,” उसने आगे कहा, “लेकिन जो आपको नहीं जानता, वह सोच सकता है कि आप किसी तरह के विकृत मानसिकता वाले व्यक्ति हैं।” वह थोड़ी देर रुकी। “आप विकृत मानसिकता वाले व्यक्ति तो नहीं हैं, है ना?”
मैंने कहा, "शायद नहीं।"

वह मेरे पास आई और उसने एक के अंदर एक रखी हुई लॉन कुर्सियों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया, उसने एक ऐसी कुर्सी चुनी जिस पर ज्यादा गंदगी नहीं थी और उसे जमीन पर रखने और उस पर बैठने से पहले एक बार फिर बारीकी से उसका निरीक्षण किया।
“और तुम्हारी सीटी तो बहुत ही खराब है,” उसने कहा। “मुझे धुन तो नहीं पता, लेकिन उसमें कोई लय ही नहीं थी। कहीं तुम समलैंगिक तो नहीं हो?”
मैंने कहा, "शायद नहीं।" "क्यों?"
किसी ने मुझसे कहा कि समलैंगिक लोग सीटी बजाने में अच्छे नहीं होते। क्या यह सच है?
"कौन जाने? शायद यह बकवास ही हो।"
वैसे, मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम समलैंगिक हो या विकृत मानसिकता वाले हो या कुछ भी। वैसे, तुम्हारा नाम क्या है? मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम्हें क्या कहकर बुलाऊं।
मैंने कहा, "टोरू ओकाडा।"
उसने मेरा नाम कई बार मन ही मन दोहराया। "कोई खास नाम तो नहीं है, है ना?" उसने कहा।
“शायद नहीं,” मैंने कहा। “मुझे हमेशा से ऐसा लगता रहा है कि यह किसी युद्ध-पूर्व विदेश मंत्री की तरह लगता है: तोरू ओकाडा। समझे?”
“इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे इतिहास से नफरत है। यह मेरा सबसे खराब विषय है। खैर, छोड़ो। क्या तुम्हारा कोई उपनाम नहीं है? तोरू ओकाडा से आसान कोई नाम?”
मुझे याद नहीं आ रहा था कि मेरा कभी कोई उपनाम रहा हो। पूरी जिंदगी में कभी नहीं। ऐसा क्यों था? "कोई उपनाम नहीं," मैंने कहा।

“कुछ नहीं? ‘भालू’? या ‘मेंढक’?”
"कुछ नहीं।"
“अरे वाह,” उसने कहा। “कुछ सोचो।”
मैंने कहा, "चाबी से घुमाने वाला पक्षी।"
“चाबी से चलने वाली चिड़िया?” उसने मुंह खुला रखकर मेरी तरफ देखते हुए पूछा। “ये क्या होती है?”
मैंने कहा, “वह पक्षी जो झरने को हवा देता है। हर सुबह। पेड़ों की चोटियों पर। वह दुनिया के झरने को हवा देता है। क्रीक।”
वह मुझे लगातार घूरती रही।
मैंने आह भरी। “यह अचानक मेरे दिमाग में आया,” मैंने कहा। “और भी बहुत कुछ है। वह चिड़िया हर दिन मेरे घर के पास आती है और पड़ोसी के पेड़ पर ‘क्रीक’ की आवाज़ करती है। लेकिन उसे आज तक किसी ने नहीं देखा।”
“यह तो बढ़िया है, मुझे लगता है। खैर, आप मिस्टर विंड-अप बर्ड कहलाएंगे। यह कहना भी आसान नहीं है, लेकिन तोरू ओकाडा से तो कहीं बेहतर है।”
"आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।"
उसने अपने पैर कुर्सी पर ऊपर खींच लिए और अपनी ठुड्डी घुटनों पर टिका ली।
मैंने पूछा, "आपका नाम क्या है?"
“मई कासाहारा। मई… मई के महीने की तरह।”
क्या आपका जन्म मई में हुआ था?
“क्या आपको पूछने की ज़रूरत है? ज़रा सोचिए, अगर जून में पैदा हुए किसी व्यक्ति का नाम मई रख दिया जाए तो कितनी उलझन होगी?” “मुझे लगता है आप सही कह रहे हैं,” मैंने कहा। “मुझे लगता है आप अभी भी स्कूल से बाहर हैं?”

“मैं तुम्हें काफी देर से देख रही थी,” उसने मेरे सवाल को अनसुना करते हुए कहा। “अपने कमरे से। दूरबीन से। मैंने तुम्हें गेट से अंदर जाते देखा। मैं हमेशा अपने पास एक छोटी दूरबीन रखती हूँ, ताकि गली में होने वाली गतिविधियों पर नज़र रख सकूँ। वहाँ से हर तरह के लोग आते-जाते हैं। मुझे यकीन है कि तुम्हें यह पता नहीं था। और सिर्फ इंसान ही नहीं, जानवर भी। तुम इतनी देर तक यहाँ अकेले क्या कर रहे थे?”
मैंने कहा, "खोया हुआ सा था। पुराने दिनों के बारे में सोच रहा था। सीटी बजा रहा था।"
मेई कासाहारा ने अपने अंगूठे का नाखून चबाया। उसने कहा, "तुम थोड़े अजीब हो।"
मैं अजीब नहीं हूँ। लोग ऐसा अक्सर करते हैं।
"हो सकता है, लेकिन वे पड़ोसी के खाली घर में ऐसा नहीं करते। अगर आप बस आराम करना चाहते हैं, पुराने दिनों के बारे में सोचना चाहते हैं और सीटी बजाना चाहते हैं, तो आप अपने ही आंगन में रह सकते हैं।"
उसकी बात में दम था।
खैर, मुझे लगता है कि नोबोरू वटाया कभी घर नहीं लौटा, है ना? मैंने सिर हिलाया। "और मुझे लगता है कि उसके बाद आपने उसे फिर कभी नहीं देखा?" मैंने पूछा।
“नहीं, और मैं भी उसी की तलाश में था: एक भूरे रंग की धारीदार बाघ बिल्ली। पूंछ का सिरा थोड़ा मुड़ा हुआ था। है ना?”
अपनी पैंट की जेब से उसने होप रेगुलर सिगरेट का एक डिब्बा निकाला और माचिस से जलाया। कुछ कश लेने के बाद, उसने सीधे मेरी तरफ देखा और कहा, "तुम्हारे बाल थोड़े कम हो रहे हैं, है ना?" मेरा हाथ अपने आप मेरे सिर के पीछे चला गया।

“वहाँ नहीं, मूर्ख,” उसने कहा। “तुम्हारी सामने की हेयरलाइन। यह जितनी होनी चाहिए उससे ऊपर है, क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता?” मैंने इस पर कभी ध्यान नहीं दिया।
“हाँ, मैंने किया,” उसने कहा। “यहीं से तुम्हारे बाल झड़ने लगेंगे। तुम्हारी हेयरलाइन ऊपर की ओर बढ़ती जाएगी।” उसने अपने बालों का एक गुच्छा आगे से पकड़ा और अपना गंजा माथा मेरे चेहरे के सामने कर दिया। “तुम्हें सावधान रहना चाहिए।”
मैंने अपने माथे के बालों को छुआ। शायद वह सही कह रही थी। शायद बाल थोड़े कम हो गए थे। या ये मेरा वहम था? अब चिंता करने के लिए एक और नई बात।
मैंने पूछा, "तुम्हारा क्या मतलब है? मैं कैसे सावधान रहूँ?" “मुझे लगता है, आप कुछ नहीं कर सकते। आप कुछ नहीं कर सकते। गंजेपन को रोकने का कोई तरीका नहीं है। जिन लोगों को गंजा होना होता है, वे हो जाते हैं। जब उनका समय आता है, तो बस: वे गंजे हो जाते हैं। इसे रोकने के लिए आप कुछ नहीं कर सकते। लोग कहते हैं कि सही देखभाल से आप गंजेपन से बच सकते हैं, लेकिन यह सब बकवास है। शिंजुकु स्टेशन पर सोने वाले बेघर लोगों को देखिए। उनके बाल कितने घने हैं। क्या आपको लगता है कि वे रोज़ाना क्लिनिक या विडाल सैसून से बाल धोते हैं या लोशन एक्स लगाते हैं? कॉस्मेटिक बनाने वाली कंपनियां आपको यही सब बताती हैं, ताकि आपसे पैसे ले सकें।”
मैंने प्रभावित होकर कहा, "मुझे पूरा यकीन है कि आप सही कह रहे हैं। लेकिन आपको गंजेपन के बारे में इतनी जानकारी कैसे है?" “मैं एक विग कंपनी में पार्ट टाइम काम कर रहा हूँ। काफी समय से। आप जानते हैं, मैं स्कूल नहीं जाता, और मेरे पास समय बिताने के लिए बहुत समय है। मैं सर्वेक्षण और प्रश्नावली जैसे काम करके

समय बिताता हूँ। इसलिए मुझे पुरुषों के बाल झड़ने के बारे में सब कुछ पता है। मेरे पास बहुत सारी जानकारी है।”
“वाह,” मैंने कहा।
“लेकिन तुम्हें पता है,” उसने सिगरेट का टुकड़ा ज़मीन पर गिराते हुए और उस पर पैर रखते हुए कहा, “जिस कंपनी में मैं काम करती हूँ, वहाँ किसी को ‘गंजा’ नहीं कहने देते। तुम्हें कहना पड़ता है ‘जिन पुरुषों के बाल झड़ रहे हैं’। ‘गंजा’ शब्द भेदभावपूर्ण है। एक बार मैं मज़ाक कर रही थी और मैंने कहा ‘जिन सज्जनों के बाल झड़ रहे हैं’, और वे लोग बहुत गुस्सा हो गए! उन्होंने कहा, ‘यह कोई मज़ाक की बात नहीं है, युवती।’ वे लोग हद से ज़्यादा गंभीर हैं। क्या तुम्हें पता है? इस पूरी दुनिया में हर कोई हद से ज़्यादा गंभीर है।”
मैंने अपनी लेमन कैंडी निकाली, एक अपने मुंह में डाली और एक मेई कासाहारा को दी। उसने सिर हिलाया और एक सिगरेट निकाली।
“अब सोचो तो सही, मिस्टर विंड-अप बर्ड,” उसने कहा, “तुम बेरोजगार थे। क्या तुम अभी भी बेरोजगार हो?”
"यकीन है।"
"क्या आप वाकई काम करने को लेकर गंभीर हैं?"
“हाँ, बिल्कुल।” ये शब्द मेरे मुँह से निकलते ही मुझे शक होने लगा कि ये कितने सच हैं। “असल में, मुझे इतना यकीन नहीं है,” मैंने कहा। “मुझे लगता है मुझे समय चाहिए। सोचने के लिए समय। मुझे खुद नहीं पता कि मुझे क्या चाहिए। समझाना मुश्किल है।” नाखून चबाते हुए, मेई कासाहारा ने कुछ देर मेरी तरफ देखा। "सुनो, मिस्टर विंड-अप बर्ड," उसने कहा। "क्यों न तुम एक दिन मेरे साथ काम करने आओ? विग बनाने वाली कंपनी में। वहाँ ज़्यादा पैसे नहीं मिलते, लेकिन काम आसान है, और तुम अपने हिसाब से समय तय कर सकते

हो। क्या कहते हो? ज़्यादा मत सोचो, बस कर लो। थोड़ा बदलाव तो आएगा। इससे तुम्हें कई चीज़ें समझने में मदद मिल सकती है।" उसकी बात में दम था। मैंने कहा, "हाँ, तुम्हारी बात में दम है।" “बहुत बढ़िया!” उसने कहा। “अगली बार जब मैं जाऊंगी, तो तुम्हें लेने आऊंगी। वैसे, तुमने अपना घर कहाँ बताया था?”
“हम्म, ये तो थोड़ा मुश्किल है। या शायद नहीं। बस गली में चलते रहो, सारे मोड़ पार करते जाओ। बाईं ओर तुम्हें एक घर दिखेगा जिसके पीछे एक लाल होंडा सिविक खड़ी होगी। उस पर एक स्टिकर लगा होगा जिस पर लिखा होगा, ‘दुनिया के सभी लोगों के लिए शांति हो।’ हमारा घर उसके ठीक बगल में है, लेकिन गली में कोई गेट नहीं खुलता। बस ईंटों की दीवार है, और उसे फांदकर जाना पड़ेगा। वो मेरे ठुड्डी तक ही आती है।”
“चिंता मत करो। मैं इतनी ऊंची दीवार को आसानी से पार कर सकता हूँ, कोई दिक्कत नहीं।”
“क्या अब आपके पैर में दर्द नहीं हो रहा है?”
उसने हल्की सी आह भरते हुए धुंआ छोड़ा और बोली, “चिंता मत करो। कुछ नहीं है। मैं अपने माता-पिता के सामने लंगड़ाकर चलती हूँ क्योंकि मैं स्कूल नहीं जाना चाहती। मैं नाटक कर रही हूँ। यह एक आदत सी बन गई है। मैं ऐसा तब भी करती हूँ जब कोई नहीं देख रहा होता, जब मैं अपने कमरे में अकेली होती हूँ। मैं पूर्णतावादी हूँ। कहते हैं ना—'दूसरों को बेवकूफ बनाने के लिए खुद को बेवकूफ बनाओ'? खैर, मिस्टर विंड-अप बर्ड, बताओ, क्या तुममें हिम्मत है?”
"नहीं, ऐसा नहीं है।"
“क्या आपके पास वे कभी नहीं थे?”

"नहीं, मुझमें कभी भी साहस की भावना नहीं रही है। और न ही भविष्य में इसमें कोई बदलाव आने की संभावना है।"
"जिज्ञासा के बारे में क्या ख्याल है?"
“जिज्ञासा एक अलग बात है। मुझमें वह थोड़ी बहुत है।”
“अच्छा, क्या आपको नहीं लगता कि साहस और जिज्ञासा कुछ हद तक एक जैसे हैं?” मेई कासाहारा ने कहा। “जहाँ साहस होता है वहाँ जिज्ञासा होती है, और जहाँ जिज्ञासा होती है वहाँ साहस होता है। है ना?”
“हम्म, शायद वे कुछ हद तक मिलते-जुलते हैं,” मैंने कहा। “शायद आप सही हैं। शायद वे कभी-कभी एक-दूसरे से मेल खाते हैं।”
"जैसे कि जब आप चुपके से किसी के पिछवाड़े में घुस जाते हैं, मान लीजिए।"
“हाँ, बिलकुल वैसे ही,” मैंने अपनी जीभ पर एक लेमन कैंडी घुमाते हुए कहा। “जब आप किसी के पिछवाड़े में चुपके से घुसते हैं, तो ऐसा लगता है कि हिम्मत और जिज्ञासा साथ-साथ काम कर रहे हैं। जिज्ञासा कभी-कभी हिम्मत को बाहर निकाल देती है, शायद उसे जगा भी देती है। लेकिन जिज्ञासा आमतौर पर खत्म हो जाती है। हिम्मत को लंबे समय तक टिके रहना पड़ता है। जिज्ञासा एक ऐसे मज़ेदार दोस्त की तरह है जिस पर आप पूरी तरह भरोसा नहीं कर सकते। यह आपको उत्तेजित करती है और फिर आपको अपने दम पर आगे बढ़ने के लिए छोड़ देती है—जितनी भी हिम्मत आप जुटा सकते हैं।”
उसने कुछ देर सोचा। “शायद हाँ,” उसने कहा। “मुझे लगता है कि इसे देखने का यह एक तरीका है।” वह खड़ी हुई और अपनी पैंट की सीट पर लगी धूल झाड़ी। फिर उसने मेरी तरफ देखा। “बताइए, मिस्टर विंड-अप बर्ड, क्या आप कुआँ देखना चाहेंगे?”
“कुआँ?” मैंने पूछा। कुआँ?

“यहाँ एक सूखा हुआ कुआँ है। मुझे यह पसंद है। कुछ हद तक। क्या आप इसे देखना चाहेंगे?”

•

हम आंगन से होते हुए घर के किनारे की ओर चले गए। वहाँ एक गोल कुआँ था, जिसका व्यास लगभग साढ़े चार फुट था। कुएँ के ऊपर मोटे तख्ते, आकार और माप में काटकर लगाए गए थे, और उसे स्थिर रखने के लिए गोल लकड़ी के ढक्कन पर दो कंक्रीट के ब्लॉक रखे गए थे। कुएँ का किनारा लगभग तीन फुट ऊँचा था, और पास ही में एक पुराना पेड़ खड़ा था, मानो पहरा दे रहा हो। वह एक फलदार पेड़ था, लेकिन मैं यह नहीं बता सका कि वह किस प्रकार का था।
इस घर से जुड़ी लगभग हर चीज़ की तरह, कुआँ भी ऐसा लग रहा था मानो उसे बहुत पहले छोड़ दिया गया हो। उसमें कुछ ऐसा था मानो उसे "अत्यधिक सुन्नता" कहा जा सकता है। शायद जब लोग अपनी नज़रें हटा लेते हैं, तो निर्जीव वस्तुएँ और भी निर्जीव हो जाती हैं। बारीकी से निरीक्षण करने पर पता चला कि कुआँ वास्तव में अपने आसपास की वस्तुओं से कहीं अधिक पुराना था। यह घर बनने से बहुत पहले, एक अलग युग में बना था। यहाँ तक कि लकड़ी का ढक्कन भी प्राचीन था। कुएँ के किनारे पर कंक्रीट की मोटी परत चढ़ाई गई थी, जो संभवतः बहुत पहले बनी संरचना को मज़बूत करने के लिए की गई थी। पास का पेड़ मानो इस बात का गर्व कर रहा था कि वह उस क्षेत्र के किसी भी अन्य पेड़ से कहीं अधिक समय से वहाँ खड़ा है।
मैंने कंक्रीट का एक ब्लॉक ज़मीन पर रखा और लकड़ी के ढक्कन के दो अर्धचंद्राकार हिस्सों में से एक को हटा दिया। कुएँ के किनारे पर हाथ रखकर, मैं झुककर नीचे देखने लगा, लेकिन मुझे तल दिखाई नहीं दिया। ज़ाहिर है, यह एक गहरा कुआँ था, जिसका निचला

[illegible]
"[illegible]," [illegible]
[illegible]—
[illegible]
[illegible]
[illegible]

•

मैंने कुएँ का ढक्कन वापस लगा दिया और उसके ऊपर पत्थर रख दिया।
फिर मैंने अपनी घड़ी देखी। लगभग साढ़े ग्यारह बज रहे थे। कुमिको को उसके लंच ब्रेक के दौरान फोन करने का समय हो गया था। मैंने कहा, "मुझे घर जाना चाहिए।"
मेई कासाहारा ने थोड़ा सा मुंह बनाया। "आगे बढ़ो, मिस्टर विंड-अप बर्ड," उसने कहा। "तुम अपने घर उड़ जाओ।"
जब हम आंगन पार कर रहे थे, तो पत्थर की चिड़िया अभी भी अपनी सूखी आँखों से आकाश को घूर रही थी। आकाश अभी भी घने भूरे बादलों से ढका हुआ था, लेकिन कम से कम बारिश तो रुक गई थी। मेई कासाहारा ने मुट्ठी भर घास तोड़ी और उसे आकाश की ओर फेंक दिया। हवा न होने के कारण घास के तिनके उसके पैरों पर गिर पड़े।
"सोचो, अब से लेकर सूरज डूबने तक कितने घंटे बचे हैं," उसने मेरी तरफ देखे बिना कहा।
“सच है,” मैंने कहा। “काफी घंटे।”

कुमिको ओकाडा और नोबोरू वाटाया के जन्म पर

•

इकलौती संतान के रूप में पली-बढ़ी होने के कारण, मेरे लिए यह कल्पना करना मुश्किल है कि बड़े भाई-बहन अपने स्वतंत्र जीवन में एक-दूसरे के संपर्क में आने पर कैसा महसूस करते होंगे। कुमिको के मामले में, जब भी नोबोरू वटाया का ज़िक्र आता, उसके चेहरे पर एक अजीब सा भाव आ जाता, मानो उसने गलती से कुछ बेस्वाद चीज़ मुंह में डाल ली हो, लेकिन उस भाव का क्या मतलब था, यह मैं नहीं जान सकती थी। उसके बड़े भाई के प्रति मेरे मन में ज़रा भी सकारात्मक भावना नहीं थी। कुमिको यह जानती थी और इसे पूरी तरह से स्वाभाविक मानती थी। वह खुद भी उस आदमी को पसंद नहीं करती थी। यह कल्पना करना मुश्किल था कि अगर उनके बीच खून का रिश्ता न होता तो वे कभी एक-दूसरे से बात भी करते। लेकिन वास्तव में, वे भाई-बहन थे, जिससे मामला थोड़ा और पेचीदा हो जाता था।
उसके पिता से मेरी बहस होने और उसके परिवार से सारे संपर्क तोड़ने के बाद, कुमिको को नोबोरू वटाया से मिलने का लगभग कोई मौका नहीं मिला। बहस बहुत तीखी थी। मैंने अपनी ज़िंदगी में ज़्यादा बहसें नहीं की हैं—मैं उस तरह का इंसान ही नहीं हूँ— लेकिन एक बार शुरू हो जाए तो पूरी तरह से खत्म कर देता हूँ। और इस तरह कुमिको के पिता से मेरा रिश्ता पूरी तरह टूट गया। उसके बाद, जब मैंने अपने मन की सारी भड़ास निकाल दी, तो गुस्सा रहस्यमय तरीके से गायब हो गया। मुझे बस राहत महसूस हुई। मुझे उसे फिर कभी नहीं देखना था: ऐसा लगा जैसे मेरे कंधों से एक बड़ा बोझ उतर गया हो जिसे मैं लंबे समय से ढो रहा था। गुस्सा या नफ़रत का कोई अंश नहीं बचा था। मुझे उसके जीवन में आई कठिनाइयों के

लिए थोड़ी सहानुभूति भी महसूस हुई, चाहे उसका जीवन मुझे कितना भी मूर्खतापूर्ण और घृणित क्यों न लगे। मैंने कुमिको से कहा कि मैं उसके माता-पिता से फिर कभी नहीं मिलूंगा, लेकिन वह जब चाहे मुझसे अलग होकर उनसे मिलने जा सकती है। कुमिको ने उनसे मिलने की कोई कोशिश नहीं की। "कोई बात नहीं," उसने कहा। "वैसे भी मुझे उनसे मिलने की कोई खास इच्छा नहीं थी।"
उस समय नोबोरू वाटाया अपने माता-पिता के साथ रह रहा था, लेकिन जब उसके पिता और मेरे बीच झगड़ा शुरू हुआ, तो वह बिना किसी से कुछ कहे एकदम से अलग हो गया। इससे मुझे कोई हैरानी नहीं हुई। उसे मुझमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह मुझसे व्यक्तिगत संपर्क से बचने की पूरी कोशिश करता था, जब तक कि यह बिल्कुल ज़रूरी न हो। इसलिए, जब मैंने कुमिको के माता-पिता से मिलना बंद कर दिया, तो मेरे लिए नोबोरू वाटाया से मिलने का कोई कारण नहीं रह गया। कुमिको को भी उससे मिलने की कोई ज़रूरत नहीं थी। वह व्यस्त था, वह व्यस्त थी, और वे शुरू से ही कभी इतने करीब नहीं थे।
फिर भी, कुमिको कभी-कभी उनके कैंपस ऑफिस में उन्हें फोन करती थी, और वे कभी-कभी उनकी कंपनी के ऑफिस में उन्हें फोन करते थे (हालांकि कभी हमारे घर पर नहीं)। वह मुझे इन मुलाकातों के बारे में बताती थी, लेकिन बातचीत के विषय के बारे में विस्तार से नहीं बताती थी। मैंने कभी पूछा नहीं, और उसने भी कभी खुद से जानकारी नहीं दी, जब तक कि यह आवश्यक न हो।
मुझे इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं थी कि कुमिको और नोबोरू वटाया किस बारे में बात कर रहे थे। इसका मतलब यह नहीं है कि मुझे उनकी बातचीत से कोई आपत्ति थी। बस मुझे समझ नहीं आ रहा था। दो इतने अलग-अलग इंसानों के बीच बात करने के लिए आखिर क्या था? या फिर यह सिर्फ खून के रिश्ते के खास दायरे में ही संभव हो पाया?

•

भाई-बहन होने के बावजूद, नोबोरू वाटाया और कुमिको की उम्र में नौ साल का अंतर था। दोनों के बीच स्पष्ट घनिष्ठता की कमी का एक और कारण यह था कि कुमिको कई वर्षों तक अपने पिता के परिवार के साथ रही थी।
वटाया परिवार में कुमिको और नोबोरू ही इकलौते बच्चे नहीं थे। उनकी एक बहन भी थी, जो कुमिको से पाँच साल बड़ी थी। तीन साल की उम्र में कुमिको को टोक्यो से दूर निगाता भेज दिया गया, जहाँ कुछ समय के लिए उसकी दादी ने उसकी देखभाल की। कुमिको के माता- पिता ने बाद में उसे बताया कि ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि वह बचपन से ही बीमार रहती थी और उन्हें लगा कि ग्रामीण इलाकों की स्वच्छ हवा से उसे फायदा होगा, लेकिन उसे इस बात पर कभी पूरा यकीन नहीं हुआ। जहाँ तक उसे याद था, वह कभी शारीरिक रूप से कमजोर नहीं थी। उसे कभी कोई गंभीर बीमारी नहीं हुई थी, और निगाता स्थित उसके घर में भी कोई उसकी सेहत को लेकर ज्यादा चिंतित नहीं था। कुमिको ने एक बार मुझसे कहा था, "मुझे यकीन है कि यह बस एक बहाना था।"
एक रिश्तेदार से सुनी बात ने उसके संदेह को और पुख्ता कर दिया था। जाहिर तौर पर, कुमिको की मां और दादी के बीच लंबे समय से दुश्मनी चल रही थी, और कुमिको को निगाता लाने का फैसला उनके बीच हुए एक समझौते का नतीजा था। कुमिको के माता-पिता ने उसे कुछ समय के लिए सौंपकर उसकी दादी के गुस्से को शांत कर दिया था, और अपनी पोती को अपने पास रखकर दादी को अपने बेटे (कुमिको के पिता) के साथ अपने रिश्ते की पक्की पुष्टि मिल गई थी। दूसरे शब्दों में, कुमिको एक तरह से बंधक थी।

“इसके अलावा,” कुमिको ने मुझसे कहा, “उनके पहले से ही दो बच्चे थे। उनके तीसरे बच्चे से उन्हें कोई खास नुकसान नहीं हुआ। ऐसा नहीं था कि वे मुझे हटाना चाहते थे: मुझे लगता है कि उन्होंने सोचा होगा कि इतनी छोटी बच्ची को दूर भेजना उनके लिए ज्यादा मुश्किल नहीं होगा। शायद उन्होंने इस बारे में ज्यादा सोचा ही नहीं। समस्या का यही सबसे आसान हल था। यकीन मानिए? मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन उन्हें बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि ऐसी बात एक छोटे बच्चे पर कितना बुरा असर डाल सकती है।”
तीन से छह साल की उम्र तक कुमिको का पालन-पोषण निगाता में उसकी नानी ने किया। गाँव में बिताए उसके जीवन में कुछ भी दुखद या विकृत नहीं था। उसकी नानी उससे बहुत प्यार करती थीं, और कुमिको को अपने सगे भाई-बहनों की तुलना में अपने लगभग हमउम्र चचेरे भाई-बहनों के साथ खेलने में ज़्यादा मज़ा आता था। आखिरकार, जिस साल उसे प्राथमिक विद्यालय में दाखिला लेना था, उसी साल उसे टोक्यो वापस लाया गया। उसके माता-पिता अपनी बेटी से लंबे समय तक अलग रहने को लेकर चिंतित थे, और उन्होंने उसे बहुत देर होने से पहले वापस लाने पर ज़ोर दिया। हालाँकि, एक तरह से देखा जाए तो, बहुत देर हो चुकी थी। उसे वापस भेजने के फैसले के बाद के हफ्तों में, उसकी नानी बहुत ज़्यादा परेशान हो गईं। उन्होंने खाना- पीना छोड़ दिया और मुश्किल से सो पाती थीं। एक पल वह छोटी कुमिको को पूरे दिल से गले लगातीं और सहलातीं, और अगले ही पल वह उसके हाथ पर स्केल से इतनी ज़ोर से मारतीं कि निशान पड़ जाते। एक पल वह कहतीं कि वह उसे जाने नहीं देना चाहतीं, कि उसे खोने से बेहतर है मर जाना, और अगले ही पल वह उसे जाने के लिए कहतीं, कि वह उसे फिर कभी नहीं देखना चाहतीं। वह बेहद गंदी भाषा में कुमिको को बताती कि उसकी माँ कितनी बुरी औरत है। उसने कैंची से अपनी

कुमिको के निगाता से लौटने के एक साल बाद उसकी बहन की फूड पॉइजनिंग से मृत्यु न हुई होती, तो हालात बिल्कुल अलग होते। "अगर मेरी बहन जीवित होती, तो घर पर हालात बेहतर हो सकते थे," कुमिको ने कहा। “वो बस एक छोटी बच्ची थी, छठी कक्षा में पढ़ती थी, लेकिन वो हमारे घर की जान थी। शायद अगर वो न मरी होती, तो हम सब आज से ज़्यादा सामान्य होते। कम से कम मैं तो इतनी निराश न होती। समझ रहे हो ना? उसके बाद मुझे बहुत बुरा लगा। काश मैं अपनी बहन की जगह मर जाती? मैं किसी के काम की नहीं थी। मैं किसी को खुश नहीं कर सकती थी। काश मैं वो होती? मेरे माता-पिता और भाई को पता था कि मैं कैसा महसूस कर रही हूँ, लेकिन उन्होंने मुझे दिलासा देने के लिए कुछ नहीं कहा। बल्कि इसके विपरीत। उन्हें जब भी मौका मिलता, वे मेरी मरी हुई बहन के बारे में बात करते: वो कितनी सुंदर थी, कितनी होशियार, सब उसे कितना पसंद करते थे, कितनी समझदार थी, कितना अच्छा पियानो बजाती थी। और फिर उन्होंने मुझे पियानो सिखाना शुरू कर दिया! उसकी मौत के बाद उस बड़े पियानो को किसी को तो इस्तेमाल करना ही था। मुझे पियानो बजाने में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। मुझे पता था कि मैं कभी भी उसके जितना अच्छा नहीं बजा सकती, और मुझे एक और तरीका नहीं चाहिए था जिससे मैं ये साबित कर सकूँ कि मैं एक इंसान के तौर पर उससे कितनी कमतर हूँ। मैं नहीं कर सकती थी।” किसी की भी जगह लेना, खासकर उसकी, मैं कोशिश भी नहीं करना चाहती थी। लेकिन वे मेरी बात नहीं सुनते थे। वे बिल्कुल नहीं सुनते थे। इसलिए आज तक मुझे पियानो देखना बिल्कुल पसंद नहीं है। मुझे किसी को भी पियानो बजाते देखना अच्छा नहीं लगता।
जब कुमिको ने मुझे यह बताया, तो मुझे उसके परिवार पर बहुत गुस्सा आया। उन्होंने उसके साथ जो किया था, उसके लिए जो नहीं कर

पाए थे, उसके लिए। यह हमारी शादी से पहले की बात है। हम एक-दूसरे को सिर्फ़ दो महीने से थोड़ा ज़्यादा ही जानते थे। वह एक शांत रविवार की सुबह थी, और हम बिस्तर पर थे। वह अपने बचपन के बारे में बहुत देर तक बातें करती रही, मानो किसी उलझे हुए धागे को सुलझा रही हो, हर घटना को बताते हुए रुक-रुक कर उसकी सच्चाई का आकलन करती रही। यह पहली बार था जब उसने मुझे अपने बारे में इतना कुछ बताया था। उस सुबह तक मैं उसके परिवार या उसके बचपन के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। मैं जानता था कि वह शांत स्वभाव की है, उसे चित्रकारी पसंद है, उसके लंबे, सुंदर बाल हैं, उसके दाहिने कंधे पर दो तिल हैं। और मेरे साथ सोना उसका पहला यौन अनुभव था।
बोलते-बोलते उसकी आँखों में हल्की सी आँसू आ गए। मैं समझ सकती थी कि उसे रोने की ज़रूरत क्यों थी। मैंने उसे गले लगाया और उसके बालों को सहलाया। कुमिको ने कहा, "अगर वो ज़िंदा होती, तो मुझे यकीन है कि तुम उसे बहुत प्यार करते। हर कोई उसे प्यार करता था। पहली नज़र में ही प्यार हो गया था।"
“शायद,” मैंने कहा। “लेकिन मैं तो तुमसे ही प्यार करता हूँ। बात बहुत सीधी-सादी है। बस तुम और मैं हैं। तुम्हारी बहन का इससे कोई लेना-देना नहीं है।”
कुछ देर तक कुमिको वहीं लेटी रही, सोचती रही। रविवार की सुबह साढ़े सात बजे: ऐसा समय जब हर आवाज़ धीमी और खोखली सी लगती है। मैं अपने अपार्टमेंट की छत पर कबूतरों की चहचहाहट सुन रही थी, दूर से किसी के कुत्ते को पुकारने की आवाज़ आ रही थी। कुमिको काफी देर तक छत पर एक ही जगह को घूरती रही।
अंत में उसने कहा, "मुझे बताओ, क्या तुम्हें बिल्लियाँ पसंद हैं?"

मैंने कहा, "मुझे ये बहुत पसंद हैं। बचपन में मेरे पास हमेशा एक होता था। मैं उससे लगातार खेलता था, यहां तक कि उसके साथ सोता भी था।"
“कितने भाग्यशाली हो तुम। मुझे बिल्ली पालने की बहुत इच्छा थी। पर मुझे इजाज़त नहीं मिली। मेरी माँ को बिल्लियाँ बिल्कुल पसंद नहीं थीं। पूरी ज़िंदगी में मुझे कभी वो चीज़ नहीं मिली जो मैं सच में चाहती थी। एक बार भी नहीं। यकीन मानिए? आप समझ नहीं सकते कि ऐसी ज़िंदगी कैसी होती है। जब आप ऐसी ज़िंदगी के आदी हो जाते हैं—जिसमें आपको कभी वो चीज़ नहीं मिलती जो आप चाहते हैं—तो आप ये जानना ही बंद कर देते हैं कि आप असल में क्या चाहते हैं।” मैंने उसका हाथ पकड़ा। “शायद अब तक तुम्हारे लिए ऐसा ही रहा हो। लेकिन अब तुम बच्ची नहीं हो। तुम्हें अपनी जिंदगी खुद चुनने का अधिकार है। तुम फिर से शुरुआत कर सकती हो। अगर तुम्हें बिल्ली चाहिए, तो बस एक ऐसी जिंदगी चुनो जिसमें तुम बिल्ली पाल सको। यह बहुत आसान है। यह तुम्हारा अधिकार है... है ना?”
उसकी निगाहें मेरी निगाहों पर टिकी रहीं। "हम्म," उसने कहा। "ठीक है।" कुछ महीनों बाद, कुमिको और मैं शादी के बारे में बात कर रहे थे।

•

अगर कुमिको का बचपन उस घर में विकृत और मुश्किलों से भरा था, तो नोबोरू वटाया का बचपन एक अलग ही मायने में विचित्र रूप से विकृत था। माता-पिता अपने इकलौते बेटे के लिए दीवाने थे, लेकिन वे सिर्फ उस पर स्नेह ही नहीं बरसाते थे; बल्कि उससे कुछ अपेक्षाएँ भी रखते थे। पिता को पूरा विश्वास था कि जापानी समाज में एक परिपूर्ण जीवन जीने का एकमात्र तरीका सर्वोच्च अंक प्राप्त

स्वयं के मूल्यों से रहित, ऐसे लोग केवल दूसरों के मानकों या विचारों को अपनाकर ही किसी निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं। उनके दिमाग को नियंत्रित करने वाला एकमात्र सिद्धांत यह प्रश्न है, "मैं कैसी दिखती हूँ?" और इस तरह श्रीमती वटाया एक संकीर्ण सोच वाली, चिड़चिड़ी महिला बन गईं, जिनकी एकमात्र चिंताएँ सरकार में उनके पति का पद और उनके बेटे का शैक्षणिक प्रदर्शन थीं। जो भी चीज उसकी संकीर्ण दृष्टि के दायरे में नहीं आती थी, वह उसके लिए अर्थहीन हो जाती थी।
और इस तरह माता-पिता ने अपनी संदिग्ध विचारधारा और दुनिया के प्रति अपने विकृत दृष्टिकोण को युवा नोबोरू वाटाया के दिमाग में ठूंस दिया। उन्होंने उसे प्रोत्साहित किया और अपनी जेब से सबसे अच्छे ट्यूटर उपलब्ध कराए। जब उसने परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए, तो उन्होंने अपने बेटे को उसकी हर मनचाही चीज़ खरीदकर पुरस्कृत किया। उसका बचपन अत्यधिक भौतिक विलासिता से भरा था, लेकिन जब वह जीवन के सबसे संवेदनशील और नाजुक दौर में पहुँचा, तो उसके पास गर्लफ्रेंड के लिए समय नहीं था, अन्य लड़कों के साथ मौज-मस्ती करने का कोई मौका नहीं था। उसे अपनी सारी ऊर्जा नंबर एक की स्थिति बनाए रखने में लगानी पड़ी। नोबोरू वाटाया इस तरह जीना पसंद करता था या नहीं, यह मैं नहीं जानती। कुमिको भी नहीं जानती थी। नोबोरू वाटाया अपने भावनाओं को प्रकट करने वाला व्यक्ति नहीं था: न तो उससे, न अपने माता- पिता से, न किसी से। वैसे भी उसके पास कोई विकल्प नहीं था। मुझे लगता है कि कुछ विचार इतने सरल और एकतरफा होते हैं कि वे अनवरत हो जाते हैं। बहरहाल, नोबोरू वाटाया ने अपने प्रतिष्ठित निजी तैयारी विद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की, टोक्यो विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र में विशेषज्ञता हासिल की और इस

शीर्ष संस्थान से सर्वोच्च अंकों के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की।
उनके पिता चाहते थे कि विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद वे सरकार या किसी बड़ी कंपनी में नौकरी करें, लेकिन नोबोरू वाटाया ने शिक्षा जगत में ही रहने और विद्वान बनने का फैसला किया। वे मूर्ख नहीं थे। वे जानते थे कि उनके लिए सबसे उपयुक्त क्या है: सामूहिक गतिविधियों की दुनिया नहीं, बल्कि ज्ञान के अनुशासित और व्यवस्थित उपयोग की दुनिया, जहाँ बुद्धि के व्यक्तिगत कौशल का महत्व हो। उन्होंने येल विश्वविद्यालय में दो साल तक स्नातकोत्तर अध्ययन किया और फिर टोक्यो के स्नातकोत्तर विश्वविद्यालय में वापस आ गए। इसके कुछ समय बाद ही उन्होंने अपने माता-पिता के आग्रह पर एक तयशुदा शादी कर ली, लेकिन यह शादी दो साल से अधिक नहीं चली। तलाक के बाद वे अपने माता-पिता के घर वापस आ गए। जब मैं उनसे पहली बार मिला, तब तक नोबोरू वाटाया एक पूरी तरह से विकसित विलक्षण व्यक्तित्व और बेहद अप्रिय चरित्र बन चुके थे।
कुमिको से शादी के लगभग दो साल बाद, नोबोरू वटाया ने एक मोटी-सी किताब प्रकाशित की। यह अर्थशास्त्र पर एक विस्तृत शोधपत्र था, जिसमें तकनीकी शब्दावली का भरपूर इस्तेमाल किया गया था, और मुझे इसमें लिखी एक भी बात समझ नहीं आई। एक भी पन्ना मेरी समझ में नहीं आया। मैंने कोशिश की, लेकिन लेखन इतना जटिल था कि मैं उसे समझ ही नहीं पाया। मुझे यह भी समझ नहीं आया कि विषयवस्तु इतनी कठिन थी या लेखन ही इतना खराब था। हालांकि, अर्थशास्त्र के जानकारों ने इसे बहुत सराहा। एक समीक्षक ने तो इसे "एक बिल्कुल नए दृष्टिकोण से लिखा गया एक बिल्कुल नया प्रकार का अर्थशास्त्र" बताया, लेकिन समीक्षा में मुझे बस इतना ही समझ

आया। जल्द ही मीडिया ने उन्हें "नए युग का नायक" कहकर प्रचारित करना शुरू कर दिया। उनकी किताब की व्याख्या करते हुए पूरी-पूरी किताबें प्रकाशित हुईं। उनके द्वारा गढ़े गए दो शब्द, "यौन अर्थशास्त्र" और "उत्सर्जन अर्थशास्त्र", उस वर्ष के चर्चित शब्द बन गए। अखबारों और पत्रिकाओं में उन्हें नए युग के बुद्धिजीवियों में से एक बताते हुए विशेष लेख प्रकाशित हुए। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि इन लेखों को लिखने वाले किसी भी व्यक्ति को नोबोरू वाटाया की किताब का मतलब समझ आया होगा। मुझे शक था कि उन्होंने किताब खोली भी होगी या नहीं। लेकिन ऐसी बातों से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था। नोबोरू वाटाया युवा, अविवाहित और इतने बुद्धिमान थे कि उन्होंने एक ऐसी किताब लिखी जिसे कोई समझ ही नहीं सकता था।
इससे उन्हें प्रसिद्धि मिली। सभी पत्रिकाएँ आलोचनात्मक लेखों के लिए उनके पास आने लगीं। वे राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर टिप्पणी करने के लिए टेलीविजन पर दिखाई देने लगे। जल्द ही वे एक राजनीतिक बहस कार्यक्रम में नियमित पैनल सदस्य बन गए। नोबोरू वाटाया को जानने वाले (जिनमें कुमिको और मैं भी शामिल थे) ने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वे इतने ग्लैमरस काम के लिए उपयुक्त होंगे। हर कोई उन्हें एक गंभीर अकादमिक व्यक्ति मानता था, जिसे अपने विशेषज्ञता के क्षेत्र के अलावा किसी और चीज़ में रुचि नहीं थी। लेकिन जैसे ही उन्हें जनसंचार जगत का स्वाद मिला, ऐसा लगा मानो वे इस काम में पूरी तरह रम गए हों। वे इसमें माहिर थे। उन्हें कैमरे के सामने होने से कोई आपत्ति नहीं थी। बल्कि, वे कैमरे के सामने वास्तविक जीवन से भी अधिक सहज प्रतीत होते थे। हमने उनके इस अचानक परिवर्तन को आश्चर्य से देखा। टेलीविजन पर हमने जिस नोबोरू वाटाया को देखा, वे महंगे सूट और बिल्कुल मेल

खाती टाई पहने हुए थे, और उनके चश्मे के फ्रेम बेहतरीन कछुए की खोल के बने थे। उनके बाल नवीनतम स्टाइल में बने हुए थे। स्पष्ट रूप से किसी पेशेवर ने उनका मेकअप किया था। मैंने उन्हें पहले कभी इतने आलीशान अंदाज में नहीं देखा था। और भले ही ये कपड़े उसे किसी नेटवर्क ने दिए हों, फिर भी वो उस स्टाइल को बड़ी सहजता से अपना रहा था, मानो उसने पूरी जिंदगी ऐसे ही कपड़े पहने हों। ये कौन आदमी है? जब मैंने उसे पहली बार देखा तो मेरे मन में यही सवाल उठा। असली नोबोरू वटाया कहाँ है?
कैमरों के सामने, उन्होंने कम बोलने वाले व्यक्ति की भूमिका निभाई। जब उनसे राय पूछी जाती, तो वे उसे सरल, स्पष्ट और सटीक रूप से व्यक्त करते। जब भी बहस गरमा जाती और बाकी सब चिल्लाने लगते, वे शांत रहते। जब उन्हें चुनौती दी जाती, तो वे चुप रहते, अपने प्रतिद्वंद्वी को अपनी बात कहने देते और फिर एक ही वाक्य से उसके तर्क को ध्वस्त कर देते। उन्होंने मधुर स्वर और मुस्कान के साथ निर्णायक प्रहार करने की कला में महारत हासिल कर ली थी। टेलीविजन स्क्रीन पर, वे असली नोबोरू वटाया से कहीं अधिक बुद्धिमान और विश्वसनीय दिखते थे। मुझे यकीन नहीं है कि उन्होंने यह कैसे किया। वे निश्चित रूप से सुंदर नहीं थे। लेकिन वे लंबे और पतले थे और उनमें अच्छे संस्कारों की झलक थी। टेलीविजन के माध्यम में, नोबोरू वटाया को वह स्थान मिल गया था जहाँ वे वास्तव में थे। जनसंचार माध्यमों ने उनका खुले दिल से स्वागत किया, और उन्होंने भी उतने ही उत्साह से उनका स्वागत किया।
इस बीच, मुझे उसे देखना भी असहनीय लगता था—चाहे वह छपे हुए रूप में हो या टीवी पर। वह बेशक प्रतिभा और योग्यता का धनी था। यह बात मैं मानता था। वह कम से कम शब्दों में अपने प्रतिद्वंद्वी

हो: बस ऐसा दिखना ही काफी था, बशर्ते वह जनता की भावनाओं को जगा दे।
तकनीकी शब्दावली का प्रयोग करना उनकी एक और खासियत थी। ज़ाहिर है, किसी को इसका मतलब नहीं पता होता था, लेकिन वे इसे इस तरह से प्रस्तुत करते थे कि अगर आपको समझ नहीं आया तो आप समझ जाते थे कि यह आपकी गलती है। और वे हमेशा आंकड़े पेश करते रहते थे। ये आंकड़े उनके दिमाग में बसे हुए थे और उनमें जबरदस्त प्रेरक शक्ति थी, लेकिन अगर आप बाद में इस पर गौर करते, तो आपको एहसास होता कि किसी ने भी उनके स्रोतों या उनकी विश्वसनीयता पर सवाल नहीं उठाया था।
उसकी ये चालाकियाँ मुझे पागल कर देती थीं, पर मैं कभी किसी को ठीक से समझा नहीं पाया कि मुझे इतना गुस्सा क्यों आता था। मैं कभी उसका खंडन करने के लिए कोई तर्क नहीं दे पाया। ऐसा लगता था जैसे किसी भूत से मुक्केबाजी कर रहा हूँ: मुक्के बस हवा में ही घूमते रहते थे। उनके टकराने के लिए कोई ठोस आधार ही नहीं था। मुझे यह देखकर हैरानी होती थी कि पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी भी उसे जवाब देते थे। इससे मुझे अजीब सी झुंझलाहट होती थी।
और इस तरह नोबोरू वाटाया को उस दौर के सबसे बुद्धिमान व्यक्तियों में से एक माना जाने लगा। अब किसी को भी निरंतरता की परवाह नहीं थी। टीवी पर लोग सिर्फ बौद्धिक बहस देखना चाहते थे; जितनी ज्यादा तीखी बहस होती, उतना ही अच्छा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि एक ही व्यक्ति सोमवार को कुछ कहता है और गुरुवार को ठीक वही बात कहता है।

•

नोबोरू वाटाया से मेरी पहली मुलाकात तब हुई जब कुमिको और मैंने शादी करने का फैसला किया। मैं उसके पिता से मिलने से पहले उससे

बात करना चाहता था। मुझे लगा कि मेरी उम्र के करीब होने के नाते, शायद वह अपने पिता से मेरे लिए रास्ता आसान करने के लिए राजी हो जाए।
"मुझे नहीं लगता कि आपको उसकी मदद पर भरोसा करना चाहिए," कुमिको ने स्पष्ट कठिनाई के साथ मुझसे कहा। "मैं इसे ठीक से समझा नहीं सकती, लेकिन वह उस तरह का व्यक्ति नहीं है।"
मैंने कहा, "खैर, मुझे उससे कभी न कभी तो मिलना ही पड़ेगा।" “मुझे लगता है,” कुमिको ने कहा।
मैंने कहा, "कोशिश करने में क्या हर्ज है। क्या पता क्या हो जाए।"
“मुझे लगता है,” कुमिको ने कहा। “शायद।”
फोन पर, नोबोरू वाटाया ने मुझसे मिलने की संभावना के प्रति कोई खास उत्साह नहीं दिखाया। उन्होंने कहा कि अगर मैं ज़िद करूं तो वे मुझे आधा घंटा दे सकते हैं। हमने ओचानोमिज़ू स्टेशन के पास एक कॉफी हाउस में मिलने का फैसला किया। उस समय वे सिर्फ एक कॉलेज इंस्ट्रक्टर थे, उनकी किताब लिखने से बहुत पहले और उनके पहनावे में बदलाव आने से भी बहुत पहले। उनके स्पोर्ट्स कोट की जेबें लंबे समय तक मुट्ठियां ठूंसे रहने के कारण फूली हुई थीं। उनके बाल कम से कम दो हफ्ते से ट्रिम नहीं हुए थे। उनकी मस्टर्ड रंग की पोलो शर्ट उनकी नीली और ग्रे ट्वीड जैकेट से मेल नहीं खा रही थी। वे एक आम युवा असिस्टेंट प्रोफेसर की तरह दिखते थे जिनके लिए पैसा एक अनजान चीज़ थी। उनकी आंखों में एक नींद भरी झलक थी, जैसे कोई पुस्तकालय में दिन भर के शोध के बाद चुपके से निकला हो, लेकिन अगर आप गौर से देखें तो उनमें एक तीखी, ठंडी चमक भी थी।

अपना परिचय देने के बाद, मैंने कहा कि मैं जल्द ही कुमिको से शादी करने की योजना बना रहा हूँ। मैंने यथासंभव ईमानदारी से अपनी बात समझाने की कोशिश की। मैंने बताया कि मैं एक लॉ फर्म में काम करता हूँ, लेकिन मुझे पता है कि यह मेरे लिए सही नौकरी नहीं है। मैं अभी भी खुद को खोज रहा हूँ। ऐसे व्यक्ति के लिए शादी का जोखिम उठाना शायद एक गैरजिम्मेदाराना कदम लगे, लेकिन मैंने कहा कि मैं उसकी बहन से प्यार करता हूँ और मुझे विश्वास है कि मैं उसे खुश रख सकता हूँ। हम दोनों एक-दूसरे को ताकत और सहारा दे सकते हैं।
नोबोरू वटाया पर मेरी बातें मानो अनसुनी रह गईं। वह हाथ बांधे चुपचाप सुन रहे थे। मेरी छोटी सी बात खत्म होने के बाद भी वह बिल्कुल शांत बैठे रहे। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी और बात में डूबे हुए हों।
मुझे शुरू से ही उसकी मौजूदगी में असहजता महसूस हो रही थी और मैंने सोचा कि यह स्थिति के कारण है। किसी अजनबी से यह कहना कि, "मैं तुम्हारी बहन से शादी करना चाहता हूँ," किसी को भी असहज लगेगा। लेकिन जैसे ही मैं उसके सामने बैठा, मेरे अंदर एक अजीब सी बेचैनी पैदा होने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे पेट में कोई बदबूदार, अजीब सा पदार्थ पनप रहा हो। ऐसा नहीं था कि उसने कुछ कहा या किया हो जिससे मुझे बुरा लगा हो। बात तो उसके चेहरे की थी: नोबोरू वटाया का चेहरा। मुझे सहज रूप से यह आभास हो रहा था कि उस पर किसी और चीज की परत चढ़ी हुई है। कुछ गड़बड़ है। यह उसका असली चेहरा नहीं था। मैं इस भावना को दूर नहीं कर पा रहा था।
मैं वहां से तुरंत निकलना चाहता था। मैंने सचमुच उठकर जाने के बारे में सोचा, लेकिन मुझे अंत तक रुकना ही था। मैं वहीं बैठा

रहा, अपनी गुनगुनी कॉफी की चुस्कियां लेता रहा और उसके कुछ कहने का इंतजार करता रहा।
जब वह बोला, तो ऐसा लगा मानो वह जानबूझकर अपनी आवाज़ धीमी रख रहा हो ताकि ऊर्जा बचा सके। उसने कहा, “सच कहूँ तो, मैं न तो समझ पा रहा हूँ और न ही मुझे इस बात की परवाह है कि तुम मुझे क्या बता रहे हो। जिन चीज़ों की मुझे परवाह है, वे बिल्कुल अलग हैं, ऐसी चीज़ें जिनके बारे में मुझे लगता है कि तुम न तो समझ पाओगे और न ही परवाह कर पाओगे। संक्षेप में कहूँ तो, अगर तुम कुमिको से शादी करना चाहते हो और वह भी तुमसे, तो मुझे तुम्हारे रास्ते में आने का न तो कोई अधिकार है और न ही कोई कारण। इसलिए, मैं तुम्हारे रास्ते में नहीं आऊँगा। मैं ऐसा करने के बारे में सोच भी नहीं सकता। लेकिन मुझसे और कुछ उम्मीद मत रखना। और सबसे महत्वपूर्ण बात, मुझसे यह उम्मीद मत करना कि मैं इस मामले पर जितना समय बर्बाद कर चुका हूँ, उससे ज़्यादा समय बर्बाद करूँ।” उन्होंने अपनी घड़ी देखी और खड़े हो गए। उनका बयान संक्षिप्त और सटीक था। उसमें न तो कोई अतिशयोक्ति थी और न ही कोई कमी। मैं उनकी बात और मेरे बारे में उनके विचार दोनों को पूरी तरह समझ गया था।
और इस तरह हम उस दिन अलग हो गए।
कुमिको और मेरी शादी के बाद, कई ऐसे मौके आए जब नोबोरू वटाया और मुझे, जीजा-साले होने के नाते, आपस में बातचीत करनी पड़ी—भले ही सीधे बातचीत न हो। जैसा कि उन्होंने कहा था, हमारे बीच कोई साझा ज़मीन नहीं थी, और इसलिए चाहे हम एक-दूसरे के आस-पास कितनी भी बातें करते, वह कभी भी बातचीत का रूप नहीं ले पाती। ऐसा लगता था मानो हम एक-दूसरे से अलग-अलग भाषाओं में बात कर रहे हों। अगर दलाई लामा अपनी मृत्युशय्या पर होते और जैज़ संगीतकार एरिक

डॉल्फ़ी उन्हें यह समझाने की कोशिश करते कि बास शहनाई की आवाज़ में बदलाव के अनुसार इंजन ऑयल चुनना कितना ज़रूरी है, तो शायद वह बातचीत नोबोरू वटाया के साथ मेरी बातचीत से कहीं ज़्यादा सार्थक और असरदार होती।
मुझे दूसरों के संपर्क में आने से लंबे समय तक भावनात्मक कष्ट नहीं होता। कोई व्यक्ति मुझे गुस्सा दिला सकता है या परेशान कर सकता है, लेकिन ज़्यादा देर तक नहीं। मैं खुद को और दूसरे को दो अलग-अलग स्तरों के प्राणी के रूप में पहचान सकता हूँ। यह एक तरह की प्रतिभा है (जिसका मतलब मैं शेखी नहीं बघार रहा हूँ: यह आसान नहीं है, इसलिए अगर आप ऐसा कर सकते हैं, तो यह एक तरह की प्रतिभा है—एक विशेष शक्ति)। जब कोई मुझे परेशान करता है, तो सबसे पहले मैं अपनी अप्रिय भावनाओं के स्रोत को एक ऐसे क्षेत्र में स्थानांतरित कर देता हूँ जिसका मुझसे कोई संबंध नहीं होता। फिर मैं खुद से कहता हूँ, ठीक है, मुझे बुरा लग रहा है, लेकिन मैंने इन भावनाओं के स्रोत को एक अलग क्षेत्र में, यहाँ से दूर, रख दिया है, जहाँ मैं बाद में अपने समय में इसकी जाँच कर सकता हूँ और इससे निपट सकता हूँ। दूसरे शब्दों में, मैं अपनी भावनाओं को रोक देता हूँ। बाद में, जब मैं उनकी जाँच करने के लिए उन्हें खोलता हूँ, तो कभी-कभी पाता हूँ कि मेरी भावनाएँ अभी भी परेशान हैं, लेकिन ऐसा बहुत कम होता है। समय बीतने के साथ आमतौर पर अधिकांश चीजों का ज़हर निकल जाता है और वे हानिरहित हो जाती हैं। फिर, देर-सवेर, मैं उन्हें भूल जाता हूँ।
अब तक के अपने जीवन में, मैंने इस भावनात्मक प्रबंधन प्रणाली को सक्रिय करके अधिकांश व्यर्थ की परेशानियों से बचकर अपने जीवन को अपेक्षाकृत स्थिर बनाए रखा है। इतने समय तक इस प्रभावी प्रणाली को बनाए रखने में सफल होना मेरे लिए गर्व की बात है।

अगली बार जब मैं कुमिको से मिली, तो उसने मुझसे अपने भाई के बारे में मेरी राय पूछी। मैं उसे ईमानदारी से नहीं बता पाई। मैं उससे उसके मुखौटे के बारे में और उसके पीछे छिपी उस विकृत "किसी चीज़" के बारे में पूछना चाहती थी। मैं उसे अपने भाई के बारे में अपने सारे विचार बताना चाहती थी। लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा। मुझे लगा कि ये वो बातें हैं जो मैं उसे कभी नहीं बता पाऊँगी, कि अगर मैं खुद को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर सकती, तो मुझे बिल्कुल भी व्यक्त नहीं करना चाहिए—अभी नहीं।
“वो… अलग है, ये तो पक्का है,” मैंने कहा। मैं इसमें कुछ और जोड़ना चाहता था, लेकिन मुझे शब्द नहीं मिल रहे थे। और न ही उसने मुझसे कुछ और पूछा। उसने बस चुपचाप सिर हिला दिया।
उसके बाद नोबोरू वटाया के प्रति मेरी भावनाएँ कभी नहीं बदलीं। वह मुझे पहले की तरह ही बेचैन कर देता था। यह एक लगातार बने रहने वाले हल्के बुखार जैसा था। मेरे घर में टीवी नहीं था, लेकिन अजीब संयोग से, जब भी मैं कहीं टीवी की तरफ देखता, वह उस पर कुछ न कुछ कहता हुआ दिखाई देता था। अगर मैं डॉक्टर के वेटिंग रूम में किसी पत्रिका के पन्ने पलटता, तो उसमें नोबोरू वटाया की तस्वीर और उसका लिखा लेख होता था। मुझे ऐसा लगता था मानो नोबोरू वटाया दुनिया के हर कोने में मेरा इंतज़ार कर रहा हो।
ठीक है, सच बात तो यही है। मुझे वह आदमी बिल्कुल पसंद नहीं था।

हैप्पी क्लीनर्स

•

और क्रेता कानो ने प्रवेश किया।
मैंने कुमिको का ब्लाउज और स्कर्ट स्टेशन के पास वाले लॉन्ड्री में दे दिया। आम तौर पर, मैं अपने कपड़े घर के कोने पर स्थित लॉन्ड्री में धुलवाने ले जाती थी, इसलिए नहीं कि मुझे वह पसंद था, बल्कि इसलिए कि वह पास था। कुमिको कभी-कभी ऑफिस जाते समय स्टेशन वाले लॉन्ड्री में कपड़े धुलवाती थी। वह सुबह ऑफिस जाते समय कुछ कपड़े वहाँ छोड़ देती थी और घर लौटते समय वापस ले आती थी। कुमिको के अनुसार, यह जगह थोड़ी महंगी थी, लेकिन पड़ोस वाले लॉन्ड्री से बेहतर काम करती थी। और अपने अच्छे कपड़े तो वह हमेशा वहीं धुलवाती थी। इसीलिए उस दिन मैंने साइकिल से स्टेशन जाने का फैसला किया। मुझे लगा कि वह अपने कपड़े वहीं धुलवाना पसंद करेगी।
मैं कुमिको का ब्लाउज और स्कर्ट लेकर घर से निकली, और मैंने पतली हरी सूती पैंट, अपने रोज़ाना के टेनिस शूज़ और वो पीली वैन हेलन प्रमोशनल टी-शर्ट पहनी हुई थी जो कुमिको को एक रिकॉर्ड कंपनी से मिली थी। दुकान के मालिक ने अपना जेवीसी बूम बॉक्स तेज़ आवाज़ में बजा रखा था, जैसा कि पिछली बार भी था। आज सुबह एंडी विलियम्स का टेप चल रहा था। जैसे ही मैं अंदर गई, "हवाईयन वेडिंग सॉन्ग" खत्म हो रहा था और "कैनेडियन सनसेट" शुरू हो गया। मालिक खुशी से सीटी बजाते हुए बॉलपॉइंट पेन से नोटबुक में लिख रहा था, उसकी हरकतें पहले की तरह ही जोशीली थीं। शेल्फ पर रखे टेपों के ढेर में मुझे सर्जियो मेंडेस, बर्ट कैम्पफर्ट और 101 स्ट्रिंग्स जैसे नाम दिखे। तो वो आसान संगीत सुनने का शौकीन

था। अचानक मेरे मन में आया कि हार्ड-ड्राइविंग जैज़ के सच्चे दीवाने—अल्बर्ट आयलर, डॉन चेरी, सेसिल टेलर—रेलवे स्टेशनों के सामने मॉल में सफाई की दुकानें कभी नहीं खोल सकते। या शायद खोल भी सकते हैं। वे सफाईकर्मी बनकर खुश नहीं रहेंगे।
जब मैंने हरे रंग का फूलों वाला ब्लाउज और हल्के भूरे रंग की स्कर्ट काउंटर पर रखी, तो उसने उन्हें जल्दी से जांचने के लिए फैलाया, फिर रसीद पर "ब्लाउज और स्कर्ट" लिखा। उसकी लिखावट साफ और सलीके से बनी थी। मुझे ऐसे सफाईकर्मी पसंद हैं जो साफ लिखते हैं। और अगर उन्हें एंडी विलियम्स पसंद हैं, तो और भी अच्छा। “श्री ओकाडा, है ना?” मैंने कहा, वह सही थे। उन्होंने मेरा नाम लिखा, कार्बन कॉपी फाड़ी और मुझे दे दी। “ये अगले मंगलवार तक तैयार हो जाएँगे, इसलिए इस बार आकर इन्हें ले जाना मत भूलना। श्रीमती ओकाडा के यहाँ?”
"अहां।"
“बहुत सुंदर,” उन्होंने कहा।
आसमान में बादलों की एक धुंधली परत छाई हुई थी। मौसम विभाग ने बारिश की भविष्यवाणी की थी। साढ़े नौ बज चुके थे, लेकिन फिर भी बहुत से लोग ब्रीफकेस और तहबंद छाते लिए स्टेशन की सीढ़ियों की ओर दौड़ रहे थे। देर से आने वाले यात्री। सुबह गर्म और उमस भरी थी, लेकिन इन लोगों पर इसका कोई असर नहीं पड़ा, सभी सूट, टाई और काले जूते पहने हुए थे। मैंने अपनी उम्र के कई लोगों को देखा, लेकिन उनमें से किसी ने भी वैन हेलन की टी-शर्ट नहीं पहनी थी। हर किसी ने अपनी कंपनी का लैपल पिन लगाया हुआ था और बगल में निक्केई न्यूज़ की एक प्रति दबा रखी थी। घंटी बजी और उनमें से कई लोग सीढ़ियों से ऊपर भागे। मैंने ऐसे लोगों को बहुत समय से नहीं देखा था।

अपनी बाइक पर घर जाते समय, मैंने खुद को "कैनेडियन सनसेट" की धुन गुनगुनाते हुए पाया।

•

माल्टा कानो ने रात ग्यारह बजे फोन किया। "हैलो। मुझे आश्चर्य है कि क्या यह श्री तोरू ओकाडा का घर हो सकता है?" उसने पूछा। “जी हां, ये तोरू ओकाडा हैं।” पहली ही मुलाकात में मैं समझ गया था कि ये माल्टा कानो हैं।
“मेरा नाम माल्टा कानो है। आपने उस दिन मुझसे मिलने की कृपा की। क्या आज दोपहर के लिए आपके पास कोई योजना है?”
मैंने कहा, "कुछ नहीं।" मेरे पास दोपहर के लिए उतनी ही योजनाएँ थीं जितनी एक प्रवासी पक्षी के पास गिरवी रखने के लिए कोई संपत्ति नहीं होती।
"ऐसे में मेरी छोटी बहन, क्रेता कानो, दोपहर एक बजे आपसे मिलने आएगी।"
“क्रेता कानो?” मैंने सपाट स्वर में पूछा।
“हां,” माल्टा कानो ने कहा। “मुझे लगता है मैंने आपको कुछ दिन पहले उसकी तस्वीर दिखाई थी।”
मुझे वो याद है, बिल्कुल। बस बात ये है कि—”
“उनका नाम क्रेता कानो है। वह मेरी प्रतिनिधि बनकर आपसे मिलने आएंगी। क्या एक बजे का समय आपके लिए ठीक रहेगा?”
“ठीक है,” मैंने कहा।
"वह वहाँ होगी," माल्टा कानो ने कहा और फोन काट दिया।
क्रीट कानो?
मैंने फर्श पर वैक्यूम किया और घर को व्यवस्थित किया। मैंने पुराने अखबारों का एक बंडल बनाया और उन्हें अलमारी में रख दिया। मैंने बिखरे हुए कैसेट टेपों को उनके कवर में वापस रखा और

स्टीरियो के पास कतार में लगा दिया। मैंने रसोई में पड़े सामान को धोया। फिर मैंने खुद को साफ किया: शॉवर लिया, शैम्पू किया और साफ कपड़े पहने। मैंने ताज़ी कॉफी बनाई और दोपहर का भोजन किया: हैम सैंडविच और उबला हुआ अंडा। मैं सोफे पर बैठकर होम जर्नल पढ़ रही थी और सोच रही थी कि रात के खाने में क्या बनाऊं। मैंने सीवीड और टोफू सलाद की रेसिपी पर निशान लगाया और सामग्री की सूची बना ली। मैंने एफएम रेडियो चालू किया। माइकल जैक्सन "बिली जीन" गा रहे थे। मैंने माल्टा कानो और क्रेता कानो बहनों के बारे में सोचा। बहनों के क्या नाम हैं! वे किसी कॉमेडी जोड़ी की तरह लगती हैं। माल्टा कानो। क्रेता कानो।
मेरी ज़िंदगी नई दिशाओं में मुड़ रही थी, यह निश्चित था। बिल्ली भाग गई थी। एक अजनबी औरत के अजीब-अजीब फोन आ रहे थे। मेरी मुलाकात एक अजीब लड़की से हुई और मैं एक खाली घर में जाने लगा। नोबोरू वटाया ने क्रेता कानो का बलात्कार किया था। माल्टा कानो ने भविष्यवाणी की थी कि मुझे मेरी टाई मिल जाएगी। कुमिको ने मुझसे कहा था कि मुझे काम करने की ज़रूरत नहीं है।
मैंने रेडियो बंद कर दिया, होम जर्नल को वापस बुकशेल्फ़ पर रख दिया और एक और कप कॉफ़ी पी ली।

•

क्रेता कानो ने ठीक एक बजे दरवाजे की घंटी बजाई। वह बिल्कुल अपनी तस्वीर जैसी दिख रही थी: बीस से पच्चीस साल की एक छोटी कद की महिला, शांत स्वभाव की। उसने साठ के दशक के शुरुआती दौर के अपने लुक को बखूबी बरकरार रखा था। उसके बाल उसी तरह से गुंथे हुए थे जैसे मैंने तस्वीर में देखे थे, सिरों को ऊपर की ओर घुमाते हुए। माथे के बाल सीधे पीछे की ओर बंधे हुए थे और एक बड़े, चमकीले हेयर क्लिप से टिके हुए थे। उसकी भौहें पेंसिल से

स्पष्ट रूप से आउटलाइन की हुई थीं, मस्कारा ने उसकी आंखों में रहस्यमयी छाया जोड़ दी थी, और उसकी लिपस्टिक उस समय के प्रचलित रंग की हूबहू नकल थी। ऐसा लग रहा था मानो अगर उसे माइक दे दिया जाए तो वह "जॉनी एंजेल" गाना गाने के लिए तैयार है।
उसका पहनावा उसके मेकअप से कहीं अधिक सरल था। व्यावहारिक और पेशेवर, उसके पहनावे में कुछ भी अनोखा नहीं था: एक सफेद ब्लाउज, एक हरी तंग स्कर्ट, और नाममात्र की कोई एक्सेसरीज़ नहीं। उसने अपनी बगल में एक सफेद पेटेंट-लेदर का बैग दबा रखा था और नुकीली नोक वाली सफेद हील्स पहन रखी थीं। जूते बहुत छोटे थे। उनकी हील्स पेंसिल की नोक जितनी पतली और नुकीली थीं, वे किसी गुड़िया के जूतों जैसे लग रहे थे। मेरा मन कर रहा था कि मैं उसे इन जूतों में यहाँ तक पहुँचने के लिए बधाई दूँ।
तो ये थीं क्रेता कानो। मैंने उन्हें अंदर बुलाया, सोफे पर बैठाया, कॉफी गर्म की और उन्हें एक कप दी। क्या उन्होंने दोपहर का खाना खा लिया था? मैंने पूछा। मुझे तो वो भूखी लग रही थीं। नहीं, उन्होंने कहा, उन्होंने कुछ नहीं खाया था।
“लेकिन मेरे बारे में चिंता मत करो,” उसने जल्दी से कहा। “मैं दोपहर के भोजन में कुछ खास नहीं खाती।”
मैंने पूछा, "क्या आप सच में ऐसा कह रही हैं?" उन्होंने कहा, "मेरे लिए सैंडविच बनाना कोई बड़ी बात नहीं है। औपचारिकताएं मत निभाइए। मैं अक्सर स्नैक्स और ऐसी ही चीजें बनाती रहती हूं। इसमें मुझे कोई परेशानी नहीं होती।"
उसने सिर हिलाकर जवाब दिया, “आपकी पेशकश के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, लेकिन मैं ठीक हूँ। कोई बात नहीं। एक कप कॉफ़ी ही काफ़ी है।”

फिर भी, मैंने एहतियात के तौर पर बिस्कुट की एक प्लेट निकाल ली।
क्रीता कानो ने बड़े चाव से चार बिस्कुट खा लिए। मैंने दो खाए और अपनी कॉफी पी।
कुकीज़ और कॉफी के बाद वह कुछ अधिक तनावमुक्त लग रही थी।
“मैं आज यहाँ अपनी बड़ी बहन माल्टा कानो की प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित हूँ,” उन्होंने कहा। “क्रीटा मेरा असली नाम नहीं है। मेरा असली नाम सेत्सुको है। मैंने अपनी बहन की सहायक के रूप में काम शुरू करने के बाद पेशेवर कारणों से क्रीटा नाम अपनाया। क्रीटा, क्रीट द्वीप का प्राचीन नाम है, लेकिन मेरा क्रीट से कोई संबंध नहीं है। मैं कभी वहाँ नहीं गई। मेरी बहन माल्टा ने अपने नाम के साथ मेल खाने के लिए यह नाम चुना। क्या आप कभी क्रीट द्वीप गए हैं, श्रीमान ओकाडा?”
दुर्भाग्यवश नहीं, मैंने कहा। मैं कभी क्रीट नहीं गया था और निकट भविष्य में भी मेरी वहां जाने की कोई योजना नहीं थी।
“मैं कभी न कभी वहाँ जाना चाहूँगी,” क्रेता कानो ने सिर हिलाते हुए, चेहरे पर गंभीर भाव लिए कहा। “क्रीट अफ्रीका के सबसे नज़दीक स्थित ग्रीक द्वीप है। यह एक बड़ा द्वीप है, और बहुत समय पहले यहाँ एक महान सभ्यता फली-फूली थी। मेरी बहन माल्टा भी क्रीट जा चुकी है। वह कहती है कि यह एक अद्भुत जगह है। वहाँ तेज़ हवा चलती है, और शहद बहुत स्वादिष्ट होता है। मुझे शहद बहुत पसंद है।”
मैंने सिर हिलाया। मुझे शहद इतना पसंद नहीं है।
“मैं आज आपसे एक मदद मांगने आई हूँ,” क्रेता कानो ने कहा। “मैं आपके घर के पानी का एक नमूना लेना चाहती हूँ।”
“पानी?” मैंने पूछा। “तुम्हारा मतलब नल के पानी से है?”

“यह ठीक रहेगा,” उसने कहा। “और अगर आस-पास कोई कुआँ हो, तो मैं उस पानी का एक नमूना भी लेना चाहूँगी।”
मुझे ऐसा नहीं लगता। मेरा मतलब है, पड़ोस में एक कुआँ है, लेकिन वह किसी और की ज़मीन पर है, और वह सूखा है। उससे अब पानी नहीं निकलता।
क्रेता कानो ने मुझे हैरानी भरी निगाहों से देखा। "क्या आपको यकीन है?" उसने पूछा। "क्या आपको यकीन है कि इसमें पानी नहीं है?"
मुझे ईंट के उस टुकड़े की सूखी सी आवाज़ याद आ गई जब लड़की ने उसे खाली घर के कुएँ में फेंका था। "हाँ, यह बिल्कुल सूखा है। मुझे पूरा यकीन है।"
“ठीक है,” क्रेता कानो ने कहा। “कोई बात नहीं। अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं नल से पानी का एक नमूना ले लूँगी।”
मैंने उसे रसोई तक पहुँचाया। उसने अपने सफ़ेद चमड़े के थैले से दवाइयों के लिए इस्तेमाल होने वाली दो छोटी बोतलें निकालीं। उसने एक बोतल में पानी भरा और बड़ी सावधानी से ढक्कन बंद कर दिया। फिर उसने कहा कि वह बाथटब में आने वाले पानी के पाइप से एक नमूना लेना चाहती है। मैंने उसे बाथरूम तक पहुँचाया। कुमिको ने वहाँ जो अंडरवियर और मोज़े सूखने के लिए छोड़े थे, उनसे बेपरवाह होकर, क्रेता कानो ने नल चालू किया और दूसरी बोतल भर ली। ढक्कन लगाने के बाद, उसने यह सुनिश्चित करने के लिए उसे उल्टा कर दिया कि कहीं से पानी रिस न जाए। बोतलों के ढक्कनों पर रंग लिखे थे: नीले रंग का ढक्कन नहाने के पानी के लिए और हरे रंग का ढक्कन रसोई के पानी के लिए।
लिविंग रूम के सोफे पर वापस आकर, उसने दोनों शीशियों को एक छोटे प्लास्टिक फ्रीजर बैग में डाला और ज़िप लॉक बंद कर दिया। उसने

बैग को सावधानीपूर्वक अपने सफेद पेटेंट-लेदर बैग में रखा, जिसका धातु का कुंडा सूखी क्लिक की आवाज़ के साथ बंद हो गया।
उसके हाथ बड़ी कुशलता से चल रहे थे। जाहिर है, उसने यह काम पहले भी कई बार किया था।
"बहुत-बहुत धन्यवाद," क्रेता कानो ने कहा।
“बस इतना ही?” मैंने पूछा।
“हाँ, आज के लिए,” उसने कहा। उसने अपनी स्कर्ट को ठीक किया, अपना बैग बगल में दबाया और उठने का नाटक किया।
“एक मिनट रुकिए,” मैंने कुछ उलझन में कहा। मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह अचानक चली जाएगी। “कृपया एक मिनट रुकिए! मेरी पत्नी जानना चाहती है कि बिल्ली के साथ क्या हुआ है। वह लगभग दो सप्ताह से गायब है। अगर आपको कुछ भी पता हो, तो कृपया मुझे बताइए।”
सफेद बैग को बगल में दबाए हुए, क्रेता कानो ने एक पल के लिए मेरी तरफ देखा, फिर जल्दी से कुछ इशारे किए। जब उसने अपना सिर हिलाया, तो उसके घुंघराले बालों के सिरे साठ के दशक की शुरुआत की हल्की सी अदा से हिल गए। जब भी वह पलकें झपकाती, उसकी लंबी नकली पलकें धीरे-धीरे ऊपर-नीचे हिलतीं, ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन मिस्र पर बनी फिल्मों में गुलामों द्वारा चलाए जाने वाले लंबे हैंडल वाले पंखे हिलते हैं।
सच कहूं तो, मेरी बहन का कहना है कि यह कहानी जितनी पहले लग रही थी उससे कहीं ज्यादा लंबी होगी।
"क्या यह कहानी जितनी दिखती है उससे कहीं अधिक लंबी है?"
“एक लंबी कहानी” वाक्यांश सुनते ही रेगिस्तान में गड़ा हुआ एक ऊँचा खंभा याद आ गया, जहाँ दूर-दूर तक कुछ भी दिखाई नहीं देता था। जैसे-जैसे सूरज डूबने लगा, खंभे की छाया लंबी होती गई, यहाँ

तक कि उसका सिरा इतना दूर चला गया कि नंगी आँखों से दिखाई देना बंद हो गया।
"वह यही कहती है," क्रेता कानो ने आगे कहा। "यह कहानी सिर्फ एक बिल्ली के लापता होने से कहीं अधिक होगी।"
मैंने कहा, "मैं उलझन में हूँ। हम आपसे बस इतना ही कह रहे हैं कि बिल्ली को ढूंढने में हमारी मदद करें। इससे ज़्यादा कुछ नहीं। अगर बिल्ली मर गई है, तो हम यह पक्का जानना चाहते हैं। इसे इतना लंबा क्यों खींचना पड़ रहा है? मेरी समझ से बाहर है।"
“मुझे भी नहीं पता,” उसने कहा। उसने अपना हाथ अपने सिर पर लगी चमकदार हेयर क्लिप पर रखा और उसे थोड़ा पीछे धकेल दिया। “लेकिन कृपया मेरी बहन पर भरोसा रखें। मैं यह नहीं कह रही कि उसे सब कुछ पता है। लेकिन अगर वह कहती है कि कहानी लंबी है, तो आप यकीन मानिए कि कहानी लंबी ही होगी।”
मैंने बिना कुछ कहे सिर हिला दिया। मेरे पास कहने के लिए और कुछ नहीं था।
मेरी आंखों में सीधे देखते हुए और एक नए औपचारिक लहजे में बोलते हुए, क्रेता कानो ने पूछा, "क्या आप व्यस्त हैं, श्रीमान ओकाडा? क्या आपके पास आज दोपहर के बाकी समय के लिए कोई योजना है?" नहीं, मैंने कहा, मेरी कोई योजना नहीं थी।
“तो क्या आपको बुरा लगेगा अगर मैं अपने बारे में कुछ बताऊँ?” क्रेता कानो ने पूछा। उसने अपने हाथ में पकड़ा हुआ सफेद पेटेंट-लेदर का बैग सोफे पर रख दिया और अपने दोनों हाथ घुटनों पर अपनी हरी स्कर्ट के ऊपर रख लिए। उसके नाखूनों पर सुंदर गुलाबी रंग की नेल पॉलिश लगी थी। उसने कोई अंगूठी नहीं पहनी थी।
“कृपया,” मैंने कहा। “आप जो चाहें बता सकते हैं।” और इस तरह मेरे जीवन का प्रवाह—जैसा कि क्रेता कानो के मेरे दरवाजे की घंटी

[illegible]

क्रीटा कानो की लंबी कहानी

•

दर्द की प्रकृति की पड़ताल
"मेरा जन्म 29 मई को हुआ था," क्रेता कानो ने अपनी कहानी शुरू करते हुए कहा, "और अपने बीसवें जन्मदिन की रात, मैंने आत्महत्या करने का फैसला किया।"
मैंने उसके सामने एक कप ताज़ा कॉफ़ी रख दी। उसने उसमें मलाई डाली और धीरे से हिलाया। चीनी नहीं डाली। मैंने हमेशा की तरह अपनी कॉफ़ी बिना दूध और चीनी के पी। शेल्फ पर रखी घड़ी समय की दीवारों पर अपनी सूखी दस्तक देती रही।
क्रेता कानो ने मेरी ओर ध्यान से देखा और कहा, "मुझे आश्चर्य है कि क्या मुझे शुरुआत से शुरू करना चाहिए - जहां मेरा जन्म हुआ था, पारिवारिक जीवन, इस तरह की चीजें।"
“जो आपको पसंद हो। यह आप पर निर्भर है। जो भी आपको सबसे आरामदायक लगे,” मैंने कहा।
“मैं तीन बच्चों में तीसरी थी,” उसने कहा। “माल्टा और मेरा एक बड़ा भाई है। मेरे पिता कानागावा प्रांत में अपना क्लिनिक चलाते थे। परिवार में घरेलू समस्याएँ जैसी कोई बात नहीं थी। मैं एक साधारण से घर में पली-बढ़ी, जैसा घर कहीं भी मिल जाता है। मेरे माता-पिता बहुत गंभीर स्वभाव के थे और मेहनत के महत्व पर दृढ़ विश्वास रखते थे। वे हमारे साथ थोड़े सख्त थे, लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने हमें छोटी-छोटी बातों में काफी हद तक स्वतंत्रता भी दी थी। हम आर्थिक रूप से संपन्न थे, लेकिन मेरे माता-पिता अपने बच्चों को फिजूलखर्ची के लिए अतिरिक्त पैसे

देने में विश्वास नहीं करते थे। शायद मेरा पालन-पोषण सादगीपूर्ण माहौल में हुआ।”
“माल्टा मुझसे पाँच साल बड़ी थी। उसमें शुरू से ही कुछ अलग बात थी। वह चीजों का अंदाज़ा लगा सकती थी। उसे पता होता था कि फलाँ कमरे में मरीज़ की अभी-अभी मौत हुई है, या खोया हुआ बटुआ ठीक कहाँ मिलेगा, या ऐसी ही कोई भी बात। शुरू में तो सबको यह अच्छा लगता था और अक्सर उपयोगी भी लगता था, लेकिन जल्द ही यह मेरे माता-पिता को परेशान करने लगा। उन्होंने उसे आदेश दिया कि वह दूसरों के सामने 'तथ्यों पर आधारित न होने वाली बातों' के बारे में कभी बात न करे। मेरे पिता को अस्पताल के प्रमुख के रूप में अपनी स्थिति का ध्यान रखना था। वह नहीं चाहते थे कि लोगों को पता चले कि उनकी बेटी के पास अलौकिक शक्तियाँ हैं। इसके बाद माल्टा ने अपना मुँह बंद कर लिया। उसने न केवल 'तथ्यों पर आधारित न होने वाली बातों' के बारे में बात करना बंद कर दिया, बल्कि वह सामान्य बातचीत में भी बहुत कम हिस्सा लेने लगी।” “लेकिन मेरे लिए, उसने दिल खोलकर बात की। हम बहुत करीब से बड़े हुए। वह कहती थी, ‘किसी को मत बताना कि मैंने तुम्हें यह बताया है,’ और फिर वह कुछ ऐसा कहती थी, ‘गली में आग लगने वाली है’ या ‘सेतागाया में फलां आंटी की हालत और खराब होने वाली है।’ और वह हमेशा सही होती थी। मैं तब भी छोटी बच्ची थी, इसलिए मुझे यह बहुत मजेदार लगता था। मुझे कभी डर नहीं लगा या यह अजीब नहीं लगा। जब से मुझे याद है, मैं हमेशा अपनी बड़ी बहन के पीछे-पीछे घूमती रहती थी और उसके ‘संदेश’ सुनने की उम्मीद करती थी।”
जैसे-जैसे वह बड़ी होती गई, उसकी ये विशेष शक्तियाँ और भी प्रबल होती गईं, लेकिन उसे इनका उपयोग और पोषण करना नहीं आता था, और इसी कारण वह बहुत दुखी रहती थी। सलाह के लिए उसके पास कोई नहीं

था, मार्गदर्शन के लिए कोई आदर्श नहीं था। इस वजह से वह एक अकेली किशोरी बन गई। उसे सब कुछ खुद ही संभालना पड़ता था। उसे सारे जवाब खुद ही खोजने पड़ते थे। हमारे घर में वह नाखुश रहती थी। उसे कभी भी मन की शांति नहीं मिली। उसे अपनी शक्तियों को दबाकर रखना पड़ता था। यह एक छोटे से गमले में एक बड़ा, शक्तिशाली पौधा उगाने जैसा था। यह अस्वाभाविक था। यह गलत था। वह बस इतना जानती थी कि उसे जल्द से जल्द वहाँ से निकलना है। उसे विश्वास था कि कहीं न कहीं एक ऐसी दुनिया है जो उसके लिए सही है, एक ऐसा जीवन है जो उसके लिए सही है। लेकिन हाई स्कूल से स्नातक होने तक, उसे खुद पर नियंत्रण रखना होगा।
“उसने कॉलेज न जाने का, बल्कि हाई स्कूल से स्नातक होने के बाद विदेश जाने का पक्का इरादा कर लिया था। मेरे माता-पिता ने ज़ाहिर तौर पर एक साधारण जीवन जिया था, और वे उसे ऐसा करने देने के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए मेरी बहन ने ज़रूरी पैसे जुटाने के लिए कड़ी मेहनत की, और फिर वह घर से भाग गई। सबसे पहले वह हवाई गई। वह कौआई में दो साल रही। उसने कहीं पढ़ा था कि कौआई के उत्तरी तट पर एक ऐसा इलाका है जहाँ झरने हैं जिनसे अद्भुत पानी निकलता है। उस समय से ही मेरी बहन को पानी में गहरी दिलचस्पी थी। उसका मानना था कि मानव अस्तित्व काफी हद तक पानी के तत्वों द्वारा नियंत्रित होता है। इसीलिए वह कौआई में रहने चली गई। उस समय द्वीप के भीतरी हिस्से में अभी भी एक हिप्पी कम्यून था।” वह एक कम्यून की सदस्य के रूप में रहती थी। वहाँ के पानी का उसकी आध्यात्मिक शक्तियों पर गहरा प्रभाव था। उस पानी को ग्रहण करने से उसे अपनी शक्तियों और शारीरिक अस्तित्व के बीच एक 'अधिक सामंजस्य' प्राप्त हुआ। उसने मुझे पत्र लिखकर बताया कि यह कितना अद्भुत था, और उसके पत्रों से मुझे बहुत प्रसन्नता होती

थी। लेकिन जल्द ही वह क्षेत्र उसे संतुष्ट नहीं कर पाया। यह सच है कि वह एक सुंदर, शांत भूमि थी, और वहाँ के लोग भौतिक इच्छाओं से मुक्त होकर केवल आध्यात्मिक शांति की तलाश करते थे, लेकिन वे यौन सुख और मादक पदार्थों पर बहुत अधिक निर्भर थे। मेरी बहन को इन चीजों की आवश्यकता नहीं थी। कौआई में दो साल बिताने के बाद, वह वहाँ से चली गई।
“वहाँ से वह कनाडा गई, और उत्तरी संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा करने के बाद, वह यूरोप चली गई। उसने जहाँ भी गई, वहाँ के पानी का नमूना चखा और कई जगहों पर अद्भुत पानी पाया, लेकिन कोई भी पानी एकदम शुद्ध नहीं था। इसलिए वह यात्रा करती रही। जब भी उसके पास पैसे खत्म हो जाते, वह भविष्य बताने जैसा कुछ करती। लोग उसे खोई हुई चीजें या लापता व्यक्तियों को खोजने में मदद करने के लिए इनाम देते थे। वह पैसा लेना पसंद नहीं करती थी। स्वर्ग द्वारा प्रदत्त शक्तियों को सांसारिक वस्तुओं के बदले नहीं बेचा जाना चाहिए। हालाँकि, उस समय, यही एकमात्र तरीका था जिससे वह अपना जीवन यापन कर सकती थी। वह जहाँ भी जाती, लोग उसकी भविष्यवाणी के बारे में सुनते थे। उसके लिए पैसा कमाना आसान था। उसने इंग्लैंड में एक जांच में पुलिस की मदद भी की। एक छोटी बच्ची लापता थी, और उसने शव को छिपाने की जगह का पता लगाया। उसे पास ही हत्यारे का दस्ताना भी मिला। उस आदमी को गिरफ्तार कर लिया गया और उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया। यह सभी अखबारों में छपा था। मैं आपको कभी-कभार वे कतरनें दिखाऊँगा। खैर, वह इसी तरह यूरोप में भटकती रही जब तक कि वह माल्टा नहीं पहुँच गई। उसके वहाँ से जाने के बाद से लगभग पाँच साल बीत चुके थे। जापान से प्रस्थान करते समय, पानी की तलाश में यह स्थान उसका गंतव्य बन गया। मुझे लगता है कि उसने आपको इसके बारे में खुद बताया होगा।

मेंने सिर हिलाया।
“जब माल्टा दुनिया भर में घूमती रहती थी, तब भी वह मुझे चिट्ठियाँ भेजती रहती थी। बेशक, कई बार ऐसा होता था कि वह लिख नहीं पाती थी, लेकिन लगभग हर हफ्ते मुझे उसकी एक लंबी चिट्ठी मिलती थी जिसमें वह बताती थी कि वह कहाँ है और क्या कर रही है। हम अब भी बहुत करीब थे। इतनी दूरी के बावजूद भी, हम उसकी चिट्ठियों के ज़रिए एक-दूसरे से अपने दिल की बात कह पाते थे। और क्या गजब की चिट्ठियाँ होती थीं! अगर आप उन्हें पढ़ पाते, तो आपको पता चलता कि वह कितनी अद्भुत इंसान है। उसकी चिट्ठियों के ज़रिए मैं कितनी अलग-अलग दुनियाओं से, कितने दिलचस्प लोगों से मिल पाई! उसकी चिट्ठियों ने मुझे बहुत हिम्मत दी! उन्होंने मुझे आगे बढ़ने में मदद की। इसके लिए मैं अपनी बहन की हमेशा आभारी रहूँगी। उसने मेरे लिए जो कुछ भी किया, मैं उसे किसी भी तरह से नकारती नहीं हूँ। लेकिन आखिर में, चिट्ठियाँ तो बस चिट्ठियाँ ही होती हैं। जब मैं अपनी किशोरावस्था के सबसे मुश्किल दौर से गुज़र रही थी, जब मुझे अपनी बहन की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, तब वह हमेशा कहीं दूर होती थी। मैं अपना हाथ बढ़ाकर उसे अपने पास नहीं पा सकती थी। हमारे परिवार में, मैं बिल्कुल अकेली थी। अलग-थलग। मेरी किशोरावस्था दर्द से भरी थी—और इसके बारे में मैं आपको बाद में और बताऊँगी। दर्द। सलाह के लिए मेरे पास कोई नहीं था। इस मायने में, मैं उतनी ही अकेली थी जितनी माल्टा थी। अगर वह तब मेरे पास होती, तो मेरा जीवन आज जैसा है उससे बिल्कुल अलग होता। वह मुझे सलाह, हौसला और मुक्ति के शब्द देती। लेकिन अब ऐसी बातें करने का क्या फायदा? जैसे माल्टा को अपना रास्ता खुद ही खोजना पड़ा, वैसे ही मुझे भी अपना रास्ता खुद ही खोजना पड़ा।

और जब मैं बीस साल की हुई, तो मैंने आत्महत्या करने का फैसला किया।
क्रेता कानो ने अपना कप उठाया और बची हुई कॉफी पी ली।
“कितनी स्वादिष्ट कॉफी है!” उसने कहा।
मैंने यथासंभव सहजता से कहा, "धन्यवाद। क्या मैं आपको कुछ खाने के लिए दे सकता हूँ? मैंने थोड़ी देर पहले कुछ अंडे उबाले थे।" कुछ हिचकिचाहट के बाद, उसने कहा कि वह एक लेगी। मैं रसोई से अंडे और नमक ले आया और उसके लिए और कॉफ़ी डाली। बिना किसी जल्दबाजी के, क्रेता कानो और मैं अपने अंडे छीलकर खाने और कॉफ़ी पीने में जुट गए। इसी दौरान फ़ोन की घंटी बजी, लेकिन मैंने जवाब नहीं दिया। पंद्रह-सोलह बार घंटी बजने के बाद फ़ोन बंद हो गया। उस पूरे समय क्रेता कानो को मानो घंटी बजने का पता ही नहीं चला। अंडा खत्म करने के बाद, क्रेता कानो ने अपने सफेद पेटेंट-चमड़े के बैग से एक छोटा रुमाल निकाला और अपना मुंह पोंछा। फिर उसने अपनी स्कर्ट का किनारा खींचा।
“जब मैंने आत्महत्या करने का फैसला कर लिया, तो मैं एक नोट छोड़ना चाहती थी। मैं एक घंटे तक अपनी डेस्क पर बैठी रही, मरने के अपने कारणों को लिखने की कोशिश करती रही। मैं यह स्पष्ट करना चाहती थी कि इसके लिए कोई और दोषी नहीं है, बल्कि कारण मेरे भीतर ही हैं। मैं नहीं चाहती थी कि मेरा परिवार किसी ऐसी चीज़ के लिए खुद को ज़िम्मेदार समझे जो उनकी गलती नहीं थी।”
लेकिन मैं वह नोट पूरा नहीं कर सका। मैंने बार-बार कोशिश की, लेकिन हर नया संस्करण पिछले वाले से बदतर लगता था। जब मैंने अपना लिखा हुआ पढ़ा, तो वह मूर्खतापूर्ण, यहाँ तक कि हास्यास्पद भी लगा। जितना ज़्यादा मैं उसे गंभीर बनाने की कोशिश करता, उतना

ही वह हास्यास्पद बन जाता। अंत में, मैंने कुछ भी न लिखने का फैसला किया।
“मुझे लगा कि यह बहुत ही सरल मामला था। मैं अपने जीवन से निराश थी। मैं अपने जीवन के अनेक प्रकार के कष्टों को अब और सहन नहीं कर सकती थी। मैंने बीस वर्षों तक इस पीड़ा को सहा था। मेरा जीवन निरंतर पीड़ा का स्रोत बना रहा था। लेकिन मैंने इसे यथासंभव सहन करने का प्रयास किया था। मुझे अपनी पीड़ा सहन करने के प्रयासों की सार्थकता पर पूर्ण विश्वास है। मैं यहाँ सच्चे गर्व के साथ कह सकती हूँ कि मेरे प्रयास अतुलनीय थे। मैंने बिना संघर्ष किए हार नहीं मानी। लेकिन जिस दिन मैं बीस वर्ष की हुई, मैं एक सरल निष्कर्ष पर पहुँची: जीवन जीने का कोई अर्थ नहीं था। इस तरह के संघर्ष को जारी रखने का कोई अर्थ नहीं था।”
वह चुप हो गई और अपनी गोद में रखे सफेद रुमाल के कोनों को ठीक करने में कुछ समय बिताने लगी। जब उसने नीचे देखा, तो उसकी लंबी नकली पलकों की हल्की परछाईं उसके चेहरे पर पड़ रही थी।
मैंने गला साफ किया, मुझे लगा कि मुझे कुछ कहना चाहिए, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ, इसलिए मैं चुप रहा। दूर से मुझे चाबी से चलने वाली चिड़िया की आवाज सुनाई दी।
"दर्द ही वह कारण था जिसके चलते मैंने मरने का फैसला किया," क्रेता कानो ने कहा। और जब मैं ‘दर्द’ कहती हूँ, तो मेरा मतलब ठीक यही होता है। कोई मानसिक या लाक्षणिक दर्द नहीं, बल्कि सीधा- सादा शारीरिक दर्द। साधारण, सामान्य, सीधा, शारीरिक—और इसी कारण, कहीं अधिक तीव्र—दर्द: सिरदर्द, दांत दर्द, मासिक धर्म में ऐंठन, कमर दर्द, कंधे अकड़ना, बुखार, मांसपेशियों में दर्द, जलन, फ्रॉस्टबाइट, मोच, फ्रैक्चर, शरीर पर चोट। मैंने अपने पूरे जीवन में दूसरों की तुलना में कहीं अधिक बार और अधिक तीव्रता से

शारीरिक दर्द का अनुभव किया है। उदाहरण के लिए, मेरे दांतों को ही ले लीजिए। ऐसा लगता था जैसे उनमें कोई जन्मजात दोष हो। वे मुझे साल भर दर्द देते रहते थे। चाहे मैं कितनी भी सावधानी से ब्रश करती, या दिन में कितनी बार ब्रश करती, या कितनी भी सख्ती से मीठा खाना छोड़ देती, कोई फायदा नहीं होता था। मेरे सारे प्रयास कैविटी में तब्दील हो जाते थे। स्थिति और भी बदतर हो गई क्योंकि एनेस्थेटिक्स का भी मुझ पर कोई असर नहीं होता था। डेंटिस्ट के पास जाना हमेशा एक बुरे सपने जैसा होता था। दर्द का वर्णन करना असंभव था। इससे मुझे बहुत डर लगता था। और फिर मेरे भयानक मासिक धर्म शुरू हो गए। वे बहुत ज्यादा होते थे। एक हफ्ते तक, मैं इतने दर्द में रहती थी, ऐसा लगता था मानो कोई मेरे अंदर ड्रिल चला रहा हो। मेरा सिर दर्द से फट जाता था। श्री ओकाडा, आप शायद कल्पना भी नहीं कर सकते कि यह कैसा होता था, लेकिन दर्द इतना तेज़ होता था कि मेरी आँखों में आंसू आ जाते थे। हर महीने एक हफ्ते तक मैं इस असहनीय दर्द से तड़पता रहता था।
“अगर मैं हवाई जहाज में चढ़ती, तो हवा के दबाव में बदलाव के कारण मेरा सिर फटने जैसा महसूस होता। डॉक्टर ने कहा कि इसका मेरे कानों की बनावट से कुछ लेना-देना है, कि ऐसा तब होता है जब भीतरी कान की बनावट दबाव में बदलाव के प्रति संवेदनशील होती है। लिफ्ट में भी अक्सर मेरे साथ ऐसा ही होता था। मैं ऊंची इमारतों में लिफ्ट नहीं ले सकती। दर्द इतना तेज़ होता है कि ऐसा लगता है जैसे मेरा सिर कई जगहों से फट जाएगा और खून बह निकलेगा। और फिर मेरा पेट था। हफ्ते में कम से कम एक बार उसमें इतना तेज़, चुभने वाला दर्द होता था कि मैं सुबह उठ ही नहीं पाती थी। डॉक्टर कभी इसका कारण नहीं ढूंढ पाए। कुछ ने इसे मानसिक समस्या बताया। लेकिन अगर यह मानसिक समस्या भी होती, तो भी दर्द तो होता ही था।

इतना कष्ट सहने के बावजूद, मैं स्कूल से छुट्टी नहीं ले सकती थी। अगर मैं हर बार दर्द होने पर स्कूल छोड़ देती, तो मैं कभी स्कूल जा ही नहीं पाती।”
जब भी मैं किसी चीज़ से टकराती, तो मेरे शरीर पर चोट के निशान पड़ जाते थे। बाथरूम के शीशे में खुद को देखकर मुझे हमेशा रोने का मन करता था। मेरा शरीर इतने गहरे चोट के निशानों से ढका हुआ था कि मैं सड़े हुए सेब जैसी दिखती थी। मुझे किसी को भी स्विमिंग सूट में देखना बिल्कुल पसंद नहीं था। मुझे याद है तब से, इसी वजह से मैं शायद ही कभी स्विमिंग करने गई हूँ। मेरी एक और समस्या मेरे पैरों के आकार में अंतर थी। जब भी मैं नए जूते खरीदती, तो बड़े पैर में तब तक बहुत दर्द होता था जब तक कि जूता पहनने में आरामदायक न हो जाए।
“इन सभी समस्याओं के कारण, मैंने लगभग कभी खेलकूद नहीं किया। जूनियर हाई स्कूल में, मेरे दोस्तों ने एक बार मुझे आइस स्केटिंग रिंक पर घसीट कर ले गए। मैं गिर गया और मेरी कमर में इतनी बुरी चोट लगी कि उसके बाद से हर सर्दी में मुझे वहाँ भयानक दर्द होता था। ऐसा लगता था जैसे किसी ने मुझे मोटी सुई चुभो दी हो। कई बार तो मैं कुर्सी से उठने की कोशिश में भी गिर पड़ा।” मुझे कब्ज की भी समस्या थी। कुछ दिनों में एक बार शौच करना भी मेरे लिए बहुत दर्दनाक होता था। मेरे कंधे बुरी तरह अकड़ जाते थे। मांसपेशियां इतनी सख्त हो जाती थीं कि पत्थर जैसी लगने लगती थीं। दर्द इतना ज्यादा होता था कि मैं खड़ा भी नहीं हो पाता था, लेटने से भी कोई आराम नहीं मिलता था। मुझे लगता था कि मेरी तकलीफ शायद वैसी ही है जैसी मैंने चीन में पढ़ी किसी सजा की होती है। उसमें व्यक्ति को कई सालों तक एक बक्से में बंद कर

दिया जाता है। जब मेरे कंधों की हालत सबसे खराब होती थी, तो मुझे सांस लेने में भी बहुत तकलीफ होती थी।
“मैं अपने जीवन में झेले गए तमाम दर्दों की गिनती करती रह सकती हूँ, लेकिन इससे आप ऊब जाएँगे, श्री ओकाडा, इसलिए मैं यहीं रुकती हूँ। मैं आपको यह बताना चाहती हूँ कि मेरा शरीर दर्द का जीता- जागता नमूना था। मैंने हर तरह का दर्द सहा। मुझे लगने लगा कि मुझ पर कोई श्राप है, जीवन कितना अन्यायपूर्ण है। अगर दुनिया के बाकी लोगों को भी मेरी तरह जीना पड़ता, तो शायद मैं भी दर्द सह पाती, लेकिन उन्हें नहीं, और मैं नहीं सह सकी। दर्द सबके साथ बराबरी से नहीं बाँटा जाता। मैंने लोगों से दर्द के बारे में पूछा, लेकिन किसी को भी असली दर्द का मतलब नहीं पता था। दुनिया के ज़्यादातर लोग बिना ज़्यादा दर्द महसूस किए जीते हैं—कम से कम रोज़ाना तो नहीं। जब मुझे आखिरकार इस बात का एहसास हुआ (उस समय मैं जूनियर हाई स्कूल में दाखिल हुई थी), तो मैं इतनी दुखी हुई कि रोना बंद नहीं कर पाई। क्यों मैं? आखिर मुझे ही इतना भयानक बोझ क्यों उठाना पड़ा? मैं उसी वक्त मर जाना चाहती थी।” लेकिन उसी समय मेरे मन में एक और विचार आया। यह हमेशा के लिए नहीं चल सकता। एक दिन सुबह मैं जागूँगी और दर्द गायब हो जाएगा— अचानक, बिना किसी कारण के—और मेरे लिए दर्द रहित एक बिल्कुल नया और शांतिपूर्ण जीवन खुल जाएगा। हालाँकि, यह एक ऐसा विचार नहीं था जिस पर मैं बहुत अधिक विश्वास कर सकूँ।
“और इसलिए मैंने अपने ये विचार अपनी बहन को बताए। मैंने उससे कहा कि मैं इस दर्द में जीना नहीं चाहती: मैं क्या करूँ? कुछ देर सोचने के बाद उसने कहा: ‘मुझे यकीन है कि तुम्हारे साथ कुछ तो गड़बड़ है। लेकिन मुझे नहीं पता कि क्या है। और मुझे नहीं पता कि तुम्हें इसके बारे में क्या करना चाहिए। अभी मुझमें ऐसे

फैसले लेने की शक्ति नहीं है। मैं बस इतना जानती हूँ कि तुम्हें कम से कम बीस साल की उम्र तक इंतजार करना चाहिए। बीस साल की उम्र तक इसे सहन करो, और फिर अपना फैसला करो। यही सबसे अच्छा होगा।’ “मैंने बीस साल की उम्र तक इसी तरह जीने का फैसला किया था। लेकिन चाहे कितना भी समय बीत जाए, स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। बल्कि, दर्द और भी बढ़ गया। इससे मुझे सिर्फ एक ही बात समझ आई: ‘शरीर के विकास के साथ-साथ दर्द की तीव्रता भी उसी अनुपात में बढ़ती जाती है।’ फिर भी, मैंने आठ साल तक दर्द सहा। मैं उस पूरे समय जीवन के केवल अच्छे पहलुओं को देखने की कोशिश करती रही। मैंने किसी से शिकायत नहीं की। दर्द जब सबसे ज़्यादा होता था, तब भी मैं मुस्कुराती रहती थी। मैंने खुद को अनुशासित किया कि जब दर्द इतना तेज़ हो कि मैं मुश्किल से खड़ी रह पाऊं, तब भी मैं शांत रहने का दिखावा करूं। रोने और शिकायत करने से दर्द कम नहीं होता था; इससे मैं पहले से भी ज़्यादा दुखी हो जाती थी। मेरे प्रयासों के फलस्वरूप, लोग मुझे प्यार करते थे। वे मुझे एक शांत, मिलनसार लड़की के रूप में देखते थे। मुझे बड़ों का भरोसा और अपनी उम्र के लोगों की दोस्ती मिली। अगर दर्द न होता, तो शायद मेरा जीवन, मेरा किशोरावस्था का समय एकदम परिपूर्ण होता। लेकिन दर्द हमेशा मेरे साथ था। यह ऐसा था जैसे मेरी परछाई। अगर मैं एक पल के लिए भी इसे भूल जाता, तो दर्द मेरे शरीर के किसी और हिस्से पर हमला कर देता।
कॉलेज में मुझे एक बॉयफ्रेंड मिला और पहले साल की गर्मियों में मैंने अपनी वर्जिनिटी खो दी। यहाँ तक कि इससे भी—जैसा कि मुझे पहले से ही पता था—मुझे सिर्फ़ दर्द ही मिला। मेरी एक अनुभवी सहेली ने मुझे भरोसा दिलाया कि जब मुझे इसकी आदत हो जाएगी तो दर्द बंद हो जाएगा, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। जब भी मैं उसके साथ

सोती, दर्द से मेरी आँखों में आँसू आ जाते थे। एक दिन मैंने अपने बॉयफ्रेंड से कहा कि मैं अब और सेक्स नहीं करना चाहती। मैंने उससे कहा, 'मैं तुमसे प्यार करती हूँ, लेकिन मैं इस दर्द को दोबारा कभी नहीं सहना चाहती।' उसने कहा कि उसने इससे ज़्यादा बेतुकी बात कभी नहीं सुनी। उसने कहा, 'तुम्हें भावनात्मक समस्या है। बस आराम करो और दर्द बंद हो जाएगा। अच्छा भी लगेगा। बाकी सब लोग ऐसा करते हैं, तो तुम भी कर सकती हो। तुम बस काफ़ी कोशिश नहीं कर रही हो। तुम खुद को ज़रूरत से ज़्यादा लाड़-प्यार कर रही हो। तुम इस 'दर्द' का इस्तेमाल अपनी समस्याओं को छुपाने के लिए कर रही हो। शिकायत करना बंद करो; इससे तुम्हें कोई फ़ायदा नहीं होगा।'
“जब मैंने ये सुना, इतने सालों तक जो कुछ मैंने सहा था, उसके बाद मेरा गुस्सा फूट पड़ा। ‘तुम्हें दर्द के बारे में क्या पता?’ मैंने उस पर चिल्लाते हुए कहा। ‘मुझे जो दर्द हो रहा है, वो कोई साधारण दर्द नहीं है। मैं जानती हूँ कि दर्द कैसा होता है। मैंने हर तरह का दर्द सहा है। जब मैं कहती हूँ कि दर्द हो रहा है, तो सच में दर्द होता है!’ मैंने अपने सारे दर्द गिनाकर समझाने की कोशिश की, लेकिन उसे कुछ समझ नहीं आया। असली दर्द को तब तक समझना नामुमकिन है जब तक आप उसे खुद न झेल लें। और यहीं हमारे रिश्ते का अंत हो गया।”
इसके कुछ ही समय बाद मेरा बीसवाँ जन्मदिन आ गया। बीस लंबे वर्षों तक मैंने दर्द सहा, इस उम्मीद में कि कोई सुखद मोड़ आएगा, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। मैं पूरी तरह से पराजित महसूस कर रही थी। काश मैं पहले ही मर गई होती। मेरे लंबे भटकाव ने केवल दर्द को और बढ़ा दिया था।

इस समय, क्रेता कानो ने एक गहरी साँस ली। उसके सामने मेज पर अंडे के छिलकों से भरी प्लेट और उसका खाली कॉफ़ी का कप रखा था। उसकी गोद में वह रूमाल पड़ा था जिसे उसने बड़ी सावधानी से मोड़ा था। मानो समय का ध्यान रखते हुए, उसने शेल्फ पर रखी घड़ी पर नज़र डाली। "मुझे बहुत खेद है," उसने धीमी, सूखी आवाज़ में कहा। "मेरा इरादा इतनी देर तक बोलने का नहीं था। मैंने पहले ही आपका बहुत समय ले लिया है। मैं अब आपको और परेशान नहीं करूँगी। मुझे नहीं पता कि आपको इतनी देर तक बोर करने के लिए मैं कैसे माफ़ी माँगूँ।"
उसने अपने सफेद पेटेंट-लेदर बैग का पट्टा पकड़ा और सोफे से उठ खड़ी हुई।
इससे मैं चौंक गया। "बस एक मिनट रुकिए," मैंने घबराते हुए कहा। मैं नहीं चाहता था कि वह अपनी कहानी बीच में ही खत्म कर दे। "अगर आपको मेरा समय बर्बाद करने की चिंता है, तो चिंता न करें। मैं पूरी दोपहर खाली हूँ। जब आपने मुझे इतना बता ही दिया है, तो अंत तक क्यों न बोलें? मुझे यकीन है कि आपकी कहानी में और भी बहुत कुछ है।"
“बिल्कुल है,” उसने मेरी तरफ देखते हुए कहा, उसके दोनों हाथ उसके बैग के पट्टे पर कसकर जकड़े हुए थे। “मैंने अभी तक जो बताया है वह तो बस एक परिचय मात्र है।”
मैंने उससे एक पल रुकने को कहा और रसोई में चली गई। सिंक के सामने खड़े होकर मैंने दो गहरी साँसें लीं। फिर मैंने अलमारी से दो गिलास निकाले, उनमें बर्फ डाली और फ्रिज से संतरे का रस भर दिया। गिलासों को एक छोटी सी ट्रे पर रखकर मैं उन्हें बैठक में ले आई। मैंने ये सब जानबूझकर धीरे-धीरे किया था, लेकिन मैंने उसे उसी तरह खड़ी पाया जैसे मैंने उसे छोड़ा था। हालाँकि, जब

मैंने रस के गिलास मेज पर रखे, तो ऐसा लगा जैसे उसने अपना इरादा बदल लिया हो। वह फिर से सोफे पर बैठ गई और अपना बैग बगल में रख लिया।
“क्या आप चाहते हैं कि मैं अपनी कहानी अंत तक सुनाऊं?” उसने पूछा। “क्या आप निश्चित हैं?”
मैंने कहा, "बिल्कुल।"
उसने अपने संतरे के रस का आधा हिस्सा पिया और अपनी कहानी सुनाना जारी रखा।
“मैं आत्महत्या करने में नाकाम रही, ज़ाहिर है। अगर मैं कामयाब हो जाती, तो आज मैं यहाँ आपके साथ संतरे का जूस नहीं पी रही होती, श्रीमान ओकाडा।” उसने मेरी आँखों में देखा, और मैंने सहमति में हल्की सी मुस्कान दी। “अगर मैं योजना के अनुसार मर जाती, तो यह मेरे लिए अंतिम समाधान होता। मरने का मतलब चेतना का अंत होता, और मुझे फिर कभी दर्द महसूस नहीं करना पड़ता। यही तो मैं चाहती थी। लेकिन दुर्भाग्य से, मैंने मरने का गलत तरीका चुना।”
29 मई की रात नौ बजे, मैं अपने भाई के कमरे में गया और उससे कार उधार माँगी। वह एक चमचमाती नई टोयोटा MR2 थी, और मुझे उसे देने की बात सुनकर वह बहुत नाराज़ हो गया। लेकिन मुझे कोई परवाह नहीं थी। वह मना नहीं कर सकता था, क्योंकि मैंने उसे कार खरीदने में मदद के लिए पैसे उधार दिए थे। मैंने चाबी ली और आधे घंटे तक कार चलाई। कार अभी मुश्किल से एक हज़ार मील ही चली थी। बस एक बार एक्सीलरेटर दबाते ही वह उड़ने लगती थी। मेरे मकसद के लिए वह एकदम सही कार थी। मैं शहर के बाहरी इलाके में स्थित तामा नदी तक गया, और वहाँ मुझे वैसी ही एक विशाल पत्थर की दीवार मिली जैसी मैंने सोची थी। यह एक बड़ी कॉन्डोमिनियम इमारत की बाहरी दीवार थी, और एक बंद गली के बिल्कुल आखिरी छोर पर खड़ी थी। मैंने गति

बढ़ाने के लिए काफी जगह बनाई, और फिर एक्सीलरेटर को पूरी तरह दबा दिया। मेरी रफ्तार लगभग सौ मील प्रति घंटा रही होगी जब मैं दीवार से टकराया और बेहोश हो गया।
लेकिन दुर्भाग्य से, दीवार जितनी मजबूत दिख रही थी, उससे कहीं कम मजबूत निकली। पैसे बचाने के चक्कर में उन्होंने उसे ठीक से सहारा नहीं दिया था। दीवार अचानक ढह गई और कार का अगला हिस्सा पूरी तरह से चकनाचूर हो गया। बस इतना ही हुआ। क्योंकि दीवार बहुत नरम थी, इसलिए उसने टक्कर का असर झेल लिया। मानो इतना ही काफी नहीं था, घबराहट में मैं अपनी सीट बेल्ट खोलना भूल गया था। “और इस तरह मैं मौत से बच गई। मुझे मामूली सी चोट आई थी। और सबसे अजीब बात यह थी कि मुझे लगभग कोई दर्द महसूस नहीं हुआ। यह बहुत ही विचित्र था। वे मुझे अस्पताल ले गए और मेरी एक टूटी हुई पसली पर पट्टी बांधी। पुलिस जांच करने आई, लेकिन मैंने उनसे कहा कि मुझे कुछ याद नहीं है। मैंने कहा कि शायद मैंने गैस और ब्रेक बटन को आपस में मिला दिया था। और उन्होंने मेरी बात मान ली। मैं अभी बीस साल की हुई थी, और मुझे ड्राइविंग लाइसेंस मिले सिर्फ छह महीने ही हुए थे। इसके अलावा, मैं आत्महत्या करने वाली जैसी दिखती भी नहीं थी। भला सीट बेल्ट बांधे हुए कौन आत्महत्या करने की कोशिश करेगा?”
“अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद मुझे कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा। सबसे पहले मुझे उस MR2 कार पर बकाया लोन चुकाना था जिसे मैंने कबाड़ में बदल दिया था। बीमा कंपनी की कुछ गलती के कारण कार का बीमा नहीं हुआ था।”
अब जब बहुत देर हो चुकी थी, तब मुझे एहसास हुआ कि खुद को खत्म करने के लिए मुझे सही बीमा वाली कार किराए पर लेनी चाहिए थी। उस समय, ज़ाहिर है, बीमा मेरे दिमाग में सबसे आखिरी चीज़ थी। मुझे

कभी यह ख्याल नहीं आया कि मेरे भाई की कार का बीमा पर्याप्त नहीं होगा या मैं खुद को मारने में नाकाम रह जाऊँगा। मैं सौ मील प्रति घंटे की रफ्तार से एक पत्थर की दीवार से टकरा गया: यह आश्चर्यजनक था कि मैं बच गया।
कुछ समय बाद, मुझे कॉन्डोमिनियम एसोसिएशन से दीवार की मरम्मत का बिल मिला। वे मुझसे 1,364,294 येन की मांग कर रहे थे। तुरंत। नकद में। मेरे पास अपने पिता से उधार लेने के अलावा कोई चारा नहीं था। वे मुझे ऋण के रूप में पैसे देने को तैयार थे, लेकिन उन्होंने मुझसे पैसे वापस करने की शर्त रखी। मेरे पिता पैसों के मामले में बहुत ही सख्त थे। उन्होंने कहा कि दुर्घटना के लिए मैं ही जिम्मेदार था, और वे चाहते थे कि मैं उन्हें पूरी रकम समय पर वापस कर दूं। दरअसल, उस समय उनके पास खर्च करने के लिए बहुत कम पैसे थे। वे अपने क्लिनिक का विस्तार कर रहे थे और परियोजना के लिए पैसे जुटाने में उन्हें परेशानी हो रही थी।
“मैंने एक बार फिर आत्महत्या करने के बारे में सोचा। इस बार मैं ठीक से आत्महत्या करूँगा। मैं विश्वविद्यालय प्रशासन भवन की पंद्रहवीं मंजिल से कूदूँगा। इस तरह कोई चूक नहीं होगी। मेरी मौत निश्चित होगी। मैंने कई बार अभ्यास किया। मैंने इसके लिए सबसे अच्छी खिड़की चुनी। मैं कूदने ही वाला था।”
लेकिन किसी चीज़ ने मुझे रोक रखा था। कुछ गड़बड़ थी, कुछ मुझे अंदर ही अंदर परेशान कर रहा था। आखिरी क्षण में, उस 'कुछ' ने मुझे लगभग सचमुच किनारे से वापस खींच लिया। हालांकि, काफी समय बीत गया, इससे पहले कि मुझे एहसास हुआ कि वह 'कुछ' क्या था।
मुझे कोई दर्द नहीं था।
“दुर्घटना के बाद से मुझे शायद ही कोई दर्द महसूस हुआ था। एक के बाद एक काम आते-आते मुझे ध्यान देने का समय ही नहीं मिला, लेकिन

दर्द मेरे शरीर से गायब हो गया था। मेरा मल त्याग सामान्य था। मासिक धर्म की ऐंठन भी बंद हो गई थी। सिरदर्द या पेट दर्द भी नहीं होता था। यहाँ तक कि मेरी टूटी हुई पसली में भी लगभग कोई दर्द नहीं था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हुआ। लेकिन अचानक मैं दर्द से मुक्त हो गई।”
मैंने फिलहाल जीने का फैसला किया। भले ही थोड़े समय के लिए ही सही, मैं यह जानना चाहता था कि दर्द रहित जीवन जीने का क्या अर्थ होता है। मैं जब चाहूँ तब मर सकता था।
लेकिन जीने के लिए मुझे अपना कर्ज चुकाना था। मुझ पर कुल मिलाकर तीन मिलियन येन से अधिक का कर्ज था। इसे चुकाने के लिए मैं वेश्या बन गई।
“एक वेश्या?!”
“हाँ, बिल्कुल,” क्रेता कानो ने ऐसे कहा जैसे यह कोई मामूली बात हो। “मुझे थोड़े समय के लिए पैसों की ज़रूरत थी। मैं अपने कर्ज़ जल्द से जल्द चुकाना चाहती थी, और पैसे जुटाने का यही एक तरीका मुझे पता था। मुझे ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं हुई। मैंने सचमुच मरने का इरादा कर लिया था। और मैं अब भी मरने का इरादा रखती हूँ, चाहे देर से ही सही। दर्द रहित जीवन के प्रति मेरी जिज्ञासा मुझे ज़िंदा रखे हुए थी, लेकिन यह सिर्फ़ अस्थायी था। और मृत्यु की तुलना में, मेरे लिए अपना शरीर बेचना कुछ भी नहीं था।” मैंने कहा, "मैं समझ गया कि आप क्या कहना चाहते हैं।"
उसके संतरे के जूस में जमी बर्फ पिघल गई थी, और क्रेता कानो ने एक घूंट लेने से पहले उसे अपनी स्ट्रॉ से हिलाया।
मैंने पूछा, "क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूँ?"
“नहीं, बिलकुल नहीं। कृपया।”
"क्या आपने इस बारे में अपनी बहन से सलाह नहीं ली?"

“उस समय वह माल्टा में तपस्या कर रही थी। जब तक यह जारी रहा, उसने मुझे अपना पता भेजने से इनकार कर दिया। वह नहीं चाहती थी कि मैं उसकी एकाग्रता भंग करूँ। माल्टा में रहने के पूरे तीन वर्षों के दौरान मेरे लिए उसे पत्र लिखना लगभग असंभव था।”
“ठीक है,” मैंने कहा। “क्या आपको थोड़ी और कॉफ़ी चाहिए?”
“जी हां, कृपया,” क्रेता कानो ने कहा।
मैं रसोई में गई और कॉफ़ी गर्म की। इंतज़ार करते हुए, मैं एग्ज़ॉस्ट फ़ैन को देखती रही और कई गहरी साँसें लीं। जब कॉफ़ी तैयार हो गई, तो मैंने उसे नए कपों में डाला और चॉकलेट कुकीज़ की एक प्लेट के साथ ट्रे में रखकर लिविंग रूम में ले आई। हमने थोड़ी देर तक खाया-पिया।
मैंने पूछा, "आपने कब आत्महत्या करने की कोशिश की थी?"
“मैं उस समय बीस साल का था। यह छह साल पहले, मई 1978 की बात है।” मई 1978 वह महीना था जब कुमिको और मेरी शादी हुई थी। यानी, जिस महीने हमारी शादी हुई, उसी महीने क्रेता कानो ने आत्महत्या करने की कोशिश की थी और माल्टा कानो माल्टा में तपस्या कर रही थीं।
“मैं एक ऐसे मोहल्ले में गई जहाँ बहुत सारे बार थे, वहाँ मुझे जो पहला आदमी ठीक-ठाक लगा, मैंने उससे बात की, कीमत तय की, एक होटल में गई और उसके साथ सो गई,” क्रेता कानो ने कहा। “सेक्स से मुझे अब ज़रा भी शारीरिक दर्द नहीं होता था। न ही कोई आनंद। यह बस एक शारीरिक क्रिया थी। पैसे के लिए सेक्स करने का मुझे कोई अपराधबोध भी नहीं हुआ। मैं सुन्न हो गई थी, एक ऐसी गहरी संवेदनाहीनता जिसमें गहराई तक कुछ नज़र ही नहीं आ रहा था।” “मैंने इस तरह से बहुत अच्छी कमाई की—पहले महीने में ही लगभग दस लाख येन। इस रफ्तार से तो मैं तीन-चार महीनों में अपना कर्ज

आसानी से चुका सकता था। मैं कैंपस से घर आता, शाम को बाहर घूमने जाता और ज़्यादा से ज़्यादा दस बजे तक काम से घर लौट आता। मैंने अपने माता-पिता को बताया कि मैं वेटर का काम करता हूँ, और किसी को भी सच्चाई का शक नहीं हुआ। बेशक, अगर मैं एक साथ इतनी बड़ी रकम लौटा देता तो उन्हें अजीब लगता, इसलिए मैंने फैसला किया कि मैं अपने पिता को हर महीने 100,000 येन दूंगा और बाकी पैसे बचा लूंगा।”
“लेकिन फिर एक रात, जब मैं थाने के पास पुरुषों से बात कर रही थी, तो दो आदमियों ने मुझे पीछे से पकड़ लिया। पहले तो मुझे लगा कि पुलिस है, लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि वे गुंडे थे। वे मुझे एक सुनसान गली में घसीटकर ले गए, मुझे किसी तरह का चाकू दिखाया और अपने स्थानीय मुख्यालय ले गए। उन्होंने मुझे एक पिछले कमरे में धकेल दिया, मेरे कपड़े उतार दिए, मेरी कलाइयों को बांध दिया और एक वीडियो कैमरे के सामने बार-बार मेरा बलात्कार किया। मैंने पूरी तरह से अपनी आँखें बंद रखीं और कुछ न सोचने की कोशिश की। जो मेरे लिए मुश्किल नहीं था, क्योंकि मुझे न तो दर्द महसूस हुआ और न ही आनंद।”
उसके बाद, उन्होंने मुझे वीडियो दिखाया और कहा कि अगर मैं नहीं चाहती कि कोई इसे देखे, तो मुझे उनके संगठन में शामिल होकर उनके लिए काम करना चाहिए। उन्होंने मेरे पर्स से मेरा स्टूडेंट आईडी कार्ड निकाल लिया। उन्होंने कहा कि अगर मैंने उनकी बात नहीं मानी, तो वे टेप की एक कॉपी मेरे माता-पिता को भेज देंगे और उनकी सारी संपत्ति के लिए उन्हें ब्लैकमेल करेंगे। मेरे पास कोई चारा नहीं था। मैंने उनसे कहा कि मैं उनकी बात मान लूँगी, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। और सच में मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता था। उस समय मेरे लिए कुछ भी मायने नहीं रखता था। उन्होंने बताया कि

उतनी बड़ी टिप मिलती। कुछ आदमी तो नियमित रूप से मुझे ही बुलाने लगे। ये लोग अक्सर अच्छी टिप देते थे। मैंने अपने पैसे कई अलग-अलग खातों में जमा किए। लेकिन सच कहूँ तो, तब तक पैसे मेरे लिए मायने नहीं रखते थे। बस पैसों की कतारें थीं। मैं सिर्फ एक ही मकसद से जी रही थी, और वो था अपनी भावनाओं की कमी को साबित करना।”
मैं सुबह उठकर लेटी रहती और यह देखती कि मेरे शरीर को दर्द जैसी कोई अनुभूति तो नहीं हो रही है। मैं आँखें खोलती, धीरे-धीरे अपने विचारों को इकट्ठा करती और फिर एक-एक करके सिर से पैर तक अपने शरीर के हर हिस्से को महसूस करती। मुझे बिल्कुल भी दर्द नहीं था। क्या इसका मतलब यह था कि मुझे कोई तकलीफ नहीं हो रही थी या दर्द होने के बावजूद मैं उसे महसूस नहीं कर पा रही थी? मैं दोनों में से कोई भी बात समझ नहीं पा रही थी। दोनों ही स्थिति में, दर्द नहीं हो रहा था। वास्तव में, मुझे कोई भी अनुभूति नहीं हो रही थी। इस प्रक्रिया के बाद, मैं बिस्तर से उठकर बाथरूम जाती और अपने दाँत ब्रश करती। फिर मैं अपने पजामा उतारकर गर्म पानी से नहाती। मेरे शरीर में एक अजीब सी हल्कापन था। इतना हल्का और हवादार कि ऐसा लग ही नहीं रहा था जैसे यह मेरा शरीर हो। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरी आत्मा किसी दूसरे शरीर में बस गई हो। मैंने उसे आईने में देखा, लेकिन मेरे और उस शरीर के बीच मुझे एक लंबी, भयानक दूरी महसूस हो रही थी।
“दर्द रहित जीवन: यही वो चीज़ थी जिसका मैंने वर्षों से सपना देखा था, लेकिन अब जब मुझे वो मिल गया था, तो मैं उसमें खुद को कहीं नहीं पा रही थी। एक स्पष्ट खाई मुझे उससे अलग कर रही थी, और इससे मुझे बहुत उलझन हो रही थी। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं दुनिया से बंधी हुई नहीं हूँ—वह दुनिया जिससे मैं अब तक इतनी

नफरत करती थी; वह दुनिया जिसकी अन्याय और नाइंसाफी के लिए मैं लगातार निंदा करती रही थी; वह दुनिया जहाँ कम से कम मैं जानती थी कि मैं कौन हूँ। अब दुनिया, दुनिया नहीं रही, और मैं भी, मैं नहीं रही।”
“मैं बहुत रोने लगी थी। दोपहर में मैं किसी पार्क में जाती— शिंजुकु इंपीरियल गार्डन या योयोगी पार्क—घास पर बैठकर रोती थी। कभी-कभी मैं एक-दो घंटे तक लगातार रोती रहती, ज़ोर-ज़ोर से सिसकती रहती। राहगीर मुझे घूरते रहते, पर मुझे कोई परवाह नहीं थी। काश मैं उसी समय मर गई होती, काश मैंने 29 मई की रात को अपनी जान दे दी होती। कितना अच्छा होता! लेकिन अब मैं मर भी नहीं सकती थी। सुन्न पड़ जाने के कारण मुझमें खुद को मारने की भी ताकत नहीं थी। मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था: न दर्द, न खुशी। सारी भावनाएँ खत्म हो गई थीं। और मैं खुद भी नहीं थी।”
क्रेता कानो ने गहरी सांस ली और उसे रोके रखा। फिर उसने अपना कॉफी का कप उठाया, कुछ देर तक उसे देखती रही, अपना सिर थोड़ा सा हिलाया और कप को वापस तश्तरी पर रख दिया।
"लगभग उसी समय मेरी मुलाकात नोबोरू वाटाया से हुई।"
"नोबोरू वाटया?! एक ग्राहक के रूप में?!"
क्रेता कानो ने चुपचाप सिर हिलाया।
“लेकिन—” मैंने कहना शुरू किया, फिर कुछ देर रुककर अपने शब्दों पर विचार किया। “मुझे इसमें थोड़ी दिक्कत हो रही है। तुम्हारी बहन ने मुझे कुछ दिन पहले बताया था कि नोबोरू वटाया ने तुम्हारा बलात्कार किया था। क्या यह उस घटना से अलग है जो तुम मुझे अभी बता रही हो?”

क्रेता कानो ने अपनी गोद से रुमाल उठाया और फिर से अपने होंठों को पोंछा। फिर उसने सीधे मेरी ओर देखा। उसकी आँखों में कुछ ऐसा था जिसने मेरे दिल को झकझोर दिया, जिससे मुझे बेचैनी महसूस हुई। "आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें," उसने कहा, "लेकिन मैं सोच रही हूँ कि क्या मुझे एक और कप कॉफी मिल सकती है?"
“ज़रूर,” मैंने कहा। मैंने उसका कप मेज़ से उठाकर ट्रे में रखा और रसोई में ले गई। कॉफ़ी उबलने का इंतज़ार करते हुए, मैं नाली के तख्ते से टेक लगाकर खड़ी हो गई, हाथ जेब में डाले हुए। जब मैं कॉफ़ी लेकर बैठक में लौटी, तो क्रेता कानो सोफ़े से गायब थी। उसका बैग, उसका रुमाल, उसकी हर निशानी गायब थी। मैं मुख्य द्वार पर गई, जहाँ से उसके जूते भी गायब थे।
कमाल का।

पुलियाएँ और बिजली की पूर्ण अपर्याप्तता

•

मे कासाहारा की विहंगमियों की प्रकृति की जांच
अगली सुबह कुमिको को छोड़ने के बाद, मैं वार्ड के स्विमिंग पूल में तैरने चला गया। भीड़ से बचने के लिए सुबह का समय सबसे अच्छा होता था। घर वापस आकर, मैंने अपने लिए कॉफी बनाई और रसोई में बैठकर उसे पीते हुए, क्रेता कानो की अधूरी, अजीब कहानी को दोहराने लगा, और उसके जीवन की हर घटना को क्रम से याद करने की कोशिश करने लगा। जितना ज़्यादा मैं याद करता गया, कहानी उतनी ही अजीब लगने लगी, लेकिन जल्द ही मेरे दिमाग की गति धीमी हो गई और मुझे नींद आने लगी। मैं लिविंग रूम में गया, सोफे पर लेट गया और अपनी आँखें बंद कर लीं। पल भर में, मैं सो गया और सपने देखने लगा।
मैंने क्रेता कानो का सपना देखा। उसके प्रकट होने से पहले, मैंने माल्टा कानो का सपना देखा। उसने एक टायरोलियन टोपी पहन रखी थी जिस पर एक बड़ा, चमकीला पंख लगा था। जगह काफी भीड़भाड़ वाली थी (वह एक बड़ा हॉल था), लेकिन माल्टा कानो की टोपी ने तुरंत मेरा ध्यान खींच लिया। वह बार में अकेली बैठी थी। उसके सामने एक बड़ा सा ट्रॉपिकल ड्रिंक रखा था, लेकिन मैं यह नहीं बता सका कि वह सचमुच उसे पी रही थी या नहीं।
मैंने अपना सूट और पोल्का-डॉट टाई पहनी। माल्टा कानो को देखते ही मैंने उसकी तरफ चलने की कोशिश की, लेकिन भीड़ मेरे रास्ते में आती रही। जब तक मैं बार तक पहुँचा, वह जा चुकी थी। उसका खाली स्टूल बार पर रखा हुआ था, वहीं पर ट्रॉपिकल ड्रिंक रखी थी।
मैंने बार में अगली सीट ले ली और बर्फ के साथ स्कॉच ऑर्डर किया।

बारटेंडर ने मुझसे पूछा कि मुझे किस तरह का स्कॉच चाहिए, और मैंने कटी सार्क बताया। मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वह मुझे किस ब्रांड का स्कॉच देता है, लेकिन कटी सार्क ही सबसे पहले मेरे दिमाग में आया।
इससे पहले कि वह मुझे मेरा पेय दे पाता, मैंने महसूस किया कि किसी ने पीछे से मेरा हाथ पकड़ लिया है, स्पर्श इतना कोमल था मानो कोई ऐसी चीज़ पकड़ रहा हो जो किसी भी क्षण टूट सकती है। मैं मुड़ा। वहाँ एक बिना चेहरे वाला आदमी खड़ा था। उसका चेहरा सचमुच नहीं था या था, यह मैं नहीं कह सकता था, लेकिन जहाँ उसका चेहरा होना चाहिए था, वह जगह एक गहरे साये में डूबी हुई थी, और मैं उसके पार कुछ भी नहीं देख पा रहा था। "इधर आइए, श्री ओकाडा," उसने कहा। मैंने बोलने की कोशिश की, लेकिन इससे पहले कि मैं अपना मुँह खोल पाता, उसने मुझसे कहा, "कृपया मेरे साथ आइए। हमारे पास बहुत कम समय है। जल्दी कीजिए।" हाथ अभी भी मेरे हाथ पर था, वह मुझे भीड़ के बीच से तेज़ी से कदमों से ले जाकर एक गलियारे में ले गया। मैं बिना किसी विरोध के उसके पीछे-पीछे गलियारे में चला गया। आख़िरकार, वह मेरा नाम तो जानता ही था। ऐसा तो नहीं था कि मैं किसी अजनबी को मुझे जहाँ चाहे ले जाने देता। इस सब के पीछे कोई न कोई कारण और उद्देश्य ज़रूर था।
कुछ देर गलियारे में चलते रहने के बाद, वह अज्ञात व्यक्ति एक दरवाजे के सामने आकर रुक गया। दरवाजे पर नंबर 208 लिखा था। “यह बंद नहीं है। आपको इसे खोलना चाहिए।” मैंने उसकी बात मानकर दरवाजा खोल दिया। अंदर एक बड़ा कमरा था। ऐसा लग रहा था जैसे यह किसी पुराने जमाने के होटल के कमरों के समूह का हिस्सा हो। छत ऊंची थी और उस पर एक पुराने जमाने का झूमर लटका हुआ था। झूमर में कोई रोशनी नहीं थी। कमरे में रोशनी का एकमात्र स्रोत एक छोटा सा

दीवार पर लगा लैंप था जिससे हल्की-हल्की रोशनी निकल रही थी। पर्दे कसकर बंद थे।
“अगर आपको व्हिस्की चाहिए, श्रीमान ओकाडा,” उस बेनाम आदमी ने कहा। “हमारे पास खूब है। कट्टी सार्क, है ना? जितना मन करे पीजिए।” उसने दरवाजे के बगल में एक अलमारी की ओर इशारा किया, फिर चुपचाप दरवाजा बंद कर दिया और मुझे अकेला छोड़ दिया। मैं काफी देर तक कमरे के बीच में खड़ा रहा, सोचता रहा कि क्या करूं। दीवार पर एक बड़ी तेल चित्रकला टंगी हुई थी। यह एक नदी का चित्र था। मैंने कुछ देर उसे देखा, शायद मन को शांत करने के लिए। नदी के ऊपर चाँद निकला हुआ था। उसकी हल्की रोशनी नदी के किनारे पर पड़ रही थी, इतनी हल्की कि मैं वहाँ का नज़ारा ठीक से नहीं देख पा रहा था। सब कुछ धुंधली रूपरेखाएँ थीं, जो आपस में मिल रही थीं।
जल्द ही मुझे व्हिस्की पीने की तीव्र इच्छा हुई। मैंने सोचा कि मैं अलमारी खोलकर एक घूंट पी लूँ, जैसा कि उस बेनाम आदमी ने सुझाव दिया था, लेकिन अलमारी खुली ही नहीं। जो दरवाजे जैसे दिख रहे थे, वे असल में दरवाजों की अच्छी तरह से बनी हुई नकलें थीं। मैंने उभरे हुए हिस्सों को धक्का देकर और खींचकर देखा, लेकिन अलमारी मजबूती से बंद ही रही।
“इसे खोलना आसान नहीं है, श्री ओकाडा,” क्रेता कानो ने कहा। मैंने देखा कि वह वहीं खड़ी थीं—और अपने साठ के दशक के शुरुआती दौर के कपड़ों में। “इसे खुलने में कुछ समय लगेगा। आज तो संभव ही नहीं। आप चाहें तो हार मान लें।”
मेरी आँखों के सामने ही उसने मटर की फली की तरह आसानी से अपने कपड़े उतार दिए और बिना किसी चेतावनी या स्पष्टीकरण के मेरे सामने नग्न खड़ी हो गई। “हमारे पास बहुत कम समय है, श्रीमान

ओकाडा, चलिए इसे जितनी जल्दी हो सके खत्म करते हैं। जल्दबाजी के लिए क्षमा करें, लेकिन इसके कारण हैं। यहाँ तक पहुँचना ही काफी मुश्किल था।” फिर वह मेरे पास आई, मेरी पैंट की ज़िप खोली और मानो यह दुनिया की सबसे स्वाभाविक बात हो, मेरा लिंग बाहर निकाल लिया। अपनी नकली पलकों वाली आँखों को नीचे करके उसने मेरे लिंग को अपने मुँह में ले लिया। उसका मुँह मेरी कल्पना से कहीं ज़्यादा बड़ा था। अंदर जाते ही मेरा लिंग तुरंत खड़ा हो गया। जब उसने अपनी जीभ चलाई, तो उसके घुंघराले बालों के सिरे हल्की हवा में काँपने लगे और मेरी जांघों को सहलाने लगे। मुझे बस उसके बाल और उसकी नकली पलकें ही दिखाई दे रही थीं। मैं बिस्तर पर बैठ गया और वह घुटनों के बल बैठ गई, उसका चेहरा मेरे गुप्तांगों में दबा हुआ था। “बस करो,” मैंने कहा। “नोबोरू वटाया किसी भी मिनट यहाँ आ जाएगा। मैं उसे यहाँ नहीं देखना चाहता।”
क्रेता कानो ने अपना मुंह मेरे लिंग से हटाया और कहा, "चिंता मत करो। कम से कम इसके लिए हमारे पास काफी समय है।"
उसने अपनी जीभ की नोक मेरे लिंग पर फिराई। मैं स्खलित नहीं होना चाहता था, लेकिन इसे रोकने का कोई तरीका नहीं था। मुझे ऐसा लगा जैसे वह मुझसे खींच लिया जा रहा हो। उसके होंठ और जीभ मुझे ऐसे जकड़े हुए थे जैसे कोई फिसलन भरी जीव हों। मैं स्खलित हो गया। मैंने अपनी आँखें खोलीं।
बहुत बढ़िया। मैं बाथरूम गया, अपनी गंदी अंडरपैंट धोई और गर्म पानी से नहाया, सपने की चिपचिपी अनुभूति से छुटकारा पाने के लिए मैंने खुद को बड़े ध्यान से धोया। मुझे आखिरी बार स्वप्नदोष हुए कितने साल हो गए थे? मैंने ठीक से याद करने की कोशिश की लेकिन याद नहीं आया, इतना लंबा समय बीत गया था।

मैं नहाकर बाहर निकली और अभी खुद को सुखा ही रही थी कि फोन बज उठा। कुमिको का फोन था। अभी-अभी मैंने किसी दूसरी औरत के बारे में स्वप्नदोष देखा था, इसलिए उससे बात करते हुए मुझे थोड़ी घबराहट हो रही थी।
“तुम्हारी आवाज अजीब है,” उसने कहा। “क्या हुआ?” ऐसी बातों के प्रति उसकी संवेदनशीलता वाकई चौंकाने वाली थी।
मैंने कहा, "कुछ नहीं। मैं ऊंघ रहा था। तुमने मुझे जगा दिया।" "ओह, सच में?" उसने कहा। मुझे ईयरपीस के ज़रिए उसकी शंकाएं महसूस हो रही थीं, जिससे मैं और भी ज़्यादा तनाव में आ गई। “खैर, मुझे माफ करना, लेकिन आज मुझे थोड़ी देर हो जाएगी,” कुमिको ने कहा। “शायद नौ बजे तक। इसलिए मैं बाहर खाना खा लूंगी।” मैंने कहा, "कोई बात नहीं। मैं अपने लिए कुछ न कुछ ढूंढ लूंगी। चिंता मत करो।"
“मुझे वाकई बहुत खेद है,” उसने कहा। उसकी आवाज़ में जैसे कोई विचार हो। थोड़ी देर रुकने के बाद उसने फोन काट दिया।
मैंने कुछ सेकंड के लिए रिसीवर को देखा। फिर मैं रसोई में गया और एक सेब छीलने लगा। कुमिको से शादी के बाद से छह सालों में मैंने कभी किसी दूसरी औरत के साथ संबंध नहीं बनाए थे। इसका मतलब यह नहीं है कि मुझे कभी किसी दूसरी औरत की चाहत नहीं हुई या मौका ही नहीं मिला। बस इतना है कि जब भी मौका मिला, मैंने उसका फायदा नहीं उठाया। मैं इसका ठीक-ठीक कारण नहीं बता सकता, लेकिन शायद इसका संबंध जीवन की प्राथमिकताओं से है।
एक बार संयोगवश मैंने एक दूसरी महिला के साथ रात बिताई। वह मुझे पसंद थी, और मुझे पता था कि वह मेरे साथ सो सकती थी। लेकिन अंततः, मैंने ऐसा नहीं किया।

चीज का नाम बता सकते हैं - कोई ठोस चीज - जिससे आपको विशेष रूप से डर लगता हो?"
“नहीं, ऐसा नहीं है,” मैंने कुछ देर सोचने के बाद कहा। मुझे कई चीजों से डर लगता था, लेकिन किसी एक चीज से खास तौर पर नहीं। “आपका क्या ख्याल है?”
“मुझे पुलिया से डर लगता है,” उसने अपने घुटनों को पकड़ते हुए कहा। “तुम जानते हो ना कि पुलिया क्या होती है?”
"यह किसी प्रकार की खाई है, है ना?" मेरे मन में इस शब्द की कोई सटीक परिभाषा नहीं थी।
“हाँ, लेकिन यह भूमिगत है। एक भूमिगत जलमार्ग। ढक्कन वाली एक नाली। घोर अंधेरे में बहने वाला पानी।”
मैंने कहा, "मैं समझ गया। एक पुलिया।"
“मेरा जन्म और पालन-पोषण गाँव में हुआ। फुकुशिमा में। मेरे घर के पास एक छोटी सी नदी बहती थी—खेतों से बहकर आने वाला पानी। एक जगह वह ज़मीन के नीचे बहकर एक नाले में मिल जाती थी। मुझे लगता है कि मैं कुछ बड़े बच्चों के साथ खेल रहा था जब यह घटना हुई। मैं तब बस दो या तीन साल का था। बाकी बच्चों ने मुझे एक छोटी नाव में बिठाया और नदी में उतार दिया। शायद वे ऐसा अक्सर करते होंगे, लेकिन उस दिन बारिश हो रही थी और पानी का स्तर बहुत ऊंचा था। नाव उनसे दूर चली गई और मुझे सीधे नाले के मुहाने की तरफ ले गई। अगर वहाँ से एक किसान न गुज़र रहा होता तो मैं सीधे नाले में समा जाता। मुझे यकीन है कि वे मुझे कभी नहीं ढूंढ पाते।”
उसने अपनी बाईं तर्जनी उंगली को अपने मुंह पर इस तरह फेरा मानो यह जांच रही हो कि वह अभी भी जीवित है या नहीं।
“मुझे अभी भी सब कुछ याद है। मैं पीठ के बल लेटा हुआ हूँ और पानी मुझे बहा ले जा रहा है। नदी के किनारे ऊँची पत्थर की दीवारों की

तरह मेरे ऊपर खड़े हैं, और ऊपर नीला आसमान है। एकदम साफ नीला। मैं बहाव में बहता जा रहा हूँ। सरसराहट, सरसराहट, और तेज़। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि इसका क्या मतलब है। और फिर अचानक मुझे समझ आ गया—कि आगे अंधेरा है। घना अंधेरा। जल्द ही वह आता है और मुझे निगलने की कोशिश करता है। मैं महसूस कर सकता हूँ कि एक ठंडी परछाई मुझे घेरने लगी है। यही मेरी सबसे पहली याद है।” उसने कॉफी की एक घूंट ली।
“मैं बहुत डरी हुई हूँ,” उसने कहा। “मैं इतनी डरी हुई हूँ कि बर्दाश्त नहीं कर पा रही हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं उस समय थी, जैसे मैं उसकी ओर बह रही हूँ और उससे बच नहीं सकती।” उसने अपने पर्स से एक सिगरेट निकाली, उसे मुंह में रखा और माचिस से जलाकर एक लंबी, धीमी सांस छोड़ी। मैंने उसे पहली बार सिगरेट पीते देखा था।
मैंने पूछा, "क्या आप अपनी शादी के बारे में बात कर रहे हैं?" “बिल्कुल सही,” उसने कहा। “मेरी शादी।”
मैंने पूछा, "क्या कोई खास समस्या है? क्या कोई ठोस बात है?" उसने सिर हिलाया। "मुझे ऐसा नहीं लगता," उसने कहा। "सच में नहीं। बस कुछ छोटी-छोटी बातें हैं।"
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उससे क्या कहूँ, लेकिन हालात ऐसे थे कि मुझे कुछ कहना ही पड़ा।
मुझे लगता है कि शादी के समय हर किसी को किसी न किसी हद तक यह एहसास होता है। 'अरे नहीं, मैं कितनी बड़ी गलती कर रहा हूँ!' अगर आपको ऐसा महसूस न हो तो शायद आप असामान्य होंगे। किसी ऐसे व्यक्ति को चुनना जिसके साथ आप अपना जीवन बिताना चाहते हैं, एक बड़ा फैसला है। इसलिए डर लगना स्वाभाविक है, लेकिन इतना डरने की ज़रूरत नहीं है।

उन्होंने कहा, "यह कहना आसान है—'हर कोई ऐसा ही महसूस करता है। हर कोई एक जैसा है।'"
ग्यारह बज चुके थे। मुझे किसी भी तरह इस बातचीत को सफलतापूर्वक समाप्त करके वहाँ से निकलना था। लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, उसने अचानक मुझे गले लगाने के लिए कहा।
मैंने अचानक पूछे गए सवाल पर हैरानी जताते हुए पूछा, "क्यों?" "अपनी ऊर्जा को फिर से भरने के लिए," उसने कहा।
“अपनी बैटरी चार्ज करें?”
“मेरे शरीर की ऊर्जा खत्म हो गई है। मैं कई दिनों से सो नहीं पा रहा हूँ। जैसे ही सोने की कोशिश करता हूँ, जाग जाता हूँ, और फिर दोबारा नींद नहीं आती। मैं सोच भी नहीं पाता। जब मेरी ऐसी हालत हो जाती है, तो किसी को मेरी ऊर्जा बढ़ानी पड़ती है। वरना मैं जी नहीं सकता। यह सच है।”
मैंने उसकी आँखों में झाँका, यह सोचकर कि कहीं वह अभी भी नशे में तो नहीं है, लेकिन उसकी आँखें एक बार फिर से उसकी सामान्य शांत और बुद्धिमान आँखों जैसी थीं। वह नशे में बिलकुल नहीं थी। लेकिन अगले हफ्ते तुम्हारी शादी हो रही है। तुम उसे जितना चाहो उतना गले लगा सकती हो। हर रात। शादी का यही तो मतलब है। अब तुम्हारे बीच की ऊर्जा कभी कम नहीं होगी।
“समस्या अभी की है,” उसने कहा। “कल की नहीं, अगले हफ्ते की नहीं, अगले महीने की नहीं। मेरे पास अभी बिजली नहीं है।”
होंठ कसकर बंद किए, वह अपने पैरों को घूर रही थी। वे बिल्कुल सीधे थे। छोटे और सफेद, उन पर दस सुंदर नाखून थे। ऐसा लग रहा था जैसे वह सचमुच किसी को गले लगाना चाहती हो, और इसलिए मैंने उसे अपनी बाहों में ले लिया। यह सब बहुत अजीब था। मेरे लिए, वह बस एक काबिल, मिलनसार सहकर्मी थी। हम एक ही दफ्तर में काम करते थे, एक-

दूसरे को चुटकुले सुनाते थे, और कभी-कभार साथ में ड्रिंक्स के लिए बाहर भी जाते थे। लेकिन यहाँ, काम से दूर, उसके अपार्टमेंट में, मेरी बाहों में, हम बस मांस के गर्म लोथड़े थे। हम दफ्तर के मंच पर अपनी-अपनी भूमिकाएँ निभा रहे थे, लेकिन मंच से उतरकर, वहाँ जो अस्थाई छवियाँ हम आपस में साझा कर रहे थे, उन्हें छोड़कर, हम दोनों बस अस्थिर, बेढंगे मांस के लोथड़े थे, मांस के गर्म टुकड़े जिनमें पाचन तंत्र, हृदय, मस्तिष्क और प्रजनन अंग थे। मेरी बाहें उसकी पीठ पर लिपटी हुई थीं, और उसके स्तन मेरे सीने से कसकर दबे हुए थे। वे मेरी कल्पना से कहीं बड़े और कोमल थे। मैं दीवार के सहारे फर्श पर बैठा था, और वह मेरे ऊपर झुकी हुई थी। हम काफी देर तक उसी स्थिति में एक-दूसरे को पकड़े रहे, बिना कुछ बोले।
“क्या यह सब ठीक है?” मैंने ऐसी आवाज़ में पूछा जो मेरी अपनी नहीं लग रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई और मेरे लिए बोल रहा हो। उसने कुछ नहीं कहा, लेकिन मुझे उसके सिर हिलाने का एहसास हुआ। उसने एक स्वेटशर्ट और घुटनों तक आने वाली पतली स्कर्ट पहनी हुई थी, लेकिन जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि उसने अंदर कुछ नहीं पहना था। लगभग अपने आप ही, इससे मुझे उत्तेजना हो गई, और ऐसा लगा जैसे उसे इसका एहसास हो गया हो। मैं अपनी गर्दन पर उसकी गर्म सांसें महसूस कर सकता था।
अंत में, मैं उसके साथ नहीं सोया। लेकिन मुझे सुबह दो बजे तक उसकी "बैटरी चार्ज" करनी पड़ी। वह मुझसे विनती करती रही कि जब तक वह सो न जाए, मैं उसके साथ रहूँ। मैंने उसे उसके बिस्तर पर लिटाया और उसे कंबल ओढ़ा दिया। लेकिन वह काफी देर तक जागती रही। उसने पजामा पहना और मैं उसे गोद में लेकर "चार्ज" करता रहा। मेरी बाहों में, मैंने उसके गालों को गर्म होते और उसके दिल की

धड़कन को तेज़ होते महसूस किया। मुझे यकीन नहीं था कि मैं सही कर रहा हूँ, लेकिन मुझे इस स्थिति से निपटने का कोई और तरीका नहीं सूझ रहा था। सबसे आसान तरीका होता उसके साथ सोना, लेकिन मैंने उस विचार को अपने दिमाग से निकाल दिया। मेरी अंतरात्मा ने मुझे ऐसा न करने के लिए कहा।
"कृपया इसके लिए मुझसे नफरत न करें," उसने कहा। "मेरे घर में बिजली इतनी कम है कि मैं कुछ नहीं कर सकती।"
मैंने कहा, "चिंता मत करो। मैं समझता हूँ।"
मुझे पता था कि मुझे घर फोन करना चाहिए, लेकिन मैं कुमिको को क्या बताती? मैं झूठ नहीं बोलना चाहती थी, लेकिन मुझे यह भी पता था कि उसे समझाना नामुमकिन होगा कि क्या हो रहा है। और कुछ देर बाद, मुझे यह बात बेमानी लगने लगी। जो होना था, सो हुआ। मैं उसके अपार्टमेंट से दो बजे निकली और तीन बजे तक घर नहीं लौटी। टैक्सी मिलना बहुत मुश्किल था।
कुमिको ज़ाहिर तौर पर बहुत गुस्से में थी। वह रसोई की मेज पर बैठी, पूरी तरह जागती हुई, मेरा इंतज़ार कर रही थी। मैंने कहा कि मैं ऑफिस के दोस्तों के साथ शराब पी रहा था और महजोंग खेल रहा था। उसने पूछा, मैं एक साधारण फ़ोन कॉल क्यों नहीं कर सकता था? मैंने कहा, यह बात मेरे दिमाग में कभी आई ही नहीं। वह मेरी बात पर यकीन नहीं कर रही थी, और मेरा झूठ लगभग तुरंत ही सामने आ गया। मैंने सालों से महजोंग नहीं खेला था, और वैसे भी मैं झूठ बोलने के लिए बना ही नहीं था। आखिरकार मैंने सच कबूल कर लिया। मैंने उसे पूरी कहानी शुरू से अंत तक बताई—इरेक्शन वाली बात को छोड़कर—और यही कहता रहा कि मैंने उस औरत के साथ कुछ नहीं किया था।

कुमिको ने तीन दिन तक मुझसे बात करने से इनकार कर दिया। सचमुच। एक शब्द भी नहीं। वह दूसरे कमरे में सोती थी और अकेले ही खाना खाती थी। यह हमारे वैवाहिक जीवन का सबसे बड़ा संकट था। वह मुझसे सचमुच नाराज़ थी और मैं उसकी भावनाओं को पूरी तरह समझता था। तीन दिन की चुप्पी के बाद, कुमिको ने मुझसे पूछा, "अगर आप मेरी जगह होते तो क्या सोचते?" ये उसके मुंह से निकले पहले शब्द थे। "अगर मैं रविवार की सुबह तीन बजे बिना किसी फोन कॉल के घर आती और कहती, 'मैं इतनी देर से एक आदमी के साथ बिस्तर पर थी, लेकिन चिंता मत करो, मैंने कुछ नहीं किया, कृपया मुझ पर विश्वास करो। मैं बस उसे तरोताज़ा कर रही थी। ठीक है, बढ़िया, चलो नाश्ता करते हैं और सो जाते हैं।' आपका मतलब है कि आप गुस्सा नहीं होते, आप बस मुझ पर विश्वास कर लेते?"
मैं खामोश रहा।
“और तुमने जो किया वो उससे भी कहीं बुरा था,” कुमिको ने आगे कहा। “तुमने मुझसे झूठ बोला! तुमने कहा कि तुम शराब पी रहे थे और महजोंग खेल रहे थे। बिलकुल झूठ! तुम मुझसे यह उम्मीद कैसे कर सकते हो कि मैं मान लूं कि तुमने उसके साथ संबंध नहीं बनाए?” मैंने कहा, “मुझे झूठ बोलने के लिए खेद है। मुझे ऐसा कभी नहीं करना चाहिए था। लेकिन मैंने झूठ सिर्फ इसलिए बोला क्योंकि सच को समझाना बहुत मुश्किल था। मैं चाहता हूँ कि आप मुझ पर विश्वास करें: मैंने वास्तव में कुछ भी गलत नहीं किया।”
कुमिको ने अपना सिर मेज पर रख दिया। मुझे ऐसा लगा जैसे कमरे की हवा धीरे-धीरे पतली होती जा रही हो।
मैंने कहा, "मुझे नहीं पता कि क्या कहूँ। मैं इसे समझाने के लिए बस इतना ही कह सकता हूँ कि आप मुझ पर विश्वास करें।"

“ठीक है। अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी बात मानूँ, तो मैं मान लूँगी,” उसने कहा। “लेकिन मैं चाहती हूँ कि तुम यह याद रखो: मैं शायद एक दिन तुम्हारे साथ भी ऐसा ही करूँगी। और जब वह समय आएगा, तो मैं चाहती हूँ कि तुम मुझ पर विश्वास करो। मुझे यह अधिकार है।”
कुमिको ने कभी उस अधिकार का प्रयोग नहीं किया था। कभी-कभी मैं सोचता था कि अगर वह इसका प्रयोग करती तो मुझे कैसा लगता। शायद मैं उसकी बात मान लेता, लेकिन मेरी प्रतिक्रिया भी कुमिको की तरह ही जटिल और संभालना मुश्किल होती। यह सोचकर कि उसने जानबूझकर ऐसा किया—और किसलिए? ठीक यही भावना उसके मन में भी उस समय रही होगी।

•

“मिस्टर विंड-अप बर्ड!” बगीचे से एक आवाज आई। यह मेई कासाहारा थी।
बालों को तौलिए से पोंछते हुए मैं बरामदे में गया। वह किनारे पर बैठी अपने अंगूठे का नाखून चबा रही थी। उसने वही गहरे रंग के धूप के चश्मे पहने हुए थे जो मैंने उससे पहली बार मिलते समय पहने थे, साथ ही क्रीम रंग की सूती पैंट और एक काली पोलो शर्ट भी पहनी हुई थी। उसके हाथ में एक क्लिपबोर्ड था।
“मैं इस पर चढ़ी थी,” उसने ईंटों की दीवार की ओर इशारा करते हुए कहा। फिर उसने अपनी पैंट पर लगी धूल झाड़ी। “मुझे लगा कि मैं सही जगह पर हूँ। शुक्र है कि यह तुम्हारा घर था! सोचो अगर मैं दीवार फांदकर किसी गलत घर में आ जाती तो क्या होता!”
उसने अपनी जेब से होप रेगुलर सिगरेट का एक पैकेट निकाला और सिगरेट जलाई।
“खैर, मिस्टर विंड-अप बर्ड, आप कैसे हैं?”

"ठीक है मैं अनुमान लगाता हूं।"
“मैं अब काम पर जा रही हूँ,” उसने कहा। “तुम क्यों नहीं साथ चलते? हम दो लोगों की टीम में काम करते हैं, और मेरे लिए किसी परिचित का साथ होना बहुत अच्छा रहेगा। कोई नया लड़का मुझसे तरह-तरह के सवाल पूछेगा—‘तुम्हारी उम्र कितनी है? तुम स्कूल क्यों नहीं जाती?’ कितना झंझट है! या फिर हो सकता है वो कोई विकृत मानसिकता वाला निकले। ऐसा होता है, तुम्हें पता है! मेरे लिए ये कर दोगे, मिस्टर विंड-अप बर्ड?”
"क्या यह वही नौकरी है जिसके बारे में आपने मुझे बताया था—किसी विग बनाने वाले के लिए कोई सर्वेक्षण?"
“बस इतना ही,” उसने कहा। “आपको बस गिन्ज़ा में एक से चार तक गंजे लोगों के सिर गिनने हैं। यह आसान है! और यह आपके लिए अच्छा भी होगा। जिस तरह से आप गंजे हो रहे हैं, एक दिन आप भी गंजे हो जाएंगे, इसलिए बेहतर है कि अभी ही कोशिश कर लें जब तक आपके बाल हैं।”
"हाँ, लेकिन तुम्हारा क्या? अगर तुम्हें दिन के बीच में गिन्ज़ा में ये सब करते हुए देखा गया तो क्या स्कूल से भागने वाले बच्चों पर नज़र रखने वाला अधिकारी तुम्हें पकड़ नहीं लेगा?" “नां। मैं बस उनसे कह देती हूँ कि यह सामाजिक अध्ययन के लिए फील्डवर्क है। यह हमेशा काम करता है।”
दोपहर के लिए कोई योजना न होने के कारण, मैंने उनके साथ चलने का फैसला किया। मे कासाहारा ने अपनी कंपनी को फोन करके बताया कि हम आ रहे हैं। फोन पर, वह एक बहुत ही सलीकेदार युवती में बदल गईं: जी हाँ, मैं उनके साथ काम करना चाहूँगी, जी हाँ, यह सही है, बहुत-बहुत धन्यवाद, जी हाँ, मैं समझ गई, जी हाँ, हम दोपहर के बाद आ सकते हैं। मैंने कुमिको के लिए एक नोट छोड़ा जिसमें लिखा था कि मैं

छह बजे तक वापस आ जाऊँगा, अगर वह जल्दी घर आ जाए तो। फिर मैं मे कासाहारा के साथ घर से निकल गया।
विग बनाने वाली कंपनी शिम्बाशी में थी। मेट्रो में, मे कासाहारा ने बताया कि सर्वे कैसे किया जाता है। हमें सड़क के एक कोने पर खड़े होकर वहाँ से गुजरने वाले सभी गंजे पुरुषों (या जिनके बाल कम हो रहे थे) को गिनना था। हमें उन्हें उनके गंजेपन की मात्रा के अनुसार वर्गीकृत करना था: C, जिनके बाल थोड़े कम हो गए हों; B, जिनके बाल बहुत कम हो गए हों; और A, जो पूरी तरह से गंजे हों। मे ने अपने फोल्डर से एक पैम्फलेट निकाला और मुझे तीनों चरणों के उदाहरण दिखाए।
“आपको लगभग समझ आ ही गया होगा, है ना, कि कौन से सिर किस श्रेणी में आते हैं? मैं विस्तार से नहीं बताऊंगा। इसमें पूरा दिन लग जाएगा। लेकिन आपको लगभग समझ आ गया होगा, है ना, कि कौन सा किस श्रेणी में आता है?”
मैंने बिना ज्यादा आत्मविश्वास दिखाए कहा, "लगभग।"
मे कासाहारा के दूसरी ओर एक मोटा-ताज़ा कंपनी कर्मचारी बैठा था — जो कि एक स्पष्ट रूप से बी-ग्रेड का व्यक्ति था—जो बार-बार बेचैनी से उस पर्चे पर नज़र डाल रहा था, लेकिन मे कासाहारा को इस बात का एहसास नहीं था कि इससे वह कितना घबरा रहा था।
मैं इन्हें श्रेणियों में बाँटने का ज़िम्मा संभालूँगा, और आप मेरे बगल में एक सर्वेक्षण पत्र लेकर खड़े हो जाइए। आप इन्हें A, B, या C में डालिएगा, जैसा मैं आपको बताऊँगा। बस इतना ही है। आसान है ना?
मैंने कहा, "शायद हाँ। लेकिन इस तरह का सर्वेक्षण करने का क्या फायदा?"

“मुझे नहीं पता,” उसने कहा। “ये लोग पूरे टोक्यो में ये सब कर रहे हैं—शिंजुकु, शिबुया, आओयामा में। शायद ये पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि किस मोहल्ले में सबसे ज़्यादा गंजे आदमी हैं? या फिर ये जानना चाहते हैं कि आबादी में A, B और C तरह के लोगों का अनुपात क्या है? कौन जाने? उनके पास इतना पैसा है कि उन्हें समझ नहीं आ रहा कि इसका क्या करें। इसलिए वे इसे ऐसी चीज़ों पर बर्बाद कर रहे हैं। विग के कारोबार में मुनाफा बहुत ज़्यादा है। कर्मचारियों को आम कंपनियों के मुकाबले कहीं ज़्यादा बोनस मिलता है। जानते हैं क्यों?”
"क्यों नहीं?"
“विग ज़्यादा दिन नहीं टिकते। शायद आपको पता न हो: टोपी ज़्यादा से ज़्यादा दो या तीन साल ही चलती है। जितनी अच्छी बनी हो, उतनी ही जल्दी खराब हो जाती है। ये सबसे ज़्यादा इस्तेमाल होने वाला उपभोक्ता उत्पाद है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ये खोपड़ी से इतनी कसकर चिपकी रहती है कि नीचे के बाल पहले से भी ज़्यादा पतले हो जाते हैं। एक बार ऐसा हो जाए, तो आपको फिर से सही फिट पाने के लिए नई टोपी खरीदनी पड़ती है। और ज़रा सोचिए: मान लीजिए आप टोपी इस्तेमाल कर रहे हैं और दो साल बाद वो बेकार हो जाए—तो आपके मन में क्या आएगा? क्या आप सोचेंगे, ठीक है, मेरी विग खराब हो गई है। अब इसे नहीं पहन सकते। लेकिन नई खरीदने में बहुत ज़्यादा खर्च आएगा, तो कल से बिना विग के ही काम पर जाना शुरू कर दूंगा? क्या आप यही सोचेंगे?”
मैंने अपना सिर हिलाया। "शायद नहीं," मैंने कहा।
“बिल्कुल नहीं। एक बार कोई आदमी विग पहनना शुरू कर दे, तो उसे बार-बार पहनना ही पड़ता है। ये मानो उसकी किस्मत है। इसीलिए विग बनाने वाले इतना ज़्यादा मुनाफा कमाते हैं। मुझे ये कहते हुए

बुरा लग रहा है, लेकिन ये ड्रग डीलरों की तरह हैं। एक बार किसी को अपने जाल में फंसा लें, तो वो ज़िंदगी भर उनका ग्राहक बना रहता है। क्या आपने कभी किसी गंजे आदमी के सिर पर अचानक बाल उगते हुए सुना है? मैंने तो कभी नहीं सुना। एक विग की कीमत कम से कम पांच लाख येन होगी, शायद एक लाख येन तक भी। और आपको हर दो साल में एक नई विग चाहिए! वाह! एक कार भी इससे ज़्यादा चलती है—चार-पांच साल। और फिर आप उसे बेच भी सकते हैं!”
मैंने कहा, "मैं समझ गया कि आप क्या कहना चाहते हैं।"
“इसके अलावा, विग बनाने वाले अपने खुद के हेयरस्टाइलिंग सैलून चलाते हैं। वे विग धोते हैं और ग्राहकों के असली बाल काटते हैं। ज़रा सोचिए: आप किसी साधारण नाई की कुर्सी पर बैठकर, अपना विग उतारकर, यह नहीं कह सकते, ‘मुझे बाल कटवाने हैं,’ है ना? सिर्फ़ इन जगहों से होने वाली आमदनी ही बहुत ज़्यादा है।”
“आपको तो हर तरह की जानकारी है,” मैंने सच्ची प्रशंसा के साथ कहा। मे के बगल में बैठी बी-श्रेणी की कंपनी की कर्मचारी हमारी बातचीत को बड़ी दिलचस्पी से सुन रही थी।
“ज़रूर,” उसने कहा। “ऑफिस में सब मुझे पसंद करते हैं। वे मुझे सब कुछ बताते हैं। इस धंधे में मुनाफा बहुत ज़्यादा है। विग दक्षिण-पूर्व एशिया और ऐसी ही जगहों पर बनते हैं, जहाँ मज़दूरी सस्ती है। बाल भी वहीं से आते हैं—थाईलैंड या फिलीपींस से। औरतें अपने बाल विग बनाने वाली कंपनियों को बेचती हैं। कुछ जगहों पर तो इसी तरह वे दहेज कमाती हैं। दुनिया कितनी अजीब है! हो सकता है कि आपके बगल में बैठा आदमी भी इंडोनेशिया की किसी औरत के बाल पहने हो।”
सहज ही, मैंने और बी-मैन ने कार में बैठे अन्य लोगों की ओर देखा।

•

हम सर्वेक्षण पत्रक और पेंसिल वाले एक लिफाफे को लेने के लिए कंपनी के शिम्बाशी कार्यालय में रुके। इस कंपनी का बाज़ार में कथित तौर पर दूसरा सबसे बड़ा हिस्सा था, लेकिन यह पूरी तरह से गुप्त थी, प्रवेश द्वार पर नाम की कोई पट्टिका भी नहीं थी, ताकि ग्राहक आसानी से आ-जा सकें। न तो लिफाफे पर और न ही सर्वेक्षण पत्रकों पर कंपनी का नाम था। सर्वेक्षण विभाग में, मैंने अपना नाम, पता, शैक्षणिक पृष्ठभूमि और आयु भरकर अंशकालिक कर्मचारी का पंजीकरण फॉर्म भरा। यह कार्यालय बेहद शांत था। न तो कोई टेलीफोन पर चिल्ला रहा था, न ही कोई आस्तीन ऊपर चढ़ाकर कंप्यूटर कीबोर्ड पर टाइप कर रहा था। प्रत्येक कर्मचारी साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए था और पूरी एकाग्रता से अपना-अपना काम कर रहा था। जैसा कि विग बनाने वाले के कार्यालय में उम्मीद की जा सकती है, यहाँ एक भी आदमी गंजा नहीं था। कुछ लोग शायद कंपनी का उत्पाद पहने हुए थे, लेकिन मेरे लिए यह बताना असंभव था कि कौन गंजा है और कौन नहीं। मैंने आज तक जितनी भी कंपनियों का दौरा किया था, उनमें से इसका माहौल सबसे अजीब था।
हम सबवे से गिन्ज़ा गए। सुबह-सुबह भूख लगी थी, इसलिए हम डेयरी क्वीन में एक हैमबर्गर खाने के लिए रुके।
"मुझे बताइए, मिस्टर विंड-अप बर्ड," मे कासाहारा ने कहा, "अगर आप गंजे होते तो क्या आप विग पहनते?"
मैंने कहा, "मुझे आश्चर्य होता है। मुझे ऐसी चीजें पसंद नहीं हैं जिनमें समय और मेहनत लगती हो। अगर मेरे बाल झड़ जाएं तो शायद मैं इससे लड़ने की कोशिश भी न करूं।"
“अच्छा,” उसने कागज़ के नैपकिन से अपने मुँह से केचप पोंछते हुए कहा। “यही तरीका है। गंजे आदमी उतने बुरे नहीं दिखते जितना लोग सोचते हैं। मुझे तो इसमें परेशान होने की कोई बात नहीं।”

मैंने कहा, "मुझे आश्चर्य होता है।"

•

अगले तीन घंटे तक हम वाको बिल्डिंग के पास मेट्रो स्टेशन के प्रवेश द्वार पर बैठे रहे और वहाँ से गुज़रने वाले गंजे लोगों को गिनते रहे। मेट्रो की सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे जाते लोगों के सिर को देखकर ही किसी के सिर के गंजेपन की मात्रा का अंदाज़ा लगाया जा सकता था। मे कासाहारा "ए" या "बी" या "सी" कहतीं और मैं उसे लिख लेता। ज़ाहिर है, उन्होंने यह काम कई बार किया था। वह कभी अटकती नहीं, हिचकिचाती नहीं या अपनी गलती नहीं सुधारतीं, बल्कि बड़ी तेज़ी और सटीकता से हर सिर को उसकी सही श्रेणी में रखतीं, और राहगीरों का ध्यान न जाए इसलिए धीमी, कटी-फटी आवाज़ में अक्षर बोलतीं। जब भी गंजे लोगों का एक बड़ा समूह एक साथ गुज़रता, तो हमें तेज़ी से नाम बताने पड़ते: "सीसीबीएबीसीएएसीसीबीबी।" एक बार, एक सलीके से दिखने वाले बुज़ुर्ग सज्जन (जिनके सिर पर बर्फ़ जैसे सफ़ेद बाल थे) हमें यह सब करते देखने के लिए रुक गए। थोड़ी देर बाद उन्होंने मुझसे कहा, "माफ़ कीजिएगा, लेकिन क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप दोनों क्या कर रहे हैं?"
मैंने कहा, "सर्वेक्षण।"
“किस तरह का सर्वेक्षण?” उन्होंने पूछा।
मैंने कहा, "सामाजिक अध्ययन।"
"CACABC," मई कसाहारा ने कहा।
वह बुजुर्ग सज्जन पूरी तरह से आश्वस्त नहीं लग रहे थे, लेकिन वे हमें तब तक देखते रहे जब तक कि उन्होंने हार मानकर कहीं और चले नहीं गए।

जब सड़क के उस पार मित्सुकोशी घड़ी में चार बजे, हमने अपना सर्वे खत्म किया और एक कप कॉफी पीने के लिए डेयरी क्वीन वापस चले गए। काम थकाने वाला नहीं था, लेकिन मुझे अपनी गर्दन और कंधे अजीब तरह से अकड़े हुए महसूस हो रहे थे। शायद यह काम की गुप्त प्रकृति के कारण था, या गंजे आदमियों को छुपकर गिनने के बारे में मुझे जो अपराधबोध हो रहा था, उसके कारण। शिम्बाशी में कंपनी के मुख्यालय वापस जाते समय मेट्रो में, मैं हर गंजे सिर को देखते ही अपने आप ही श्रेणी A, B या C में डाल रहा था, जिससे मुझे लगभग जी मिचलाने लगा। मैंने खुद को रोकने की कोशिश की, लेकिन तब तक एक तरह की गति बन चुकी थी। हमने अपने सर्वे फॉर्म जमा किए और अपना वेतन प्राप्त किया—समय और मेहनत के हिसाब से काफी अच्छा वेतन था। मैंने रसीद पर हस्ताक्षर किए और पैसे अपनी जेब में रख लिए। मे कासाहारा और मैं मेट्रो से शिंजुकु गए और वहाँ से ओडाक्यू लाइन से घर आए। दोपहर की भीड़भाड़ शुरू हो रही थी। काफी समय बाद यह मेरी पहली भीड़ भरी ट्रेन की यात्रा थी, लेकिन इससे मुझे कोई पुरानी यादें नहीं आईं।
“काफी अच्छी नौकरी है, है ना?” ट्रेन में मेरे बगल में खड़ी मेई कासाहारा ने कहा। “आसान है, और वेतन भी बुरा नहीं है।”
मैंने लेमन कैंडी चूसते हुए कहा, "काफी अच्छा है।"
"अगली बार मेरे साथ चलो? हम इसे हफ्ते में एक बार कर सकते हैं।" मैंने कहा, "क्यों नहीं?"
“आप जानते हैं, मिस्टर विंड-अप बर्ड,” मे कासाहारा ने थोड़ी देर चुप रहने के बाद कहा, मानो अचानक उनके मन में कोई विचार आया हो, “मुझे लगता है कि लोग गंजे होने से इसलिए डरते हैं क्योंकि इससे उन्हें जीवन के अंत का आभास होता है। मेरा मतलब है, जब आपके बाल पतले होने लगते हैं, तो ऐसा लगता होगा जैसे आपका जीवन धीरे-धीरे

खत्म हो रहा है... जैसे आपने मृत्यु की ओर एक बड़ा कदम बढ़ा दिया हो, अंतिम बड़ा क्षय।”
मैंने कुछ देर इसके बारे में सोचा। मैंने कहा, "मुझे यकीन है कि यह इसे देखने का एक तरीका है।"
"आप जानते हैं, मिस्टर विंड-अप बर्ड, मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि लंबे समय तक थोड़ा-थोड़ा करके मरने का अनुभव कैसा होता होगा। आप क्या सोचते हैं?"
मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कहना चाह रही है, इसलिए मैंने हाथ की पट्टी पर अपनी पकड़ बदली और उसकी आँखों में देखा। "क्या आप मुझे इसका कोई ठोस उदाहरण दे सकती हैं कि आपका क्या मतलब है - धीरे-धीरे मरना?"
“खैर… मुझे नहीं पता। तुम अंधेरे में बिल्कुल अकेले फंसे हो, खाने को कुछ नहीं, पीने को कुछ नहीं, और धीरे-धीरे तुम्हारी मौत हो जाती है…।”
मैंने कहा, "यह बहुत भयानक होगा। दर्दनाक। अगर मैं कुछ कर सकता, तो मैं इस तरह मरना नहीं चाहता।"
लेकिन अंततः, मिस्टर विंड-अप बर्ड, क्या यही जीवन नहीं है? क्या हम सब कहीं अंधेरे में फंसे नहीं हैं, और उन्होंने हमारा खाना- पानी छीन लिया है, और हम धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके मर रहे हैं…?
मैं हँस पड़ा। मैंने अंग्रेज़ी शब्द का प्रयोग करते हुए कहा, "तुम इतने छोटे हो कि इतने निराशावादी नहीं हो सकते।" “पेसी-क्या?”
निराशावादी। इसका मतलब है चीजों के केवल अंधेरे पक्ष को देखना। “निराशावादी… निराशावादी…” वह बार-बार अपने मन में अंग्रेज़ी दोहराती रही, और फिर उसने गुस्से भरी निगाहों से मेरी तरफ देखा।

“[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],” [illegible] [illegible], “[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

जादुई स्पर्श

•

बाथटब में मौत

•

स्मृति चिन्हों के साथ संदेशवाहक
हमारी शादी के दूसरे साल की शरद ऋतु में हम अपने वर्तमान घर में रहने लगे। कोएंजी अपार्टमेंट, जिसमें हम तब तक रह रहे थे, का नवीनीकरण होना था। हम रहने के लिए एक सस्ता और सुविधाजनक अपार्टमेंट ढूंढ रहे थे, लेकिन हमारे बजट के हिसाब से ऐसा अपार्टमेंट मिलना मुश्किल था। यह सुनकर मेरे चाचा ने सुझाव दिया कि हम सेतागाया में स्थित उनके घर में चले जाएं। उन्होंने इसे अपनी जवानी में खरीदा था और दस साल तक वहीं रहे थे। वे पुराने घर को गिराकर कुछ अधिक सुविधाजनक बनाना चाहते थे, लेकिन वास्तु नियमों के कारण वे अपनी इच्छानुसार घर नहीं बना पा रहे थे। वे नियमों में ढील की अफवाहों के लागू होने का इंतजार कर रहे थे, लेकिन अगर वे इस बीच घर को खाली छोड़ देते, तो उन्हें संपत्ति कर देना पड़ता, और अगर वे इसे किसी अजनबी को किराए पर देते, तो उन्हें घर खाली करने के लिए कहने पर परेशानी हो सकती थी। हमसे वे केवल नाममात्र का किराया लेते, जिससे करों की भरपाई हो जाती, लेकिन बदले में वे चाहते थे कि समय आने पर हम तीन महीने का नोटिस देकर घर खाली कर दें। हमें इससे कोई दिक्कत नहीं थी: टैक्स से जुड़ी बात हमें पूरी तरह समझ नहीं आई थी, लेकिन हमें एक असली घर में रहने का मौका मिला, भले ही थोड़े समय के लिए ही सही, और वो भी उतने ही किराए पर जितना हम एक अपार्टमेंट में रहते थे (और वो भी बहुत सस्ता अपार्टमेंट), तो हमने तुरंत उसे लपक लिया।

उन्होंने मुझसे कहा था, "जब मुझे पता चल जाता है कि मुझे सही आदमी मिल गया है, तो मैं उसके हाथ में नोटों का बंडल थमा देता हूँ और उसे अपना काम करने देता हूँ। आपको अपना पैसा उन चीजों पर खर्च करना चाहिए जो पैसे से खरीदी जा सकती हैं, लाभ या हानि की चिंता नहीं करनी चाहिए। अपनी ऊर्जा उन चीजों के लिए बचाकर रखें जो पैसे से नहीं खरीदी जा सकतीं।"
उन्होंने देर से शादी की। चालीस की उम्र के आसपास आर्थिक सफलता प्राप्त करने के बाद ही वे स्थिर जीवन जीने लगे। उनकी पत्नी तलाकशुदा थीं, उनसे तीन-चार साल छोटी थीं, और शादी में अपने साथ काफी संपत्ति लेकर आई थीं। मेरे चाचा ने मुझे कभी नहीं बताया कि उनकी मुलाकात उनसे कैसे हुई, और मैं उनके बारे में बस इतना ही जान पाया कि वे शांत स्वभाव की, अच्छे परिवार से थीं। उनके कोई बच्चे नहीं थे। जाहिर तौर पर उनके पहले पति से भी कोई संतान नहीं थी, शायद यही तलाक का कारण रहा हो। खैर, भले ही वे बहुत अमीर नहीं थे, लेकिन चालीस की उम्र के आसपास मेरे चाचा ऐसी स्थिति में थे कि उन्हें पैसे के लिए ज्यादा मेहनत करने की जरूरत नहीं थी। अपने रेस्तरां और बार से होने वाले मुनाफे के अलावा, उनके पास अपने स्वामित्व वाले कई घरों और अपार्टमेंट से किराए की आय और निवेश से नियमित लाभांश भी आता था। प्रतिष्ठित व्यवसायों और सादगीपूर्ण जीवन शैली के लिए मशहूर परिवार में मेरे चाचा को कुछ अलग-थलग माना जाता था, और उन्होंने कभी रिश्तेदारों के साथ ज्यादा मेलजोल नहीं रखा था। हालांकि, उनके इकलौते भतीजे होने के नाते, मैं हमेशा उनके लिए चिंता का विषय रहा था, खासकर मेरी माँ के निधन के बाद, जिस साल मैंने कॉलेज में दाखिला लिया था और मेरे पिता से मेरा मनमुटाव हो गया था, जिन्होंने दोबारा शादी कर ली थी। जब मैं टोक्यो में एक गरीब कॉलेज छात्र के रूप में अकेला

जीवन जी रहा था, तब मेरे चाचा अक्सर मुझे गिन्ज़ा के अपने किसी न किसी रेस्तरां में रात के खाने पर ले जाते थे।
अब वह और उनकी पत्नी घर की देखभाल के झंझट में पड़ने के बजाय अज़ाबू की एक पहाड़ी पर बने एक अपार्टमेंट में रहने लगे। उन्हें विलासिता में लिप्त होने का शौक नहीं था, लेकिन उनका एक शौक था, दुर्लभ कारों का संग्रह। उन्होंने अपने गैरेज में एक जगुआर और एक अल्फा रोमियो रखी हुई थी, दोनों ही लगभग प्राचीन थीं और उनकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल की गई थी, मानो नवजात शिशुओं की तरह चमक रही हों।

•

किसी और बात पर अपने चाचा से फोन पर बात करते हुए, मैंने इस अवसर का फायदा उठाकर उनसे मे कासाहारा के परिवार के बारे में जो कुछ भी पता हो, वह पूछ लिया।
“कासाहारा, आप कह रहे हैं?” उन्होंने सोचने के लिए कुछ पल लिए। “मैंने उनके बारे में कभी नहीं सुना। जब मैं वहाँ रहता था तब मैं अविवाहित था, पड़ोसियों से मेरा कभी कोई वास्ता नहीं रहा।” “दरअसल, मुझे उनके घर के ठीक सामने वाले घर के बारे में जानने की उत्सुकता है, उनके पिछवाड़े से गली के दूसरी तरफ वाला खाली घर,” मैंने कहा। “मुझे लगता है कि वहाँ मियावाकी नाम का कोई व्यक्ति रहता था। अब वह पूरी तरह से बंद पड़ा है।”
“ओह, मियावाकी। हाँ, मैं उसे जानता था,” मेरे चाचा ने कहा। “उसके कुछ रेस्टोरेंट थे। गिन्ज़ा में भी एक था। मैं उससे पेशेवर तौर पर कुछ बार मिला था। सच कहूँ तो उसके रेस्टोरेंट कुछ खास नहीं थे, लेकिन उसकी लोकेशन अच्छी थीं। मुझे लगता था कि वह ठीक-ठाक चल रहा था। वह अच्छा आदमी था, लेकिन थोड़ा बिगड़े हुए अमीर बच्चे जैसा था। उसने कभी मेहनत नहीं की थी, या शायद उसे मेहनत करना आता

ही नहीं था, लेकिन वह कभी पूरी तरह से परिपक्व नहीं हो पाया। किसी ने उसे शेयर बाजार में फंसा दिया और उसका सब कुछ छीन लिया— घर, ज़मीन, कारोबार, सब कुछ। और समय इससे बुरा नहीं हो सकता था। वह एक नया रेस्टोरेंट खोलने की कोशिश कर रहा था, उसने अपना घर और ज़मीन गिरवी रख रखी थी। बस! सब कुछ हाथ से निकल गया। उसकी दो बेटियाँ थीं, शायद कॉलेज जाने की उम्र की।”
"मुझे लगता है कि तब से वह घर खाली पड़ा है।"
“सच में? मुझे यकीन है कि टाइटल में गड़बड़ हो गई होगी और उसकी संपत्ति फ्रीज कर दी गई होगी या कुछ और। चाहे वो तुम्हें किसी भी तरह का सौदा पेश करे, तुम्हें उस जगह को हाथ भी नहीं लगाना चाहिए।”
“कौन? मैं?” मैं हँस पड़ा। “मैं कभी भी ऐसी जगह नहीं खरीद सकता। लेकिन तुम्हारा मतलब क्या है?”
मैंने अपना घर खरीदते समय उस घर की भी जांच की थी। उसमें कुछ गड़बड़ है।
"तुम्हारा मतलब भूतों से है?"
"शायद भूत तो नहीं, लेकिन मैंने उस जगह के बारे में कभी कुछ अच्छा नहीं सुना," मेरे चाचा ने कहा। “युद्ध के अंत तक वहाँ एक जाने-माने सेना अधिकारी रहते रहे, कर्नल समबडी-ऑर-अदर, एक बेहद उच्च कोटि के अधिकारी। उत्तरी चीन में उनके नेतृत्व में सैनिकों ने कई पदक जीते, लेकिन उन्होंने वहाँ कुछ भयानक काम भी किए—पाँच सौ युद्धबंदियों को फाँसी दी, हज़ारों किसानों को तब तक काम करने के लिए मजबूर किया जब तक कि उनमें से आधे मर नहीं गए, इस तरह की चीज़ें। ये कहानियाँ प्रचलित थीं, इसलिए मुझे नहीं पता कि इनमें से कितनी सच हैं। युद्ध समाप्त होने से ठीक पहले उन्हें घर बुला लिया गया, इसलिए वे आत्मसमर्पण के समय यहाँ थे,

और जो कुछ हो रहा था उसे देखकर उन्हें लगा कि उन पर युद्ध अपराधी के रूप में मुकदमा चलाया जा सकता है। चीन में जो लोग पागल हो गए थे—जनरल, फील्ड अधिकारी—उन्हें सैन्य बल घसीटकर ले जा रहे थे। खैर, उनका मुकदमा झेलने का कोई इरादा नहीं था। वे तमाशा बनकर फाँसी पर चढ़ना नहीं चाहते थे। वे ऐसा होने देने के बजाय अपनी जान लेना बेहतर समझते थे। इसलिए एक दिन जब उन्होंने एक सैनिक को अपने घर के सामने जीप रोकते देखा, तो उन्होंने खुद को गोली मार ली।” उसकी मौके पर ही मौत हो गई। वह पुराने जमाने के समुराई तरीके से अपना पेट चीरकर आत्महत्या करना चाहता था, लेकिन समय नहीं था। उसकी पत्नी ने रसोई में फांसी लगाकर अपने पति के साथ मृत्यु में 'साथ' देने की कोशिश की।
"बहुत खूब।"
खैर, बाद में पता चला कि वह सैनिक एक साधारण सैनिक था, जो अपनी प्रेमिका को ढूंढ रहा था। वह रास्ता भटक गया था। वह किसी से रास्ता पूछना चाहता था। आप जानते हैं कि उस जगह पर रास्ता ढूंढना कितना मुश्किल होता है। मरने का फैसला करना—यह किसी के लिए भी आसान नहीं हो सकता।
नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।
“उसके बाद वह घर कुछ समय तक खाली पड़ा रहा, फिर एक अभिनेत्री ने उसे खरीद लिया—एक फिल्म अभिनेत्री। आप शायद उसका नाम नहीं जानते होंगे। वह आपके समय से बहुत पहले की थी, और वह कभी बहुत मशहूर नहीं हुई। वह वहाँ लगभग दस साल रही। बस वह और उसकी नौकरानी। वह अकेली थी। उसके वहाँ रहने के कुछ साल बाद, उसे आँखों की कोई बीमारी हो गई। उसे सब कुछ धुंधला दिखाई देने लगा, यहाँ तक कि पास की चीज़ें भी। लेकिन आखिर वह एक अभिनेत्री थी; वह चश्मा लगाकर काम नहीं कर सकती थी। और उन दिनों कॉन्टैक्ट लेंस

नई चीज़ थे। वे बहुत अच्छे नहीं थे और लगभग कोई उनका इस्तेमाल नहीं करता था। इसलिए, किसी दृश्य की शूटिंग से पहले, वह हमेशा लेआउट को देखती और याद कर लेती कि उसे A से B तक कितने कदम चलने हैं। उसने किसी न किसी तरह काम चला लिया: वे बहुत सरल फिल्में थीं, वे पुराने शोचिकू घरेलू नाटक। उन दिनों सब कुछ ज़्यादा सहज था। फिर एक दिन, सेट का जायज़ा लेने और अपने ड्रेसिंग रूम में वापस जाने के बाद, एक युवा कैमरामैन, जिसे कुछ पता नहीं था, ने प्रॉप्स और बाकी चीज़ों को थोड़ा सा हिला दिया।”
"उह ओह।"
“उसका पैर फिसल गया, वह गिर पड़ी और उसके बाद चल नहीं पाई। उसकी नज़र भी कमज़ोर होती चली गई। वह लगभग अंधी हो गई थी। यह बहुत दुख की बात थी; वह अभी भी जवान और खूबसूरत थी। ज़ाहिर है, उसके फिल्मी करियर के दिन खत्म हो चुके थे। अब उसके पास घर पर रहने के अलावा कोई चारा नहीं था। और फिर नौकरानी उसके सारे पैसे लेकर किसी आदमी के साथ भाग गई। यह नौकरानी ही वह अकेली इंसान थी जिस पर वह भरोसा कर सकती थी, हर चीज़ के लिए उस पर निर्भर थी, और उस औरत ने उसकी सारी बचत, उसके शेयर, सब कुछ ले लिया। बाप रे, कितनी भयानक कहानी है! तो आपको क्या लगता है उसने क्या किया होगा?” "खैर, जाहिर है इस कहानी का सुखद अंत नहीं हो सकता।"
“नहीं, बिलकुल नहीं,” मेरे चाचा ने कहा। “उसने टब में पानी भरा, अपना चेहरा उसमें डाला और खुद को डुबो लिया। आप जानते ही हैं कि इस तरह मरने के लिए बहुत दृढ़ निश्चयी होना पड़ता है।”
"इसमें कुछ भी उज्ज्वल और सुखद नहीं है।"
“नहीं, कुछ भी अच्छा और सुखद नहीं था। मियावाकी ने उसके कुछ समय बाद ही वह ज़मीन खरीद ली। मतलब, वह जगह अच्छी थी; हर कोई उसे देखते ही खरीदना चाहता था। आस-पड़ोस अच्छा था, ज़मीन ऊँची जगह

पर थी और अच्छी धूप आती थी, प्लॉट बड़ा था। लेकिन मियावाकी ने वहाँ रहने वाले लोगों के बारे में बुरी कहानियाँ सुनी थीं, इसलिए उसने नींव समेत सब कुछ तुड़वा दिया और एक नया घर बनवाया। उसने शिंटो पुजारियों को बुलाकर शुद्धिकरण भी करवाया। लेकिन मुझे लगता है कि यह काफी नहीं था। वहाँ रहने वाले किसी भी व्यक्ति के साथ कुछ बुरा होता है। यह बस ज़मीन का एक टुकड़ा है। वे मौजूद हैं, बस इतना ही। अगर वे मुझे यह मुफ्त में भी दें तो भी मैं इसे नहीं लूँगा।”

•

सुपरमार्केट से खरीदारी करने के बाद, मैंने रात के खाने के लिए सामग्री व्यवस्थित की। फिर मैंने कपड़े धोकर अंदर ले जाकर करीने से तह किए और अलमारी में रख दिए। रसोई में वापस आकर मैंने अपने लिए एक बर्तन में कॉफी बनाई। यह एक सुखद, शांत दिन था, किसी का फोन नहीं आया। मैं सोफे पर लेट गई और एक किताब पढ़ने लगी। कोई भी मेरी पढ़ाई में खलल डालने वाला नहीं था। बीच-बीच में, पिछवाड़े में चाबी से चलने वाली चिड़िया की हल्की सी आवाज आती थी। पूरे दिन में मैंने लगभग यही एक आवाज सुनी।
सुबह चार बजे किसी ने दरवाजे की घंटी बजाई। डाकिया था। उसने कहा, "पंजीकृत डाक है," और मुझे एक मोटा लिफाफा थमा दिया। मैंने उसे लिया और रसीद पर अपनी मुहर लगा दी।
यह कोई साधारण लिफाफा नहीं था। यह पुराने ज़माने के मोटे चावल के कागज़ से बना था, और किसी ने बड़ी मेहनत से इस पर मेरा नाम और पता मोटे काले अक्षरों में ब्रश से लिखा था। पीछे भेजने वाले का नाम तोकुतारो मामिया था, और पता हिरोशिमा प्रांत का था। मुझे इन दोनों के बारे में ज़रा भी जानकारी नहीं थी। ब्रश की लिखावट से

समझ सकता हूँ कि आप कितने व्यस्त होंगे, श्री ओकाडा, लेकिन मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ, दिवंगत के एक पुराने साथी के रूप में, जिनके पास स्वयं के कुछ ही वर्ष शेष हैं, कि यदि आप वास्तव में स्वर्गीय श्री होंडा की एक छोटी सी स्मृति के रूप में इस वस्तु को ग्रहण करने की कृपा करें तो मुझे इससे अधिक प्रसन्नता नहीं हो सकती।” पत्र के अंत में टोक्यो में श्री मामिया का पता दिया गया था, जो होंगो 2-चोमे, बंक्यो वार्ड में मामिया नाम के किसी अन्य व्यक्ति के पते पर था। मैंने अनुमान लगाया कि वे किसी रिश्तेदार के घर में होंगे।
मैंने रसोई की मेज पर बैठकर अपना जवाब लिखा। मैंने सोचा था कि पोस्टकार्ड छोटा और सरल होगा, लेकिन कलम हाथ में आते ही वो संक्षिप्त वाक्य नहीं निकल पाए। “मुझे स्वर्गीय श्री होंडा को जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और हमारी संक्षिप्त जान-पहचान से मुझे बहुत लाभ हुआ। उनके निधन की खबर सुनकर उन दिनों की यादें ताजा हो गईं। बेशक, हमारी उम्र में बहुत अंतर था और हमारा साथ केवल एक साल तक ही चला, फिर भी मुझे हमेशा लगता था कि दिवंगत में कुछ ऐसा था जो लोगों को गहराई से प्रभावित करता था। सच कहूँ तो, मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि श्री होंडा मुझे विशेष रूप से स्मृति चिन्ह के रूप में चुनेंगे, और न ही मुझे यकीन है कि मैं उनसे कुछ भी प्राप्त करने के योग्य हूँ, लेकिन अगर यही उनकी इच्छा थी, तो मैं निश्चित रूप से पूरे सम्मान के साथ इसे स्वीकार करूँगा। कृपया यथाशीघ्र मुझसे संपर्क करें।”
जब मैंने कार्ड को पास के मेलबॉक्स में डाला, तो मैंने खुद को श्री होंडा की पुरानी कविता गुनगुनाते हुए पाया: "मरना ही एकमात्र तरीका है / जिससे तुम मुक्त होकर तैर सको: / नोमोनहान।"

•

कुमिको काम से घर आने में करीब दस बज गए थे। उसने छह बजे से पहले फोन करके बताया था कि आज भी उसे देर हो जाएगी, मैं उसके बिना ही खाना खा लूँ और वह बाहर से कुछ ले लेगी। ठीक है, मैंने कहा और सादा खाना खा लिया। मैं फिर से घर पर अकेला बैठा किताब पढ़ रहा था। जब वह अंदर आई, तो कुमिको ने कहा कि उसे थोड़ी बीयर चाहिए। हमने एक मध्यम आकार की बोतल साझा की। वह थकी हुई लग रही थी। रसोई की मेज पर कोहनी टिकाए, उसने अपनी ठुड्डी हाथों में रखी और जब मैंने उससे बात की तो उसने बहुत कम कहा। वह किसी सोच में डूबी हुई लग रही थी। मैंने उसे बताया कि श्री होंडा का निधन हो गया है। "ओह, सच में?" उसने आह भरते हुए कहा। "खैर, उनकी उम्र काफी हो गई थी, और वे लगभग बहरे हो गए थे।" लेकिन जब मैंने कहा कि उन्होंने मेरे लिए एक यादगार चीज़ छोड़ी है, तो वह चौंक गई, मानो आसमान से अचानक कुछ गिर पड़ा हो।
“तुम्हारे लिए?!” उसने भौंहें चढ़ाते हुए हैरानी से कहा। “हाँ। अजीब है ना?”
"उसे तुम जरूर पसंद आई होगी।"
“ऐसा कैसे हो सकता है? मैंने उस आदमी से कभी बात ही नहीं की,” मैंने कहा। “कम से कम मैंने उससे ज्यादा कुछ कहा तो नहीं। और अगर कहा भी होता, तो वो कुछ सुन ही नहीं पाता। हम महीने में एक बार बैठकर उसकी कहानियां सुनते थे। और उससे हमने बस नोमोनहान की लड़ाई के बारे में ही सुना: कैसे उन्होंने मोलोटोव कॉकटेल फेंके, कौन सा टैंक जला और कौन सा नहीं जला, इस तरह की बातें।” “मुझसे मत पूछो,” कुमिको ने कहा। “उसे तुममें कुछ तो पसंद आया होगा। मुझे ऐसे लोग समझ नहीं आते, उनके दिमाग में क्या चल रहा होता है।”

उसके बाद वह फिर चुप हो गई। यह एक तनावपूर्ण चुप्पी थी। मैंने दीवार पर लगे कैलेंडर पर नज़र डाली। अभी उसके मासिक धर्म का समय नहीं आया था। मैंने सोचा कि शायद दफ्तर में कुछ अप्रिय घटना घट गई होगी।
“क्या तुम बहुत ज्यादा मेहनत कर रहे हो?” मैंने पूछा।
“थोड़ा सा,” कुमिको ने बीयर का एक घूंट लेते हुए और अपने गिलास में बची हुई बीयर को घूरते हुए कहा। उसकी आवाज़ में लगभग चुनौती भरा लहजा था। “माफ़ करना मुझे देर हो गई, लेकिन आप जानते ही हैं कि जब हम व्यस्त होते हैं तो पत्रिका के काम में क्या होता है। और ऐसा भी नहीं है कि मैं हमेशा ऐसा करती हूँ। मैं उनसे बाकी लोगों की तुलना में कम ओवरटाइम करवाती हूँ। उन्हें पता है कि घर पर मुझे अपने पति का इंतज़ार करना है।”
मैंने सिर हिलाया। “मैं आपको दोष नहीं दे रही हूँ,” मैंने कहा। “मुझे पता है कि आपको कभी-कभी देर तक काम करना पड़ता है। मुझे बस इस बात की चिंता थी कि आप खुद को थका हुआ महसूस कर रहे हैं।” उसने काफी देर तक स्नान किया। मैंने अपनी बियर पी और एक साप्ताहिक पत्रिका के पन्ने पलटे जो वह घर लाई थी।
मैंने अपना हाथ अपनी पैंट की जेब में डाला और मुझे अपनी हाल ही की छोटी-सी पार्ट-टाइम नौकरी की तनख्वाह मिल गई। मैंने लिफाफे से पैसे निकाले भी नहीं थे। एक और बात जो मैंने नहीं की थी, वो थी कुमिको को उस नौकरी के बारे में बताना। ऐसा नहीं था कि मैं उससे कुछ छिपा रहा था, लेकिन मैंने उस मौके को हाथ से जाने दिया और फिर कभी ऐसा मौका मिला ही नहीं। समय बीतने के साथ, पता नहीं क्यों, मुझे इस विषय पर बात करना मुश्किल लगने लगा। मुझे बस इतना कहना था, "मैं गली के नीचे रहने वाली एक सोलह साल की लड़की से मिला और उसके साथ एक विग बनाने वाले के लिए सर्वे का काम करने

लगा। तनख्वाह भी अच्छी थी।" और कुमिको कह सकती थी, "ओह, सच में? कितनी अच्छी बात है," और बात यहीं खत्म हो जाती। या नहीं भी। वह मे कासाहारा के बारे में और जानना चाहती। उसे शायद इस बात से परेशानी होती कि मैं एक सोलह साल की लड़की से दोस्ती कर रहा हूँ। तब मुझे उसे मे कासाहारा के बारे में बताना पड़ता और विस्तार से समझाना पड़ता कि हम कहाँ, कब और कैसे मिले थे। लेकिन मैं लोगों को चीजों की व्यवस्थित व्याख्या देने में बहुत अच्छा नहीं हूं।
मैंने लिफाफे से पैसे निकाले और अपने बटुए में रख लिए। लिफाफे को मैंने मसलकर कूड़ेदान में फेंक दिया। मैंने मन ही मन सोचा, इस तरह से राज़ बनते हैं। लोग इन्हें धीरे-धीरे गढ़ते हैं। मैंने जानबूझकर मे कासाहारा को कुमिको से छिपाकर रखने का इरादा नहीं किया था। आखिरकार, उसके साथ मेरा रिश्ता इतना बड़ा मुद्दा नहीं था: चाहे मैं इसका ज़िक्र करूं या न करूं, कोई फर्क नहीं पड़ता था। लेकिन एक बार जब यह एक नाजुक रास्ते से बह गया, तो यह रहस्य के आवरण में लिपट गया, चाहे मेरा मूल "इरादा" कुछ भी रहा हो। क्रेता कानो के साथ भी यही हुआ था। मैंने कुमिको को बताया था कि माल्टा कानो की छोटी बहन घर आई थी, उसका नाम क्रेता था, वह साठ के दशक की शैली के कपड़े पहनती थी, और उसने हमारे नल के पानी के नमूने लिए थे। लेकिन मैं इस बात पर चुप रहा कि बाद में उसने मुझे चौंकाने वाले खुलासे करने शुरू कर दिए और बात पूरी होने से पहले ही बिना कुछ कहे गायब हो गई। क्रेता कानो की कहानी कुछ ज़्यादा ही अटपटी थी: मैं उसके सूक्ष्म भावों को हूबहू दोहराकर कुमिको को समझा नहीं सकती थी, इसलिए मैंने कोशिश भी नहीं की। या फिर, कुमिको को शायद यह अच्छा नहीं लगता कि क्रेता कानो अपना काम खत्म होने के बाद भी यहाँ लंबे समय तक रुकी रही और मुझसे

तरह-तरह की परेशान करने वाली निजी बातें कबूल करती रही। और इस तरह यह भी मेरे छोटे-छोटे रहस्यों में से एक बन गया।
शायद कुमिको के पास भी मुझसे कुछ ऐसे ही राज़ थे। मेरे पास भी इतने राज़ थे कि अगर वो ऐसा करती भी तो मैं उसे दोष नहीं दे सकती थी। हम दोनों में से मैं ही ज़्यादा राज़दार थी। वो तो मन की बात कह देती थी। वो सोच-समझकर बोलने वाली इंसान थी। मैं वैसी नहीं थी।
इन विचारों से बेचैन होकर मैं बाथरूम की ओर चल पड़ा। दरवाजा खुला हुआ था। मैं दरवाजे पर खड़ा होकर कुमिको को पीछे से देखने लगा। उसने गहरे नीले रंग का पजामा पहन रखा था और शीशे के सामने खड़ी होकर तौलिए से अपने बाल सुखा रही थी।
“मेरे लिए नौकरी के बारे में,” मैंने कहा। “मैं इस बारे में सोच रहा हूँ। मैंने दोस्तों से मेरे लिए नौकरी ढूंढने को कहा है, और मैंने खुद भी कुछ जगहों पर कोशिश की है। नौकरियां तो हैं, इसलिए मैं जब चाहूँ तब काम कर सकता हूँ। अगर मैं मन बना लूँ तो कल से ही शुरू कर सकता हूँ। मुश्किल तो मन बनाना है। मैं बस पक्का नहीं हूँ। मुझे नहीं पता कि मेरे लिए इस तरह बिना सोचे-समझे नौकरी चुनना ठीक है या नहीं।”
“इसीलिए मैं तुमसे हमेशा कहती हूँ कि जो मन करे वो करो,” उसने आईने में खुद को देखते हुए कहा। “तुम्हें अभी तुरंत नौकरी ढूंढने की ज़रूरत नहीं है। अगर तुम्हें आर्थिक स्थिति की चिंता है, तो चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। अगर बिना नौकरी के रहना तुम्हें बेचैन करता है, अगर घर के बाहर सिर्फ़ मुझे काम करते हुए देखना और घर के सारे काम संभालना तुम्हें बोझ लगता है, तो कुछ समय के लिए कोई भी नौकरी कर लो—कोई भी नौकरी। मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।”

“बेशक, मुझे आखिरकार नौकरी ढूंढनी ही पड़ेगी। मुझे पता है। आपको भी पता है। मैं हमेशा ऐसे ही यूं ही नहीं रह सकता। और मुझे देर-सवेर नौकरी मिल ही जाएगी। बस अभी मुझे समझ नहीं आ रहा कि मुझे किस तरह की नौकरी करनी चाहिए। नौकरी छोड़ने के कुछ समय बाद तक तो मैंने यही सोचा था कि मैं कानून से जुड़ी कोई और नौकरी कर लूंगा। इस क्षेत्र में मेरे कुछ जान-पहचान वाले भी हैं। लेकिन अब मेरा मन नहीं लग रहा। समय बीतने के साथ-साथ कानून में मेरी रुचि कम होती जा रही है। मुझे अब और भी ज्यादा लगने लगा है कि यह मेरे लिए सही काम नहीं है।”
कुमिको ने मुझे आईने में देखा। मैंने आगे कहा:
“लेकिन यह जानना कि मैं क्या नहीं करना चाहता, मुझे यह समझने में मदद नहीं करता कि मैं क्या करना चाहता हूँ। अगर कोई मुझे मजबूर करे तो मैं लगभग कुछ भी कर सकता हूँ। लेकिन मेरे पास उस एक चीज़ की कोई स्पष्ट छवि नहीं है जो मैं वास्तव में करना चाहता हूँ। यही मेरी समस्या है। मुझे वह छवि नहीं मिल रही है।”
“तो फिर,” उसने अपना तौलिया नीचे रखते हुए और मेरी ओर मुड़ते हुए कहा, “अगर आप वकालत से थक चुके हैं, तो इसे छोड़ दीजिए। बार परीक्षा के बारे में भूल जाइए। नौकरी ढूंढने की चिंता मत कीजिए। अगर आपको अपनी छवि नहीं मिल रही है, तो उसके अपने आप बनने का इंतजार कीजिए। इसमें क्या बुराई है?”
मैंने सिर हिलाया। "मैं बस यह सुनिश्चित करना चाहता था कि मैंने आपको ठीक से समझा दिया है कि मुझे कैसा महसूस हो रहा है।" “अच्छा,” उसने कहा।
मैं रसोई में गया और अपना गिलास धोया। वह बाथरूम से आई और रसोई की मेज पर बैठ गई।

“अंदाजा लगाओ आज दोपहर मुझे किसने फोन किया था,” उसने कहा। “मेरे भाई ने।”
"ओह?"
“वह चुनाव लड़ने के बारे में सोच रहा है। वास्तव में, उसने लगभग फैसला कर ही लिया है।”
“चुनाव लड़ रहे हो?!” यह सुनकर मुझे इतना बड़ा झटका लगा कि मैं एक पल के लिए कुछ बोल ही नहीं पाया। “तुम्हारा मतलब… संसद के लिए?”
“जी हां, सही है। वे उनसे निगाटा में मेरे चाचा की सीट से चुनाव लड़ने के लिए कह रहे हैं।”
मुझे लगा था कि आपके चाचा के बेटे के उनके उत्तराधिकारी बनने की सारी तैयारी हो चुकी है। वह डेंटसू में अपने निदेशक पद से इस्तीफा देने वाले थे या कुछ और करके निगाता वापस जाने वाले थे। उसने रुई के फाहे से अपने कान साफ करने शुरू किए। “यही योजना थी, लेकिन मेरे चचेरे भाई को यह मंजूर नहीं है। उनका परिवार टोक्यो में है और उन्हें अपना काम पसंद है। वे दुनिया की सबसे बड़ी विज्ञापन कंपनी में इतने महत्वपूर्ण पद को छोड़कर निगाता के सुनसान इलाके में वापस जाने के लिए तैयार नहीं हैं, सिर्फ संसद सदस्य बनने के लिए। मुख्य विरोध उनकी पत्नी की तरफ से है। वह नहीं चाहतीं कि वे चुनाव लड़ने के लिए परिवार को कुर्बान करें।” कुमिको के पिता के बड़े भाई ने निगाता के उस चुनावी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए निचले सदन में चार या पाँच कार्यकाल बिताए थे। हालाँकि वे कोई बहुत प्रभावशाली नेता नहीं थे, फिर भी उनका रिकॉर्ड काफी अच्छा था और एक समय वे मंत्रिमंडल में एक छोटे पद तक भी पहुँचे थे। लेकिन अब बढ़ती उम्र और हृदय रोग के कारण उनके लिए अगला चुनाव लड़ना असंभव हो गया था, जिसका मतलब था

कि उनके निर्वाचन क्षेत्र से किसी और को उत्तराधिकारी बनना होगा। इस चाचा के दो बेटे थे, लेकिन बड़े बेटे का राजनीति में आने का कोई इरादा नहीं था, इसलिए छोटा बेटा स्वाभाविक पसंद था। “अब जिले के लोग मेरे भाई को चुनाव लड़ते देखना चाहते हैं। वे एक युवा, बुद्धिमान और ऊर्जावान व्यक्ति चाहते हैं। ऐसा व्यक्ति जो कई कार्यकाल तक सेवा कर सके और केंद्र सरकार में एक प्रमुख शक्ति बनने की क्षमता रखता हो। मेरे भाई का नाम जाना- पहचाना है, वह युवा मतदाताओं को आकर्षित करेगा: वह एकदम सही है। यह सच है कि वह स्थानीय लोगों से आसानी से घुलमिल नहीं सकता, लेकिन उसका समर्थन संगठन मजबूत है और वे इसकी भरपाई कर लेंगे। साथ ही, अगर वह टोक्यो में रहना चाहता है, तो कोई समस्या नहीं है। उसे बस चुनाव में उपस्थित होना है।”
मुझे नोबोरू वाटाया को संसद सदस्य के रूप में कल्पना करने में कठिनाई हो रही थी। मैंने पूछा, "आप इस सब के बारे में क्या सोचते हैं?"
"उसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है। मुझे परवाह नहीं कि वह संसद का सदस्य बने या अंतरिक्ष यात्री बने।"
लेकिन उन्होंने सलाह लेने के लिए विशेष रूप से आपके पास आने की क्या आवश्यकता थी?
“बेवकूफी मत करो,” उसने रूखे स्वर में कहा। “वह मुझसे सलाह नहीं मांग रहा था। तुम जानती हो कि वह ऐसा कभी नहीं करेगा। वह तो बस मुझे जानकारी दे रहा था। परिवार के सदस्य के तौर पर।”
मैंने कहा, "मैं समझ गया। फिर भी, अगर वह संसद के लिए चुनाव लड़ने जा रहे हैं, तो क्या यह समस्या नहीं होगी कि उनका तलाक हो चुका है और वह अविवाहित हैं?"

“मुझे हैरानी होती है,” कुमिको ने कहा। “मुझे राजनीति या चुनाव वगैरह के बारे में कुछ नहीं पता। इनमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। लेकिन खैर, मुझे पूरा यकीन है कि वह फिर कभी शादी नहीं करेगा। किसी से भी नहीं। उसे तो शादी करनी ही नहीं चाहिए थी। जीवन में उसकी चाहत ये नहीं है। उसकी चाहत कुछ और है, कुछ ऐसा जो हम या आप नहीं चाहते। मुझे ये बात पक्के तौर पर पता है।”
"सच में?"
कुमिको ने दो इस्तेमाल किए हुए कॉटन स्वैब को टिश्यू में लपेटकर कूड़ेदान में फेंक दिया। फिर उसने अपना चेहरा ऊपर उठाया और सीधे मेरी तरफ देखा। “मैंने एक बार उसे हस्तमैथुन करते हुए देखा था। मैंने दरवाजा खोला, और वह वहीं था।”
“तो क्या हुआ? हर कोई हस्तमैथुन करता है,” मैंने कहा।
“नहीं, तुम नहीं समझ रहे,” उसने कहा। फिर उसने आह भरी। “यह मेरी बहन की मृत्यु के लगभग दो साल बाद हुआ था। वह शायद कॉलेज में था, और मैं लगभग तीसरी कक्षा में पढ़ती थी। मेरी माँ मेरी बहन की चीज़ों को फेंकने और उन्हें संभाल कर रखने के बीच दुविधा में थी, और अंत में उसने उन्हें रखने का फैसला किया, यह सोचकर कि मैं बड़ी होकर उन्हें पहनूँगी। उसने उन्हें अलमारी में एक गत्ते में रख दिया था। मेरे भाई ने उन्हें बाहर निकाला और उन्हें सूंघते हुए वह हरकत की।”
मैं चुप रहा।
“मैं तब बस एक छोटी बच्ची थी। मुझे सेक्स के बारे में कुछ नहीं पता था। मुझे सच में नहीं पता था कि वह क्या कर रहा था, लेकिन मैं समझ सकती थी कि यह कुछ विकृत था, कुछ ऐसा जो मुझे नहीं देखना चाहिए था, कुछ ऐसा जो सतह पर दिखने से कहीं ज़्यादा गहरा था।” कुमिको ने अपना सिर हिलाया।

"क्या नोबोरू वाटाया को पता है कि आपने उसे देखा था?" “बिल्कुल। हमने एक-दूसरे की आंखों में सीधे देखा।”
मैंने सिर हिलाया। “और तुम्हारी बहन के कपड़ों के बारे में क्या?” मैंने पूछा। “जब तुम मोटी हो गई थी, तब क्या तुमने उन्हें पहना था?”
“बिल्कुल नहीं,” उसने कहा।
"तो आपको लगता है कि वह आपकी बहन से प्यार करता था?"
“मुझे आश्चर्य होता है,” कुमिको ने कहा। “मुझे यकीन नहीं है कि उसे उसमें यौन रुचि थी, लेकिन कुछ तो जरूर थी, और मुझे लगता है कि वह उस रुचि से कभी उबर नहीं पाया। मेरा मतलब यही है जब मैं कहती हूं कि उसे शादी ही नहीं करनी चाहिए थी।”
कुमिको चुप हो गई। काफी देर तक हम दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा। फिर उसने बोलना शुरू किया। “इस लिहाज से, मुझे लगता है कि उसे कुछ गंभीर मनोवैज्ञानिक समस्याएं हो सकती हैं। बेशक, हम सभी को कुछ हद तक मनोवैज्ञानिक समस्याएं होती हैं, लेकिन उसकी समस्याएं हम दोनों की समस्याओं से कहीं ज्यादा गंभीर हैं। ये बहुत गहरी और लंबे समय तक बनी रहने वाली हैं। और उसका इन घावों, कमजोरियों या जो भी ये हैं, उन्हें किसी को भी दिखाने का कोई इरादा नहीं है। कभी नहीं। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? ये आने वाले चुनाव: मुझे चिंता हो रही है।”
“क्या इससे आपको चिंता होती है? यह कैसे हो सकता है?”
“मुझे नहीं पता। बस ऐसा ही होता है,” उसने कहा। “खैर, मैं थक गई हूँ। आज मैं और सोच नहीं सकती। चलो सो जाते हैं।”
बाथरूम में ब्रश करते हुए मैंने आईने में अपना चेहरा निहारा। नौकरी छोड़ने के बाद से दो महीने से ज़्यादा समय हो गया था, मैं शायद ही कभी बाहर निकली थी। मैं आस-पड़ोस की दुकानों, वार्ड पूल

और इस घर के बीच ही आती-जाती रही थी। गिन्ज़ा और शिनागावा के उस होटल के अलावा, मैं घर से सबसे दूर स्टेशन के पास वाले सफाईकर्मी के यहाँ तक ही गई थी। और इतने समय में, मैंने शायद ही किसी को देखा था। कुमिको के अलावा, पिछले दो महीनों में मैंने जिन लोगों को "देखा" था, वे थे माल्टा, क्रीता कानो और मे कासाहारा। यह एक छोटी सी दुनिया थी, एक ऐसी दुनिया जो ठहर सी गई थी। लेकिन जैसे-जैसे यह छोटी होती गई और इसमें ठहराव बढ़ता गया, वैसे-वैसे मेरे आस-पास की यह दुनिया अजीबोगरीब चीज़ों और लोगों से भरती हुई प्रतीत होने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे वे हर समय वहीं थे, मेरे रुकने का इंतज़ार कर रहे थे। और हर बार जब चाबी से चलने वाली चिड़िया मेरे आँगन में अपनी स्प्रिंग घुमाने आती, तो दुनिया और भी ज़्यादा अराजकता में डूब जाती।
मैंने अपना मुंह धोया और कुछ देर तक अपने चेहरे को देखती रही। मैंने मन ही मन कहा, मुझे वह तस्वीर नहीं मिल रही है। मैं तीस साल का हूँ, मैं एक ही जगह खड़ा हूँ, और मुझे वह तस्वीर नहीं मिल रही है।
जब मैं बाथरूम से बेडरूम में गया, तो कुमिको सो रही थी।

लेफ्टिनेंट मामिया का प्रवेश होता है

•

गर्म कीचड़ से क्या निकला?

•

इत्र
तीन दिन बाद, तोकुतारो मामिया ने फोन किया। सुबह साढ़े सात बजे। उस समय मैं कुमिको के साथ नाश्ता कर रहा था।
"मुझे बहुत खेद है कि मैं आपको इतनी सुबह फोन कर रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि मैंने आपको जगाया नहीं होगा," श्री मामिया ने सचमुच माफी मांगते हुए कहा।
मैंने उसे आश्वस्त किया कि सब ठीक है: मैं हर सुबह छह बजे के कुछ ही समय बाद उठ जाता हूँ।
उन्होंने मेरे पोस्टकार्ड के लिए धन्यवाद दिया और बताया कि वे आज सुबह काम पर जाने से पहले मुझसे मिलना चाहते थे। उन्होंने यह भी कहा कि अगर मैं आज दोपहर के भोजन के दौरान उनसे थोड़ी देर के लिए मिल सकूँ तो उन्हें बहुत खुशी होगी। वे शाम को बुलेट ट्रेन से हिरोशिमा वापस जाने की सोच रहे थे। उन्होंने बताया कि उन्होंने यहाँ और समय बिताने की योजना बनाई थी, लेकिन कुछ ऐसा हो गया जिसके कारण उन्हें जल्द से जल्द घर लौटना पड़ा।
मैंने बताया कि मैं फिलहाल बेरोजगार हूं, मैं पूरे दिन खाली हूं, और मैं उनसे उनकी सुविधानुसार मिल सकता हूं, चाहे सुबह हो, दोपहर हो, शाम हो या कोई भी समय हो।
"लेकिन दिन में किसी न किसी समय तो आपने कुछ न कुछ योजना जरूर बनाई होगी?" उन्होंने अत्यंत विनम्रता से पूछा।
मैंने जवाब दिया, मेरे पास कोई योजना नहीं थी।

“ऐसी स्थिति में, क्या मुझे आज सुबह दस बजे आपके निवास पर आने की अनुमति मिल सकती है?”
"यह ठीक रहेगा।"
फोन रखने के बाद ही मुझे याद आया कि मैं उसे स्टेशन से हमारे घर का रास्ता बताना भूल गई थी। चलो कोई बात नहीं, मैंने सोचा, उसे पता तो है ही; अगर वो चाहे तो खुद ही यहाँ आ सकता है।
“वह कौन था?” कुमिको ने पूछा।
“जो व्यक्ति श्री होंडा की स्मृति चिन्हों को बांट रहा है, वह आज सुबह बाद में मेरा चिन्ह भी यहां लेकर आएगा।”
“सच में?” उसने कॉफी की एक घूंट ली और टोस्ट पर मक्खन लगाया। “यह तो उसकी बहुत अच्छी बात है।”
"यकीन है।"
“वैसे,” उसने कहा, “क्या हमें—या कम से कम आपको—श्री होंडा के घर जाकर श्रद्धांजलि अर्पित नहीं करनी चाहिए: अगरबत्ती जलाकर, इस तरह की कोई चीज़?”
“अच्छा विचार है। मैं उससे इस बारे में पूछूंगा।”
घर से निकलने की तैयारी करते हुए कुमिको ने मुझसे अपनी ड्रेस की ज़िप बंद करने को कहा। ड्रेस उसे बहुत टाइट थी, और ज़िप बंद करने में उसे थोड़ी मशक्कत करनी पड़ी। उसने अपने कानों के पीछे एक मनमोहक परफ्यूम लगाया हुआ था—गर्मियों की सुबह के लिए एकदम सही। "नया परफ्यूम लगाया है?" मैंने पूछा। जवाब देने के बजाय, उसने अपनी घड़ी देखी और अपने बालों को ठीक करने के लिए हाथ ऊपर किया।
"मुझे देर हो रही है," उसने कहा और मेज से अपना हैंडबैग उठा लिया।

•

मैंने कुमिको के काम करने वाले छोटे से कमरे को साफ किया और कूड़ेदान खाली कर रही थी कि तभी मेरी नज़र एक पीले रिबन पर पड़ी जिसे उसने फेंक दिया था। यह एक मुड़े हुए कागज़ और कुछ चिट्ठियों के नीचे से झाँक रहा था। इसका चमकीला पीला रंग ही मेरी नज़र में आया। यह उपहार लपेटने वाला रिबन था, जिसका धनुष फूल के आकार में बंधा होता है। मैंने इसे कूड़ेदान से उठाया और देखा। रिबन को मत्सुया डिपार्टमेंट स्टोर के कुछ रैपिंग पेपर के साथ फेंक दिया गया था। पेपर के नीचे क्रिश्चियन डायोर लेबल वाला एक डिब्बा था। डिब्बे के अंदर की परत बोतल के आकार की थी। डिब्बे को देखकर लग रहा था कि यह काफी महंगा सामान रहा होगा। मैं इसे अपने साथ बाथरूम में ले गई और कुमिको की कॉस्मेटिक्स अलमारी खोली। अंदर क्रिश्चियन डायोर इत्र की लगभग नई बोतल थी, जो डिब्बे के खोखले हिस्से के आकार की थी। मैंने बोतल का सुनहरे रंग का ढक्कन खोला और सूंघा। यह वही खुशबू थी जो मैंने कुमिको के कानों के पीछे से सूंघी थी।
मैं सोफे पर बैठी, अपनी सुबह की बची हुई कॉफी पी रही थी और अपने विचारों को इकट्ठा कर रही थी। जाहिर है किसी ने कुमिको को तोहफा दिया था। एक महंगा तोहफा। मात्सुया डिपार्टमेंट स्टोर से खरीदा गया था और उस पर रिबन बांधा गया था। अगर यह तोहफा देने वाला कोई पुरुष था, तो वह कुमिको का कोई करीबी रहा होगा। पुरुष महिलाओं (खासकर विवाहित महिलाओं) को इत्र नहीं देते, जब तक कि उनका रिश्ता बहुत करीबी न हो। अगर किसी महिला मित्र ने उसे दिया हो... लेकिन क्या महिलाएं दूसरी महिलाओं को इत्र देती हैं? मैं निश्चित नहीं थी। हालांकि, एक बात तो पक्की थी कि कुमिको को साल के इस समय में दूसरों से तोहफे मिलने का कोई खास कारण नहीं था। उसका जन्मदिन मई में था। हमारी शादी की सालगिरह भी उसी महीने

थी। हो सकता है उसने अपने लिए इत्र की एक बोतल खरीदी हो और उस पर सुंदर रिबन बांधा हो। लेकिन क्यों?
मैंने आह भरी और छत की ओर देखा।
क्या मुझे उससे सीधे इसके बारे में पूछना चाहिए? “क्या किसी ने तुम्हें यह परफ्यूम दिया है?” वह शायद जवाब दे: “ओह, वह। काम पर एक लड़की को कोई निजी समस्या थी जिसमें मैंने उसकी मदद की। पूरी कहानी नहीं है, लेकिन वह मुश्किल में थी, इसलिए मैंने उसकी मदद की। यह धन्यवाद का तोहफा है। खुशबू बहुत अच्छी है, है ना? यह महंगा परफ्यूम है!”
ठीक है, बात समझ में आ गई। बस, बात खत्म। अब सवाल पूछने की जरूरत नहीं। चिंता करने की भी जरूरत नहीं।
लेकिन मुझे चिंता हो रही थी। उसे इसके बारे में मुझसे कुछ कहना चाहिए था। अगर उसके पास अपने कमरे में जाकर रिबन खोलने, रैपिंग पेपर फाड़ने, डिब्बा खोलने, तीनों चीज़ें कूड़ेदान में फेंकने और बोतल को अपने कॉस्मेटिक्स कैबिनेट में रखने का समय था, तो वह मेरे पास आकर कह सकती थी, "देखो, मुझे ऑफिस की एक लड़की से यह तोहफा मिला है।" लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। शायद उसने सोचा होगा कि इसका ज़िक्र करना ज़रूरी नहीं है। लेकिन अब, यह बात राज़ की पतली सी चादर में लिपट गई थी। यही बात मुझे परेशान कर रही थी। मैं काफी देर तक छत को देखता रहा। मैंने कुछ और सोचने की कोशिश की, लेकिन मेरा मन साथ नहीं दे रहा था। कुमिको के कपड़े की ज़िप बंद करते समय भी मेरे दिमाग में वही ख्याल घूम रहा था: उसकी चिकनी सफेद पीठ, उसके कानों के पीछे की खुशबू। महीनों बाद पहली बार मुझे सिगरेट पीने की इच्छा हुई। मैं सिगरेट मुंह में डालकर, उसकी नोक जलाकर, धुआं फेफड़ों में खींचना चाहता था। इससे मुझे

थोड़ी शांति मिल जाती। लेकिन मेरे पास सिगरेट नहीं थी। मैंने एक लेमन कैंडी ढूंढी और उसे चूस लिया।
ठीक दस बजने से दस मिनट पहले फोन की घंटी बजी। मैंने सोचा कि लेफ्टिनेंट मामिया का फोन होगा। इस घर को ढूंढना आसान नहीं था। यहां तक कि जो लोग कई बार आ चुके थे, वे भी कभी-कभी रास्ता भटक जाते थे। लेकिन फोन लेफ्टिनेंट मामिया का नहीं था। रिसीवर से जो आवाज आ रही थी, वह उसी रहस्यमयी महिला की थी जिसने मुझे कुछ दिन पहले फोन किया था।
“हाय, हनी, काफी समय हो गया,” उसने कहा। “पिछली बार कैसा लगा? क्या मैंने तुम्हें थोड़ा उत्तेजित किया? तुमने फोन क्यों काट दिया? और वो भी तब जब बातें दिलचस्प होने लगी थीं!”
एक पल के लिए मुझे लगा कि वह मेरे हाल ही में देखे गए क्रेता कानो के स्वप्न के बारे में बात कर रही है। लेकिन वह कुछ और ही था। वह उस दिन की बात कर रही थी जब उसने मुझे फोन किया था, उस समय मैं स्पेगेटी बना रहा था।
मैंने कहा, "माफ़ कीजिए, लेकिन मैं अभी काफ़ी व्यस्त हूँ। दस मिनट में एक मेहमान आने वाला है, और मुझे जगह को तैयार करना है।" “बेरोजगार होने के बावजूद आप बहुत व्यस्त हैं,” उसने व्यंग्य भरे लहजे में कहा। पिछली बार भी यही हुआ था: उसकी आवाज़ का लहजा पल भर में बदल गया था। “आप स्पेगेटी बना रहे हैं, आपके घर कोई मेहमान आने वाला है। लेकिन कोई बात नहीं। हमें बस दस मिनट चाहिए। चलिए दस मिनट बात करते हैं, सिर्फ आप और मैं। मेहमान के आने पर आप फोन रख सकते हैं।”
मैं बिना कुछ कहे फोन रखना चाहता था, लेकिन ऐसा नहीं कर सका। शायद मैं कुमिको के परफ्यूम को लेकर अब भी परेशान था। शायद मुझे

किसी से बात करने का मन कर रहा था, और इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता था कि किससे।
मैंने कहा, “देखो, मुझे पता नहीं तुम कौन हो।” मैंने फोन के बगल में पड़ी पेंसिल उठाई और बोलते हुए उसे अपनी उंगलियों में घुमाया। “क्या तुम्हें यकीन है कि मैं तुम्हें जानता हूँ?” “बेशक तुम जानते हो। मैंने तुम्हें पिछली बार भी बताया था। मैं तुम्हें जानता हूँ और तुम मुझे जानते हो। मैं ऐसी बात पर झूठ नहीं बोलूँगा। मेरे पास अनजान लोगों को फोन करने का समय नहीं है। तुम्हारी याददाश्त में कोई कमी ज़रूर है।”
मुझे इसके बारे में पता नहीं है। सच में, वैसे—”
“बस करो,” उसने मुझे बीच में ही रोकते हुए कहा। “इतना सोचना बंद करो। तुम मुझे जानते हो और मैं तुम्हें जानती हूँ। ज़रूरी बात ये है—अच्छा, इसे ऐसे समझो: मैं तुम्हारे साथ बहुत अच्छा व्यवहार करूँगी। लेकिन तुम्हें कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। है ना कमाल की बात? तुम्हें कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है, तुम्हारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है, और मैं सब कुछ करती हूँ। सब कुछ। क्या तुम्हें ये बढ़िया नहीं लगता? तो इतना सोचना बंद करो। हर चीज़ को इतना जटिल बनाना बंद करो। अपने आप को खाली कर लो। कल्पना करो कि तुम बसंत की सुहावनी दोपहर में किसी मुलायम, चिकनी मिट्टी पर लेटे हो।”
मैं चुप रहा।
“आप सो रहे हैं। आप सपना देख रहे हैं। आप नरम, गर्म मिट्टी में लेटे हैं। अपनी पत्नी के बारे में भूल जाइए। अपनी बेरोज़गारी के बारे में भूल जाइए। भविष्य के बारे में भूल जाइए। सब कुछ भूल जाइए। हम सब गर्म मिट्टी से बाहर आते हैं, और हम सब वापस उसी में चले जाते हैं। अंत में—ओह, वैसे, श्री ओकाडा, आपने अपनी पत्नी

के साथ आखिरी बार यौन संबंध कब बनाए थे? क्या आपको याद है? काफी समय पहले, है ना? जी हाँ, लगभग दो हफ्ते पहले।”
मैंने कहा, "माफ़ कीजिए, मेरा मेहमान यहाँ है।"
“दो सप्ताह से ज़्यादा हो गए, है ना? तुम्हारी आवाज़ से पता चल गया। शायद तीन सप्ताह?”
मेंने कुछ नहीं कहा।
“खैर, छोड़ो,” उसने कहा, उसकी आवाज़ किसी छोटी झाड़ू जैसी थी जो वेनिस के पर्दे की पट्टियों पर जमी धूल को साफ कर रही हो। “ये बात आप और आपकी पत्नी के बीच की है। लेकिन मैं आपको वो सब कुछ दूंगी जो आप चाहते हैं। और आप, श्री ओकाडा, आपको बदले में कोई ज़िम्मेदारी नहीं निभानी है। बस कोने से मुड़िए, और आपको वो दुनिया मिल जाएगी जो आपने पहले कभी नहीं देखी। मैंने आपको बताया था ना कि आप कुछ देख नहीं पाते? फिर भी आपको समझ नहीं आया।”
रिसीवर को कसकर पकड़े हुए, मैंने अपनी चुप्पी बनाए रखी। “आस-पास देखो,” उसने कहा। “अपने चारों ओर देखो और मुझे बताओ कि वहाँ क्या है। तुम्हें क्या दिखाई देता है?”
तभी दरवाजे की घंटी बजी। राहत महसूस करते हुए मैंने बिना कुछ कहे फोन काट दिया।

•

लेफ्टिनेंट मामिया एक असाधारण कद-काठी के गंजे बुजुर्ग सज्जन थे, जो सोने के फ्रेम वाला चश्मा पहनते थे। उनका रंग सांवला और स्वस्थ था, मानो उन्होंने खूब शारीरिक श्रम किया हो, और शरीर पर जरा भी चर्बी नहीं थी। उनकी दोनों आंखों के कोनों पर तीन गहरी झुर्रियां बिल्कुल समरूप थीं, मानो तेज रोशनी के कारण वे आंखें सिकोड़ने वाले हों। उनकी उम्र का अंदाजा लगाना मुश्किल था,

"मुझे क्षमा करें, लेकिन मुझे आश्चर्य है कि आपकी आयु कितनी होगी, श्री ओकाडा?"
मैंने कहा, "मैं तीस साल का हूँ।"
उन्होंने सिर हिलाया। फिर उन्होंने चाय की एक घूंट ली। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मेरे तीस साल के होने का उनके लिए क्या मतलब था।
"आप जिस घर में रहते हैं वह कितना अच्छा और शांत है," उसने विषय बदलने के इरादे से कहा।
मैंने उसे बताया कि मैं अपने चाचा से इतने कम किराए पर यह घर कैसे ले आई। मैंने आगे कहा कि हमारी आमदनी से तो हम आधे आकार के घर में भी नहीं रह सकते। उसने सिर हिलाया और हिचकिचाते हुए इधर-उधर नज़रें घुमाईं। मैंने भी उसका अनुसरण किया और ऐसा ही किया। "अपने चारों ओर देखो," उस महिला की आवाज़ ने मुझे आदेश दिया था। अपने आस-पास के वातावरण पर इस नई सचेत नज़र से देखते हुए, मैंने वहाँ व्याप्त वातावरण में एक अजीब सी ठंडक महसूस की।
“इस यात्रा के दौरान मैं कुल मिलाकर दो सप्ताह से टोक्यो में हूँ,” लेफ्टिनेंट मामिया ने कहा, “और आप वह आखिरी व्यक्ति हैं जिन्हें मैं स्मृति चिन्ह दे रहा हूँ। अब मुझे लगता है कि मैं हिरोशिमा वापस जा सकता हूँ।”
मैंने कहा, "मुझे उम्मीद थी कि मैं श्री होंडा के घर जा सकूंगा और शायद उनकी याद में एक अगरबत्ती जला सकूंगा।"
“यह एक बेहद सराहनीय इरादा है, लेकिन श्री होंडा का घर—और अब उनकी कब्र—होक्काइडो के असाहिकावा में है। परिवार असाहिकावा से उनके मेगुरो स्थित घर में छोड़ी गई चीजों को संभालने आया था, और अब वे वापस चले गए हैं। वहां कुछ भी नहीं बचा है।”

“मैं समझ गया,” मैंने कहा। “तो श्री होंडा टोक्यो में अकेले रह रहे थे, अपने परिवार से दूर।”
“यह सही है। असाहिकावा में रहने वाले बड़े बेटे को अपने बूढ़े पिता को बड़े शहर में अकेले छोड़कर जाने की चिंता थी, और वह जानता था कि यह स्थिति अच्छी नहीं लग रही थी। जाहिर तौर पर, उसने अपने पिता को अपने साथ रहने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन श्री होंडा ने साफ इनकार कर दिया।”
“क्या उनका कोई बेटा था?” मैंने थोड़ा आश्चर्यचकित होकर पूछा। मैंने हमेशा श्री होंडा को दुनिया में बिल्कुल अकेला ही समझा था। “तो मुझे लगता है कि श्री होंडा की पत्नी का कुछ समय पहले देहांत हो गया होगा।”
“खैर, यह तो काफी जटिल कहानी है। श्रीमती होंडा ने युद्ध के बाद एक अन्य पुरुष के साथ प्रेम-संबंधी आत्महत्या कर ली थी। मेरा मानना है कि यह घटना 1950 या 1951 में घटी थी। उस घटना के बारे में मुझे ज्यादा जानकारी नहीं है। श्री होंडा ने भी इसके बारे में कभी ज्यादा कुछ नहीं कहा, और जाहिर है कि मैं उनसे पूछने की स्थिति में भी नहीं था।”
मेंने सिर हिलाया।
उसके बाद, श्री होंडा ने अपने बच्चों - एक बेटे और एक बेटी - का पालन-पोषण अकेले किया। जब वे आत्मनिर्भर हो गए, तो वे अकेले ही टोक्यो चले गए और एक ज्योतिषी के रूप में अपना काम शुरू किया, और इसी रूप में आप उन्हें जानते थे।
“उन्होंने असाहिकावा में किस तरह का काम किया?”
वह अपने भाई के साथ प्रिंटिंग के व्यवसाय में साझेदार थे। मैंने श्री होंडा को प्रिंटिंग प्रेस के सामने ओवरऑल पहने, प्रूफ चेक करते हुए कल्पना करने की कोशिश की, लेकिन मेरे लिए

श्री होंडा एक थोड़े से मैले-कुचले बूढ़े व्यक्ति थे, जो एक मैले-कुचले पुराने किमोनो में थे, जिसकी कमरबंद सोने के वस्त्र के लिए अधिक उपयुक्त थी, जो सर्दी और गर्मी में, अपने पैर धंसे हुए चूल्हे में रखकर, अपनी नीची मेज पर रखी अपनी जादुई छड़ियों से खेलते रहते थे।
लेफ्टिनेंट मामिया ने बड़ी कुशलता से अपने सही हाथ से अपने साथ लाए कपड़े के बंडल को खोला। एक पैकेट निकला, जो मिठाई के छोटे डिब्बे जैसा दिखता था। यह क्राफ्ट पेपर में लिपटा हुआ था और कई डोरियों से कसकर बंधा हुआ था। लेफ्टिनेंट ने इसे मेज पर रखा और मेरी ओर सरका दिया।
उन्होंने कहा, "यह वह स्मृति चिन्ह है जो श्री होंडा ने मुझे आपको देने के लिए दिया था।"
मैंने उसे उठाया। उसका वज़न न के बराबर था। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उसके अंदर क्या होगा।
मैंने पूछा, "क्या मैं इसे खोल दूं?"
लेफ्टिनेंट मामिया ने सिर हिलाया। "मुझे खेद है, लेकिन श्री होंडा ने संकेत दिया था कि वह चाहते हैं कि आप इसे तब खोलें जब आप अकेले हों।"
मैंने सिर हिलाया और पैकेट को वापस मेज पर रख दिया।
“दरअसल,” लेफ्टिनेंट मामिया ने कहा, “मुझे श्री होंडा का पत्र उनकी मृत्यु से ठीक एक दिन पहले मिला था। उसमें कुछ इस तरह लिखा था: ‘मैं बहुत जल्द मरने वाला हूँ। मुझे मृत्यु से ज़रा भी डर नहीं है। यह जीवन काल स्वर्ग की इच्छा से मुझे मिला है। स्वर्ग की इच्छा के आगे तो बस समर्पण ही किया जा सकता है। लेकिन एक काम है जो मैंने अधूरा छोड़ दिया है। मेरी अलमारी में कई वस्तुएँ हैं—ऐसी चीज़ें जो मैं कुछ खास लोगों को देना चाहता था। अब

लगता है कि मैं यह काम पूरा नहीं कर पाऊँगा। इसलिए मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा यदि आप संलग्न सूची में दी गई यादगार वस्तुओं को बाँटने में मेरी मदद करें। मुझे पता है कि यह कितना बड़ा अनुरोध है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप इसे मेरी अंतिम इच्छा समझकर मेरे लिए एक आखिरी बार प्रयास करेंगे।’ मुझे कहना पड़ेगा, श्री होंडा से ऐसा पत्र पाकर मैं पूरी तरह से स्तब्ध रह गया था। उनसे मेरा वर्षों से कोई संपर्क नहीं था—शायद छह या सात साल से। मैंने तुरंत उन्हें जवाब लिखा, लेकिन मेरा जवाब डाक में उनके बेटे के उस सूचना के साथ मिल गया जिसमें श्री होंडा के निधन की खबर थी।
उसने अपनी ग्रीन टी की एक घूंट ली।
“श्री होंडा को ठीक-ठीक पता था कि उनकी मृत्यु कब होगी,” लेफ्टिनेंट मामिया ने आगे कहा। “उन्होंने ऐसी मानसिक स्थिति प्राप्त कर ली होगी जो मुझ जैसे व्यक्ति के लिए कभी संभव नहीं है। जैसा कि आपने अपने पोस्टकार्ड में लिखा है, उनमें कुछ ऐसा था जो लोगों को गहराई से प्रभावित करता था। मैंने यह बात उनसे पहली बार मिलने के समय से ही महसूस की थी, जो 1938 की गर्मियों में हुआ था।”
"ओह, क्या आप नोमोनहान घटना के समय श्री होंडा के साथ एक ही यूनिट में थे?"
“नहीं, मैं नहीं था,” लेफ्टिनेंट मामिया ने अपने होंठ काटते हुए कहा। “हम अलग-अलग यूनिटों में थे—यहाँ तक कि अलग-अलग डिवीजनों में भी। हमने नोमोनहान की लड़ाई से पहले एक छोटे सैन्य अभियान में साथ काम किया था। कॉर्पोरल होंडा बाद में नोमोनहान में घायल हो गए और उन्हें जापान वापस भेज दिया गया। मैं नोमोनहान नहीं गया। मैंने अपना यह हाथ खो दिया”—और यहाँ लेफ्टिनेंट

मामिया ने अपना दस्ताने पहना हुआ बायाँ हाथ ऊपर उठाया—“अगस्त 1945 में सोवियत सेना के आक्रमण के दौरान, जिस महीने युद्ध समाप्त हुआ। एक टैंक यूनिट के खिलाफ लड़ाई के दौरान एक भारी मशीन गन की गोली मेरे कंधे में लगी। मैं जमीन पर बेहोश पड़ा था, जब एक सोवियत टैंक मेरे हाथ के ऊपर से गुजर गया। मुझे बंदी बना लिया गया, चीता के एक अस्पताल में मेरा इलाज हुआ और साइबेरिया के एक नजरबंदी शिविर में भेज दिया गया। उन्होंने मुझे 1949 तक वहीं रखा। 1937 में जब मुझे भेजा गया था, तब से मैं कुल मिलाकर बारह साल तक महाद्वीप पर रहा, इस पूरे समय में मैंने कभी जापानी धरती पर कदम नहीं रखा। मेरे परिवार को लगा कि मैं सोवियत सेना से लड़ते हुए मारा गया हूँ। उन्होंने गाँव के कब्रिस्तान में मेरे लिए एक कब्र बनाई। वहाँ से जाने से पहले मेरा एक लड़की से कुछ संबंध बन गया था। मैं जापान गई थी, लेकिन जब मैं वापस लौटी तब तक उसकी शादी किसी और से हो चुकी थी। बारह साल बहुत लंबा समय होता है।
मेंने सिर हिलाया।
“माफ़ कीजिए, श्रीमान ओकाडा,” उन्होंने कहा। “पुराने दिनों की ये बातें आप जैसे नौजवान को ज़रूर उबाऊ लगेंगी। लेकिन मैं एक बात और जोड़ना चाहूँगा। वो ये है कि हम भी आप जैसे ही आम नौजवान थे। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं सैनिक बनूँगा। मैं तो शिक्षक बनना चाहता था। लेकिन कॉलेज छोड़ते ही मुझे भर्ती का नोटिस मिल गया, मुझे अधिकारी प्रशिक्षण में डाल दिया गया और मैं बारह साल तक महाद्वीप पर रहा। मेरी ज़िंदगी एक सपने की तरह गुज़र गई।” लेफ्टिनेंट मामिया ने अपना मुँह कसकर बंद कर लिया। कुछ समय बीतने के बाद मैंने कहा, "अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं यह जानना चाहूंगा कि आप और श्री होंडा एक दूसरे को कैसे

जानते थे।" मैं सचमुच यह जानना चाहता था कि मुझसे मिलने से पहले श्री होंडा किस तरह के इंसान थे।
लेफ्टिनेंट मामिया अपने घुटनों पर हाथ रखे, कुछ सोच रहे थे। ऐसा नहीं था कि उन्हें पता नहीं था कि उन्हें क्या करना चाहिए। वे बस सोच रहे थे।
उन्होंने कहा, "वह कहानी लंबी हो सकती है।"
मैंने कहा, "मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"
“मैंने यह बात किसी को नहीं बताई। और मुझे पूरा यकीन है कि श्री होंडा ने भी इसे किसी को नहीं बताया होगा। इसका कारण यह है कि हमने… इस एक बात को गुप्त रखने का वादा किया था। लेकिन अब श्री होंडा इस दुनिया में नहीं हैं। मैं ही अकेला बचा हूँ। अगर मैं बता दूँ तो किसी को कोई नुकसान नहीं होगा।”
और फिर लेफ्टिनेंट मामिया ने मुझे अपनी कहानी सुनाना शुरू किया।

12

लेफ्टिनेंट मामिया की लंबी कहानी: भाग 1

•

लेफ्टिनेंट मामिया ने बताया, "मुझे 1937 की शुरुआत में मंचूरिया भेजा गया था। मैं तब एक नया-नया सेकंड लेफ्टिनेंट था, और मुझे ह्सिन-चिंग में क्वांगतुंग सेना के जनरल स्टाफ में तैनात किया गया था। कॉलेज में मेरा मुख्य विषय भूगोल था, इसलिए मैं सैन्य सर्वेक्षण कोर में शामिल हो गया, जो मानचित्र बनाने में माहिर थी। यह मेरे लिए एकदम सही था क्योंकि, सच कहूँ तो, मुझे जो काम सौंपे गए थे, वे सेना में किसी के लिए भी सबसे आसान कामों में से थे।"
इसके अलावा, मंचूरिया में हालात अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण—या कम से कम स्थिर—थे। चीन घटना के हालिया प्रकोप ने सैन्य अभियानों का केंद्र मंचूरिया से चीन में स्थानांतरित कर दिया था। अब चीन अभियान बल ही वास्तविक लड़ाई लड़ रहे थे, जबकि क्वांगतुंग सेना को कोई परेशानी नहीं थी। यह सच है कि जापानी विरोधी गुरिल्ला इकाइयों के खिलाफ सफाई अभियान अभी भी चल रहे थे, लेकिन वे केवल आंतरिक क्षेत्रों तक ही सीमित थे, और कुल मिलाकर सबसे बुरा दौर बीत चुका था। शक्तिशाली क्वांगतुंग सेना को बस इतना करना था कि वह हमारे नव-स्वतंत्र कठपुतली राज्य मंचुकुओ की निगरानी करे और साथ ही उत्तर पर भी नजर रखे।
हालात चाहे जितने शांतिपूर्ण क्यों न दिखें, आखिर युद्ध तो था ही, इसलिए लगातार सैन्य अभ्यास होते रहते थे। सौभाग्य से मुझे उनमें भाग नहीं लेना पड़ा। ये अभ्यास बेहद कठिन परिस्थितियों में होते थे। तापमान शून्य से चालीस या पचास डिग्री नीचे तक गिर जाता था। ऐसे अभ्यासों में एक भी गलत कदम मौत के मुंह में जा सकता था। हर बार जब ऐसे अभ्यास होते थे, तो सैकड़ों सैनिक ठंड से

जम कर अस्पताल में भर्ती होते थे या इलाज के लिए गर्म पानी के झरने पर भेजे जाते थे। ह्सिन-चिंग कोई बड़ा शहर नहीं था, लेकिन यह निश्चित रूप से एक अनोखी विदेशी जगह थी, और अगर आप वहां मौज-मस्ती करना चाहते थे, तो इसके भरपूर अवसर थे। मेरे जैसे नए अविवाहित अधिकारी बैरकों के बजाय एक तरह के किराए के कमरे में साथ रहते थे। यह छात्र जीवन का ही एक विस्तार जैसा था। मैंने इसे सहजता से लिया, यह सोचकर कि अगर मेरी सैन्य सेवा इसी तरह, एक के बाद एक शांतिपूर्ण दिनों के साथ समाप्त हो जाए, तो मुझे शिकायत करने के लिए कुछ नहीं होगा।
यह बेशक एक दिखावटी शांति थी। हमारी छोटी सी खुशहाली के दायरे से कुछ ही दूर, एक भयंकर युद्ध चल रहा था। ज़्यादातर जापानी यह समझते थे कि चीन के साथ युद्ध एक ऐसे दलदल में बदल जाएगा जिससे हम कभी बाहर नहीं निकल पाएंगे, मेरा मानना है—या कम से कम हर समझदार जापानी यह बात समझता था। हमने चाहे कितनी भी स्थानीय लड़ाइयाँ जीती हों, जापान के लिए इतने बड़े देश पर कब्ज़ा करना और शासन करना नामुमकिन था। ज़रा सोचिए, यह बात साफ़ थी। और सच में, जैसे-जैसे लड़ाई जारी रही, मृतकों और घायलों की संख्या बढ़ती गई। अमेरिका के साथ संबंध बद से बदतर होते चले गए। यहाँ तक कि अपने देश में भी, युद्ध का साया हर गुज़रते दिन के साथ गहराता जा रहा था। वे वाकई काले साल थे: 1937, 1938। लेकिन ह्सिन-चिंग में एक अधिकारी की आरामदेह ज़िंदगी जीते हुए, मन करता था, "युद्ध? कैसा युद्ध?" हम हर रात बाहर जाकर शराब पीते और मौज-मस्ती करते थे, और उन कैफ़े में जाते थे जहाँ व्हाइट रशियन लड़कियाँ होती थीं।
फिर, अप्रैल 1938 के अंत में एक दिन, जनरल स्टाफ के एक वरिष्ठ अधिकारी ने मुझे बुलाया और सादे कपड़ों में यामामोतो नाम के एक

कमीशन अधिकारी का पद हासिल किया था, और उसने चीन में युद्ध में अपनी बहादुरी का परिचय दिया था। वह लंबा-चौड़ा और निडर था, और मुझे पूरा विश्वास था कि हम संकट की घड़ी में उस पर भरोसा कर सकते हैं। कॉर्पोरल होंडा को भी हमारे दल में क्यों शामिल किया गया था, यह मेरी समझ से परे था। मेरी तरह, वह भी अभी-अभी घर से आया था, और ज़ाहिर है, उसे भी युद्ध का कोई अनुभव नहीं था। वह एक शांत, सौम्य स्वभाव का व्यक्ति था, जिसे देखकर लगता था कि वह लड़ाई में बिल्कुल भी मददगार नहीं होगा। इतना ही नहीं, वह सातवीं डिवीजन से संबंधित था, जिसका अर्थ यह था कि जनरल स्टाफ ने उसे विशेष रूप से इस कार्य के लिए हमारे पास भेजने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। वह इतना मूल्यवान सैनिक था, हालांकि इसका कारण काफी समय बाद ही स्पष्ट हुआ।
मुझे एस्कॉर्ट का कमांडिंग ऑफिसर चुना गया था क्योंकि मेरी प्राथमिक ज़िम्मेदारी खालखा नदी क्षेत्र में मंचुकुओ की पश्चिमी सीमा की स्थलाकृति का अध्ययन करना था। मेरा काम यह सुनिश्चित करना था कि जिले के हमारे नक्शे यथासंभव पूर्ण हों। मैं विमान से कई बार उस क्षेत्र का भ्रमण भी कर चुका था। मेरी उपस्थिति मिशन को सुचारू रूप से चलाने में सहायक थी। मेरा दूसरा कार्य जिले के बारे में अधिक विस्तृत स्थलाकृतिक जानकारी एकत्र करना था, जिससे हमारे नक्शों की सटीकता बढ़ सके। मानो एक तीर से दो निशाने। सच कहूँ तो, उन दिनों हमारे पास बाहरी मंगोलिया के साथ हुलुनबुइर स्टेपी सीमा क्षेत्र के जो नक्शे थे, वे बहुत ही कच्चे थे—पुराने मंचू राजवंश के नक्शों से शायद ही कोई सुधार था। मंचुकुओ की स्थापना के बाद क्वांगतुंग सेना ने कई सर्वेक्षण किए थे। वे अधिक सटीक नक्शे बनाना चाहते थे, लेकिन उन्हें जिस क्षेत्र को कवर करना था वह विशाल था, और

के लिए ऐसे नक्शों की ज़रूरत होती है जो आपको शिविर कहाँ लगाने हैं, तोपखाना कहाँ तैनात करना सबसे कारगर होगा, पैदल सेना को वहाँ तक पहुँचने में कितने दिन लगेंगे, पानी कहाँ से मिलेगा, घोड़ों के लिए कितना चारा चाहिए: यानी ढेर सारी विस्तृत जानकारी। ऐसे नक्शों के बिना आधुनिक युद्ध लड़ना नामुमकिन है। इसीलिए हमारा ज़्यादातर काम खुफिया विभाग के काम से मिलता- जुलता था, और हम क्वांगतुंग सेना के खुफिया विभाग या हैलार स्थित सैन्य गुप्त सेवा के साथ लगातार जानकारी का आदान-प्रदान करते रहते थे। हम सब एक-दूसरे को जानते थे, लेकिन यामामोतो नाम का यह शख्स ऐसा था जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था।
पांच दिन की तैयारी के बाद, हम ह्सिन-चिंग से ट्रेन से हैलार के लिए रवाना हुए। वहाँ से हमने एक ट्रक लिया, उसे खांदुर-ब्यो लामावादी मंदिर के इलाके से होते हुए खल्खा नदी के पास मंचुकुओ सेना की सीमा चौकी पर ले गए। मुझे ठीक-ठीक दूरी याद नहीं है, लेकिन लगभग दो सौ मील थी। वह इलाका एकदम सुनसान था, जहाँ तक नज़र जाती थी, कुछ भी दिखाई नहीं देता था। मेरे काम के लिए मुझे बार-बार नक्शे को वास्तविक भू-आकृतियों से मिलाना पड़ता था, लेकिन वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे मैं तुलना कर सकूँ, ऐसा कुछ भी नहीं जिसे कोई पहचान चिह्न कह सके। मुझे बस दूर-दूर तक फैले घास से ढके टीले, अखंड क्षितिज और आसमान में तैरते बादल ही दिखाई दे रहे थे। नक्शे पर हम कहाँ थे, इसका सटीक अंदाज़ा लगाना मेरे लिए नामुमकिन था। मैं बस गाड़ी चलाने के समय के आधार पर अनुमान लगा सकता था।
कभी-कभी, जब कोई ऐसे निर्जन भूभाग में चुपचाप चल रहा होता है, तो एक तीव्र मतिभ्रम उसे यह एहसास करा सकता है कि एक व्यक्ति के रूप में वह धीरे-धीरे बिखर रहा है। आसपास का स्थान इतना विशाल

होता है कि अपने अस्तित्व पर संतुलन बनाए रखना कठिन होता जाता है। मुझे लगता है कि मैं अपनी बात स्पष्ट रूप से नहीं कह पा रहा हूँ। मन पूरे भूभाग में फैल जाता है, इस प्रक्रिया में इतना विघ्न हो जाता है कि व्यक्ति अपने भौतिक अस्तित्व से जुड़ाव बनाए रखने की क्षमता खो देता है। मंगोलियाई मैदानों के बीच मैंने यही अनुभव किया। यह कितना विशाल था! यह रेगिस्तानी भूभाग की बजाय एक महासागर जैसा प्रतीत होता था। सूर्य पूर्वी क्षितिज से उगता, खाली आकाश को चीरता हुआ आगे बढ़ता और पश्चिमी क्षितिज में डूब जाता। हमारे परिवेश में यही एकमात्र प्रत्यक्ष परिवर्तन था। और सूर्य की गति में, मैंने कुछ ऐसा महसूस किया जिसे मैं शायद ही नाम दे सकूँ: कोई विशाल, ब्रह्मांडीय प्रेम। मांचुकुओ सेना की सीमा चौकी पर, हम ट्रक से घोड़ों पर सवार हो गए। वहाँ हमारे लिए सब कुछ तैयार था: सवारी के लिए चार घोड़े, साथ ही भोजन, पानी और हथियारों से लदे दो खच्चर। हमारे पास हल्के हथियार थे। मेरे और यामामोतो नाम के व्यक्ति के पास केवल पिस्तौलें थीं। हमानो और होंडा के पास पिस्तौलों के अलावा मॉडल 38 की मानक पैदल सेना राइफलें और दो-दो हथगोले थे।
हमारे समूह का वास्तविक कमांडर यामामोतो था। वही सभी निर्णय लेता था और हमें निर्देश देता था। चूंकि वह कथित तौर पर एक नागरिक था, इसलिए सैन्य नियमों के अनुसार मुझे कमान अधिकारी के रूप में कार्य करना था, लेकिन किसी को भी इस बात पर संदेह नहीं था कि वही प्रभारी था। एक तो वह बस ऐसा ही व्यक्ति था, और हालांकि मैं द्वितीय लेफ्टिनेंट के पद पर था, मैं युद्ध के अनुभव के बिना केवल एक कागजी कर्मचारी था। सैन्य अधिकारी यह पहचान लेते हैं कि वास्तविक शक्ति किसके हाथ में है, और वे उसी का पालन करते हैं। इसके अलावा, मेरे वरिष्ठों ने मुझे यामामोतो

के निर्देशों का बिना किसी प्रश्न के पालन करने का आदेश दिया था। उसके प्रति मेरी आज्ञाकारिता सामान्य कानूनों और नियमों से कहीं बढ़कर थी।
हम खलखा नदी की ओर बढ़े और दक्षिण की ओर उसका अनुसरण किया। बर्फ पिघलने से नदी उफान पर थी। हमें पानी में बड़ी-बड़ी मछलियाँ दिखाई दे रही थीं। कभी-कभी, दूर से हमें भेड़िये दिखाई देते थे। वे शायद शुद्ध नस्ल के भेड़िये नहीं बल्कि कुछ जंगली कुत्ते थे, लेकिन किसी भी हालत में वे खतरनाक थे। हमें हर रात घोड़ों की सुरक्षा के लिए एक पहरेदार तैनात करना पड़ता था। हमने बहुत सारे पक्षी भी देखे, जिनमें से अधिकतर साइबेरिया लौट रहे प्रवासी पक्षी थे। यामामोतो और मैंने इलाके की भौगोलिक विशेषताओं पर चर्चा की। नक्शे से अपने मार्ग की जाँच करते हुए, हमने हर उस जानकारी को विस्तार से नोट किया जो हमारे ध्यान में आई। इन तकनीकी चर्चाओं के अलावा, यामामोतो ने मुझसे शायद ही कभी बात की। वह चुपचाप अपने घोड़े को दौड़ाते, हम सबसे दूर खाना खाते और बिना कुछ कहे सो जाते। मुझे ऐसा लगा कि यह इस क्षेत्र की उनकी पहली यात्रा नहीं थी। उन्हें भू-आकृतियों, दिशाओं आदि का आश्चर्यजनक रूप से सटीक ज्ञान था।
दो दिन तक बिना किसी घटना के दक्षिण की ओर बढ़ने के बाद, यामामोतो ने मुझे एक तरफ बुलाया और बताया कि अगली सुबह भोर से पहले हमें खलखा नदी पार करनी होगी। यह सुनकर मुझे बहुत बड़ा झटका लगा। नदी का दूसरा किनारा बाहरी मंगोलियाई क्षेत्र था। जिस किनारे पर हम खड़े थे, वह भी सीमा विवादों का एक खतरनाक इलाका था। बाहरी मंगोलियाई उस पर अपना दावा करते थे, और मांचुकुओ भी उस क्षेत्र पर अपना दावा जताता था, जिसके कारण लगातार सशस्त्र संघर्ष होते रहते थे। अगर इस तरफ बाहरी

मंगोलियाई सैनिकों द्वारा हमें बंदी बना लिया जाता, तो दोनों देशों के अलग-अलग मतों के कारण हमारे वहां होने का कुछ बहाना मिल जाता, हालांकि वास्तव में इस मौसम में उनसे सामना होने का खतरा बहुत कम था, क्योंकि बर्फ पिघलने के कारण नदी पार करना बहुत मुश्किल था। नदी का दूसरा किनारा बिल्कुल अलग था। वहां मंगोलियाई गश्त निश्चित रूप से होती। अगर हमें वहां पकड़ लिया जाता, तो हमारे पास कोई बहाना नहीं होता। यह सीमा उल्लंघन का स्पष्ट मामला होता, जिससे हर तरह की राजनीतिक समस्याएं खड़ी हो सकती थीं। हमें मौके पर ही गोली मारी जा सकती थी, और हमारी सरकार विरोध करने में असमर्थ होती। इसके अलावा, मेरे वरिष्ठ अधिकारी ने मुझे ऐसा कोई संकेत नहीं दिया था कि सीमा पार करना हमारे लिए ठीक रहेगा। मुझे यामामोतो के आदेशों का पालन करने के लिए कहा गया था, लेकिन मुझे यह पता नहीं था कि इसमें सीमा उल्लंघन जैसा गंभीर अपराध शामिल है या नहीं। दूसरे, जैसा कि मैंने पहले कहा, खलखा नदी में काफी पानी भरा हुआ था और धारा इतनी तेज़ थी कि उसे पार करना असंभव था, साथ ही पानी भी जमा देने वाला ठंडा रहा होगा। इस समय तो खानाबदोश जनजातियाँ भी नदी पार करना नहीं चाहती थीं। वे आमतौर पर सर्दियों में ही नदी पार करती थीं, जब नदी जमी हुई होती थी, या गर्मियों में, जब पानी का बहाव कम होता था और तापमान अधिक होता था।
जब मैंने ये सब बातें उससे कही, तो यामामोतो ने एक पल के लिए मुझे घूरकर देखा। फिर उसने कई बार सिर हिलाया। “मैं अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के उल्लंघन को लेकर आपकी चिंता समझता हूँ,” उसने कुछ हद तक उपदेशात्मक लहजे में मुझसे कहा। “एक अधिकारी होने के नाते, जिसके अधीन सैनिक हैं, ऐसे मामले में ज़िम्मेदारी तय करना आपके लिए पूरी तरह स्वाभाविक है। आप बिना

बहाव को पार करने लगे। यामामोटो पहले गए, यह सुनिश्चित करने के लिए कि इलाके में कोई बाहरी मंगोलियाई गश्ती दल न हो, और हम उनके पीछे-पीछे चले। ठंडे पानी में हमारे पैर सुन्न हो गए, लेकिन हम और हमारे घोड़े किसी तरह खल्खा नदी के दूसरे किनारे तक पहुँच गए। दूसरी तरफ ज़मीन बहुत ऊँची थी, और वहाँ खड़े होकर हम मीलों दूर उस रेगिस्तान को देख सकते थे जहाँ से हम आए थे। यही एक कारण था कि जब नोमोनहान की लड़ाई छिड़ी, तो सोवियत सेना हमेशा अधिक लाभप्रद स्थिति में थी। ऊंचाई में अंतर के कारण तोपखाने की गोलाबारी की सटीकता में भी बहुत बड़ा अंतर आ गया। खैर, मुझे याद है कि नदी के दोनों किनारों का नज़ारा कितना अलग था, यह देखकर मैं दंग रह गया था। मुझे यह भी याद है कि बर्फीले पानी में भीगे हुए अंगों में होश आने में कितना समय लगा था। कुछ देर तक तो मेरी आवाज़ भी नहीं निकल रही थी। लेकिन सच कहूँ तो, दुश्मन के इलाके में होने के डर से पैदा हुआ तनाव ही ठंड को भुलाने के लिए काफी था।
हम नदी के किनारे-किनारे दक्षिण की ओर बढ़े। लहराते हुए साँप की तरह, खल्खा नदी हमारे नीचे बाईं ओर बहती रही। नदी पार करने के कुछ ही देर बाद, यामामोतो ने हमें अपने सभी पदचिह्न हटाने की सलाह दी, और हमने वैसा ही किया जैसा उन्होंने कहा था। मैंने सोचा कि अगर दुश्मन हमें पकड़ लेता, तो ऐसी चीजें मुसीबत ही खड़ी कर सकती थीं। इसी कारण मैंने अपने अधिकारी के जूते भी उतार दिए और गैटर पहन लिए।
उस शाम हम अपना डेरा डाल रहे थे कि तभी दूर से एक अकेला आदमी घोड़े पर सवार होकर हमारी ओर आया। वह मंगोल था। मंगोल लोग असामान्य रूप से ऊँची काठी का इस्तेमाल करते हैं, जिससे उन्हें दूर से पहचानना आसान हो जाता है। सार्जेंट हमानो ने उस आदमी को

और आकाश अनगिनत तारों से भर गया। खलखा नदी की गर्जना के साथ-साथ भेड़ियों के howling की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी, जब हम दिन भर की थकान मिटाने के लिए रेत पर लेटे थे।
सार्जेंट हमानो ने मुझसे कहा, "लगता है हम बड़ी मुश्किल में फंस गए हैं," और मुझे उनकी बात से सहमत होना पड़ा। तब तक हम तीनों— सार्जेंट हमानो, कॉर्पोरल होंडा और मैं—एक-दूसरे को अच्छी तरह जान चुके थे। आम तौर पर, मेरे जैसे युवा अधिकारी को सार्जेंट हमानो जैसे अनुभवी गैर-कमीशन अधिकारी द्वारा दूर रखा जाता और उसका मज़ाक उड़ाया जाता, लेकिन हमारा मामला अलग था। उन्होंने गैर-सैन्य कॉलेज में मेरी शिक्षा का सम्मान किया, और मैंने भी पद को आड़े न आने देते हुए उनके युद्ध अनुभव और व्यावहारिक निर्णय की सराहना की। हम दोनों के लिए आपस में बात करना आसान था क्योंकि वे यामागुची से थे और मैं हिरोशिमा के यामागुची के पास के इलाके से था। उन्होंने मुझे चीन में चल रहे युद्ध के बारे में बताया। वे पूरी तरह से सैनिक थे, उन्होंने केवल प्राथमिक विद्यालय तक ही पढ़ाई की थी, लेकिन महाद्वीप पर चल रहे इस अशांत युद्ध को लेकर उनके मन में कुछ शंकाएँ थीं, जो मानो कभी खत्म न होने वाला प्रतीत होता था, और उन्होंने ईमानदारी से अपनी ये भावनाएँ मुझसे व्यक्त कीं। उन्होंने कहा, "मुझे लड़ने में कोई आपत्ति नहीं है।" “मैं एक सैनिक हूँ। और मुझे अपने देश के लिए युद्ध में मरने में कोई हिचक नहीं है, क्योंकि यही मेरा कर्तव्य है। लेकिन लेफ्टिनेंट, यह जो युद्ध हम अभी लड़ रहे हैं—यह ठीक नहीं है। यह कोई असली युद्ध नहीं है, जिसमें एक युद्ध रेखा होती है जहाँ दुश्मन का सामना करके अंत तक लड़ना पड़ता है। हम आगे बढ़ते हैं, और दुश्मन बिना लड़े भाग जाता है। फिर चीनी सैनिक अपनी वर्दी उतारकर आम नागरिकों के बीच मिल जाते हैं, और हमें

पता भी नहीं चलता कि दुश्मन कौन है। इसलिए हम ‘विद्रोहियों’ या ‘बचे हुए सैनिकों’ को खदेड़ने के नाम पर बहुत से निर्दोष लोगों को मार देते हैं, और रसद पर कब्ज़ा कर लेते हैं। हमें उनका खाना चुराना पड़ता है, क्योंकि मोर्चा इतनी तेज़ी से आगे बढ़ता है कि हमारी आपूर्ति हम तक नहीं पहुँच पाती। और हमें अपने कैदियों को मारना पड़ता है, क्योंकि हमारे पास उन्हें रखने की कोई जगह नहीं है और न ही उन्हें खिलाने के लिए कोई खाना है। यह गलत है, लेफ्टिनेंट। हमने नानजिंग में कुछ भयानक काम किए। मेरी अपनी यूनिट ने किए। हमने दर्जनों लोगों को कुएँ में फेंक दिया और उनके पीछे हथगोले फेंके। हमने जो कुछ किया, उसके बारे में मैं बात भी नहीं कर सकता।” मैं आपसे कह रहा हूँ, लेफ्टिनेंट, यह एक ऐसा युद्ध है जिसका कोई न्यायसंगत कारण नहीं है। यह बस दो पक्षों का एक-दूसरे को मारना है। और जिन पर अत्याचार हो रहा है, वे गरीब किसान हैं, वे लोग जिनका कोई राजनीतिक या वैचारिक संबंध नहीं है। उनके लिए न तो राष्ट्रवादी पार्टी है, न यंग मार्शल झांग, न आठवीं रूट आर्मी। अगर उन्हें खाने को मिल जाए, तो वे खुश हैं। मैं जानता हूँ कि ये लोग कैसा महसूस करते हैं: मैं खुद एक गरीब मछुआरे का बेटा हूँ। ये आम लोग सुबह से शाम तक मेहनत करते हैं, और वे बस किसी तरह खुद को ज़िंदा रख पाते हैं—मुश्किल से। मुझे विश्वास नहीं होता कि बिना किसी कारण के इन लोगों को मारना जापान के लिए ज़रा भी भला करेगा।
सार्जेंट हमानो के विपरीत, कॉर्पोरल होंडा अपने बारे में बहुत कम बोलते थे। वैसे भी वे शांत स्वभाव के थे। वे ज्यादातर हमारी बातें सुनते रहते थे, बीच में अपनी राय नहीं देते थे। लेकिन जब मैं उन्हें "शांत" कहता हूँ, तो मेरा मतलब यह नहीं है कि उनमें कोई उदासी या निराशा थी। बस इतना है कि वे बातचीत में पहल कम ही

तो, इस तरह की बेमेल इकाई होने के बावजूद, हमने असाधारण रूप से उच्च स्तर की आपसी समझ हासिल कर ली थी। और ठीक इसी वजह से कि हम एक नियमित इकाई नहीं थे, हमारे बीच सैन्य औपचारिकताओं का कोई बंधन नहीं था। हम एक-दूसरे के साथ इतने सहज थे कि मानो कर्म ने ही हमें मिलाया हो। यही कारण है कि सार्जेंट हमानो मुझसे खुलकर ऐसी बातें कह पाते थे जो अधिकारी और गैर-कमीशंड अधिकारी के बीच तय सीमाओं से परे थीं।
“मुझे बताइए, लेफ्टिनेंट,” उन्होंने एक बार पूछा, “आप इस यामामोटो नाम के व्यक्ति के बारे में क्या सोचते हैं?”
मैंने कहा, "पक्का खुफिया एजेंसी का आदमी होगा। जो भी इतनी अच्छी मंगोल भाषा बोल सकता है, वो ज़रूर कोई पेशेवर होगा। और उसे ये इलाका ज़बानी याद है।"
“मुझे तो यही लगता है। पहले तो मुझे लगा कि वो शायद बड़े अधिकारियों से जुड़े हुए घुड़सवार डाकुओं में से एक हो सकता है, लेकिन ऐसा नहीं हो सकता। मैं उन लोगों को जानता हूँ। वो घंटों बातें बनाते हैं और आधी बातें मनगढ़ंत बताते हैं। और गोली चलाने में भी बहुत तेज़ होते हैं। लेकिन ये यामामोतो कोई मामूली आदमी नहीं है। उसमें हिम्मत है। वो बड़ा अधिकारी है—और वो भी बहुत ऊँचा। मैं उन्हें दूर से ही पहचान लेता हूँ। मैंने सुना है कि सेना सोवियत-प्रशिक्षित मंगोल सैनिकों के साथ मिलकर एक गुप्त सामरिक इकाई बनाने की कोशिश कर रही है, और उन्होंने इस ऑपरेशन को चलाने के लिए हमारे कुछ माहिर सैनिकों को बुलाया है। हो सकता है उसका इससे कोई संबंध हो।”
कॉर्पोरल होंडा हमसे थोड़ी दूरी पर राइफल लिए पहरा दे रहे थे। मेरी ब्राउनिंग राइफल पास ही पड़ी थी, जिसे मैं किसी भी समय उठा

सकता था। सार्जेंट हमानो ने अपने पैरों के गैटर उतार दिए थे और अपने पैरों की मालिश कर रहे थे।
हमानो ने आगे कहा, "मैं तो बस अनुमान लगा रहा हूँ। हमने जिस मंगोल को देखा, वह बाहरी मंगोलियाई सेना का कोई सोवियत-विरोधी अधिकारी हो सकता है, जो जापानी सेना से गुप्त संपर्क बनाने की कोशिश कर रहा हो।"
मैंने कहा, "हो सकता है। लेकिन तुम सोच समझकर बोलो। वरना वे तुम्हारा सिर काट देंगे।"
“अरे लेफ्टिनेंट, मैं इतना बेवकूफ नहीं हूँ। ये बात सिर्फ हमारे बीच की है।” उन्होंने मुझे देखकर बड़ी सी मुस्कान दी, फिर गंभीर हो गए। “लेकिन अगर इनमें से कुछ भी सच है, तो ये बहुत खतरनाक मामला है। इसका मतलब युद्ध भी हो सकता है।”
मैंने सहमति में सिर हिलाया। बाहरी मंगोलिया को एक स्वतंत्र देश माना जाता था, लेकिन वास्तव में यह सोवियत संघ के अधीन एक उपग्रह राज्य जैसा था। दूसरे शब्दों में, यह मंचुकुओ से बहुत अलग नहीं था, जहाँ जापान का वर्चस्व था। हालाँकि, जैसा कि सभी जानते थे, वहाँ एक सोवियत-विरोधी गुट था, और मंचुकुओ में जापानी सेना के साथ गुप्त संपर्कों के माध्यम से, उस गुट के सदस्यों ने कई विद्रोहों को भड़काया था। विद्रोही तत्वों के केंद्र में मंगोलियाई सेना के जवान थे जो सोवियत सेना की मनमानी से नाराज़ थे, ज़मींदार वर्ग के सदस्य थे जो कृषि उद्योग के जबरन केंद्रीकरण का विरोध कर रहे थे, और लामा संप्रदाय के पुजारी थे, जिनकी संख्या एक लाख से अधिक थी। सोवियत-विरोधी गुट मदद के लिए केवल मंचुकुओ में तैनात जापानी सेना की ओर रुख कर सकता था। और जाहिर तौर पर वे हम जापानियों को, साथी एशियाई होने के नाते, रूसियों की तुलना में अधिक करीबी मानते थे। पिछले वर्ष, 1937

में, राजधानी उलान बटोर में बड़े पैमाने पर विद्रोह की योजनाएँ सामने आई थीं और वहाँ व्यापक शुद्धिकरण अभियान चलाया गया था। जापानी सेना के साथ गुप्त संपर्क में रहने वाले प्रति- क्रांतिकारी तत्वों के रूप में हजारों सैन्यकर्मियों और लामावादी पुजारियों को फाँसी दे दी गई थी, लेकिन फिर भी कहीं न कहीं सोवियत-विरोधी भावनाएँ सुलगती रहीं। इसलिए, एक जापानी खुफिया अधिकारी का खलखा नदी पार करके बाहरी मंगोलियाई सेना के एक सोवियत-विरोधी अधिकारी से गुप्त संपर्क करना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। ऐसी गतिविधियों को रोकने के लिए, बाहरी मंगोलियाई सेना ने सुरक्षा इकाइयों को लगातार गश्त पर तैनात किया था और मंचुकुओ सीमा से दस से बीस किलोमीटर अंदर के पूरे क्षेत्र को प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित कर दिया था, लेकिन यह गश्त करने के लिए एक विशाल क्षेत्र था, और वे इसके हर हिस्से पर नज़र नहीं रख सकते थे।
यदि उनका विद्रोह सफल भी हो जाता, तो यह स्पष्ट था कि सोवियत सेना उनकी प्रति-क्रांतिकारी गतिविधियों को कुचलने के लिए तुरंत हस्तक्षेप करेगी, और यदि ऐसा हुआ तो विद्रोही जापानी सेना से मदद मांगेंगे, जिससे जापान की क्वांगतुंग सेना को हस्तक्षेप करने का बहाना मिल जाएगा। बाहरी मंगोलिया पर कब्जा करना सोवियत संघ द्वारा साइबेरिया के विकास में बाधा डालने के समान होगा। टोक्यो स्थित शाही मुख्यालय भले ही इस पर रोक लगाने की कोशिश कर रहा हो, लेकिन महत्वाकांक्षी क्वांगतुंग सेना के जनरल स्टाफ इस अवसर को हाथ से जाने नहीं देना चाहते थे। इसका परिणाम केवल सीमा विवाद नहीं, बल्कि सोवियत संघ और जापान के बीच एक पूर्ण युद्ध होगा। यदि मंचूरियन-सोवियत सीमा पर ऐसा युद्ध छिड़ जाता, तो हिटलर पोलैंड या चेकोस्लोवाकिया पर आक्रमण करके

जवाब दे सकता था। सार्जेंट हमानो ने युद्ध की संभावना पर अपनी टिप्पणी में इसी स्थिति का जिक्र किया था।
अगली सुबह सूरज निकला, और यामामोतो अभी तक नहीं लौटा था। मैं आखिरी पहरेदार था। मैंने सार्जेंट हमानो की राइफल उधार ली, एक ऊंचे रेत के टीले पर बैठ गया और पूरब के आकाश को देखने लगा। मंगोलिया में भोर का नजारा अद्भुत होता है। एक पल में क्षितिज अंधेरे में एक धुंधली रेखा बन जाता है, और फिर वह रेखा ऊपर की ओर, और ऊपर, खिंचती चली जाती है। ऐसा लगता था मानो आकाश से कोई विशाल हाथ नीचे आया हो और धीरे-धीरे धरती से रात का पर्दा हटा रहा हो। यह एक भव्य दृश्य था, जैसा कि मैंने पहले कहा, इतना विशाल कि मेरी सीमित मानवीय क्षमताएँ इसे पूरी तरह समझ नहीं सकती थीं। जैसे-जैसे मैं बैठा देखता रहा, मुझे यह एहसास हुआ कि मेरा जीवन धीरे-धीरे शून्यता में विलीन हो रहा है। यहाँ मानवीय कार्यों जैसी तुच्छ चीज़ों का कोई निशान नहीं था। यही घटना सैकड़ों लाखों-सैकड़ों अरबों बार घटित हो चुकी थी, उस युग से भी पहले जब पृथ्वी पर जीवन का कोई नामोनिशान नहीं था। यह भूलकर कि मुझे वहां पहरा देने के लिए तैनात किया गया था, मैं मंत्रमुग्ध होकर दिन के उदय को देखता रहा।
सूरज पूरी तरह उगने के बाद, मैंने एक सिगरेट जलाई, पानी की बोतल से एक घूंट पानी पिया और पेशाब किया। फिर मुझे जापान की याद आई। मुझे मई की शुरुआत में अपने शहर की याद आ गई—फूलों की खुशबू, नदी की कलकल, आसमान में बादल। पुराने दोस्त। परिवार। ओक के पत्तों में लिपटे गरमा गरम चावल के पफ की मीठी मिठास। वैसे तो मुझे मीठा ज़्यादा पसंद नहीं है, लेकिन मुझे आज भी याद है कि उस सुबह मुझे मोची पफ खाने की कितनी तीव्र इच्छा हो रही थी। उस पल तो मैं उसके लिए अपनी आधी साल की तनख्वाह भी दे देता। और जब

मैंने जापान के बारे में सोचा, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे दुनिया के छोर पर छोड़ दिया गया हो। हमें इस बंजर ज़मीन के टुकड़े के लिए, जिसका कोई सैन्य या औद्योगिक महत्व नहीं है, इस विशाल भूमि के लिए, जहाँ घास के तिनकों और काटने वाले कीड़ों के अलावा कुछ भी नहीं रहता, अपनी जान जोखिम में क्यों डालनी पड़ती है? अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए, मैं भी लड़ूँगा और मर जाऊँगा। लेकिन मुझे यह बात बिल्कुल भी समझ में नहीं आई कि मैं अपनी इकलौती जिंदगी को उस बंजर जमीन के टुकड़े के लिए कुर्बान कर दूं, जिससे कभी अनाज का एक भी पौधा नहीं उगेगा।

•

यामामोटो अगले दिन सुबह भोर में लौट आया। उस सुबह भी मैं ही अंतिम पहरा दे रहा था। नदी मेरी पीठ के पीछे थी और मैं पश्चिम की ओर देख रहा था, तभी मुझे पीछे से घोड़े के हिनहिनाने जैसी आवाज़ सुनाई दी। मैं तेज़ी से मुड़ा, पर कुछ नहीं दिखा। मैंने आवाज़ की दिशा में देखा, बंदूक तैयार थी। मैंने घबराकर निगल लिया, और मेरे गले से निकली आवाज़ इतनी तेज़ थी कि मैं डर गया। मेरी उंगली कांप रही थी। मैंने आज तक किसी पर भी बंदूक नहीं चलाई थी। लेकिन फिर, कुछ ही सेकंड बाद, रेत के टीले की चोटी से लड़खड़ाता हुआ एक घोड़ा यामामोतो को लेकर आया। मैंने ट्रिगर पर उंगली रखे हुए चारों ओर नज़र दौड़ाई, लेकिन कोई और दिखाई नहीं दिया—न तो वह मंगोल जो उसे लेने आया था और न ही दुश्मन सैनिक। पूर्वी आकाश में एक विशाल सफेद चाँद किसी अशुभ स्तंभ की तरह लटका हुआ था। यामामोतो का बायाँ हाथ ज़ख्मी लग रहा था। उसके हाथ पर लिपटा रुमाल खून से सना हुआ था। मैंने कॉर्पोरल होंडा को घोड़े की देखभाल करने के लिए जगाया। बुरी तरह से लथपथ और हांफता हुआ, वह स्पष्ट रूप से बहुत दूर से तेज़ गति से आया था। हमानो मेरी जगह

पहरा देने लगा, और मैं यामामोतो के ज़ख्म का इलाज करने के लिए प्राथमिक चिकित्सा किट ले आया।
“गोली आर-पार हो गई, और खून बहना बंद हो गया,” यामामोतो ने कहा। वह सही था: गोली हड्डी को छूए बिना आर-पार निकल गई थी, रास्ते में सिर्फ़ मांस को चीरती हुई। मैंने रुमाल हटाया, ज़ख्म के खुले हिस्से को अल्कोहल से साफ़ किया और नई पट्टी बाँध दी। वह पूरे समय ज़रा भी नहीं हिचका, हालाँकि उसके ऊपरी होंठ पर पसीने की एक पतली परत थी। उसने पानी की बोतल से खूब पानी पिया, सिगरेट जलाई और बड़े चाव से कश लिया। फिर उसने अपनी ब्राउनिंग पिस्टल निकाली, उसे बगल में दबाया, मैगज़ीन निकाली और एक हाथ से बड़ी कुशलता से उसमें तीन गोलियाँ भर लीं। “हम यहाँ से तुरंत निकलते हैं, लेफ्टिनेंट मामिया,” उसने कहा। “खाल्खा नदी पार करके मंचुकुओ सेना की निगरानी चौकी की ओर चलें।”
हम सबने जल्दी से अपना डेरा समेटा, आपस में एक शब्द भी नहीं बोला, घोड़ों पर सवार हुए और नदी पार करने के लिए चल पड़े। मैंने यामामोतो से यह नहीं पूछा कि उसे गोली कैसे लगी और किसने मारी। मैं पूछने की स्थिति में नहीं था, और अगर होता भी, तो शायद वह मुझे नहीं बताता। उस समय मेरे मन में बस एक ही बात थी कि जितनी जल्दी हो सके इस दुश्मन के इलाके से निकलकर, खलखा नदी पार करके दूसरी तरफ के अपेक्षाकृत सुरक्षित किनारे पर पहुँच जाऊं।
हम चुपचाप आगे बढ़ते रहे, अपने घोड़ों को घास के मैदान में दौड़ाते हुए। कोई नहीं बोला, लेकिन सबके मन में एक ही बात थी: क्या हम उस नदी को पार कर पाएंगे? अगर कोई बाहरी मंगोलियाई गश्ती दल हमसे पहले पुल पर पहुँच गया, तो हमारा अंत हो जाएगा। लड़ाई में हमारी जीत नामुमकिन थी। मुझे याद है मेरी बगल से बहता पसीना। वह एक पल भी नहीं सूखा।

"बताइए, लेफ्टिनेंट मामिया, क्या आपको कभी गोली लगी है?" यामामोटो ने अपने घोड़े पर सवार होकर लंबे मौन के बाद मुझसे पूछा।
मैंने जवाब दिया, "कभी नहीं।"
क्या आपने कभी किसी को गोली मारी है?
मैंने फिर कहा, "कभी नहीं।"
मुझे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मेरे जवाबों का उन पर कैसा प्रभाव पड़ा, और न ही मुझे यह पता था कि मुझसे वे प्रश्न पूछने के पीछे उनका क्या उद्देश्य था।
“इसमें एक दस्तावेज़ है जिसे मुख्यालय तक पहुँचाना है,” उन्होंने अपने सैडलबैग पर हाथ रखते हुए कहा। “अगर इसे नहीं पहुँचाया जा सकता, तो इसे नष्ट करना होगा—जला देना, दफना देना, जो भी हो, लेकिन किसी भी हालत में इसे दुश्मन के हाथों में नहीं पड़ने देना है। किसी भी हालत में नहीं। यही हमारी पहली प्राथमिकता है। मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि आप इसे समझें। यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है।”
मैंने कहा, "मैं समझ गया।"
यामामोटो ने मेरी आँखों में देखते हुए कहा, “अगर हालात बिगड़ते हैं, तो सबसे पहले मुझे गोली मार देना। बिना किसी झिझक के। अगर मैं खुद कर सकता हूँ, तो कर दूँगा। लेकिन मेरे हाथ की इस हालत में शायद मैं न कर पाऊँ। ऐसी स्थिति में, आपको मुझे गोली मारनी ही होगी। और यह सुनिश्चित करना होगा कि गोली मारते ही मेरी जान चली जाए।”
मैंने चुपचाप सिर हिलाया।

•

जब हम सूर्यास्त से ठीक पहले नदी पार करने के स्थान पर पहुँचे, तो मेरा अब तक का डर बिल्कुल सही साबित हुआ। वहाँ बाह्य मंगोलियाई सैनिकों की एक छोटी टुकड़ी तैनात थी। यामामोतो और मैं ऊँचे टीलों में से एक पर चढ़ गए और बारी-बारी से दूरबीन से उन्हें देखने लगे। वहाँ आठ सैनिक थे—ज़्यादा तो नहीं, लेकिन सीमा गश्ती दल के हिसाब से वे भारी हथियारों से लैस थे। एक सैनिक के पास हल्की मशीनगन थी, और एक भारी मशीनगन एक ऊँची जगह पर लगी हुई थी। वह रेत की बोरियों से घिरी हुई थी और नदी की ओर निशाना साधे हुए थी। ज़ाहिर है, उन्होंने हमें नदी के दूसरे किनारे पर जाने से रोकने के लिए वहाँ डेरा डाला था। उन्होंने नदी के किनारे अपने तंबू गाड़ रखे थे और अपने दस घोड़ों को पास ही बाँध रखा था। ऐसा लग रहा था मानो वे हमें पकड़ने तक वहीं डटे रहने की योजना बना रहे हों। मैंने पूछा, "क्या कोई दूसरा रास्ता नहीं है जिसका हम इस्तेमाल कर सकें?"
यामामोटो ने दूरबीन से नज़रें हटाईं और मेरी ओर देखते हुए सिर हिलाया। “एक रास्ता है, लेकिन वह बहुत दूर है। घोड़े पर सवार होकर दो दिन लगेंगे। हमारे पास इतना समय नहीं है। हम बस इतना ही कर सकते हैं कि चाहे कुछ भी हो जाए, यहाँ से पार कर लें।”
"मतलब हम रात में नदी पार करेंगे?"
“बिल्कुल सही। यही एकमात्र उपाय है। हम घोड़ों को यहीं छोड़ देते हैं। हम संतरी का काम तमाम कर देते हैं, और बाकी लोग शायद सो रहे होंगे। चिंता मत करो, नदी की वजह से ज़्यादातर आवाज़ें सुनाई नहीं देंगी। मैं संतरी का काम तमाम कर देता हूँ। तब तक हमारे पास करने को कुछ नहीं है, इसलिए बेहतर है कि हम सो जाएँ, अभी आराम कर लें जब मौका है।”

हमने सुबह तीन बजे नदी पार करने का अभियान शुरू किया। कॉर्पोरल होंडा ने घोड़ों से सारे सामान उतार लिए, जानवरों को दूर एक जगह पर ले जाकर छोड़ दिया। हमने एक गहरा गड्ढा खोदा और उसमें अपना अतिरिक्त गोला-बारूद और भोजन दबा दिया। हममें से हर एक के पास केवल एक पानी की बोतल, एक दिन का राशन, एक बंदूक और कुछ गोलियां होंगी। अगर हम बाहरी मंगोलियाई सेना के हाथों पकड़े गए, जिनकी मारक क्षमता हमसे कहीं अधिक थी, तो चाहे हमारे पास कितना भी गोला-बारूद क्यों न हो, हम उनका मुकाबला नहीं कर पाएंगे। अब हमारे लिए सबसे ज़रूरी था कि हम जितनी नींद ले सकें, उतनी लें, क्योंकि अगर हम नदी पार कर भी गए, तो कुछ समय तक सोने का मौका नहीं मिलेगा। कॉर्पोरल होंडा पहले पहरा देंगे, और सार्जेंट हमानो उनकी जगह लेंगे।
तंबू में लेटते ही यामामोतो तुरंत सो गया। ज़ाहिर है, वह पूरे समय सोया ही नहीं था। उसके तकिये के पास एक चमड़े का सूटकेस रखा था, जिसमें उसने ज़रूरी दस्तावेज़ रख दिया था। उसके कुछ देर बाद हमानो भी सो गया। हम सब थके हुए थे, लेकिन मैं इतना तनाव में था कि सो नहीं पा रहा था। मैं काफी देर तक लेटा रहा, नींद के लिए तड़प रहा था, लेकिन संतरी को मारने और नदी पार करते समय मशीन गन की गोलियों की बौछार के काल्पनिक दृश्यों से जागता रहा। मेरी हथेलियाँ पसीने से भीगी हुई थीं और कनपटी में दर्द हो रहा था। मुझे यकीन नहीं था कि जब समय आएगा, तो मैं एक अधिकारी के योग्य व्यवहार कर पाऊँगा। मैं रेंगते हुए तंबू से बाहर निकला और पहरे पर तैनात कॉर्पोरल होंडा के पास जाकर बैठ गया।
मैंने कहा, "होंडा, शायद हम यहीं मर जाएंगे।"
“कहना मुश्किल है,” उन्होंने जवाब दिया।

कुछ देर तक हम दोनों चुप रहे। लेकिन उसके जवाब में कुछ ऐसा था जिसने मुझे परेशान कर दिया—उसके लहजे में अनिश्चितता का हल्का सा संकेत था। अंतर्ज्ञान मेरी खासियत नहीं रही है, लेकिन मैं जानती थी कि उसकी अस्पष्ट टिप्पणी किसी बात को छिपाने के इरादे से थी। मैंने उससे इस बारे में पूछने का फैसला किया। मैंने कहा, "अगर तुम्हें कुछ कहना है, तो अब मत छिपाओ। हो सकता है कि यह हमारी आखिरी बातचीत हो, इसलिए खुलकर बताओ।"
अपने निचले होंठ को दबाते हुए होंडा ने अपने पैरों के पास की रेत पर हाथ फेरा। मैं समझ गया कि वह दुविधा में फंसा हुआ था। कुछ देर बाद उसने कहा, "लेफ्टिनेंट," उसने मेरी आँखों में सीधे देखते हुए कहा, "हम चारों में से आप सबसे लंबे समय तक जीवित रहेंगे—जितना आप खुद सोच भी नहीं सकते। आपकी मृत्यु जापान में होगी।"
अब मेरी बारी थी उसे देखने की। उसने आगे कहा:
"आप सोच रहे होंगे कि मुझे यह कैसे पता है, लेकिन यह ऐसी चीज है जिसे मैं भी समझा नहीं सकता। मुझे बस पता है।"
क्या आपमें भविष्य देखने की शक्ति है?
"शायद हाँ, हालाँकि यह शब्द मेरी भावनाओं को पूरी तरह से व्यक्त नहीं करता। यह थोड़ा अतिशयोक्तिपूर्ण है। जैसा कि मैंने कहा, मुझे बस इतना पता है, बस इतना ही।"
"क्या आपको हमेशा से इस तरह की समस्या रही है?"
“हमेशा से,” उसने दृढ़ विश्वास के साथ कहा। “हालाँकि जब से मुझे समझ आने लगी थी कि क्या हो रहा है, तब से मैंने इसे छुपा रखा है। लेकिन यह जीवन और मृत्यु का मामला है, लेफ्टिनेंट, और आप ही मुझसे इसके बारे में पूछ रहे हैं, इसलिए मैं आपको सच बता रहा हूँ।”

और बाकी लोगों का क्या होगा? क्या आपको पता है कि उनके साथ क्या होने वाला है?
उन्होंने सिर हिलाया। “कुछ बातें मुझे पता हैं, कुछ बातें मुझे नहीं पता। लेकिन लेफ्टिनेंट, आपके लिए बेहतर यही होगा कि आप ये बातें न जानें। आप जैसे कॉलेज ग्रेजुएट से इतनी बड़ी-बड़ी बातें कहना शायद मेरे जैसे व्यक्ति के लिए थोड़ा अनुचित हो, लेकिन किसी व्यक्ति का भाग्य वो होता है जिसे बीत जाने के बाद ही देखा जा सकता है, पहले से नहीं। इन मामलों में मुझे कुछ अनुभव है। आपको नहीं।”
लेकिन खैर, आप कहते हैं कि मैं यहाँ नहीं मरने वाला हूँ?
उसने मुट्ठी भर रेत उठाई और उसे अपनी उंगलियों के बीच से गिरने दिया। "मैं बस इतना ही कह सकता हूँ, लेफ्टिनेंट। आप यहाँ महाद्वीप पर नहीं मरेंगे।"
मैं इस बारे में और बात करना चाहता था, लेकिन कॉर्पोरल होंडा ने कुछ भी कहने से इनकार कर दिया। ऐसा लग रहा था मानो वह अपने ही विचारों या ध्यान में डूबे हुए हों। राइफल पकड़े हुए, वह विशाल मैदान की ओर घूर रहे थे। मेरी कोई भी बात उन तक नहीं पहुँच रही थी।
मैं टीले की ओट में बने छोटे से तंबू में वापस गया, सार्जेंट हमानो के बगल में लेट गया और अपनी आँखें बंद कर लीं। इस बार नींद मुझ पर हावी हो गई—एक गहरी नींद जिसने मुझे मानो टखनों से पकड़कर समुद्र की गहराई में खींच लिया।

13

लेफ्टिनेंट मामिया की लंबी कहानी: भाग II

•

राइफल की सेफ्टी लॉक खुलने की धातुई आवाज़ से मेरी नींद खुली। युद्ध में कोई भी सैनिक, गहरी नींद में भी, उस आवाज़ को अनसुना नहीं कर सकता। यह एक—मैं कैसे कहूँ?—एक खास आवाज़ है, मौत की तरह ठंडी और भारी। लगभग सहज ही, मैंने तकिए के पास रखी ब्राउनिंग राइफल की ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन तभी एक जूता मेरे कनपटी पर ज़ोर से लगा, जिससे मुझे पल भर के लिए कुछ दिखाई नहीं दिया। जब मेरी साँसें सामान्य हुईं, तो मैंने आँखें खोलीं और उस आदमी को देखा जिसने मुझे लात मारी होगी। वह घुटनों के बल बैठा मेरी ब्राउनिंग राइफल उठा रहा था। मैंने धीरे से अपना सिर उठाया, तो पाया कि दो राइफलों की नालें मेरे चेहरे की ओर तनी हुई थीं। राइफलों के पीछे दो मंगोलियाई सैनिक खड़े थे।
मुझे यकीन था कि मैं तंबू में सो गया था, लेकिन अब तंबू गायब हो चुका था और ऊपर तारों से भरा आसमान जगमगा रहा था। एक और मंगोलियाई सैनिक यामामोतो के सिर पर हल्की मशीनगन ताने खड़ा था, जो मेरे बगल में लेटा हुआ था। वह बिल्कुल स्थिर लेटा था, मानो अपनी ऊर्जा बचा रहा हो क्योंकि वह जानता था कि विरोध करना व्यर्थ है। सभी मंगोलों ने लंबे ओवरकोट और युद्ध हेलमेट पहन रखे थे। उनमें से दो यामामोतो और मुझ पर बड़ी टॉर्च ताने हुए थे। पहले तो मुझे समझ नहीं आया कि क्या हुआ था: मेरी नींद बहुत गहरी थी और सदमा बहुत गहरा था। लेकिन मंगोलियाई सैनिकों और यामामोतो के चेहरे को देखकर मेरे मन में कोई संदेह नहीं रहा: नदी पार करने से पहले ही हमारे तंबू खोज लिए गए थे।
फिर मेरे मन में यह सवाल उठा कि होंडा और हमानो का क्या हुआ होगा। मैंने धीरे से अपना सिर घुमाकर आसपास का जायजा लेने की

उसने इसी से हमानो का गला काटा था। ब्लेड को कुछ कुशलता से घुमाने के बाद, उसने उसे वापस म्यान में रख दिया।
बिना कुछ कहे, केवल अपनी आँखों से इशारा करते हुए, यामामोतो ने मेरी ओर एक नज़र डाली। यह बस एक पल के लिए ही था, लेकिन मैं तुरंत समझ गया कि वह क्या कहना चाह रहा था: क्या आपको लगता है कि कॉर्पोरल होंडा बच निकलने में कामयाब हो गया? उस सारी अफरा- तफरी और दहशत के बीच, मैं भी यही सोच रहा था: कॉर्पोरल होंडा कहाँ है? अगर होंडा बाहरी मंगोलियाई सैनिकों के इस अचानक हमले से बच गया, तो शायद हमारे लिए भी कुछ उम्मीद हो सकती है—शायद एक बहुत ही कमज़ोर उम्मीद, और यह सवाल कि होंडा वहाँ अकेले क्या कर सकता है, निराशाजनक था, लेकिन कुछ उम्मीद बिल्कुल भी उम्मीद न होने से बेहतर थी।
उन्होंने हमें पूरी रात बांधकर रेत पर लिटाए रखा। दो सैनिक हमारी निगरानी के लिए तैनात थे: एक के पास हल्की मशीन गन थी, दूसरे के पास राइफल। बाकी सैनिक कुछ दूरी पर बैठे सिगरेट पी रहे थे, बातें कर रहे थे और हंस रहे थे, मानो हमें पकड़ने के बाद वे अब आराम महसूस कर रहे हों। न तो यामामोतो और न ही मैंने एक शब्द कहा। मई के महीने में भी उस जगह का तापमान सुबह होते-होते शून्य से नीचे गिर गया। मुझे लगा कि हम नग्न अवस्था में वहां पड़े- पड़े ठंड से जम कर मर जाएंगे। लेकिन ठंड उस दहशत के आगे कुछ भी नहीं थी जो मैं महसूस कर रहा था। मुझे नहीं पता था कि हमारे साथ क्या होने वाला है। ये लोग एक साधारण गश्ती दल थे: शायद उनके पास हमारे साथ क्या करना है, यह तय करने का अधिकार नहीं था। उन्हें आदेशों का इंतजार करना था। इसका मतलब था कि शायद हमें तुरंत नहीं मारा जाएगा। लेकिन उसके बाद क्या होगा, यह कहना मुश्किल था। यामामोतो के जासूस होने की पूरी संभावना थी, और मैं उसके

साथ पकड़ा गया था, इसलिए स्वाभाविक रूप से मुझे भी एक साथी माना जाएगा। किसी भी हालत में, हम आसानी से नहीं बचेंगे।
भोर होने के कुछ समय बाद, दूर आकाश से हवाई जहाज के इंजन जैसी गड़गड़ाहट की आवाज़ आई। आखिरकार, चांदी के रंग का विमान मेरी नज़र के सामने आ गया। यह सोवियत निर्मित एक टोही विमान था, जिस पर बाहरी मंगोलिया का चिन्ह बना हुआ था। विमान ने हमारे ऊपर कई चक्कर लगाए। सभी सैनिकों ने हाथ हिलाकर अभिवादन किया, और विमान ने भी जवाब में अपना पंख झुकाया। फिर वह पास के एक खुले मैदान में उतरा, जिससे रेत के बादल उड़ने लगे। यहाँ की ज़मीन सख्त थी और कोई रुकावट नहीं थी, जिससे बिना रनवे के भी उड़ान भरना और उतरना अपेक्षाकृत आसान था। जहाँ तक मुझे पता था, उन्होंने इस काम के लिए इस जगह का इस्तेमाल कई बार किया होगा। एक सैनिक घोड़े पर सवार हुआ और दो सजे-धजे घोड़ों को साथ लेकर विमान की ओर सरपट दौड़ पड़ा।
जब वे लौटे, तो दोनों घोड़ों पर सवार लोग उच्च पदस्थ अधिकारी प्रतीत हो रहे थे। एक रूसी था, दूसरा मंगोलियाई। मैंने अनुमान लगाया कि गश्ती दल ने मुख्यालय को हमारी गिरफ्तारी की सूचना रेडियो द्वारा दे दी थी और वे दोनों अधिकारी उलान बटोर से हमसे पूछताछ करने आए थे। वे निस्संदेह खुफिया अधिकारी थे। मैंने सुना था कि पिछले वर्ष सरकार विरोधी कार्यकर्ताओं की सामूहिक गिरफ्तारी और सफाए में जीपीयू की भूमिका थी।
दोनों अधिकारियों ने बेदाग वर्दी पहनी हुई थी और उनकी दाढ़ी साफ थी। रूसी अधिकारी ने बेल्ट वाला एक ट्रेंच कोट पहना हुआ था। उनके जूते बेदाग चमक रहे थे। वे दुबले-पतले थे, लेकिन एक रूसी के हिसाब से बहुत लंबे नहीं थे, और शायद तीस के आसपास के थे। उनका माथा चौड़ा, नाक पतली और त्वचा लगभग हल्के गुलाबी रंग की थी, और

उन्होंने तार के फ्रेम वाला चश्मा पहना हुआ था। कुल मिलाकर, उनका चेहरा कुछ खास प्रभावशाली नहीं था। उनके बगल में खड़ा छोटा, मोटा, सांवला मंगोलियाई अधिकारी एक छोटे भालू जैसा लग रहा था।
मंगोलियाई अधिकारी ने गैर-अधिकारी को एक तरफ बुलाया और तीनों ने कुछ देर बात की। मुझे लगा कि अधिकारी विस्तृत रिपोर्ट मांग रहे थे। गैर-अधिकारी एक थैला लेकर आया जिसमें हमसे जब्त की गई चीजें थीं और उसने उन्हें बाकी लोगों को दिखाया। रूसी अधिकारी ने हर वस्तु को बड़ी सावधानी से देखा, फिर उन्हें वापस थैले में रख दिया। उसने मंगोलियाई अधिकारी से कुछ कहा, जिसने बदले में गैर-अधिकारी से बात की। फिर रूसी अधिकारी ने अपनी जेब से सिगरेट का डिब्बा निकाला और उसे बाकी दोनों के लिए खोल दिया। वे बातें करते रहे और साथ में सिगरेट पीते रहे। बात करते-करते रूसी अधिकारी ने कई बार अपना दाहिना मुक्का अपने बाएं हाथ की हथेली पर मारा। वह कुछ नाराज़ लग रहा था। मंगोलियाई अधिकारी ने अपने हाथ बांधे रखे और उसका चेहरा गंभीर था, जबकि गैर-अधिकारी बीच-बीच में अपना सिर हिलाता रहा।
आखिरकार, रूसी अधिकारी धीरे-धीरे हमारे पास आया जहाँ हम ज़मीन पर लेटे हुए थे। उसने रूसी में पूछा, "क्या आप सिगरेट पीना चाहेंगे?" जैसा कि मैंने पहले बताया, मैंने कॉलेज में रूसी पढ़ी थी और बातचीत को अच्छी तरह समझ सकता था, लेकिन मैंने समझने का नाटक किया ताकि कोई परेशानी न हो। यामामोतो ने रूसी में कहा, "धन्यवाद, लेकिन नहीं।" वह बहुत अच्छा था।
सोवियत सेना के अधिकारी ने कहा, "बहुत बढ़िया। अगर हम रूसी भाषा में बात कर सकें तो काम और भी जल्दी हो जाएगा।"

उसने अपने दस्ताने उतारे और उन्हें अपनी कोट की जेब में रख लिया। उसके बाएं हाथ में एक छोटी सोने की अंगूठी चमक रही थी। “जैसा कि आप जानते ही होंगे, हम किसी खास चीज़ की तलाश कर रहे हैं। बहुत ही गहनता से। और हम जानते हैं कि वह आपके पास है। यह मत पूछिए कि हमें कैसे पता; हम बस जानते हैं। लेकिन अभी वह आपके पास नहीं है। इसका मतलब है कि, तर्क के अनुसार, आपने पकड़े जाने से पहले उसे कहीं छिपा दिया होगा। आपने उसे वहाँ नहीं पहुँचाया है।” उसने खलखा नदी की ओर इशारा किया। “आपमें से किसी ने भी नदी पार नहीं की है। पत्र ज़रूर इस तरफ कहीं छिपा होगा। क्या आपको अब तक मेरी कही हुई बातें समझ में आईं?”
यामामोटो ने सिर हिलाया। उन्होंने कहा, "मैं समझता हूँ, लेकिन हमें पत्र के बारे में कुछ नहीं पता।"
रूसी ने भावहीन स्वर में कहा, "ठीक है। ऐसे में, मुझे आपसे एक छोटा सा सवाल पूछना है। आप लोग यहाँ क्या कर रहे थे? जैसा कि आप जानते हैं, यह इलाका मंगोलियाई जन गणराज्य का है। दूसरों की ज़मीन में घुसने का आपका क्या मकसद था? मैं इसका कारण जानना चाहता हूँ।"
यामामोटो ने समझाया, “मानचित्र बनाना। मैं एक मानचित्र कंपनी में नागरिक कर्मचारी हूँ, और यह आदमी और जिसे उन्होंने मारा, वे सुरक्षा के लिए मेरे साथ थे। हम जानते थे कि नदी का यह किनारा आपका इलाका है, और सीमा पार करने के लिए हमें खेद है, लेकिन हमने खुद को क्षेत्रीय उल्लंघन का दोषी नहीं समझा। हम बस इस तरफ के पठार के सुविधाजनक स्थान से स्थलाकृति का अवलोकन करना चाहते थे।”
रूसी अधिकारी को बिल्कुल भी हंसी नहीं आई, बल्कि उन्होंने अपने होंठों पर हल्की सी मुस्कान बिखेरी। “हमें खेद है?” उन्होंने

धीरे से कहा। “जी हां, बिल्कुल। आप पठार से स्थलाकृति देखना चाहते थे। जी हां, बिल्कुल। ऊंचे स्थान से नजारा हमेशा बेहतर होता है। यह बिल्कुल स्वाभाविक है।”
कुछ देर तक वह चुप रहा, बस आकाश में बादलों को देखता रहा। फिर उसने अपनी नज़र यामामोतो की ओर मोड़ी, धीरे से सिर हिलाया और आह भरी।
काश, मैं तुम्हारी बातों पर यकीन कर पाती! हम सबके लिए कितना अच्छा होता! काश, मैं तुम्हें कंधे पर हाथ रखकर कह पाती, ‘हाँ, हाँ, मैं समझ गई, अब नदी पार करके अपने घर जाओ और आगे सावधान रहना।’ काश मैं ऐसा कर पाती। लेकिन दुर्भाग्य से, मैं नहीं कर सकती। क्योंकि मैं जानती हूँ कि तुम कौन हो। और मैं जानती हूँ कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो। हैलार में हमारे दोस्त हैं, जैसे उलान बटोर में तुम्हारे दोस्त हैं।
उसने अपनी जेब से दस्ताने निकाले, उन्हें मोड़कर वापस रख दिया। “सच कहूँ तो, तुम्हें चोट पहुँचाने या जान से मारने में मेरी कोई निजी रुचि नहीं है। अगर तुम मुझे वह पत्र दे दो, तो फिर मेरा तुमसे कोई लेना-देना नहीं रहेगा। मेरी मर्ज़ी से तुम्हें तुरंत यहाँ से रिहा कर दिया जाएगा। तुम नदी पार करके घर जा सकते हो। मैं तुम्हें अपनी कसम खाकर यह वादा करता हूँ। इसके अलावा जो भी होगा, वह हमारा आंतरिक मामला होगा। उससे तुम्हारा कोई संबंध नहीं होगा।”
पूरब से आती सूरज की रोशनी आखिरकार मेरी त्वचा को गर्म करने लगी थी। हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी और आसमान में कुछ घने सफेद बादल तैर रहे थे।
इसके बाद एक लंबा सन्नाटा छा गया। किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा। रूसी अधिकारी, मंगोलियाई अधिकारी, गश्ती दल के जवान और

यामामोतो: हर कोई अपनी-अपनी चुप्पी में डूबा रहा। यामामोतो ने हमारी गिरफ्तारी के क्षण से ही मृत्यु को स्वीकार कर लिया था; उनके चेहरे पर भावों का जरा सा भी संकेत नहीं दिखा।
“तुम दोनों… लगभग निश्चित रूप से… यहीं मर जाओगे,” रूसी ने धीरे-धीरे, एक-एक वाक्य करके, मानो बच्चों से बात कर रहा हो, बोलना शुरू किया। “और यह एक भयानक मौत होगी। वे…” और यहाँ रूसी ने मंगोलियाई सैनिकों की ओर देखा। मशीन गन पकड़े हुए विशालकाय सैनिक ने टेढ़े-मेढ़े दाँतों वाली मुस्कान के साथ मेरी ओर देखा। “वे लोगों को ऐसे तरीकों से मारना पसंद करते हैं जिनमें बड़ी मुश्किल और कल्पनाशीलता शामिल होती है। हम कह सकते हैं कि वे इस कला के शौकीन हैं। चंगेज़ खान के समय से ही मंगोलों को लोगों को मारने के खास तौर पर क्रूर तरीके खोजने में मज़ा आता रहा है। हम रूसी इस बात से अच्छी तरह वाकिफ हैं। यह हमारे स्कूल के इतिहास के पाठों का हिस्सा है। हम पढ़ते हैं कि मंगोलों ने रूस पर आक्रमण करते समय क्या किया था। उन्होंने लाखों लोगों को मार डाला। बिना किसी कारण के। उन्होंने कीव में सैकड़ों रूसी रईसों को बंदी बनाया और उन सबको एक साथ मार डाला। क्या आपको वह कहानी पता है? उन्होंने बड़े-बड़े मोटे तख्ते काटे, रूसियों को उनके नीचे लिटाया और तख्तों के ऊपर दावत दी, जिससे वे उनके वजन से कुचलकर मर गए। आम इंसान कभी ऐसी बात सोच भी नहीं सकता, क्या आप सहमत नहीं हैं? इसमें समय और बहुत तैयारी लगी। भला कौन इतनी मेहनत करता? लेकिन उन्होंने ऐसा किया। और क्यों? क्योंकि यह उनके लिए मनोरंजन का एक रूप था। और वे आज भी ऐसी चीजें करने का आनंद लेते हैं। मैंने उन्हें एक बार ऐसा करते देखा था। मुझे लगा था कि मैंने अपने जीवन में कुछ भयानक चीजें देखी हैं, लेकिन उस

रात, जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, मेरी भूख खत्म हो गई। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? क्या मैं बहुत जल्दी बोल रहा हूँ? यामामोटो ने अपना सिर हिलाया।
“बहुत बढ़िया,” रूसी ने कहा। वह रुका और गला साफ करते हुए बोला, “बेशक, यह मेरे लिए दूसरी बार होगा। शायद रात के खाने तक मेरी भूख लौट आए। लेकिन अगर संभव हो तो मैं अनावश्यक हत्या से बचना चाहूंगा।”
अपने हाथों को पीठ के पीछे बांधे हुए, उसने कुछ देर तक आसमान की ओर देखा। फिर उसने अपने दस्ताने उतारे और विमान की ओर नज़र डाली। “मौसम कितना सुहावना है,” उसने कहा। “बसंत का मौसम है। अभी भी थोड़ी ठंड है, लेकिन ठीक है। अगर ज़्यादा गर्मी होती, तो मच्छर बहुत ज़्यादा हो जाते। भयानक मच्छर। हाँ, बसंत का मौसम गर्मी से कहीं बेहतर है।” उसने फिर से अपना सिगरेट का डिब्बा निकाला, एक सिगरेट होठों के बीच रखी और माचिस से जला ली। धीरे- धीरे उसने धुएँ को अपने फेफड़ों में खींचा और धीरे-धीरे बाहर निकाला। “मैं आपसे एक बार फिर पूछ रहा हूँ: क्या आप इस बात पर अड़े हैं कि आपको उस पत्र के बारे में सचमुच कुछ नहीं पता?” यामामोटो ने सिर्फ एक शब्द कहा: "न्येत।"
“ठीक है,” रूसी ने कहा। “ठीक है।” फिर उसने मंगोलियाई अधिकारी से मंगोलियाई भाषा में कुछ कहा। अधिकारी ने सिर हिलाया और सैनिकों को आदेश दिया। वे कुछ मोटे लट्ठे लेकर आए और उन्हें संगीनों से तीखा करने लगे, जल्दी से उन्हें चार खूंटों में बदल दिया। खूंटों के बीच की दूरी नापकर, उन्होंने चारों कोनों पर पत्थरों से उन्हें ज़मीन में गाड़ दिया। ये सारी तैयारियाँ करने में लगभग बीस मिनट लगे होंगे, लेकिन मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि ये किस लिए की जा रही थीं।

रूसी ने कहा, “उनके लिए, एक बेहतरीन वध एक बेहतरीन भोजन के समान है। वे तैयारी में जितना अधिक समय लगाते हैं, उन्हें उस कार्य से उतना ही अधिक आनंद मिलता है। किसी व्यक्ति को मारना उनके लिए कोई समस्या नहीं है: एक पिस्तौल की गोली और काम खत्म। लेकिन यह”—और यहाँ उन्होंने अपनी चिकनी ठुड्डी पर धीरे से उंगली फेरते हुए कहा—“बहुत दिलचस्प नहीं होगा।”
उन्होंने यामामोटो को खोल दिया और उसे खूंटियों से घिरे क्षेत्र में ले गए। वहाँ उन्होंने उसके हाथ-पैर चार खूंटियों से बाँध दिए। ज़मीन पर नग्न अवस्था में लेटे हुए यामामोटो के शरीर पर कई गहरे घाव थे।
रूसी अधिकारी ने कहा, “जैसा कि आप जानते हैं, ये लोग चरवाहे हैं। चरवाहे अपनी भेड़ों का कई तरह से इस्तेमाल करते हैं: वे उनका मांस खाते हैं, उनकी ऊन काटते हैं, उनकी खाल निकालते हैं। उनके लिए भेड़ें सबसे उत्तम जानवर हैं। वे अपना पूरा जीवन भेड़ों के साथ बिताते हैं। वे उन्हें बड़ी कुशलता से छीलना जानते हैं। उनकी खालों का इस्तेमाल वे तंबू और कपड़े बनाने में करते हैं। क्या आपने कभी उन्हें भेड़ छीलते देखा है?”
यामामोटो ने कहा, "बस मुझे मार दो और इस झंझट से छुटकारा पा लो।" रूसी व्यक्ति ने अपनी हथेलियों को आपस में जोड़ा और धीरे-धीरे उन्हें रगड़ते हुए यामामोतो को सिर हिलाकर इशारा किया। "चिंता मत करो," उसने कहा। “हम तुम्हें मार डालेंगे, मैं इसकी गारंटी देता हूँ। इसमें थोड़ा समय लग सकता है, लेकिन तुम मर जाओगे। इस बारे में चिंता करने की कोई बात नहीं है। हमें कोई जल्दी नहीं है। हम यहाँ विशाल जंगल में हैं, जहाँ दूर-दूर तक कुछ भी नहीं दिखता। बस समय है। जितना समय हमें चाहिए। और मुझे तुम्हें बहुत सी बातें बतानी हैं। अब, खाल उतारने की प्रक्रिया के बारे में:

सकते हैं जैसे आप आड़ू छीलते हैं। खूबसूरती से, बिना एक भी खरोंच के। क्या मैं आपको कुछ ज़्यादा ही तेज़ी से बोल रहा हूँ?” यामामोटो ने कुछ नहीं कहा।
रूसी अधिकारी ने कहा, “वे एक बार में छोटे से हिस्से पर काम करते हैं। अगर उन्हें बिना खरोंच के त्वचा को साफ-सुथरा हटाना है, तो उन्हें धीरे-धीरे काम करना होगा। अगर इस बीच आपको कुछ कहना हो, तो कृपया मुझे बता देना। फिर आपको मरना नहीं पड़ेगा। हमारे इस आदमी ने यह काम कई बार किया है, और आज तक वह किसी को भी बोलने पर मजबूर करने में नाकाम नहीं रहा है। इस बात को याद रखना। हम जितनी जल्दी काम रोकेंगे, हम दोनों के लिए उतना ही अच्छा होगा।” चाकू पकड़े हुए, भालू जैसे दिखने वाले मंगोलियाई अधिकारी ने यामामोतो को देखकर मुस्कुराया। आज तक मुझे वह मुस्कान याद है। मैं उसे अपने सपनों में देखता हूँ। मैं उसे कभी नहीं भूल पाया हूँ। मुस्कुराते ही वह काम पर लग गया। उसके आदमियों ने यामामोतो को हाथों और घुटनों के बल नीचे दबा दिया और वह बड़ी सावधानी से उसकी खाल उतारने लगा। यह सचमुच किसी आड़ू की खाल उतारने जैसा था। मैं यह सब देख नहीं सका। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। ऐसा करते ही एक सैनिक ने मुझे राइफल के बट से मारा। वह तब तक मारता रहा जब तक मैंने अपनी आँखें नहीं खोल लीं। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ा: आँखें खुली हों या बंद, मुझे यामामोतो की आवाज़ सुनाई दे रही थी। उसने पहले तो बिना आह भरे दर्द सहन किया। लेकिन जल्द ही वह चीखने लगा। मैंने ऐसी चीखें पहले कभी नहीं सुनी थीं: वे इस दुनिया का हिस्सा नहीं लगती थीं। उस आदमी ने यामामोतो का कंधा चीरकर शुरू किया और धीरे-धीरे, सावधानी से, लगभग प्यार से, उसके दाहिने हाथ की खाल ऊपर से नीचे की ओर उतारने लगा। रूसी अधिकारी के शब्दों में कहें तो, यह किसी कलाकृति जैसा

था। चीखों की आवाज़ के बिना कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि इसमें कोई दर्द भी शामिल था। लेकिन चीखों ने उस भयानक दर्द की कहानी बयां कर दी जो इस काम के दौरान सहना पड़ा था।
कुछ ही देर में यामामोतो के दाहिने हाथ की पूरी चमड़ी एक पतली चादर की तरह उतर गई। चमड़ी उतारने वाले ने उसे अपने बगल वाले आदमी को दे दिया, जिसने उसे अपनी उंगलियों में खोलकर रखा और बाकी लोगों को भी अच्छी तरह से दिखाया। इस दौरान चमड़ी से लगातार खून टपकता रहा। फिर अधिकारी यामामोतो के बाएं हाथ की ओर मुड़ा और वही प्रक्रिया दोहराई। इसके बाद उसने दोनों टांगों की चमड़ी उतारी, लिंग और अंडकोष काट दिए और कान अलग कर दिए। फिर उसने सिर, चेहरा और बाकी सब कुछ उतार दिया। यामामोतो बेहोश हो जाता, फिर होश में आता और फिर बेहोश हो जाता। जब भी वह बेहोश होता, उसकी चीखें बंद हो जातीं और जब होश में आता, फिर से शुरू हो जातीं। लेकिन उसकी आवाज धीरे-धीरे कमजोर होती गई और अंत में पूरी तरह से बंद हो गई। इस पूरे समय रूसी अधिकारी अपने जूते की एड़ी से जमीन पर अर्थहीन आकृतियाँ बनाता रहा। मंगोलियाई सैनिक चुपचाप यह सब देखते रहे। उनके चेहरे भावहीन थे, न तो घृणा, न उत्तेजना, न ही सदमा। उन्होंने यामामोटो की त्वचा को एक-एक करके उतारे जाते हुए उसी तरह के चेहरों के साथ देखा, जैसे हम टहलते हुए किसी निर्माण स्थल को देखने के लिए रुकते हैं तो हमारे चेहरे पर भाव आ जाते हैं।
इस बीच, मैं लगातार उल्टी करता रहा। बार-बार। जब ऐसा लगने लगा कि अब कुछ भी उल्टी करने को नहीं बचा है, तब भी मैं उल्टी करता रहा। अंत में, भालू जैसे दिखने वाले मंगोलियाई अधिकारी ने यामामोतो के धड़ की खाल ऊपर उठाई, जिसे उसने बड़ी सफाई से छील दिया था।
यहाँ तक कि उसके स्तन भी सही-सलामत थे। आज तक मैंने ऐसा भयानक

दृश्य कभी नहीं देखा। किसी ने उसकी खाल उतारी और उसे चादर की तरह सुखाने के लिए फैला दिया। ज़मीन पर केवल यामामोतो का शव पड़ा था, खून से लथपथ मांस का एक लोथड़ा, जिस पर से त्वचा का एक-एक अंश हटा दिया गया था। सबसे दर्दनाक दृश्य उसका चेहरा था। मांस के लाल लोथड़े से दो बड़ी सफेद आँखें झाँक रही थीं। दाँत बाहर निकले हुए थे, मुँह चीखने की तरह चौड़ा खुला हुआ था। नाक की जगह पर केवल दो छोटे छेद बचे थे। ज़मीन खून का सागर बन गई थी। रूसी अधिकारी ने ज़मीन पर थूका और मेरी तरफ देखा। फिर उसने अपनी जेब से एक रुमाल निकाला और अपना मुँह पोंछा। रुमाल वापस रखते हुए उसने कहा, "उस आदमी को सचमुच कुछ पता नहीं था, है ना?" उसकी आवाज़ पहले से कुछ दबी हुई लग रही थी। "अगर उसे पता होता, तो वह बता देता। अफ़सोस। लेकिन खैर, वह आदमी पेशेवर था। उसकी मौत तो देर-सवेर बुरी तरह होनी ही थी। खैर, अब क्या कर सकते हैं। और अगर उसे कुछ पता नहीं था, तो तुम्हें भी कैसे पता चल सकता था?"
उसने अपने होठों के बीच एक सिगरेट रखी और माचिस जलाई। “इसका मतलब है कि अब तुम हमारे किसी काम के नहीं हो। जानकारी के लिए तुम्हें यातना देना भी बेकार है। तुम्हें कैदी बनाकर ज़िंदा रखना भी बेकार है। हम इस मामले को पूरी गोपनीयता से निपटाना चाहते हैं। अगर हम तुम्हें वापस उलान बटोर ले गए तो दिक्कतें खड़ी हो सकती हैं। सबसे अच्छा तरीका तो यही होगा कि यहीं तुम्हारे दिमाग में गोली मार दी जाए, फिर तुम्हें दफना दिया जाए या जलाकर तुम्हारी राख खल्खा में बहा दी जाए। इससे मामला आसानी से सुलझ जाएगा। क्या तुम सहमत नहीं हो?” उसने अपनी निगाहें मेरी आँखों में गड़ा दीं। मैं यही दिखावा करता रहा कि मुझे उसकी बात समझ नहीं आ रही है। “लगता है तुम्हें रूसी समझ नहीं आती। तुम्हें सब कुछ समझाना समय की बर्बादी है। खैर, मैं मानो खुद से

ही बात कर रहा हूँ। तो सुनो मेरी बात। वैसे, मेरे पास तुम्हारे लिए एक अच्छी खबर है। मैंने तुम्हें न मारने का फैसला किया है। इसे मेरे उस पश्चाताप की छोटी सी अभिव्यक्ति समझो जो मैंने तुम्हारे दोस्त को बेवजह मारने के लिए किया। आज सुबह हम सबने हत्याएँ कर ली हैं। दिन में एक बार काफी है। इसलिए मैं तुम्हें नहीं मारूंगा। इसके बजाय, मैं तुम्हें बचने का मौका दूंगा। अगर सब ठीक रहा, तो तुम शायद ज़िंदा भी बच जाओ। बेशक, इसकी संभावना अच्छी नहीं है। शायद न के बराबर ही हो। लेकिन मौका तो मौका होता है। कम से कम जिंदा खाल उतारे जाने से तो बेहतर है। क्या तुम सहमत नहीं हो?”
उसने हाथ उठाकर मंगोलियाई अधिकारी को बुलाया। वह आदमी बड़ी सावधानी से कैंटीन के पानी से अपनी छुरी धो रहा था और अभी-अभी उसे सान पर तेज किया था। सैनिकों ने यामामोतो की खाल के टुकड़े फैला रखे थे और उनके पास खड़े होकर कुछ चर्चा कर रहे थे। ऐसा लग रहा था कि वे खाल उतारने की तकनीक की बारीकियों पर अपने विचार साझा कर रहे थे। मंगोलियाई अधिकारी ने अपनी छुरी म्यान में रखी और फिर उसे अपने कोट की जेब में रख लिया, उसके बाद वह हमारे पास आया। उसने एक पल के लिए मेरी ओर देखा, फिर अपने साथी अधिकारी की ओर मुड़ा। रूसी ने उससे मंगोलियाई भाषा में कुछ छोटे वाक्य कहे, और उस आदमी ने बिना कोई भाव दिखाए सिर हिलाया। एक सैनिक उनके लिए दो घोड़े लेकर आया।
“अब हम उलान बटोर वापस जा रहे हैं,” रूसी ने मुझसे कहा। “मुझे खाली हाथ लौटना अच्छा नहीं लगता, लेकिन कोई चारा नहीं। कभी मिलता है, कभी खोता है। मुझे उम्मीद है कि रात के खाने तक मेरी भूख वापस आ जाएगी, लेकिन मुझे इस पर संदेह है।”

फिर अचानक, कॉर्पोरल होंडा के शब्द मेरे दिमाग में फिर से गूंज उठे: उनकी वह अजीब भविष्यवाणी कि मैं महाद्वीप पर नहीं मरूंगा। मैं वहाँ बैठा था, घोड़े की पीठ से बंधा हुआ, मेरी नंगी पीठ रेगिस्तान की धूप में जल रही थी, फिर भी मैंने उनके कहे हर शब्द को बार-बार महसूस किया। मैंने उनके हाव-भाव, उनकी आवाज़, हर शब्द की ध्वनि पर ध्यान दिया। और मैंने दिल से उन पर विश्वास करने का निश्चय किया। नहीं, नहीं, मैं इस जगह पर लेटकर मरने वाला नहीं था! मैं यहाँ से ज़िंदा निकल आऊंगा! मैं अपनी जन्मभूमि पर फिर से कदम रखूंगा!
हम दो घंटे से ज़्यादा उत्तर की ओर यात्रा करते रहे और एक लामावादी धार्मिक टीले के पास रुक गए। ओबू कहे जाने वाले ये पत्थर के निशान यात्रियों के संरक्षक देवता और रेगिस्तान में महत्वपूर्ण मार्गदर्शक चिन्हों का काम करते हैं। यहाँ मेरे साथी घोड़े से उतरे और मेरी रस्सियाँ खोल दीं। दोनों ओर से मेरा भार संभालते हुए, उनमें से दो मुझे थोड़ी दूर ले गए। मुझे लगा कि यहीं मेरी हत्या की जाएगी। यहाँ ज़मीन में एक कुआँ खोदा गया था। कुएँ के मुँह के चारों ओर तीन फुट ऊँची पत्थर की दीवार थी। उन्होंने मुझे उसके पास घुटने टेकने को कहा, पीछे से मेरी गर्दन पकड़ी और मुझे अंदर देखने के लिए मजबूर किया। घोर अंधेरे में मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। बूट पहने हुए एक साथी ने मुट्ठी के आकार का एक पत्थर उठाया और उसे कुएँ में डाल दिया। कुछ देर बाद पत्थर के रेत से टकराने की सूखी आवाज़ आई। तो कुआँ सूखा हुआ था, ज़ाहिर है। यह कभी रेगिस्तान में कुएँ के रूप में इस्तेमाल होता रहा होगा, लेकिन पानी की भूमिगत धारा के हिलने के कारण यह बहुत पहले सूख गया होगा। पत्थर को तल तक पहुँचने में लगे समय को देखते हुए, ऐसा प्रतीत होता था कि वह जगह काफी गहरी थी।

बारे में सोचा जिसके साथ मैंने मुझे भेजे जाने से पहले सिर्फ़ एक बार संबंध बनाया था। मैंने अपने माता-पिता के बारे में सोचा।
मुझे याद है कि मैं इस बात के लिए आभारी था कि मेरी एक छोटी बहन थी, भाई नहीं: अगर मैं मर भी जाता, तो भी वह उनके पास रहती और उन्हें सेना द्वारा उसे ले जाने की चिंता नहीं करनी पड़ती। मैंने बलूत के पत्तों में लिपटे चावल के केक के बारे में सोचा। फिर मैं सूखी ज़मीन पर ज़ोर से गिरा और एक पल के लिए बेहोश हो गया। ऐसा लगा जैसे मेरे अंदर की सारी हवा मेरे शरीर की दीवारों को तोड़कर बाहर निकल गई हो। मैं कुएँ के तल पर रेत की बोरी की तरह धड़ाम से गिरा।
मुझे लगता है कि मैं सचमुच कुछ पल के लिए बेहोश हो गया था। जब मुझे होश आया, तो मुझे लगा कि मुझ पर कुछ फुहार पड़ रही है। पहले तो मुझे लगा कि बारिश हो रही है, लेकिन मैं गलत था। वह पेशाब था। मंगोलियाई सैनिक मुझ पर पेशाब कर रहे थे, जहाँ मैं कुएँ के तल में लेटा हुआ था। मैंने ऊपर देखा तो वे दूर से परछाईं की तरह दिख रहे थे, बारी-बारी से गोल छेद के किनारे आकर पेशाब कर रहे थे। यह दृश्य भयानक रूप से अवास्तविक था, जैसे किसी नशे के कारण मतिभ्रम हो रहा हो। लेकिन यह सच था। मैं सचमुच कुएँ के तल में था, और वे मुझ पर असली पेशाब छिड़क रहे थे। जब वे पेशाब करना बंद कर चुके, तो किसी ने मुझ पर टॉर्च की रोशनी डाली। मैंने उन्हें हंसते हुए सुना। और फिर वे छेद के किनारे से गायब हो गए। उसके बाद, सब कुछ गहरी खामोशी में डूब गया।
कुछ देर के लिए मुझे लगा कि वहीं औंधे मुंह लेटना ही बेहतर होगा, यह देखने के लिए कि वे लौटेंगे या नहीं। लेकिन बीस मिनट बीत गए, फिर तीस मिनट (बिना घड़ी के जितना मैं देख सका), वे नहीं लौटे। ऐसा लगा जैसे वे चले गए हों और मुझे अकेला छोड़ गए हों। मुझे

रेगिस्तान के बीचोंबीच एक कुएँ की तलहटी में छोड़ दिया गया था। जब यह स्पष्ट हो गया कि वे नहीं लौटेंगे, तो मैंने खुद को चोटों के लिए जाँचने का फैसला किया। अंधेरे में यह आसान काम नहीं था। मैं अपना शरीर नहीं देख पा रहा था। मैं अपनी आँखों से यह नहीं बता सकता था कि उसकी क्या हालत है। मैं केवल अपनी इंद्रियों के सहारे ही काम कर सकता था, लेकिन मुझे यकीन नहीं था कि अंधेरे में जो इंद्रियाँ मुझे दिखाई दे रही थीं वे सही थीं। मुझे लगा जैसे मुझे धोखा दिया जा रहा है, भ्रमित किया जा रहा है। यह एक बहुत ही अजीब एहसास था।
धीरे-धीरे, और बड़ी बारीकी से, मुझे अपनी स्थिति समझ में आने लगी। सबसे पहले मुझे एहसास हुआ कि मैं बहुत भाग्यशाली था। कुएँ का तल अपेक्षाकृत नरम और रेतीला था। अगर ऐसा न होता, तो इतनी ऊँचाई से गिरने के प्रभाव से मेरी हर हड्डी टूट जाती। मैंने एक लंबी, गहरी साँस ली और हिलने की कोशिश की। पहले मैंने अपनी उंगलियाँ हिलाने की कोशिश की। उन्होंने प्रतिक्रिया दी, हालाँकि थोड़ी कमज़ोरी से। फिर मैंने मिट्टी की सतह पर बैठने की कोशिश की, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाया। मेरे शरीर में जैसे सारी संवेदनाएँ खत्म हो गई हों। मेरा दिमाग पूरी तरह से सचेत था, लेकिन मेरे दिमाग और शरीर के बीच कुछ गड़बड़ थी। मेरा दिमाग कुछ करने का फैसला तो करता, लेकिन उस विचार को शारीरिक क्रिया में परिवर्तित नहीं कर पाता था। मैंने हार मान ली और कुछ देर तक अँधेरे में चुपचाप लेटा रहा।
मैं कितनी देर तक स्थिर रहा, इसका मुझे कोई अंदाजा नहीं है। लेकिन धीरे-धीरे मेरी चेतना वापस आने लगी। और चेतना वापस आने के साथ ही, स्वाभाविक रूप से, दर्द का अहसास भी शुरू हो गया। असहनीय दर्द। लगभग निश्चित रूप से, मेरी टांग टूट गई थी। और मेरा कंधा

शायद अपनी जगह से हट गया था या, अगर किस्मत मेरे खिलाफ थी, तो शायद टूट भी गया था।
मैं दर्द सहते हुए चुपचाप लेटा रहा। देखते ही देखते मेरी आँखों से आँसू बहने लगे—दर्द के आँसू और उससे भी बढ़कर, निराशा के आँसू। मुझे नहीं लगता कि आप कभी समझ पाएँगे कि यह कैसा होता है— घोर अकेलापन, हताशा का एहसास—दुनिया के छोर पर रेगिस्तान के बीचोंबीच एक गहरे कुएँ में अकेला छोड़ दिया जाना, घोर अंधेरे में असहनीय दर्द से तड़पना। मुझे इस बात का इतना अफ़सोस हुआ कि मंगोलियाई गैर-सैनिक ने मुझे गोली मारकर इस सब को खत्म क्यों नहीं कर दिया। अगर मुझे उस तरह मार दिया जाता, तो कम से कम उन्हें मेरी मौत की सूचना तो मिल जाती। लेकिन अगर मैं यहाँ मर जाता, तो यह सचमुच एक अकेली मौत होती, एक ऐसी मौत जिसकी किसी को परवाह नहीं होती, एक खामोश मौत।
कभी-कभार मुझे हवा की आवाज़ सुनाई देती थी। धरती पर चलते हुए, हवा कुएँ के मुहाने पर एक अजीब सी आवाज़ पैदा करती थी, मानो किसी दूर लोक में कोई सिसक रही हो। वह लोक और यह लोक एक संकरे रास्ते से जुड़े हुए थे, जिसके ज़रिए उस स्त्री की आवाज़ मुझ तक पहुँचती थी, हालाँकि बहुत लंबे और अनियमित अंतरालों पर। मैं घोर सन्नाटे और उससे भी गहरे अंधेरे में बिल्कुल अकेला रह गया था।
दर्द सहते हुए मैंने अपने चारों ओर की मिट्टी को छूने के लिए हाथ बढ़ाया। कुएँ का तल समतल था। यह ज़्यादा चौड़ा नहीं था, शायद पाँच या साढ़े पाँच फीट। जैसे ही मैं ज़मीन को टटोल रहा था, अचानक मेरा हाथ किसी कठोर, नुकीली चीज़ से टकरा गया। डर के मारे मैंने अपना हाथ पीछे खींच लिया, लेकिन फिर धीरे-धीरे और सावधानी से उस चीज़ की ओर बढ़ा। मेरी उंगलियाँ फिर से उस नुकीली चीज़ से

छू गईं। पहले तो मुझे लगा कि यह पेड़ की डाल है, लेकिन जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि मैं हड्डियों को छू रहा हूँ। इंसानी हड्डियाँ नहीं, बल्कि किसी छोटे जानवर की हड्डियाँ, जो समय के बीतने या मेरे गिरने से इधर-उधर बिखर गई थीं। कुएँ के तल में और कुछ नहीं था, बस रेत थी: बारीक और सूखी।
फिर मैंने दीवार पर हाथ फेरा। ऐसा लग रहा था मानो वह पतले, चपटे पत्थरों से बनी हो। दिन के समय रेगिस्तान की सतह जितनी गर्म होती थी, उतनी गर्मी ज़मीन के नीचे की दुनिया तक नहीं पहुँचती थी। पत्थरों में बर्फीली ठंडक थी। मैंने दीवार पर हाथ फेरते हुए पत्थरों के बीच की दरारों को देखा। अगर मुझे वहाँ पैर रखने की जगह मिल जाती, तो शायद मैं सतह तक चढ़ पाता। लेकिन दरारें इसके लिए बहुत संकरी निकलीं, और मेरी बुरी हालत में चढ़ना लगभग नामुमकिन लग रहा था।
बड़ी मुश्किल से मैंने खुद को घसीटते हुए दीवार के पास पहुँचाया और उसके सहारे बैठकर सहारा लिया। हर हरकत से मेरे पैर और कंधे में ऐसा दर्द हो रहा था मानो सैकड़ों मोटी सुइयाँ चुभ गई हों। उसके बाद कुछ देर तक, हर साँस के साथ ऐसा लग रहा था जैसे मेरा शरीर फट जाएगा। मैंने अपने कंधे को छुआ तो पाया कि वह गर्म और सूजा हुआ था।

•

उसके बाद कितना समय बीता, मुझे नहीं पता। लेकिन एक पल ऐसा आया जब कुछ ऐसा हुआ जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। कुएँ के मुँह से सूरज की रोशनी किसी चमत्कार की तरह अंदर आई। उस पल, मैं अपने चारों ओर सब कुछ देख सका। कुआँ तेज़ रोशनी से भर गया। मानो रोशनी की बाढ़ आ गई हो। चमक इतनी तेज़ थी कि साँस लेना भी मुश्किल हो रहा था। अँधेरा और ठंड पल भर में गायब हो गए, और गर्म,

लगातार बह रहा है। मैं थोड़ी देर सोया, ठंड और दर्द से जाग गया, थोड़ी देर और सोया, फिर जाग गया।
अंततः सुबह हो गई। कुएँ के गोल मुँह से तारों की तेज़ रोशनी धीरे-धीरे फीकी पड़ने लगी। फिर भी, भोर होने के बाद भी तारे पूरी तरह गायब नहीं हुए। लगभग न के बराबर धुंधले होकर वे वहाँ ठहरते रहे, निरंतर। अपनी प्यास बुझाने के लिए मैंने पत्थर की दीवार पर चिपकी ओस को चाटा। पानी की मात्रा बेशक बहुत कम थी, लेकिन मुझे वह स्वर्ग से मिली किसी वरदान जैसी लगी। मेरे मन में यह ख्याल आया कि मैंने पूरे दिन न तो खाना खाया था और न ही पानी। फिर भी मुझे भूख का कोई एहसास नहीं था।
मैं वहीं गड्ढे की तलहटी में स्थिर पड़ा रहा। यही मेरी एकमात्र इच्छा थी। मैं सोच भी नहीं पा रहा था, अकेलेपन और निराशा की भावनाएँ इतनी गहरी थीं। मैं वहाँ बैठा कुछ नहीं कर रहा था, कुछ नहीं सोच रहा था। फिर भी, अचेतन रूप से, मैं उस प्रकाश की किरण का, उस चकाचौंध कर देने वाली सूर्य की रोशनी का इंतज़ार कर रहा था जो दिन के एक छोटे से हिस्से के लिए सीधे कुएँ की तलहटी तक पहुँचती थी। यह घटना दोपहर के ठीक पहले घटित होती होगी, जब सूर्य आकाश में सबसे ऊँचा होता है और उसका प्रकाश पृथ्वी की सतह पर समकोण पर पड़ता है। मैं केवल उस प्रकाश के आने का इंतज़ार कर रहा था, और किसी चीज़ का नहीं। मेरे पास इंतज़ार करने के लिए और कुछ था ही नहीं।
ऐसा लगता है जैसे बहुत लंबा समय बीत गया हो। किसी समय मुझे नींद आ गई। जब मुझे किसी चीज की मौजूदगी का एहसास हुआ और मैं जागा, तब तक प्रकाश पहले से ही मौजूद था। मैंने महसूस किया कि मैं एक बार फिर उस असीम प्रकाश से घिर गया हूँ। लगभग अचेतन रूप से, मैंने अपने दोनों हाथ फैला दिए और सूर्य को अपनी हथेलियों में ग्रहण

किया। यह पहली बार से कहीं अधिक तीव्र था। और यह तब से कहीं अधिक देर तक टिका रहा। कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा। प्रकाश में, मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे शरीर के सारे द्रव आँसुओं में बदल जाएँगे और मेरी आँखों से बह निकलेंगे, जैसे मेरा शरीर ही पिघल जाएगा। अगर ऐसा उस अद्भुत प्रकाश के आनंद में हो सकता था, तो मृत्यु भी कोई खतरा नहीं होती। वास्तव में, मुझे लगा कि मैं मरना चाहता हूँ। मुझे एकता का एक अद्भुत अहसास हुआ, एक असीम एकता का अहसास। हाँ, यही था: जीवन का सच्चा अर्थ उस प्रकाश में निहित था जो कुछ सेकंड के लिए ही रहा, और मुझे लगा कि मुझे उसी क्षण मर जाना चाहिए।
लेकिन ज़ाहिर है, कुछ होने से पहले ही रोशनी गायब हो गई। मैं अब भी वहीं था, उस भयानक कुएँ की तलहटी में। अँधेरे और ठंड ने मुझ पर फिर से अपना कब्ज़ा जमा लिया, मानो यह ऐलान कर रहे हों कि रोशनी कभी थी ही नहीं। काफ़ी देर तक मैं वहीं दुबका रहा, मेरा चेहरा आँसुओं से भीगा हुआ था। मानो किसी बड़ी शक्ति ने मुझे हरा दिया हो, मैं कुछ भी करने या सोचने में असमर्थ था, यहाँ तक कि अपने शारीरिक अस्तित्व को भी महसूस नहीं कर पा रहा था। मैं एक सूखा हुआ शव था, किसी कीड़े का छिन्न-भिन्न खोल। लेकिन फिर, एक बार फिर, मेरे मन के खाली कमरे में, कॉर्पोरल होंडा की भविष्यवाणी लौट आई: मैं महाद्वीप पर नहीं मरूँगा। अब, रोशनी के आने और चले जाने के बाद, मैं उनकी भविष्यवाणी पर विश्वास करने लगा। अब मैं इस पर विश्वास कर सकता था क्योंकि, जिस जगह मुझे मर जाना चाहिए था, और जिस समय मुझे मर जाना चाहिए था, मैं मर नहीं पाया था। बात यह नहीं थी कि मैं मरूँगा नहीं: मैं मर ही नहीं सकता था। क्या आप समझ रहे हैं मैं क्या कह रहा हूँ, श्री ओकाडा?

उस क्षण तक मुझे जो भी दिव्य कृपा प्राप्त हो रही थी, वह हमेशा के लिए खो गई।

•

अपनी कहानी के इस मोड़ पर, लेफ्टिनेंट मामिया ने अपनी घड़ी देखी। “और जैसा कि आप देख सकते हैं,” उन्होंने धीरे से कहा, “मैं यहाँ हूँ।” उन्होंने अपना सिर हिलाया, मानो यादों के अदृश्य धागों को मिटाने की कोशिश कर रहे हों। “जैसा कि श्री होंडा ने कहा था, मैं महाद्वीप पर नहीं मरा। और हम चारों जो वहाँ गए थे, उनमें से मैं सबसे लंबा जिया हूँ।”
मैंने जवाब में सिर हिलाया।
“इतनी देर बोलने के लिए मुझे माफ़ कर दीजिए। एक बेकार बूढ़े आदमी की पुरानी बातों को सुनना आपके लिए बहुत उबाऊ रहा होगा।” लेफ्टिनेंट मामिया सोफे पर थोड़ा हिले-डुले। “हे भगवान, अगर मैं और देर बैठा रहा तो मेरी ट्रेन छूट जाएगी।”
मैंने उसे रोकने की जल्दी की। मैंने कहा, "कृपया अपनी कहानी यहीं खत्म मत करो। उसके बाद क्या हुआ? मैं बाकी की कहानी सुनना चाहता हूँ।"
उसने एक पल के लिए मेरी तरफ देखा।
“तो कैसा रहेगा?” उसने पूछा। “मुझे सच में देर हो रही है, तो क्यों न तुम मेरे साथ बस स्टॉप तक चलो? रास्ते में मैं तुम्हें संक्षेप में सब कुछ बता भी दूंगा।”
मैं उसके साथ घर से निकला और बस स्टॉप तक पैदल गया।
“तीसरी सुबह, मुझे कॉर्पोरल होंडा ने बचाया। उन्हें आभास हो गया था कि मंगोल उस रात हम पर हमला करने आ रहे हैं, इसलिए वे चुपके से तंबू से बाहर निकल गए और तब तक छिपे रहे। वे यामामोतो के थैले से दस्तावेज़ अपने साथ ले गए थे। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि

हमारी सबसे पहली प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना था कि दस्तावेज़ दुश्मन के हाथों में न पड़े, चाहे इसके लिए हमें कितना भी बड़ा बलिदान क्यों न देना पड़े। आप सोच रहे होंगे कि अगर उन्हें मंगोलों के आने का आभास था, तो कॉर्पोरल होंडा ने हम सबको जगाने के बजाय अकेले क्यों भाग गए ताकि हम सब एक साथ भाग सकें। सीधी सी बात यह है कि ऐसी स्थिति में हमारे जीतने की कोई उम्मीद नहीं थी। उन्हें पता था कि हम वहाँ हैं। वह उनका इलाका था। उनकी संख्या और हथियार हमसे कहीं ज़्यादा थे। उनके लिए हमें ढूंढना, मारना और दस्तावेज़ ले जाना दुनिया का सबसे आसान काम होता। हालात को देखते हुए, कॉर्पोरल होंडा के पास अकेले भागने के अलावा कोई चारा नहीं था। युद्ध के मैदान में, उनका यह काम गोलीबारी के बीच भागने का स्पष्ट मामला होता, लेकिन एक विशेष मिशन पर, हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज है साधन संपन्नता।
“उसने सब कुछ देखा। उसने यामामोतो की खाल उतारते हुए देखा। उसने मंगोलियाई सैनिकों को मुझे ले जाते हुए देखा। लेकिन उसके पास घोड़ा नहीं था, इसलिए वह तुरंत मेरे पीछे नहीं आ सका। उसे पैदल आना पड़ा। उसने रेगिस्तान में दबा हुआ हमारा अतिरिक्त सामान खोदा और उसमें दस्तावेज़ को दबा दिया। फिर वह मेरे पीछे आया। हालाँकि, कुएँ में मुझे ढूँढ़ने के लिए उसे बहुत मेहनत करनी पड़ी। उसे यह भी नहीं पता था कि हम किस दिशा में गए थे।”
मैंने पूछा, "उसे कुआँ कैसे मिला?"
“मुझे नहीं पता,” लेफ्टिनेंट मामिया ने कहा। “उन्होंने इसके बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहा। मुझे लगता है कि उन्हें बस पता था। जब उन्होंने मुझे पाया, तो उन्होंने अपने कपड़े फाड़कर पट्टियाँ बनाईं और एक लंबी रस्सी बनाई। तब तक मैं लगभग बेहोश हो

चुका था, जिससे मुझे ऊपर खींचना उनके लिए और भी मुश्किल हो गया। फिर उन्होंने किसी तरह एक घोड़ा ढूँढा और मुझे उस पर बिठाया। वे मुझे रेत के टीलों और नदी के पार ले गए और मंचुकुओ सेना की चौकी तक पहुँचाया। वहाँ उन्होंने मेरे ज़ख्मों का इलाज किया और मुझे मुख्यालय से भेजी गई एक गाड़ी में बिठा दिया। मुझे हैलार के अस्पताल ले जाया गया।”
“उस दस्तावेज़ या पत्र या जो भी वह था, उसका क्या हुआ?”
“यह शायद अभी भी वहीं है, खलखा नदी के पास ज़मीन में दबी हुई। कॉर्पोरल होंडा और मेरे लिए वापस जाकर इसे खोदकर निकालना नामुमकिन था, और न ही हमें ऐसा करने का कोई कारण नज़र आया। हम इस नतीजे पर पहुँचे कि ऐसी कोई चीज़ होनी ही नहीं चाहिए थी। हमने सेना की जाँच के लिए अपनी कहानियाँ आपस में मिला लीं। हमने यह ज़िद करने का फ़ैसला किया कि हमने किसी दस्तावेज़ के बारे में कुछ नहीं सुना था। वरना, वे शायद हमें रेगिस्तान से इसे वापस न लाने के लिए ज़िम्मेदार ठहरा देते। उन्होंने हमें अलग-अलग कमरों में, कड़ी सुरक्षा में, कथित तौर पर चिकित्सा उपचार के लिए रखा, और हमसे रोज़ पूछताछ की। ये सभी उच्च पदस्थ अधिकारी आते और हमसे बार-बार हमारी कहानियाँ दोहराने को कहते। उनके सवाल बारीकी से और बहुत चालाकी से पूछे गए थे। लेकिन ऐसा लगता था कि वे हम पर विश्वास कर रहे थे। मैंने उन्हें अपने अनुभव का हर छोटा-सा ब्यौरा दिया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि दस्तावेज़ के बारे में मुझे जो कुछ भी पता था, उसे मैंने न बताया। जब उन्होंने सब कुछ लिख लिया, तो उन्होंने मुझे चेतावनी दी कि यह एक अति-गोपनीय मामला है जो सेना के औपचारिक रिकॉर्ड में नहीं आएगा, कि मुझे इसके बारे में कभी किसी से बात नहीं करनी है, और यह कि मैं अगर मैंने ऐसा किया होता तो मुझे कड़ी सजा मिलती। दो

हफ्ते बाद मुझे मेरे मूल पद पर वापस भेज दिया गया, और मेरा मानना है कि कॉर्पोरल होंडा को भी उनकी मूल यूनिट में वापस भेज दिया गया था।
मैंने कहा, "एक बात मुझे अभी भी समझ नहीं आई है। उन्होंने इस काम के लिए श्री होंडा को उनकी यूनिट से लाने की इतनी मेहनत क्यों की?"
“उन्होंने मुझसे इस बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहा। शायद उन्हें किसी को बताने से मना किया गया था, और मुझे लगता है कि उन्होंने सोचा होगा कि मेरे लिए न जानना ही बेहतर होगा। हालाँकि, उनसे हुई बातचीत के आधार पर, मुझे लगता है कि उनके और यामामोतो नाम के उस व्यक्ति के बीच किसी तरह का निजी रिश्ता था, जिसका संबंध उनकी विशेष शक्तियों से था। मैंने अक्सर सुना था कि सेना में तंत्र-मंत्र के अध्ययन के लिए एक इकाई है। कहा जाता है कि वे पूरे देश से आध्यात्मिक या मनो-गतिशील शक्तियों वाले लोगों को इकट्ठा करते थे और उन पर प्रयोग करते थे। मुझे लगता है कि श्री होंडा की मुलाकात यामामोतो से इसी सिलसिले में हुई थी। खैर, अपनी उन शक्तियों के बिना, श्री होंडा मुझे कुएँ में कभी नहीं ढूंढ पाते और मुझे मंचुकुओ सेना चौकी के सही स्थान तक नहीं पहुँचा पाते। उनके पास न तो नक्शा था और न ही कंपास, फिर भी वे हमें बिना किसी संदेह के सीधे वहाँ ले गए। सामान्य ज्ञान कहता है कि ऐसा होना असंभव है। मैं एक पेशेवर नक्शा बनाने वाला था, और मैं उस क्षेत्र के भूगोल को अच्छी तरह जानता था, लेकिन मैं वह कभी नहीं कर सकता था जो उन्होंने किया। श्री होंडा की ये शक्तियाँ शायद यामामोटो उनसे यही उम्मीद कर रहे थे।
हम बस स्टॉप पर पहुंचे और इंतजार करने लगे।

“कुछ बातें तो हमेशा रहस्य ही रहेंगी,” लेफ्टिनेंट मामिया ने कहा। “ऐसी बहुत सी बातें हैं जो मुझे अब भी समझ नहीं आतीं। मैं अब भी सोचता हूँ कि रेगिस्तान में हमसे मिलने वाला वह अकेला मंगोलियाई अधिकारी कौन था। और मैं यह भी सोचता हूँ कि अगर हम वह दस्तावेज़ मुख्यालय वापस लाने में कामयाब हो जाते तो क्या होता। यामामोतो ने हमें खल्खा नदी के दाहिने किनारे पर छोड़कर खुद ही नदी पार क्यों नहीं कर ली? इस तरह वह कहीं अधिक आज़ादी से घूम सकता था। शायद वह मंगोलियाई सैनिकों को चकमा देने के लिए हमारा इस्तेमाल करने की योजना बना रहा था ताकि वह अकेले भाग सके। यह बिल्कुल संभव है। शायद कॉर्पोरल होंडा को यह बात शुरू से ही समझ आ गई थी और इसीलिए जब मंगोलियाई सैनिकों ने उसे मारा तो वह चुपचाप खड़ा रहा।”
खैर, उसके बाद कॉर्पोरल होंडा और मुझे दोबारा मिलने का मौका बहुत लंबे समय बाद मिला। हैलार पहुँचते ही हम अलग हो गए और हमें बात करने या एक-दूसरे को देखने तक की मनाही थी। मैं उन्हें आखिरी बार धन्यवाद देना चाहता था, लेकिन उन्होंने ऐसा होने ही नहीं दिया। नोमोनहान की लड़ाई में वे घायल हो गए और उन्हें घर भेज दिया गया, जबकि मैं युद्ध समाप्त होने तक मंचूरिया में ही रहा, जिसके बाद मुझे साइबेरिया भेज दिया गया। साइबेरिया में नजरबंदी से वापस आने के कई साल बाद ही मैं उनसे मिल पाया। उसके बाद हम कुछ बार मिले और चिट्ठियाँ लिखते रहे। लेकिन वे खलखा नदी पर हमारे साथ जो हुआ था, उसके बारे में बात करने से कतराते थे, और मैं भी इस बारे में बात करने को उत्सुक नहीं था। हम दोनों के लिए यह एक बहुत बड़ा अनुभव था। हमने इस बारे में बात न करके ही इसे साझा किया। क्या यह बात समझ में आती है?

“यह कहानी बहुत लंबी हो गई है, लेकिन मैं आपको जो बताना चाहता था, वह यह था कि मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा असली जीवन बाहरी मंगोलिया के रेगिस्तान में उस कुएँ की गहराई में ही समाप्त हो गया हो। मुझे ऐसा लगता है जैसे कुएँ की तलहटी में दिन में केवल दस या पंद्रह सेकंड के लिए चमकने वाले तीव्र प्रकाश में, मैंने अपने जीवन का मूल तत्व जला दिया, जब तक कि कुछ भी शेष नहीं रह गया। वह प्रकाश मेरे लिए इतना रहस्यमय था। मैं इसे अच्छी तरह से समझा नहीं सकता, लेकिन जितनी ईमानदारी और सरलता से मैं कह सकता हूँ, उसके बाद मैंने जो कुछ भी देखा, जो कुछ भी अनुभव किया, मेरे दिल की गहराई में कुछ भी महसूस होना बंद हो गया। उन विशाल सोवियत टैंक इकाइयों के सामने भी, जब मैंने अपना बायाँ हाथ खो दिया, यहाँ तक कि उन भयानक सोवियत नजरबंदी शिविरों में भी, मुझे बस एक तरह की सुन्नता महसूस हुई। यह कहना अजीब लग सकता है, लेकिन इनमें से किसी का कोई महत्व नहीं था। मेरे अंदर कुछ मर चुका था। शायद, जैसा कि मुझे उस समय लगा, मुझे उस प्रकाश में मर जाना चाहिए था, बस लुप्त हो जाना चाहिए था। वही मेरे मरने का समय था। लेकिन, श्री होंडा ने भविष्यवाणी की थी, मैं वहां नहीं मरा। या शायद मुझे कहना चाहिए कि मैं वहां मर नहीं सकता था।
“मैं अपना हाथ और बारह अनमोल साल खोकर जापान लौट आया। जब मैं हिरोशिमा पहुँचा, तब तक मेरे माता-पिता और बहन की मृत्यु हो चुकी थी। उन्होंने मेरी छोटी बहन को एक कारखाने में काम पर लगा रखा था, जहाँ वह बम गिरने के समय थी। मेरे पिता उस समय उससे मिलने जा रहे थे, और उनकी भी जान चली गई। इस सदमे से मेरी माँ मृत्युशय्या पर चली गईं; अंततः 1947 में उनका देहांत हो गया। जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, जिस लड़की से मेरी गुप्त सगाई हुई थी, उसकी अब किसी और से शादी हो चुकी थी, और उसने दो

बच्चों को जन्म दिया था। कब्रिस्तान में, मुझे अपनी कब्र मिली। मेरे लिए वहाँ कुछ भी नहीं बचा था। मैं सचमुच खालीपन महसूस कर रहा था, और जानता था कि मुझे वहाँ वापस नहीं आना चाहिए था। मुझे मुश्किल से ही याद है कि उसके बाद मेरा जीवन कैसा रहा। मैं सामाजिक अध्ययन का शिक्षक बन गया और हाई स्कूल में भूगोल और इतिहास पढ़ाया, लेकिन मैं शब्द के सही अर्थों में, जीवित नहीं था। मैं बस एक के बाद एक सौंपे गए नीरस कार्यों को करता रहा। मेरा कभी कोई सच्चा दोस्त नहीं था, मेरे अधीन छात्रों के साथ कोई मानवीय संबंध नहीं था। मैंने कभी किसी से प्यार नहीं किया। मुझे अब यह भी नहीं पता था कि किसी दूसरे व्यक्ति से प्यार करने का क्या मतलब होता है। मैं आँखें बंद करती और यामामोतो को जिंदा छीलते हुए देखती। मैं बार-बार इसके सपने देखती। बार-बार मैं उन्हें उसकी खाल उतारते और उसे मांस के लोथड़े में बदलते हुए देखती। मैं उसकी दिल दहला देने वाली चीखें सुन सकती थी। मुझे खुद के भी सपने आते थे, जिसमें मैं कुएँ की तलहटी में धीरे-धीरे सड़ रही होती थी, जिंदा। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता था कि यही सच में हुआ है और यहाँ मेरा जीवन एक सपना है।
“जब श्री होंडा ने खलखा नदी के किनारे मुझसे कहा कि मैं महाद्वीप पर नहीं मरूँगा, तो मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ। यह विश्वास करने या न करने की बात नहीं थी: मैं उस समय किसी भी चीज़ से जुड़ना चाहता था—किसी भी चीज़ से। श्री होंडा शायद यह जानते थे और उन्होंने मुझे सांत्वना देने के लिए ऐसा किया। लेकिन मुझे कोई खुशी नहीं मिली। जापान लौटने के बाद, मैं एक खोखले शरीर की तरह जीने लगा। खोखले शरीर की तरह जीना वास्तव में जीना नहीं है, चाहे कितने भी साल बीत जाएँ। खोखले शरीर का हृदय और

शरीर खोखले शरीर के जीवन के अलावा और कुछ नहीं जन्म देता। श्री ओकाडा, मुझे आशा है कि मैंने आपको यह बात स्पष्ट कर दी है।” मैंने हिम्मत करके पूछा, "क्या इसका मतलब यह है कि जापान लौटने के बाद आपने कभी शादी नहीं की?"
“बिल्कुल नहीं,” लेफ्टिनेंट मामिया ने उत्तर दिया। “मेरी न तो पत्नी है, न माता-पिता और न ही भाई-बहन। मैं बिल्कुल अकेला हूँ।” एक पल हिचकिचाने के बाद, मैंने पूछा, "क्या आपको इस बात का अफसोस है कि आपने कभी श्री होंडा की भविष्यवाणी सुनी थी?"
अब लेफ्टिनेंट मामिया की बारी थी हिचकिचाने की। कुछ पल की चुप्पी के बाद, उन्होंने सीधे मेरी आँखों में देखा। “शायद मैं हूँ,” उन्होंने कहा। “शायद उन्हें वे शब्द कभी नहीं बोलने चाहिए थे। शायद मुझे उन्हें कभी सुनना ही नहीं चाहिए था। जैसा कि श्री होंडा ने उस समय कहा था, किसी व्यक्ति का भाग्य वह होता है जिसे बाद में याद किया जाता है, न कि जिसे पहले से जाना जा सके। हालाँकि, मैं इस बात पर यकीन करता हूँ: अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं अब बस जीने के अपने कर्तव्य को निभा रहा हूँ।”
बस आई और लेफ्टिनेंट मामिया ने झुककर मेरा अभिवादन किया। फिर उन्होंने मेरा कीमती समय लेने के लिए क्षमा मांगी। “ठीक है, तो अब मैं चलता हूँ,” उन्होंने कहा। “सब कुछ के लिए धन्यवाद। मुझे खुशी है कि मैं आपको श्री होंडा का पैकेज सौंप सका। इसका मतलब है कि मेरा काम आखिरकार पूरा हो गया। मैं चैन से घर जा सकता हूँ।” अपने दाहिने हाथ और कृत्रिम हाथ दोनों का इस्तेमाल करते हुए, उन्होंने कुशलता से आवश्यक सिक्के निकाले और उन्हें किराया पेटी में डाल दिया।
मैं वहीं खड़ा रहा और बस को अगले मोड़ पर ओझल होते हुए देखता रहा। उसके चले जाने के बाद, मुझे अंदर एक अजीब सा खालीपन महसूस

हुआ, एक निराशा भरी भावना, ठीक वैसे ही जैसे किसी छोटे बच्चे को किसी अनजान इलाके में अकेला छोड़ दिया गया हो।
फिर मैं घर गया और लिविंग रूम के सोफे पर बैठकर मैंने वह पैकेट खोला जो श्री होंडा ने मेरे लिए यादगार के तौर पर छोड़ा था। सावधानी से सील किए गए रैपिंग पेपर की परतें हटाते-हटाते मुझे पसीना आ गया, तब जाकर एक मजबूत गत्ते का डिब्बा निकला। यह एक शानदार कटी सार्क गिफ्ट बॉक्स था, लेकिन व्हिस्की की बोतल रखने के लिए बहुत हल्का था। मैंने उसे खोला तो अंदर कुछ नहीं था। वह बिल्कुल खाली था। श्री होंडा ने मेरे लिए सिर्फ एक खाली डिब्बा छोड़ा था।

भाग दो: पक्षी पैगंबर के रूप में (जुलाई से अक्टूबर 1984)

जितना संभव हो कंक्रीट

•

साहित्य में भूख
उस रात कुमिको वापस नहीं आई। मैं आधी रात तक जागता रहा, पढ़ता रहा, संगीत सुनता रहा और उसका इंतज़ार करता रहा, लेकिन आखिरकार मैंने हार मान ली और सोने चला गया। मैं लाइट जलाकर सो गया। सुबह छह बजे मैं उठा। खिड़की के बाहर दिन की पूरी रोशनी थी। पतले पर्दे के पार पक्षी चहचहा रहे थे। बिस्तर पर मेरी पत्नी का कोई निशान नहीं था। सफेद तकिया वहीं पड़ा था, ऊंचा और मुलायम। जहाँ तक मेरी नज़र जाती थी, रात भर किसी ने उस पर सिर नहीं रखा था। उसके ताज़े धुले, करीने से तह किए हुए गर्मियों के पजामे नाइट टेबल पर पड़े थे। मैंने उन्हें धोया था। मैंने उन्हें तह किया था। मैंने अपने तकिए के पास का लैंप बंद किया और गहरी साँस ली, मानो समय के प्रवाह को नियंत्रित कर रहा हो।
मैंने पजामा पहने हुए ही घर का चक्कर लगाया। सबसे पहले मैं रसोई में गई, फिर बैठक का जायजा लिया और कुमिको के कमरे में भी देखा। मैंने बाथरूम भी चेक किया और, बस तसल्ली के लिए, अलमारियों में भी देखा। उसका कहीं कोई निशान नहीं था। घर हमेशा से ज़्यादा शांत लग रहा था। मुझे ऐसा लगा जैसे इधर-उधर घूमने से ही इस जगह की शांति भंग हो रही हो, और वो भी बिना किसी वजह के।
मेरे पास करने को कुछ नहीं था। मैं रसोई में गई, केतली में पानी भरा और गैस जला दी। पानी उबलने पर मैंने कॉफ़ी बनाई और रसोई की मेज पर बैठकर एक घूंट पी। फिर मैंने टोस्ट बनाया और फ्रिज से आलू का सलाद निकाला। सालों में यह पहली बार था जब मैंने अकेले नाश्ता किया था। सोचें तो, एक बार की व्यावसायिक यात्रा को

नल से पानी भरकर पी लिया। वैसे भी मुझे कॉफी पीने की उतनी इच्छा नहीं थी।

•

मैंने साढ़े नौ बजे तक इंतजार किया और कुमिको के दफ्तर में फोन किया। एक महिला ने फोन उठाया।
मैंने पूछा, "क्या मैं कुमिको ओकाडा से बात कर सकती हूँ?"
मुझे खेद है, लेकिन ऐसा लगता है कि वह अभी तक यहां नहीं आई है। मैंने उसे धन्यवाद कहा और फोन रख दिया। फिर मैंने शर्ट इस्त्री करना शुरू कर दिया, जैसा कि मैं हमेशा बेचैनी महसूस होने पर करती थी। जब शर्ट खत्म हो गईं, तो मैंने पुराने अखबार और पत्रिकाएँ बाँधकर रख दीं, सिंक और अलमारी की अलमारियों को पोंछा, शौचालय और बाथटब को साफ किया। मैंने शीशों और खिड़कियों को कांच साफ करने वाले पदार्थ से चमकाया। मैंने छत के फिक्स्चर खोलकर फ्रॉस्टेड ग्लास को धोया। मैंने चादरें उतारकर वॉशिंग मशीन में डाल दीं और नई चादरें बिछा दीं।
ग्यारह बजे मैंने फिर से दफ्तर में फोन किया। उसी लड़की ने फोन उठाया और उसने फिर से मुझे बताया कि कुमिको नहीं आई है।
मैंने पूछा, "क्या वह आज काम पर न आने की योजना बना रही थी?" “मेरी जानकारी में तो नहीं,” उसने बिना किसी भावना के कहा। वह तो बस तथ्यों की जानकारी दे रही थी।
अगर कुमिको ग्यारह बजे तक भी काम पर नहीं पहुँची होती, तो कुछ तो गड़बड़ थी। ज़्यादातर प्रकाशकों के संपादकीय कार्यालय अनियमित समय पर चलते थे, लेकिन कुमिको की कंपनी का ऐसा नहीं था। स्वास्थ्य और प्राकृतिक खाद्य पदार्थों पर पत्रिकाएँ प्रकाशित करने वाली इस कंपनी को ऐसे लेखकों और अन्य पेशेवरों—खाद्य उत्पादकों, किसानों, डॉक्टरों—से निपटना पड़ता था जो सुबह

जल्दी काम पर आते थे और शाम को घर लौटते थे। उनकी सुविधा के लिए, कुमिको और उनके सहकर्मी ठीक नौ बजे कंपनी में आते थे और पाँच बजे तक निकल जाते थे, जब तक कि कोई विशेष कारण न हो।
फोन रखने के बाद, मैं बेडरूम में गई और उसकी अलमारी में देखने लगी। अगर वह भाग गई होती, तो कुमिको उसके कपड़े ले गई होती। मैंने वहाँ टंगी हुई ड्रेस, ब्लाउज़ और स्कर्ट देखीं। बेशक, मुझे उसके सारे कपड़ों के बारे में पता नहीं था—मुझे अपने सारे कपड़ों के बारे में भी नहीं पता था—लेकिन मैं अक्सर उसके कपड़े लॉन्ड्री में ले जाती और उसके लिए वापस लाती थी, इसलिए मुझे अच्छी तरह पता था कि वह कौन से कपड़े सबसे ज़्यादा पहनती थी और कौन से उसके लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी थे, और जहाँ तक मुझे याद है, लगभग सब कुछ वहीं था।
इसके अलावा, उसे अपने साथ ज़्यादा कपड़े ले जाने का मौका भी नहीं मिला था। मैंने पिछले दिन घर से उसके निकलने की हर बात को यथासंभव याद करने की कोशिश की—उसने जो कपड़े पहने थे, जो बैग वह लिए हुए थी। उसके पास बस वही कंधे वाला बैग था जो वह हमेशा काम पर ले जाती थी, जिसमें नोटबुक, कॉस्मेटिक्स, बटुआ, पेन, रुमाल और टिशू पेपर भरे हुए थे। उसमें कपड़े बदलने की जगह तो बिलकुल भी नहीं होती।
मैंने उसकी ड्रेसर की दराजें देखीं। एक्सेसरीज़, स्टॉकिंग्स, सनग्लासेस, पैंटी, कॉटन टॉप: सब कुछ करीने से कतारों में रखा हुआ था। अगर कुछ गायब भी हुआ था, तो मुझे पता नहीं चल पाया। पैंटी और स्टॉकिंग्स, बेशक, वो अपने शोल्डर बैग में रख सकती थी, लेकिन सोचने पर पता चलता है कि वो ऐसा क्यों करती? ये तो वो कहीं से भी खरीद सकती थी।

मैं बरामदे में बैठकर बगीचे को देखने गया, लेकिन असल में मैंने कुछ भी नहीं देखा। मैंने सोचने की कोशिश की, लेकिन मेरा ध्यान किसी एक चीज़ पर केंद्रित नहीं हो पा रहा था। बार-बार मेरे मन में बस कुमिको की पीठ का ही ख्याल आ रहा था, जब मैं उसकी पोशाक की ज़िप खोल रहा था—उसकी पीठ, और उसके कानों के पीछे लगे इत्र की खुशबू।
एक बजे के बाद फोन की घंटी बजी। मैं सोफे से उठा और रिसीवर उठाया।
“माफ़ कीजिए, क्या यह श्री ओकाडा का घर है?” एक महिला की आवाज़ आई। यह माल्टा कानो थी।
“बिल्कुल सही,” मैंने कहा।
“मेरा नाम माल्टा कानो है। मैं बिल्ली के बारे में पूछने के लिए फोन कर रही हूँ।”
“बिल्ली?” मैंने कुछ उलझन के साथ कहा। मैं तो बिल्कुल भूल ही गया था। अब, बेशक, मुझे याद आ गया, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे बहुत समय पहले की बात हो।
"श्रीमती ओकाडा जिस बिल्ली की तलाश कर रही थीं," माल्टा कानो ने समझाया।
“जी हां, जी हां,” मैंने कहा।
माल्टा कानो दूसरी तरफ चुप हो गई, मानो कुछ समझ रही हो। मेरी आवाज़ का लहजा शायद उसे सचेत कर गया था। मैंने गला साफ़ किया और रिसीवर दूसरे हाथ में ले लिया।
कुछ देर रुकने के बाद माल्टा कानो ने कहा, “मुझे आपको बताना ही होगा, श्री ओकाडा, मेरा मानना है कि बिल्ली लगभग कभी नहीं मिलेगी। मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है, लेकिन आपके पास यही एकमात्र उपाय है कि आप इस सच्चाई को स्वीकार कर लें। वह हमेशा

के लिए चली गई है। अगर कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ, तो बिल्ली कभी वापस नहीं आएगी।”
“कोई बड़ा बदलाव?” मैंने पूछा। लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। माल्टा कानो काफी देर तक चुप रहीं। मैं उनके बोलने का इंतज़ार करता रहा, लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद मुझे उनकी तरफ से ज़रा सी भी आहट सुनाई नहीं दी। जैसे ही मुझे शक होने लगा कि टेलीफ़ोन में कुछ खराबी है, तभी उन्होंने फिर बोलना शुरू किया। "श्री ओकाडा, यह कहना शायद मेरे लिए बहुत असभ्य होगा, लेकिन बिल्ली के अलावा, क्या ऐसा कुछ नहीं है जिसमें मैं आपकी मदद कर सकूँ?"
मैं उसे तुरंत जवाब नहीं दे सका। फोन का रिसीवर हाथ में लिए मैं दीवार से टेक लगाकर बैठ गया। शब्द निकलने में थोड़ा समय लगा। मैंने कहा, “मुझे अभी भी सब कुछ स्पष्ट नहीं है। मुझे कुछ भी पक्का पता नहीं है। मैं अपने मन में सब कुछ समझने की कोशिश कर रहा हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि मेरी पत्नी मुझे छोड़कर चली गई है।” मैंने उसे बताया कि कुमिको पिछली रात घर नहीं आई थी और उस सुबह काम पर भी नहीं गई थी।
वह अपने मन में इस बारे में सोचती हुई प्रतीत हुई। उसने कहा, “आप बहुत चिंतित होंगे। इस समय मैं कुछ नहीं कह सकती, लेकिन जल्द ही सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा। अभी आपको बस इंतजार करना होगा। यह आपके लिए कठिन होगा, लेकिन हर चीज का एक सही समय होता है। जैसे ज्वार-भाटे का उतार-चढ़ाव होता है। कोई भी इसे बदल नहीं सकता। जब इंतजार करने का समय हो, तो आपको इंतजार करना ही होगा।”
देखिए, मिस कानो, आपने बिल्ली वगैरह के लिए जो भी परेशानी उठाई, उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ, लेकिन अभी मेरा मन मीठी-मीठी बातें करने का नहीं है। मैं खोया हुआ महसूस कर रहा हूँ। सचमुच

खोया हुआ। कुछ भयानक होने वाला है: मुझे ऐसा लग रहा है। लेकिन मुझे नहीं पता कि क्या करना है। मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा कि मुझे क्या करना चाहिए। क्या यह बात स्पष्ट है? मुझे यह भी नहीं पता कि इस कॉल के बाद मुझे क्या करना चाहिए। मुझे अभी तथ्यों की ज़रूरत है। ठोस तथ्यों की। चाहे वे कितने भी सरल और बेतुके क्यों न हों, मुझे किसी भी तरह के तथ्य चाहिए—क्या मेरी बात समझ में आ रही है? मुझे कुछ ऐसा चाहिए जिसे मैं देख और छू सकूँ।
फोन पर मुझे फर्श पर कुछ गिरने की आवाज़ सुनाई दी: कोई हल्की सी चीज़—शायद एक मोती—लकड़ी के फर्श पर गिरी। इसके बाद रगड़ने की आवाज़ आई, जैसे किसी ने उंगलियों में ट्रेसिंग पेपर का एक टुकड़ा पकड़ा हो और उसे ज़ोर से खींचा हो। ये हरकतें फोन से न तो बहुत पास और न ही बहुत दूर कहीं हो रही थीं, लेकिन माल्टा कानो को इनमें कोई दिलचस्पी नहीं थी।
“ठीक है,” उसने सपाट, भावहीन स्वर में कहा। “कुछ ठोस।”
“बिल्कुल सही। जितना संभव हो उतना ठोस।”
"फोन कॉल का इंतजार करो।"
मैं बस फोन कॉल का इंतजार कर रहा हूं।
आपको जल्द ही एक ऐसे व्यक्ति का फोन आएगा जिसका नाम 'ओ' से शुरू होता है।
क्या इस व्यक्ति को कुमिको के बारे में कुछ पता है?
“मैं यह नहीं कह सकता। मैं आपको यह सिर्फ इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि आपने कहा था कि आप कोई भी ठोस तथ्य स्वीकार करेंगे। और एक और तथ्य यह है: बहुत जल्द, अर्धचंद्र कई दिनों तक रहेगा।” “आधा चाँद?” मैंने पूछा। “तुम्हारा मतलब आकाश में दिखने वाले चाँद से है?”

जी हां, श्रीमान ओकाडा, आसमान में चांद। खैर, आपको बस इंतजार करना है। इंतजार ही सब कुछ है। अलविदा। आपसे जल्द ही फिर बात होगी। और उसने फोन काट दिया।

•

मैंने अपनी डेस्क से पता पुस्तिका निकाली और उसे 'ओ' अक्षर वाले पृष्ठ पर खोला। उसमें ठीक चार नाम लिखे थे, जो कुमिको की साफ-सुथरी लिखावट में थे। पहला नाम मेरे पिता, तादाओ ओकाडा का था। उसके बाद मेरे एक पुराने कॉलेज मित्र ओनोडा का, एक दंत चिकित्सक ओत्सुका का, और पड़ोस की ओमुरा शराब की दुकान का नाम था।
शराब की दुकान के बारे में तो मैं भूल ही जाऊँगा। वह घर से दस मिनट की पैदल दूरी पर थी, और उन कुछ मौकों को छोड़कर जब हम बीयर का एक केस मंगवाते थे, हमारा उनसे कोई खास रिश्ता नहीं था। दंत चिकित्सक का भी कोई महत्व नहीं था। दो साल पहले मैं अपने एक दाँत के इलाज के लिए उनके पास गया था, लेकिन कुमिको कभी वहाँ नहीं गई थी। असल में, मुझसे शादी करने के बाद से वह कभी किसी दंत चिकित्सक के पास नहीं गई थी। मेरे दोस्त ओनोडा से तो सालों से कोई मुलाकात नहीं हुई थी। कॉलेज के बाद उसने एक बैंक में काम करना शुरू किया, दूसरे साल ही उसका तबादला साप्पोरो शाखा में हो गया, और तब से वह होक्काइडो में ही रह रहा था। अब वह उन लोगों में से एक था जिनसे मैं नए साल के कार्ड का आदान-प्रदान करता था। मुझे याद नहीं आ रहा था कि वह कभी कुमिको से मिला भी था या नहीं। इससे मेरे पिता बच गए, लेकिन यह सोचना भी असंभव था कि कुमिको का उनसे कोई विशेष रिश्ता होगा। मेरी माँ की मृत्यु के बाद उन्होंने पुनर्विवाह कर लिया था, और तब से लेकर अब तक मैंने उन्हें न तो देखा था, न ही उनसे कोई पत्र व्यवहार किया था और न ही उनसे फोन पर बात की थी। कुमिको तो उनसे कभी मिली भी नहीं थी।

बहुत समय पहले, मुझे याद आया, मैंने एक कहानी पढ़ी थी जिसमें एक आदमी किसी घटना के घटित होने का इंतज़ार करते हुए लगातार खाता रहता है। बहुत सोचने-समझने के बाद, मुझे याद आया कि यह हेमिंग्वे के उपन्यास 'अ फेयरवेल टू आर्म्स' से थी। नायक (मुझे उसका नाम याद नहीं था) नाव से इटली से स्विट्जरलैंड भाग निकलता है, और जब वह इस छोटे से स्विस शहर में अपनी पत्नी के बच्चे के जन्म का इंतज़ार कर रहा होता है, तो वह लगातार सामने वाले कैफे में कुछ पीने या खाने के लिए जाता रहता है। मुझे कहानी का कथानक ठीक से याद नहीं था। मेरे दिमाग में बसा हुआ हिस्सा अंत के पास का था, जिसमें नायक अपनी पत्नी के बच्चे के जन्म का इंतज़ार करते हुए बार-बार खाना खाता रहता है। मुझे यह हिस्सा इतनी स्पष्टता से इसलिए याद था, क्योंकि किताब के इस हिस्से में एक गहरी वास्तविकता थी। साहित्य के रूप में, मुझे यह कहीं अधिक वास्तविक लगा कि पात्र की चिंता के कारण उसकी भूख में यह असामान्य वृद्धि हुई, न कि उसे खाने-पीने में असमर्थ बना दिया। लेकिन 'अ फेयरवेल टू आर्म्स' के विपरीत, इस शांत घर में घड़ी की सुइयों को देखते हुए, कुछ होने की प्रतीक्षा करते हुए, मुझे बिल्कुल भी भूख नहीं लगी। और जल्द ही मेरे मन में यह विचार आया कि मेरी भूख न लगने का कारण शायद मेरे भीतर इस प्रकार की साहित्यिक वास्तविकता का अभाव है। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी खराब ढंग से लिखे गए उपन्यास का हिस्सा बन गया हूँ, जैसे कोई मुझे पूरी तरह से अवास्तविक होने के लिए फटकार रहा हो। और शायद यह सच भी था।

•

आखिरकार दोपहर दो बजे से ठीक पहले फोन की घंटी बजी।

“क्या यह ओकाडा का निवास है?” एक अपरिचित पुरुष की आवाज़ ने पूछा। यह एक युवक की आवाज़ थी, धीमी और मधुर।
“हां, ऐसा ही है,” मैंने कुछ तनाव भरी आवाज में जवाब दिया। “ब्लॉक दो, नंबर छब्बीस?”
"यह सही है।"
“यह ओमुरा शराब की दुकान से कॉल है। आपके निरंतर सहयोग के लिए धन्यवाद। मैं अभी अपना सामान लेने के लिए निकलने ही वाला था, और मैं यह देखना चाहता था कि क्या यह आपके लिए उपयुक्त समय है।” “संग्रह?”
"जी सर। मैंने आपके लिए बीयर के दो केस और जूस का एक केस बुक कर लिया है।"
“ओह। ठीक है। मैं अभी कुछ समय और घर पर ही रहूँगा,” मैंने यह कहकर हमारी बातचीत समाप्त कर दी।
फोन रखने के बाद, मैं सोचने लगा कि क्या उस बातचीत में कुमिको के बारे में कोई जानकारी थी। लेकिन हर तरह से देखा जाए तो, वह एक शराब की दुकान से वसूली के बारे में एक छोटी सी, व्यावहारिक कॉल के अलावा कुछ नहीं थी। मैंने उनसे बीयर और जूस मंगवाया था, और उन्होंने उसे पहुँचा दिया था, यह तो निश्चित था। आधे घंटे बाद, वह आदमी दरवाजे पर आया, और मैंने बीयर के दो केस और जूस का एक केस का भुगतान किया।
रसीद भरते समय उस मिलनसार युवक ने मुस्कुराया।
“वैसे, श्री ओकाडा, क्या आपने आज सुबह स्टेशन के पास हुए हादसे के बारे में सुना? लगभग साढ़े नौ बजे।”
“दुर्घटना?” मैंने हैरानी से पूछा। “किसकी दुर्घटना हुई?”
“एक छोटी बच्ची,” उसने कहा। “पीछे हटती हुई वैन ने उसे कुचल दिया। सुना है उसे बहुत चोट आई है। मैं घटना के तुरंत बाद वहाँ

पहुँचा। सुबह-सुबह ऐसा कुछ देखना बहुत भयानक होता है। छोटे बच्चे मुझे बहुत डराते हैं: उन्हें रियरव्यू मिरर में देखा ही नहीं जा सकता। आपको पता है सफाईकर्मी का दफ्तर है? यह घटना ठीक उसके घर के सामने हुई। लोग वहाँ साइकिल खड़ी करते हैं, और ढेर सारे गत्ते के डिब्बे पड़े रहते हैं: कुछ दिखाई नहीं देता।” उसके जाने के बाद, मुझे लगा कि मैं अब एक मिनट भी घर में नहीं रह सकती। अचानक, घर गर्म और घुटन भरा, अंधेरा और तंग सा लगने लगा। मैंने जूते पहने और जितनी जल्दी हो सके वहाँ से निकल गई। मैंने दरवाज़ा भी बंद नहीं किया। मैंने खिड़कियाँ खुली छोड़ दीं और रसोई की बत्ती जला दी। मैं आस-पड़ोस में घूमती रही, एक लेमन कैंडी चूसती रही। जब मेरे दिमाग में उस युवा शराब की दुकान के कर्मचारी के शब्द गूंज रहे थे, तो धीरे-धीरे मुझे याद आया कि मैंने स्टेशन के पास वाले लॉन्ड्री में कुछ कपड़े छोड़ दिए थे। कुमिको का ब्लाउज और स्कर्ट। टिकट घर में था, लेकिन अगर मैं जाकर उनसे मांग लेती, तो शायद वह मुझे दे देते।
मुझे वो इलाका कुछ अलग सा लगा। सड़क पर चलते हुए मैंने जितने भी लोगों को देखा, उन सबका चेहरा बनावटी, यहाँ तक कि कृत्रिम सा लग रहा था। मैं हर चेहरे को गौर से देखता हुआ आगे बढ़ा और सोचने लगा कि ये लोग कैसे होंगे। वे किस तरह के घरों में रहते होंगे? उनके परिवार कैसे होंगे? वे किस तरह की जिंदगी जीते होंगे? क्या वे अपनी पत्नियों या पतियों के अलावा किसी और महिला या पुरुष के साथ संबंध बनाते होंगे? क्या वे खुश होंगे? क्या उन्हें पता होगा कि उनका चेहरा कितना बनावटी और अस्वाभाविक लग रहा है? सुबह हुए हादसे के निशान अभी भी दुकान के बाहर ताज़ा थे: ज़मीन पर पुलिस द्वारा खींची गई चौक की रेखा; पास ही कुछ दुकानदार गंभीर चेहरों के साथ हादसे के बारे में चर्चा कर रहे थे। अंदर,

दुकान हमेशा की तरह ही थी। वही काला बूम बॉक्स वही उदास संगीत बजा रहा था, जबकि पीछे एक पुराना एयर कंडीशनर ज़ोर से चल रहा था और लोहे से छत तक भाप के बादल उठ रहे थे। गाना था "एब टाइड"। रॉबर्ट मैक्सवेल, वीणा बजा रहे थे। मैंने सोचा कि कितना अच्छा होता अगर मैं समुद्र किनारे जा पाता। मैंने समुद्र तट की खुशबू और किनारे पर लहरों के टकराने की आवाज़ की कल्पना की। समुद्री पक्षी। बर्फ़ जैसी ठंडी बीयर के कैन।
मैंने दुकानदार से सिर्फ इतना कहा कि मैं अपनी रसीद भूल गई थी। "मुझे पूरा यकीन है कि मैं उन्हें पिछले शुक्रवार या शनिवार को लाई थी: एक ब्लाउज और एक स्कर्ट।"
“ओकाडा… ओकाडा…,” उसने कहा और कॉलेज की नोटबुक के पन्ने पलटने लगा। “हाँ, ये रहा। एक ब्लाउज, एक स्कर्ट। लेकिन श्रीमती ओकाडा इन्हें पहले ही ले जा चुकी हैं।”
“क्या उसने ऐसा किया?” मैंने अचंभित होकर पूछा।
“कल सुबह। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैंने खुद उन्हें ये चीजें दी थीं। मुझे लगा कि वो काम पर जा रही होंगी। मैं रसीद भी साथ ले आया था।”
मेरे पास उसे जवाब देने के लिए कोई शब्द नहीं थे। मैं बस उसे घूरता रहा।
“पत्नी से पूछो,” उसने कहा। “उसके पास हैं, इसमें कोई शक नहीं।” उसने कैश काउंटर पर रखे डिब्बे से एक सिगरेट निकाली, उसे अपने मुंह में डाला और लाइटर से जला लिया।
“कल सुबह?” मैंने पूछा। “शाम को नहीं?”
“गुड मॉर्निंग, बिल्कुल। आठ बजे। आपकी पत्नी आज की पहली ग्राहक थीं। मैं ऐसी बात कभी नहीं भूल सकता। अरे, जब आपकी पहली ग्राहक एक युवती हो, तो आपका मूड अच्छा हो जाता है, समझ रहे हो ना?”

मैं उसके लिए नकली मुस्कान नहीं दे पाई, और मेरे मुंह से निकली आवाज़ मेरी अपनी नहीं लग रही थी। "अच्छा, ठीक है, अब बात खत्म। माफ कीजिए, मुझे नहीं पता था कि उसने उन्हें उठाया था।"
उसने सिर हिलाया और मेरी तरफ देखा, सिगरेट बुझाई, जिसके उसने दो- तीन कश ही लिए थे, और फिर से इस्त्री करने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे उसे मुझमें दिलचस्पी हो गई हो, मानो वह मुझे कुछ बताना चाहता हो, लेकिन अंत में कुछ न कहने का फैसला किया हो। और इस बीच, मेरे मन में उससे कई सवाल थे। कुमिको जब सफाई करवाने आई थी तो कैसी दिख रही थी? वह क्या लेकर आई थी? लेकिन मैं उलझन में थी और बहुत प्यासी थी। मेरी सबसे बड़ी इच्छा थी कि कहीं बैठ जाऊं और एक ठंडा पेय पी लूं। मुझे लग रहा था कि यही एक तरीका है जिससे मैं फिर से किसी चीज के बारे में सोच पाऊंगी।
मैं सफाई के बाद सीधे कुछ ही दूरी पर स्थित कॉफ़ीहाउस में गई और एक गिलास आइस्ड टी मंगाई। अंदर काफ़ी ठंडक थी और मैं अकेली ग्राहक थी। दीवार पर लगे छोटे-छोटे स्पीकरों में बीटल्स के गीत "एट डेज़ अ वीक" का ऑर्केस्ट्रेटेड संस्करण बज रहा था। मुझे फिर से समुद्र तट की याद आ गई। मैंने कल्पना की कि मैं नंगे पैर समुद्र के किनारे टहल रही हूँ। रेत बहुत गर्म थी और हवा में ज्वार की तेज़ गंध थी। मैंने गहरी साँस ली और आसमान की ओर देखा। हथेलियों को ऊपर की ओर फैलाकर, मैं अपने हाथों पर गर्मी की तेज़ धूप महसूस कर सकती थी। तभी एक ठंडी लहर मेरे पैरों पर आ गई। किसी भी नज़रिए से देखा जाए, कुमिको का काम पर जाते समय सफाईकर्मी की दुकान से कपड़े लेना अजीब ही था। एक तो उसे खचाखच भरी ट्रेन में इस्त्री किए हुए कपड़ों को हैंगर पर टांगकर ले जाना पड़ता। फिर घर लौटते समय भी यही करना पड़ता। ये न सिर्फ़ एक अतिरिक्त बोझ होता, बल्कि सफाईकर्मी की मेहनत भी बेकार हो

[illegible]

इस अध्याय में कोई अच्छी खबर नहीं है।

•

मैं कॉफी शॉप से निकलकर गलियों में घूमने लगा। दोपहर की तेज़ गर्मी से मुझे बेचैनी होने लगी, यहाँ तक कि ठंड भी लगने लगी।
लेकिन एक जगह जहाँ मैं नहीं जाना चाहता था, वो था घर। उस खामोश घर में अकेले बैठकर उस फोन कॉल का इंतज़ार करने का ख्याल ही मुझे घुटन भरा लग रहा था, जो शायद कभी आएगा ही नहीं।
मेरे दिमाग में बस यही ख्याल आया कि मे कासाहारा से मिलने जाऊं। मैं घर गया, दीवार फांदकर गली से होते हुए उसके घर के पीछे वाले हिस्से तक पहुंचा। गली के दूसरी तरफ खाली पड़े घर की बाड़ से टेक लगाकर मैं बगीचे में रखी चिड़िया की मूर्ति को घूरने लगा। अगर मैं ऐसे ही खड़ा रहा तो मे मुझे देख लेगी। उन कुछ मौकों को छोड़कर जब वह विग कंपनी के काम से बाहर जाती थी, वह हमेशा घर पर ही रहती थी, अपने कमरे से गली पर नजर रखती थी या आंगन में धूप सेंकती रहती थी।
लेकिन मुझे मे कासाहारा का कोई अता-पता नहीं था। आसमान में एक भी बादल नहीं था। गर्मी की धूप मेरी गर्दन को झुलसा रही थी। घास की तेज़ महक ज़मीन से उठकर मेरे फेफड़ों में घुस रही थी। मैंने चिड़िया की मूर्ति को घूरते हुए उन कहानियों के बारे में सोचने की कोशिश की जो मेरे चाचा ने हाल ही में मुझे इस घर में रहने वालों के भाग्य के बारे में सुनाई थीं। लेकिन मेरे दिमाग में बस ठंडा और नीला समुद्र ही छाया हुआ था। मैंने कई लंबी, गहरी साँसें लीं। मैंने अपनी घड़ी देखी। मैं उस दिन के लिए हार मानने ही वाला था, तभी मे कासाहारा आखिरकार बाहर आईं। वह धीरे-धीरे अपने आँगन से चलकर मेरे पास आईं। उन्होंने डेनिम शॉर्ट्स, नीली

अलोहा शर्ट और लाल चप्पल पहनी हुई थी। मेरे सामने खड़ी होकर उन्होंने धूप के चश्मे से मुस्कुराया।
“नमस्कार, श्रीमान विंड-अप बर्ड। क्या आपको अपनी बिल्ली— नोबोरू वाटाया—मिल गई है?”
मैंने कहा, "अभी नहीं। आज बाहर आने में तुम्हें इतनी देर क्यों लग गई?"
उसने अपने हाथ कमर की जेबों में डाले और मुस्कुराते हुए चारों ओर देखा। "देखिए, मिस्टर विंड-अप बर्ड, मेरे पास भले ही बहुत खाली समय हो, लेकिन मैं सुबह से शाम तक इस गली की रखवाली करने के लिए नहीं जीती। मेरे पास कुछ काम हैं जिनमें मैं व्यस्त रहती हूँ। खैर, मुझे माफ़ करना। क्या आप बहुत देर से इंतज़ार कर रहे थे?"
“इतनी देर नहीं। यहाँ खड़े-खड़े मुझे गर्मी लगने लगी।”
मेई कासाहारा ने मेरी ओर घूरकर देखा, फिर अपनी भौंहें थोड़ी सिकोड़ीं। "क्या हुआ, मिस्टर विंड-अप बर्ड? आप बहुत खराब दिख रहे हैं—जैसे किसी को अभी-अभी ज़मीन से खोदकर निकाला गया हो। बेहतर होगा कि आप इधर आएं और थोड़ी देर छांव में आराम करें।" उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे अपने आंगन में ले गई। वहाँ उसने एक कैनवस की कुर्सी को बलूत के पेड़ की छाया में खिसकाया और मुझे उस पर बैठा दिया। घनी हरी शाखाओं की ठंडी छाया में जीवन की सुगंध फैली हुई थी।
“चिंता मत करो, हमेशा की तरह यहाँ कोई नहीं है,” उसने कहा। “तुम्हें ज़रा भी परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। आराम से समय बिताओ। सोचना बंद करो और आराम करो।”
मैंने कहा, "मुझे आपसे एक अनुरोध करना है।"
“मुझे आजमा कर देखो,” उसने कहा।

मैं चाहता हूं कि आप मेरे लिए कॉल करें। मैं खुद नहीं करूंगा। मैंने एक नोटपैड और पेन निकालकर कुमिको के ऑफिस का नंबर लिख लिया। फिर मैंने वह पन्ना फाड़कर उसे दे दिया। विनाइल कवर वाला छोटा सा नोटपैड पसीने से भीगा हुआ था। मैंने लिखा, “बस इतना कर लो कि इस ऑफिस में फोन करके पूछ लो कि कुमिको ओकाडा यहाँ हैं या नहीं, और अगर वो नहीं हैं, तो पूछ लेना कि क्या वो कल ऑफिस आई थीं।”
मेई कासाहारा ने कागज़ उठाया और होंठ सिकोड़कर उसे देखा। फिर उसने मेरी तरफ देखा। “ठीक है, मैं संभाल लूँगी। तुम बस अपना दिमाग खाली कर लो और लेट जाओ। तुम्हें हिलने-डुलने की इजाज़त नहीं है। मैं अभी आती हूँ।”
उसके जाने के बाद, मैंने आदेशानुसार लेटकर अपनी आँखें बंद कर लीं। मैं सिर से पैर तक पसीने से भीगा हुआ था। सोचने की कोशिश करते हुए, मुझे अपने सिर में एक तेज़ धड़कन महसूस हुई, और ऐसा लगा जैसे मेरे पेट में धागे का एक गुच्छा हो। बीच-बीच में मुझे मतली का हल्का सा एहसास होता था। आस-पड़ोस एकदम शांत था। अचानक मुझे याद आया कि मैंने काफी समय से चाबी वाली चिड़िया की आवाज़ नहीं सुनी थी। मैंने उसे आखिरी बार कब सुना था? शायद चार-पाँच दिन पहले। लेकिन मेरी याददाश्त पक्की नहीं थी। जब तक मैंने ध्यान दिया, तब तक उसकी आवाज़ इतनी देर से गायब हो चुकी थी कि बताना मुश्किल था। शायद वह कोई मौसमी पक्षी था। सोचने पर, हमने उसे लगभग एक महीने पहले से सुनना शुरू किया था। और कुछ समय तक, चाबी वाली चिड़िया हर दिन हमारे छोटे से संसार की स्प्रिंग को चाबी देती रही थी। वह चाबी वाली चिड़िया का मौसम था।
दस मिनट बाद, मेई कासाहारा वापस आई। उसने मुझे एक बड़ा गिलास दिया। गिलास लेते ही बर्फ की खनक सुनाई दी। ऐसा लगा जैसे वह

आवाज़ किसी दूर की दुनिया से आ रही हो। उस दुनिया को उस जगह से जोड़ने वाले कई द्वार थे जहाँ मैं थी, और मैं वह आवाज़ इसलिए सुन पा रही थी क्योंकि वे सभी उस समय खुले हुए थे। लेकिन यह क्षणिक था। अगर उनमें से एक भी बंद हो जाता, तो वह आवाज़ मेरे कानों तक नहीं पहुँचती। "इसे पी लो," उसने कहा। "पानी में नींबू का रस मिलाओ। इससे तुम्हारा दिमाग़ साफ़ हो जाएगा।"
मैंने आधा पानी पी लिया और गिलास उसे लौटा दिया। ठंडा पानी मेरे गले से नीचे उतरा और धीरे-धीरे मेरे शरीर में समा गया, जिसके बाद मुझे मतली की एक तेज़ लहर महसूस हुई। मेरे पेट में सूजी हुई सी गांठ खुलने लगी और गले तक ऊपर आने लगी। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और इसे निकलने देने की कोशिश की। आँखें बंद करके ही मैंने कुमिको को ट्रेन में चढ़ते देखा, उसके हाथ में ब्लाउज और स्कर्ट थी। मैंने सोचा कि शायद उल्टी कर देना बेहतर होगा। लेकिन मैंने उल्टी नहीं की। मैंने कई गहरी साँसें लीं जब तक कि वह एहसास कम होकर पूरी तरह गायब नहीं हो गया।
“क्या तुम ठीक हो?” मेई कासाहारा ने पूछा।
“हां, मैं ठीक हूं,” मैंने कहा।
“मैंने फोन किया,” उसने कहा। “मैंने उन्हें बताया कि मैं रिश्तेदार हूँ। ठीक है ना?”
"अहां।"
"यह महिला, कुमिको ओकाडा, वही तो विंड-अप बर्ड की मालकिन हैं, है ना?"
"अहां।"
उन्होंने बताया कि वह आज या कल काम पर नहीं आई। बिना कुछ कहे चली गई। यह उनके लिए एक बड़ी समस्या है। उन्होंने कहा कि वह इस तरह का काम करने वाली लड़की नहीं है।

“यह सच है। वह उस तरह की लड़की नहीं है।”
“वह कल से गायब है?”
मेंने सिर हिलाया।
“बेचारे मिस्टर विंड-अप बर्ड,” उसने कहा। उसकी आवाज़ से ऐसा लग रहा था मानो उसे मुझ पर सचमुच तरस आ रहा हो। उसने अपना हाथ मेरे माथे पर रखा। “क्या मैं कुछ कर सकती हूँ?”
मैंने कहा, "अभी नहीं। लेकिन धन्यवाद।"
“क्या आपको बुरा लगेगा अगर मैं और सवाल पूछूं? या आप नहीं चाहेंगे कि मैं पूछूं?”
मैंने कहा, "आगे बढ़ो। हालांकि, मुझे यकीन नहीं है कि मैं जवाब दे पाऊंगा।"
क्या तुम्हारी पत्नी किसी पुरुष के साथ भाग गई?
मैंने कहा, "मुझे पक्का नहीं पता। शायद हो सकता है। यह संभव है।" लेकिन आप लोग तो इतने समय से साथ रह रहे हैं। फिर आपको यकीन कैसे नहीं हो सकता?
वह सही थी। मैं भला कैसे गलत हो सकता था?
“बेचारे मिस्टर विंड-अप बर्ड,” उसने फिर कहा। “काश मेरे पास कुछ ऐसा कहने को होता जिससे आपकी मदद हो सके, लेकिन मुझे वैवाहिक जीवन के बारे में कुछ नहीं पता।”
मैं अपनी कुर्सी से उठा। खड़े होने में जितनी मेहनत लगी, मैंने कल्पना भी नहीं की थी। "सब कुछ के लिए धन्यवाद। आपने बहुत मदद की। मुझे अब जाना होगा। मुझे घर पर रहना चाहिए, कहीं कोई खबर न आ जाए। कोई फोन कर सकता है।"
“घर पहुंचते ही सबसे पहले नहा लो। ठीक है? फिर साफ कपड़े पहन लो। और दाढ़ी बना लो।”

“दाढ़ी बनाना?” मैंने अपने जबड़े पर हाथ फेरा। यह सच था: मैं दाढ़ी बनाना भूल गया था। सुबह से यह ख्याल मेरे मन में आया ही नहीं था।
“छोटी-छोटी बातें ही मायने रखती हैं, मिस्टर विंड-अप बर्ड,” मे कासाहारा ने मेरी आँखों में देखते हुए कहा। “घर जाओ और आईने में खुद को ध्यान से देखो।”
मैंने कहा, "मैं करूँगा।"
"क्या मैं बाद में आ सकता हूँ?"
“ठीक है,” मैंने कहा। फिर मैंने आगे कहा: “आप बहुत मददगार साबित होंगे।”
मेई कासाहारा ने चुपचाप सिर हिलाया।

•

घर आकर मैंने आईने में अपना चेहरा देखा। सच था: मैं बहुत बुरा दिख रहा था। मैंने कपड़े उतारे, नहाया, शैम्पू किया, दाढ़ी बनाई, दांत साफ किए, चेहरे पर आफ्टरशेव लोशन लगाया और फिर से आईने में अपना चेहरा गौर से देखा। पहले से थोड़ा बेहतर लग रहा था। जी मिचलाना बंद हो गया था। हालांकि, दिमाग अभी भी थोड़ा भारी था। मैंने शॉर्ट्स और एक नई पोलो शर्ट पहनी। मैं बरामदे में एक खंभे से टेक लगाकर बैठ गई और बाल सूखने तक बगीचे को देखती रही। मैंने पिछले कुछ दिनों की घटनाओं को क्रम से समझने की कोशिश की। सबसे पहले लेफ्टिनेंट मामिया का फोन आया। क्या यह कल सुबह की बात थी? हाँ, बिल्कुल: कल सुबह की ही बात थी। फिर कुमिको घर से चली गई। मैंने उसकी ड्रेस की ज़िप बंद की। फिर मुझे इत्र का डिब्बा मिला। फिर लेफ्टिनेंट मामिया आए और उन्होंने मुझे अपनी अजीबोगरीब युद्ध कहानियाँ सुनाईं: कैसे उन्हें मंगोलियाई सैनिकों ने पकड़ लिया था और एक कुएँ में फेंक दिया था। उन्होंने

मुझे श्री होंडा की एक यादगार चीज़ दी थी। एक खाली डिब्बा। फिर कुमिको घर नहीं आई। उसने उस सुबह स्टेशन से अपने कपड़े लिए और उसके बाद कहीं गायब हो गई। अपने साथियों को बिना कुछ कहे। तो ये सब कल हुआ था।
मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि ये सब एक ही दिन में हो गया। एक दिन में इतना सब होना बहुत ज्यादा था।
इन बातों पर सोचते-सोचते मुझे बहुत तेज़ नींद आने लगी। यह कोई आम नींद नहीं थी। यह एक तीव्र, बल्कि ज़बरदस्त नींद थी। नींद मुझे इस तरह बेहोश कर रही थी जैसे किसी बेबस इंसान के शरीर से कपड़े उतर जाते हैं। मैं बिना सोचे समझे बेडरूम में गया, अपने अंडरवियर के अलावा सब कुछ उतार दिया और बिस्तर पर लेट गया। मैंने नाइट टेबल पर रखी घड़ी देखने की कोशिश की, लेकिन मैं अपना सिर भी नहीं घुमा सका। मैंने अपनी आँखें बंद कीं और तुरंत ही गहरी, अथाह नींद में सो गया।

•

नींद में ही मैं कुमिको की ड्रेस की ज़िप लगा रही थी। मुझे उसकी चिकनी, सफ़ेद पीठ दिखाई दे रही थी। लेकिन जब तक मैंने ज़िप पूरी तरह बंद की, तब तक मुझे एहसास हो गया कि वह कुमिको नहीं बल्कि क्रेता कानो थी। कमरे में सिर्फ़ हम दोनों ही थे।
यह वही कमरा था जो पिछले सपने में था: उसी होटल के सुइट का एक कमरा। मेज पर कटी सार्क की एक बोतल और दो गिलास रखे थे। साथ ही, बर्फ से भरी एक स्टेनलेस स्टील की बाल्टी भी थी। बाहर गलियारे में कोई तेज़ आवाज़ में कुछ बोलता हुआ गुज़र रहा था। मुझे शब्द समझ नहीं आए, ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी विदेशी भाषा में बोल रहा हो। छत से एक बिना रोशनी वाला झूमर लटका हुआ था। इस धुंधले

कमरे में रोशनी का एकमात्र स्रोत दीवार पर लगे लैंप थे।
खिड़कियों पर फिर से मोटे पर्दे लगे थे जो कसकर बंद थे।
क्रेता कानो ने कुमिको की गर्मियों की पोशाक पहनी हुई थी: हल्के नीले रंग की, जिस पर पक्षियों की जालीदार डिज़ाइन बनी हुई थी।
स्कर्ट घुटनों से थोड़ा ऊपर तक थी। हमेशा की तरह, उनका मेकअप जैकलीन कैनेडी के स्टाइल में था। उन्होंने अपनी बाईं कलाई पर एक जैसी चूड़ियाँ पहनी हुई थीं।
मैंने पूछा, "तुम्हें ये ड्रेस कहाँ से मिली? क्या ये तुम्हारी है?"
क्रेता कानो ने मेरी तरफ देखा और सिर हिलाया। ऐसा करते समय, उसके घुंघराले बालों के सिरे एक सुखद अंदाज़ में हिले। "नहीं, यह मेरा नहीं है," उसने कहा। "मैं इसे उधार ले रही हूँ। लेकिन चिंता मत कीजिए, श्री ओकाडा, इससे किसी को कोई परेशानी नहीं हो रही है।"
मैंने पूछा, "हम कहाँ हैं?"
क्रेता कानो ने कोई जवाब नहीं दिया। पहले की तरह, मैं बिस्तर के किनारे बैठा था। मैंने सूट और अपनी बिंदीदार टाई पहनी हुई थी। “आपको किसी बात की चिंता करने की जरूरत नहीं है, श्री ओकाडा,” क्रेता कानो ने कहा। “चिंता करने की कोई बात नहीं है। सब कुछ ठीक हो जाएगा।”
और फिर, पहले की तरह, उसने मेरी पैंट की ज़िप खोली, मेरा लिंग बाहर निकाला और उसे अपने मुँह में डाल लिया। पहले से अलग बस एक ही बात थी कि उसने अपने कपड़े नहीं उतारे। उसने पूरे समय कुमिको की पोशाक पहनी हुई थी। मैंने हिलने की कोशिश की, लेकिन ऐसा लगा जैसे मेरा शरीर अदृश्य धागों से बंधा हुआ हो। मुझे महसूस हुआ कि मैं उसके मुँह के अंदर बड़ा और सख्त होता जा रहा हूँ।

मैंने उसकी नकली पलकें और घुंघराले बालों के सिरे हिलते हुए देखे। उसके कंगन आपस में रगड़ खाकर सूखी सी आवाज़ कर रहे थे। उसकी जीभ लंबी और मुलायम थी, मानो मुझे अपने चारों ओर लपेट रही हो। जैसे ही मैं चरम सुख के करीब पहुँचा, वह अचानक मुझसे दूर हट गई और धीरे-धीरे मेरे कपड़े उतारने लगी। उसने मेरी जैकेट, टाई, पैंट, कमीज़, अंडरवियर सब उतार दिए और मुझे बिस्तर पर लिटा दिया। हालाँकि, उसने अपने कपड़े नहीं उतारे। वह बिस्तर पर बैठ गई, मेरा हाथ पकड़ा और उसे अपनी पोशाक के नीचे ले गई। उसने पैंटी नहीं पहनी थी। मेरे हाथ ने उसकी योनि की गर्माहट महसूस की। वह गहरी, गर्म और बहुत गीली थी। मेरी उंगलियाँ मानो अंदर खिंच गईं। मैंने पूछा, "नोबोरू वटाया अभी आने ही वाले हैं क्या? क्या आपको उनके यहाँ आने की उम्मीद नहीं थी?"
जवाब देने के बजाय, क्रेता कानो ने मेरे माथे को छुआ। “आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, श्रीमान ओकाडा। हम सब कुछ संभाल लेंगे। सब कुछ हम पर छोड़ दीजिए।”
“हमारे लिए?” मैंने पूछा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।
फिर क्रेता कानो मेरे ऊपर चढ़ गई और अपने हाथ से मुझे अपने अंदर समा लिया। जब मैं पूरी तरह अंदर चला गया, तो उसने धीरे-धीरे अपने कूल्हों को घुमाना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे वह घूम रही थी, उसकी हल्के नीले रंग की पोशाक के किनारे मेरे नंगे पेट और जांघों को छू रहे थे। पोशाक के स्कर्ट उसके चारों ओर फैले हुए थे, क्रेता कानो, मेरे ऊपर सवार होकर, एक विशाल, कोमल मशरूम की तरह लग रही थी, जिसने चुपचाप जमीन पर पड़े सूखे पत्तों के बीच से अपना चेहरा निकाला हो और रात के सान्निध्य में खुल गई हो। उसकी योनि गर्म और साथ ही ठंडी महसूस हो रही थी। वह मुझे अपने अंदर समेटने, मुझे अंदर खींचने और साथ ही मुझे बाहर धकेलने की कोशिश कर रही

थी। मेरा लिंग और बड़ा और सख्त हो गया। मुझे लगा जैसे मैं फटने ही वाला हूँ। यह एक अजीब सी अनुभूति थी, कुछ ऐसा जो साधारण यौन सुख से कहीं बढ़कर था। ऐसा लग रहा था जैसे उसके अंदर कुछ, कुछ खास, धीरे-धीरे मेरे अंग से होते हुए मुझमें प्रवेश कर रहा हो। आँखें बंद किए और ठुड्डी को थोड़ा ऊपर उठाए, क्रेता कानो धीरे- धीरे आगे-पीछे हिल रही थी, मानो सपने में हो। पोशाक के नीचे से उसकी छाती हर साँस के साथ ऊपर-नीचे हो रही थी। कुछ बाल निकलकर उसके माथे पर लटक रहे थे। मैंने कल्पना की कि मैं एक विशाल समुद्र के बीच में अकेली तैर रही हूँ। मैंने आँखें बंद कर लीं और सुनने लगी, छोटी-छोटी लहरों के मेरे चेहरे से टकराने की आवाज़ सुनने की उम्मीद कर रही थी। मेरा शरीर गुनगुने समुद्र के पानी में भीगा हुआ था। मैंने ज्वार के धीरे-धीरे बहने का एहसास किया। यह मुझे बहाकर ले जा रहा था। मैंने क्रेता कानो की बात मानकर कुछ भी न सोचने का फैसला किया। मैंने आँखें बंद कर लीं, अपने अंगों की सारी ताकत छोड़ दी और खुद को धारा के हवाले कर दिया।
अचानक मैंने देखा कि कमरा अंधेरा हो गया था। मैंने चारों ओर देखने की कोशिश की, लेकिन मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। दीवार पर लगे सारे लैंप बुझ चुके थे।
मेरे ऊपर क्रेता कानो की नीली पोशाक की धुंधली सी आकृति ही दिखाई दे रही थी। "बस भूल जाओ," उसने कहा, लेकिन यह क्रेता कानो की आवाज़ नहीं थी। "सब कुछ भूल जाओ। तुम सो रही हो। तुम सपना देख रही हो। तुम अच्छी, गर्म मिट्टी में लेटी हो। हम सब गर्म मिट्टी से बाहर आते हैं, और हम सब वापस उसी में चले जाते हैं।"
यह टेलीफोन पर मौजूद महिला की आवाज़ थी। फोन पर मौजूद रहस्यमयी महिला अब मेरे ऊपर सवार थी और उसका शरीर मेरे शरीर से जुड़ गया

था। उसने भी कुमिको की पोशाक पहनी हुई थी। मेरी जानकारी के बिना ही उसने और क्रेता कानो ने अपनी जगह बदल ली थी। मैंने बोलने की कोशिश की। मुझे नहीं पता था कि मैं क्या कहना चाह रही थी, लेकिन कम से कम मैंने बोलने की कोशिश तो की। मैं बहुत उलझन में थी और मेरी आवाज़ नहीं निकल रही थी। मेरे मुंह से बस गर्म हवा का एक झोंका निकला। मैंने अपनी आँखें चौड़ी करके खोलीं और अपने ऊपर सवार महिला का चेहरा देखने की कोशिश की, लेकिन कमरा बहुत अंधेरा था।
उस औरत ने कुछ नहीं कहा। इसके बजाय, उसने अपने कूल्हों को और भी कामुक अंदाज़ में हिलाना शुरू कर दिया। उसका कोमल शरीर, मानो एक स्वतंत्र अंग हो, मेरे लिंग को धीरे से अपनी बाहों में भर रहा था। उसके पीछे से मुझे किसी घुंडी के घूमने की आवाज़ सुनाई दी— या मुझे लगा कि सुनाई दी। अँधेरे में एक तेज़ सफ़ेद चमक कौंधी। हो सकता है गलियारे की रोशनी में मेज़ पर रखी बर्फ़ की बाल्टी कुछ पल के लिए चमक उठी हो। या फिर वह चमक किसी तेज़ धार वाले ब्लेड की झिलमिलाहट हो सकती है। लेकिन मैं अब और सोच नहीं पा रहा था। मेरे पास बस एक ही रास्ता था: मैं स्खलित हो गया।

•

मैंने शावर में खुद को धोया और वीर्य से सने अपने अंडरवियर को हाथ से धोया। बहुत बढ़िया, मैंने सोचा। आखिर मेरी जिंदगी के इतने मुश्किल दौर में ही मुझे स्वप्नदोष क्यों हो रहे हैं? मैंने एक बार फिर नए कपड़े पहने और बरामदे में बैठकर बगीचे को देखने लगा। घनी हरी पत्तियों से छनकर आती धूप की किरणें हर चीज़ पर नाच रही थीं। कई दिनों की बारिश ने जगह-जगह चमकीले हरे रंग के खरपतवारों को खूब बढ़ा दिया था, जिससे बगीचे में जीर्णता और ठहराव का हल्का सा आभास हो रहा था।

फिर से क्रेता कानो। थोड़े ही समय में दो बार स्वप्नदोष हुआ, और दोनों बार क्रेता कानो ही थी। मैंने कभी उसके साथ सोने के बारे में सोचा भी नहीं था। ऐसी इच्छा मेरे मन में कभी आई तक नहीं थी। फिर भी, दोनों बार मैं उसी कमरे में था, उसके साथ अपने शरीर का मिलन कर रहा था। आखिर इसका कारण क्या हो सकता है? और वो टेलीफोन वाली औरत कौन थी जिसने उसकी जगह ले ली थी? वो मुझे जानती थी, और मैं भी उसे जानता था। मैंने अपने जीवन में जितने भी यौन साथी देखे थे, उनमें से कोई भी उस टेलीफोन वाली औरत जैसी नहीं थी। फिर भी, उसमें कुछ तो जाना-पहचाना सा लग रहा था। और यही बात मुझे बहुत परेशान कर रही थी।
कोई याद बाहर आने की कोशिश कर रही थी। मैं उसे अंदर महसूस कर सकता था, जैसे वो अंदर ही अंदर खलल डाल रही हो। बस एक छोटे से संकेत की ज़रूरत थी। अगर मैं उस एक छोटे से धागे को खींच लेता, तो सब कुछ खुल जाता। रहस्य मेरे सुलझाने का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन वो पतला सा धागा मुझे मिल ही नहीं रहा था।
मैंने सोचने की कोशिश करना छोड़ दिया। “सब कुछ भूल जाओ। तुम सो रहे हो। तुम सपना देख रहे हो। तुम बढ़िया, गर्म मिट्टी में लेटे हो। हम सब गर्म मिट्टी से बाहर आते हैं, और हम सब वापस उसी में चले जाते हैं।”

•

छह बज गए, और अभी तक कोई फ़ोन नहीं आया। केवल मेई कासाहारा ही आई। उसने कहा कि उसे बस एक घूँट बीयर चाहिए। मैंने फ्रिज से एक ठंडा कैन निकाला और उसके साथ बाँट लिया। मुझे भूख लगी थी, इसलिए मैंने ब्रेड के दो स्लाइस के बीच थोड़ा सा हैम और सलाद रखकर खा लिया। मुझे खाते हुए देखकर मेई ने कहा कि उसे भी यही चाहिए।

मैंने उसके लिए भी एक सैंडविच बना दिया। हम चुपचाप खाते रहे और बीयर पीते रहे। मैं बार-बार दीवार पर लगी घड़ी को देखता रहा। क्या आपके घर में टीवी नहीं है?
मैंने कहा, "टीवी नहीं।"
उसने अपने होंठ के किनारे को हल्का सा काटा। "मुझे कुछ-कुछ यही लगा था। क्या तुम्हें टीवी देखना पसंद नहीं है?"
मुझे यह नापसंद नहीं है। मैं इसके बिना भी ठीक-ठाक काम चला लेता हूँ।
कासाहारा ने कुछ देर के लिए इस बात को समझने का समय दिया। "आपकी शादी को कितने साल हो गए हैं, मिस्टर विंड-अप बर्ड?"
मैंने कहा, "छह साल।"
"और आपने छह साल तक टीवी के बिना काम चलाया?"
“हाँ। पहले तो हमारे पास इसे खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। फिर हमें इसके बिना रहने की आदत हो गई। इस तरह रहना अच्छा और शांत रहता है।”
आप दोनों जरूर खुश रहे होंगे।
"आपके ऐसा सोचने की वजह क्या है?"
उसने अपना चेहरा सिकोड़ लिया। "खैर, मैं टेलीविजन के बिना एक दिन भी नहीं रह सकती।"
“क्योंकि तुम नाखुश हो?”
मेई कासाहारा ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। "लेकिन अब कुमिको चली गई है। अब आप इतने खुश नहीं होंगे, मिस्टर विंड-अप बर्ड।" मैंने सिर हिलाया और अपनी बियर की एक घूंट ली। "बस इतना ही है," मैंने कहा। बात बस इतनी ही थी।

उसने अपने होठों के बीच एक सिगरेट रखी और बड़ी कुशलता से माचिस जलाई। "अब, मिस्टर विंड-अप बर्ड," उसने कहा, "मैं चाहती हूँ कि आप मुझे बिलकुल सच बताएँ: क्या आपको लगता है कि मैं बदसूरत हूँ?" मैंने अपना बियर का गिलास नीचे रखा और मेई कासाहारा के चेहरे को एक बार फिर देखा। उससे बात करते हुए मैं बीच-बीच में कुछ और ही सोच रहा था। उसने एक बड़ा सा काला टैंक टॉप पहना हुआ था, जिससे उसके उभरे हुए स्तन साफ दिखाई दे रहे थे।
मैंने कहा, "तुम बिल्कुल भी बदसूरत नहीं हो। यह तो पक्का है। तुम क्यों पूछ रहे हो?"
"मेरा बॉयफ्रेंड हमेशा मुझसे कहता था कि मैं कितनी बदसूरत हूं, मेरे स्तन नहीं हैं।"
“जिस लड़के ने बाइक को तोड़ दिया?”
"हां, वही।"
मैंने मेई कासाहारा को धीरे-धीरे सिगरेट का धुआँ छोड़ते हुए देखा। “उस उम्र के लड़के ऐसी बातें कहते हैं। उन्हें अपने दिल की बात ठीक से व्यक्त करना नहीं आता, इसलिए वे ठीक उल्टा बोलते और करते हैं। इस तरह वे बेवजह लोगों को दुख पहुँचाते हैं, और खुद को भी। खैर, तुम बिल्कुल भी बदसूरत नहीं हो। मुझे लगता है तुम बहुत प्यारे हो। मेरी कोई तारीफ करने की इच्छा नहीं है।”
मेई कासाहारा ने कुछ देर तक इस बारे में सोचा। उसने खाली बीयर के डिब्बे में राख डाली। "क्या विंड-अप बर्ड सुंदर है?"
"हम्म, मेरे लिए यह कहना मुश्किल है। कुछ लोग कहेंगे कि वह है, और कुछ कहेंगे कि नहीं। यह पसंद का मामला है।"
“ठीक है,” उसने कहा। ऊबते हुए उसने अपने गिलास पर थपथपाया। मैंने पूछा, "तुम्हारा बाइकर बॉयफ्रेंड क्या कर रहा है? क्या वह अब तुमसे मिलने नहीं आता?"

“नहीं, वो ऐसा नहीं करता,” मेई कासाहारा ने अपनी बाईं आंख के पास के निशान पर उंगली रखते हुए कहा। “मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊंगी, ये तो पक्का है। सौ प्रतिशत पक्का। मैं इस पर अपने बाएं पैर की छोटी उंगली की शर्त लगा सकती हूं। लेकिन मैं अभी इस बारे में बात नहीं करना चाहती। कुछ बातें, आप जानते हैं, अगर आप उन्हें कह देते हैं, तो वे झूठ हो जाती हैं? आप समझ रहे हैं ना, मिस्टर विंड-अप बर्ड?”
“मुझे लगता है, मैं कर सकता हूँ,” मैंने कहा। फिर मैंने बैठक में रखे फोन पर नज़र डाली। वह मेज पर चुपचाप पड़ा था। ऐसा लग रहा था मानो कोई गहरे समुद्र का जीव निर्जीव होने का नाटक कर रहा हो और अपने शिकार की प्रतीक्षा में घात लगाए बैठा हो।
“किसी दिन, श्रीमान विंड-अप बर्ड, मैं आपको उसके बारे में सब कुछ बताऊँगा। जब मेरा मन करेगा। लेकिन अभी नहीं। अभी मेरा मन नहीं कर रहा है।”
उसने अपनी घड़ी देखी। "मुझे घर जाना है। बीयर के लिए धन्यवाद।" मैंने उसे बगीचे की दीवार तक देखा। लगभग पूरा चाँद अपनी हल्की रोशनी धरती पर बिखेर रहा था। पूरे चाँद को देखकर मुझे याद आया कि कुमिको का मासिक धर्म आने वाला है। लेकिन शायद अब इसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं होगा। इस विचार से मेरे सीने में तेज दर्द हुआ। इसकी तीव्रता ने मुझे चौंका दिया: यह दुख जैसा था।
दीवार पर हाथ रखे हुए मे कासाहारा ने मेरी तरफ देखा। "बताइए, मिस्टर विंड-अप बर्ड, आप कुमिको से प्यार करते हैं, है ना?" "मुझे लगता है, मैं ऐसा करता हूं।"
"भले ही वह किसी प्रेमी के साथ चली गई हो? अगर वह कहे कि वह तुम्हारे पास वापस आना चाहती है, तो क्या तुम उसे वापस अपना लोगे?"

मैंने एक गहरी सांस ली। “यह तो एक मुश्किल सवाल है,” मैंने कहा। “जब यह सच में हो जाएगा, तभी मैं इसके बारे में सोच पाऊँगी।” “माफ़ करना, मैं दखल दे रही हूँ,” मेई कासाहारा ने जीभ से हल्की सी आवाज़ निकालते हुए कहा। “लेकिन नाराज़ मत होइए। मैं बस सीखने की कोशिश कर रही हूँ। मैं जानना चाहती हूँ कि पत्नी के भाग जाने का क्या मतलब होता है। ऐसी बहुत सी बातें हैं जो मुझे नहीं पता।”
मैंने कहा, "मैं पागल नहीं हूँ।" फिर मैंने दोबारा पूर्णिमा के चाँद की ओर देखा।
“ठीक है, तो श्रीमान विंड-अप बर्ड। अपना ख्याल रखना। आशा है आपकी पत्नी वापस आ जाएँगी और सब कुछ ठीक हो जाएगा।” अविश्वसनीय फुर्ती से हिलते हुए, मे कासाहारा दीवार के ऊपर से कूद गईं और गर्मी की रात में गायब हो गईं।

•

मेई कासाहारा के चले जाने के बाद मैं फिर अकेला हो गया था। मैं बरामदे में बैठा, उसके द्वारा उठाए गए सवालों के बारे में सोच रहा था। अगर कुमिको किसी प्रेमी के साथ चली गई थी, तो क्या मैं उसे वापस ला सकता था? मुझे जवाब नहीं पता था। सच में नहीं पता था। ऐसी बहुत सी बातें थीं जो मुझे नहीं पता थीं।
अचानक फोन की घंटी बजी। सहज प्रतिक्रिया के रूप में मेरा हाथ तेजी से बढ़ा और मैंने रिसीवर उठा लिया।
दूसरी तरफ से एक महिला की आवाज आई। उसने कहा, "मैं माल्टा कानो बोल रही हूँ। श्री ओकाडा, आपको बार-बार फोन करने के लिए क्षमा करें, लेकिन मैं यह जानना चाहती थी कि क्या कल के लिए आपकी कोई योजना है?"

मैंने कहा, मेरे पास कोई योजना नहीं थी। योजनाएँ तो बस ऐसी चीज थीं ही नहीं जो मेरे पास होती थीं।
"ऐसे में, मुझे आश्चर्य है कि क्या दोपहर के बाद आपसे मिलना संभव हो सकता है।"
क्या इसका कुमिको से कुछ संबंध है?
माल्टा कानो ने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए कहा, "मुझे पूरा विश्वास है कि ऐसा होगा। नोबोरू वटाया भी संभवतः हमारे साथ जुड़ेंगे।"
यह सुनकर मेरा हाथ लगभग छूट ही गया। "क्या मतलब, हम तीनों मिलकर बात करेंगे?"
“जी हां, मुझे लगता है कि यही स्थिति है,” माल्टा कानो ने कहा। “वर्तमान परिस्थिति के कारण यह आवश्यक हो गया है। मुझे खेद है, लेकिन मैं फोन पर इससे अधिक जानकारी नहीं दे सकती।”
“ठीक है। फिर ठीक है,” मैंने कहा।
“क्या हम एक बजे मिलें? उसी जगह पर जहाँ हम पहले मिले थे: शिनागावा पैसिफिक होटल के चायघर में।”
मैंने कहा, "शिनगावा पैसिफिक होटल के चायघर में एक बजे," और फोन काट दिया।

•

मेई कासाहारा ने रात दस बजे फोन किया। उसे कुछ खास कहना नहीं था; वह बस किसी से बात करना चाहती थी। हमने कुछ देर तक सामान्य विषयों पर बातचीत की। अंत में उसने कहा, "बताइए, श्रीमान विंड-अप बर्ड, मेरे जाने के बाद से क्या आपको कोई अच्छी खबर मिली है?" मैंने कहा, "कोई अच्छी खबर नहीं है। कुछ भी नहीं।"

3

[illegible]

•

[illegible]

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

पर एक गिलास ठंडी चाय रखी थी, लेकिन ऐसा लग रहा था कि उसने अभी तक उसे छुआ भी नहीं था।
मैंने कॉफी ऑर्डर की और बर्फ का पानी पिया।
किसी ने कुछ नहीं कहा। नोबोरू वटाया को तो जैसे पता ही नहीं चला कि मैं आ गया हूँ। यह सुनिश्चित करने के लिए कि कहीं मैं अचानक पारदर्शी तो नहीं हो गया, मैंने मेज पर हाथ रखा और उसे कुछ बार पलटकर देखा। आखिरकार, वेटर आया, मेरे सामने एक कप रखा और उसमें कॉफी भर दी। उसके जाने के बाद, माल्टा कानो ने माइक्रोफ़ोन जाँचने जैसी हल्की-हल्की आवाज़ें निकालीं, लेकिन फिर भी कुछ नहीं बोली।
सबसे पहले नोबोरू वटाया ने बोलना शुरू किया। “मेरे पास बहुत कम समय है, इसलिए आइए इसे जितना हो सके सरल और सीधा रखें।” ऐसा लग रहा था मानो वह मेज के बीच में रखे स्टेनलेस स्टील के चीनी के कटोरे से बात कर रहे हों, लेकिन वास्तव में वह मुझसे ही बात कर रहे थे। चीनी का कटोरा हमारे बीच एक सुविधाजनक मध्य बिंदु मात्र था, जिसकी ओर वह अपना भाषण निर्देशित कर सकते थे।
मैंने सीधे-सीधे पूछा, "किसलिए इसे जितना हो सके उतना सरल और सीधा बनाना है?"
आखिरकार नोबोरू वाटाया ने अपना चश्मा उतारा, उसे मोड़कर मेज पर रख दिया और सीधे मेरी ओर देखा। उस आदमी से मेरी मुलाकात और बातचीत हुए तीन साल से ज़्यादा समय बीत चुका था, लेकिन मुझे बीते समय का ज़रा भी एहसास नहीं हुआ—शायद इसलिए क्योंकि मीडिया ने बार-बार उसका चेहरा मेरे सामने पेश किया था। कुछ खास तरह की जानकारी धुएँ की तरह होती है: चाहे चाहा जाए या न चाहा जाए, वह लोगों की आँखों और दिमाग में घुस जाती है, और व्यक्तिगत पसंद-नापसंद का कोई लिहाज़ नहीं करती।

अब जब मुझे उस आदमी को आमने-सामने देखना पड़ा, तो मैं इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं कर सका कि तीन सालों में उसके चेहरे की छवि कितनी बदल गई थी। उसका वह लगभग ठहरा हुआ, धुंधला सा चेहरा अब पीछे छूट गया था, मानो उसकी जगह कुछ चिकना और बनावटी सा आ गया हो। नोबोरू वटाया ने अपने लिए एक नया, ज़्यादा परिष्कृत मुखौटा खोज लिया था—निस्संदेह एक बहुत ही बढ़िया मुखौटा: शायद एक नई त्वचा भी। चाहे वह मुखौटा हो या त्वचा, मुझे मानना ही पड़ा—हाँ, मुझे भी मानना पड़ा—कि उसमें एक खास तरह का आकर्षण था। और फिर मुझे एहसास हुआ: इस चेहरे को देखना किसी टीवी छवि को देखने जैसा था। वह टीवी पर लोगों की तरह बोलता था, और टीवी पर लोगों की तरह चलता था। हमारे बीच हमेशा एक कांच की परत रहती थी। मैं एक तरफ था, और वह दूसरी तरफ।
“जैसा कि आप समझ ही गए होंगे, हम आज यहां कुमिको के बारे में बात करने आए हैं,” नोबोरू वाटाया ने कहा। “कुमिको और आपके बारे में। आपके भविष्य के बारे में। आप दोनों आगे क्या करने वाले हैं।” “क्या करने वाले हो?” मैंने कॉफी का कप उठाते हुए और एक घूंट लेते हुए कहा। “क्या आप थोड़ा और स्पष्ट बता सकते हैं?”
नोबोरू वाटाया ने अजीब तरह से भावहीन आँखों से मेरी ओर देखा। “ज़रा और स्पष्ट बताइए? कुमिको ने एक प्रेमी बना लिया है। उसने आपको छोड़ दिया है। आप यह तो नहीं कह रहे कि इस स्थिति में शामिल कोई भी इसे अनिश्चित काल तक जारी रखना चाहता है। यह किसी के लिए भी अच्छा नहीं होगा।”
“क्या तुमने कोई प्रेमी बना लिया है?” मैंने पूछा।
“अब कृपया एक पल रुकिए।” माल्टा कानो ने इस मौके पर हस्तक्षेप करते हुए कहा, “इस तरह की चर्चा का अपना एक उचित क्रम होता है।

श्री वटाया, श्री ओकाडा, यह महत्वपूर्ण है कि इस चर्चा को व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ाया जाए।”
“मुझे ऐसा नहीं लगता,” नोबोरू वटाया ने बेजान स्वर में कहा। “इसमें कोई व्यवस्था नहीं है। आप किस तरह की व्यवस्था की बात कर रहे हैं? इस चर्चा में तो कोई व्यवस्था ही नहीं है।”
मैंने माल्टा कानो से कहा, "उसे पहले बोलने दो। हम बाद में उचित क्रम जोड़ लेंगे—यदि कोई क्रम हो तो।"
माल्टा कानो ने कुछ सेकंड तक हल्के से होंठ सिकोड़कर मेरी ओर देखा, फिर सिर हिलाकर सहमति जताई। "ठीक है, फिर," उसने कहा। "श्री वटाया, पहले। कृपया।"
“कुमिको की जिंदगी में एक और आदमी आ गया है,” उन्होंने कहना शुरू किया। “और अब वो उसके साथ चली गई है। ये बात बिल्कुल साफ है। इसका मतलब है कि अब आपके लिए शादीशुदा रहना बेकार है। अच्छी बात ये है कि कोई बच्चे नहीं हैं, और हालात को देखते हुए पैसों का लेन-देन भी नहीं होगा। सब कुछ जल्दी सुलझ जाएगा। बस उसका नाम आपके परिवार के रजिस्टर से हटा दीजिए। आपको बस एक वकील द्वारा तैयार किए गए फॉर्म पर हस्ताक्षर और मुहर लगानी है, और बात खत्म। और मैं ये बात भी साफ कर देना चाहता हूँ ताकि कोई गलतफहमी न हो: मैं जो कह रहा हूँ वो पूरे वटाया परिवार का आखिरी मत है।” मैंने अपनी बाहें मोड़ लीं और कुछ देर तक उसकी बातों पर विचार किया। मैंने कहा, "मेरे कुछ सवाल हैं। सबसे पहले, आपको कैसे पता चला कि कुमिको का किसी और आदमी से संबंध है?"
“उसने मुझे खुद ऐसा बताया था,” नोबोरू वाटाया ने कहा।
मुझे समझ नहीं आया कि क्या कहूँ। मैंने अपने हाथ मेज पर रख दिए और चुप रही। कुमिको का इतनी निजी बात लेकर नोबोरू वटाया के पास जाना मेरे लिए कल्पना से परे था।

“उसने मुझे एक हफ्ते पहले फोन किया और कहा कि उसे कुछ बात करनी है,” नोबोरू वाटाया ने आगे बताया। “हम मिले और आमने-सामने बात की। तभी कुमिको ने मुझे बताया कि वह एक आदमी से मिल रही है।” महीनों में पहली बार मुझे सिगरेट पीने की इच्छा हुई। बेशक, मेरे पास सिगरेट नहीं थी। इसके बजाय, मैंने कॉफी का एक घूंट लिया और कप को ज़ोरदार, बेजान आवाज़ के साथ तश्तरी में वापस रख दिया। “फिर वह घर छोड़कर चली गई,” उसने कहा।
“ठीक है,” मैंने कहा। “अगर आप ऐसा कहती हैं, तो यह सच ही होगा। कुमिको का कोई प्रेमी रहा होगा। और वह आपसे सलाह लेने आई थी।
मुझे अब भी इस पर यकीन करना मुश्किल लग रहा है, लेकिन मैं कल्पना भी नहीं कर सकती कि आप मुझसे इस बारे में झूठ बोल रही होंगी।” "नहीं, बिल्कुल मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ," नोबोरू वाटाया ने होठों पर हल्की सी मुस्कान के साथ कहा।
"तो क्या बस इतना ही कहना है आपको? कुमिको मुझे छोड़कर किसी और आदमी के पास चली गई, इसलिए मुझे तलाक के लिए राजी हो जाना चाहिए?"
नोबोरू वाटाया ने हल्के से सिर हिलाकर जवाब दिया, मानो वह अपनी ऊर्जा बचाना चाह रहे हों। “मुझे लगता है कि आप समझते हैं कि मैं शुरू से ही कुमिको की आपसे शादी के पक्ष में नहीं था। मैंने यह सोचकर कोई हस्तक्षेप नहीं किया कि यह मामला मुझसे संबंधित नहीं है, लेकिन अब मुझे लगभग पछतावा हो रहा है कि काश मैंने हस्तक्षेप किया होता।” उन्होंने पानी का एक घूंट लिया और चुपचाप अपना गिलास वापस मेज पर रख दिया। फिर उसने आगे कहा: “जिस दिन से मैं तुमसे मिला, मुझे पता था कि तुमसे कुछ भी उम्मीद रखना बेकार है। मुझे तुममें कोई उम्मीद नहीं दिखी, तुममें ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे लगे कि तुम कुछ सार्थक कर पाओगे या एक इज्जतदार

इंसान बन पाओगे: तुममें कुछ भी चमकने या रोशनी फैलाने लायक नहीं था। मुझे पता था कि तुम जो भी काम हाथ में लोगे, वह अधूरा ही रह जाएगा, तुम उसे कभी पूरा नहीं कर पाओगे। और मैं सही था। तुम्हारी मेरी बहन से शादी को छह साल हो गए हैं, और इतने समय में तुमने क्या किया? कुछ नहीं, है ना? इन छह लंबे सालों में तुमने बस अपनी नौकरी छोड़ी और कुमिको की जिंदगी बर्बाद कर दी। अब तुम बेरोजगार हो और तुम्हारे पास भविष्य के लिए कोई योजना नहीं है। तुम्हारे दिमाग में कचरे और पत्थरों के सिवा कुछ नहीं है।” “कुमिको तुम्हारे जैसे इंसान के साथ क्यों जुड़ी, यह बात मेरी समझ से परे है। शायद उसे तुम्हारे दिमाग में भरी हुई बेकार की बातें दिलचस्प लगी हों। लेकिन आखिर में, बेकार की बातें तो बेकार की बातें ही होती हैं और बेकार की बातें तो बेकार की बातें ही। तुम शुरू से ही उसके लिए सही नहीं थे। इसका मतलब यह भी नहीं कि कुमिको एकदम परफेक्ट थी। बचपन से ही उसमें कुछ न कुछ अजीब आदतें थीं, पता नहीं क्यों। शायद इसीलिए वो पल भर के लिए तुम्हारी तरफ आकर्षित हुई थी। लेकिन अब वो सब खत्म हो चुका है। खैर, सबसे अच्छा यही होगा कि इस मामले को जितनी जल्दी हो सके खत्म कर दिया जाए। मेरे माता-पिता और मैं कुमिको का ख्याल रखेंगे। हम चाहते हैं कि तुम पीछे हट जाओ। और उससे मिलने की कोशिश मत करना। अब तुम्हारा उससे कोई लेना-देना नहीं है। अगर तुम उसमें उलझने की कोशिश करोगे तो सिर्फ मुसीबत ही खड़ी करोगे। तुम्हारे लिए सबसे अच्छा यही होगा कि तुम एक नई जगह पर नई जिंदगी शुरू करो—एक ऐसी जिंदगी जो तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर हो। यही तुम्हारे लिए और हमारे लिए सबसे अच्छा होगा।”

यह संकेत देने के लिए कि उसका पेय समाप्त हो गया है, नोबोरू वाटाया ने अपने गिलास में बचा हुआ पानी पी लिया, वेटर को बुलाया और और पानी मंगवाया।
मैंने पूछा, "क्या आपको कुछ और कहना है?"
इस बार नोबोरू वाटाया ने सिर को हल्के से हिलाकर जवाब दिया। मैंने माल्टा कानो से कहा, "ऐसे में इस चर्चा में उचित क्रम का क्या महत्व है?"
माल्टा कानो ने अपने बैग से एक छोटा सा सफेद रुमाल निकाला और उससे अपने होंठों के कोने पोंछे। फिर उसने मेज से अपनी लाल विनाइल टोपी उठाई और उसे बैग के ऊपर रख दिया।
“मुझे पूरा यकीन है कि यह सब आपके लिए बहुत चौंकाने वाला है, श्री ओकाडा,” उसने कहा। “और मेरी ओर से, जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, आपके साथ आमने-सामने इन चीजों के बारे में बात करना मेरे लिए बेहद कष्टदायक है।”
नोबोरू वाटाया ने यह सुनिश्चित करने के लिए अपनी घड़ी पर नजर डाली कि दुनिया अभी भी अपनी धुरी पर घूम रही है और उसका कीमती समय बर्बाद कर रही है।
माल्टा कानो ने आगे कहा, "अब मुझे समझ आ गया है कि मुझे आपको यह बात यथासंभव सरल और स्पष्ट शब्दों में बतानी चाहिए। श्रीमती ओकाडा सबसे पहले मुझसे मिलने आई थीं। वह मुझसे सलाह लेने आई थीं।"
नोबोरू वाटाया ने बीच में टोकते हुए कहा, "मेरी सिफारिश पर, कुमिको मुझसे बिल्ली के बारे में बात करने आई थी, और मैंने उसे सुश्री कानो से मिलवाया।"
मैंने माल्टा कानो से पूछा, "क्या यह आपसे मिलने से पहले की बात है या बाद की?"

“पहले,” उसने कहा।
“तो फिर,” मैंने कहा, “बातों को सही क्रम में कहें तो, बात कुछ इस तरह हुई। कुमिको को नोबोरू वटाया से आपके बारे में पता चला और वह खोई हुई बिल्ली के बारे में आपसे मिलने आई। फिर, पता नहीं क्यों, उसने मुझसे यह बात छुपा दी कि वह आपसे पहले ही मिल चुकी है और मेरी आपसे मुलाकात का इंतजाम किया—और मैं आपसे इसी जगह मिला। क्या मैं सही कह रहा हूँ?”
“यह लगभग सही है,” माल्टा कानो ने कुछ कठिनाई से कहा। “श्रीमती ओकाडा के साथ मेरी पहली बातचीत पूरी तरह से बिल्ली के बारे में थी। हालाँकि, मुझे लगा कि इसमें कुछ और भी है, इसीलिए मैं आपसे मिलना और सीधे बात करना चाहती थी। फिर मुझे श्रीमती ओकाडा से एक बार फिर मिलना और कुछ गहरे, निजी मामलों के बारे में पूछना आवश्यक हो गया।”
"तभी कुमिको ने तुम्हें बताया कि उसका एक प्रेमी है।"
“जी हां। संक्षेप में, मेरा मानना है कि यही स्थिति है। मेरी स्थिति को देखते हुए, मेरे लिए इससे अधिक विस्तार से बताना संभव नहीं है,” माल्टा कानो ने कहा।
मैंने एक गहरी साँस ली। ऐसा नहीं था कि आह भरने से कुछ हासिल होने वाला था, लेकिन यह करना ज़रूरी था। "तो फिर, कुमिको कुछ समय से इस आदमी के साथ रिश्ते में थी?"
"लगभग ढाई महीने, मुझे लगता है।"
मैंने कहा, "ढाई महीने। ढाई महीने से यह सब चल रहा था और मुझे कुछ पता ही नहीं चला?"
माल्टा कानो ने कहा, "क्योंकि, श्री ओकाडा, आपको अपनी पत्नी के बारे में बिल्कुल भी संदेह नहीं था।"

मैंने सिर हिलाया। "यह सच है। यह बात मेरे दिमाग में कभी आई ही नहीं। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि कुमिको मुझसे इस तरह झूठ बोल सकती है, और मुझे अब भी इस पर यकीन नहीं हो रहा है।" "परिणामों को एक तरफ रखते हुए, किसी दूसरे इंसान पर पूर्ण विश्वास रखने की क्षमता एक व्यक्ति के पास मौजूद सबसे बेहतरीन गुणों में से एक है।"
नोबोरू वाटाया ने कहा, "यह क्षमता आसानी से हासिल नहीं होती।" वेटर पास आया और उसने मेरे कॉफी कप में कॉफी दोबारा भर दी। बगल वाली मेज पर बैठी एक युवती जोर-जोर से हंस रही थी।
“तो फिर,” मैंने नोबोरू वटाया से कहा, “इस सभा का अंतिम उद्देश्य क्या है? हम तीनों यहाँ क्यों इकट्ठा हुए हैं? क्या मुझे कुमिको से तलाक के लिए राज़ी करने के लिए? या इसके पीछे कोई और गहरा मकसद है? आपने पहले जो कहा उसमें कुछ हद तक तर्क तो था, लेकिन उसके सारे ज़रूरी हिस्से अस्पष्ट हैं। आप कहते हैं कि कुमिको का एक आदमी है और वह घर छोड़कर चली गई है। तो वह कहाँ गई? वह वहाँ क्या कर रही है? क्या वह अकेली है या उसके साथ है? कुमिको ने मुझसे संपर्क क्यों नहीं किया? अगर यह सच है कि उसका कोई और आदमी है, तो बात यहीं खत्म। लेकिन जब तक मैं उससे सीधे नहीं सुन लेता, तब तक मैं इस बात पर विश्वास नहीं करूँगा। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? यहाँ सिर्फ़ कुमिको और मैं ही मायने रखते हैं। हम ही हैं जिन्हें आपस में बात करनी है और फ़ैसले लेने हैं। इस मामले में आपका कोई लेना-देना नहीं है।”
नोबोरू वटाया ने अपनी ठंडी चाय का गिलास एक तरफ सरका दिया। उन्होंने कहा, “हम आपको स्थिति की जानकारी देने आए हैं। मैंने सुश्री कानो को अपने साथ आने के लिए कहा, क्योंकि मुझे लगा कि किसी तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति बेहतर होगी। मुझे नहीं पता कि

कुमिको का दूसरा प्रेमी कौन है और वह अब कहाँ है। कुमिको अब बड़ी हो चुकी है। वह जो चाहे कर सकती है। लेकिन अगर मुझे पता भी होता कि वह कहाँ है, तो भी मैं आपको नहीं बताता। उसने आपसे संपर्क नहीं किया है क्योंकि वह आपसे बात नहीं करना चाहती।” “जाहिर तौर पर वह आपसे बात करना चाहती थी। वह आपको कितना बता सकती थी? जहाँ तक मुझे पता है, आप दोनों के बीच ज्यादा करीबी रिश्ता नहीं है।”
"अच्छा, अगर तुम दोनों इतने करीब थे, तो उसने किसी दूसरे आदमी के साथ संबंध क्यों बनाए?" नोबोरू वाटाया ने कहा।
माल्टा कानो को हल्की खांसी हुई।
नोबोरू वाटाया ने आगे कहा: “कुमिको ने मुझे बताया कि उसका किसी और पुरुष के साथ संबंध है। उसने कहा कि वह सब कुछ हमेशा के लिए सुलझाना चाहती है। मैंने उसे आपसे तलाक लेने की सलाह दी। उसने कहा कि वह इस बारे में सोचेगी।”
“बस इतना ही?” मैंने पूछा।
"अब क्या शेष है?"
“मुझे समझ नहीं आ रहा,” मैंने कहा। “मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि कुमिको इतनी महत्वपूर्ण बात लेकर आपके पास आएगी। ऐसे मामले में वह आपसे सलाह लेने वाली आखिरी व्यक्ति होगी। वह या तो खुद सोच-विचार कर लेगी या मुझसे सीधे बात करेगी। उसने आपसे कुछ और ही कहा होगा। अगर उसे आपसे आमने-सामने बात करनी पड़ी, तो बात कुछ और ही रही होगी।”
नोबोरू वाटाया ने अपने होठों पर हल्की सी मुस्कान बिखेरी—एक पतली, ठंडी मुस्कान, मानो भोर के आकाश में मंडराते चाँद के टुकड़े जैसी। "सच को बाहर निकलने देने का यही मतलब है," उसने धीमी लेकिन स्पष्ट आवाज़ में कहा।

मैंने स्वयं इस मुहावरे को आजमाते हुए कहा, "सच को मुंह से निकलने देना।"
“मुझे यकीन है कि आप मेरी बात समझ गए होंगे,” उसने कहा। “आपकी पत्नी किसी दूसरे आदमी के साथ सोती है। वह आपको छोड़कर भाग जाती है। और फिर आप सारा दोष किसी और पर मढ़ने की कोशिश करते हैं। मैंने इससे ज़्यादा बेवकूफी भरी बात कभी नहीं सुनी। देखिए, मैं यहाँ अपने मजे के लिए नहीं आया था। यह एक मजबूरी थी। मेरे लिए तो यह बस समय की बर्बादी है। इससे बेहतर है कि मैं अपना समय नाली में फेंक दूँ।”
जब उन्होंने बोलना समाप्त किया, तो मेज पर गहरी खामोशी छा गई। मैंने नोबोरू वाटाया से पूछा, "क्या तुम उस गंदे द्वीप के बंदरों की कहानी जानते हो?"
उसने बिना रुचि दिखाए सिर हिलाया। "मैंने इसके बारे में कभी नहीं सुना।"
कहीं दूर, एक घटिया सा द्वीप है। एक ऐसा द्वीप जिसका कोई नाम नहीं है। एक ऐसा द्वीप जिसे नाम देने लायक भी नहीं। एक घटिया द्वीप, जिसका आकार भी घटिया है। इस घटिया द्वीप पर खजूर के पेड़ उगते हैं, जिनका आकार भी घटिया है। और ये खजूर के पेड़ ऐसे नारियल पैदा करते हैं जिनसे घटिया बदबू आती है। घटिया बंदर इन पेड़ों पर रहते हैं, और उन्हें ये घटिया बदबू वाले नारियल खाना बहुत पसंद है, जिसके बाद वे दुनिया का सबसे गंदा मल त्याग करते हैं। मल जमीन पर गिरता है और घटिया ढेर बन जाते हैं, जिससे उन पर उगने वाले घटिया खजूर के पेड़ और भी घटिया हो जाते हैं। यह एक अंतहीन चक्र है।
मैंने अपनी बची हुई कॉफी पी ली।

“जब मैं यहाँ बैठकर तुम्हें देख रहा था,” मैंने आगे कहा, “मुझे अचानक इस घटिया द्वीप की कहानी याद आ गई। मैं कहना चाहता हूँ कि एक खास तरह की घटियापन, एक खास तरह का ठहराव, एक खास तरह का अंधकार, अपने ही बल से अपने ही चक्र में फैलता रहता है। और एक बार जब यह एक सीमा पार कर लेता है, तो इसे कोई नहीं रोक सकता—भले ही वह व्यक्ति खुद इसे रोकना चाहे।”
नोबोरू वाटाया के चेहरे पर किसी भी प्रकार का भाव नहीं था। मुस्कान गायब थी, लेकिन झुंझलाहट का कोई निशान भी नहीं था। मुझे बस उनकी भौहों के बीच एक छोटी सी झुर्री दिखाई दी, और मुझे याद नहीं आ रहा था कि क्या वह पहले भी वहां थी।
“क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं, श्रीमान वटाया?” मैंने आगे कहा। “मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि आप किस तरह के आदमी हैं। आप कहते हैं कि मैं कचरे या पत्थर जैसी हूँ। और आपको लगता है कि आप जब चाहें मुझे चूर-चूर कर सकते हैं। लेकिन बात इतनी आसान नहीं है। आपके मूल्यों के हिसाब से, मैं शायद कचरे और पत्थर के सिवा कुछ भी न हूँ। लेकिन मैं उतनी मूर्ख नहीं हूँ जितना आप समझते हैं। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि आपके उस चिकने, टीवी के लिए बने मुखौटे के पीछे क्या छिपा है। मैं आपका राज़ जानती हूँ। कुमिको भी जानती है और मैं भी: हम दोनों जानते हैं कि उसके नीचे क्या है। अगर मैं चाहूँ तो, मैं इसे दुनिया को बता सकती हूँ। मैं इसे सबके सामने ला सकती हूँ। इसमें समय लग सकता है, लेकिन मैं कर सकती हूँ। मैं भले ही कोई खास इंसान न हूँ, लेकिन कम से कम मैं रेत की बोरी तो नहीं हूँ। मैं एक जीता-जागता इंसान हूँ। अगर कोई मुझे मारता है, तो मैं भी पलटकर मारता हूँ। इस बात को याद रखना।” नोबोरू वाटाया अपने भावहीन चेहरे से मुझे घूरता रहा—ऐसा चेहरा मानो अंतरिक्ष में तैरता हुआ कोई पत्थर का टुकड़ा हो। मैंने

उससे जो कुछ कहा था, वह लगभग सरासर झूठ था। मैं नोबोरू वाटाया का रहस्य नहीं जानता था। यह कल्पना करना मुश्किल नहीं था कि उसके अंदर कुछ गहरा विकृत था। लेकिन मुझे यह पक्के तौर पर पता नहीं था कि वह क्या हो सकता है। फिर भी, ऐसा लगा जैसे मेरे शब्दों ने उसके भीतर किसी चीज को चोट पहुँचाई हो। मैं उसके चेहरे पर इसका असर पढ़ सकता था। उसने मुझे उस तरह से जवाब नहीं दिया जैसे वह हमेशा टीवी पर पैनल चर्चाओं में अपने विरोधियों को देता था: उसने मेरे शब्दों का उपहास नहीं किया, न ही मुझे फंसाने की कोशिश की, न ही कोई चालाकी भरी बात कहने का मौका ढूंढा। वह वहाँ चुपचाप बैठा रहा, बिना हिले-डुले।
फिर नोबोरू वटाया के चेहरे में कुछ बहुत ही अजीब होने लगा। धीरे-धीरे उसका चेहरा लाल होने लगा। लेकिन यह बड़े ही विचित्र तरीके से हुआ। चेहरे के कुछ हिस्से गहरे लाल हो गए, जबकि कुछ हल्के लाल हुए और बाकी के हिस्से अजीब तरह से पीले पड़ गए। इससे मुझे शरद ऋतु के उस जंगल की याद आ गई जहाँ रंग बिखरे हुए थे और पतझड़ी और सदाबहार पेड़ बेतरतीब ढंग से उग रहे थे।
अंततः, बिना कुछ कहे, नोबोरू वाटाया खड़े हुए, अपनी जेब से चश्मा निकाला और पहन लिया। उनके चेहरे पर अभी भी अजीब से धब्बेदार रंग छाए हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो वे अब स्थायी हो गए हों। माल्टा कानो अपनी सीट पर बिल्कुल स्थिर बैठी रहीं, कुछ नहीं बोलीं। मैंने भी पूरी तरह से उदासीनता का भाव अपना लिया। नोबोरू वाटाया ने मुझसे कुछ कहना शुरू किया, लेकिन अंत में उन्होंने शायद कुछ न कहने का फैसला किया। इसके बजाय, वे मेज से दूर चले गए और भीड़ में गायब हो गए।

•

नोबोरू वाटाया के जाने के बाद कुछ देर तक माल्टा कानो और मैंने एक-दूसरे से कुछ नहीं कहा। मैं बहुत थका हुआ महसूस कर रहा था। वेटर आया और उसने मेरी कॉफी का कप फिर से भरने की पेशकश की, लेकिन मैंने उसे मना कर दिया। माल्टा कानो ने मेज से अपनी लाल टोपी उठाई और कुछ मिनट तक उसे देखती रही, फिर उसे अपने बगल वाली कुर्सी पर रख दिया।
मुझे मुंह में कड़वापन महसूस हुआ। मैंने पानी पीकर इसे दूर करने की कोशिश की, लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ।
कुछ देर के अंतराल के बाद माल्टा कानो ने बोलना शुरू किया, “कभी- कभी भावनाओं को व्यक्त करना ज़रूरी होता है। नहीं तो, वे अंदर ही अंदर रुक जाती हैं। मुझे यकीन है कि अब जब आपने अपनी बात कह दी है, तो आपको अच्छा लग रहा होगा।”
मैंने कहा, "थोड़ा बहुत तो हुआ। लेकिन इससे कुछ हल नहीं हुआ। किसी बात का कोई निष्कर्ष नहीं निकला।"
"आपको श्रीमान वटाया पसंद नहीं हैं, है ना, श्रीमान ओकाडा?"
“जब भी मैं उस आदमी से बात करती हूँ, मुझे अंदर से एक अजीब सा खालीपन महसूस होता है। कमरे में रखी हर चीज़ बेजान सी लगने लगती है। सब कुछ खोखला सा लगता है। ऐसा क्यों होता है, यह मैं आपको कभी ठीक से समझा नहीं सकती। इसी भावना के कारण, मैं ऐसी बातें कह देती हूँ और ऐसे काम कर देती हूँ जो मेरे स्वभाव के बिल्कुल विपरीत होते हैं। और बाद में मुझे बहुत बुरा लगता है। अगर मैं उससे कभी दोबारा न मिल पाऊँ, तो मुझे इससे ज़्यादा खुशी किसी बात से नहीं होगी।”
माल्टा कानो ने सिर हिलाया। “दुर्भाग्यवश, आपको श्री वटाया से कई बार फिर मिलना पड़ेगा। इससे आप बच नहीं सकते।”

शायद वह सही थी। मैं उसे इतनी आसानी से अपनी जिंदगी से नहीं निकाल सकती थी।
मैंने अपना गिलास उठाया और पानी का एक और घूंट पिया। आखिर वो भयानक स्वाद कहाँ से आया था?
मैंने कहा, "मैं आपसे बस एक बात पूछना चाहता हूँ। आप यहाँ किसके पक्ष में हैं? नोबोरू वटाया के या मेरे?"
माल्टा कानो ने अपनी कोहनियाँ मेज पर टिकाईं और अपने चेहरे के सामने हथेलियों को आपस में मिला लिया। "दोनों में से कोई नहीं," उसने कहा। "इस मामले में कोई पक्ष नहीं है। उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है। यह ऐसी चीज नहीं है जिसमें ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, आगे- पीछे कुछ हो, श्री ओकाडा।"
मैंने कहा, "सुनने में तो यह ज़ेन जैसा लगता है। एक विचार प्रणाली के रूप में यह अपने आप में काफी दिलचस्प है, लेकिन किसी भी चीज़ को समझाने के लिए उतना उपयोगी नहीं है।"
उसने सिर हिलाया। अपने चेहरे के सामने हथेलियों को आपस में दबाकर रखने के बाद, उसने उन्हें तीन इंच फैला लिया, थोड़ा तिरछा करके मेरी ओर किया। उसकी हथेलियाँ छोटी और सुडौल थीं। “मुझे पता है कि मेरी बातें आपको ज़्यादा समझ में नहीं आ रही हैं। और आपके नाराज़ होने में मुझे कोई बुराई नहीं लगती। लेकिन अगर मैं अभी आपको कुछ बताऊँगी, तो उसका कोई फ़ायदा नहीं होगा। बल्कि, इससे सब कुछ बिगड़ जाएगा। आपको अपनी ताकत से जीत हासिल करनी होगी। अपने दम पर।”
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "जैसे वाइल्ड किंगडम में होता है। अगर आपको चोट लगे, तो आप भी पलटवार करें।"
“बस यही,” माल्टा कानो ने कहा। “बिल्कुल सही।” फिर, जैसे कोई हाल ही में मृत व्यक्ति का सामान समेट रहा हो, वैसे ही उसने अपना

पर्स उठाया और अपनी लाल विनाइल टोपी पहन ली। टोपी को सिर पर रखते ही माल्टा कानो ने एक अजीबोगरीब एहसास दिलाया कि समय का एक क्षण अब समाप्त हो गया है।

•

माल्टा कानो के जाने के बाद, मैं वहाँ अकेला बैठा रहा, मेरे मन में कुछ खास नहीं चल रहा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि अगर मैं उठ भी जाऊँ तो कहाँ जाऊँ या क्या करूँ। लेकिन ज़ाहिर है, मैं वहाँ हमेशा के लिए नहीं रह सकता था। बीस मिनट बीत जाने के बाद, मैंने हम तीनों का बिल चुकाया और चायघर से निकल गया। बाकी दोनों ने बिल नहीं चुकाया था।

दिव्य कृपा खो गई

•

मन की वेश्या
घर पहुँचकर मुझे डाकपेटी में एक मोटा-सा पत्र मिला। यह लेफ्टिनेंट मामिया की ओर से था। लिफाफे पर मेरा नाम और पता पहले की तरह ही मोटे और सुंदर अक्षरों में लिखा हुआ था। मैंने कपड़े बदले, चेहरा धोया और रसोई में जाकर दो गिलास ठंडा पानी पिया। थोड़ी देर आराम करने के बाद मैंने पत्र खोला।
लेफ्टिनेंट मामिया ने फाउंटेन पेन से दस पतले पन्नों पर छोटे- छोटे अक्षर लिखे थे। मैंने पन्ने पलटे और उन्हें वापस लिफाफे में रख दिया। मैं इतना थका हुआ था कि इतना लंबा पत्र पढ़ नहीं पा रहा था; उस समय मेरी एकाग्रता शक्ति नहीं थी। जब मेरी नज़र हाथ से लिखे अक्षरों की पंक्तियों पर पड़ी, तो वे अजीब नीले कीड़ों के झुंड की तरह लग रहे थे। और इसके अलावा, नोबोरू वटाया की आवाज़ अभी भी मेरे दिमाग में हल्की-हल्की गूंज रही थी।
मैं सोफे पर लेट गया और काफी देर तक आंखें बंद करके कुछ भी नहीं सोच रहा था। उस समय मुझे जो महसूस हो रहा था, उसके चलते कुछ भी न सोचना मेरे लिए मुश्किल नहीं था। किसी एक बात के बारे में न सोचने के लिए, मुझे बस कई चीजों के बारे में थोड़ा-थोड़ा करके सोचना था: बस एक पल के लिए किसी चीज के बारे में सोचना और उसे हवा में उड़ा देना।
शाम के लगभग पाँच बज रहे थे जब मैंने आखिरकार लेफ्टिनेंट मामिया का पत्र पढ़ने का फैसला किया। मैं बरामदे में गया, एक खंभे से टेक लगाकर बैठ गया और लिफाफे से पन्ने निकाले।

बार जब मैंने इन्हें भुलाने की कोशिश की, तो ये पहले से कहीं ज़्यादा मज़बूत और जीवंत होकर लौट आईं। कैंसर की कोशिकाओं की तरह, ये यादें मेरे दिमाग में जड़ जमा चुकी हैं और मुझे अंदर से खा रही हैं।
आज भी मुझे हर छोटी से छोटी बात इतनी स्पष्टता से याद है कि ऐसा लगता है जैसे मैं कल ही घटी घटनाओं को याद कर रहा हूँ। मैं रेत और घास को अपने हाथों में महसूस कर सकता हूँ; मैं उनकी गंध भी महसूस कर सकता हूँ। मैं आकाश में बादलों की आकृतियाँ देख सकता हूँ। मैं अपने गालों पर सूखी, रेतीली हवा का स्पर्श महसूस कर सकता हूँ। इसके मुकाबले, मेरे जीवन की बाद की घटनाएँ सपने और वास्तविकता की सीमा पर स्थित भ्रम जैसी लगती हैं।
मेरे जीवन की जड़ें—वे चीजें जो कभी सचमुच सिर्फ मेरी थीं— बाहरी मंगोलिया के मैदानों में जम गईं या जलकर राख हो गईं, जहाँ दूर-दूर तक कुछ भी दिखाई नहीं देता था। उसके बाद, सीमा पार से हमला करने वाली सोवियत टैंक टुकड़ी के साथ उस भयंकर लड़ाई में मैंने अपना हाथ खो दिया; कड़ाके की ठंड में साइबेरिया के एक श्रम शिविर में मैंने अकल्पनीय कष्ट झेले; मुझे स्वदेश वापस भेज दिया गया और मैंने एक ग्रामीण हाई स्कूल में तीस वर्षों तक सामाजिक अध्ययन के शिक्षक के रूप में नीरस जीवन व्यतीत किया; और तब से मैं अकेला ही खेती करता आ रहा हूँ। लेकिन वे सारे महीने और साल मुझे एक भ्रम मात्र लगते हैं। ऐसा लगता है जैसे वे कभी हुए ही नहीं। पल भर में, मेरी स्मृति समय के उस खाली खोल को पार कर जाती है और मुझे हुलुनबुइर के जंगलों में वापस ले जाती है।
जिस चीज़ ने मेरी जान ली, जिसने मुझे उस खाली खोल में बदल दिया, मेरा मानना है कि वह कुएँ की तलहटी में दिखाई देने वाली रोशनी में कुछ था—सूरज की वह तीव्र रोशनी जो दस-बीस सेकंड के लिए सीधे

कुएँ की तलहटी तक पहुँचती थी। वह बिना किसी चेतावनी के आती और उतनी ही अचानक गायब हो जाती। लेकिन उस क्षणिक रोशनी में मैंने कुछ देखा—कुछ ऐसा जो हमेशा के लिए देखा—जिसे मैं अपने जीवन भर फिर कभी नहीं देख पाऊँगा। और उसे देखने के बाद, मैं वह इंसान नहीं रहा जो मैं पहले था।
वहाँ क्या हुआ था? उसका क्या मतलब था? चालीस साल से भी ज़्यादा बीत जाने के बाद भी, मैं इन सवालों का कोई निश्चित जवाब नहीं दे सकता। इसीलिए जो मैं कहने जा रहा हूँ, वह पूरी तरह से एक परिकल्पना है, एक अस्थायी व्याख्या है जिसे मैंने बिना किसी तार्किक आधार के खुद गढ़ा है। हालाँकि, मेरा मानना है कि मेरी यह परिकल्पना, फिलहाल, उस सच्चाई के सबसे करीब है जो मैंने अनुभव की थी।
बाहरी मंगोलियाई सैनिकों ने मुझे मैदान के बीचोंबीच एक गहरे, अंधेरे कुएँ में फेंक दिया था। मेरा पैर और कंधा टूट चुका था, मेरे पास न खाना था, न पानी: मैं बस मरने का इंतज़ार कर रहा था। इससे पहले, मैंने एक आदमी को ज़िंदा खाल उतारते देखा था। मेरा मानना है कि इन विशेष परिस्थितियों में, मेरी चेतना एकाग्रता की ऐसी तीव्र अवस्था में पहुँच गई थी कि जब कुछ सेकंड के लिए प्रकाश की तीव्र किरण पड़ी, तो मैं सीधे उस स्थान पर पहुँच गया जिसे मेरी चेतना का मूल कहा जा सकता है। खैर, मैंने वहाँ किसी चीज़ का आकार देखा। ज़रा कल्पना कीजिए: मेरे चारों ओर सब कुछ प्रकाश में नहाया हुआ है। मैं प्रकाश की बाढ़ के ठीक बीच में हूँ। मेरी आँखें कुछ नहीं देख पा रही हैं। मैं बस प्रकाश से घिरा हुआ हूँ। लेकिन वहाँ कुछ प्रकट होने लगता है। मेरे क्षणिक अंधत्व के बीच, कुछ आकार लेने की कोशिश कर रहा है। कोई चीज़। कोई ऐसी चीज़ जिसमें जीवन है। सूर्य ग्रहण में परछाई की तरह, यह

प्रकाश में काले रंग में उभरने लगती है। लेकिन मैं कभी भी इसका पूरा रूप नहीं देख पाता। यह मेरे पास आने की कोशिश कर रहा है, मुझे दिव्य कृपा प्रदान करने की कोशिश कर रहा है। मैं कांपते हुए इसका इंतज़ार करता हूँ। लेकिन फिर, या तो इसका इरादा बदल जाता है या समय कम पड़ जाता है, यह मेरे पास नहीं आता। पूर्ण रूप धारण करने से ठीक पहले, यह प्रकाश में विलीन हो जाता है। फिर प्रकाश भी लुप्त हो जाता है। कुएँ में प्रकाश के चमकने का समय समाप्त हो जाता है।
यह लगातार दो दिन तक हुआ। बिल्कुल वही चीज़। उमड़ते प्रकाश में कुछ आकार लेने लगा, फिर पूर्ण होने से पहले ही लुप्त हो गया। कुएँ में, मैं भूख और प्यास से तड़प रहा था—बेहद पीड़ा झेल रहा था। लेकिन अंततः, यह कोई खास बात नहीं थी। कुएँ में सबसे ज़्यादा पीड़ा मुझे उस प्रकाश में दिख रही चीज़ को साफ़-साफ़ न देख पाने की थी: जो देखना ज़रूरी था उसे न देख पाने की भूख, जो जानना ज़रूरी था उसे न जान पाने की प्यास। अगर मैं उसे साफ़- साफ़ देख पाता, तो मुझे वहीं मर जाने में कोई आपत्ति नहीं होती। मुझे सचमुच ऐसा ही महसूस हो रहा था। मैं उसके पूर्ण रूप को देखने के लिए कुछ भी त्याग देता।
अंततः, वह रूप मुझसे हमेशा के लिए छीन लिया गया। कृपा मुझे मिलने से पहले ही समाप्त हो गई। और जैसा कि मैंने पहले कहा, उस गड्ढे से निकलने के बाद मैंने जो जीवन जिया, वह खोखला और खाली था। इसीलिए, जब युद्ध समाप्त होने से ठीक पहले सोवियत सेना ने मंचूरिया पर आक्रमण किया, तो मैंने स्वेच्छा से मोर्चे पर जाने की पेशकश की। सिबेनान श्रम शिविर में भी, मैंने जानबूझकर खुद को सबसे कठिन परिस्थितियों में रखने का प्रयास किया। हालाँकि, मैंने जो कुछ भी किया, मैं मर नहीं सका। जैसा कि कॉर्पोरल होंडा

ने उस रात भविष्यवाणी की थी, मेरा भाग्य जापान लौटना और एक असाधारण रूप से लंबा जीवन जीना लिखा था। मुझे याद है कि जब मैंने पहली बार यह खबर सुनी तो मैं कितना खुश हुआ था। लेकिन यह एक अभिशाप साबित हुआ। ऐसा नहीं था कि मैं मर नहीं सकता था: मैं मर ही नहीं सकता था। कॉर्पोरल होंडा इस बारे में भी सही थे: बेहतर होता कि मुझे यह पता ही न चलता।
जब वो ईश्वरीय ज्ञान और कृपा मुझसे छिन गई, तो मेरा जीवन भी छिन गया। मेरे भीतर जो सजीवता थी, जिसका कुछ महत्व था, वो अब निर्जीव हो चुकी थी। कुछ भी शेष नहीं बचा था। उस प्रचंड प्रकाश में सब जलकर राख हो गए थे। उस ईश्वरीय ज्ञान या कृपा से निकलने वाली ऊष्मा ने मेरे उस जीवन के मूल को झुलसा दिया था जिसने मुझे वो इंसान बनाया था जो मैं था। निश्चित रूप से मुझमें उस ऊष्मा का सामना करने की शक्ति नहीं थी। इसलिए मुझे मृत्यु का कोई भय नहीं है। बल्कि, मेरे लिए तो मेरी शारीरिक मृत्यु ही मुक्ति का एक रूप होगी। यह मुझे इस निराशाजनक बंधन से, इस 'मैं होने के दर्द' से हमेशा के लिए मुक्त कर देगी।
मैंने एक बार फिर आपको एक बहुत लंबी कहानी सुनाकर बोझिल कर दिया है। क्षमा करें। लेकिन श्री ओकाडा, मैं आपको यह बताना चाहता हूँ: एक खास क्षण में मेरी जान चली गई, और मैं इन चालीस वर्षों से अधिक समय से उस खोए हुए जीवन के साथ जी रहा हूँ। ऐसे हालात में फँसे व्यक्ति के रूप में, मुझे यह एहसास हुआ है कि जीवन उतना सीमित है जितना कि इसके उथल-पुथल भरे दौर में फँसे लोग समझते भी नहीं हैं। जीवन में प्रकाश केवल एक क्षण के लिए ही चमकता है— शायद कुछ सेकंड के लिए ही। एक बार जब वह चला जाता है और कोई उसके दिए गए ज्ञान को समझ नहीं पाता, तो फिर कोई दूसरा मौका नहीं मिलता। हो सकता है कि व्यक्ति को अपना शेष जीवन अकेलेपन और

करीने से सजी कुमिको की पोशाकों को देखने लगा। और मैंने सोचा, अब तक मेरे जीवन का क्या अर्थ रहा है? मुझे समझ आ गया कि नोबोरू वटाया किस बारे में बात कर रहे थे। उनकी बातों पर मेरी पहली प्रतिक्रिया गुस्सा थी, लेकिन मुझे मानना पड़ा कि वह सही कह रहे थे। उन्होंने कहा था, “मेरी बहन से तुम्हारी शादी को छह साल हो गए हैं, और इतने समय में तुमने क्या किया? कुछ नहीं, है ना? इन छह लंबे सालों में तुमने बस अपनी नौकरी छोड़ी और कुमिको की जिंदगी बर्बाद कर दी। अब तुम बेरोजगार हो और तुम्हारे पास भविष्य के लिए कोई योजना नहीं है। तुम्हारे दिमाग में कचरे और पत्थरों के सिवा कुछ नहीं है।” मेरे पास उनकी बात की सच्चाई मानने के अलावा कोई चारा नहीं था। वस्तुनिष्ठ रूप से देखा जाए तो, मैंने इन छह सालों में कुछ भी सार्थक नहीं किया था, और मेरे दिमाग में सचमुच कचरे और पत्थरों जैसा ही कुछ था। मैं शून्य था। ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने कहा था।
लेकिन क्या यह सच था कि मैंने कुमिको की जिंदगी बर्बाद कर दी थी?
काफी देर तक मैं अलमारी में कुमिको की ड्रेस, ब्लाउज और स्कर्ट देखती रही। ये कुमिको की छोड़ी हुई परछाइयाँ थीं। मालिक के बिना, ये परछाइयाँ बस वहीं लटकी रह गईं, बेजान। मैं बाथरूम गई और क्रिश्चियन डायोर कोलोन की बोतल निकाली जो किसी ने कुमिको को दी थी। मैंने उसे खोला और सूंघा। वही खुशबू थी जो मैंने कुमिको के कानों के पीछे उस सुबह महसूस की थी जब वह घर छोड़कर गई थी। मैंने धीरे-धीरे सारा कोलोन सिंक में डाल दिया। जैसे ही कोलोन नाली में बह गया, फूलों की तेज़ खुशबू (मैंने उसका सही नाम याद करने की कोशिश की लेकिन याद नहीं आया) सिंक के ऊपर फैल गई, जिससे यादें ज़बरदस्त तीव्रता से ताज़ा हो गईं। इस तेज़ खुशबू के बीच

मैंने अपना चेहरा धोया और दांत ब्रश किए। फिर मैंने मे कासाहारा के यहाँ जाने का फैसला किया।

•

हमेशा की तरह, मैं मियावाकी घर के पीछे वाली गली में खड़ा होकर मे कासाहारा के आने का इंतज़ार कर रहा था, लेकिन इस बार ऐसा नहीं हुआ। मैं बाड़ से टिककर एक लेमन कैंडी चूस रहा था, चिड़िया की मूर्ति को देख रहा था और लेफ्टिनेंट मामिया के पत्र के बारे में सोच रहा था। जल्द ही, अंधेरा होने लगा। लगभग आधे घंटे इंतज़ार करने के बाद, मैंने उम्मीद छोड़ दी। शायद मे कासाहारा कहीं बाहर गई होगी।
मैं गली से वापस अपने घर के पीछे वाले हिस्से में गया और दीवार फांदकर अंदर घुस गया। अंदर जाकर मैंने देखा कि पूरा स्थान गर्मी की शाम के शांत, धुंधले अंधेरे में डूबा हुआ था। और वहाँ क्रेता कानो थी। एक पल के लिए मुझे लगा जैसे मैं सपना देख रहा हूँ। लेकिन नहीं, यह वास्तविकता का ही एक हिस्सा था। मेरे द्वारा गिराए गए इत्र की हल्की सी खुशबू अभी भी हवा में तैर रही थी। क्रेता कानो सोफे पर बैठी थी, उसके हाथ उसके घुटनों पर थे। मैं उसके करीब गया, लेकिन मानो समय ही उसके भीतर रुक गया हो, उसने जरा भी हरकत नहीं की। मैंने बत्ती जलाई और उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया।
अंत में उसने कहा, "दरवाजा खुला हुआ था। मैं खुद ही अंदर चली गई।"
“कोई बात नहीं,” मैंने कहा। “मैं आमतौर पर बाहर जाते समय दरवाजा खुला छोड़ देता हूँ।”
उसने लेस वाली सफेद ब्लाउज, झालरदार बैंगनी स्कर्ट और बड़े झुमके पहने थे। उसकी बाईं कलाई पर एक जैसे बड़े कंगन थे। उन्हें

देखकर मुझे गहरा सदमा लगा। वे लगभग वैसे ही थे जैसे मैंने उसे सपने में पहने देखा था। उसके बाल और मेकअप हमेशा की तरह सजे हुए थे। हेयर स्प्रे ने बालों को हमेशा की तरह अच्छे से सेट कर रखा था, मानो वह अभी-अभी ब्यूटी पार्लर से आई हो।
“समय बहुत कम है,” उसने कहा। “मुझे तुरंत घर लौटना है। लेकिन मैं आपसे बात करना चाहती थी, श्री ओकाडा। मुझे लगता है कि आपने आज मेरी बहन और श्री वटाया को देखा था।”
"बिल्कुल। हालांकि, वह कोई बहुत मजेदार छोटी सी सभा नहीं थी।" “क्या इस संबंध में आप मुझसे कुछ पूछना चाहेंगे?” उसने पूछा। हर तरह के लोग हर तरह के सवाल लेकर मेरे पास आ रहे थे।
मैंने कहा, "मैं नोबोरू वाटाया के बारे में और अधिक जानना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि मुझे उनके बारे में और अधिक जानना ही होगा।"
उसने सिर हिलाया। “मैं श्री वटाया के बारे में और जानना चाहती हूँ। मुझे लगता है मेरी बहन ने आपको पहले ही बता दिया होगा कि उन्होंने बहुत समय पहले मेरा यौन उत्पीड़न किया था। आज मेरे पास इस बारे में विस्तार से बताने का समय नहीं है, लेकिन भविष्य में कभी बताऊँगी। खैर, यह सब मेरी मर्ज़ी के खिलाफ हुआ था। उनके साथ मेरे संबंध पहले से तय थे। इसीलिए इसे आम तौर पर बलात्कार नहीं कहा जा सकता। लेकिन उन्होंने मेरा यौन उत्पीड़न किया, और इससे मेरे व्यक्तित्व में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए। अंततः, मैं उस अनुभव से उबर पाई। दरअसल, (माल्टा कानो की मदद से) इसने मुझे एक नए, उच्च स्तर पर पहुँचने में सक्षम बनाया। परिणाम चाहे जो भी रहे हों, सच्चाई यही है कि नोबोरू वटाया ने उस समय मेरी मर्ज़ी के खिलाफ मेरा यौन उत्पीड़न किया था। उन्होंने जो किया

वह गलत और खतरनाक था। मेरे हमेशा के लिए खो जाने का खतरा था। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं?” मैं उनकी बात नहीं समझ पाई। “बिल्कुल, मेरे आपके साथ भी संबंध थे, श्री ओकाडा, लेकिन वह सही तरीके से, सही उद्देश्य से किए गए थे। उससे मेरा कोई अपमान नहीं हुआ।”
मैंने कुछ सेकंड तक सीधे उसकी ओर देखा, मानो रंगीन धब्बों वाली दीवार को घूर रहा हो। "क्या तुम्हारे मेरे साथ संबंध थे?" “हाँ,” उसने कहा। “पहली बार तो मैंने सिर्फ़ मुँह का इस्तेमाल किया, लेकिन दूसरी बार हमने शारीरिक संबंध बनाए। दोनों बार एक ही कमरे में। तुम्हें याद होगा, है ना? पहली बार हमारे पास समय बहुत कम था, इसलिए हमें जल्दी करनी पड़ी। दूसरी बार हमारे पास ज़्यादा समय था।”
मेरे लिए उसे जवाब देना असंभव था।
“दूसरी बार मैंने आपकी पत्नी की ड्रेस पहनी थी। नीली वाली। और मेरे बाएं हाथ में इस तरह के कंगन थे। क्या यह सच नहीं है?” उसने कंगन पहने हुए अपना बायां हाथ मेरी ओर बढ़ाया।
मेंने सिर हिलाया।
इसके बाद क्रेता कानो ने कहा, “बेशक, असल में हमारे बीच कोई शारीरिक संबंध नहीं थे। जब तुमने वीर्यपात किया, तो वह शारीरिक रूप से मुझमें नहीं, बल्कि तुम्हारी चेतना में हुआ था। समझे? वह एक कृत्रिम चेतना थी। फिर भी, हम दोनों इस चेतना को साझा करते हैं कि हमारे बीच शारीरिक संबंध थे।”
ऐसा करने का क्या फायदा?
“जानने के लिए,” उसने कहा। “और अधिक जानने के लिए—और अधिक गहराई से जानने के लिए।”

मैंने राहत की सांस ली। यह तो पागलपन था। लेकिन वह मेरे सपने के दृश्य का वर्णन अविश्वसनीय सटीकता से कर रही थी। अपनी उंगली मुंह के चारों ओर घुमाते हुए, मैंने उसकी बाईं कलाई पर बंधी दो चूड़ियों को देखा।
मैंने रूखे स्वर में कहा, "शायद मैं बहुत बुद्धिमान नहीं हूँ, लेकिन मैं यह दावा नहीं कर सकता कि मैंने आपकी बताई हर बात समझ ली है।"
“आपके दूसरे सपने में, जब मैं आपके साथ संबंध बना रही थी, तब मेरी जगह एक दूसरी महिला ने ले ली। क्या यह सच है? मुझे नहीं पता कि वह कौन थी। लेकिन शायद उस घटना का मकसद आपको कुछ संकेत देना था, श्री ओकाडा। यही मैं आपको बताना चाहती थी।”
मैंने बदले में कुछ नहीं कहा।
"मेरे साथ संबंध रखने के लिए आपको अपराधबोध नहीं होना चाहिए," क्रेता कानो ने कहा। "देखिए, श्री ओकाडा, मैं एक वेश्या हूँ। मैं पहले देह की वेश्या थी, लेकिन अब मैं मन की वेश्या हूँ। चीजें मेरे माध्यम से गुजरती हैं।"
इस समय, क्रेता कानो अपनी सीट से उठी और मेरे बगल में घुटनों के बल बैठ गई, और दोनों हाथों से मेरा हाथ थाम लिया। उसके हाथ कोमल, गर्म और बहुत छोटे थे। "कृपया मुझे थाम लीजिए, श्री ओकाडा। अभी इसी वक्त।"
हम खड़े हो गए, और मैंने उसे अपनी बाहों में भर लिया। सच कहूँ तो मुझे पता नहीं था कि मुझे ऐसा करना चाहिए या नहीं। लेकिन उस पल, वहीं पर, क्रेता कानो को गले लगाना कोई गलती नहीं लग रही थी। मैं इसे समझा नहीं सकता था, पर मुझे ऐसा ही महसूस हो रहा था। मैंने उसके पतले शरीर को ऐसे जकड़ लिया जैसे मैं बॉलरूम डांस का पहला सबक ले रहा हूँ। वह छोटी कद की महिला थी। उसका सिर मेरी ठुड्डी

के ठीक नीचे तक आता था। उसके स्तन मेरे पेट से दबे हुए थे। उसने अपना गाल मेरी छाती से लगा रखा था। और हालाँकि उसने पूरे समय कोई आवाज़ नहीं की, वह रो रही थी। मैं अपनी टी-शर्ट के ज़रिए उसके आँसुओं की गर्माहट महसूस कर सकता था। मैंने नीचे देखा, तो उसके करीने से संवारे हुए बाल काँप रहे थे। मुझे लगा जैसे मैं कोई खूबसूरत सपना देख रहा हूँ। लेकिन यह सपना नहीं था।
काफी देर तक हम उसी स्थिति में बिना हिले-डुले खड़े रहे, फिर अचानक कुछ याद आने पर वह मुझसे दूर हट गई। कुछ दूरी बनाए रखते हुए उसने मेरी तरफ देखा।
“बहुत-बहुत धन्यवाद, श्रीमान ओकाडा,” उसने कहा। “मैं अब घर जा रही हूँ।” ऐसा लग रहा था जैसे वह अभी-अभी बहुत रोई थी, लेकिन उसके मेकअप पर ज़रा भी असर नहीं पड़ा था। वास्तविकता का एहसास अब अजीब तरह से गायब था।
मैंने पूछा, "क्या तुम फिर कभी मेरे सपनों में आओगे?"
“मुझे नहीं पता,” उसने सिर हिलाते हुए धीरे से कहा। “यह तो मैं भी आपको नहीं बता सकती। लेकिन मुझ पर भरोसा रखिएगा। चाहे कुछ भी हो जाए, मुझसे डरिएगा मत और न ही मेरे मामले में सतर्क रहने की ज़रूरत समझिएगा। क्या आप मुझसे वादा करेंगे, श्री ओकाडा?” मैंने सिर हिलाकर जवाब दिया।
इसके कुछ ही समय बाद, क्रीटा कानो घर लौट गई।
रात का अंधेरा पहले से कहीं ज़्यादा घना था। मेरी टी-शर्ट पूरी तरह भीगी हुई थी। मैं भोर तक जागता रहा, नींद नहीं आ रही थी। एक तो मुझे नींद नहीं आ रही थी, और सच कहूँ तो मुझे सोने से डर लग रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था कि अगर मैं सो गया, तो उड़ती रेत के बहाव में समा जाऊँगा और किसी दूसरी दुनिया में पहुँच जाऊँगा, जहाँ से मैं कभी वापस नहीं आ पाऊँगा। मैं सुबह तक सोफे पर बैठा

[illegible]

दूर स्थित कस्बों के दृश्य

•

शाश्वत आधा-चंद्रमा

•

सीढ़ी अपनी जगह पर है
लगभग उसी क्षण जब मुझे नींद आ रही थी, फोन की घंटी बजी। मैंने उसे अनसुना करने की कोशिश की, लेकिन मानो वह मेरे मन की बात पढ़ ले, वह लगातार बजता रहा: दस बार, बीस बार—वह रुकने वाला ही नहीं था। आखिरकार, मैंने एक आँख खोली और घड़ी देखी। सुबह के छह बज चुके थे। खिड़की के बाहर दिन की पूरी रोशनी थी। शायद कुमिको का फोन था। मैं बिस्तर से उठा, बैठक में गया और रिसीवर उठाया। “हैलो,” मैंने कहा, लेकिन कॉल करने वाले ने कुछ नहीं कहा। जाहिर तौर पर कोई वहां था, लेकिन उसने बोलने की कोशिश नहीं की। मैं भी चुप रहा। ईयरपीस पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं मुश्किल से सांस लेने की आवाज सुन पा रहा था।
मैंने पूछा, "कौन है?" लेकिन दूसरी तरफ से सन्नाटा छाया रहा। मैंने कहा, "अगर यही वो इंसान है जो हमेशा फोन करता रहता है, तो प्लीज़ थोड़ा देर से बात कीजिए। नाश्ते से पहले सेक्स की बातें मत कीजिएगा।"
“वो इंसान जो हमेशा फोन करता रहता है?” मेई कासाहारा की आवाज अचानक निकली। “तुम सेक्स के बारे में किससे बात करती हो?” मैंने कहा, "कोई नहीं।"
“कल रात जिस महिला को तुमने बाहों में लिया हुआ था? क्या तुम उससे फोन पर सेक्स के बारे में बात करते हो?”
नहीं, वह सही लड़की नहीं है।

"मुझे बताइए, श्रीमान विंड-अप बर्ड, आपकी पत्नी के अलावा आपके आसपास कितनी महिलाएं घूमती रहती हैं?"
“ये तो बहुत लंबी कहानी हो जाएगी,” मैंने कहा। “खैर, सुबह के छह बज रहे हैं और मुझे ज्यादा नींद नहीं आई है। तो तुम कल रात मेरे घर आए थे, है ना?”
और मैंने तुम्हें उसके साथ देखा—तुम दोनों एक-दूसरे को पकड़े हुए थे।
मैंने कहा, "उसका कोई मतलब नहीं था। मैं इसे कैसे समझाऊं? यह एक तरह की छोटी सी रस्म थी।"
"आपको मेरे सामने बहाने बनाने की ज़रूरत नहीं है," मे कासाहारा ने कहा। "मैं आपकी पत्नी नहीं हूँ। यह मेरा मामला नहीं है, लेकिन मैं बस इतना कहना चाहती हूँ: आपको एक समस्या है।"
मैंने कहा, "हो सकता है आप सही हों।"
“मुझे पता है कि तुम इस समय मुश्किल दौर से गुज़र रहे हो। लेकिन मुझे लगता है कि ये सब तुमने खुद ही पैदा किया है। तुम्हें कोई बहुत ही बुनियादी समस्या है, और ये चुंबक की तरह मुसीबत को अपनी ओर खींचती है। कोई भी समझदार औरत तुमसे दूर ही रहना चाहेगी।” मैंने फिर कहा, "हो सकता है आप सही हों।"
मेई कासाहारा ने फोन पर कुछ देर चुप्पी साधे रखी। फिर उसने एक बार गला साफ किया और बोली, "कल रात तुम गली में आए थे ना? मेरे घर के पीछे काफी देर तक खड़े रहे, जैसे कोई नौसिखिए चोर हो... चिंता मत करो, मैंने तुम्हें देख लिया था।"
तो फिर आप सामने क्यों नहीं आए?
"लड़की हमेशा बाहर जाना नहीं चाहती, तुम्हें पता है ना, मिस्टर विंड-अप बर्ड। कभी-कभी उसका मन करता है कि वो नखरे दिखाए—जैसे,

अगर लड़का इंतज़ार करने वाला है, तो उसे सच में इंतज़ार करने दो।"
मैंने घुरघुराहट की आवाज निकाली।
“लेकिन मुझे फिर भी बुरा लग रहा था,” उसने आगे कहा। “इसलिए मैं बाद में किसी बेवकूफ की तरह खुद को घसीटते हुए तुम्हारे घर तक आई।”
और मैंने उस महिला को पकड़ रखा था।
“हाँ, लेकिन क्या वो थोड़ी सनकी नहीं है? आजकल कोई ऐसे कपड़े नहीं पहनता। और उसका वो मेकअप! लगता है वो किसी पुराने जमाने में जी रही है। उसे अपना दिमाग चेक करवाना चाहिए।”
मैंने कहा, "चिंता मत करो, वह पागल नहीं है। सबकी पसंद अलग-अलग होती है।"
“हाँ, बिल्कुल। लोगों की पसंद कैसी भी हो सकती है। लेकिन आम लोग सिर्फ पसंद के लिए इतना कुछ नहीं करते। वो तो बिल्कुल किसी पुरानी मैगज़ीन की मॉडल जैसी है: सिर से पैर तक, सब कुछ।”
मैंने इसका कोई जवाब नहीं दिया।
"बताइए, मिस्टर विंड-अप बर्ड, क्या आपने उसके साथ संबंध बनाए थे?"
मैं एक पल के लिए हिचकिचाया और बोला, "नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया।"
"वास्तव में?"
"सच में। मेरा उसके साथ उस तरह का शारीरिक संबंध नहीं है।"
तो तुम उसे क्यों पकड़े हुए थे?
"महिलाओं को कभी-कभी ऐसा महसूस होता है: वे गले लगना चाहती हैं।" "शायद ऐसा हो," मे कासाहारा ने कहा, "लेकिन ऐसा विचार थोड़ा खतरनाक हो सकता है।"

मैंने कहा, "यह सच है।"
"उसका नाम क्या है?"
"क्रेता कानो."
अंत में मेई कासाहारा चुप हो गई। "तुम मज़ाक कर रहे हो, है ना?" उसने आखिर में कहा।
“बिल्कुल नहीं। और उसकी बहन का नाम माल्टा कानो है।”
“माल्टा?! यह उसका असली नाम नहीं हो सकता।”
“नहीं, ऐसा नहीं है। यह उनका पेशेवर नाम है।”
“ये लोग कोई कॉमेडी टीम हैं क्या? या इनका भूमध्य सागर से कोई संबंध है?”
"दरअसल, भूमध्य सागर से इसका कुछ संबंध है।"
क्या बहन सामान्य व्यक्ति की तरह कपड़े पहनती है?
“लगभग,” मैंने कहा। “कम से कम उसके कपड़े तो क्रेता के कपड़ों से काफी सामान्य हैं। बस फर्क इतना है कि वह हमेशा यह लाल विनाइल टोपी पहनती है।”
मुझे अंदर से ऐसा लगता है कि वह भी बिल्कुल सामान्य नहीं है। ऐसे सनकी लोगों के साथ समय बिताने के लिए हमेशा इतनी मशक्कत क्यों करनी पड़ती है?
“अब, यह तो वाकई एक लंबी कहानी होगी। अगर कभी सब कुछ शांत हो गया, तो शायद मैं आपको बता पाऊँ। लेकिन अभी नहीं। मेरा दिमाग बहुत उलझा हुआ है। और हालात तो और भी ज्यादा खराब हैं।”
“हाँ, ज़रूर,” उसने संदेह भरे स्वर में कहा। “वैसे, आपकी पत्नी अभी तक वापस नहीं आई हैं, है ना?”
"अभी तक कोई नहीं।"
“देखो, मिस्टर विंड-अप बर्ड, तुम एक समझदार आदमी हो। ज़रा दिमाग़ का इस्तेमाल क्यों नहीं करते? अगर तुम्हारी पत्नी ने

अपना इरादा बदल लिया होता और कल रात घर आ गई होती, तो वह तुम्हें उस औरत को बाहों में जकड़े हुए देखती। फिर क्या होता?”
"जी हां, ऐसी संभावना थी।"
और अगर यह कॉल मैंने नहीं बल्कि उसने की होती, और आपने टेलीफोन सेक्स के बारे में बात करना शुरू कर दिया होता, तो वह इसके बारे में क्या सोचती?
मैंने कहा, "आप सही कह रहे हैं।"
“मैं तुमसे कह रही हूँ, तुम्हें एक समस्या है,” उसने आह भरते हुए कहा।
“यह सच है। मुझे वाकई एक समस्या है।”
“मेरी हर बात से सहमत होना बंद करो! अपनी गलतियों को स्वीकार करने से सब कुछ ठीक नहीं हो जाएगा। चाहे तुम उन्हें मानो या न मानो, गलतियाँ तो गलतियाँ ही होती हैं।”
“यह सच है,” मैंने कहा। यह सच था।
“अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती!” मेई कासाहारा ने कहा। “खैर, बताओ, कल रात तुम्हें क्या चाहिए था? तुम मेरे घर कुछ ढूंढने आई थी, है ना?”
"ओह, वो। छोड़ो।"
"कोई बात नहीं?"
“हाँ। आखिरकार, यह... छोड़ो।”
"दूसरे शब्दों में कहें तो, उसने तुम्हें गले लगाया, इसलिए अब तुम्हें मेरी जरूरत नहीं है।"
“नहीं, ऐसा नहीं है। मुझे तो बस ऐसा लगा—”
इसी बीच मे कासाहारा ने फोन काट दिया। कमाल है! मे कासाहारा, माल्टा कानो, क्रीटा कानो, वो फोन वाली महिला और कुमिको। मे कासाहारा सही कह रही थीं: इन दिनों मेरे आस-पास कुछ ज़्यादा ही

औरतें थीं। और हर एक अपने साथ कोई न कोई अनोखी, रहस्यमयी समस्या लेकर आती थी।
लेकिन मैं इतना थका हुआ था कि सोच भी नहीं पा रहा था। मुझे सोना ही था। और जब मैं जागूंगा तो मुझे कुछ काम करना होगा।
मैं वापस बिस्तर पर गया और सो गया।

•

जब मेरी नींद खुली, तो मैंने दराज से एक थैला निकाला। यह वही थैला था जिसे हम भूकंप और अन्य आपात स्थितियों के लिए रखते थे, जिनमें घर खाली करना पड़ सकता था। उसमें एक पानी की बोतल, बिस्कुट, एक टॉर्च और एक लाइटर था। ये सब कुमिको ने तब खरीदा था जब हम इस घर में आए थे, ताकि अगर कभी भूकंप आ जाए तो काम आ सके। हालांकि, पानी की बोतल खाली थी, बिस्कुट गीले हो गए थे और टॉर्च की बैटरी खत्म हो गई थी। मैंने बोतल में पानी भरा, बिस्कुट फेंक दिए और टॉर्च में नई बैटरी डालीं। फिर मैं पड़ोस की हार्डवेयर की दुकान पर गया और वहाँ मिलने वाली रस्सी की सीढ़ी खरीदी, जो आपातकालीन स्थिति में आग से निकलने के लिए इस्तेमाल होती है। मैंने सोचा कि मुझे और क्या चाहिए होगा, लेकिन नींबू कैंडी के अलावा कुछ याद नहीं आया। मैं पूरे घर में घूमा, खिड़कियाँ बंद कीं और बत्तियाँ बुझाईं। मैंने यह सुनिश्चित किया कि सामने का दरवाजा बंद है, लेकिन फिर मैंने दोबारा सोचा। मेरे जाने के बाद कोई मुझे ढूंढने आ सकता है। कुमिको वापस आ सकती है। और वैसे भी, यहाँ चोरी करने लायक कुछ नहीं था। मैंने रसोई की मेज पर एक नोट छोड़ा: “कुछ देर के लिए जा रहा हूँ। वापस आऊंगा। टी।”
मैंने सोचा कि कुमिको को यह नोट देखकर कैसा लगेगा। वह इस पर कैसी प्रतिक्रिया देगी? मैंने इसे मोड़कर फेंक दिया और एक नया

नोट लिखा: “कुछ ज़रूरी काम से थोड़ी देर के लिए बाहर जाना पड़ेगा। जल्दी वापस आ जाऊंगी। कृपया प्रतीक्षा करें। टी।” चिनो पैंट, आधी बाजू की पोलो शर्ट और बैग लिए मैं बरामदे से आंगन में उतरा। चारों ओर गर्मी के मौसम के स्पष्ट संकेत थे—असली गर्मी, बिना किसी रोक-टोक या शर्त के। सूरज की चमक, हवा की महक, आसमान का नीला रंग, बादलों का आकार, झींगुरों की भिनभिनाहट: हर चीज़ गर्मी के असली आगमन की घोषणा कर रही थी। और मैं, पीठ पर बैग लिए, बगीचे की दीवार फांदकर गली में उतर गया।
एक बार, बचपन में, मैं ऐसी ही एक खूबसूरत गर्मी की सुबह घर से भाग गया था। मुझे याद नहीं आ रहा था कि मैंने जाने का फैसला क्यों किया था। शायद मैं अपने माता-पिता से नाराज़ था। मैं पीठ पर एक थैला और जेब में अपनी सारी बचत लेकर घर से निकला। मैंने अपनी माँ से कहा कि मैं कुछ दोस्तों के साथ हाइकिंग पर जा रहा हूँ और उनसे मेरे लिए दोपहर का खाना बनाने को कहा। हमारे घर के ठीक ऊपर हाइकिंग के लिए अच्छी पहाड़ियाँ थीं, और बच्चे अक्सर बड़ों की देखरेख के बिना उन पर चढ़ाई करने जाते थे। घर से निकलते ही, मैं अपनी चुनी हुई बस में चढ़ गया और आखिरी स्टेशन तक गया। मेरे लिए, यह एक अजीब और दूर का कस्बा था। यहाँ मैंने दूसरी बस पकड़ी और एक और अजीब और दूर के कस्बे की ओर चल पड़ा। उस जगह का नाम भी जाने बिना, मैं बस से उतर गया और गलियों में घूमने लगा। इस कस्बे में कुछ खास नहीं था: यह मेरे मोहल्ले से थोड़ा ज़्यादा चहल-पहल वाला था, और थोड़ा ज़्यादा जर्जर भी। वहाँ दुकानों से सजी एक सड़क थी, एक रेलवे स्टेशन था और कुछ छोटी-छोटी फैक्ट्रियाँ थीं। कस्बे से होकर एक छोटी नदी बहती थी, और नदी के सामने एक सिनेमाघर था। सामने लगे एक बोर्ड पर लिखा था कि वे एक वेस्टर्न फिल्म दिखा रहे हैं। दोपहर में मैं एक पार्क की बेंच पर बैठकर अपना

दोपहर का भोजन कर रहा था। मैं शाम तक कस्बे में ही रहा, और जब सूरज डूबने लगा, तो मेरा दिल भी बैठ गया। मैंने खुद से कहा, "वापस जाने का यह तुम्हारा आखिरी मौका है। एक बार पूरी तरह अंधेरा हो जाए, तो शायद तुम कभी यहाँ से निकल न पाओ।" मैं उन्हीं बसों से घर वापस गया जिनसे मैं आया था। मैं सात बजे से पहले पहुँच गया, और किसी को पता भी नहीं चला कि मैं भाग गया था। मेरे माता-पिता को लगा कि मैं दूसरे बच्चों के साथ पहाड़ियों में गया हूँ।
मैं उस घटना को पूरी तरह भूल चुका था। लेकिन जैसे ही मैंने खुद को एक थैला लिए दीवार पर चढ़ते हुए पाया, वह एहसास फिर से लौट आया—वह अवर्णनीय अकेलापन जो मैंने महसूस किया था, अनजान गलियों, अनजान लोगों और अनजान घरों के बीच अकेले खड़े होकर, दोपहर के सूरज को धीरे-धीरे ढलते हुए देखते हुए। और फिर मुझे कुमिको की याद आई: कुमिको, जो कहीं गायब हो गई थी, अपने साथ सिर्फ अपना कंधे का थैला और कपड़े धोने की दुकान से ली हुई ब्लाउज और स्कर्ट लेकर। उसके पास वापस लौटने का आखिरी मौका भी था। और अब वह शायद किसी अनजान और दूर के कस्बे में अकेली खड़ी होगी। मैं उसके बारे में इस तरह सोचना भी बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। लेकिन नहीं, वह अकेली नहीं रह सकती थी। उसे एक पुरुष के साथ होना ही था। यही एकमात्र तरीका था जिससे यह सब समझ में आता था। मैंने कुमिको के बारे में सोचना बंद कर दिया।

•

मैं गली से नीचे की ओर चल पड़ा।
वसंत ऋतु की बारिश के दौरान घास में जो जीवंतता और ताजगी थी, वह अब गायब हो चुकी थी, और अब वह गर्मियों की घास की तरह फीकी और बेजान दिख रही थी। चलते-चलते कभी-कभी इन घासों के बीच से एक हरा टिड्डा उछल पड़ता था। कभी-कभी तो मेंढक भी भाग जाते थे। यह गली

याद दिलाया कि पत्थर के तल पर टकराने की आवाज़ आती है। कुआं तल तो था! इस बेकार सीढ़ी से नीचे उतरने में ही इतना समय लग रहा था। जब मैंने बीस सीढ़ियाँ गिनीं, तो डर की एक लहर मुझ पर छा गई। यह अचानक आई, जैसे बिजली का झटका लगा हो, और मुझे वहीं जमा दिया। मेरी मांसपेशियाँ पत्थर जैसी हो गईं। मेरे शरीर के हर रोम से पसीना बहने लगा और मेरे पैर काँपने लगे। यह कुआँ इतना गहरा हो ही नहीं सकता। यह टोक्यो का मध्य भाग था। यह मेरे घर के ठीक पीछे था। मैंने अपनी साँस रोक ली और सुनने की कोशिश की, लेकिन मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया। मेरे दिल की धड़कन इतनी ज़ोर से मेरे कानों में गूँज रही थी कि मैं ऊपर झींगुरों की आवाज़ भी नहीं सुन पा रहा था। मैंने एक गहरी साँस ली। मैं यहाँ बीसवीं सीढ़ी पर था, न तो और नीचे जा पा रहा था और न ही वापस ऊपर चढ़ पा रहा था। कुएँ की हवा ठंडी थी और उसमें मिट्टी की गंध थी। यह नीचे एक अलग ही दुनिया थी, सतह से कटी हुई, जहाँ सूरज बिना किसी रुकावट के चमकता था। मैंने ऊपर कुएँ के मुँह की ओर देखा, जो अब बहुत छोटा लग रहा था। कुएँ का गोलाकार मुँह लकड़ी के ढक्कन के उस आधे हिस्से से ठीक आधा कटा हुआ था जिसे मैंने वहीं छोड़ दिया था। नीचे से देखने पर यह रात के आकाश में तैरते हुए आधे चाँद जैसा लग रहा था। माल्टा कानो ने फोन पर भविष्यवाणी करते हुए कहा था, "यह आधा चाँद कई दिनों तक रहेगा।"
बहुत बढ़िया। और जब यह विचार मेरे मन में आया, तो मुझे लगा जैसे मेरे शरीर से कुछ शक्ति निकल गई हो। मेरी मांसपेशियां शिथिल हो गईं, और मेरे अंदर रुकी हुई सांस का ठोस अवरोध मुक्त होकर बाहर निकल गया।
अपनी आखिरी ताकत जुटाकर, मैं सीढ़ी से फिर नीचे उतरने लगा। बस थोड़ा और नीचे, मैंने खुद से कहा। बस थोड़ा और। चिंता मत करो, तल

तो है ही। और तेईसवीं सीढ़ी पर पहुँचकर मैं वहाँ पहुँच गया। मेरा पैर कुएँ की तलहटी में ज़मीन से छू गया।

•

अंधेरे में सबसे पहले मैंने अपने जूते की नोक से कुएं की तलहटी को टटोला, सीढ़ी को पकड़े हुए था ताकि अगर नीचे कुछ हो तो उससे बच सकूँ। यह सुनिश्चित करने के बाद कि वहाँ पानी नहीं है और कोई संदिग्ध चीज़ नहीं है, मैं नीचे ज़मीन पर उतरा। अपना बैग नीचे रखकर मैंने ज़िपर को टटोला और टॉर्च निकाली। टॉर्च की रोशनी से मुझे पहली बार उस जगह का साफ़ नज़ारा मिला। ज़मीन न तो बहुत सख्त थी और न ही बहुत नरम। और सौभाग्य से, ज़मीन सूखी थी। कुछ पत्थर इधर-उधर बिखरे पड़े थे, जिन्हें शायद लोगों ने फेंका होगा। तलहटी में गिरी एक और चीज़ थी आलू के चिप्स का पुराना पैकेट। टॉर्च की रोशनी में कुएं की तलहटी मुझे चांद की सतह की याद दिला रही थी, जैसा मैंने बहुत समय पहले टीवी पर देखा था। कुएँ की बेलनाकार कंक्रीट की दीवार बिल्कुल सपाट थी, उस पर जगह-जगह काई जैसी कुछ गांठों के अलावा कोई खास अनियमितता नहीं थी। यह चिमनी की तरह सीधी ऊपर की ओर जाती थी, और इसके मुँह पर ऊपर की ओर हल्की सी रोशनी की एक छोटी सी किरण दिखाई दे रही थी। सीधे ऊपर देखते हुए, अब मुझे समझ आ रहा था कि कुआँ कितना गहरा है। मैंने रस्सी की सीढ़ी को एक बार फिर ज़ोर से खींचा। मेरे हाथों में यह मज़बूत और सुरक्षित महसूस हुई। जब तक यह अपनी जगह पर टिकी रही, मैं जब चाहूँ सतह पर वापस जा सकता था। फिर मैंने एक गहरी साँस ली। हल्की सी फफूंद की गंध के अलावा, हवा में कोई खराबी नहीं थी। मेरी सबसे बड़ी चिंता हवा को लेकर थी। कुएँ की तलहटी में हवा अक्सर स्थिर हो जाती है, और सूखे कुओं में ज़मीन से रिसने वाली ज़हरीली गैसें हो सकती हैं। बहुत पहले, मैंने अखबार में एक कुआँ

[illegible]
[illegible]

संपत्ति विरासत में मिलना

•

जेलीफिश पर जांच

•

कुछ-कुछ अलगाव की भावना जैसा
मैं अंधेरे में बैठा था। मेरे ऊपर बहुत दूर, मानो किसी चीज़ का संकेत हो, कुएँ के ढक्कन से बनी रोशनी का एक आदर्श अर्धचंद्राकार आकृति तैर रही थी। फिर भी ऊपर से आने वाली कोई भी रोशनी तल तक नहीं पहुँच पा रही थी।
समय बीतने के साथ-साथ मेरी आँखें अँधेरे की आदी होती गईं। कुछ ही समय में, अगर मैं अपना हाथ अपने चेहरे के पास लाता, तो मुझे उसका आकार मुश्किल से ही दिखाई देता था। मेरे आस-पास की चीज़ें भी धीरे-धीरे धुंधली दिखने लगीं, जैसे डरपोक छोटे जानवर धीरे- धीरे अपना बचाव कम कर रहे हों। हालाँकि मेरी आँखें अँधेरे की आदी हो गई थीं, फिर भी अँधेरा, अँधेरा ही रहा। मैं जिस भी चीज़ पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करता, वह अपना आकार खो देती और चुपचाप आसपास के धुंधलेपन में विलीन हो जाती। शायद इसे "फीका अँधेरा" कहा जा सकता है, लेकिन चाहे यह फीका ही क्यों न हो, इसकी अपनी एक खास तरह की सघनता थी, जिसमें कभी-कभी घोर अंधकार से भी कहीं अधिक गहरा अर्थ छिपा होता था। इसमें आप कुछ देख सकते थे। और साथ ही, आप कुछ भी नहीं देख सकते थे।
इस अंधकार में, अपने विचित्र महत्व के साथ, मेरी यादों में एक ऐसी शक्ति जागृत होने लगी जो पहले कभी नहीं थी। मेरे भीतर उभरने वाली खंडित छवियां रहस्यमय रूप से हर विवरण में इतनी सजीव थीं कि मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उन्हें अपने हाथों में थाम सकता हूँ।

मैंने अपनी आँखें बंद कीं और आठ साल पहले के उस समय को याद किया जब मैं पहली बार कुमिको से मिला था।

•

यह घटना कांडा के विश्वविद्यालय अस्पताल के परिवार के प्रतीक्षालय में घटी। उस समय मुझे लगभग हर दिन अस्पताल जाना पड़ता था, एक धनी ग्राहक से उनकी संपत्ति के उत्तराधिकार के संबंध में मिलने के लिए। वह कक्षाओं के बीच हर दिन अस्पताल आती थीं, अपनी माँ की देखभाल के लिए, जो ग्रहणी के अल्सर के इलाज के लिए वहाँ भर्ती थीं। कुमिको जींस या छोटी स्कर्ट और स्वेटर पहनती थीं, और उनके बाल पोनीटेल में बंधे होते थे। कभी-कभी वह कोट पहनती थीं, कभी नहीं, यह नवंबर की शुरुआत के मौसम पर निर्भर करता था। उनके पास एक कंधे का बैग होता था और वह हमेशा कुछ किताबें रखती थीं जो विश्वविद्यालय की पाठ्यपुस्तकों जैसी लगती थीं, साथ ही एक स्केच पैड भी।
जिस दिन मैं पहली बार अस्पताल गई, उसी दिन दोपहर में कुमिको वहाँ सोफे पर पैर मोड़कर बैठी थी, उसने काले रंग की कम हील वाली जूतियाँ पहनी हुई थीं और वह एक किताब पर ध्यान केंद्रित किए बैठी थी। मैं उसके सामने बैठी थी और हर पाँच मिनट में अपनी घड़ी देख रही थी, जब तक कि मेरे क्लाइंट के साथ इंटरव्यू का समय नहीं आ गया, जो किसी अज्ञात कारण से डेढ़ घंटा आगे बढ़ा दिया गया था। कुमिको ने किताब से अपनी नज़रें नहीं हटाईं। उसके पैर बहुत सुंदर थे। उसे देखकर मेरा मन थोड़ा खुश हो गया। मैं सोचने लगी कि इतना सुंदर (या कम से कम बेहद बुद्धिमान) चेहरा और इतने सुंदर पैर होना कैसा लगता होगा।
प्रतीक्षाकक्ष में कई बार मिलने के बाद, कुमिको और मैंने हल्की- फुल्की बातें शुरू कर दीं—हमने अपनी पढ़ी हुई पत्रिकाएँ एक-

दूसरे को दीं, या किसी ने उसकी माँ के लिए उपहार में फल लाए थे, उनमें से कुछ खाए। आख़िरकार, हम दोनों बेहद ऊब चुके थे, और हमें अपने हमउम्र किसी से बात करने की ज़रूरत थी।
कुमिको और मुझे शुरू से ही एक-दूसरे के लिए कुछ महसूस हुआ। यह उन तीव्र, आवेगपूर्ण भावनाओं में से एक नहीं थी जो पहली मुलाकात में दो लोगों को बिजली के झटके की तरह जकड़ लेती हैं, बल्कि यह कुछ शांत और कोमल थी, जैसे दो छोटी-छोटी रोशनी एक विशाल अंधेरे में साथ-साथ चलती हुई एक-दूसरे के बेहद करीब आती जा रही हों। जैसे-जैसे हमारी मुलाकातें बढ़ती गईं, मुझे ऐसा नहीं लगा कि मैं किसी नए व्यक्ति से मिली हूँ, बल्कि ऐसा लगा जैसे मैं किसी पुराने प्रिय मित्र से अचानक मिल गई हूँ।
जल्द ही मुझे अस्पताल परिसर में बाकी कामों के बीच होने वाली हमारी अधूरी बातचीत से असंतोष होने लगा। मैं हमेशा यही सोचता रहता था कि काश मैं उससे कहीं और मिल पाता, ताकि हम खुलकर एक-दूसरे से बात कर सकें। आखिरकार, एक दिन मैंने उससे डेट पर जाने के लिए पूछने का फैसला किया।
मैंने कहा, "मुझे लगता है हम दोनों को ताज़ी हवा की ज़रूरत है। चलो यहाँ से निकलकर कहीं और चलते हैं—जहाँ कोई मरीज़ या ग्राहक न हों।"
कुमिको ने कुछ देर सोचा और फिर कहा, "एक्वायरमेंट एक्वेरियम?" और इस तरह एक्वेरियम में हमारी पहली मुलाकात हुई। उस रविवार की सुबह कुमिको अपनी माँ के लिए कपड़े लेकर आई और अस्पताल के वेटिंग रूम में मुझसे मिली। मौसम सुहाना और साफ था, और कुमिको ने हल्के नीले रंग के कार्डिगन के ऊपर एक साधारण सफेद ड्रेस पहनी हुई थी। मैं हमेशा इस बात से प्रभावित होता था कि वह तब भी कितनी अच्छी तरह से कपड़े पहनती थी। वह किसी भी साधारण कपड़े

को, आस्तीन मोड़कर या कॉलर को घुमाकर, शानदार बना देती थी। यह उसकी एक खास कला थी। और मैं देख सकता था कि वह अपने कपड़ों का बहुत ध्यान रखती थी, मानो उनसे प्यार करती हो। जब भी मैं उसके साथ होता, उसके बगल में चलता, मैं खुद को उसके कपड़ों को निहारते हुए पाता। उसकी ब्लाउज़ में कभी कोई सिलवट नहीं होती थी। उसकी प्लीट्स एकदम सीधी होती थीं। वह जो भी सफेद पहनती, एकदम नया लगता था। उसके जूते कभी घिसे-पिटे या गंदे नहीं होते थे। उसके पहनावे को देखकर, मैं कल्पना कर सकता था कि उसके ब्लाउज और स्वेटर उसकी ड्रेसर की दराजों में करीने से तह करके रखे हुए हैं, और उसकी स्कर्ट और ड्रेस विनाइल रैपर में लिपटी हुई अलमारी में लटकी हुई हैं (जो कि शादी के बाद मैंने बिल्कुल वैसा ही पाया)।
हमने वो पहली दोपहर उएनो चिड़ियाघर के एक्वेरियम में साथ बिताई। उस दिन मौसम इतना सुहावना था कि मुझे लगा कि चिड़ियाघर में घूमना ज़्यादा मज़ेदार होगा, और मैंने उएनो जाने वाली ट्रेन में कुमिको को इस बारे में इशारा भी किया, लेकिन उसने साफ़ तौर पर एक्वेरियम जाने का मन बना लिया था। अगर उसकी यही इच्छा थी, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं थी। एक्वेरियम में जेलीफिश की एक विशेष प्रदर्शनी लगी हुई थी, और हमने शुरू से अंत तक उन्हें देखा, दुनिया के कोने-कोने से इकट्ठा किए गए दुर्लभ नमूनों को निहारा। वे अपने टैंकों में कांपते हुए तैर रही थीं, उंगली के सिरे जितने छोटे रुई के गुच्छे से लेकर तीन फीट से ज़्यादा व्यास वाले विशालकाय जेलीफिश तक। रविवार होने के बावजूद, एक्वेरियम में अपेक्षाकृत कम भीड़ थी। वास्तव में, वह लगभग खाली ही था। ऐसे सुहावने दिन में, कोई भी जेलीफिश की बजाय हाथियों और जिराफों को देखना पसंद करता।

हालांकि मैंने कुमिको से कुछ नहीं कहा, लेकिन सच में मुझे जेलीफिश से नफरत थी। बचपन में समुद्र में तैरते समय मुझे अक्सर जेलीफिश काटती थीं। एक बार, जब मैं अकेले दूर समुद्र में तैर रहा था, तो मैं जेलीफिश के एक पूरे झुंड में भटक गया। जब तक मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ, तब तक मैं चारों तरफ से घिर चुका था। उनके छूने का चिपचिपा, ठंडा एहसास मैं कभी नहीं भूल पाया। जेलीफिश के उस भंवर के बीचोंबीच, मुझ पर एक भयानक डर छा गया, मानो मुझे किसी अथाह अंधेरे में खींच लिया गया हो। पता नहीं क्यों, मुझे जेलीफिश ने काटा तो नहीं, लेकिन घबराहट में मैंने बहुत सारा समुद्री पानी पी लिया। इसीलिए अगर मुमकिन होता तो मैं जेलीफिश का प्रदर्शन छोड़कर ट्यूना या फ्लॉन्डर जैसी आम मछलियाँ देखना चाहता।
कुमिको तो मंत्रमुग्ध हो गई थी। वह हर टैंक के पास रुकती, रेलिंग पर झुकती और वहीं जम जाती, मानो समय का उसे एहसास ही न हुआ हो। वह मुझसे कहती, “इसे देखो! मुझे पता ही नहीं था कि इतनी चमकीली गुलाबी जेलीफिश भी होती हैं। और देखो ये कितनी खूबसूरती से तैरती हैं। ये तो बस इसी तरह लहराती हुई दुनिया के हर महासागर तक पहुँच जाती हैं। क्या ये अद्भुत नहीं हैं?”
“हाँ, ज़रूर।” लेकिन जितना ज़्यादा मैं उसके साथ जेलीफ़िश को देखने में खुद को लगाती रही, उतना ही मेरे सीने में जकड़न बढ़ती गई। देखते ही देखते, मैंने उसे जवाब देना बंद कर दिया और बार-बार अपनी जेब में पड़े सिक्के गिनने लगी, या अपने रुमाल से अपने मुँह के कोने पोंछने लगी। मैं यही चाहती रही कि हम जेलीफ़िश के आखिरी टैंक तक पहुँच जाएँ, लेकिन उनका कोई अंत नहीं था। दुनिया के महासागरों में तैरने वाली जेलीफ़िश की विविधता बहुत ज़्यादा थी। मैं आधे घंटे तक तो बर्दाश्त कर सकी, लेकिन तनाव से

मेरा सिर चकरा रहा था। जब आखिरकार रेलिंग के सहारे खड़े रहना मेरे लिए असहनीय हो गया, तो मैं कुमिको का साथ छोड़कर पास की एक बेंच पर बैठ गई। वह मेरे पास आई और, ज़ाहिर तौर पर बहुत चिंतित होकर, मुझसे पूछा कि क्या मैं ठीक महसूस नहीं कर रही हूँ। मैंने ईमानदारी से जवाब दिया कि जेलीफ़िश को देखने से मुझे चक्कर आ रहे हैं।
उसने गंभीर भाव से मेरी आँखों में देखा। “यह सच है,” उसने कहा। “मैं तुम्हारी आँखों में देख सकती हूँ। वे धुंधली हो गई हैं। यह अविश्वसनीय है—सिर्फ जेलीफिश को देखने से!” कुमिको ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे उस अंधेरे, नमी भरे एक्वेरियम से बाहर धूप में ले आई।
पास के पार्क में दस मिनट बैठकर, लंबी-लंबी साँसें लेते हुए, मैं धीरे-धीरे अपनी मानसिक स्थिति को सामान्य करने में कामयाब रहा। शरद ऋतु की तेज़ धूप हर तरफ़ अपनी मनमोहक रोशनी बिखेर रही थी, और हवा चलने पर जिन्कगो के पेड़ों के सूखे पत्ते हल्की सरसराहट कर रहे थे। कुछ मिनट बीत जाने के बाद कुमिको ने पूछा, "क्या तुम ठीक हो?" "तुम सच में अजीब हो। अगर तुम्हें जेलीफ़िश से इतनी नफ़रत है, तो तुम्हें पहले ही बता देना चाहिए था, बजाय इसके कि तुम उनके कारण बीमार हो जाओ।"
आसमान साफ और बादलों से रहित था, हवा सुहावनी थी, पार्क में रविवार बिता रहे सभी लोगों के चेहरे पर खुशी झलक रही थी। एक दुबली-पतली, सुंदर लड़की अपने बड़े, लंबे बालों वाले कुत्ते को घुमा रही थी। एक बूढ़ा आदमी फेल्ट की टोपी पहने झूले पर अपनी पोती को देख रहा था। कई जोड़े हमारी तरह बेंचों पर बैठे थे। दूर कहीं कोई सैक्सोफोन पर सुरों का अभ्यास कर रहा था।
मैंने पूछा, "तुम्हें जेलीफिश इतनी पसंद क्यों हैं?"

“मुझे नहीं पता। शायद मुझे वे प्यारे लगते हैं,” उसने कहा। “लेकिन जब मैं उन पर ध्यान केंद्रित कर रही थी, तो एक बात मेरे मन में आई। जो हम अपने सामने देखते हैं, वह दुनिया का एक छोटा सा हिस्सा मात्र है। हमें यह सोचने की आदत हो गई है कि यही दुनिया है, लेकिन यह बिल्कुल सच नहीं है। असली दुनिया इससे कहीं अधिक अंधेरी और गहरी जगह में है, और उसका अधिकांश भाग जेलीफ़िश और अन्य जीवों से भरा हुआ है। हम बस यह सब भूल जाते हैं। क्या आप सहमत नहीं हैं? पृथ्वी की सतह का दो-तिहाई भाग महासागर है, और हम नंगी आंखों से केवल उसकी सतह ही देख सकते हैं: उसकी ऊपरी परत। हम उस ऊपरी परत के नीचे क्या है, इसके बारे में लगभग कुछ भी नहीं जानते।”
उसके बाद हम काफी देर तक टहलते रहे। शाम पांच बजे कुमिको ने कहा कि उसे अस्पताल वापस जाना है, इसलिए मैं उसे वहाँ ले गया। विदा होते समय उसने कहा, "आज का दिन बहुत अच्छा रहा, इसके लिए धन्यवाद।" उसकी मुस्कान में एक अलग ही चमक थी, जो पहले नहीं थी। जब मैंने यह चमक देखी, तो मुझे एहसास हुआ कि दिन भर में मैं उसके थोड़ा और करीब आ गया था—इसका श्रेय शायद जेलीफिश को जाता है।

•

कुमिको और मैं डेटिंग करते रहे। उसकी माँ बिना किसी परेशानी के अस्पताल से डिस्चार्ज हो गई, और मुझे अब अपने क्लाइंट की वसीयत पर काम करने के लिए वहाँ समय बिताने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन हम हफ्ते में एक बार फिल्म देखने, कॉन्सर्ट में जाने या टहलने के लिए मिलते थे। हर बार मिलने पर हम एक-दूसरे के और करीब आते गए। मुझे उसके साथ रहना अच्छा लगता था, और अगर कभी हम एक-दूसरे को छू लेते, तो मेरे सीने में एक अजीब सी सनसनी दौड़ जाती थी। अक्सर वीकेंड नज़दीक आने पर मुझे काम करना मुश्किल लगता था। मुझे

यकीन था कि वह मुझे पसंद करती है। नहीं तो, वह हर वीकेंड मुझसे नहीं मिलती।
फिर भी, मैं कुमिको के साथ अपने रिश्ते को गहरा करने की जल्दी में नहीं था। मुझे उसमें एक तरह की अनिश्चितता महसूस हो रही थी। ठीक-ठीक क्या था, यह मैं कह नहीं सकता था, लेकिन कभी-कभी उसके शब्दों या कार्यों में यह झलक जाता था। मैं उससे कुछ पूछता, और जवाब देने से पहले वह एक पल के लिए रुक जाती—बस एक हल्की सी झिझक, लेकिन उस क्षणिक अंतराल में मुझे एक तरह का साया महसूस होता था।
सर्दी आई, फिर नया साल। हम हर हफ्ते मिलते रहे। मैंने उस बारे में कभी नहीं पूछा, और उसने भी कुछ नहीं कहा। हम मिलते, कहीं जाते, खाना खाते और मामूली बातों पर चर्चा करते।
एक दिन मैंने हिम्मत करके कहा, "तुम्हारा कोई बॉयफ्रेंड तो होगा ही, है ना?"
कुमिको ने एक पल के लिए मेरी ओर देखा और पूछा, "आपको ऐसा क्यों लगता है?"
“बस एक आभास,” मैंने कहा। हम सर्द और सुनसान शिंजुकु शाही उद्यानों से गुजर रहे थे। “कैसा आभास?”
मुझे नहीं पता। मुझे ऐसा लग रहा है कि आप मुझे कुछ बताना चाहते हैं। अगर हो सके तो बता दीजिए।
उसके चेहरे के भाव में हल्का सा बदलाव आया—लगभग न के बराबर। शायद एक पल के लिए अनिश्चितता रही हो, लेकिन उसके निष्कर्ष को लेकर कभी कोई संदेह नहीं था। "पूछने के लिए धन्यवाद," उसने कहा, "लेकिन मेरे पास ऐसा कुछ नहीं है जिसके बारे में मैं विशेष रूप से बात करना चाहूँ।"
"लेकिन आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया है।"

“क्या मेरा कोई बॉयफ्रेंड है?”
"अहां।"
कुमिको रुक गई। फिर उसने अपने दस्ताने उतारे और उन्हें अपनी कोट की जेब में रख लिया। उसने मेरा बिना दस्ताने वाला हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसका हाथ गर्म और कोमल था। जब मैंने भी उसका हाथ दबाया, तो मुझे ऐसा लगा जैसे उसकी साँसें धीमी और सफेद होती जा रही हों।
“क्या हम अभी आपके अपार्टमेंट में जा सकते हैं?” उसने पूछा। “ज़रूर,” मैंने थोड़ा आश्चर्यचकित होते हुए कहा। “लेकिन यह कोई खास जगह नहीं है।”
उस समय मैं असागाया में एक कमरे के छोटे से अपार्टमेंट में रह रहा था, जिसमें एक छोटी सी रसोई, शौचालय और शॉवर का आकार टेलीफोन बूथ जितना था। यह दूसरी मंजिल पर था और दक्षिण दिशा की ओर था, जहाँ से एक निर्माण कंपनी का गोदाम दिखाई देता था। दक्षिण दिशा की ओर मुख होना ही उस अपार्टमेंट की एकमात्र अच्छी बात थी। काफी देर तक कुमिको और मैं धूप में एक-दूसरे के बगल में दीवार से टेक लगाकर बैठे रहे।
उस दिन मैंने पहली बार उससे प्रेम किया। मुझे पूरा यकीन था कि यही उसकी इच्छा थी। एक तरह से, उसी ने मुझे आकर्षित किया था। ऐसा नहीं था कि उसने कभी कुछ जानबूझकर कामुक कहा या किया हो। लेकिन जब मैंने अपनी बाहों को उसके नग्न शरीर के चारों ओर लपेटा, तो मुझे पक्का यकीन हो गया कि वह यही चाहती थी। उसका शरीर कोमल था और बिल्कुल भी विरोध नहीं कर रहा था।
कुमिको का यह पहला यौन अनुभव था। इसके बाद काफी देर तक उसने कुछ नहीं कहा। मैंने कई बार उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसने नहाया, कपड़े पहने और फिर से धूप में

बैठ गई। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उससे क्या कहूँ। मैं बस उसके साथ धूप में बैठ गया और कुछ नहीं बोला। सूरज ढलने के साथ-साथ हम दोनों दीवार के सहारे चलते रहे। शाम होते-होते कुमिको ने कहा कि वह जा रही है। मैंने उसे घर तक छोड़ा।
मैंने ट्रेन में फिर से पूछा, "क्या आपको यकीन है कि आप मुझसे कुछ कहना नहीं चाहते?"
उसने अपना सिर हिलाया। "उसकी चिंता मत करो," उसने धीरे से कहा। मैंने फिर कभी इस विषय को नहीं उठाया। कुमिको ने आखिरकार अपनी मर्जी से मेरे साथ सोने का फैसला किया था, और अगर वाकई वह कुछ छिपा रही थी जो वह मुझे नहीं बता पा रही थी, तो शायद समय के साथ यह बात भी सुलझ जाएगी।
उसके बाद हमारी साप्ताहिक मुलाकातें जारी रहीं, जिनमें से एक हिस्सा अब अक्सर मेरे अपार्टमेंट में आकर शारीरिक संबंध बनाना होता था। जैसे-जैसे हम एक-दूसरे को गले लगाते और स्पर्श करते, वह अपने बारे में, अपने अनुभवों के बारे में, और उन अनुभवों से उत्पन्न विचारों और भावनाओं के बारे में अधिक से अधिक बात करने लगी। और मैं कुमिको के नज़रिए से दुनिया को समझने लगा। मैं भी धीरे-धीरे कुमिको से दुनिया के बारे में अपने नज़रिए से बात करने में सक्षम होता गया। मुझे उससे गहरा प्यार हो गया, और उसने कहा कि वह मुझे कभी छोड़ना नहीं चाहती। हमने उसके कॉलेज से स्नातक होने का इंतजार किया, और फिर हमारी शादी हो गई।
हम अपने वैवाहिक जीवन से खुश थे और हमें कोई परेशानी नहीं थी। फिर भी, कई बार मुझे कुमिको के भीतर एक ऐसी जगह का एहसास होता था जहाँ मैं नहीं पहुँच सकता था। किसी भी सामान्य या किसी भी रोमांचक बातचीत के बीच, बिना किसी पूर्वसूचना के, वह अचानक चुप हो जाती थी। यह सब अचानक होता था, बिना किसी कारण के (या कम से कम

•

कभी-कभी, अपनी यादों को खंगालते हुए, मैं दीवार से टंगी रस्सी की सीढ़ी को छूकर देखता और यह सुनिश्चित करता कि वह ढीली तो नहीं हो गई है। मुझे यह डर सताता रहता था कि वह किसी भी क्षण टूट सकती है। जब भी यह ख्याल मेरे मन में आता, अंधेरे में नीचे, तो मैं बेचैन हो जाता। मुझे सचमुच अपने दिल की धड़कन सुनाई देती थी। कई बार जाँच करने के बाद—शायद बीस या तीस बार—मुझे थोड़ी शांति मिली। आखिर मैंने सीढ़ी को पेड़ से अच्छे से बाँधा था। वह यूँ ही ढीली तो नहीं हो जाएगी।
मैंने अपनी घड़ी देखी। चमकती हुई सुइयाँ बता रही थीं कि ठीक तीन बजने वाले हैं। दोपहर के तीन बज रहे थे। मैंने ऊपर की ओर देखा। अर्धचंद्राकार प्रकाश की वह पट्टी अभी भी वहीं तैर रही थी। धरती की सतह चकाचौंध कर देने वाली गर्मी की रोशनी से जगमगा रही थी। मैंने कल्पना की कि सूरज की रोशनी में एक धारा चमक रही है और हरी पत्तियाँ हवा में काँप रही हैं। ऊपर का प्रकाश हर चीज़ को ढक रहा था, और फिर भी ठीक उसके नीचे, यहाँ, इतना गहरा अँधेरा था। आपको बस रस्सी की सीढ़ी से थोड़ा सा ज़मीन के नीचे उतरना था, और आप इतने गहरे अँधेरे तक पहुँच सकते थे।
मैंने सीढ़ी को एक बार फिर खींचकर यह सुनिश्चित किया कि वह मजबूती से टिकी हुई है। फिर मैंने अपना सिर दीवार से टिकाया और आँखें बंद कर लीं। आखिरकार, नींद मुझे अपने शिकंजे में ले आई, जैसे धीरे-धीरे ज्वार चढ़ता है।

गर्भावस्था पर स्मृतियाँ और संवाद

•

दर्द पर अनुभवजन्य जांच
जब मैं जागा, तो कुएँ का अर्धचंद्राकार मुँह शाम के गहरे नीले रंग में रंग गया था। मेरी घड़ी की सुइयाँ साढ़े सात बज रही थीं। शाम के साढ़े सात बजे। मतलब मैं यहाँ साढ़े चार घंटे सोया था। कुएं की तलहटी में हवा ठंडी लग रही थी। शायद जब मैं पहली बार नीचे उतरा था, तब घबराहट और उत्साह के कारण मैंने हवा के तापमान पर ध्यान ही नहीं दिया था। लेकिन अब मेरी त्वचा ठंडी हवा पर प्रतिक्रिया कर रही थी। अपनी नंगी बाहों को गर्म करने के लिए रगड़ते हुए मुझे एहसास हुआ कि मुझे अपने बैग में टी-शर्ट के ऊपर पहनने के लिए कुछ लाना चाहिए था। मेरे मन में कभी यह ख्याल ही नहीं आया था कि कुएं की तलहटी का तापमान सतह के तापमान से अलग हो सकता है।
अब मैं घोर अंधकार में डूब गया था। लाख कोशिश करने पर भी मेरी आँखों को कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। मुझे यह भी नहीं पता चल रहा था कि मेरा हाथ कहाँ है। मैंने दीवार पर टंगी सीढ़ी को टटोला और उसे खींचा। वह अभी भी मजबूती से दीवार पर टिकी हुई थी। मेरे हाथ के हिलने से ऐसा लगा जैसे अंधकार थोड़ा खिसक गया हो, लेकिन यह मेरा भ्रम भी हो सकता था।
अपनी ही आँखों से अपना शरीर न देख पाना बेहद अजीब लग रहा था, हालाँकि मुझे पता था कि वह वहाँ ज़रूर होगा। अँधेरे में एकदम स्थिर खड़े-खड़े मेरा अस्तित्व धीरे-धीरे कम होता जा रहा था। इस स्थिति से निपटने के लिए मैं बीच-बीच में अपना गला साफ़ करता या अपने चेहरे पर हाथ फेरता। इस तरह मेरे कान मेरी आवाज़ की

मौजूदगी की जाँच कर सकते थे, मेरा हाथ मेरे चेहरे की मौजूदगी की जाँच कर सकता था और मेरा चेहरा मेरे हाथ की मौजूदगी की जाँच कर सकता था।
इन प्रयासों के बावजूद, मेरा शरीर धीरे-धीरे अपना घनत्व और भार खोने लगा, जैसे बहता पानी धीरे-धीरे रेत को बहा ले जाता है। मुझे ऐसा लगा मानो मेरे भीतर एक भयंकर और निराकार रस्साकशी चल रही हो, एक ऐसी प्रतियोगिता जिसमें मेरा मन धीरे-धीरे मेरे शरीर को अपने क्षेत्र में खींच रहा हो। अंधकार इन दोनों के बीच उचित संतुलन बिगाड़ रहा था। मेरे मन में यह विचार आया कि मेरा अपना शरीर मात्र एक अस्थायी खोल है जिसे गुणसूत्रों के रूप में जाने जाने वाले संकेतों के पुनर्व्यवस्थापन द्वारा मेरे मन के लिए तैयार किया गया था। यदि संकेतों का पुनर्व्यवस्थापन फिर से हुआ, तो मैं स्वयं को पहले से बिल्कुल भिन्न शरीर में पाऊँगी। "मन की वेश्या," क्रेता कानो ने स्वयं को कहा था। अब मुझे इस वाक्यांश को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं थी। हाँ, हमारे लिए मन में मिलन करना और मेरे लिए वास्तविकता में चरम सुख प्राप्त करना संभव था। वास्तव में गहरे अंधकार में, हर प्रकार की विचित्र चीजें संभव थीं।
मैंने अपना सिर हिलाया और अपने मन को वापस अपने शरीर में लाने के लिए संघर्ष किया।
अंधेरे में, मैंने एक हाथ की उंगलियों को दूसरे हाथ की उंगलियों से दबाया—अंगूठे को अंगूठे से, तर्जनी को तर्जनी से। मेरे दाहिने हाथ की उंगलियों ने मेरे बाएं हाथ की उंगलियों के अस्तित्व की पुष्टि की, और मेरे बाएं हाथ की उंगलियों ने मेरे दाहिने हाथ की उंगलियों के अस्तित्व की पुष्टि की। फिर मैंने कई धीमी, गहरी सांसें लीं। ठीक है, अब मन के बारे में सोचना बंद

करते हैं। वास्तविकता के बारे में सोचो। वास्तविक दुनिया के बारे में सोचो। शरीर की दुनिया के बारे में। मैं यहाँ इसीलिए हूँ। वास्तविकता के बारे में सोचने के लिए। मैंने तय किया था कि वास्तविकता के बारे में सोचने का सबसे अच्छा तरीका उससे जितना हो सके दूर जाना है—उदाहरण के लिए, किसी कुएं की तलहटी जैसी जगह। "जब आपको नीचे जाना हो, तो सबसे गहरा कुआँ ढूंढो और तलहटी तक जाओ," श्री होंडा ने कहा था। दीवार से टेक लगाकर, मैंने धीरे- धीरे सीलन भरी हवा को अपने फेफड़ों में भरा।

•

हमारी शादी की रस्म नहीं हुई। शुरुआत में तो हमारे पास पैसे नहीं थे, और हम दोनों में से कोई भी अपने माता-पिता का एहसानमंद नहीं होना चाहता था। किसी भी तरह से, जैसे भी संभव हो, एक साथ जीवन की शुरुआत करना हमारे लिए किसी रस्म से कहीं ज़्यादा ज़रूरी था। एक रविवार की सुबह हम वार्ड ऑफिस गए, रविवार की खिड़की पर घंटी बजाकर ड्यूटी पर मौजूद क्लर्क को जगाया और शादी का रजिस्ट्रेशन करवा दिया। बाद में, हम एक ऐसे शानदार फ्रेंच रेस्टोरेंट में गए, जहाँ हम दोनों आमतौर पर नहीं जा सकते थे, एक बोतल वाइन मंगाई और पूरा खाना खाया। बस इतना ही हमारे लिए काफी था।
जब हमारी शादी हुई, तब हमारे पास लगभग कोई बचत नहीं थी (मेरी माँ ने अपनी मृत्यु के समय मेरे लिए थोड़ी सी रकम छोड़ी थी, लेकिन मैंने जानबूझकर उसे किसी वास्तविक आपात स्थिति के अलावा कभी इस्तेमाल नहीं किया) और घर का कोई फर्नीचर भी नहीं था। भविष्य को लेकर भी हमारी कोई उम्मीद नहीं थी। एक लॉ फर्म में काम करते हुए, बिना वकील की डिग्री के, मेरे पास आगे बढ़ने के लिए कुछ भी नहीं था, और कुमिको एक छोटे, अनजान पब्लिशर के लिए काम करती थी।

अगर वह चाहती, तो स्नातक होने के बाद अपने पिता के माध्यम से उसे कहीं बेहतर नौकरी मिल सकती थी, लेकिन उसे उनके पास जाने का विचार पसंद नहीं आया और उसने खुद ही नौकरी ढूंढ ली। फिर भी हम दोनों असंतुष्ट नहीं थे। हम बस इस बात से खुश थे कि हम किसी के दखल के बिना अपना जीवन यापन कर पा रहे थे।
हम दोनों के लिए शून्य से कुछ बनाना आसान नहीं था। मुझमें अकेले रहने की प्रवृत्ति थी, जो इकलौते बच्चों में आम होती है। जब कोई गंभीर काम करना होता था, तो मैं उसे अकेले ही करना पसंद करती थी। दूसरों से सलाह लेना और उन्हें समझाना मुझे समय और ऊर्जा की बर्बादी लगती थी, क्योंकि चुपचाप अकेले काम करना कहीं ज्यादा आसान था। और कुमिको ने अपनी बहन को खोने के बाद अपने परिवार से नाता तोड़ लिया था और मानो अकेली ही पली-बढ़ी हो। वह कभी उनसे सलाह लेने नहीं जाती थी। इस लिहाज से हम दोनों काफी हद तक एक जैसे थे।
फिर भी, धीरे-धीरे हम दोनों ने अपने तन-मन को उस नए बने घर के प्रति समर्पित करना सीख लिया जिसे हम "अपना घर" कहते थे। हमने एक साथ सोचना और महसूस करना सीखा। हम दोनों में से किसी के साथ भी जो कुछ घटित होता, अब हम उसे एक साथ सुलझाने का प्रयास करते, मानो वह हम दोनों का हिस्सा हो। कभी-कभी यह कारगर होता, कभी-कभी नहीं। लेकिन हमें इस नए, अनुभव से सीखने और समझने की प्रक्रिया में आनंद आता था। और यहाँ तक कि हिंसक टकरावों को भी हम एक-दूसरे की बाहों में भुला देते थे।

•

हमारी शादी के तीसरे साल में कुमिको गर्भवती हो गई। यह हमारे लिए—या कम से कम मेरे लिए—बहुत बड़ा सदमा था, क्योंकि हमने गर्भनिरोधक का बहुत ध्यान रखा था। किसी एक पल की लापरवाही ही

इसका कारण रही होगी; हम यह तो नहीं बता सकते कि वह पल कौन सा था, लेकिन इसके अलावा कोई और वजह नहीं थी। खैर, हम बच्चे का खर्च उठाने में असमर्थ थे। कुमिको ने अभी-अभी प्रकाशन के काम में अच्छी शुरुआत की थी और अगर संभव हो तो वह इसे जारी रखना चाहती थी। उसकी जैसी छोटी कंपनी में मातृत्व अवकाश जैसी कोई सुविधा नहीं थी। वहाँ काम करने वाली जो महिला बच्चा चाहती थी, उसके पास नौकरी छोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। अगर कुमिको ऐसा करती, तो हमें कम से कम कुछ समय के लिए सिर्फ मेरी तनख्वाह पर ही गुजारा करना पड़ता, लेकिन यह लगभग असंभव था।
"मुझे लगता है कि इस बार हमें यह खबर नहीं देनी पड़ेगी," कुमिको ने मुझसे उस दिन भावहीन स्वर में कहा जब डॉक्टर ने उसे यह खबर दी थी।
शायद वह सही थी। आप इसे किसी भी नज़रिए से देखें, यही सबसे समझदारी भरा निष्कर्ष था। हम जवान थे और माता-पिता बनने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थे। कुमिको और मुझे दोनों को अपने लिए समय चाहिए था। हमें अपना जीवन स्थापित करना था: यही हमारी पहली प्राथमिकता थी। भविष्य में बच्चे पैदा करने के हमारे पास बहुत सारे अवसर होंगे।

•

दरअसल, मैं कुमिको का गर्भपात नहीं करवाना चाहता था। एक बार, कॉलेज के दूसरे साल में, मैंने एक लड़की को गर्भवती कर दिया था, जिससे मेरी मुलाकात उस जगह हुई थी जहाँ मैं पार्ट टाइम काम करता था। वह एक अच्छी बच्ची थी, मुझसे एक साल छोटी, और हमारी अच्छी बनती थी। हम एक-दूसरे को पसंद तो करते थे, लेकिन हमारा रिश्ता कभी गंभीर नहीं था, और न ही भविष्य में गंभीर होने की कोई

संभावना थी। हम बस दो अकेले नौजवान थे जिन्हें किसी के सहारे की ज़रूरत थी।
उसकी गर्भावस्था के कारण को लेकर कभी कोई संदेह नहीं था। मैं हमेशा कंडोम का इस्तेमाल करता था, लेकिन उस दिन मैं कंडोम लाना भूल गया। मेरे पास कंडोम खत्म हो गया था। जब मैंने उसे यह बताया, तो वह कुछ पल के लिए झिझकी और फिर बोली, "कोई बात नहीं, मुझे लगता है कि आज मैं ठीक हूँ।" बस एक बार ही काफी था।
मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि मैंने किसी लड़की को गर्भवती कर दिया है, लेकिन मुझे यह ज़रूर पता था कि गर्भपात ही एकमात्र उपाय है। मैंने जैसे-तैसे पैसे जुटाए और उसके साथ क्लिनिक गया। हम एक कम्यूटर ट्रेन से चिबा के एक छोटे से कस्बे में गए, जहाँ उसकी एक दोस्त ने उसे एक डॉक्टर से मिलवाया था। हम एक ऐसे स्टेशन पर उतरे जिसके बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना था और वहाँ हज़ारों छोटे-छोटे घर दिखाई दिए, जो एक ही सांचे में ढले हुए थे, एक-दूसरे से सटे हुए और दूर-दूर तक फैली पहाड़ियों पर बने हुए थे। ये विशाल नई बस्तियाँ थीं जो हाल के वर्षों में उन युवा कंपनी कर्मचारियों के लिए बनाई गई थीं जो टोक्यो में घर नहीं खरीद सकते थे। स्टेशन बिल्कुल नया था, और उसके ठीक सामने पानी से भरे विशाल धान के खेत फैले हुए थे, इतने बड़े जितने मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। सड़कों पर रियल एस्टेट के साइन बोर्ड लगे हुए थे।
क्लिनिक के प्रतीक्षालय में बड़ी-बड़ी तोंद वाली युवतियों की भीड़ लगी हुई थी, जिनमें से अधिकतर की शादी को चौथा या पाँचवाँ साल हो चुका था और वे अपने नए गिरवी रखे उपनगरीय घरों में बसने और बच्चे पैदा करने की तैयारी में थीं। वहाँ मौजूद एकमात्र युवक मैं ही था। गर्भवती महिलाएं मुझे बड़ी उत्सुकता से देख

रही थीं—उनमें सद्भावना का कोई नामोनिशान नहीं था। एक नज़र में ही कोई समझ सकता था कि मैं एक कॉलेज का छात्र हूँ जिसने गलती से अपनी प्रेमिका को गर्भवती कर दिया था और अबॉर्शन कराने के लिए उसके साथ आया था।
ऑपरेशन के बाद, मैं और वह लड़की ट्रेन से टोक्यो वापस आ गए। दोपहर ढलते ही ट्रेन लगभग खाली थी। मैंने उससे माफी मांगी। मैंने कहा कि मेरी लापरवाही की वजह से वह इस मुसीबत में फंसी है।
“इसे इतना दिल पर मत लो,” उसने कहा। “कम से कम तुम मेरे साथ क्लिनिक तो आए और ऑपरेशन का खर्च भी तुमने ही उठाया।”
हम दोनों का मिलना जल्द ही बंद हो गया, इसलिए मुझे कभी पता नहीं चला कि उसका क्या हुआ, लेकिन गर्भपात के बाद बहुत लंबे समय तक— और हमारे अलग होने के बाद भी—मेरी भावनाएँ शांत नहीं हुईं। जब भी मुझे वह दिन याद आता, क्लिनिक के प्रतीक्षालय में भरी हुई गर्भवती युवतियों की छवि मेरे दिमाग में कौंध जाती, उनकी आँखों में आत्मविश्वास झलक रहा था। और यह ख्याल मेरे मन में आता कि मुझे उसे गर्भवती नहीं करना चाहिए था।
वापसी में ट्रेन में, मुझे दिलासा देने के लिए—मुझे तसल्ली देने के लिए—उसने मुझे ऑपरेशन की सारी बातें बताईं जिनसे ऑपरेशन इतना आसान हो गया था। उसने कहा, “यह उतना बुरा नहीं है जितना तुम सोच रही हो। इसमें ज़्यादा समय नहीं लगता और दर्द भी नहीं होता। बस अपने कपड़े उतारो और लेट जाओ। हाँ, मुझे लगता है कि थोड़ा शर्मिंदगी वाला है, लेकिन डॉक्टर और नर्सें दोनों ही अच्छे थे। बेशक, उन्होंने मुझे थोड़ा उपदेश दिया और कहा कि अब से ज़्यादा सावधान रहना। इसलिए इतना बुरा मत मानो। इसमें मेरी

भी थोड़ी गलती है। मैंने ही तो कहा था कि सब ठीक हो जाएगा। है ना? हिम्मत रखो।”
चिबा के उस छोटे से कस्बे तक लंबी ट्रेन यात्रा के दौरान और वापसी के पूरे रास्ते भर, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं एक अलग ही इंसान बन गया हूँ। यहाँ तक कि जब मैं उसे घर छोड़कर अपने कमरे में लौटा और बिस्तर पर लेटकर छत को देखने लगा, तब भी मुझे यह बदलाव महसूस हुआ। मैं एक नया इंसान बन चुका था, और मैं कभी भी पहले जैसा नहीं हो सकता था। जो बात मुझे परेशान कर रही थी, वह यह एहसास था कि मैं अब निर्दोष नहीं रहा। यह कोई नैतिक अपराधबोध या दोषी अंतरात्मा की बोध नहीं थी। मुझे पता था कि मैंने एक भयानक गलती की है, लेकिन मैं इसके लिए खुद को दंडित नहीं कर रहा था। यह एक ऐसी वास्तविकता थी जिसका मुझे शांत और तर्कसंगत तरीके से सामना करना था, दंड के किसी भी प्रश्न से परे।

•

कुमिको के गर्भवती होने की खबर सुनते ही सबसे पहले मेरे दिमाग में क्लिनिक के वेटिंग रूम में बैठी गर्भवती युवतियों की छवि उभर आई। या यूं कहें कि वहां हवा में फैली एक खास गंध याद आई। मुझे नहीं पता था कि वह गंध क्या थी—क्या सच में किसी चीज की गंध थी भी। शायद वह किसी गंध जैसी ही कोई चीज थी। जब नर्स ने उसका नाम पुकारा, तो वह लड़की धीरे से सख्त विनाइल कुर्सी से उठी और सीधे दरवाजे की ओर चल पड़ी। उठने से ठीक पहले उसने मेरी तरफ देखा, उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान थी—या यूं कहें कि जो मुस्कान उसने अपना इरादा बदल लिया था, उसका बचा-खुचा अंश।
मुझे पता था कि हमारे लिए बच्चा होना मुमकिन नहीं है, लेकिन मैं कुमिको को गर्भपात भी नहीं करवाना चाहती थी। जब मैंने उससे यह कहा, तो उसने जवाब दिया, “हम पहले ही बहुत कुछ झेल चुके हैं। अगर

मैं अभी बच्चा पैदा कर लेती हूँ, तो मेरे लिए काम करना बंद हो जाएगा, और तुम्हें मेरा और बच्चे का खर्च चलाने के लिए बेहतर तनख्वाह वाली नौकरी ढूंढनी पड़ेगी। हमारे पास किसी भी अतिरिक्त खर्च के लिए पैसे नहीं होंगे। हम अपनी मनपसंद कोई भी चीज़ नहीं कर पाएंगे। अब से हमारे लिए संभावनाएं लगभग शून्य हो जाएंगी। क्या यह तुम्हें मंजूर है?”
“हां,” मैंने कहा। “मुझे लगता है कि मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है।”
"वास्तव में?"
“अगर मैं ठान लूँ तो शायद मुझे काम मिल जाए—जैसे मेरे चाचा के यहाँ: उन्हें मदद की ज़रूरत है। वो एक नया काम शुरू करना चाहते हैं, लेकिन उन्हें कोई भरोसेमंद व्यक्ति नहीं मिल रहा जो उसे चला सके। मुझे यकीन है कि उनके साथ काम करके मैं अभी से कहीं ज़्यादा कमा लूँगा। ये कोई लॉ फर्म तो नहीं है, पर क्या फर्क पड़ता है? मुझे अभी का काम कुछ खास पसंद नहीं है।”
तो आप एक रेस्टोरेंट चलाएंगे?
मुझे पूरा यकीन है कि अगर मैं कोशिश करूं तो मैं कर सकता हूं। और आपात स्थिति में, मेरे पास मेरी मां द्वारा छोड़ी गई थोड़ी सी धनराशि है। हम भूख से नहीं मरेंगे।
कुमिको चुप हो गई और काफी देर तक सोचती रही, उसकी आँखों के कोनों पर हल्की झुर्रियाँ पड़ गईं। उसके ये छोटे-छोटे भाव मुझे बहुत अच्छे लगते थे। उसने पूछा, "क्या इसका मतलब है कि तुम बच्चा पैदा करना चाहती हो?"
“मुझे नहीं पता,” मैंने कहा। “मुझे पता है कि तुम गर्भवती हो, लेकिन मुझे अभी तक यह एहसास नहीं हुआ है कि मैं पिता बन सकता हूँ। और मुझे यह भी नहीं पता कि बच्चा होने से हमारी ज़िंदगी

कैसे बदल जाएगी। तुम्हें अपना काम पसंद है, और इसे तुमसे छीनना एक गलती जैसा लगता है। एक तरफ, मुझे लगता है कि हम दोनों को एक-दूसरे के साथ ज़्यादा समय बिताने की ज़रूरत है, लेकिन मुझे यह भी लगता है कि बच्चा होने से हमारी दुनिया बड़ी हो जाएगी। मुझे नहीं पता कि क्या सही है। बस मुझे यह महसूस हो रहा है कि मैं नहीं चाहता कि तुम गर्भपात कराओ। इसलिए मैं कोई आश्वासन नहीं दे सकता। मुझे इस बारे में सौ प्रतिशत यकीन नहीं है, और मेरे पास कोई चमत्कारी समाधान भी नहीं है। बस यही एक एहसास है।”
कुमिको कुछ देर तक इस बारे में सोचती रही और बीच-बीच में अपना पेट सहलाती रही। "बताओ," उसने कहा। "तुम्हें क्या लगता है कि मैं गर्भवती क्यों हुई? कुछ समझ में नहीं आ रहा?"
मैंने सिर हिलाया। “सच में नहीं। हम हमेशा से सावधान रहे हैं। मैं इसी तरह की मुसीबत से बचना चाहता था। इसलिए मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है कि यह कैसे हुआ।”
“क्या आपको लगता है कि मेरा किसी के साथ अफेयर रहा होगा? क्या आपने इस संभावना के बारे में कभी नहीं सोचा?”
"कभी नहीं।"
"क्यों नहीं?"
मुझे नहीं पता। मैं यह दावा तो नहीं कर सकता कि मेरे पास छठी इंद्री है या कुछ और, लेकिन मुझे इस बात का पूरा यकीन है।
हम रसोई की मेज पर बैठे शराब पी रहे थे। रात काफी हो चुकी थी और चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। कुमिको ने अपनी आँखें सिकोड़कर गिलास में बची आखिरी घूंट को टकटकी लगाकर देखा। वह लगभग कभी शराब नहीं पीती थी, हालांकि जब उसे नींद नहीं आती थी तो वह एक गिलास शराब पी लेती थी। इससे उसे हमेशा आराम मिलता था। मैं तो बस उसका साथ देने के लिए पी रहा था। हमारे पास असली शराब के

गिलास जैसे कोई बढ़िया बर्तन नहीं थे। इसके बजाय, हम पड़ोस की शराब की दुकान से मुफ्त में मिले छोटे-छोटे बीयर के गिलासों में पी रहे थे।
“क्या तुम्हारा किसी के साथ अफेयर था?” मैंने अचानक चिंतित होकर पूछा।
कुमिको मुस्कुराई और सिर हिलाया। “मज़ाक मत करो। तुम जानती हो कि मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगी। मैंने तो बस एक सैद्धांतिक संभावना के तौर पर इसका ज़िक्र किया था।” फिर वह गंभीर हो गई और अपनी कोहनियाँ मेज़ पर टिका दीं। “लेकिन कभी-कभी, मैं चीज़ों के बारे में कुछ नहीं कह सकती। मैं यह नहीं बता सकती कि क्या सच है और क्या झूठ… क्या सच में हुआ और क्या नहीं… बस कभी-कभी।” "क्या यह कभी-कभार होने वाली घटनाओं में से एक है?"
“हाँ, कुछ हद तक। क्या आपके साथ कभी ऐसा नहीं होता?”
मैंने एक मिनट सोचा। "मुझे कोई ठोस उदाहरण याद नहीं आ रहा है, नहीं," मैंने कहा।
मैं इसे कैसे समझाऊं? मेरे मन में जो वास्तविकता है और जो वास्तव में वास्तविकता है, उसके बीच एक तरह का अंतर है। मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरे अंदर कहीं कोई छोटी-सी चीज छिपी हुई है... जैसे कोई चोर घर में किसी कोठरी में छिपा हो... और वह कभी-कभी बाहर निकलकर मेरे द्वारा बनाए गए सारे नियम और तर्क को बिगाड़ देता है। ठीक वैसे ही जैसे चुंबक किसी मशीन को बेकाबू कर देता है।
“कोई मामूली-सी चीज़? कोई चोर?” मैंने कहा। “वाह, कितना अस्पष्ट जवाब है!”
"यह अस्पष्ट है। सचमुच," कुमिको ने कहा और फिर अपनी बची हुई शराब पी ली।

मैंने कुछ देर तक उसकी ओर देखा। "और तुम्हें लगता है कि उस 'किसी छोटी-मोटी बात' और तुम्हारे गर्भवती होने के बीच कोई संबंध है?" उसने सिर हिलाया। “नहीं, मैं ये नहीं कह रही कि ये दोनों बातें आपस में जुड़ी हुई हैं या नहीं। बस कभी-कभी मुझे घटनाओं के क्रम के बारे में ठीक से समझ नहीं आता। मैं बस यही कहना चाह रही हूँ।” उसके शब्दों में अधीरता झलकने लगी थी। इस बातचीत को समाप्त करने का समय आ गया था। सुबह के एक बज चुके थे। मैंने मेज के उस पार हाथ बढ़ाकर उसका हाथ थाम लिया।
“आप जानते हैं,” कुमिको ने कहा, “काश आप मुझे इस बारे में खुद फैसला करने देते। मुझे पता है कि यह हम दोनों के लिए एक बड़ी समस्या है। सच में। लेकिन इस बार मैं चाहती हूं कि आप मुझे फैसला करने दें। मुझे बुरा लग रहा है कि मैं अपने मन की बात ठीक से समझा नहीं पा रही हूं।”
मैंने कहा, "असल में, मुझे लगता है कि फैसला लेने का अधिकार आपका है, और मैं उस अधिकार का सम्मान करता हूं।"
“मुझे लगता है कि फैसला करने के लिए लगभग एक महीना बचा है। हम इस बारे में लगातार बात करते आ रहे हैं, और मुझे लगता है कि मैं अच्छी तरह से समझता हूँ कि आप इसके बारे में क्या सोचते हैं। तो अब मुझे सोचने दीजिए। चलिए कुछ समय के लिए इस बारे में बात करना बंद करते हैं।”

•

जब कुमिको ने गर्भपात कराया, तब मैं होक्काइडो में था। कंपनी कभी भी अपने कर्मचारियों को व्यापारिक काम से शहर से बाहर नहीं भेजती थी, लेकिन उस खास मौके पर कोई और नहीं जा सका, इसलिए मुझे ही उत्तर की ओर भेजा गया। मुझे कागजों से भरा एक ब्रीफकेस देना था, दूसरे पक्ष को एक संक्षिप्त स्पष्टीकरण देना था, उनके

कागजात लेने थे और सीधे घर वापस आना था। कागजात इतने महत्वपूर्ण थे कि उन्हें डाक से भेजना या किसी कूरियर के भरोसे छोड़ना संभव नहीं था। टोक्यो जाने वाली सभी उड़ानें भरी हुई थीं, इसलिए मुझे साप्पोरो के एक बिजनेस होटल में एक रात बितानी पड़ी। कुमिको उस दिन अकेले ही गर्भपात कराने गई। उसने होटल में रात दस बजे के बाद मुझे फोन किया और कहा, “आज दोपहर मेरा ऑपरेशन हो गया। मुझे आपको इस तरह बाद में सूचित करने के लिए खेद है, लेकिन उन्हें अचानक ही एक जगह खाली करनी पड़ी, और मैंने सोचा कि अगर मैं आपके जाने के दौरान खुद ही फैसला ले लूं और सब कुछ संभाल लूं तो हम दोनों के लिए यह आसान होगा।”
मैंने कहा, "चिंता मत करो। जो तुम्हें सबसे अच्छा लगे वही करो।" मैं आपको और भी बहुत कुछ बताना चाहता हूँ, लेकिन अभी नहीं बता सकता। मुझे लगता है कि मुझे कभी न कभी बताना ही पड़ेगा।
"जब मैं वापस आऊंगा तब हम बात कर सकते हैं।"
फोन के बाद, मैंने अपना कोट पहना और साप्पोरो की गलियों में घूमने निकल गया। मार्च का महीना अभी शुरू ही हुआ था, और सड़कों के दोनों किनारे बर्फ के ऊंचे-ऊंचे ढेरों से ढके हुए थे। हवा इतनी ठंडी थी कि लगभग असहनीय ठंड लग रही थी, और सांस से निकलने वाली बर्फ सफेद बादलों की तरह पल भर में गायब हो जाती थी। लोग भारी कोट, दस्ताने और ठुड्डी तक लिपटे स्कार्फ पहने हुए थे और बर्फीले फुटपाथों पर संभलकर कदम रख रहे थे। टैक्सियाँ इधर-उधर दौड़ रही थीं, उनके स्टडेड टायर सड़क पर खरोंच पैदा कर रहे थे। जब ठंड असहनीय हो गई, तो मैं एक बार में गया और जल्दी से कुछ ड्रिंक्स पीकर थोड़ा और घूमने निकल गया।
मैं काफी देर तक चलता रहा। बीच-बीच में बर्फ गिरती रही, लेकिन वह हल्की-हल्की बर्फ थी, मानो कोई याद धुंधली होकर दूर जा रही हो।

दूसरा बार, जहाँ मैं गया, सड़क के नीचे था। वह प्रवेश द्वार से कहीं अधिक बड़ा निकला। बार के बगल में एक छोटा सा मंच था, और उस पर चश्मा पहने एक दुबला-पतला आदमी गिटार बजाते और गाते हुए बैठा था। वह धातु की कुर्सी पर पैर मोड़कर बैठा था, गिटार का डिब्बा उसके पैरों के पास पड़ा था।
मैं बार में बैठा, शराब पी रहा था और आधा-अधूरा संगीत सुन रहा था। गानों के बीच में उस आदमी ने बताया कि यह सारा संगीत उसी का बनाया हुआ है। लगभग तीस साल का, उसका चेहरा साधारण सा था और उसने काले प्लास्टिक के फ्रेम वाला चश्मा पहना हुआ था। उसने जींस, ऊँचे फीते वाले बूट और कमर पर ढीली लटकती चेक वाली फलालैन की शर्ट पहनी हुई थी। संगीत की शैली को परिभाषित करना मुश्किल था— कुछ ऐसा जिसे पुराने ज़माने में "लोक संगीत" कहा जाता होगा, हालाँकि यह लोक संगीत का जापानी संस्करण था। सरल सुर, सरल धुनें, साधारण बोल। ऐसा संगीत जिसे सुनने के लिए मैं खास तौर पर समय निकालता।
आम तौर पर, मैं ऐसे संगीत पर ध्यान नहीं देता। मैं अपनी व्हिस्की पीता, बिल चुकाता और वहाँ से चला जाता। लेकिन उस रात मुझे कंपकंपी लग रही थी, हड्डियाँ तक काँप रही थीं, और जब तक मैं पूरी तरह से गर्म नहीं हो जाता, तब तक किसी भी हालत में बाहर जाने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मैंने एक गिलास सीधे पी लिया और दूसरा ऑर्डर कर दिया। मैंने अपना कोट या स्कार्फ उतारने की ज़हमत भी नहीं उठाई। जब बारटेंडर ने पूछा कि क्या मुझे कुछ खाने को चाहिए, तो मैंने पनीर मंगवाया और उसका एक टुकड़ा खा लिया। मैंने सोचने की कोशिश की, लेकिन मेरा दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा था। मुझे यह भी नहीं पता था कि मैं किस बारे में सोचना चाहता

हूँ। मैं एक खाली कमरे की तरह था। अंदर, संगीत से बस एक सूखी, खोखली गूँज निकल रही थी।
जब उस आदमी ने गाना खत्म किया, तो हल्की-फुल्की तालियाँ बजीं, न तो बहुत ज़ोरदार और न ही बस खानापूर्ति। वहाँ मुश्किल से दस-पंद्रह ग्राहक थे। वह आदमी खड़ा हुआ और उसने झुककर अभिवादन किया। उसने कुछ मज़ाकिया बातें कहीं, जिससे कुछ ग्राहक हँस पड़े। मैंने बारटेंडर को बुलाया और अपनी तीसरी व्हिस्की मंगवाई। फिर, आखिर में, मैंने अपना कोट और स्कार्फ उतार दिया। “आज रात का मेरा शो यहीं समाप्त होता है,” गायक ने घोषणा की। वह कुछ देर रुका और कमरे का जायजा लिया। “लेकिन आपमें से कुछ लोग ऐसे भी होंगे जिन्हें मेरे गाने पसंद नहीं आए। आपके लिए मेरे पास कुछ खास है। मैं ऐसा अक्सर नहीं करता, इसलिए आप खुद को बहुत भाग्यशाली समझें।”
उसने अपना गिटार ज़मीन पर रखा और गिटार के डिब्बे से एक मोटी सफ़ेद मोमबत्ती निकाली। उसने माचिस से उसे जलाया, एक प्लेट में थोड़ा सा मोम टपकाया और मोमबत्ती को सीधा खड़ा कर दिया। फिर, किसी यूनानी दार्शनिक की तरह, उसने प्लेट को ऊपर उठाया। "क्या आप रोशनी कम कर सकते हैं?" एक कर्मचारी ने रोशनी थोड़ी कम कर दी। "थोड़ा और कम कर दीजिए, अगर आपको कोई आपत्ति न हो।" अब जगह काफी अंधेरी हो गई और मोमबत्ती की लौ साफ दिखाई देने लगी। अपने व्हिस्की के गिलास को गर्म करने के लिए हथेलियों से पकड़े हुए, मैंने उस आदमी और उसकी मोमबत्ती पर अपनी नज़रें जमाए रखीं। “जैसा कि आप भली-भांति जानते हैं,” उस व्यक्ति ने धीमी लेकिन मर्मस्पर्शी आवाज़ में कहा, “जीवन में हम अनेक प्रकार के दर्द का अनुभव करते हैं। शरीर का दर्द और हृदय का दर्द। मैं जानता हूँ कि मैंने अपने जीवन में अनेक रूपों में दर्द का अनुभव किया

है, और मुझे विश्वास है कि आपने भी किया होगा। हालाँकि, अधिकतर मामलों में, मुझे यकीन है कि आपको उस दर्द की सच्चाई को किसी दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाना, उसे शब्दों में समझाना बहुत कठिन लगा होगा। लोग कहते हैं कि वे स्वयं ही अपने दर्द को समझ सकते हैं। लेकिन क्या यह सच है? मैं तो ऐसा नहीं मानता। यदि हम अपनी आँखों के सामने किसी को सचमुच पीड़ा में देखते हैं, तो कभी-कभी हम उसके दुख और दर्द को अपना ही महसूस करते हैं। यही सहानुभूति की शक्ति है। क्या मेरी बात स्पष्ट है?”
उसने बोलना बंद कर दिया और एक बार फिर कमरे के चारों ओर देखा। “लोग दूसरों के लिए गीत इसलिए गाते हैं क्योंकि वे सहानुभूति जगाने की शक्ति चाहते हैं, अपने संकीर्ण स्वार्थ से मुक्त होकर दूसरों के साथ अपने सुख-दुख बाँटना चाहते हैं। बेशक, यह करना आसान नहीं है। इसलिए आज रात, एक प्रयोग के तौर पर, मैं चाहता हूँ कि आप सहानुभूति के एक सरल, अधिक प्रत्यक्ष अनुभव को महसूस करें।”
वहाँ मौजूद सभी लोग अब शांत थे, सबकी निगाहें मंच पर टिकी थीं। सन्नाटे के बीच, वह आदमी मानो कुछ देर रुककर, या किसी मानसिक एकाग्रता की अवस्था में पहुँचने की कोशिश कर रहा था। फिर, बिना कुछ कहे, उसने अपना बायाँ हाथ जलती हुई मोमबत्ती पर रख दिया। धीरे-धीरे, वह हथेली को लौ के और करीब लाता गया। दर्शकों में से किसी ने आह या कराह जैसी आवाज़ निकाली। लौ की नोक उस आदमी की हथेली को जलाती हुई दिखाई दे रही थी। मांस के जलने की हल्की सी आवाज़ लगभग सुनाई दे रही थी। एक औरत ने ज़ोर से चीख मारी। बाकी सब लोग स्तब्ध होकर देखते रहे। वह आदमी दर्द सहता रहा, पीड़ा से उसका चेहरा बिगड़ गया था। यह सब क्या था? उसे इतनी मूर्खतापूर्ण, बेतुकी हरकत क्यों करनी पड़ी? मेरा मुँह सूख

गया। पाँच-छह सेकंड बाद, उसने धीरे से अपना हाथ लौ से हटाया और मोमबत्ती वाली थाली को ज़मीन पर रख दिया। फिर उसने दोनों हाथों को आपस में जोड़ा, दाएँ और बाएँ हाथ की हथेलियाँ एक-दूसरे से सटा दीं।
“जैसा कि आपने आज रात देखा, देवियों और सज्जनों, दर्द वास्तव में किसी व्यक्ति के शरीर को जला सकता है,” उस व्यक्ति ने कहा। उसकी आवाज़ पहले जैसी ही थी: शांत, स्थिर और ठंडी। उसके चेहरे पर पीड़ा का कोई निशान नहीं था। वास्तव में, उसकी जगह एक हल्की सी मुस्कान थी। “और जो दर्द वहाँ रहा होगा, उसे आप ऐसे महसूस कर पाए जैसे वह आपका अपना हो। यही सहानुभूति की शक्ति है।”
उस व्यक्ति ने धीरे-धीरे अपने जुड़े हुए हाथों को अलग किया। उनके बीच से उसने एक पतला लाल स्कार्फ निकाला, जिसे उसने सबके सामने खोल दिया। फिर उसने अपनी हथेलियाँ दर्शकों की ओर फैला दीं। उस पर जलने का कोई निशान नहीं था। कुछ पल सन्नाटा छा गया, फिर लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से अपनी राहत ज़ाहिर की। बत्तियाँ जल उठीं, और कमरे में व्याप्त तनाव की जगह लोगों की चहल-पहल ने ले ली। मानो कुछ हुआ ही न हो, उस व्यक्ति ने अपना गिटार केस में रखा, मंच से नीचे उतरा और गायब हो गया।
जब मैंने बिल का भुगतान किया, तो मैंने काउंटर पर बैठी लड़की से पूछा कि क्या वह आदमी यहाँ अक्सर गाता है और क्या वह आमतौर पर यह करतब दिखाता है।
“मुझे पक्का नहीं पता,” उसने कहा। “जहाँ तक मुझे पता है, वह यहाँ पहली बार आया है। मैंने आज से पहले उसके बारे में कभी नहीं सुना था। और किसी ने मुझे यह भी नहीं बताया कि वह जादू के करतब दिखाता है। लेकिन क्या यह कमाल की बात नहीं है? मुझे आश्चर्य होता है

कि वह यह कैसे करता है। मुझे यकीन है कि वह टीवी पर खूब धूम मचाएगा।”
मैंने कहा, "यह सच है। ऐसा लग रहा था जैसे वह सचमुच खुद को जला रहा हो।"
मैं होटल वापस चला गया, और बिस्तर पर लेटते ही मुझे नींद आ गई, मानो वह मेरा इंतज़ार कर रही हो। नींद में डूबते हुए मुझे कुमिको की याद आई, लेकिन वह बहुत दूर लग रही थी और उसके बाद मेरे लिए कुछ भी सोचना नामुमकिन हो गया। मेरे दिमाग में उस आदमी का चेहरा कौंध गया जो अपनी हथेली जला रहा था। मुझे लगा जैसे वह सचमुच खुद को जला रहा हो। और फिर मैं सो गया।

इच्छा की जड़

•

कमरा नंबर 208 में

•

दीवार के पार जाना
भोर होने से पहले, कुएँ की तलहटी में, मैंने एक सपना देखा। लेकिन वह सपना नहीं था। वह कुछ ऐसा था जिसने संयोगवश सपने का रूप ले लिया था।
मैं अकेला चल रहा था। एक विशाल लॉबी के बीचोंबीच लगे एक बड़े टेलीविजन की स्क्रीन पर नोबोरू वाटाया का चेहरा दिखाई दे रहा था। उनका भाषण अभी शुरू ही हुआ था। उन्होंने ट्वीड का सूट, धारीदार कमीज और गहरे नीले रंग की टाई पहनी हुई थी। उनके हाथ सामने रखी मेज पर जुड़े हुए थे और वे कैमरे की ओर देखकर बोल रहे थे। उनके पीछे दीवार पर दुनिया का एक बड़ा नक्शा टंगा हुआ था। लॉबी में सौ से ज़्यादा लोग मौजूद थे और उनमें से हर कोई अपना काम रोककर गंभीर भावों के साथ उन्हें सुनने के लिए तैयार था। नोबोरू वाटाया कुछ ऐसा कहने वाले थे जिससे लोगों का भविष्य तय होने वाला था।
मैं भी रुक गया और टेलीविजन स्क्रीन की ओर देखने लगा। नोबोरू वटाया बड़ी कुशलता से, लेकिन पूरी ईमानदारी से, उन लाखों लोगों को संबोधित कर रहे थे जिन्हें वे देख नहीं सकते थे। उनके आमने- सामने होने पर मुझे जो असहनीय बेचैनी हमेशा महसूस होती थी, वह अब किसी गहरे, अदृश्य कोने में छिपी हुई थी। वे अपनी विशिष्ट प्रभावशाली शैली में बोल रहे थे—समय पर लिए गए विराम, आवाज़ की गूंज, चेहरे के भावों की विविधता, ये सब मिलकर वास्तविकता का एक

विचित्र रूप से प्रभावी एहसास पैदा कर रहे थे। ऐसा लग रहा था कि नोबोरू वटाया दिन-प्रतिदिन और अधिक निपुण वक्ता बनते जा रहे थे। हालांकि मुझे यह स्वीकार करना अच्छा नहीं लग रहा था, लेकिन मुझे यह मानना ही पड़ा।
“तो देखो, मेरे दोस्तों,” वह कह रहे थे, “सब कुछ जटिल भी है और सरल भी। यही वह मूलभूत नियम है जो संसार को नियंत्रित करता है। हमें इसे कभी नहीं भूलना चाहिए। जो चीज़ें जटिल प्रतीत होती हैं—और वास्तव में जटिल होती हैं—उद्देश्यों के संदर्भ में बहुत सरल होती हैं। यह केवल इस बात पर निर्भर करता है कि हम क्या खोज रहे हैं। दूसरे शब्दों में, उद्देश्य ही इच्छा की जड़ है। महत्वपूर्ण बात है जड़ को खोजना। वास्तविकता की जटिल सतह के नीचे गहराई तक जाओ। और खोदते रहो। फिर तब तक खोदते रहो जब तक तुम जड़ के बिल्कुल सिरे तक न पहुँच जाओ। यदि तुम ऐसा करोगे”—और यहाँ उन्होंने मानचित्र की ओर इशारा किया—“तो अंततः सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा। संसार इसी प्रकार चलता है। मूर्ख लोग कभी भी इस स्पष्ट जटिलता से मुक्त नहीं हो सकते। वे अंधेरे में भटकते रहते हैं, निकास की तलाश करते हैं, और संसार के बारे में एक भी बात समझने से पहले ही मर जाते हैं। वे दिशा का सारा ज्ञान खो चुके होते हैं। वे मानो किसी घने जंगल में या किसी कुएँ में हों। और उनके दिशा का सारा ज्ञान खोने का कारण यह है कि वे मूलभूत सिद्धांतों को नहीं समझते।” उनके दिमाग में कचरे और पत्थरों के सिवा कुछ नहीं है। उन्हें कुछ भी समझ नहीं आता। बिलकुल कुछ भी नहीं। उन्हें आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, उत्तर-दक्षिण का भी फर्क नहीं पता। इसीलिए वे कभी भी अंधकार से बाहर नहीं निकल पाते।

नोबोरू वाटाया ने उस बिंदु पर विराम लिया ताकि उनके शब्द श्रोताओं के मन में अच्छी तरह से बैठ जाएं।
“लेकिन चलिए ऐसे लोगों के बारे में भूल जाते हैं,” उन्होंने आगे कहा। “अगर लोग दिशाहीन होना चाहते हैं, तो हम दोनों के लिए सबसे अच्छा यही होगा कि हम उन्हें ऐसा करने दें। हमारे पास इससे कहीं ज़्यादा ज़रूरी काम हैं।”
जैसे-जैसे मैं सुनता गया, मेरा गुस्सा बढ़ता गया, यहाँ तक कि मेरा गुस्सा मुझे लगभग दम घोंट रहा था। वह दिखावा कर रहा था कि वह पूरी दुनिया से बात कर रहा है, लेकिन असल में वह सिर्फ मुझसे बात कर रहा था। और ऐसा करने के पीछे उसका कोई कुटिल, विकृत मकसद जरूर रहा होगा। लेकिन किसी और को यह बात समझ नहीं आई। यही वजह थी कि नोबोरू वटाया विशाल टेलीविजन प्रणाली का फायदा उठाकर मुझे गुप्त संदेश भेज सका। मैंने अपनी जेबों में मुट्ठी भींच ली, लेकिन अपना गुस्सा निकालने का कोई रास्ता नहीं था। और लॉबी में किसी से भी अपना गुस्सा साझा न कर पाने की वजह से मेरे अंदर एक गहरे अकेलेपन का एहसास पैदा हो गया।
वह जगह लोगों से भरी हुई थी, जो नोबोरू वटाया के हर शब्द को ध्यान से सुनने की कोशिश कर रहे थे। मैं लॉबी से होते हुए सीधे उस गलियारे की ओर बढ़ा जो अतिथि कक्षों से जुड़ा था। वहाँ वह बेनाम आदमी खड़ा था। जैसे ही मैं उसके पास पहुँचा, उसने अपने उसी बेनाम चेहरे से मेरी ओर देखा। फिर, बिना आवाज़ किए, वह मेरा रास्ता रोकने के लिए आगे बढ़ा।
उन्होंने कहा, "यह सही समय नहीं है। अब तुम्हारा यहाँ कोई स्थान नहीं है।"

लेकिन नोबोरू वाटाया के गहरे, चुभते दर्द ने मुझे और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। मैंने हाथ बढ़ाकर उस बेनाम आदमी को एक तरफ धकेल दिया। वह एक परछाई की तरह लड़खड़ाया और गिर पड़ा।
“मैं ये तुम्हारी भलाई के लिए कह रहा हूँ,” उसने मेरे पीछे से पुकारा, उसके हर शब्द मेरी पीठ में छर्रे की तरह चुभ रहे थे। “अगर तुम और आगे गए तो वापस नहीं आ पाओगे। समझे?”
मैंने उसे अनसुना कर तेज़ी से आगे बढ़ गई। अब मुझे किसी चीज़ से डर नहीं लग रहा था। मुझे जानना ही था। मैं दिशा का सारा ज्ञान खो चुकी थी, लेकिन मैं हमेशा ऐसे नहीं रह सकती थी।
मैं उस जानी-पहचानी सी दिखने वाली गलियारे में चल पड़ा। मुझे लगा कि बिना चेहरे वाला आदमी मेरा पीछा करेगा और मुझे रोकने की कोशिश करेगा, लेकिन जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो कोई नहीं आ रहा था। लंबा, घुमावदार गलियारा एक जैसे दरवाजों से भरा हुआ था। हर दरवाजे पर एक नंबर लिखा था, लेकिन मुझे उस कमरे का नंबर याद नहीं आ रहा था जिसमें मुझे पिछली बार ले जाया गया था। मुझे यकीन था कि उस समय मुझे वह नंबर याद था, लेकिन अब उसे याद करने की मेरी कोशिशें नाकाम रहीं, और हर दरवाजा खोलने का तो सवाल ही नहीं था। मैं गलियारे में इधर-उधर घूमता रहा, तभी मेरी नज़र एक रूम-सर्विस वेटर पर पड़ी जो एक ट्रे लिए खड़ा था। ट्रे पर कटी सार्क की एक नई बोतल, एक बर्फ की बाल्टी और दो गिलास रखे थे। मैंने वेटर को जाने दिया और फिर उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। बीच-बीच में, पॉलिश की हुई ट्रे छत पर लगी एक चमकदार बत्ती की रोशनी में चमक उठती थी। वेटर ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। ठुड्डी अंदर की ओर खींचे हुए, वह सीधा आगे बढ़ता रहा, उसके कदम एक लय में थे। कभी- कभी वह संगीत की कुछ पंक्तियाँ सीटी बजाकर सुनाता था। यह 'द

थीविंग मैगपाई' का ओवरचर था, वह शुरुआती हिस्सा जहाँ ड्रम बजने लगते हैं। वह अच्छा बजाता था।
गलियारा लंबा था, लेकिन वेटर के पीछे-पीछे चलते हुए मुझे उसमें कोई और नहीं मिला। आखिरकार, वह एक दरवाजे के सामने रुका और उसने तीन बार धीरे से दस्तक दी। कुछ सेकंड बाद, किसी ने दरवाजा खोला और वेटर ट्रे लेकर अंदर चला गया। मैं दीवार से सटकर एक बड़े चीनी शैली के फूलदान के पीछे छिप गया और वेटर के बाहर आने का इंतजार करने लगा। कमरा नंबर 208 था। अरे हाँ! मुझे अब तक यह याद क्यों नहीं आया?
वेटर को आने में बहुत देर लग रही थी। मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। कुछ देर बाद, घड़ी की सुइयाँ रुक गईं। मैंने फूलदान में रखे फूलों को गौर से देखा और उनकी हर खुशबू को महसूस किया। फूल इतने ताज़े थे कि ऐसा लग रहा था मानो उन्हें कुछ ही पल पहले किसी बगीचे से लाया गया हो, उनका रंग और सुगंध बिल्कुल बरकरार थी। शायद उन्हें अभी तक इस बात का एहसास भी नहीं हुआ था कि उन्हें उनकी जड़ों से अलग कर दिया गया है। एक छोटे से पंख वाले कीड़े ने मोटे, गूदेदार पंखुड़ियों वाले लाल गुलाब के अंदरूनी हिस्से में अपना रास्ता बना लिया था।
पांच मिनट से ज़्यादा समय बीत गया, फिर भी वेटर खाली हाथ कमरे से बाहर आया। पहले की तरह ठुड्डी अंदर की ओर खींचे हुए, वह उसी रास्ते से वापस चला गया जिससे आया था। जैसे ही वह एक कोने में ओझल हुआ, मैं दरवाज़े के पास गया। मैंने अपनी सांस रोक ली और कुछ सुनने की उम्मीद में कान लगाए। लेकिन कोई आवाज़ नहीं थी, अंदर किसी के होने का कोई आभास नहीं था। मैंने हिम्मत करके दरवाज़ा खटखटाया। तीन बार। धीरे से। ठीक वैसे ही जैसे वेटर ने किया था। लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। मैंने कुछ सेकंड का इंतज़ार

किया और फिर तीन बार खटखटाया, इस बार पहले से थोड़ा ज़ोर से। फिर भी कोई जवाब नहीं।
इसके बाद, मैंने दरवाज़े का हैंडल घुमाया। वह घूमा और दरवाज़ा बिना आवाज़ किए अंदर की ओर खुल गया। कमरा पहले तो घोर अंधेरा लग रहा था, लेकिन खिड़की पर लगे मोटे पर्दों के बीच से थोड़ी रोशनी अंदर आ रही थी। बड़ी मुश्किल से मैं खिड़की, मेज़ और सोफ़ा को मुश्किल से देख पा रहा था। यही वह कमरा था जिसमें मैं क्रेता कानो के साथ ठहरा था। यह एक सुइट था: लिविंग रूम यहाँ और बेडरूम पीछे। मेज़ पर कटी सार्क की बोतल, गिलास और बर्फ़ की बाल्टी धुंधली सी दिख रही थीं। जब मैंने दरवाज़ा खोला, तो स्टेनलेस स्टील की बर्फ़ की बाल्टी पर गलियारे से आती रोशनी पड़ी और उससे तेज़ चमक निकली। मैं अंधेरे में दाखिल हुआ और चुपचाप दरवाज़ा बंद कर लिया। कमरे की हवा गर्म थी और उसमें फूलों की तेज़ खुशबू फैली हुई थी। मैंने अपनी साँस रोक ली और ध्यान से सुनने लगा, अपना बायाँ हाथ हैंडल पर रखा ताकि ज़रूरत पड़ने पर उसे खोल सकूँ। यहाँ कहीं न कहीं कोई न कोई ज़रूर होगा। किसी ने रूम सर्विस से व्हिस्की, बर्फ़ और गिलास मंगवाए होंगे और वेटर को अंदर आने देने के लिए दरवाज़ा खोला होगा।

•

“लाइट मत जलाओ,” एक महिला की आवाज़ आई। यह बेडरूम से आ रही थी। मैंने इसे तुरंत पहचान लिया। यह उसी रहस्यमयी महिला की आवाज़ थी जिसने मुझे अजीबोगरीब कॉल किए थे। मैंने दरवाज़े का हैंडल छोड़ दिया और आवाज़ की तरफ टटोलने लगा। अंदर का कमरा बाहर के कमरे से भी ज़्यादा घना अंधेरा था। मैं दोनों कमरों के बीच के दरवाज़े पर खड़ा हो गया और अँधेरे में देखने की कोशिश करने लगा।

मुझे चादरों के सरकने की आवाज़ सुनाई दी। अंधेरे में एक काली परछाई हिली। "अंधेरा ही रहने दो," महिला की आवाज़ सुनाई दी।
मैंने कहा, "चिंता मत करो। मैं लाइट नहीं जलाऊंगा।"
मैंने दरवाजे के चौखट को मजबूती से पकड़ रखा था।
"क्या आप यहां अकेले आए हैं?" महिला ने थोड़ी थकी हुई आवाज में पूछा।
“बिल्कुल,” मैंने कहा। “मुझे पता था कि मैं तुम्हें यहीं पाऊँगा। तुम या क्रीता कानो। मुझे कुमिको के बारे में जानना ही होगा। मतलब, सब कुछ तुम्हारे उस पहले फ़ोन से शुरू हुआ। तुमने पैंडोरा का पिटारा खोल दिया। फिर एक के बाद एक अजीबोगरीब घटनाएँ होती रहीं, और आखिर में कुमिको गायब हो गई। इसीलिए मैं यहाँ हूँ। अकेला। मुझे नहीं पता तुम कौन हो, लेकिन तुम्हारे पास कोई राज़ ज़रूर है। क्या मैं सही कह रहा हूँ?”
“क्रेता कानो?” महिला ने सतर्क स्वर में पूछा। “मैंने उसका नाम कभी नहीं सुना। क्या वह भी यहाँ है?”
मुझे नहीं पता कि वह कहां है। लेकिन मैं उससे यहां एक से अधिक बार मिल चुका हूं।
हर साँस के साथ फूलों की तेज़ खुशबू आती थी। हवा घनी और भारी थी। इस कमरे में कहीं फूलों से भरा एक गुलदस्ता रखा था। इसी अँधेरे में कहीं वे फूल साँस ले रहे थे, झूम रहे थे। उनकी तीव्र सुगंध से भरे इस अँधेरे में, मैं अपने शरीर का होश खोने लगा। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं एक छोटा सा कीड़ा बन गया हूँ। अब मैं एक विशाल फूल की पंखुड़ियों के बीच अपना रास्ता बना रहा था। चिपचिपा रस, पराग और मुलायम बाल मेरा इंतज़ार कर रहे थे। उन्हें मेरे प्रवेश और मेरी उपस्थिति की ज़रूरत थी।

मैंने उस महिला से कहा, “सबसे पहले तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि आप कौन हैं। आप कहती हैं कि मैं आपको जानता हूँ, और मैंने आपको याद करने की बहुत कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिली। आप कौन हैं?” “मैं कौन हूँ?” महिला ने बिना किसी व्यंग्य के दोहराया। “मुझे एक ड्रिंक चाहिए। दो गिलास बर्फ के साथ डालिएगा? मुझे लगता है आप मेरे साथ पिएंगे?”
मैं लिविंग रूम में वापस गया, व्हिस्की की नई बोतल खोली, गिलासों में बर्फ डाली और दो गिलास भरे। अंधेरे में इसमें काफी समय लग गया। मैं गिलास लेकर बेडरूम में गया। महिला ने मुझे एक गिलास नाइट टेबल पर रखने को कहा। “और तुम बिस्तर के पास वाली कुर्सी पर बैठ जाओ।”
मैंने निर्देशानुसार एक गिलास नाइट टेबल पर रखा और कुछ दूरी पर गद्देदार कुर्सी पर हाथ में गिलास लिए बैठ गया। मेरी आँखें शायद अंधेरे की आदी हो गई थीं। मुझे वहाँ परछाइयाँ हिलती हुई दिखाई दे रही थीं। महिला बिस्तर पर थोड़ी उठी। फिर बर्फ के खनकने की आवाज़ आई जब उसने गिलास पिया। मैंने भी व्हिस्की का एक घूंट लिया।
काफी देर तक वह चुप रही। जैसे-जैसे चुप्पी बढ़ती गई, फूलों की खुशबू और भी तेज होती गई।
“क्या आप सचमुच जानना चाहते हैं कि मैं कौन हूँ?” महिला ने पूछा।
मैंने कहा, "इसीलिए तो मैं यहाँ हूँ," लेकिन मेरी आवाज़ अँधेरे में अस्पष्ट रूप से गूँजी।
"तुम यहाँ खास तौर पर मेरा नाम जानने आए थे, है ना?"
जवाब देने के बजाय, मैंने अपना गला साफ किया, लेकिन इससे भी एक अजीब सी गूंज पैदा हुई।

महिला ने अपने गिलास में बर्फ को कुछ बार हिलाया। उसने कहा, "आप मेरा नाम जानना चाहते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से, मैं आपको अपना नाम नहीं बता सकती। मैं आपको अच्छी तरह जानती हूँ। आप मुझे अच्छी तरह जानते हैं। लेकिन मैं खुद को नहीं जानती।"
मैंने अंधेरे में सिर हिलाया। “मुझे समझ नहीं आ रहा,” मैंने कहा। “और मैं पहेलियों से तंग आ चुका हूँ। मुझे कुछ ठोस चाहिए, जिसे मैं पकड़ सकूँ। पक्के तथ्य। कुछ ऐसा जिसे मैं दरवाजे को खोलने के लिए इस्तेमाल कर सकूँ। मुझे बस यही चाहिए।”
उस औरत ने मानो गहरी आह भरी। “तोरू ओकाडा, मैं चाहती हूँ कि तुम मेरा नाम पता करो। पर नहीं: तुम्हें पता करने की ज़रूरत नहीं है। तुम इसे पहले से ही जानते हो। तुम्हें बस इसे याद रखना है। अगर तुम मेरा नाम पता कर लेते हो, तो मैं यहाँ से निकल सकती हूँ। मैं तुम्हारी पत्नी को ढूंढने में भी तुम्हारी मदद कर सकती हूँ: कुमिको ओकाडा को ढूंढने में तुम्हारी मदद कर सकती हूँ। अगर तुम अपनी पत्नी को ढूंढना चाहते हो, तो मेरा नाम पता करने की पूरी कोशिश करो। यही वह ज़रिया है जो तुम्हें चाहिए। तुम्हारे पास भटकने का समय नहीं है। हर दिन जब तुम इसे ढूंढने में नाकाम रहोगे, कुमिको ओकाडा तुमसे उतनी ही दूर होती जाएगी।”
मैंने अपना व्हिस्की का गिलास ज़मीन पर रख दिया। मैंने कहा, "बताओ, यह जगह कहाँ है? तुम यहाँ कब से हो? तुम यहाँ क्या करते हो?"
“तुम्हें अभी यहाँ से निकलना होगा,” महिला ने कहा, मानो उसे अचानक याद आया हो कि वह क्या कर रही थी। “अगर उसने तुम्हें यहाँ देख लिया, तो मुसीबत हो जाएगी। वह तुम्हारी सोच से भी ज़्यादा खतरनाक है। वह सचमुच तुम्हें मार सकता है। मुझे उससे ऐसी उम्मीद नहीं है।”

“यह ‘वह’ कौन है?”
उस महिला ने कोई जवाब नहीं दिया, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या कहूँ। मैं खोया हुआ महसूस कर रहा था। कमरे में कोई हलचल नहीं थी। सन्नाटा गहरा, घना और घुटन भरा था। मेरा सिर बुखार जैसा लग रहा था। शायद परागकणों की वजह से ऐसा हो रहा था। हवा में मिले हुए सूक्ष्म कण मेरे दिमाग में घुस रहे थे और मेरी नसों को बेकाबू कर रहे थे।
“बताओ, तोरू ओकाडा,” महिला ने कहा, उसकी आवाज़ अचानक बहुत बदल गई थी। उसकी आवाज़ का लहजा पल भर में बदल सकता था। अब वह कमरे की घनी, भारी हवा में घुलमिल गई थी। “क्या तुम कभी सोचते हो कि तुम मुझे फिर से गले लगाना चाहोगे? कि तुम मेरे भीतर आना चाहोगे? कि तुम मुझे हर जगह चूमना चाहोगे? तुम मेरे साथ जो चाहो कर सकते हो, जानते हो। और मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी करूँगी… हर वो चीज़… जो तुम्हारी पत्नी… कुमिको ओकाडा… तुम्हारे लिए कभी नहीं करेगी। मैं तुम्हें इतना अच्छा महसूस कराऊँगी कि तुम इसे कभी नहीं भूलोगे। अगर तुम—”
बिना किसी चेतावनी के, दरवाजे पर दस्तक हुई। यह एक कठोर, सटीक आवाज थी जैसे किसी कील को सीधे अंदर ठोंका जा रहा हो—अंधेरे में एक अशुभ आवाज।
अंधेरे से उस औरत का हाथ निकला और उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। “इधर आओ,” उसने फुसफुसाते हुए कहा। “जल्दी करो।” उसकी आवाज़ में अब वो स्वप्निलता नहीं थी। फिर से दस्तक शुरू हुई: दो बार एक ही ज़ोर से। अचानक मुझे याद आया कि मैंने दरवाज़ा बंद नहीं किया था।
“जल्दी करो,” उसने कहा। “तुम्हें यहाँ से निकलना होगा। यही एकमात्र रास्ता है।”

मैं अंधेरे में आगे बढ़ रहा था और वह महिला मुझे अपने साथ खींच रही थी। मुझे दरवाज़े की मूठ धीरे-धीरे घूमते हुए सुनाई दी। उस आवाज़ से मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। ठीक उसी क्षण जब गलियारे की रोशनी ने अंधेरे को चीरते हुए हमें दीवार के भीतर धकेल दिया, हम दीवार के भीतर चले गए। वह दीवार ठंडी जेली के एक विशाल ढेर जैसी थी; मैंने अपना मुंह कसकर बंद कर लिया ताकि वह अंदर न जाए। मेरे मन में यह विचार आया: मैं दीवार के आर-पार जा रहा हूँ! एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए, मैं एक दीवार के आर-पार जा रहा था। और फिर भी, जब यह हो रहा था, तब भी यह सबसे स्वाभाविक लग रहा था।
मुझे महसूस हुआ कि उस स्त्री की जीभ मेरे मुँह में आ रही है। गर्म और कोमल, वह हर कोने को टटोल रही थी और मेरी जीभ के चारों ओर लिपट रही थी। फूलों की पंखुड़ियों की तेज़ गंध मेरे फेफड़ों में समा गई। कमर में, मुझे स्खलन की एक हल्की सी इच्छा महसूस हुई। आँखें कसकर बंद करके, मैंने उससे लड़ने की कोशिश की। एक पल बाद, मुझे अपने दाहिने गाल पर एक तरह की तीव्र गर्मी महसूस हुई। यह एक अजीब सी अनुभूति थी। मुझे कोई दर्द नहीं हुआ, बस इतना एहसास हुआ कि वहाँ गर्मी है। मैं यह नहीं बता सकता था कि गर्मी बाहर से आ रही थी या मेरे अंदर उबल रही थी। जल्द ही सब कुछ गायब हो गया: उस स्त्री की जीभ, फूलों की गंध, स्खलन की इच्छा, मेरे गाल की गर्मी। और मैं दीवार के पार चला गया। जब मैंने अपनी आँखें खोलीं, तो मैं दीवार के दूसरी तरफ था—एक गहरे कुएँ की तलहटी में।

कुआँ और तारे

•

सीढ़ी कैसे गायब हो गई
सुबह पांच बजे के कुछ ही देर बाद आसमान काफी उजाला हो चुका था, फिर भी मुझे ऊपर बहुत सारे तारे दिखाई दे रहे थे। लेफ्टिनेंट मामिया ने मुझे जैसा बताया था, ठीक वैसा ही था: कुएं की तलहटी से भी दिन के उजाले में तारे दिखाई देते हैं। आसमान के एकदम गोल अर्धचंद्राकार हिस्से में, मंद चमकते तारे ऐसे सलीके से जड़े हुए थे मानो दुर्लभ खनिजों के नमूने हों।
एक बार, जब मैं पाँचवीं या छठी कक्षा में कुछ दोस्तों के साथ पहाड़ की चोटी पर कैंपिंग कर रहा था, तब मैंने इतने सारे तारे देखे थे कि पूरा आकाश भर गया था। ऐसा लग रहा था मानो इतने सारे तारों के भार से आकाश टूटकर नीचे गिर जाएगा। मैंने पहले कभी इतने अद्भुत तारों से भरा आकाश नहीं देखा था। बाकी सब के सो जाने के बाद भी मुझे नींद नहीं आ रही थी, इसलिए मैं तंबू से बाहर निकला और ज़मीन पर लेटकर आकाश को देखने लगा। कभी-कभी कोई टूटता तारा आकाश में एक चमकदार चाप बनाता हुआ दिखाई देता। लेकिन जितनी देर मैं देखता रहा, उतनी ही घबराहट मुझे होने लगी। इतने सारे तारे थे और आकाश इतना विशाल और गहरा था। एक विशाल, शक्तिशाली, अनजान वस्तु की तरह, वह मुझे चारों ओर से घेर रहा था, मुझे अपने आगोश में ले रहा था और मुझे लगभग चक्कर आने जैसा महसूस करा रहा था। उस पल तक, मैं हमेशा यही सोचता था कि जिस धरती पर मैं खड़ा हूँ, वह एक ठोस वस्तु है जो हमेशा रहेगी। या यूँ कहें कि मैंने कभी इस बारे में सोचा ही नहीं था। मैंने इसे बस एक सामान्य बात मान लिया था। लेकिन वास्तव में, पृथ्वी ब्रह्मांड

घुप अंधेरे होटल के कमरे और वहां मौजूद टेलीफोन वाली महिला की याद दिला दी। उसके बोले हुए शब्द—एक-एक शब्द—और दस्तक की आवाज़ अभी भी मेरे कानों में गूंज रही थी। मेरी नाक में फूलों की अजीब सी तेज़ खुशबू अभी भी थी। और नोबोरू वटाया अभी भी टेलीविजन स्क्रीन के दूसरी तरफ से बोल रहे थे। समय बीतने के साथ भी ये यादें धुंधली नहीं हुईं। और ऐसा इसलिए था क्योंकि यह सपना नहीं था, मेरी याददाश्त ने मुझे बताया।
पूरी तरह जागने के बाद भी, मुझे अपने दाहिने गाल में तेज़ गर्मी महसूस हो रही थी। गर्मी के साथ-साथ हल्का दर्द भी हो रहा था, मानो त्वचा को किसी खुरदुरे सैंडपेपर से रगड़ा गया हो। मैंने अपनी एक दिन पुरानी दाढ़ी के ऊपर से हथेली उस जगह पर दबाई, लेकिन इससे गर्मी या दर्द में कोई कमी नहीं आई। अंधेरे में, बिना दर्पण के, मेरे लिए यह देखना असंभव था कि मेरे गाल के साथ क्या हो रहा है।
मैंने हाथ बढ़ाकर दीवार को छुआ, उंगलियों से उसकी सतह को महसूस किया और फिर कुछ देर तक हथेली से उसे दबाए रखा, लेकिन मुझे कुछ भी असामान्य नहीं लगा: यह बस एक साधारण कंक्रीट की दीवार थी। मैंने मुट्ठी बनाई और उस पर कुछ थपथपाहट की। दीवार सख्त, भावहीन और थोड़ी नम थी। मुझे अभी भी वह अजीब, फिसलन भरा एहसास याद था जो मुझे उससे गुजरते समय हुआ था—जैसे जेली के ढेर में सुरंग बना रहा हो।
मैंने अपने थैले में पानी की बोतल ढूंढी और पानी पिया। मुझे पूरा एक दिन हो गया था बिना कुछ खाए। इस ख्याल से ही मुझे तेज़ भूख लगने लगी, लेकिन जल्द ही ये भूख मिटने लगी और एक अजीब सी सुन्नता में समा गई। मैंने अपना हाथ फिर से अपने चेहरे पर रखा और अपनी दाढ़ी की लंबाई नापने की कोशिश की। मेरी ठुड्डी पर अब

कुछ हल नहीं होगा। मैंने सीढ़ी को आखिरी बार कब देखा था? कल देर रात, सोने से ठीक पहले। मैंने यह सुनिश्चित कर लिया था कि वह वहीं है और तभी सोया था। कोई गलती नहीं। मेरे सोते समय सीढ़ी गायब हो गई थी। उसे उखाड़ दिया गया था। ले जाया गया था।
मैंने टॉर्च की स्विच बंद कर दी और दीवार से टिक गया। फिर मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। सबसे पहले मुझे भूख का एहसास हुआ। यह दूर से एक लहर की तरह मेरी ओर आई, बिना आवाज़ किए मुझे पार कर गई और चली गई। उसके चले जाने के बाद, मैं वहाँ खोखला, खाली खड़ा रहा, जैसे किसी जानवर का पेट फट गया हो। शुरुआती घबराहट के बाद, मुझे न तो डर महसूस हुआ और न ही निराशा। अजीब बात है, उस पल मुझे बस एक तरह का समर्पण महसूस हुआ।

•

सपोरो से लौटकर मैंने कुमिको को गले लगाया और उसे दिलासा दिया। वह खोई-खोई और उलझन में थी। उसने काम से छुट्टी ले रखी थी। उसने कहा, "मुझे कल रात बिल्कुल नींद नहीं आई। क्लिनिक में ठीक समय पर जगह खाली थी, इसलिए मैंने खुद ही फैसला कर लिया।" यह कहते हुए वह थोड़ा रोई।
“अब बात खत्म हो गई,” मैंने कहा। “इसके बारे में सोचने का कोई फायदा नहीं। हमने इस पर बात कर ली थी, और यही नतीजा निकला। अगर आपको कुछ और बात करनी है, तो यहीं और अभी कर लीजिए। फिर इसे भूल जाइए। आपने फोन पर कहा था कि आपको मुझसे कुछ कहना है।”
कुमिको ने सिर हिलाया। "छोड़ो," उसने कहा। "तुम सही हो। चलो इसे भूल जाते हैं।"
कुछ समय तक हम अपनी-अपनी जिंदगी जीते रहे, कुमिको के गर्भपात का ज़िक्र तक नहीं किया। लेकिन ऐसा करना आसान नहीं था। हम किसी और ही बात पर चर्चा कर रहे होते, और अचानक हम दोनों चुप हो जाते।

सप्ताहांत में हम फिल्में देखने जाते। अंधेरे में, हम फिल्म पर ध्यान केंद्रित कर रहे होते, लेकिन साथ ही साथ हम उन चीजों के बारे में भी सोच रहे होते जिनका फिल्म से कोई लेना-देना नहीं होता, या फिर हम कुछ भी न सोचकर अपने दिमाग को आराम दे रहे होते। मुझे पता था कि मेरे बगल में बैठी कुमिको किसी और ही बात में डूबी हुई थी। मैं इसे महसूस कर सकती थी।
फिल्म देखने के बाद हम कहीं बीयर या नाश्ता करने चले जाते थे। कभी-कभी हमें समझ नहीं आता था कि क्या बात करें। यह सिलसिला छह हफ़्तों तक चला—बहुत लंबे छह हफ़्ते, जिसके अंत में कुमिको ने मुझसे कहा, “क्या कहते हो, कल हम कहीं घूमने चलें, सिर्फ़ हम दोनों? कल शुक्रवार है: हम रविवार तक छुट्टी ले सकते हैं। लोगों को कभी-कभी इस तरह की चीज़ों की ज़रूरत होती है।”
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं समझ गई कि आप क्या कहना चाह रहे हैं, लेकिन मुझे आश्चर्य है कि क्या मेरे ऑफिस में किसी को यह भी पता है कि छुट्टी क्या होती है।"
"तो फिर छुट्टी ले लो। कह दो कि फ्लू हो गया है या कुछ और। मैं भी ऐसा ही करूंगा।"
हम ट्रेन से कारुइज़ावा गए। मैंने वह जगह इसलिए चुनी क्योंकि कुमिको ने कहा था कि उसे पहाड़ों में कोई शांत जगह चाहिए जहाँ हम जी भर कर घूम सकें। अप्रैल में वहाँ ऑफ-सीज़न था; होटल में सन्नाटा था, ज़्यादातर दुकानें बंद थीं, लेकिन हमें यही तो चाहिए था। हमने सुबह से शाम तक बस हर दिन सैर की।

•

कुमिको को अपने दिल की बात कहने में पूरा डेढ़ दिन लग गया। और जब उसने कह दिया, तो वह होटल के कमरे में बैठकर करीब दो घंटे तक

रोती रही। मैं पूरे समय चुप रहा, बस उसे पकड़े रहा और उसे रोने दिया।
फिर धीरे-धीरे, टुकड़ों-टुकड़ों में, उसने मुझे बातें बताना शुरू किया। गर्भपात के बारे में। उस समय की अपनी भावनाओं के बारे में। अपने गहरे दुख के बारे में। होक्काइडो में मेरे रहते हुए उसने कितना अकेलापन महसूस किया था—और वह जो कुछ भी कर पाई, वह केवल इतना अकेलापन महसूस करते हुए ही कर पाई।
“और मुझे गलत मत समझिए,” उसने अंत में कहा। “मुझे अपने किए पर कोई पछतावा नहीं है। यही एकमात्र रास्ता था। इस बारे में मैं पूरी तरह स्पष्ट हूँ। लेकिन जो बात मुझे सबसे ज्यादा दुख देती है, वह यह है कि मैं आपको सब कुछ बताना चाहती हूँ—बिल्कुल सब कुछ—लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती। मैं आपको ठीक-ठीक नहीं बता सकती कि मैं कैसा महसूस करती हूँ।”
कुमिको ने अपने बालों को ऊपर की ओर धकेला, जिससे उसका छोटा, सुडौल कान दिखाई दिया, और उसने अपना सिर हिलाया।
मैं तुमसे कुछ छिपा नहीं रही हूँ। मैं तुम्हें कभी न कभी ज़रूर बताऊँगी। तुम ही एकमात्र व्यक्ति हो जिसे मैं बता सकती हूँ। लेकिन अभी मैं ऐसा नहीं कर सकती। मैं इसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती।
"क्या यह अतीत से कुछ है?"
नहीं, ऐसा नहीं है।
मैंने कहा, “जितना समय चाहिए ले लो। जब तक तुम तैयार न हो जाओ। समय ही एक ऐसी चीज है जिसकी हमारे पास कोई कमी नहीं है। मैं यहीं तुम्हारे साथ रहूंगा। कोई जल्दी नहीं है। बस एक बात याद रखना: तुम्हारी कोई भी चीज—बिल्कुल कोई भी चीज, जब तक वह तुम्हारी है

— मैं उसे अपना मानूंगा। इस बात की तुम्हें कभी चिंता करने की जरूरत नहीं है।”
“धन्यवाद,” उसने कहा। “मुझे बहुत खुशी है कि मैंने आपसे शादी की।”
लेकिन हमारे पास उतना समय नहीं था जितना मैंने सोचा था। कुमिको आखिर क्या बात थी जिसे वह शब्दों में बयां नहीं कर पा रही थी? क्या इसका उसकी गुमशुदगी से कुछ लेना-देना था? शायद, अगर मैंने तब उससे यह बात निकलवाने की कोशिश की होती, तो मैं उसे आज खोने से बचा सकता था। लेकिन नहीं, मैंने काफी सोच-विचार करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला: मैं उसे कभी मजबूर नहीं कर सकता था। उसने कहा था कि वह इसे शब्दों में बयां नहीं कर सकती। जो भी बात थी, वह उसकी क्षमता से परे थी।

•

“अरे, नीचे! मिस्टर विंड-अप बर्ड!” मेई कासाहारा ने चिल्लाकर कहा। उस समय मैं हल्की नींद में था, इसलिए मुझे लगा कि मैं सपने में यह आवाज़ सुन रहा हूँ। लेकिन यह सपना नहीं था। जब मैंने ऊपर देखा, तो मेई कासाहारा का चेहरा, छोटा और दूर, मेरे सामने था। “मुझे पता है तुम नीचे हो! चलो, मिस्टर विंड-अप बर्ड! मुझे जवाब दो!”
मैंने कहा, "मैं यहाँ हूँ।"
“आखिर किसलिए? तुम वहां नीचे क्या कर रहे हो?”
मैंने कहा, "सोच रहा हूँ।"
मुझे समझ नहीं आता। सोचने के लिए कुएं की तलहटी में क्यों उतरना पड़ता है? यह तो बहुत ही कष्टदायक काम होगा!
“इस तरह आप सच में ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। यहाँ अंधेरा, ठंडक और शांति है।”

"क्या आप ऐसा अक्सर करते हैं?"
“नहीं, ज्यादा नहीं। मैंने अपने जीवन में पहले कभी ऐसा नहीं किया है—इस तरह के कुएं में उतरना।”
“क्या यह काम कर रहा है? क्या इससे आपको सोचने में मदद मिल रही है?”
मुझे अभी पता नहीं है। मैं अभी भी प्रयोग कर रहा हूँ।
उसने अपना गला साफ किया। उसकी आवाज कुएं की तलहटी तक गूंज उठी। “खैर, मिस्टर विंड-अप बर्ड, क्या आपने ध्यान दिया कि सीढ़ी गायब हो गई है?”
“जी हां,” मैंने कहा। “कुछ देर पहले।”
"क्या आपको पता था कि इसे मैंने ही उखाड़ा था?"
नहीं, मुझे यह बात नहीं पता थी।
"अच्छा, आपके हिसाब से यह किसने किया?"
मैंने ईमानदारी से कहा, "मुझे पता नहीं था। मैं इसे कैसे कहूँ, यह बात मुझे समझ नहीं आ रही, लेकिन यह ख्याल मेरे मन में कभी आया ही नहीं कि किसी ने इसे चुरा लिया होगा। सच कहूँ तो, मुझे लगा कि यह बस गायब हो गया।"
मेई कासाहारा चुप हो गई। फिर, अपनी आवाज़ में सावधानी का भाव लिए, मानो उसे लगा हो कि मेरे शब्दों में उसके लिए कोई जाल छिपा है, उसने कहा, "बस गायब हो गई। हम्म। तुम्हारा मतलब क्या है, 'बस गायब हो गई'? कि, अपने आप ही, वह... बस... गायब हो गई?"
"शायद ऐसा हो।"
"जानते हो, मिस्टर विंड-अप बर्ड, अभी इस बारे में बात करना थोड़ा अजीब लग रहा है, लेकिन तुम वाकई बहुत अजीब हो। तुम्हारे जैसे अजीब लोग बहुत कम हैं। क्या तुम्हें यह पता है?"
मैंने कहा, "मैं खुद को इतना अजीब नहीं समझता।"

"तो फिर आपको ऐसा क्यों लगता है कि सीढ़ियाँ यूँ ही गायब हो सकती हैं?"
मैंने अपने दोनों हाथों से अपना चेहरा रगड़ा और मेई कासाहारा के साथ हो रही इस बातचीत पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की। "तुमने ही इसे ऊपर खींचा था, है ना?"
“बिल्कुल मैंने किया। यह पता लगाने के लिए ज्यादा दिमाग लगाने की जरूरत नहीं है। मैंने ही किया। मैं रात में चुपके से बाहर निकला और सीढ़ी ऊपर खींच ली।”
"लेकिन क्यों?"
“क्यों नहीं? तुम्हें पता है कल मैं तुम्हारे घर कितनी बार गया था? मैं चाहता था कि तुम मेरे साथ फिर से काम पर चलो। ज़ाहिर है, तुम वहाँ नहीं थे। फिर मुझे रसोई में तुम्हारा वो नोट मिला। तो मैंने बहुत देर तक इंतज़ार किया, लेकिन तुम वापस नहीं आए। तो फिर मैंने सोचा कि शायद तुम फिर से उस खाली घर में होगे। मुझे कुएँ का ढक्कन आधा खुला और सीढ़ी लटकी हुई मिली। फिर भी, मेरे मन में कभी ये ख्याल नहीं आया कि तुम वहाँ नीचे हो सकते हो। मैंने बस यही सोचा कि कोई मज़दूर या कोई और वहाँ गया होगा और अपनी सीढ़ी वहीं छोड़ गया होगा। मतलब, सोचने के लिए कितने लोग कुएँ की तलहटी में जाकर बैठते हैं?”
मैंने कहा, "आपकी बात में दम है।"
खैर, फिर मैं रात में चुपके से निकलकर तुम्हारे घर गया, लेकिन तुम वहाँ नहीं थे। तभी मेरे दिमाग में यह बात आई कि शायद तुम कुएँ में होगे। मुझे यह तो पता नहीं था कि तुम वहाँ क्या कर रहे होगे, लेकिन जैसा कि मैंने कहा, तुम थोड़े अजीब हो। मैं कुएँ के पास गया और सीढ़ी ऊपर खींच ली। मुझे यकीन है कि इससे तुम चौंक गए होगे।

"हां आप ठीक कह रहे हैं।"
"क्या आपके पास नीचे खाने-पीने के लिए कुछ है?"
“थोड़ा पानी। मैं खाने का सामान नहीं लाया। लेकिन मेरे पास तीन लेमन ड्रॉप्स हैं।”
आप वहां कितने समय से हैं?
"कल सुबह से ही।"
"तुम्हें भूख लगी होगी।"
"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"
"क्या आपको पेशाब करने या किसी और काम से नहीं जाना है?"
अब जब उसने इस बारे में बताया, तो मुझे एहसास हुआ कि यहाँ आने के बाद से मैंने एक बार भी पेशाब नहीं किया था। "सच में नहीं," मैंने कहा। "मैं ज़्यादा खा-पी नहीं रहा हूँ।"
"सुनो, मिस्टर विंड-अप बर्ड, जानते हो क्या? मेरी मनोदशा के अनुसार, तुम वहाँ नीचे मर भी सकते हो। सिर्फ़ मुझे पता है कि तुम अंदर हो, और मैंने ही रस्सी की सीढ़ी छुपाई है। क्या तुम्हें इस बात का एहसास है? अगर मैं यहाँ से चली जाऊँ, तो तुम्हारी मौत पक्की है। तुम चिल्ला सकते हो, लेकिन कोई नहीं सुनेगा। किसी को नहीं लगेगा कि तुम कुएँ की तलहटी में हो। मुझे यकीन है कि किसी को पता भी नहीं चलेगा कि तुम गायब हो गए हो। तुम किसी कंपनी में काम नहीं करते, और तुम्हारी पत्नी भाग गई है। मुझे लगता है कि किसी को कभी न कभी पता चल ही जाएगा कि तुम गायब हो और पुलिस को सूचना दे देगा, लेकिन तब तक तुम मर चुके होगे, और पुलिस को तुम्हारा शव कभी नहीं मिलेगा।"
मुझे पूरा यकीन है कि आप सही कह रहे हैं। आपकी मनोदशा के आधार पर, मैं यहीं मर भी सकता हूँ।
"आप इस बारे में कैसे महसूस करते हैं?"

मैंने कहा, "डरा हुआ हूँ।"
“तुम डरे हुए नहीं लग रहे हो।”
मैं अब भी अपने गाल मल रही थी। ये मेरे हाथ और मेरे गाल थे। अंधेरे में मैं उन्हें देख नहीं पा रही थी, लेकिन वे अब भी यहीं थे: मेरा शरीर अब भी मौजूद था। "ऐसा इसलिए है क्योंकि मुझे अभी तक पूरी तरह से समझ नहीं आया है," मैंने कहा।
“हाँ, मेरे साथ तो ऐसा ही हुआ है,” मेई कासाहारा ने कहा। “मुझे यकीन है कि किसी को मारना उतना मुश्किल नहीं है जितना लोग सोचते हैं।”
"शायद यह विधि पर निर्भर करता है।"
“ये तो कितना आसान होगा! मुझे बस तुम्हें वहीं छोड़ देना होगा। मुझे कुछ भी नहीं करना पड़ेगा। सोचो ज़रा, मिस्टर विंड-अप बर्ड। कल्पना करो कि तुम कितना कष्ट सहोगे, धीरे-धीरे भूख और प्यास से मरते हुए, अंधेरे में। ये आसान नहीं होगा।”
मैंने कहा, "मुझे पूरा यकीन है कि आप सही हैं।"
"क्या आपको सच में मुझ पर विश्वास है, मिस्टर विंड-अप बर्ड? आपको लगता है कि मैं इतना क्रूर काम नहीं कर सकता?"
मैंने कहा, "मुझे सच में नहीं पता। ऐसा नहीं है कि मुझे लगता है कि तुम यह कर सकते हो या नहीं। कुछ भी हो सकता है। संभावना तो है। यही मेरा मानना है।"
“मैं संभावना की बात नहीं कर रही,” उसने बेहद ठंडे स्वर में कहा। “अरे, मेरे पास एक विचार है। अभी-अभी मेरे दिमाग में आया। आपने सोचने के लिए इतनी मेहनत करके नीचे उतरने का फैसला किया। क्यों न मैं इसे ठीक कर दूं ताकि आप अपने विचारों पर और भी बेहतर ध्यान केंद्रित कर सकें?”
मैंने पूछा, "तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?"

“□□□□? □□□,” □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□

मे कासाहारा मृत्यु और विकास पर

•

वह चीज़ जो कहीं और बनी है
मैं घोर अंधेरे में दुबका हुआ था। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। और मैं भी उसी सन्नाटे का हिस्सा था। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने दिल की धड़कन, अपने शरीर में दौड़ते खून की आवाज़, अपने फेफड़ों की धौंकनी जैसी सिहरन, और भूख से बेहाल अपनी आंतों की धीमी हलचल को सुना। गहरे अंधेरे में, हर हरकत, हर धड़कन बहुत तेज़ सुनाई दे रही थी। यही मेरा शरीर था: मेरा मांस। लेकिन अंधेरे में, यह सब कुछ बहुत ही कच्चा और शारीरिक था। जल्द ही मेरा चेतन मन मेरे भौतिक शरीर से अलग होने लगा।
मैंने खुद को उस चाबी से चलने वाली चिड़िया के रूप में देखा, जो गर्मियों के आकाश में उड़ती हुई, कहीं किसी विशाल पेड़ की शाखा पर आकर बैठती है और दुनिया की धुरी को घुमाती है। अगर सचमुच वह चाबी से चलने वाली चिड़िया नहीं रही, तो किसी को उसका काम संभालना होगा। किसी को उसकी जगह दुनिया की धुरी को घुमाना होगा। नहीं तो, धुरी सूख जाएगी और नाजुक ढंग से काम करने वाली यह व्यवस्था ठप हो जाएगी। लेकिन ऐसा लगता था कि चाबी से चलने वाली चिड़िया के चले जाने का एहसास सिर्फ मुझे ही हुआ था।
मैंने पूरी कोशिश की कि चाबी से चलने वाली चिड़िया की आवाज़ की नकल कर सकूँ। लेकिन यह कारगर नहीं हुआ। मेरे मुँह से बस एक अर्थहीन, भद्दी सी आवाज़ निकली, मानो दो अर्थहीन, भद्दी चीज़ों को आपस में रगड़ा जा रहा हो। ऐसी आवाज़ तो सिर्फ़ असली चाबी से चलने वाली चिड़िया ही निकाल सकती है। दुनिया की स्प्रिंग को

सही तरीके से घुमाना सिर्फ़ चाबी से चलने वाली चिड़िया का ही काम है।
फिर भी, एक मूक, चाबी भरने वाले पक्षी की तरह, जो दुनिया की स्प्रिंग को घुमा नहीं सकता था, मैंने गर्मियों के आकाश में उड़ने का फैसला किया—जो काफी आसान निकला। एक बार ऊपर पहुँचने के बाद, दिशा और ऊँचाई को समायोजित करने के लिए बस अपने पंखों को सही कोण पर फड़फड़ाना होता था। मेरे शरीर ने पल भर में यह कला सीख ली और मुझे जहाँ भी जाना होता, आसानी से उड़ा ले जाता था। मैंने दुनिया को चाबी भरने वाले पक्षी के नज़रिए से देखा। जब भी मेरी उड़ान थम जाती, मैं किसी पेड़ की शाखा पर बैठ जाता और हरी पत्तियों के बीच से छतों और सड़कों को देखता। मैंने लोगों को ज़मीन पर चलते-फिरते, जीवन के कार्यों को करते देखा। दुर्भाग्य से, मैं अपना शरीर नहीं देख पा रहा था। ऐसा इसलिए था क्योंकि मैंने चाबी भरने वाले पक्षी को कभी नहीं देखा था और मुझे पता ही नहीं था कि वह कैसा दिखता है।
बहुत लंबे समय तक—कितना लंबा समय रहा होगा?—मैं चाबी से चलने वाली चिड़िया बना रहा। लेकिन चाबी से चलने वाली चिड़िया बनकर मैं कहीं नहीं पहुँच पाया। उड़ना तो मज़ेदार था, लेकिन मैं हमेशा के लिए मज़े नहीं कर सकता था। कुएँ की तलहटी में, इस अँधेरे में, मुझे कुछ हासिल करना था। मैंने चाबी से चलने वाली चिड़िया बनना छोड़ दिया और वापस अपने असली रूप में लौट आया।

•

मेई कासाहारा ने तीन बजे के कुछ देर बाद दूसरी बार दौरा किया। दोपहर के तीन बज रहे थे। जब उसने कुएँ का आधा हिस्सा खोला, तो ऊपर से तेज़ रोशनी अंदर आ गई—गर्मी के दिन की चकाचौंध भरी रोशनी। अपनी आँखों को बचाने के लिए, जो अब घोर अंधेरे की आदी हो

चुकी थीं, मैंने उन्हें बंद कर लिया और कुछ देर के लिए अपना सिर नीचे झुकाए रखा। ऊपर की रोशनी के ख्याल मात्र से ही मेरी आँखों से आँसू बहने लगे।
“नमस्कार, मिस्टर विंड-अप बर्ड,” मेई कासाहारा ने कहा। “क्या आप अभी भी जीवित हैं? मिस्टर विंड-अप बर्ड? अगर आप जीवित हैं तो जवाब दीजिए।”
मैंने कहा, "मैं जीवित हूँ।"
"तुम्हें भूख लगी होगी।"
"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"
“अभी भी बस ‘मुझे लगता है’? तो फिर भूख से मरने में अभी काफी समय लगेगा। भूखे लोग इतनी आसानी से नहीं मरते, बशर्ते उनके पास पानी हो।”
“शायद यह सच है,” मैंने कहा, मेरी आवाज़ में मौजूद अनिश्चितता कुएँ में गूँज उठी। गूँज ने शायद मेरी आवाज़ में छिपी किसी भी बात को और भी स्पष्ट कर दिया।
“मुझे पता है यह सच है,” मेई कासाहारा ने कहा। “मैंने आज सुबह पुस्तकालय में थोड़ी सी खोजबीन की। भूख और प्यास के बारे में। क्या आपको पता है, मिस्टर विंड-अप बर्ड, रूसी क्रांति के दौरान कोई व्यक्ति इक्कीस दिनों तक ज़मीन के नीचे रहा था?”
मैंने कहा, "सच में!"
उन्हें बहुत कष्ट सहना पड़ा होगा।
"हाँ सच में।"
“वह बच तो गया, लेकिन उसके सारे बाल और दांत झड़ गए। सब कुछ। अगर वह जीवित भी रहता, तो भी यह बहुत भयानक रहा होगा।”
"हाँ सच में।"

"भले ही आपके दांत और बाल झड़ जाएं, फिर भी अगर आपके पास एक अच्छी विग और नकली दांत हों तो आप काफी सामान्य जीवन जी सकते हैं।" "हां, और रूसी क्रांति के बाद से विग और कृत्रिम दांतों के निर्माण में भी काफी प्रगति हुई है। इससे शायद चीजें थोड़ी आसान हो जाएंगी।"
“आप जानते हैं, मिस्टर विंड-अप बर्ड…,” मे कासाहारा ने गला साफ करते हुए कहा।
"क्या?"
अगर लोग हमेशा जीवित रहते—अगर वे कभी बूढ़े न होते—अगर वे इस दुनिया में बिना मरे, हमेशा स्वस्थ रहते हुए जीते रहते—तो क्या आपको लगता है कि वे चीजों के बारे में गहराई से सोचते, जैसे हम अभी सोचते हैं? मेरा मतलब है, हम लगभग हर चीज के बारे में सोचते हैं—दर्शन, मनोविज्ञान, तर्क, धर्म, साहित्य। मुझे लगता है कि अगर मृत्यु जैसी कोई चीज ही न होती, तो इस तरह के जटिल विचार और अवधारणाएँ कभी दुनिया में आती ही नहीं। मेरा मतलब है—”
मेई कासाहारा ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी और कुछ देर चुप रही, इस दौरान उसका "मेरा मतलब है" कुएँ के अँधेरे में अधूरे विचारों के टुकड़े की तरह गूंजता रहा। शायद उसमें आगे बोलने की हिम्मत नहीं बची थी। या शायद उसे आगे क्या कहना है, यह सोचने के लिए समय चाहिए था। मैं चुपचाप उसके बोलने का इंतज़ार करता रहा, मेरा सिर पहले की तरह झुका हुआ था। मेरे मन में यह ख्याल आया कि अगर मेई कासाहारा मुझे तुरंत मारना चाहती, तो उसके लिए यह कोई बड़ी बात नहीं होती। वह बस कुएँ में एक बड़ा पत्थर फेंक सकती थी। अगर वह कुछ बार कोशिश करती, तो एक पत्थर ज़रूर मेरे सिर पर लगता। “मेरा मतलब है… मैं तो यही सोचता हूँ, लेकिन… लोगों को गंभीरता से सोचना चाहिए कि उनके लिए अभी और यहाँ जीवित रहने का क्या

अर्थ है, क्योंकि वे जानते हैं कि उन्हें एक दिन मरना है। है ना? अगर कोई हमेशा के लिए जीवित ही रहने वाला है, तो वह जीवित रहने के अर्थ के बारे में क्यों सोचेगा? उन्हें क्यों परवाह करनी चाहिए? या अगर उन्हें परवाह करनी भी चाहिए, तो वे शायद यही सोचेंगे, ‘अरे, मेरे पास इसके लिए बहुत समय है। मैं इसके बारे में बाद में सोच लूँगा।’ लेकिन हम बाद तक इंतज़ार नहीं कर सकते। हमें अभी इसी वक्त इसके बारे में सोचना होगा। हो सकता है कल दोपहर मुझे कोई ट्रक कुचल दे। और आप, मिस्टर विंड-अप बर्ड: हो सकता है आप भूख से मर जाएँ। तीन दिन बाद एक सुबह, आप किसी कुएँ की तलहटी में मृत पड़े हों। देखा? कोई नहीं जानता कि क्या होने वाला है। इसलिए हमें विकसित होने के लिए मृत्यु की आवश्यकता है। मैं यही सोचता हूँ। मृत्यु एक विशाल, चमकदार चीज़ है, और यह जितनी विशाल और चमकदार होती है, उतना ही हम इसके बारे में सोचकर खुद को पागल कर लेते हैं।”
कुछ देर का विराम रहा।
“बताइए, श्रीमान विंड-अप बर्ड…”
"क्या?"
"क्या तुम उस अंधेरे में नीचे अपनी मृत्यु के बारे में सोच रहे हो? कि तुम वहाँ नीचे कैसे मरोगे?"
मैंने उसके सवाल पर सोचने के लिए कुछ पल लिए। "नहीं," मैंने कहा। "यह एक ऐसी बात है जिसके बारे में मैंने सोचा ही नहीं है।" “क्यों नहीं?” मेई कासाहारा ने घृणा भरे लहजे में पूछा, मानो वह किसी विकृत जानवर से बात कर रही हो। “तुमने इसके बारे में क्यों नहीं सोचा? तुम सचमुच मौत के मुंह में हो। मैं मजाक नहीं कर रही। मैंने तुम्हें पहले भी बताया है, तुम्हारा जीना और मरना मेरे हाथ में है।”

मैंने कहा, "तुम एक पत्थर गिरा सकते हो।"
“एक चट्टान? तुम किस बारे में बात कर रहे हो?”
तुम एक बड़ा पत्थर ढूंढकर मुझ पर गिरा सकते हो।
“हाँ, ज़रूर, मैं ऐसा कर सकती हूँ।” लेकिन उसे यह विचार पसंद नहीं आया। “खैर, मिस्टर विंड-अप बर्ड, आप ज़रूर भूखे मर रहे होंगे। हालत और भी बदतर होती जाएगी। और आपका पानी भी खत्म हो जाएगा। तो आप मौत के बारे में क्यों नहीं सोच रहे? क्या आपको यह अजीब नहीं लगता?”
“हाँ, मुझे लगता है यह थोड़ा अजीब है,” मैंने कहा। “लेकिन मैं पूरे समय दूसरी बातों के बारे में सोच रहा था। जब मुझे बहुत भूख लगने लगेगी, तो शायद मैं मौत के बारे में भी सोचूंगा। मेरे मरने से पहले अभी भी तीन हफ्ते बाकी हैं, है ना?”
“अगर आपके पास पानी हो तो,” मे कासाहारा ने कहा। “उस रूसी आदमी के साथ भी यही हुआ था। वह कोई बड़ा ज़मींदार था। क्रांतिकारी गार्ड ने उसे एक पुरानी खदान में फेंक दिया, लेकिन दीवार से पानी रिस रहा था, इसलिए उसने उसे चाटकर खुद को ज़िंदा रखा। वह घोर अंधेरे में था, बिल्कुल आपकी तरह। लेकिन आपके पास ज़्यादा पानी तो नहीं है, है ना?”
“नहीं,” मैंने ईमानदारी से कहा। “बस थोड़ा सा बचा है।”
“तो फिर आपको इसके साथ सावधानी बरतनी चाहिए,” मेई कासाहारा ने कहा। “थोड़े-थोड़े घूंट करके पियो। और आराम से सोचो। मृत्यु के बारे में। इस बारे में कि तुम कैसे मर रहे हो। तुम्हारे पास अभी भी बहुत समय है।”
“तुम मुझे मौत के बारे में सोचने पर इतना क्यों तुले हो? इसमें तुम्हारा क्या फायदा है?”

“इसमें मेरा कोई स्वार्थ नहीं है,” मेई कासाहारा ने पलटवार करते हुए कहा। “तुम्हें क्या लगता है कि तुम्हारे अपनी मौत के बारे में सोचने से मुझे कोई फायदा होगा? ये तुम्हारी ज़िंदगी है। इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है। मैं तो बस… दिलचस्पी ले रही हूँ।”
"जिज्ञासा से बाहर?"
“हाँ। जिज्ञासा। लोग कैसे मरते हैं, मरने पर कैसा महसूस होता है, इस बारे में जिज्ञासा।”
मेई कासाहारा चुप हो गईं। बातचीत खत्म होते ही मेरे आस-पास गहरी खामोशी छा गई, मानो इसी मौके का इंतज़ार कर रही हो। मैं अपना चेहरा ऊपर उठाकर देखना चाहती थी। यह देखने के लिए कि क्या मेई कासाहारा यहाँ से दिखाई दे रही हैं। लेकिन रोशनी बहुत तेज़ थी। मुझे यकीन था कि इससे मेरी आँखें जल जाएँगी।
मैंने कहा, "मुझे तुम्हें कुछ बताना है।"
ठीक है। बताओ।
मैंने कहा, “मेरी पत्नी का एक प्रेमी था। कम से कम मुझे तो पक्का यकीन है। मुझे कभी पता नहीं चला, लेकिन कई महीनों तक, जब वह मेरे साथ रहती थी, वह उस आदमी के साथ सो रही थी। पहले तो मुझे यकीन ही नहीं हुआ, लेकिन जितना मैंने इसके बारे में सोचा, उतना ही मुझे यकीन होता गया। अब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे कई छोटे-छोटे संकेत दिखते हैं। वह अजीब समय पर घर आती थी, या जब मैं उसे छूता था तो वह सहम जाती थी। लेकिन मैं उन संकेतों को समझ नहीं पाया। मुझे उस पर भरोसा था। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि उसका किसी के साथ अफेयर होगा। यह बात मेरे दिमाग में कभी आई ही नहीं।”
“वाह,” मेई कासाहारा ने कहा।

“फिर एक दिन वो घर से निकल गई और कभी वापस नहीं आई। उस सुबह हमने साथ में नाश्ता किया था। वो अपने रोज़ाना के कपड़ों में काम पर चली गई। उसके पास बस उसका हैंडबैग था, और उसने लॉन्ड्री से एक ब्लाउज़ और स्कर्ट ली थी। बस इतना ही। कोई अलविदा नहीं, कोई नोट नहीं। कुछ नहीं। कुमिको चली गई। अपना सारा सामान—कपड़े और सब कुछ—छोड़कर चली गई। और शायद वो कभी वापस यहाँ—मेरे पास—नहीं आएगी। कम से कम अपनी मर्ज़ी से तो नहीं। इतना तो मुझे पता है।” "क्या आपको लगता है कि कुमिको अब दूसरे लड़के के साथ है?"
“मुझे नहीं पता,” मैंने सिर हिलाते हुए कहा। जैसे-जैसे मेरा सिर धीरे-धीरे हवा में घूमता गया, आसपास की हवा किसी भारी पानी जैसी महसूस हुई, हालांकि उसमें पानी का एहसास नहीं था। “शायद वे साथ हैं।”
"और अब तुम कुचल गए हो, मिस्टर विंड-अप बर्ड, और इसीलिए तुम कुएं में गिर गए।"
“जब मुझे पता चला कि क्या हो रहा है, तो मैं सचमुच टूट गया था। लेकिन मैं यहाँ इसलिए नहीं आया हूँ। मैं सच्चाई से मुंह नहीं मोड़ रहा हूँ। जैसा कि मैंने पहले कहा, मुझे एक ऐसी जगह चाहिए थी जहाँ मैं अकेला रह सकूँ और अपने विचारों पर ध्यान केंद्रित कर सकूँ। कुमिको के साथ मेरा रिश्ता कहाँ और कैसे बिगड़ गया? यही बात मुझे समझ नहीं आ रही है। ऐसा नहीं है कि मैं कह रहा हूँ कि उस समय तक सब कुछ ठीक था। बीस साल की उम्र के दो लड़के और लड़कियाँ, दो अलग-अलग व्यक्तित्वों वाले, कहीं मिलते हैं और साथ रहने लगते हैं। ऐसा कोई विवाहित जोड़ा नहीं होता जिसे परेशानियाँ न हों। लेकिन मुझे लगा कि हम ठीक-ठाक चल रहे हैं, छोटी-मोटी समस्याएँ समय के साथ अपने आप सुलझ जाएँगी। लेकिन मैं गलत था। मैं कुछ

बहुत बड़ी बात भूल रहा था, शायद बहुत ही बुनियादी स्तर पर कोई गलती कर रहा था। मैं इसी बारे में सोचने के लिए यहाँ आया हूँ।” मेई कासाहारा ने कुछ नहीं कहा। मैंने एक बार निगल लिया।
“मुझे आश्चर्य है कि क्या यह बात आपको समझ में आएगी: जब हमारी शादी छह साल पहले हुई थी, तब हम दोनों एक नई दुनिया बनाने की कोशिश कर रहे थे—जैसे किसी खाली ज़मीन पर नया घर बनाना। हमारे मन में एक स्पष्ट छवि थी कि हम क्या चाहते हैं। हमें कोई आलीशान घर या ऐसी कोई चीज़ नहीं चाहिए थी, बस मौसम से बचाव के लिए कुछ चाहिए था, बस हम दोनों साथ रह सकें। हमें किसी अतिरिक्त चीज़ की ज़रूरत नहीं थी। फालतू चीज़ें तो बस रुकावट पैदा करतीं। हमें सब कुछ बहुत सरल लग रहा था। क्या आपको कभी ऐसा महसूस हुआ है—कि आप किसी दूसरी जगह जाना चाहते हैं और एक बिल्कुल अलग इंसान बनना चाहते हैं?”
“बिल्कुल,” मेई कासाहारा ने कहा। “मुझे तो हमेशा ऐसा ही लगता है।”
“दरअसल, शादी के बाद हम यही करने की कोशिश कर रहे थे। मैं अपने आप से बाहर निकलना चाहता था: उस 'मैं' से जो अब तक मेरे अंदर मौजूद था। और कुमिको के लिए भी यही बात थी। हमारी उस नई दुनिया में, हम अपने नए स्वरूप को खोजने की कोशिश कर रहे थे जो हमारे भीतर गहराई से बसे हुए स्वरूप के लिए ज़्यादा उपयुक्त था। हमें विश्वास था कि हम उस तरह से जी सकते हैं जो हमारे वास्तविक स्वरूप के लिए ज़्यादा उपयुक्त हो।”
प्रकाश में मेई कासाहारा का संतुलन कुछ बदल गया। मैं उसकी हलचल महसूस कर सकता था। ऐसा लग रहा था जैसे वह मेरे बोलने का इंतज़ार कर रही हो। लेकिन उस समय मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं था। कुछ

समझ नहीं आ रहा था। कुएँ की कंक्रीट की नली में अपनी ही आवाज़ सुनकर मैं थक गया था।
मैंने पूछा, "क्या यह बात तुम्हें समझ में आई?"
"बिल्कुल करता है।"
"आप इसके बारे में क्या सोचते हैं?"
“अरे, मैं तो अभी बच्चा हूँ, तुम्हें पता है। मुझे शादी के बारे में कुछ नहीं पता। मुझे नहीं पता तुम्हारी पत्नी के मन में क्या चल रहा था जब उसने किसी दूसरे आदमी के साथ चक्कर चलाना शुरू किया या जब उसने तुम्हें छोड़ दिया। लेकिन तुमने अभी जो बताया, उससे तो मुझे लगता है कि तुम्हारी सोच शुरू से ही गलत थी। समझ रहे हो ना, मिस्टर विंड-अप बर्ड? तुम अभी जिस बारे में बात कर रहे थे... मुझे नहीं पता, किसी के लिए भी ऐसा करना नामुमकिन है, जैसे, ‘ओह! अब मैं एक नई दुनिया बनाऊँगा’ या ‘ओह! अब मैं एक नया रूप बनाऊँगा’। मुझे तो यही लगता है। तुम्हें लग सकता है तुमने एक नई दुनिया या एक नया रूप बना लिया है, लेकिन तुम्हारा पुराना रूप हमेशा अंदर ही अंदर मौजूद रहेगा, बस सतह के नीचे, और अगर कुछ हुआ तो वो अपना सिर बाहर निकालकर कहेगा ‘हाय’। तुम्हें शायद यह एहसास नहीं है। तुम्हारा जन्म कहीं और हुआ था। और खुद को फिर से बनाने का तुम्हारा ये विचार भी: वो भी कहीं और बना था। इतना तो मुझे भी पता है, मिस्टर विंड-अप बर्ड।” आप तो बड़े हो चुके हैं, है ना? फिर भी आपको यह बात समझ क्यों नहीं आती? मेरे हिसाब से यह एक बड़ी समस्या है। और इसी बात की सज़ा आपको मिल रही है—कई तरह से: उस दुनिया से जिससे आप छुटकारा पाना चाहते थे, या उस खुद से जिससे आप छुटकारा पाना चाहते थे। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? मैं चुपचाप अपने पैरों को घेरे हुए अंधेरे को घूरता रहा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ।

“ठीक है, मिस्टर विंड-अप बर्ड,” उसने धीरे से कहा। “आप आगे बढ़िए और सोचिए। सोचिए। सोचिए।”
ढक्कन अपनी जगह पर बंद हो गया, और कुएं का मुँह एक बार फिर अवरुद्ध हो गया।

•

मैंने अपने थैले से पानी की बोतल निकाली और उसे हिलाया। हल्की छप-छप की आवाज़ अँधेरे में गूँजी। शायद एक चौथाई ही बचा था। मैंने अपना सिर दीवार से टिकाया और आँखें बंद कर लीं। मे कासाहारा शायद सही थीं। यह व्यक्ति, यह मैं, अंततः, कहीं और बना था। सब कुछ कहीं और से आया था, और सब कुछ कहीं और ही जाएगा। मैं उस व्यक्ति के लिए एक मार्ग मात्र थी जिसे मैं के नाम से जाना जाता था।
मुझे भी इतना तो पता है, मिस्टर विंड-अप बर्ड। आपको समझ क्यों नहीं आता?

भूख एक पीड़ा के रूप में

•

कुमिको का लंबा पत्र

•

पक्षी पैगंबर के रूप में
मैं कुछ बार सो गया और उतनी ही बार जाग भी गया। ये नींद के छोटे- छोटे, अशांत टुकड़े थे, जैसे हवाई जहाज में होते हैं। जब भी गहरी नींद आने वाली होती, मैं सिकुड़कर जाग जाता; जब भी पूरी तरह जागने वाला होता, मैं फिर से सो जाता, यह सिलसिला बार-बार चलता रहा। रोशनी में कोई बदलाव न होने के कारण, समय एक ढीले धुरी वाले रथ की तरह डगमगाता रहा। मेरी तंग, अप्राकृतिक मुद्रा मेरे शरीर से आराम को धीरे-धीरे, जमा करती हुई मात्रा में छीन रही थी। हर बार जागने पर, मैं अपनी घड़ी में समय देखता। इसकी गति भारी और अनियमित थी।
कुछ और करने को न होने पर, मैं टॉर्च उठाता और उसे बेतरतीब ढंग से चमकाता—ज़मीन पर, दीवारों पर, कुएँ के ढक्कन पर। मुझे वहाँ हमेशा वही ज़मीन, वही दीवारें, वही कुएँ का ढक्कन दिखाई देता। हिलती हुई रोशनी से पड़ने वाली परछाइयाँ हिलतीं, फैलतीं और सिकुड़तीं, फूलतीं और सिकुड़तीं। जब मैं इससे ऊब जाता, तो मैं अपना चेहरा टटोलने में समय बिताता, हर रेखा और दरार को टटोलता, अपने चेहरे की बनावट को नए सिरे से समझने की कोशिश करता। इससे पहले मैंने कभी अपने कानों की बनावट पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया था। अगर कोई मुझसे मेरे कानों का चित्र बनाने को कहता— यहाँ तक कि एक मोटा-मोटा रेखाचित्र भी—तो मैं असमंजस में पड़ जाता। लेकिन अब, मैं हर गड्ढे और वक्र को सटीक रूप से बना सकता

था। मुझे यह अजीब लगता था कि कान कितने अलग थे। मुझे नहीं पता था कि ऐसा कैसे हुआ या इस विषमता का क्या प्रभाव हो सकता है (शायद कुछ प्रभाव तो होता ही था)।
मेरी घड़ी की सुइयाँ सात बजकर अट्ठाईस मिनट दिखा रही थीं। यहाँ आने के बाद से मैंने अपनी घड़ी को लगभग दो हज़ार बार देखा होगा। अब रात के सात बजकर अट्ठाईस मिनट हो चुके थे, यह तो निश्चित था; किसी खेल में, यह तीसरे इनिंग का आखिरी या चौथे इनिंग का आखिरी समय होता। जब मैं बच्चा था, तो मुझे आउटफील्ड स्टैंड में ऊपर बैठकर गर्मी के दिन को खत्म होने से रोकने का बहुत शौक था। सूरज पश्चिमी क्षितिज के नीचे डूब चुका था, लेकिन उसकी चमक अभी भी बहुत खूबसूरत थी। स्टेडियम की बत्तियाँ मैदान पर अपनी लंबी परछाइयाँ फैला रही थीं, मानो किसी बात का इशारा कर रही हों। खेल शुरू होने के कुछ ही देर बाद, पहले एक और फिर दूसरी बत्ती अत्यंत सावधानी से जलाई जाती। फिर भी, अखबार पढ़ने के लिए आसमान में पर्याप्त रोशनी थी। दिन की उस लंबी चमक की याद दरवाजे पर ही टिकी हुई थी, ताकि गर्मी की रात अंदर न आ सके।
धैर्य और लगन से, कृत्रिम रोशनी धीरे-धीरे सूर्य के प्रकाश पर विजय प्राप्त कर रही थी, जिससे उत्सव के रंगों की बाढ़ सी आ गई। खेल के मैदान का चमकीला हरा रंग, सुंदर काली मिट्टी, उस पर खींची गई सीधी सफेद रेखाएँ, अपनी बारी का इंतजार कर रहे खिलाड़ियों के बल्लों पर चमकती पॉलिश, प्रकाश की किरणों में तैरता सिगरेट का धुआँ (शांत दिनों में, ऐसा लगता था मानो कोई आत्मा किसी आश्रयदाता की तलाश में भटक रही हो)—ये सब अद्भुत स्पष्टता के साथ दिखाई देने लगे। युवा बीयर विक्रेता रोशनी में अपने हाथ ऊपर उठाते, उंगलियों के बीच नोट दबाए चमकाते। दर्शक अपनी सीटों से उठकर ऊंची उड़ती गेंद का पीछा करते, उनकी आवाजें गेंद के चाप

नज़रें मेरी बाईं कलाई पर बंधी घड़ी को ढूंढने लगतीं। जब भी ऐसा होता, मैं अपना चेहरा दूसरी तरफ कर लेता, आँखें बंद कर लेता और न देखने की कोशिश करता। आखिर में मैंने घड़ी उतारकर अपने बैग में रख ली। फिर भी, मेरा मन लगातार बैग के अंदर घड़ी को ढूंढता रहा, जहां वह लगातार समय बता रही थी।
और इस तरह समय अंधकार में बहता चला, घड़ी की सुइयों के बिना: समय अविभाजित और अमापनीय। एक बार जब समय के विभाजक बिंदु खो गए, तो वह एक सतत रेखा नहीं रहा, बल्कि एक प्रकार का निराकार द्रव बन गया जो इच्छा अनुसार फैलता या सिकुड़ता था। इस प्रकार के समय में, मैं सोता और जागता, फिर सोता और जागता, और धीरे-धीरे और अधिकाधिक समय के बिना जीवन का अभ्यस्त हो गया। मैंने अपने शरीर को यह एहसास दिलाया कि अब मुझे समय की आवश्यकता नहीं है। लेकिन जल्द ही मुझे अत्यधिक चिंता होने लगी। यह सच है कि मैं हर पाँच मिनट में घड़ी देखने की घबराहट भरी आदत से मुक्त हो गया था, लेकिन एक बार जब समय का संदर्भ पूरी तरह से मिट गया, तो मुझे ऐसा महसूस होने लगा जैसे मुझे रात में किसी चलती हुई नाव के डेक से समुद्र में फेंक दिया गया हो। किसी ने मेरी चीखों पर ध्यान नहीं दिया, और नाव आगे बढ़ती रही, दूर और दूर जाती रही जब तक कि वह दृष्टि से ओझल होने वाली नहीं थी।
मैंने कोशिश छोड़ दी और बैग से घड़ी निकालकर कलाई पर वापस पहन ली। घड़ी की सुइयाँ छह बजकर पंद्रह मिनट दिखा रही थीं। शायद सुबह के छह बजकर पंद्रह मिनट हो रहे थे। पिछली बार जब मैंने घड़ी देखी थी, तब सात बजकर छत्तीस मिनट हुए थे। रात के सात बजकर छत्तीस मिनट। यह मानना तर्कसंगत लग रहा था कि तब से ग्यारह घंटे बीत चुके थे। तेईस घंटे तो मुश्किल से ही हुए होंगे। लेकिन मैं निश्चित नहीं था। ग्यारह घंटे और तेईस घंटे में आखिर क्या फर्क

था? चाहे ग्यारह घंटे हों या तेईस, मेरी भूख बहुत बढ़ गई थी। यह एहसास वैसा बिल्कुल नहीं था जैसा मैंने तीव्र भूख के बारे में सोचा था। मैंने सोचा था कि भूख किसी चीज की कमी का एहसास कराती है। इसके बजाय, यह शुद्ध शारीरिक दर्द के करीब थी—पूरी तरह से शारीरिक और पूरी तरह से प्रत्यक्ष, जैसे किसी ने चाकू मार दिया हो या गला घोंट दिया हो। और दर्द एक जैसा नहीं था। उसमें निरंतरता नहीं थी। यह ज्वार की तरह उठता और मुझे बेहोश होने की कगार पर ले आता, और फिर धीरे-धीरे कम हो जाता।
भूख की असहनीय पीड़ा से ध्यान हटाने के लिए मैंने अपने विचारों को किसी और चीज़ पर केंद्रित करने की कोशिश की। लेकिन अब मेरे लिए गंभीर चिंतन करना संभव नहीं था। अधूरे विचार मेरे मन में आते और उतनी ही तेज़ी से गायब हो जाते। जब भी मैं उनमें से किसी एक को पकड़ने की कोशिश करता, वह किसी चिपचिपे, आकारहीन जानवर की तरह मेरी उंगलियों से फिसल जाता।
मैं खड़ी हुई, अंगड़ाई ली और गहरी सांस ली। मेरे शरीर का हर हिस्सा दर्द कर रहा था। हर मांसपेशी और जोड़ इतने लंबे समय तक अजीब स्थिति में रहने के कारण दर्द से कराह रहे थे। मैंने धीरे- धीरे खुद को ऊपर की ओर खींचा, फिर कुछ घुटने मोड़े, लेकिन दस बार करने के बाद ही मुझे चक्कर आने लगे। कुएं के तल पर फिर से बैठते हुए, मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं। मेरे कानों में घंटियां बज रही थीं और चेहरे से पसीना बह रहा था। मैं कुछ पकड़ना चाहती थी, लेकिन पकड़ने के लिए कुछ भी नहीं था। मुझे उल्टी जैसा महसूस हो रहा था, लेकिन मेरे अंदर कुछ भी नहीं था जिसे मैं उल्टी कर सकूं। मैंने गहरी सांस लेने की कोशिश की, उम्मीद थी कि शरीर के अंदर की हवा बदलकर और रक्त संचार को बढ़ाकर मेरा मन तरोताजा हो जाएगा, लेकिन मेरे दिमाग के बादल छंटने से इनकार कर रहे थे। मेरा शरीर

महाविद्यालय तक पढ़ा था। इनमें से शायद ही किसी याद का आपस में कोई संबंध था। वे छोटी-छोटी और अर्थहीन थीं और किसी क्रम में नहीं थीं। बीच-बीच में, भूख की एक और दर्दनाक लहर मेरी यादों को तोड़ देती थी। लेकिन हर याद अविश्वसनीय रूप से स्पष्ट थी, मानो किसी बवंडर की तरह मुझे शारीरिक रूप से झकझोर रही हो।
मैं वहीं बैठा अपने मन में इन यादों को दोहराता रहा, जब तक कि मुझे तीन-चार साल पहले दफ्तर में घटी एक घटना याद नहीं आ गई। वह एक मूर्खतापूर्ण, व्यर्थ घटना थी, लेकिन जितना ज़्यादा समय मैं उसके बेतुके विवरणों को याद करने में लगाता रहा, उतना ही ज़्यादा मुझे गुस्सा आता रहा, और फिर वह गुस्सा भयंकर क्रोध में बदल गया। मुझ पर जो क्रोध हावी हुआ, वह इतना तीव्र था कि उसने सब कुछ भुला दिया—मेरी थकान, मेरी भूख, मेरे डर—जिससे मैं कांपने लगा और मेरी सांसें तेज़ हो गईं। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, और गुस्से ने मेरे खून में एड्रेनालाईन भर दिया था। यह एक छोटी सी गलतफहमी से शुरू हुई बहस थी। दूसरे व्यक्ति ने मुझ पर कुछ अपशब्दों की बौछार कर दी थी, और मैंने भी अपनी बात कह दी थी, लेकिन हम दोनों को एहसास हुआ कि यह सब कितना व्यर्थ था और हमने एक-दूसरे से माफी मांग ली, और बिना किसी कड़वाहट के बात खत्म कर दी। ऐसी बातें होती रहती हैं: आप व्यस्त होते हैं, आप थके होते हैं, और आपसे कोई लापरवाही भरी बात निकल जाती है। मैं तो बस उस पूरी बात को भूल गया था। कुएं की तलहटी में घोर अंधेरे में, वास्तविकता से बहुत दूर, वह स्मृति तीव्र स्पष्टता के साथ फिर से जीवंत हो उठी। मैं उसकी गर्मी को अपनी त्वचा पर महसूस कर सकता था, उसे अपने शरीर को झुलसाते हुए सुन सकता था। उस अपमानजनक टिप्पणी पर मेरी प्रतिक्रिया इतनी कमजोर क्यों थी? अब मुझे वे सभी बातें सूझने लगीं जो मुझे उस आदमी से कहनी चाहिए

थीं। मैंने उन्हें संवारा, उन्हें और तीक्ष्ण बनाया, और वे जितनी तीखी होती गईं, मेरा गुस्सा उतना ही बढ़ता गया।
फिर अचानक, वह वश में करने वाला राक्षस चला गया, और अब इन सब बातों का कोई महत्व नहीं रह गया था। मुझे इस तरह पुरानी यादों को क्यों कुरेदना पड़ रहा था? इससे क्या फायदा? दूसरा आदमी शायद उस बहस को बहुत पहले ही भूल चुका होगा। मैं तो इस पल तक बिल्कुल भूल चुका था। मैंने गहरी सांस ली, अपने कंधे झुका लिए और मेरा शरीर फिर से अंधेरे में डूब गया। मैंने एक और याद को याद करने की कोशिश की, लेकिन जब वह तीव्र क्रोध शांत हुआ, तो मेरी सारी यादें गायब हो गईं। मेरा दिमाग अब मेरे पेट की तरह खाली था।
फिर, इससे पहले कि मुझे पता चलता, मैं खुद से बातें करने लगा, अधूरे विचारों को बुदबुदाने लगा, जिनके बारे में मुझे पता ही नहीं था कि वे मेरे मन में चल रहे हैं। मैं खुद को रोक नहीं पा रहा था। मुझे अपने मुँह से शब्द निकलते सुनाई दे रहे थे, लेकिन मैं मुश्किल से ही समझ पा रहा था कि मैं क्या कह रहा हूँ। मेरा मुँह अपने आप ही चल रहा था, अंधेरे में शब्दों की लंबी-लंबी कड़ियाँ घुमा रहा था, ऐसे शब्द जिनका अर्थ मैं समझ नहीं पा रहा था। वे एक अंधेरे से निकलकर दूसरे अंधेरे में समा जाते थे। मेरा शरीर एक खाली सुरंग के सिवा कुछ नहीं था, शब्दों को वहाँ से यहाँ लाने का एक माध्यम। वे निश्चित रूप से विचारों के टुकड़े थे, लेकिन ऐसे विचार जो मेरी चेतना से बाहर घटित हो रहे थे।
यहां क्या हो रहा था? क्या मेरा दिमाग खराब होने लगा था? मैंने अपनी घड़ी देखी। सुइयां तीन बजकर बयालीस मिनट दिखा रही थीं। शायद दोपहर के तीन बजकर बयालीस मिनट हो रहे थे। मैंने कल्पना की कि गर्मी की दोपहर में तीन बजकर बयालीस मिनट पर रोशनी कैसी दिखती होगी। मैंने खुद को उस रोशनी में महसूस किया। मैंने अपने

सीढ़ी भी नीचे उतारता, तो भी शायद मैं उस पर चढ़ नहीं पाता। मेरे सारे बाल और दाँत गिर जाते।
फिर मुझे हवा की चिंता सताने लगी। मैं दो दिन से इस गहरी, संकरी कंक्रीट की सुरंग के निचले हिस्से में था, और स्थिति और भी बदतर इसलिए थी क्योंकि ऊपर का हिस्सा सील था। हवा का कोई प्रवाह नहीं था। मेरे आस-पास की हवा अचानक भारी और घुटन भरी लगने लगी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि यह मेरा वहम है या ऑक्सीजन की कमी के कारण हवा वास्तव में भारी हो गई है। यह जानने के लिए मैंने कई बार गहरी साँसें लीं और छोड़ीं, लेकिन जितनी ज़्यादा साँसें लेता गया, उतनी ही ज़्यादा तकलीफ़ होती गई। डर से मुझे पसीना आने लगा। जैसे ही मैंने हवा के बारे में सोचना शुरू किया, मौत मेरे मन में एक वास्तविक और आसन्न खतरे के रूप में उभर आई। यह काले, शांत पानी की तरह उठती हुई, मेरी चेतना के हर कोने में समा गई। अब तक मैं भुखमरी की संभावना के बारे में सोच रहा था, जिसके लिए अभी काफ़ी समय था। अगर ऑक्सीजन खत्म हो जाती, तो हालात बहुत तेज़ी से बिगड़ जाते।
दम घुटने से मरने पर कैसा महसूस होगा? कितना समय लगेगा? क्या यह एक धीमी, दर्दनाक प्रक्रिया होगी, या मैं धीरे-धीरे बेहोश होकर ऐसे मर जाऊँगा जैसे सोते-सोते मर जाता हूँ? मैंने कल्पना की कि मेई कासाहारा कुएँ पर आएगी और मुझे मृत पाएगी। वह मुझे कई बार पुकारेगी, और जब कोई जवाब नहीं मिलेगा तो वह यह सोचकर कुएँ में कुछ कंकड़ डालेगी कि मैं सो रहा हूँ। लेकिन मैं नहीं जागूँगा। तब उसे पता चलेगा कि मैं मर चुका हूँ।
मैं किसी को पुकारना चाहती थी। मैं चीख-चीख कर कहना चाहती थी कि मैं यहाँ अंदर फँसी हुई हूँ। मुझे भूख लगी है। हवा खराब हो रही है। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं एक असहाय छोटे बच्चे में बदल गई

हूँ। मैं अचानक ही भाग गई थी और अब कभी अपना घर नहीं ढूँढ पाऊँगी। मैं रास्ता भूल गई थी। यह एक ऐसा सपना था जो मैंने कई बार देखा था। यह मेरे बचपन का सबसे बुरा सपना था—रास्ता भटक जाना, घर का रास्ता खो देना। मैं उन बुरे सपनों को सालों पहले भूल चुकी थी। लेकिन अब, इस गहरे कुएँ की तलहटी में, वे भयानक स्पष्टता के साथ फिर से जीवित हो उठे। अँधेरे में समय पीछे की ओर चलने लगा, एक अलग तरह के समय में समा जाने के लिए।
मैंने अपने थैले से पानी की बोतल निकाली, ढक्कन खोला और बड़ी सावधानी से, एक बूंद भी न गिरे, थोड़ा सा पानी अपने मुंह में डाला। मैंने उसे काफी देर तक मुंह में रखा, उसकी नमी का आनंद लिया, फिर उसे जितना हो सके धीरे-धीरे निगल लिया। पानी गले से गुजरते ही मेरे गले से एक तेज आवाज निकली, मानो कोई भारी वस्तु जमीन पर गिर गई हो, लेकिन यह तो बस पानी की कुछ बूंदें निगलने से निकलने वाली आवाज थी।

•

श्री ओकाडा!
कोई मुझे बुला रहा था। नींद में ही मुझे वो आवाज़ सुनाई दी। “श्री ओकाडा! श्री ओकाडा! कृपया जाग जाइए!”
आवाज़ क्रेता कानो जैसी लग रही थी। मैंने किसी तरह अपनी आँखें खोलीं, पर कुछ नहीं बदला। मैं अब भी अँधेरे में डूबा हुआ था और कुछ भी नहीं देख पा रहा था। नींद और जागने के बीच कोई स्पष्ट सीमा नहीं थी। मैंने उठने की कोशिश की, पर मेरी उंगलियों में ताकत नहीं थी। मेरा शरीर ठंडा, मुरझाया हुआ और बेजान सा लग रहा था, जैसे फ्रिज के पिछले हिस्से में पड़ा कोई खीरा। मेरा दिमाग थकावट और कमजोरी से जकड़ा हुआ था। मुझे परवाह नहीं, जो चाहो करो, मैं अपने मन में फिर से उत्तेजित हो जाऊँगा और हकीकत में आ

जाऊँगा। ठीक है, अगर यही चाहते हो। अपनी धुंधली चेतना में, मैं उसके हाथों से अपनी बेल्ट ढीली करने का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन क्रेता कानो की आवाज़ कहीं ऊपर से आ रही थी। “श्री ओकाडा! श्री ओकाडा!” उसने पुकारा। मैंने ऊपर देखा, तो कुएँ का आधा ढक्कन खुला हुआ था और उसके ऊपर एक खूबसूरत, तारों भरा आकाश था, एक ऐसा आकाश जो आधे चाँद जैसा दिख रहा था। “मैं यहाँ हूँ!” मैंने खुद को संभाला और खड़ा होने में कामयाब हो गया। ऊपर देखते हुए, मैंने फिर से चिल्लाया, "मैं यहाँ हूँ!"
“श्री ओकाडा!” असली क्रेता कानो ने कहा। “क्या आप नीचे हैं?” “हां, मैं यहीं हूँ!”
"वह कैसे हुआ?"
"यह एक लम्बी कहानी है।"
मुझे खेद है, मैं आपको ठीक से सुन नहीं पा रहा हूँ। क्या आप थोड़ा ज़ोर से बोल सकते हैं?
“ये तो बहुत लंबी कहानी है!” मैंने चिल्लाकर कहा। “यहाँ से निकलने के बाद मैं तुम्हें इसके बारे में बताऊँगी। अभी मैं ज़ोर से बोल नहीं सकती।”
"क्या यह आपकी रस्सी की सीढ़ी है?"
"हां यह है।"
“तुमने इसे वहाँ से कैसे उठाया? क्या तुमने इसे फेंका था?” “बिल्कुल नहीं!” मैं ऐसा क्यों करता? मैं ऐसा कैसे कर सकता था? “बिल्कुल नहीं! किसी ने मुझे बिना बताए इसे उखाड़ दिया।”
लेकिन इससे आपके लिए वहां से निकलना नामुमकिन हो जाएगा। “बिल्कुल ऐसा ही होगा,” मैंने यथासंभव धैर्य से कहा। “यही तो हुआ है। मैं यहाँ से निकल नहीं पा रहा हूँ। तो क्या आप मेरी मदद

कर सकते हैं और सीढ़ी नीचे कर सकते हैं? इससे मैं बाहर निकल पाऊँगा।”
“जी हां, बिल्कुल। मैं अभी कर देता हूं।”
“एक मिनट रुकिए! इसे नीचे उतारने से पहले, क्या आप सुनिश्चित कर सकते हैं कि यह पेड़ के तने से अच्छी तरह बंधा हुआ है? अन्यथा—” लेकिन वह कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ कोई नहीं बचा हो। मैंने कुएँ के मुँह पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित किया, लेकिन मुझे कोई दिखाई नहीं दिया। मैंने अपने थैले से टॉर्च निकाली और उसकी रोशनी ऊपर की ओर डाली, लेकिन रोशनी में कोई इंसान नहीं दिखा। रोशनी में बस रस्सी की सीढ़ी दिखाई दी, जो अपनी जगह पर लटकी हुई थी, मानो वह हमेशा से वहीं रही हो। मैंने एक गहरी साँस ली, और जैसे ही वह साँस मेरे अंदर से निकली, मुझे लगा जैसे मेरे शरीर के भीतर की एक सख्त गाँठ ढीली होकर पिघल गई हो।
“अरे, वहाँ! क्रीटा कानो!” मैंने चिल्लाया, लेकिन फिर भी कोई जवाब नहीं आया।
मेरी घड़ी की सुइयाँ एक बजकर सात मिनट हो रही थीं। रात के एक बजकर सात मिनट, ज़ाहिर है। ऊपर टिमटिमाते तारों ने मुझे यही बताया। मैंने अपना थैला पीठ पर डाला, एक गहरी साँस ली और चढ़ना शुरू किया। अस्थिर रस्सी की सीढ़ी पर चढ़ना मुश्किल था। हर कोशिश के साथ, मेरे शरीर की हर मांसपेशी, हर हड्डी और हर जोड़ चरमरा रहा था और दर्द से कराह रहा था। मैंने एक-एक करके सावधानी से कदम बढ़ाए, और जल्द ही आसपास की हवा में हल्की गर्माहट महसूस होने लगी, और फिर घास की एक अलग सी खुशबू आने लगी। अब कीड़ों की आवाज़ें भी मुझ तक पहुँच रही थीं। मैंने कुएँ के किनारे को पकड़ा और आखिरी कोशिश से खुद को खींचकर ऊपर आ गया, लगभग लुढ़कते

चाँदनी के कारण, ठहराव और सड़न के निशान असामान्य रूप से तीव्र दिखाई दे रहे थे, और मुझे मरे हुए जानवरों के सड़े हुए मांस जैसी गंध और मल-मूत्र की दुर्गंध साफ महसूस हो रही थी। कई घरों में लोग अभी भी जाग रहे थे, बातें कर रहे थे या टीवी देखते हुए खाना खा रहे थे। एक खिड़की से चिकने खाने की गंध आ रही थी, जो मेरे दिमाग और पेट पर हमला कर रही थी। मैं एक कराहते हुए एयर कंडीशनर के पास से गुजरा और मुझे गुनगुनी हवा का झोंका लगा। मैंने शॉवर की आवाज सुनी और बाथरूम की खिड़की पर एक शरीर की धुंधली सी परछाई देखी।
मैं किसी तरह अपने घर के पीछे की दीवार फांदकर आंगन में उतर गया। यहाँ से घर एकदम अंधेरा लग रहा था, मानो साँस रोके बैठा हो। उसमें गर्माहट या अपनापन नाम की कोई चीज नहीं थी। यह वो घर था जहाँ मैं दिन-ब-दिन अपनी जिंदगी गुजार रहा था, लेकिन अब यह बस एक खाली इमारत थी, जिसमें इंसानियत का कोई नामोनिशान नहीं था। लेकिन अगर मुझे कहीं वापस जाना था, तो यही घर था।
मैं बरामदे तक गई और कांच का दरवाज़ा सरकाकर खोल दिया। इतने लंबे समय से बंद रहने के कारण हवा भारी और घुटन भरी थी। उसमें सड़े हुए फलों और कीटनाशक की मिली-जुली गंध आ रही थी। रसोई की मेज पर मैंने जो छोटा सा नोट छोड़ा था, वह अभी भी वहीं था। मैंने जो बर्तन धोए थे, वे नाली में उसी तरह रखे हुए थे। मैंने ढेर में से एक गिलास उठाया और उसे बार-बार भरकर नल से पानी पीती रही। फ्रिज में कुछ खास नहीं था—बचे हुए खाने और आधे इस्तेमाल किए हुए सामान का बेतरतीब ढेर था: अंडे, हैम, आलू का सलाद, बैंगन, सलाद पत्ता, टमाटर, टोफू, क्रीम चीज़, दूध। मैंने थोड़ा सा दूध कॉर्नफ्लेक्स के कटोरे में डाला और उसे खा लिया। मुझे भूख लगनी चाहिए थी, लेकिन फ्रिज में असली खाना देखकर मुझे ज़रा भी भूख

नहीं लगी। बल्कि थोड़ी सी मतली सी हुई। फिर भी, खाली पेट के दर्द को कम करने के लिए, मैंने कॉर्नफ्लेक्स के बाद कुछ क्रैकर्स खा लिए। इनसे भी मुझे और खाने की इच्छा नहीं हुई।
मैं बाथरूम में गई, अपने सारे कपड़े उतारे और उन्हें वॉशिंग मशीन में डाल दिया। गर्म पानी से नहाते हुए मैंने अपने शरीर के हर हिस्से को रगड़कर साफ़ किया और बाल धोए। कुमिको की नायलॉन की शावर कैप अभी भी बाथरूम में टंगी हुई थी। उसका खास शैम्पू, कंडीशनर और शैम्पू करने वाला प्लास्टिक का ब्रश भी वहीं था। उसका टूथब्रश। उसका फ्लॉस। सब कुछ वैसा ही दिख रहा था जैसा उसके जाने से पहले था। उसकी गैरमौजूदगी से बस एक ही बदलाव आया था: कुमिको अब वहाँ नहीं थी।
मैं आईने के सामने खड़ा होकर अपना चेहरा निहारने लगा। चेहरा काले छोटे-छोटे बालों से ढका हुआ था। थोड़ी देर सोचने के बाद, मैंने दाढ़ी न बनाने का फैसला किया। अगर अभी दाढ़ी बना लेता, तो शायद कट लग जाता। कल सुबह ठीक रहेगा। मुझे किसी से मिलना नहीं था। मैंने अपने दांत ब्रश किए, कई बार कुल्ला किया और बाथरूम से बाहर निकल गया। फिर मैंने एक बीयर खोली, फ्रिज से टमाटर और सलाद निकाला और सलाद बनाया। उसे खाने के बाद मुझे भूख लगने लगी, इसलिए मैंने आलू का सलाद निकाला, उसे दो ब्रेड के टुकड़ों के बीच फैलाया और खा लिया। मैंने घड़ी सिर्फ एक बार देखी। कुएं में कितने घंटे हो गए थे? लेकिन समय के बारे में सोचते ही मेरा सिर दर्द करने लगा। नहीं, मैं समय के बारे में नहीं सोचना चाहता था। यही एक चीज़ थी जिसके बारे में मैं अभी सोचना नहीं चाहता था। मैं शौचालय गया और आँखें बंद करके काफी देर तक पेशाब किया। मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि यह सिलसिला कितनी देर तक चला। मुझे लगा कि मैं वहीं खड़े-खड़े बेहोश हो जाऊँगा। उसके बाद, मैं

लिविंग रूम में गया, सोफे पर लेट गया और छत को घूरने लगा। यह एक अजीब सा एहसास था: मेरा शरीर थका हुआ था, लेकिन मेरा दिमाग पूरी तरह से जागा हुआ था। मुझे ज़रा भी नींद नहीं आ रही थी।

•

अचानक मुझे डाकपेटी देखने का ख्याल आया। शायद कुएँ में रहते हुए किसी ने मुझे चिट्ठी लिखी हो। मैं प्रवेश द्वार पर गया और देखा कि एक चिट्ठी आई थी। लिफाफे पर किसी का पता नहीं था, लेकिन सामने की लिखावट स्पष्ट रूप से कुमिको की थी, हर छोटा अक्षर बड़ी सटीकता से लिखा गया था—लगभग खींचा हुआ—जैसे कोई डिज़ाइन हो। यह लिखने का एक समय लेने वाला तरीका था, लेकिन यही एकमात्र तरीका था जो उसे आता था। मेरी नज़र तुरंत डाक टिकट पर पड़ी। वह धुंधला था और मुश्किल से पढ़ा जा सकता था, लेकिन मैं 'ताका' और शायद 'मात्सु' अक्षर पहचान सका। कागावा प्रांत का ताकामात्सु? जहाँ तक मुझे पता था, कुमिको ताकामात्सु में किसी को नहीं जानती थी। हम दोनों कभी वहाँ नहीं गए थे, और उसने कभी शिकोकू जाने वाली नौका या नए पुल को पार करने के बारे में कुछ नहीं कहा था। ताकामात्सु नाम हमारी किसी भी बातचीत में कभी आया ही नहीं था। शायद यह ताकामात्सु नहीं था।
खैर, मैं चिट्ठी लेकर रसोई में गया, मेज पर बैठ गया और कैंची से लिफाफा खोला, इस बात का ध्यान रखते हुए कि अंदर के कागज़ात न कटें। खुद को शांत करने के लिए मैंने बची हुई बीयर का एक घूंट पी लिया।
"जब मैं अचानक बिना कुछ कहे गायब हो गई, तो तुम ज़रूर हैरान और चिंतित हुए होगे," कुमिको ने अपनी हमेशा की तरह मोंट ब्लैंक की नीली-काली स्याही से लिखा था। कागज़ वही पतला चिट्ठी लिखने वाला कागज़ था जो हर जगह बिकता है।

मैं आपको पहले ही पत्र लिखकर सब कुछ विस्तार से समझाना चाहता था, लेकिन समय इस बात पर सोचते-सोचते बीत गया कि मैं अपनी भावनाओं को ठीक से कैसे व्यक्त करूं या अपनी वर्तमान स्थिति को इस तरह कैसे समझाऊं कि आप समझ सकें। मुझे आपके लिए बहुत बुरा लग रहा है।
अब तक आपको शायद शक हो गया होगा कि मैं किसी पुरुष के साथ संबंध में थी। मेरा उसके साथ लगभग तीन महीने तक शारीरिक संबंध रहा। वह काम के सिलसिले में मिला था, जिसे आप बिल्कुल नहीं जानते। और इससे कोई खास फर्क भी नहीं पड़ता कि वह कौन था। मैं उससे फिर कभी नहीं मिलूंगी। कम से कम मेरे लिए तो यह सब खत्म हो चुका है। यह बात शायद आपको कुछ हद तक तसल्ली दे या न दे।
क्या मैं उससे प्यार करती थी? इस सवाल का जवाब देना मेरे लिए नामुमकिन है। यह सवाल ही बेमानी लगता है। क्या मैं तुमसे प्यार करती थी? इसका जवाब मैं बिना किसी झिझक के दे सकती हूँ: हाँ। मुझे हमेशा इस बात की बेहद खुशी रही कि मैंने तुमसे शादी की। और आज भी मुझे ऐसा ही लगता है। तो फिर, तुम शायद पूछोगे, मुझे अफेयर करने की क्या ज़रूरत थी और उससे भी बड़ी बात, घर से भागने की क्या ज़रूरत थी? जब ये सब हो रहा था, तब भी मैं खुद से यही सवाल बार-बार पूछती रही: मुझे ये सब क्यों करना पड़ रहा है?
मैं इसे समझा नहीं सकती। मेरे मन में कभी किसी से प्रेम संबंध रखने या किसी के साथ अफेयर करने की ज़रा भी इच्छा नहीं थी। जब मैंने उससे मिलना शुरू किया था, तब ऐसे विचार मेरे मन में दूर-दूर तक नहीं थे। हम व्यापार के सिलसिले में कुछ बार मिले, और हालाँकि हम एक-दूसरे से आसानी से बात कर लेते थे, लेकिन उसके बाद फोन पर कभी-कभार ही ऐसी बातें हुईं जो काम से हटकर थीं। वह मुझसे काफी बड़ा था, उसकी पत्नी और बच्चे थे, और एक पुरुष के रूप में वह

मुझे खास आकर्षक नहीं लगा: मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं उसके साथ किसी गंभीर रिश्ते में पड़ सकती हूँ।
इसका मतलब यह नहीं है कि मेरे मन में तुमसे बदला लेने का ख्याल बिल्कुल नहीं आया था। मुझे अब भी इस बात का बुरा लगता था कि तुमने एक बार किसी औरत के साथ रात बिताई थी। जब तुमने कहा कि तुमने उसके साथ कुछ नहीं किया, तो मैंने तुम्हारी बात पर यकीन किया, लेकिन सिर्फ उसके साथ कुछ न करने से वह सही नहीं हो जाता। बस मुझे ऐसा ही महसूस हुआ। लेकिन फिर भी, मैंने तुमसे बदला लेने के लिए किसी के साथ संबंध नहीं बनाया। मुझे याद है मैंने एक बार ऐसा कहा था, लेकिन वह सिर्फ एक धमकी थी। मैं उसके साथ सोई क्योंकि मैं उसके साथ सोना चाहती थी। क्योंकि मैं उसके बिना सोए नहीं रह सकती थी। क्योंकि मैं अपनी यौन इच्छा को दबा नहीं सकती थी।
कुछ समय से हमारी मुलाकात नहीं हुई थी, फिर एक व्यापारिक सिलसिले में हमारी मुलाक़ात हुई। हमने साथ में डिनर किया और फिर कहीं जल्दी से ड्रिंक करने चले गए। चूंकि मैं शराब नहीं पी सकती, इसलिए मैंने बस इतना ही किया कि माहौल के हिसाब से मैंने एक गिलास संतरे का जूस पिया, जिसमें एक बूंद भी अल्कोहल नहीं थी। तो जो कुछ हुआ, उसमें अल्कोहल का कोई लेना-देना नहीं था। हम बस आम तरीके से बातें कर रहे थे और खाना खा रहे थे। लेकिन तभी अचानक एक पल में हमारा स्पर्श हुआ और मैं बस यही सोच रही थी कि काश मैं उसकी बाहों में होती। जैसे ही हमारा स्पर्श हुआ, मुझे पता चल गया कि वह मेरा शरीर चाहता है, और उसे भी शायद यही महसूस हुआ कि मैं उसका शरीर चाहती हूँ। हमारे बीच बिजली का एक बिल्कुल अतार्किक, जबरदस्त झटका लगा। मुझे ऐसा लगा जैसे आसमान मुझ पर गिर पड़ा हो। मेरे गाल जल रहे थे, मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था,

और कमर के नीचे मुझे भारीपन और पिघलने जैसा एहसास हो रहा था। मैं बार स्टूल पर सीधी बैठ भी नहीं पा रही थी, इतना तीव्र था। पहले तो मुझे समझ नहीं आया कि मेरे अंदर क्या हो रहा है, लेकिन जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि यह वासना थी। मुझे उसके लिए इतनी तीव्र इच्छा हो रही थी कि मैं मुश्किल से सांस ले पा रही थी। हम दोनों में से किसी ने भी पहले यह सुझाव नहीं दिया था, फिर भी हम पास के एक होटल में गए और जमकर सेक्स किया।
इसे इतने विस्तार से लिखना शायद आपको दुख पहुंचाए, लेकिन मेरा मानना है कि अंततः एक ईमानदार और विस्तृत विवरण ही सबसे अच्छा साबित होगा। यह कठिन हो सकता है, लेकिन मैं चाहता हूं कि आप इस पीड़ा को सहें और आगे पढ़ें।
मैंने उसके साथ जो कुछ किया, उसका "प्रेम" से कोई लेना-देना नहीं था। मैं बस यही चाहती थी कि वह मुझे गले लगाए और मेरे भीतर समा जाए। जीवन में मैंने कभी किसी पुरुष के शरीर के लिए ऐसी घुटन भरी चाहत महसूस नहीं की थी। मैंने किताबों में "असहनीय इच्छा" के बारे में पढ़ा था, लेकिन उस दिन तक मैं वास्तव में यह कल्पना नहीं कर सकती थी कि इस वाक्यांश का क्या अर्थ होता है।
मुझे यह ज़रूरत अचानक क्यों महसूस हुई, यह तुम्हारे साथ नहीं बल्कि किसी और के साथ क्यों हुई, मुझे इसका कोई अंदाज़ा नहीं है। लेकिन उस समय जो इच्छा मेरे अंदर जागी, उसे दबाना नामुमकिन था, और मैंने कोशिश भी नहीं की। कृपया समझिए: एक पल के लिए भी मेरे मन में यह ख्याल नहीं आया कि मैं किसी भी तरह से तुम्हें धोखा दे रही हूँ। उस होटल के बिस्तर पर उसके साथ जो मैंने सेक्स किया, वह पागलपन के करीब था। सच कहूँ तो, मैंने अपनी ज़िंदगी में कभी इतना अच्छा महसूस नहीं किया था। नहीं, यह इतना आसान नहीं था: यह सिर्फ़ "अच्छा महसूस होना" नहीं था। मेरा शरीर गर्म कीचड़

मैंने हमेशा खुद को एक ईमानदार इंसान समझा है। सच है, मुझमें कमियां हैं। लेकिन जब बात अहम मामलों की आती थी, तो मैंने कभी किसी से झूठ नहीं बोला और न ही खुद को धोखा दिया। मैंने तुमसे कभी कुछ नहीं छिपाया। यह मेरे लिए गर्व का एक छोटा सा कारण था। लेकिन फिर, कई महीनों तक, मैं बिना किसी पछतावे के तुमसे वो जानलेवा झूठ बोलता रहा।
यही बात मुझे अंदर से परेशान करने लगी। मुझे ऐसा महसूस होने लगा जैसे मैं एक खोखली, अर्थहीन, बेकार इंसान हूँ। और सच कहूँ तो, शायद मैं यही हूँ। लेकिन एक और बात है जो मुझे लगातार परेशान कर रही है, और वो ये है: जिस आदमी से मुझे प्यार भी नहीं था, उसके लिए अचानक मेरे मन में इतनी तीव्र, असामान्य यौन इच्छा कैसे जाग उठी? यही बात मेरी समझ से परे है। अगर वो इच्छा न होती, तो मैं आज भी तुम्हारे साथ खुशहाल ज़िंदगी जी रही होती। और वो आदमी आज भी कभी-कभार बात करने वाला एक अच्छा दोस्त होता। लेकिन उस भावना ने, उस अविश्वसनीय, बेकाबू वासना ने, सालों से हमने जो कुछ भी बनाया था, सब कुछ तहस-नहस कर दिया। इसने मेरा सब कुछ छीन लिया: तुम्हें, हमारे साथ बनाए घर को, और मेरे काम को। आखिर ऐसा होना ही क्यों था?
तीन साल पहले गर्भपात कराने के बाद मैंने तुमसे कहा था कि मुझे तुमसे कुछ कहना है। याद है? शायद मुझे ऐसा करना चाहिए था। शायद मुझे ये सब होने से पहले ही अपने दिल की सारी बातें तुम्हें बता देनी चाहिए थीं। अगर मैंने ऐसा किया होता तो शायद ये सब कभी नहीं होता। लेकिन अब जब ये हो चुका है—अभी भी—मुझे नहीं लगता कि मैं तुम्हें वो बता पाऊँगी जो मैं तब महसूस कर रही थी। और ऐसा इसलिए है क्योंकि मुझे लगता है कि एक बार मैंने इसे शब्दों में कह दिया तो हालात और भी बुरी तरह बिगड़ जाएँगे। इसीलिए मुझे लगा

उसमें वह आनंद मिला था जो उसे मेरे साथ यौन संबंध बनाने से नहीं मिल पाया था। शायद, उसके साथ ऐसा करते समय, वह इतनी छटपटा रही थी कि बिस्तर हिल गया था और उसकी कराहें इतनी तेज़ थीं कि बगल वाले कमरे तक सुनाई दे रही थीं। शायद उसने उसके साथ वो सब किया था जो वह मेरे साथ कभी नहीं करती। मैं गया और फ्रिज खोला, एक बियर निकाली और पी गया। फिर मैंने आलू का सलाद खाया। संगीत सुनने की इच्छा से, मैंने एफएम रेडियो चालू किया और धीमी आवाज़ में एक शास्त्रीय संगीत स्टेशन लगाया। "आज मैं बहुत थकी हुई हूँ," कुमिको कहती। "मेरा मूड ही नहीं है। मुझे माफ़ करना। सच में।" मैं जवाब देता, "कोई बात नहीं, कोई बड़ी बात नहीं।" जब त्चाइकोवस्की का सेरेनेड फॉर स्ट्रिंग्स समाप्त हुआ, तो पियानो की एक छोटी सी धुन बजने लगी जो शुमान की किसी रचना जैसी लग रही थी। यह जानी-पहचानी सी लग रही थी, पर मुझे इसका शीर्षक याद नहीं आ रहा था। जब यह खत्म हुई, तो महिला उद्घोषक ने बताया कि यह शुमान की 'वन दृश्य' श्रृंखला की सातवीं रचना थी, जिसका शीर्षक था "पक्षी भविष्यवक्ता"। मैंने कल्पना की कि कुमिको दूसरे आदमी के नीचे अपनी कमर मटका रही है, अपने पैर ऊपर उठा रही है, अपनी उंगलियों के नाखून उसकी पीठ में गड़ा रही है और चादर पर लार टपका रही है। उद्घोषक ने समझाया कि शुमान ने एक काल्पनिक दृश्य रचा है जिसमें जंगल में एक रहस्यमयी पक्षी रहता है और भविष्य की भविष्यवाणी करता है।
मैं कुमिको के बारे में क्या जानता था? चुपचाप, मैंने हाथ में खाली बीयर का कैन मसल दिया और उसे कूड़ेदान में फेंक दिया। क्या यह सच हो सकता है कि जिस कुमिको को मैं समझता था, जिस कुमिको को मैंने सालों तक अपनी पत्नी मानकर अपने करीब रखा और जिसके साथ अपना शरीर जोड़ा—वह कुमिको असल में कुमिको के व्यक्तित्व की

सबसे ऊपरी परत मात्र थी, ठीक वैसे ही जैसे इस दुनिया का अधिकांश हिस्सा जेलीफिश की दुनिया से ताल्लुक रखता है? अगर ऐसा है, तो उन छह सालों का क्या जो हमने साथ बिताए? वे क्या थे? उनका क्या मतलब था?

•

मैं कुमिको का पत्र फिर से पढ़ रही थी कि तभी फोन की घंटी बजी। घंटी की आवाज़ से मैं सोफे से उछल पड़ी। भला सुबह के दो बजे कौन फोन कर सकता है? कुमिको? नहीं, वह तो यहाँ कभी फोन नहीं करती। शायद मे कासाहारा हो। उसने मुझे खाली घर से निकलते हुए देखा होगा और मुझे फोन करने का फैसला किया होगा। या शायद क्रेता कानो। वह बताना चाहती होगी कि वह क्यों गायब हो गई थी। हो सकता है वह फोन पर बात करने वाली महिला हो। शायद वह मुझे कोई संदेश देना चाहती हो। मे कासाहारा सही थी: मेरे आस-पास कुछ ज़्यादा ही औरतें थीं। मैंने पास पड़े तौलिए से अपना पसीना पोंछा और जब मैं तैयार हुई तो रिसीवर उठाया। "हैलो," मैंने कहा। "हैलो," दूसरी तरफ से आवाज़ आई। यह मे कासाहारा की आवाज़ नहीं थी। न ही यह क्रेता कानो की आवाज़ थी, न ही उस रहस्यमयी महिला की। यह माल्टा कानो थी।
“हैलो,” उसने कहा, “क्या आप श्री ओकाडा हैं? मेरा नाम माल्टा कानो है। मुझे आश्चर्य है कि क्या आपको मैं याद हूँ?”
“बेशक। मुझे तुम अच्छी तरह याद हो,” मैंने अपने दिल की धड़कन को शांत करने की कोशिश करते हुए कहा। भला मैं उसे कैसे भूल सकती थी?
मुझे इतनी रात को फोन करने के लिए खेद है। हालांकि, यह एक आपातकालीन स्थिति है। मुझे पूरी तरह से पता है कि यह कितना

अनुचित हस्तक्षेप होगा और इससे आपको कितना गुस्सा आएगा, लेकिन फिर भी मुझे फोन करना पड़ा। मुझे बहुत खेद है।
मैंने उसे आश्वस्त किया कि उसे चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है: मैं वैसे भी उठा हुआ था और मुझे जरा भी परेशानी नहीं थी।

शेविंग करते समय पता चला

•

जागने पर पता चला
“श्री ओकाडा, मैं आपको इतनी रात को इसलिए फोन कर रही हूँ क्योंकि मुझे लगा कि आपसे जल्द से जल्द संपर्क करना ज़रूरी है,” माल्टा कानो ने कहा। उनकी बातें सुनकर मुझे ऐसा लगा जैसे वह हर शब्द को सोच-समझकर और व्यवस्थित तरीके से वाक्य बना रही हों—जो कि वह हमेशा करती थीं। “यदि आपको कोई आपत्ति न हो, तो श्री ओकाडा, मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहती हूँ। क्या मैं पूछ सकती हूँ?”
हाथ में रिसीवर लिए मैं सोफे पर बैठ गया। मैंने कहा, "जो चाहो पूछो।"
"क्या आप पिछले दो दिनों से कहीं बाहर गए हुए थे, श्री ओकाडा? मैंने आपको कई बार फोन करने की कोशिश की, लेकिन आप हमेशा बाहर ही रहे।"
“हाँ, मैं बाहर गया था। मैं कुछ देर के लिए घर से दूर जाना चाहता था। मुझे सोचने के लिए अकेले रहने की ज़रूरत थी। मुझे बहुत सी बातों पर विचार करना है।”
जी हाँ, श्री ओकाडा, मुझे इस बात की पूरी जानकारी है। मैं आपकी भावनाओं को समझता हूँ। किसी बात पर स्पष्ट और सावधानीपूर्वक विचार करने के लिए जगह बदलना बहुत फायदेमंद हो सकता है। लेकिन इस मामले में, श्री ओकाडा—और मुझे पता है कि यह आपको दखलंदाजी जैसा लगेगा—क्या आप कहीं बहुत दूर नहीं थे?
“खैर, बहुत दूर तो नहीं,” मैंने जानबूझकर अस्पष्टता बरतते हुए कहा। मैंने रिसीवर को अपने बाएं हाथ से दाएं हाथ में ले लिया।

“मैं इसे कैसे बताऊं? मैं एक तरह से अलग-थलग जगह पर था। हालांकि, मैं इसके बारे में विस्तार से नहीं बता सकता। मेरे अपने कारण हैं। और मैं अभी कुछ देर पहले ही लौटा हूं। मैं लंबे स्पष्टीकरण देने के लिए बहुत थका हुआ हूं।”
“जी हां, श्रीमान ओकाडा। मैं समझती हूं। हर किसी के अपने कारण होते हैं। मैं आपसे स्पष्टीकरण के लिए दबाव नहीं डालूंगी। आप वाकई बहुत थके हुए होंगे: आपकी आवाज़ से मुझे यही लग रहा है। कृपया मेरे बारे में चिंता न करें। इस समय आपसे इतने सारे सवाल पूछकर मुझे आपको परेशान नहीं करना चाहिए। मुझे बहुत खेद है। हम इस विषय पर किसी और उपयुक्त समय पर चर्चा कर सकते हैं। मुझे पता है कि इतना निजी सवाल पूछना मेरी बहुत बड़ी गलती थी, लेकिन मैंने ऐसा सिर्फ इसलिए किया क्योंकि मुझे चिंता थी कि पिछले कुछ दिनों में आपके साथ कुछ बहुत बुरा हुआ होगा।”
मैंने उचित प्रतिक्रिया देने की कोशिश की, लेकिन मेरे गले से निकली हल्की सी आवाज़ प्रतिक्रिया से ज़्यादा किसी जलीय जीव की साँस फूलने जैसी लग रही थी। कुछ बहुत बुरा हुआ है, मैंने सोचा। मेरे साथ जो कुछ भी हो रहा था, उनमें से कौन सी बुरी थी और कौन सी नहीं? कौन सी ठीक थी और कौन सी नहीं?
"मेरे बारे में इतनी चिंता करने के लिए धन्यवाद," मैंने अपनी आवाज ठीक होने के बाद कहा, "लेकिन मैं अभी ठीक हूँ। मैं यह तो नहीं कह सकती कि मेरे साथ कुछ अच्छा हुआ है, लेकिन कुछ खास बुरा भी नहीं हुआ है।"
"यह सुनकर खुशी हुई।"
मैंने आगे कहा, "मैं बस थक गया हूँ, बस इतना ही।"

माल्टा कानो ने गले को साफ करने की हल्की सी आवाज़ निकाली। "वैसे, श्री ओकाडा, क्या आपने पिछले कुछ दिनों में मुझमें कोई बड़ा शारीरिक बदलाव देखा है?"
“क्या मुझमें कोई शारीरिक परिवर्तन होगा?”
"जी हां, श्री ओकाडा। आपके शरीर में कुछ बदलाव आया है।"
मैंने अपना चेहरा ऊपर उठाया और कांच के आँगन के दरवाजे में अपना प्रतिबिंब देखा, लेकिन मुझे कोई ऐसा शारीरिक बदलाव नज़र नहीं आया। मैंने नहाते समय अपने शरीर के हर हिस्से को अच्छी तरह से धोया था, लेकिन तब भी मुझे कुछ महसूस नहीं हुआ था। "तुम किस तरह के बदलाव की बात कर रही हो?" मैंने पूछा।
मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है कि यह क्या हो सकता है, लेकिन जो भी आपको देखेगा उसे यह बहुत स्पष्ट रूप से पता चल जाएगा।
मैंने अपना बायाँ हाथ मेज पर फैलाकर हथेली को देखा, लेकिन वह मेरी सामान्य हथेली ही थी। मेरी नज़र में उसमें कोई बदलाव नहीं आया था। न तो वह सोने की पन्नी से ढकी थी, न ही उंगलियों के बीच जाले बन गए थे। न वह सुंदर थी, न ही बदसूरत। "जब आप कहते हैं कि जो भी मुझे देखेगा उसे यह साफ़ पता चल जाएगा, तो आपका क्या मतलब है? क्या मेरी पीठ पर पंख उग आए हों?"
माल्टा कानो ने अपनी हमेशा की तरह शांत आवाज़ में कहा, "ऐसा हो सकता है। बेशक, मेरा मतलब इसे एक संभावना के रूप में बताने से है।"
“बिल्कुल,” मैंने कहा।
"तो क्या आपने ऐसा कोई बदलाव देखा है?"
“नहीं, ऐसा नहीं है। कम से कम अभी तक तो नहीं। मेरा मतलब है, अगर मेरी पीठ पर पंख उग आए होते, तो शायद मैं उन्हें देखे बिना रह ही नहीं पाता, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?”

“शायद नहीं,” माल्टा कानो ने कहा। “लेकिन श्री ओकाडा, ज़रा सावधान रहें। अपनी स्थिति जानना कोई आसान बात नहीं है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति अपनी आँखों से सीधे अपना चेहरा नहीं देख सकता। उसके पास दर्पण में अपना प्रतिबिंब देखने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता। अनुभव से हम यह मानने लगते हैं कि छवि सही है, लेकिन बस इतना ही।”
मैंने कहा, "मैं सावधान रहूंगा।"
“श्री ओकाडा, मुझे आपसे एक और बात पूछनी है। कुछ समय से मेरी बहन क्रेता से मेरा संपर्क नहीं हो पा रहा है—ठीक वैसे ही जैसे आपसे संपर्क टूट गया था। यह महज़ एक संयोग हो सकता है, लेकिन मुझे यह बहुत अजीब लग रहा है। मैं जानना चाहता था कि क्या आपको इसके पीछे की वजहों के बारे में कुछ जानकारी है?”
"क्रेता कानो?!"
“हां,” माल्टा कानो ने कहा। “क्या इस संबंध में आपके मन में कुछ आता है?”
नहीं, मुझे कुछ याद नहीं आया, मैंने जवाब दिया। मेरे ऐसा सोचने का कोई ठोस कारण नहीं था, लेकिन मुझे लगा कि फिलहाल बेहतर यही होगा कि मैं माल्टा कानो को इस बारे में कुछ न बताऊं कि मैंने हाल ही में क्रीता कानो से आमने-सामने बात की थी और उसके तुरंत बाद वह गायब हो गई थी। यह बस एक एहसास था।
“क्रेता आपसे संपर्क टूटने को लेकर चिंतित थी, श्री ओकाडा। वह कल रात यह कहकर निकली थी कि वह आपके घर जाकर देखना चाहती है कि उसे वहां क्या मिलता है, लेकिन इतनी देर रात तक भी वह नहीं लौटी है। और किसी कारणवश, मुझे अब उसकी उपस्थिति का एहसास भी नहीं हो रहा है।”

“ठीक है। अच्छा, अगर वह कभी यहाँ आए, तो मैं उसे कह दूँगा कि वह तुरंत आपसे संपर्क करे,” मैंने कहा।
माल्टा कानो कुछ देर तक फोन पर चुप रहीं। “सच कहूँ तो, श्री ओकाडा, मुझे क्रेता की चिंता है। जैसा कि आप जानते हैं, हम दोनों जो काम करते हैं वह सामान्य नहीं है। लेकिन वह उस दुनिया के मामलों में मेरी जितनी पारंगत नहीं है। मेरा यह मतलब नहीं है कि वह प्रतिभाशाली नहीं है। वास्तव में, वह बहुत प्रतिभाशाली है। लेकिन वह अभी तक अपनी प्रतिभा को पूरी तरह से समझ नहीं पाई है।” "अच्छा ऐसा है।"
माल्टा कानो एक बार फिर चुप हो गई। यह चुप्पी पिछली बार से ज़्यादा लंबी थी। मुझे उसकी ओर से कुछ असमंजस का भाव महसूस हुआ। “हेलो। क्या आप अभी भी वहीं हैं?” मैंने पूछा।
“जी हां, श्री ओकाडा, मैं अभी भी यहीं हूं,” उसने जवाब दिया। मैंने फिर कहा, "अगर मुझे क्रेता दिखी, तो मैं उसे आपसे संपर्क करने के लिए जरूर कहूंगा।"
“बहुत-बहुत धन्यवाद,” माल्टा कानो ने कहा। फिर देर रात फोन करने के लिए माफी मांगते हुए उन्होंने फोन काट दिया। मैंने भी फोन काट दिया और शीशे में अपना चेहरा एक बार फिर देखा। तभी मेरे मन में एक ख्याल आया: शायद मैं माल्टा कानो से फिर कभी बात न कर पाऊं। हो सकता है यह उनसे मेरा आखिरी संपर्क हो। वह हमेशा के लिए मेरे जीवन से गायब हो जाएं। मेरे ऐसा सोचने का कोई खास कारण नहीं था: बस एक एहसास था जो मेरे मन में आया।

•

अचानक मुझे रस्सी वाली सीढ़ी याद आ गई। मैंने उसे कुएँ में लटका दिया था। शायद जितनी जल्दी मैं उसे निकाल लूँ, उतना ही अच्छा होगा। अगर किसी को वह वहाँ मिल गई तो मुसीबत खड़ी हो सकती है। और

फिर अचानक क्रेता कानो का गायब हो जाना। मैंने उसे आखिरी बार कुएँ पर ही देखा था।
मैंने अपनी टॉर्च जेब में रखी, जूते पहने, बगीचे में उतरा और फिर दीवार फांदकर ऊपर चढ़ गया। फिर मैं गली से होते हुए खाली घर की ओर बढ़ा। मे कासाहारा का घर घोर अंधेरा था। मेरी घड़ी में लगभग 3:00 बज रहे थे। मैं खाली घर के आंगन में दाखिल हुआ और सीधे कुएं की ओर चला गया। रस्सी की सीढ़ी अभी भी पेड़ के तने से बंधी हुई थी और कुएं में लटकी हुई थी, जो अभी भी आधा ही खुला था।
किसी बात ने मुझे कुएँ में झाँकने और दबी आवाज़ में क्रेता कानो का नाम पुकारने के लिए प्रेरित किया। कोई जवाब नहीं आया। मैंने अपनी टॉर्च निकाली और उसे कुएँ में नीचे की ओर किया। रोशनी तल तक नहीं पहुँची, लेकिन मुझे एक हल्की सी कराहने जैसी आवाज़ सुनाई दी। मैंने फिर से नाम पुकारने की कोशिश की।
“कोई बात नहीं। मैं यहीं हूँ,” क्रेता कानो ने कहा।
मैंने धीमी आवाज में पूछा, "तुम इस जगह पर क्या कर रहे हो?"
“मैं क्या कर रही हूँ? मैं वही कर रही हूँ जो आप कर रहे थे, श्री ओकाडा,” उसने स्पष्ट हैरानी के साथ जवाब दिया। “मैं सोच रही हूँ। सोचने के लिए यह वाकई एक आदर्श जगह है, है ना?”
“हाँ, मुझे लगता है ऐसा ही है,” मैंने कहा। “लेकिन थोड़ी देर पहले तुम्हारी बहन ने मुझे घर पर फोन किया था। वह तुम्हारे लापता होने को लेकर बहुत चिंतित है। आधी रात हो चुकी है और तुम अभी तक घर नहीं आए हो, और वह कहती है कि उसे तुम्हारी मौजूदगी का एहसास नहीं हो रहा है। उसने मुझसे कहा कि अगर तुम्हारी तरफ से कोई खबर आए तो तुम उससे तुरंत संपर्क करना।”
“मैं समझ गया। खैर, इतनी मेहनत करने के लिए धन्यवाद।”

“उस बात को भूल जाइए, क्रेता कानो। क्या आप मेरी मदद करेंगे और वहां से बाहर आ जाएंगे? मुझे आपसे बात करनी है।”
उसने कोई जवाब नहीं दिया।
मैंने अपनी टॉर्च बंद कर दी और उसे वापस अपनी जेब में रख लिया। “श्री ओकाडा, आप नीचे क्यों नहीं आ जाते? हम दोनों यहां बैठकर बात कर सकते हैं।”
मैंने सोचा, कुएं में दोबारा उतरकर क्रेता कानो से बात करना शायद बुरा विचार नहीं होगा, लेकिन फिर मुझे कुएं की तलहटी में मौजूद फफूंदयुक्त अंधेरे का ख्याल आया और मेरे पेट में भारीपन सा महसूस हुआ।
“नहीं, माफ कीजिए, लेकिन मैं दोबारा नीचे नहीं जाऊंगा। और आपको भी बाहर आ जाना चाहिए। कोई सीढ़ी को फिर से ऊपर खींच सकता है। और हवा भी बासी है।”
मुझे पता है। लेकिन मैं यहाँ थोड़ी देर और रुकना चाहता हूँ। मेरे बारे में चिंता मत करो।
जब तक क्रीटा कानो का कुएं से बाहर आने का कोई इरादा नहीं था, तब तक मैं कुछ नहीं कर सकता था।
“जब मैंने तुम्हारी बहन से फोन पर बात की, तो मैंने उसे यह नहीं बताया कि मैंने तुम्हें यहाँ देखा था। मुझे उम्मीद है कि मैंने ऐसा ही किया होगा। मुझे बस ऐसा लगा कि चुप रहना ही बेहतर होगा।” “आप सही थीं,” क्रेता कानो ने कहा। “कृपया मेरी बहन को मत बताना कि मैं यहाँ हूँ।” थोड़ी देर बाद उसने आगे कहा, “मैं उसे परेशान नहीं करना चाहती, लेकिन मुझे भी कभी-कभी सोचने का समय चाहिए होता है। काम खत्म होते ही मैं बाहर आ जाऊँगी। अगर आप कृपा करें तो मैं अभी अकेले रहना चाहती हूँ। मैं आपको कोई परेशानी नहीं दूँगी।”

मैंने उसे वहीं छोड़कर फिलहाल घर वापस जाने का फैसला किया। मैं सुबह आकर उसका हालचाल ले सकता था। अगर मे कासाहारा रात में फिर से सीढ़ी ऊपर खींच ले, तो मैं उस समय स्थिति को संभाल लूंगा और किसी न किसी तरह क्रेता कानो को कुएं से बाहर निकालने में मदद कर लूंगा। मैं घर गया, कपड़े उतारे और बिस्तर पर लेट गया। अपनी पढ़ी हुई किताब उठाकर मैंने उसे अपने पृष्ठ से खोला। मुझे लगा कि मैं बहुत बेचैन हूं, इसलिए तुरंत नींद नहीं आएगी, लेकिन दो पन्ने पढ़ने से पहले ही मुझे एहसास हुआ कि मुझे नींद आ रही है। मैंने किताब बंद की, लाइट बंद की और अगले ही पल गहरी नींद में सो गया।

•

जब मैं जागा तब तक सुबह के साढ़े नौ बज चुके थे। क्रेता कानो की चिंता में, मैंने चेहरा धोए बिना ही कपड़े पहने और जल्दी से गली से होते हुए उस खाली घर की ओर चल पड़ा। आसमान में बादल छाए हुए थे और उमस भरी सुबह की हवा से लग रहा था मानो किसी भी पल बारिश हो सकती है। कुएँ से रस्सी की सीढ़ी गायब थी। किसी ने उसे पेड़ के तने से खोलकर कहीं ले गया होगा। कुएँ के ढक्कन के दोनों हिस्से कसकर लगे हुए थे, और हर हिस्से के ऊपर एक पत्थर रखा था। एक तरफ का ढक्कन खोलकर कुएँ में झाँकते हुए मैंने क्रेता कानो का नाम पुकारा। कोई जवाब नहीं आया। मैंने कुछ और बार कोशिश की, हर बार पुकारने के बाद इंतज़ार किया। यह सोचकर कि शायद वह सो रही हो, मैंने कुछ कंकड़ अंदर फेंके, लेकिन कुएँ की तलहटी में कोई नहीं दिख रहा था। शायद सुबह होते ही क्रेता कानो कुएँ से बाहर निकल आई होगी, सीढ़ी खोलकर अपने साथ ले गई होगी। मैंने ढक्कन को ठीक से लगा दिया और कुएँ से दूर चला गया।

तरह धोया और कपड़े से उस धब्बे को रगड़ा। लेकिन फिर भी धब्बा नहीं हटा। ऐसा लग रहा था जैसे वह त्वचा में गहराई तक चला गया हो। मैंने उंगली से उसे छुआ। त्वचा का वह हिस्सा चेहरे के बाकी हिस्सों से थोड़ा गर्म महसूस हुआ, लेकिन बाकी कोई खास एहसास नहीं था। यह एक निशान था। मेरे गाल पर ठीक उसी जगह पर एक निशान था, जहां मुझे कुएं में गर्मी का एहसास हुआ था।
मैंने अपना चेहरा दर्पण के सामने किया और उस निशान को अत्यंत सावधानी से देखा। दाहिनी गाल की हड्डी के ठीक आगे स्थित, वह निशान एक शिशु की हथेली के आकार का था। उसका नीला रंग काले रंग के करीब था, ठीक उसी तरह जैसे कुमिको हमेशा मोंट ब्लैंक की नीली- काली स्याही का इस्तेमाल करती थी।
एक संभावित कारण यह हो सकता था कि यह एलर्जी की प्रतिक्रिया थी। हो सकता है कि मैं कुएँ में किसी ऐसी चीज़ के संपर्क में आ गया हो जिससे त्वचा पर दाने निकल आए हों, जैसे वार्निश से हो सकते हैं। लेकिन कुएँ की तलहटी में ऐसा क्या हो सकता था जिससे ऐसा हो जाए? मैंने टॉर्च से उस जगह के हर कोने की जाँच की, लेकिन वहाँ मुझे मिट्टी की तलहटी और कंक्रीट की दीवार के अलावा कुछ नहीं मिला। इसके अलावा, क्या एलर्जी या दाने कभी इतने स्पष्ट निशान छोड़ते हैं?
मुझे अचानक घबराहट होने लगी। कुछ पलों के लिए, मैं दिशा का सारा ज्ञान खो बैठा, ठीक वैसे ही जैसे समुद्र तट पर कोई विशाल लहर आकर आपको अपने साथ बहा ले जाती है। मेरे हाथ से कपड़ा गिर गया। मैंने कूड़ेदान गिरा दिया और किसी चीज़ से मेरा पैर टकरा गया, इस दौरान मैं कुछ निरर्थक शब्द बुदबुदा रहा था। फिर मैंने खुद को संभाला और सिंक के सहारे झुककर, इस स्थिति से निपटने के बारे में शांति से सोचने लगा।

ही उलझन पर गुस्सा था। और शायद इसी वजह से मुझे यह निशान मिला था।
शायद वह निशान एक ऐसा ब्रांड था जो उस अजीब सपने या भ्रम या जो भी था, के कारण मेरे मन पर अंकित हो गया था। वह कोई सपना नहीं था, वे उस निशान के माध्यम से मुझे बता रहे थे: यह सचमुच हुआ था। और अब जब भी तुम आईने में देखोगे, तुम्हें वह याद आना ही पड़ेगा। मैंने अपना सिर हिलाया। बहुत सी बातें अनसुलझी रह गई थीं। एक बात जो मुझे पूरी तरह समझ आ गई थी, वो ये थी कि मुझे कुछ भी समझ नहीं आया था। मेरे सिर में एक हल्की सी धड़कन शुरू हो गई। मैं कुछ सोच नहीं पा रहा था। मुझे कुछ भी करने की इच्छा नहीं हो रही थी। मैंने गुनगुनी कॉफी का एक घूंट लिया और बारिश देखता रहा।

•

दोपहर के बाद, मैंने अपने चाचा को कुछ हल्की-फुल्की बातचीत के लिए फोन किया। मुझे किसी से बात करने की ज़रूरत थी—इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता कि किससे—ताकि मैं उस भावना का कुछ समाधान कर सकूँ जो मुझे यह महसूस करा रही थी कि मैं वास्तविकता की दुनिया से अलग होता जा रहा हूँ।
जब उन्होंने कुमिको के बारे में पूछा, तो मैंने कहा कि वह ठीक है और बात वहीं खत्म कर दी। मैंने आगे बताया कि वह फिलहाल एक छोटी सी व्यावसायिक यात्रा पर है। मैं उन्हें सच-सच बता सकती थी कि क्या हो रहा था, लेकिन हाल की घटनाओं को इस तरह से क्रमबद्ध करना कि कोई तीसरा व्यक्ति उन्हें समझ सके, असंभव था। वे घटनाएँ मुझे खुद ही समझ नहीं आ रही थीं, तो मैं उन्हें किसी और को कैसे समझा सकती थी? मैंने फिलहाल अपने चाचा से सच छिपाने का फैसला किया। मैंने पूछा, "आप पहले इसी घर में रहते थे, है ना?"

“जी हां,” उन्होंने कहा। “कुल मिलाकर छह या सात साल। एक मिनट रुकिए… मैंने यह जगह पैंतीस साल की उम्र में खरीदी थी और बयालीस साल की उम्र तक वहीं रहा। सात साल। शादी के बाद इस कॉन्डो में रहने लगा। उस पूरे समय मैं वहां अकेला ही रहा।”
मैं बस यही सोच रहा था, क्या आपके यहां रहने के दौरान आपके साथ कुछ बुरा हुआ?
“कुछ बुरा हुआ? मतलब क्या?”
"जैसे कि तुम बीमार हो गए या तुम्हारा किसी महिला से ब्रेकअप हो गया या कुछ और।"
मेरे चाचा ने फोन पर ज़ोर से हँसते हुए कहा, “मैंने एक से ज़्यादा महिलाओं से संबंध तो बनाए, ये तो पक्का है। लेकिन सिर्फ़ वहीं रहते हुए नहीं। नहीं, मैं इसे कोई बहुत बुरी बात नहीं कह सकता। सच कहूँ तो, मुझे किसी को खोने का दुख नहीं था। जहाँ तक बीमार पड़ने की बात है... हम्म। नहीं, मुझे नहीं लगता। मेरी गर्दन के पीछे एक छोटी सी गांठ थी जिसे निकलवाया था, बस इतना ही याद है। नाई ने उसे देखा और कहा कि एहतियात के तौर पर उसे निकलवा लेना चाहिए। तो मैं डॉक्टर के पास गया, लेकिन कुछ खास नहीं निकला। उस घर में रहते हुए मैं पहली बार डॉक्टर के पास गया था—और आखिरी बार भी। मुझे तो अपने स्वास्थ्य बीमा पर छूट मिलनी चाहिए!”
तो, उस जगह से जुड़ी आपकी कोई बुरी यादें नहीं हैं?
“नहीं, बिलकुल नहीं,” मेरे चाचा ने थोड़ी देर सोचने के बाद कहा। “लेकिन अचानक ये सब क्या हो रहा है?”
“कुछ खास नहीं,” मैंने कहा। “कुमिको ने कुछ दिन पहले एक ज्योतिषी से सलाह ली थी और इस घर के बारे में बहुत कुछ सुना कर घर आई है—कि यह घर अशुभ है, ऐसी ही बातें,” मैंने झूठ बोला।

“मुझे लगता है यह सब बकवास है, लेकिन मैंने आपसे इसके बारे में पूछने का वादा किया था।”
हम्म। इसे क्या कहते हैं? ‘घर की बनावट’? मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता। मेरे हिसाब से तो पता भी नहीं चलता। लेकिन मैं उस जगह पर रह चुका हूँ, और मेरा अनुभव यही है कि वह ठीक-ठाक है, उसमें कोई दिक्कत नहीं है। मियावाकी का घर तो बिल्कुल अलग बात है, लेकिन आप वहाँ से काफी दूर रहते हैं।
मैंने पूछा, "आपके चले जाने के बाद यहां किस तरह के लोग रहते थे?"
“देखिए: मेरे बाद एक हाई स्कूल शिक्षक और उनका परिवार तीन साल तक वहाँ रहे, और फिर एक युवा जोड़ा पाँच साल तक। उनका कोई व्यवसाय था, लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा कि क्या था। मैं यह पक्का नहीं कह सकता कि उस घर में सभी लोग खुशहाल जीवन जी रहे थे: मेरे लिए उस जगह का प्रबंधन एक रियल एस्टेट एजेंट कर रहा था। मैं उन लोगों से कभी नहीं मिला, और मुझे नहीं पता कि वे वहाँ से क्यों चले गए, लेकिन मैंने कभी उनके साथ कुछ बुरा होने की बात नहीं सुनी। मैंने बस यही मान लिया कि वह जगह उनके लिए थोड़ी छोटी पड़ गई थी और वे अपने घर बनाना चाहते थे, कुछ इसी तरह की बात।”
“किसी ने मुझसे कहा था कि इस जगह का प्रवाह बाधित हो गया है। क्या आपको कुछ याद है?”
“प्रवाह बाधित हो गया है?”
मैंने कहा, "मुझे भी इसका मतलब नहीं पता। उन्होंने मुझे बस यही बताया है।"
मेरे चाचा ने कुछ देर सोचा। “नहीं, कुछ समझ में नहीं आ रहा। लेकिन गली के दोनों सिरों पर बाड़ लगाना शायद अच्छा विचार नहीं था। ज़रा सोचिए, बिना प्रवेश या निकास वाली सड़क अजीब होती है।

सड़कों और नदियों का मूल सिद्धांत तो यही है कि वे बहती रहें। अगर उन्हें रोक दिया जाए तो वे रुक जाती हैं।”
“मैं समझ गया आप क्या कहना चाहते हैं,” मैंने कहा। “अब, मुझे आपसे एक और बात पूछनी है। क्या आपने कभी इस मोहल्ले में चाबी से चलने वाली चिड़िया की आवाज सुनी है?”
“वो चाबी से घुमाने वाली चिड़िया,” मेरे चाचा ने कहा। “वो क्या होती है?”
मैंने चाबी भरने वाली चिड़िया के बारे में सरल शब्दों में बताया कि वह दिन में एक बार पीछे वाले पेड़ पर आती है और एक झोली सी आवाज निकालती है।
“यह तो मेरे लिए बिल्कुल नई बात है,” उसने कहा। “मैंने इसे कभी देखा या सुना नहीं है। मुझे पक्षी पसंद हैं, और मैं हमेशा उनकी आवाज़ें सुनने का प्रयास करता रहा हूँ, लेकिन ऐसा कुछ मैंने पहली बार सुना है। आपका मतलब है कि इसका घर से कुछ लेना-देना है?”
“नहीं, ऐसा नहीं है। मैं बस यह जानना चाह रहा था कि क्या आपने इसके बारे में कभी सुना है।”
“आप जानते हैं, अगर आप वाकई में इन सब बातों के बारे में पूरी जानकारी चाहते हैं—मेरे बाद यहाँ रहने वाले लोग और इस तरह की बातें—तो आपको स्टेशन के सामने वाले रियल एस्टेट एजेंट श्री इचिकावा से बात करनी चाहिए। उनका नाम सेतागाया दाई-इची रियल्टर्स है। उन्हें बता देना कि मैंने आपको भेजा है। उन्होंने सालों तक मेरे लिए वह घर संभाला था। वे इस मोहल्ले में बहुत लंबे समय से रह रहे हैं, और हो सकता है कि वे आपको वह सब कुछ बता दें जो आप जानना चाहते हैं। उन्होंने ही मुझे मियावाकी

वाले घर के बारे में बताया था। वे उन बुज़ुर्गों में से एक हैं जिन्हें बात करना बहुत पसंद है। आपको उनसे ज़रूर मिलना चाहिए।” “धन्यवाद। मैं करूँगा,” मैंने कहा।
तो, नौकरी की तलाश कैसी चल रही है?
“अभी तक कुछ नहीं। सच कहूँ तो, मैंने ज्यादा खोजबीन नहीं की है। कुमिको काम कर रही है, मैं घर की देखभाल कर रहा हूँ, और फिलहाल हम किसी तरह काम चला रहे हैं।”
मेरे चाचाजी कुछ पल के लिए किसी बात पर सोचते रहे। फिर उन्होंने कहा, "अगर कभी ऐसी स्थिति आ जाए कि तुम आ न सको, तो मुझे बता देना। शायद मैं तुम्हारी मदद कर सकूँ।"
“धन्यवाद,” मैंने कहा। “मैं करूँगा।” और इस तरह हमारी बातचीत समाप्त हुई।
मैंने पुराने रियल एस्टेट ब्रोकर को फोन करके इस घर के इतिहास और मुझसे पहले यहां रहने वाले लोगों के बारे में पूछने का सोचा, लेकिन ऐसी बेतुकी बात सोचना भी हास्यास्पद लगा। मैंने इसे भूल जाने का फैसला किया।
दोपहर तक हल्की-हल्की बारिश होती रही, घरों की छतें भीगती रहीं, आंगनों के पेड़ भीगते रहे, ज़मीन भीगती रही। मैंने दोपहर के खाने में टोस्ट और सूप खाया और बाकी का समय सोफे पर बिताया। मैं कुछ खरीदारी करना चाहता था, लेकिन चेहरे पर निशान का ख्याल आते ही मैं हिचकिचा गया। मुझे अफसोस था कि मैंने दाढ़ी नहीं बढ़ाई। फ्रिज में अभी भी कुछ सब्जियां थीं और अलमारी में डिब्बाबंद सामान था। मेरे पास चावल और अंडे भी थे। अगर मैं ज्यादा उम्मीद न रखूं तो दो-तीन दिन और काम चला सकता हूं।
सोफे पर लेटे-लेटे मैंने कुछ भी नहीं सोचा। मैंने एक किताब पढ़ी, शास्त्रीय संगीत की टेप सुनी, और बगीचे में गिरती बारिश

में हल्की मतली हो रही थी (जो शायद कुएं की तलहटी में महसूस हुई मतली का ही सिलसिला था), इसके अलावा मेरा शरीर पूरी तरह से सामान्य था।
दोपहर का समय एकदम शांत था। फोन की घंटी नहीं बजी। कोई चिट्ठी नहीं आई। गली में कोई नहीं आया। पड़ोसियों की कोई आवाज शांति भंग नहीं कर रही थी। कोई बिल्ली बगीचे में नहीं आई, कोई पक्षी चहचहाया नहीं। कभी-कभार कोई टिड्डा बोलता, लेकिन पहले जैसी तीव्रता से नहीं।
शाम सात बजे से कुछ देर पहले ही मुझे भूख लगने लगी, इसलिए मैंने डिब्बाबंद खाना और सब्ज़ियों से रात का खाना बना लिया। मैंने बहुत दिनों बाद पहली बार रेडियो पर शाम की खबरें सुनीं, लेकिन दुनिया में कुछ खास नहीं हो रहा था। एक्सप्रेसवे पर एक दुर्घटना में कुछ किशोरों की मौत हो गई थी, जब उनकी कार का चालक दूसरी कार को ओवरटेक करने की कोशिश में नाकाम रहा और दीवार से टकरा गया। एक बड़े बैंक के शाखा प्रबंधक और कर्मचारियों पर अवैध ऋण देने के मामले में पुलिस जांच चल रही थी। माचिदा की एक छत्तीस वर्षीय गृहिणी को सड़क पर एक युवक ने हथौड़े से पीट-पीटकर मार डाला था। लेकिन ये सब घटनाएं किसी दूसरी, दूर की दुनिया की थीं। मेरी दुनिया में बस एक ही चीज़ हो रही थी, वो थी आंगन में बारिश की बूँदें। बिना आवाज़ के। धीरे-धीरे।
जब घड़ी में नौ बजे, तो मैं सोफे से बिस्तर पर चला गया, और जिस किताब को मैंने पढ़ना शुरू किया था उसका एक अध्याय खत्म करने के बाद, मैंने लाइट बंद कर दी और सो गया।
मैं किसी सपने के बीच में ही अचानक जाग गया। मुझे याद नहीं आ रहा था कि सपने में क्या हो रहा था, लेकिन ज़ाहिर है वह तनाव से भरा सपना था, क्योंकि मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। कमरा अभी भी घोर

क्रेता कानो की कहानी जारी है

क्रेता कानो पूरी तरह नग्न थी। बिस्तर के मेरे हिस्से की ओर मुंह करके, वह सो रही थी, बिना किसी आवरण के, उसके दो सुडौल स्तन, दो छोटे गुलाबी निप्पल और एकदम सपाट पेट के नीचे, काले रंग के त्रिकोणीय गुप्तांग के बाल दिखाई दे रहे थे, जो किसी चित्र के छायांकित भाग की तरह लग रहे थे। उसकी त्वचा बेहद सफेद थी, मानो उसमें नई चमक हो। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वह यहाँ क्यों है, फिर भी मैं उसके खूबसूरत शरीर को देखता रहा। उसके घुटने कसकर एक साथ जुड़े हुए थे और थोड़े मुड़े हुए थे, उसकी टांगें एकदम सीधी थीं। उसके बाल आगे की ओर गिरे हुए थे, जिससे उसका आधा चेहरा ढका हुआ था, और उसकी आँखें देखना मेरे लिए असंभव था, लेकिन वह स्पष्ट रूप से गहरी नींद में थी: मेरे बिस्तर के पास की बत्ती जलाने पर भी उसमें जरा सी भी हलचल नहीं हुई, और उसकी साँसें शांत और नियमित थीं। हालाँकि, मैं अब पूरी तरह जाग चुका था। मैंने अलमारी से एक पतला सा गर्मियों का कंबल निकाला और उसे उसके ऊपर डाल दिया। फिर मैंने बत्ती बंद कर दी और अपने पायजामे में ही रसोई में जाकर थोड़ी देर के लिए मेज पर बैठ गया।
मुझे अपना निशान याद आ गया। मेरे गाल पर वह धब्बा छूने पर अभी भी हल्का गर्म था। वह निशान अभी भी वहीं था—मुझे आईने में देखने की कोई ज़रूरत नहीं थी। यह कोई मामूली निशान नहीं था जो रातोंरात अपने आप गायब हो जाए। मैंने सोचा कि उजाला होते ही फ़ोन बुक में आस-पास के किसी त्वचा विशेषज्ञ का पता ढूंढ लूँ, लेकिन अगर डॉक्टर मुझसे पूछता कि इसका कारण क्या हो सकता है, तो मैं क्या जवाब देती? मैं दो-तीन दिन तक एक कुएँ में थी। नहीं,

रूप से मिलता-जुलता था। मैंने अब तक इस समानता पर ध्यान नहीं दिया था क्योंकि उनके बाल, कपड़ों का चुनाव और मेकअप बिल्कुल अलग थे। उनकी लंबाई लगभग एक जैसी थी और वज़न भी लगभग बराबर लग रहा था। शायद वे एक ही साइज़ के कपड़े पहनती थीं।
मैं अपना ग्रीष्मकालीन कंबल लेकर बैठक कक्ष में गया, सोफे पर लेट गया और अपनी किताब खोली। मैं पुस्तकालय से लाई हुई इतिहास की किताब पढ़ रहा था। यह किताब युद्ध से पहले मंचूरिया में जापान के शासन और नोमोनहान में सोवियत संघ के साथ हुए युद्ध के बारे में थी। लेफ्टिनेंट मामिया की कहानी ने उस दौर के महाद्वीपीय मामलों में मेरी रुचि जगा दी थी और मैंने इस विषय पर कई किताबें उधार ली थीं। लेकिन अब, उस विस्तृत ऐतिहासिक वृत्तांत को पढ़ते हुए दस मिनट से भी कम समय में ही मुझे नींद आने लगी। मैंने किताब को फर्श पर रख दिया, कुछ पल आराम करने के इरादे से, लेकिन रोशनी जलती हुई ही मैं गहरी नींद में सो गया। रसोई से आती एक आवाज़ से मेरी नींद खुल गई। जब मैं देखने गया तो वहाँ क्रेता कानो नाश्ता बना रही थी, उसने सफेद टी-शर्ट और नीले शॉर्ट्स पहने हुए थे, जो दोनों कुमिको के थे।
मैंने रसोई के दरवाजे पर खड़े होकर पूछा, "तुम्हारे कपड़े कहाँ हैं?"
“ओह, मुझे माफ़ करना। आप सो रहे थे, इसलिए मैंने आपकी पत्नी के कुछ कपड़े उधार ले लिए। मुझे पता था कि यह बहुत ही अनुचित व्यवहार था, लेकिन मेरे पास पहनने के लिए कुछ नहीं था,” क्रेता कानो ने अपना सिर मेरी तरफ घुमाते हुए कहा। पिछली बार जब मैंने उसे देखा था, तब से वह अपने पुराने साठ के दशक वाले हेयरस्टाइल और मेकअप में लौट आई थी, बस नकली पलकें नहीं लगी थीं।

“नहीं, इसमें कोई दिक्कत नहीं है,” मैंने कहा। “मैं तो बस यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे कपड़ों का क्या हुआ।”
“मैंने उन्हें खो दिया,” उसने सरल शब्दों में कहा।
"क्या वे खो गए?"
“हां। मैंने उन्हें कहीं खो दिया।”
मैं रसोई में गया और मेज से टेक लगाकर खड़ा हो गया, जहाँ क्रेता कानो आमलेट बना रही थी। बड़ी कुशलता से उसने अंडे फोड़े, मसाले डाले और मिश्रण को फेंटा।
"मतलब तुम यहाँ नग्न होकर आए हो?"
“जी हां, यह सही है,” क्रेता कानो ने ऐसे कहा जैसे यह दुनिया की सबसे स्वाभाविक बात हो। “मैं पूरी तरह नग्न थी। आप जानते हैं, श्री ओकाडा। आपने ही मुझे चादर ओढ़ाई थी।”
“हाँ, बिल्कुल,” मैंने बुदबुदाते हुए कहा। “लेकिन मैं यह जानना चाहता हूँ कि आपके कपड़े कहाँ और कैसे खो गए, और आप बिना कपड़ों के यहाँ कैसे पहुँच गए?”
"मुझे भी इस बारे में आपसे ज्यादा जानकारी नहीं है," क्रेता कानो ने कहा, और साथ ही फ्राइंग पैन को हिलाकर ऑमलेट को पलटने लगी।
मैंने कहा, "तुम यह बात मुझसे बेहतर नहीं जानते।"
क्रेता कानो ने ऑमलेट को प्लेट में निकाला और उस पर ताज़ी उबली हुई ब्रोकली की कुछ डंठलें सजाईं। उन्होंने टोस्ट भी बनाया था, जिसे उन्होंने कॉफ़ी के साथ मेज़ पर रख दिया। मैंने मक्खन, नमक और काली मिर्च निकाल ली। फिर, नवविवाहित जोड़े की तरह, हम एक-दूसरे के सामने बैठकर नाश्ता करने लगे।
तभी मुझे अपना निशान याद आया। क्रीता कानो ने मेरी तरफ देखकर कोई हैरानी नहीं जताई और न ही मुझसे इसके बारे में कुछ पूछा।

मैंने उस जगह को छूने के लिए हाथ बढ़ाया और पाया कि वह पहले की तरह ही थोड़ी गर्म थी।
"क्या इससे आपको दर्द हो रहा है, श्री ओकाडा?"
“नहीं, बिलकुल नहीं,” मैंने कहा।
क्रेता कानो ने कुछ देर तक मेरे चेहरे को घूरकर देखा। "यह किसी निशान जैसा लग रहा है," उसने कहा।
मैंने कहा, "मुझे भी यह निशान जैसा ही लग रहा है। मैं सोच रही हूँ कि इसे डॉक्टर को दिखाऊँ या नहीं।"
मुझे लगता है कि यह ऐसी चीज है जिसे कोई डॉक्टर संभाल नहीं पाएगा।
मैंने कहा, "हो सकता है आप सही हों। लेकिन मैं इसे यूं ही नजरअंदाज नहीं कर सकता।"
हाथ में कांटा लिए, क्रेता कानो ने एक पल सोचा। “अगर आपको खरीदारी या कोई और काम है, तो मैं आपके लिए कर सकती हूँ। अगर आप बाहर नहीं जाना चाहते, तो आप जितनी देर चाहें अंदर ही रह सकते हैं।”
"मैं इस प्रस्ताव के लिए आभारी हूं, लेकिन आपके पास भी करने के लिए अपने काम होंगे, और मैं हमेशा के लिए यहां बंद नहीं रह सकता।"
क्रेता कानो ने भी कुछ देर इस बारे में सोचा। "माल्ता कानो को शायद इससे निपटने का तरीका पता होगा।"
"क्या आप मेरे लिए उससे संपर्क कर सकते हैं?"
“माल्टा कानो दूसरों से संपर्क तो करती है, लेकिन दूसरों को खुद से संपर्क करने की अनुमति नहीं देती।” क्रेता कानो ने ब्रोकोली का एक टुकड़ा खाया।
"लेकिन मुझे यकीन है कि आप उससे संपर्क कर सकते हैं?"

“बेशक। हम बहनें हैं।”
"अच्छा, अगली बार जब तुम उससे बात करो, तो क्यों न उससे मेरे निशान के बारे में पूछो? या तुम उससे कह सकते हो कि वह मुझसे संपर्क करे।"
मुझे खेद है, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती। मुझे किसी और की ओर से अपनी बहन से संपर्क करने की अनुमति नहीं है। यह हमारा एक नियम है।
टोस्ट पर मक्खन लगाते हुए मैंने एक गहरी सांस ली। "क्या आपका मतलब यह है कि अगर मुझे माल्टा कानो से किसी बात पर चर्चा करनी हो, तो मैं बस उसके मुझसे संपर्क करने का इंतजार ही कर सकता हूँ?"
“मेरा मतलब बिल्कुल यही है,” क्रेता कानो ने कहा। फिर उन्होंने सिर हिलाया। “लेकिन उस निशान के बारे में। जब तक उसमें दर्द या खुजली न हो, मेरा सुझाव है कि आप कुछ समय के लिए उसके बारे में भूल जाएं। मैं ऐसी बातों को कभी अपने ऊपर हावी नहीं होने देती। और आपको भी ऐसा नहीं करना चाहिए, श्री ओकाडा। कभी-कभी लोगों को ऐसी चीजें हो जाती हैं।”
मैंने कहा, "मुझे आश्चर्य होता है।"
उसके बाद कुछ मिनटों तक हम चुपचाप नाश्ता करते रहे। मैंने काफी समय से किसी और के साथ नाश्ता नहीं किया था, और यह नाश्ता विशेष रूप से स्वादिष्ट था। जब मैंने यह बात क्रेता कानो को बताई तो वह खुश हुई।
मैंने कहा, "खैर, आपके कपड़ों के बारे में..."
"क्या आपको इस बात से कोई आपत्ति है कि मैंने आपकी पत्नी के कपड़े बिना अनुमति के पहन लिए?" उसने स्पष्ट चिंता व्यक्त करते हुए पूछा।

“नहीं, बिलकुल नहीं। मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुमने कुमिको के कौन से कपड़े पहने हैं। आखिर उसने ही तो उन्हें यहाँ छोड़ा था। मुझे तो इस बात की चिंता है कि तुमने अपने कपड़े कैसे खो दिए।”
और सिर्फ मेरे कपड़े ही नहीं, मेरे जूते भी।
“तो यह सब कैसे हुआ?”
"मुझे कुछ याद नहीं," क्रेता कानो ने कहा। "मुझे बस इतना याद है कि मैं तुम्हारे बिस्तर पर नग्न अवस्था में उठी थी। मुझे याद नहीं कि उससे पहले क्या हुआ था।"
"तुम कुएं में उतरे थे ना—मेरे जाने के बाद?"
“मुझे यह बात याद है। और मैं वहीं सो गया था। लेकिन उसके बाद मुझे कुछ याद नहीं है।”
"इसका मतलब है कि आपको याद नहीं है कि आप कुएं से बाहर कैसे निकले?"
“बिल्कुल नहीं। मेरी याददाश्त में कुछ कमी है।” क्रेता कानो ने अपनी दोनों तर्जनी उंगलियां लगभग आठ इंच की दूरी पर उठाईं। इससे कितने समय का संकेत मिलता है, यह मुझे बिल्कुल नहीं पता था।
मुझे नहीं लगता कि आपको याद होगा कि आपने रस्सी की सीढ़ी का क्या किया था। वह तो अब गायब हो चुकी है।
मुझे सीढ़ी के बारे में कुछ नहीं पता। मुझे यह भी याद नहीं कि क्या मैं कुएं से बाहर निकलने के लिए उस पर चढ़ा था।
मैंने कुछ देर तक अपने हाथ में पकड़े कॉफी के कप को घूरकर देखा।
"क्या आप मुझे अपने पैरों के तलवे दिखा सकती हैं?" मैंने पूछा।
“नहीं, बिलकुल नहीं,” क्रेता कानो ने कहा। वह मेरी बगल वाली कुर्सी पर बैठ गई और अपने पैर मेरी तरफ फैला दिए ताकि मैं उसके

पैरों के तलवे देख सकूँ। मैंने उसके टखनों को अपने हाथों में लिया और उसके तलवों की जाँच की। वे एकदम साफ़ थे। सुंदर आकार के तलवों पर कोई निशान नहीं था—न कोई कट, न कोई मिट्टी, कुछ भी नहीं।
मैंने कहा, "न कीचड़ है, न कोई चोट।"
“मैं समझ गई,” क्रेता कानो ने कहा।
“कल पूरे दिन बारिश होती रही। अगर आपके जूते कहीं खो गए हों और आप वहाँ से चलकर यहाँ आए हों, तो आपके पैरों में थोड़ी मिट्टी होनी चाहिए थी। और आप ज़रूर बगीचे से होकर आए होंगे। लेकिन आपके पैर साफ़ हैं, और कहीं भी मिट्टी नहीं है।”
अच्छा ऐसा है।
"इसका मतलब है कि आप कहीं से भी नंगे पैर चलकर यहां नहीं आए हैं।"
क्रेता कानो ने प्रभावित होकर अपना सिर थोड़ा एक तरफ झुकाया। उन्होंने कहा, "यह सब तार्किक रूप से सुसंगत है।"
मैंने कहा, "यह तार्किक रूप से सही हो सकता है, लेकिन इससे हमें कोई फायदा नहीं हो रहा है। आपके जूते और कपड़े कहाँ खोए थे, और आप वहाँ से यहाँ कैसे आए?"
क्रेता कानो ने अपना सिर हिलाया। "मुझे कोई जानकारी नहीं है," उसने कहा।

•

जब वह सिंक पर खड़ी होकर ध्यान से बर्तन धो रही थी, मैं रसोई की मेज पर बैठा इन बातों के बारे में सोच रहा था। बेशक, मुझे भी इन सब बातों का कोई अंदाजा नहीं था।
मैंने पूछा, "क्या आपके साथ अक्सर ऐसा होता है कि आपको याद नहीं रहता कि आप कहां थे?"

“ऐसा मेरे साथ पहली बार नहीं हुआ है, जब मुझे याद नहीं रहता कि मैं कहाँ थी या क्या कर रही थी। ऐसा अक्सर नहीं होता, लेकिन कभी- कभार हो जाता है। एक बार मेरे कुछ कपड़े भी खो गए थे। लेकिन यह पहली बार है जब मेरे सारे कपड़े, जूते और सब कुछ खो गया है।” क्रेता कानो ने पानी बंद कर दिया और एक कपड़े से मेज को पोंछ दिया।
“क्रेता कानो, तुम्हें पता है,” मैंने कहा, “तुमने मुझे अपनी पूरी कहानी नहीं बताई। पिछली बार, कहानी अधूरी ही रह गई थी कि तुम गायब हो गई। याद है? अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो, तो मैं बाकी की कहानी सुनना चाहूँगा। तुमने मुझे बताया था कि कैसे गिरोह ने तुम्हें पकड़ लिया और तुम्हें अपनी वेश्याओं में से एक के रूप में काम करने के लिए मजबूर किया, लेकिन तुमने मुझे यह नहीं बताया कि नोबोरू वटाया से मिलने और उसके साथ सोने के बाद क्या हुआ।”
क्रेता कानो रसोई के सिंक से टेक लगाकर खड़ी थी और मेरी ओर देख रही थी। उसके हाथों पर पानी की बूँदें उसकी उंगलियों से बहकर ज़मीन पर गिर रही थीं। उसकी सफेद टी-शर्ट से उसके निपल्स साफ़ दिखाई दे रहे थे, जो मुझे पिछली रात देखे गए नग्न शरीर की याद दिला रहे थे।
“ठीक है, तो फिर। उसके बाद जो कुछ भी हुआ, मैं आपको सब कुछ अभी बता देता हूँ।”
क्रेता कानो एक बार फिर मेरी सीट के सामने वाली सीट पर बैठ गई। “श्री ओकाडा, जिस दिन मैं अपनी कहानी सुना रही थी, उसी दौरान मैंने कहानी इसलिए छोड़ दी क्योंकि मैं पूरी कहानी सुनाने के लिए तैयार नहीं थी। मैंने कहानी इसलिए शुरू की थी क्योंकि मुझे लगा कि मुझे आपको यथासंभव ईमानदारी से बताना चाहिए कि मेरे साथ

वास्तव में क्या हुआ था। लेकिन मुझे लगा कि मैं कहानी पूरी नहीं सुना सकती। जब मैं अचानक गायब हो गई, तो आपको ज़रूर झटका लगा होगा।”
क्रेता कानो ने अपने हाथ मेज पर रखे और बोलते समय सीधे मेरी ओर देखा।
"हाँ, मैं चौंक गया था, हालाँकि यह हाल ही में मेरे साथ हुई सबसे चौंकाने वाली घटना नहीं थी।"

•

“जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, वेश्या के रूप में मेरा आखिरी ग्राहक नोबोरू वटाया था। जब मैं उससे दूसरी बार माल्टा कानो के ग्राहक के रूप में मिली, तो मैंने उसे तुरंत पहचान लिया। मेरे लिए उसे भूलना नामुमकिन था। उसे मैं याद थी या नहीं, यह मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकती। श्री वटाया अपनी भावनाओं को प्रकट करने वाले व्यक्ति नहीं हैं।”
“लेकिन मुझे थोड़ा पीछे जाकर चीजों को व्यवस्थित करने दीजिए। सबसे पहले मैं आपको उस समय के बारे में बताऊंगा जब नोबोरू वाटाया मेरे ग्राहक थे। यह छह साल पहले की बात है।”
जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, उस समय मैं ऐसी अवस्था में थी जिसमें मुझे दर्द का बिल्कुल भी एहसास नहीं होता था। और सिर्फ दर्द ही नहीं: मुझे किसी भी तरह की संवेदना महसूस नहीं होती थी। मैं एक अथाह सुन्नता में जी रही थी। बेशक, मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं किसी भी तरह की संवेदना महसूस करने में असमर्थ थी—मुझे पता होता था कि कोई चीज गर्म है, ठंडी है या दर्दनाक है। लेकिन ये संवेदनाएं मुझ तक ऐसे आती थीं मानो दूर से, किसी ऐसी दुनिया से जिसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं था। इसीलिए मुझे पैसे के लिए पुरुषों के साथ यौन संबंध बनाने के विचार का कोई विरोध नहीं

हुआ। कोई मेरे साथ कुछ भी करे, जो संवेदनाएं मैं महसूस करती थी वे मेरी नहीं थीं। मेरा बेजान शरीर मेरा शरीर नहीं था।
“अब देखिए, मैंने आपको बताया था कि कैसे मुझे माफिया के वेश्यावृत्ति गिरोह में भर्ती किया गया था। जब उन्होंने मुझे पुरुषों के साथ सोने के लिए कहा तो मैंने ऐसा किया, और जब उन्होंने मुझे पैसे दिए तो मैंने उन्हें ले लिया। मैंने यहीं पर बात खत्म कर दी थी।”
मैंने उसकी ओर सिर हिलाकर सहमति दी।
“उस दिन उन्होंने मुझे शहर के बीचोंबीच स्थित एक होटल की सोलहवीं मंज़िल पर एक कमरे में जाने को कहा। ग्राहक का नाम वटाया था, जो थोड़ा अटपटा था। मैंने दरवाज़ा खटखटाया और अंदर गया, तो देखा कि वह आदमी सोफे पर बैठा है। ऐसा लग रहा था कि वह कमरे में मंगाई गई कॉफ़ी पीते हुए किताब पढ़ रहा था। उसने हरी पोलो शर्ट और भूरे रंग की सूती पैंट पहनी हुई थी। उसके बाल छोटे थे और उसने भूरे रंग के फ्रेम वाला चश्मा लगाया हुआ था। उसके सामने कॉफ़ी टेबल पर उसका कप, कॉफ़ी पॉट और किताब रखी थी। ऐसा लग रहा था कि वह पढ़ने में पूरी तरह डूबा हुआ था: उसकी आँखों में एक अलग ही चमक थी। उसके चेहरे के हाव-भाव साधारण थे, लेकिन उसकी आँखों में एक ऐसी ऊर्जा थी जो लगभग विचित्र थी। जब मैंने पहली बार उसे देखा, तो एक पल के लिए मुझे लगा कि मैं गलत कमरे में आ गया हूँ। लेकिन ऐसा नहीं था। उस आदमी ने मुझे अंदर आने और दरवाज़ा बंद करने को कहा।”
सोफे पर बैठे-बैठे, बिना कुछ बोले, उन्होंने मेरी पूरी बॉडी को एक नज़र से देखा। सिर से पैर तक। ग्राहक के कमरे में जाने पर अक्सर ऐसा ही होता था। ज़्यादातर मर्द मुझे ऊपर से नीचे तक

देखते थे। श्रीमान ओकाडा, मुझे माफ़ करना, लेकिन क्या आपने कभी किसी वेश्या को खरीदा है?
मैंने कहा कि मैंने ऐसा नहीं किया था।
“ऐसा लग रहा था जैसे वे सामान देख रहे हों। इस तरह देखे जाने की आदत पड़ने में ज़्यादा समय नहीं लगता। आख़िरकार, वे जिस्म के लिए पैसे दे रहे हैं; इसलिए सामान की जाँच करना उनके लिए स्वाभाविक है। लेकिन उस आदमी का मुझे देखने का तरीका अलग था। ऐसा लग रहा था जैसे वह मेरे जिस्म के आर-पार कुछ देख रहा हो। उसकी आँखों ने मुझे बेचैन कर दिया, मानो मैं आधा पारदर्शी इंसान बन गई हूँ।”
“मैं थोड़ी उलझन में थी, शायद: मेरा हैंडबैग ज़मीन पर गिर गया। हल्की सी आवाज़ हुई, लेकिन मैं इतनी खोई हुई थी कि कुछ देर के लिए मुझे पता ही नहीं चला कि मैंने क्या किया है। फिर मैं बैग उठाने के लिए झुकी। ज़मीन पर गिरने से उसका कुंडा खुल गया था और मेरे कुछ कॉस्मेटिक्स बाहर गिर गए थे। मैंने अपनी आइब्रो पेंसिल, लिप क्रीम और इत्र की एक छोटी बोतल उठाई और उन्हें वापस अपने बैग में रख लिया। वह लगातार अपनी निगाहें मुझ पर टिकाए रहा।”
जब मैंने फर्श से अपना सारा सामान उठाकर बैग में रख लिया, तो उसने मुझे कपड़े उतारने को कहा। मैंने उससे पूछा कि क्या मैं पहले नहा लूं, क्योंकि मुझे बहुत पसीना आ रहा था। उस दिन मौसम बहुत गर्म था और मेट्रो में भी मुझे पसीना आ रहा था। उसने कहा कि उसे इसकी परवाह नहीं है। उसके पास ज्यादा समय नहीं है। वह चाहता था कि मैं तुरंत कपड़े उतार दूं।

“जब मैं नग्न हो गई, तो उसने मुझे बिस्तर पर पेट के बल लेटने को कहा, जो मैंने किया। उसने मुझे स्थिर रहने, अपनी आँखें बंद रखने और मुझसे बात किए बिना न बोलने का आदेश दिया।”
“वह अपने कपड़ों के साथ मेरे बगल में बैठ गया। उसने बस इतना ही किया: बैठ गया। उसने मुझे छुआ तक नहीं। वह बस बैठा रहा और मेरे नग्न शरीर को देखता रहा। वह लगभग दस मिनट तक ऐसे ही बैठा रहा, जबकि मैं वहाँ बेसुध, पेट के बल लेटी रही। मैं महसूस कर सकती थी कि उसकी निगाहें मेरी गर्दन, पीठ, नितंबों और टांगों को लगभग दर्दनाक तीव्रता से भेद रही थीं। मुझे लगा कि शायद वह नपुंसक है। ऐसे ग्राहक कभी-कभार आ जाते हैं। वे एक वेश्या को खरीदते हैं, उसे कपड़े उतारने के लिए कहते हैं और उसे देखते हैं। कुछ लोग तो औरत के कपड़े उतारकर उसकी मौजूदगी में ही अपना काम पूरा कर लेते हैं। हर तरह के पुरुष अलग-अलग कारणों से वेश्याओं को खरीदते हैं। मैंने बस यही मान लिया कि वह भी उन्हीं में से एक था।”
कुछ देर बाद, उसने हाथ बढ़ाया और मुझे छूने लगा। उसकी दस उंगलियाँ मेरे शरीर पर कंधों से पीठ तक, पीठ से नितंबों तक, किसी चीज़ की तलाश में नीचे की ओर बढ़ने लगीं। यह फोरप्ले नहीं था। और न ही यह कोई मसाज थी। उसकी उंगलियाँ मेरे शरीर पर अत्यंत सावधानी से चल रही थीं, मानो किसी नक्शे पर रास्ता बना रही हों। और जब तक वह मेरे शरीर को छू रहा था, ऐसा लग रहा था जैसे वह सोच रहा हो—सामान्य अर्थों में नहीं, बल्कि अत्यंत एकाग्रता के साथ किसी चीज़ के बारे में गंभीरता से सोच रहा हो।
“एक पल तो उसकी उंगलियां बेतरतीब ढंग से इधर-उधर घूमती हुई प्रतीत होती थीं, और अगले ही पल वे रुक जातीं और काफी देर तक एक ही जगह ठहरी रहतीं। ऐसा लगता था मानो उंगलियां खुद ही उलझन से

स्थिरता की ओर बढ़ रही हों। क्या मैं अपनी बात स्पष्ट रूप से कह पा रहा हूँ? हर उंगली जीवित और सोचती हुई प्रतीत होती थी, मानो उसकी अपनी कोई इच्छा हो। यह एक बहुत ही अजीब अनुभूति थी। अजीब और विचलित करने वाली।”
फिर भी, उसकी उंगलियों के स्पर्श ने मुझे कामुक रूप से उत्तेजित कर दिया। मेरे जीवन में पहली बार। वेश्या बनने से पहले तक मेरे लिए यौन संबंध केवल पीड़ा का स्रोत थे। इसके बारे में सोचने मात्र से ही मैं भय से भर जाती थी—उस पीड़ा का भय जिसे मुझे सहना ही था। वेश्या बनने के बाद ठीक इसका उल्टा हुआ: मुझे कुछ भी महसूस नहीं हुआ। मुझे अब दर्द तो नहीं होता था, लेकिन कोई और संवेदना भी नहीं होती थी। मैं आहें भरती और ग्राहक को खुश करने के लिए उत्तेजित होने का नाटक करती, लेकिन यह सब नकली था, एक पेशेवर अभिनय। लेकिन जब वह मुझे छूता, तो मेरी आहें सच्ची होतीं। वे मेरे शरीर की गहराई से निकलतीं। मुझे पता था कि मेरे अंदर कुछ हिलने लगा है, मानो मेरे शरीर में मेरा गुरुत्वाकर्षण केंद्र अपनी जगह बदल रहा हो, पहले एक जगह और फिर दूसरी जगह। अंततः, उस आदमी ने अपनी उंगलियां हिलाना बंद कर दिया। मेरे कमर पर हाथ रखे हुए, वह कुछ सोच रहा था। उसकी उंगलियों के बीच से मैं समझ सकती थी कि वह खुद को संभाल रहा था, धीरे-धीरे अपनी सांसों को नियमित कर रहा था। फिर उसने अपने कपड़े उतारने शुरू कर दिए। मैंने अपनी आंखें बंद रखीं और अपना चेहरा तकिए में छिपा लिया, आगे क्या होगा इसका इंतजार करती रही। जब वह पूरी तरह नग्न हो गया, तो उसने मेरे हाथ-पैर चौड़े कर दिए।
कमरा लगभग डरावनी हद तक शांत था। एकमात्र आवाज़ एयर कंडीशनर की हल्की सरसराहट थी। वह आदमी खुद भी लगभग कोई आवाज़ नहीं कर रहा था। मैं उसकी साँसें भी नहीं सुन पा रही थी। उसने अपनी हथेलियाँ

मेरी पीठ पर रखीं। मैं एकदम ढीली पड़ गई। उसका लिंग मेरे नितंबों को छू गया, लेकिन वह अभी भी नरम था।
“तभी नाइट टेबल पर रखा फोन बजने लगा। मैंने आंखें खोलीं और उस आदमी का चेहरा देखने के लिए सिर घुमाया, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उसे पता ही नहीं था कि फोन बज रहा है। फोन आठ-नौ बार बजा और फिर बंद हो गया। कमरा फिर से शांत हो गया।”
क्रेता कानो कुछ देर रुकी, गहरी साँसें लीं। वह चुप रही और अपने हाथों को देखती रही। उसने कहा, "माफ़ कीजिए, लेकिन क्या मैं थोड़ी देर के लिए आराम कर सकती हूँ?"
“बिल्कुल नहीं,” मैंने कहा। मैंने अपने कॉफी कप में कॉफी दोबारा भरी और एक घूंट पी। उसने अपना ठंडा पानी पिया। हम दोनों लगभग दस मिनट तक बिना कुछ बोले वहीं बैठे रहे।
“उसकी उंगलियां फिर से चलने लगीं, मेरे शरीर के हर हिस्से को छू रही थीं,” क्रेता कानो ने आगे बताया, “बिना किसी अपवाद के हर हिस्से को। मैं सोचने की शक्ति खो बैठी। मेरे कान मेरे ही दिल की धड़कन से भर गए थे, जो धड़क रही थी लेकिन अजीब धीमी गति से। मैं खुद को संभाल नहीं पा रही थी। जैसे ही उसने मुझे सहलाया, मैं बार-बार जोर से चिल्लाई। मैंने अपनी आवाज को काबू में रखने की कोशिश की, लेकिन कोई और मेरी आवाज का इस्तेमाल कराहने और चीखने के लिए कर रहा था। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे शरीर का हर पेंच ढीला हो गया हो। फिर, बहुत देर बाद, और जब मैं अब भी पेट के बल लेटी हुई थी, उसने पीछे से मेरे अंदर कुछ डाला। वह क्या था, मुझे अब भी नहीं पता। वह बहुत बड़ा और सख्त था, लेकिन वह उसका लिंग नहीं था। मुझे इस बात का पूरा यकीन है। मुझे याद है कि मैंने सोचा था कि मैं सही थी: आखिरकार, वह नपुंसक था।”

“उसने मेरे अंदर जो भी डाला, उससे मुझे आत्महत्या की नाकाम कोशिश के बाद पहली बार दर्द का एहसास हुआ—असली, तीव्र दर्द जो सिर्फ मेरा था, किसी और का नहीं। मैं इसे कैसे बयान करूँ? दर्द इतना असहनीय था, मानो मेरा शरीर अंदर से फट रहा हो। और फिर भी, जितना भयानक यह महसूस हो रहा था, मैं दर्द के साथ-साथ सुख में भी तड़प रही थी। सुख और दर्द एक ही थे। क्या आप समझ रहे हैं मेरा मतलब? दर्द सुख पर आधारित था, और सुख दर्द पर। मुझे दोनों को एक ही इकाई के रूप में निगलना पड़ा। इस दर्द और सुख के बीच, मेरा शरीर दो हिस्सों में फटता रहा। इसे रोकने का मेरे पास कोई रास्ता नहीं था। फिर कुछ बहुत ही अजीब हुआ। मेरे शरीर के दो साफ-सुथरे फटे हिस्सों के बीच से एक ऐसी चीज रेंगती हुई निकली जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था और न ही छुआ था। वह कितनी बड़ी थी, मैं बता नहीं सकती थी, लेकिन वह नवजात शिशु की तरह गीली और फिसलन भरी थी। मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि वह क्या थी। वह हमेशा मेरे अंदर थी, और फिर भी वह ऐसी चीज थी जिसके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था। ज्ञान। इस आदमी ने इसे मुझसे निकलवाया था। “मैं जानना चाहती थी कि यह क्या है। मैं इसे अपनी आँखों से देखना चाहती थी। आख़िरकार, यह मेरा ही एक हिस्सा था, मुझे इसे देखने का अधिकार था। लेकिन यह नामुमकिन था। मैं सुख और दुख के सैलाब में फँसी हुई थी। एक पूर्णतः शारीरिक प्राणी होने के नाते, मैं केवल चीख सकती थी, लार टपका सकती थी और अपने कूल्हों को मरोड़ सकती थी। आँखें खोलना भी मेरे लिए असंभव था।”
“तब मैं यौन चरम सीमा पर पहुँच गई—हालाँकि, चरम सीमा से ज़्यादा, ऐसा लगा जैसे मुझे किसी ऊँची चट्टान से नीचे फेंक दिया गया हो। मैं चीखी, और मुझे ऐसा लगा जैसे कमरे का हर कांच चकनाचूर हो गया हो। मैंने न सिर्फ़ इसे महसूस किया, बल्कि मैंने

खिड़कियों और पीने के गिलासों को चूर-चूर होते देखा और सुना, और उन्हें अपने ऊपर बरसते हुए महसूस किया। फिर मुझे पेट में भयानक बेचैनी होने लगी। मेरी चेतना धीरे-धीरे कम होने लगी, और मेरा शरीर ठंडा पड़ गया। मुझे पता है यह अजीब लगेगा, लेकिन मुझे ऐसा लगा जैसे मैं ठंडे दलिया के कटोरे में बदल गई हूँ—पूरी तरह से चिपचिपी और गांठदार, और ये गांठें मेरे दिल की हर धड़कन के साथ धीरे-धीरे और ज़ोर से धड़क रही थीं। मैंने इस धड़कन को पहचाना: यह मेरे साथ पहले भी हो चुका था। और मुझे यह याद करने में ज़्यादा समय नहीं लगा कि यह क्या था। मैं इसे उस सुस्त, जानलेवा, कभी न खत्म होने वाले दर्द के रूप में जानती थी जिसका अनुभव मैंने अपने असफल आत्महत्या के प्रयास से पहले किया था। और, एक लोहे की छड़ की तरह, दर्द मेरी चेतना के ढक्कन को खोल रहा था—एक अदम्य बल से उसे खोल रहा था और खींच रहा था... मेरी इच्छा के विरुद्ध, मेरी स्मृति की जमी हुई सामग्री बाहर निकल रही थी। सुनने में भले ही अजीब लगे, लेकिन यह ऐसा था जैसे कोई मृत व्यक्ति अपना पोस्टमार्टम देख रहा हो। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी ऊंचे स्थान से देख रही हूँ कि मेरे शरीर को चीरा जा रहा है और एक-एक करके मेरे शरीर से चिपचिपे अंग बाहर निकाले जा रहे हैं।
मैं वहीं लेटी रही, तकिये पर लार टपक रही थी, मेरा शरीर ऐंठन से कांप रहा था और पेशाब पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं था। मुझे पता था कि मुझे खुद पर काबू पाने की कोशिश करनी चाहिए, लेकिन मुझमें ऐसा करने की शक्ति नहीं बची थी। मेरे शरीर का हर पेंच न सिर्फ ढीला पड़ गया था, बल्कि गिर ही गया था। मेरे धुंधले दिमाग में, मुझे अविश्वसनीय तीव्रता से यह एहसास हो रहा था कि मैं कितनी अकेली और कितनी शक्तिहीन थी। सब कुछ मुझसे बाहर निकल रहा था।

मूर्त और अमूर्त दोनों चीजें तरल बन गईं और लार या पेशाब की तरह मेरे शरीर से बह निकलीं। मुझे पता था कि मुझे ऐसा नहीं होने देना चाहिए, मुझे अपने अस्तित्व को इस तरह बहकर हमेशा के लिए खो जाने नहीं देना चाहिए, लेकिन मैं इस बहाव को रोकने के लिए कुछ नहीं कर सकती थी। मैं बस इसे होते हुए देख सकती थी। यह कब तक चलता रहा, मुझे कोई अंदाजा नहीं है। ऐसा लग रहा था जैसे मेरी सारी यादें, मेरी सारी चेतना, बस फिसल गई हो। जो कुछ भी मेरे अंदर था, अब बाहर था। आखिरकार, एक भारी पर्दे के गिरने की तरह, अंधेरा मुझे पल भर में घेर लिया।
और जब मुझे होश आया, तो मैं एक अलग ही इंसान था।
उस समय क्रेता कानो ने बोलना बंद कर दिया और मेरी तरफ देखने लगी।
“तब यही हुआ था,” उसने धीमी आवाज़ में कहा।
मैंने कुछ नहीं कहा, बल्कि उसकी बाकी कहानी सुनने का इंतजार किया।

क्रीटा कानो की नई शुरुआत

•

क्रेता कानो ने अपनी कहानी जारी रखी।
उसके बाद कुछ दिनों तक मुझे ऐसा महसूस होता रहा जैसे मेरा शरीर बिखर गया हो। चलते समय मुझे ऐसा लगता ही नहीं था कि मेरे पैर ज़मीन को छू रहे हैं। खाते समय मुझे ऐसा लगता ही नहीं था कि मैं कुछ चबा रहा हूँ। बैठे-बैठे मुझे ऐसा भयानक एहसास होता था कि मेरा शरीर अनंत अंतरिक्ष में किसी बड़े गुब्बारे जैसी चीज़ के नीचे या तो लगातार गिर रहा है या लगातार ऊपर तैर रहा है। मैं अपने शरीर की हलचल और संवेदनाओं को अपने आप से जोड़ नहीं पा रहा था। वे अपनी मर्ज़ी से काम कर रही थीं, मेरी इच्छा के बिना, बिना किसी क्रम या दिशा के। फिर भी मुझे इस तीव्र अराजकता को शांत करने का कोई तरीका नहीं सूझ रहा था। मैं बस यही कर सकता था कि समय आने पर सब कुछ अपने आप ठीक हो जाए। मैं सुबह से शाम तक अपने कमरे में बंद रहता था, मुश्किल से कुछ खाता था, और अपने परिवार को बस यही बताता था कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है।
“कुछ दिन ऐसे ही बीत गए—तीन-चार दिन, मैं कहूँगी। और फिर, अचानक, सब कुछ शांत हो गया, मानो कोई तेज़ हवा चली गई हो। मैंने चारों ओर देखा, खुद का विश्लेषण किया, और मुझे एहसास हुआ कि मैं एक नया इंसान बन गई हूँ, जो पहले मैं थी उससे बिल्कुल अलग। यह मेरा तीसरा रूप था। मेरा पहला रूप वह था जो अंतहीन पीड़ा में जी रहा था। मेरा दूसरा रूप वह था जो दर्द से मुक्त सुन्न अवस्था में जी रहा था। पहला रूप मेरी मूल अवस्था थी, जब मैं अपनी गर्दन से दर्द का भारी बोझ नहीं उतार पा रही थी। और जब मैंने इसे उतारने की कोशिश की—यानी, जब मैंने आत्महत्या करने की कोशिश की और असफल

रही—तो मैं अपना दूसरा रूप बन गई: एक अंतरिम रूप। सच है, वह शारीरिक दर्द जो मुझे तब तक सता रहा था, गायब हो गया था, लेकिन बाकी सभी संवेदनाएँ भी उसके साथ धुंध में खो गईं। जीने की इच्छा, मेरी शारीरिक शक्ति, एकाग्रता की मेरी मानसिक शक्ति: ये सब दर्द के साथ गायब हो गए थे। उस अजीब संक्रमण काल से गुज़रने के बाद, जो उभरा वह था... एक बिल्कुल नया मैं। क्या यही वह मैं था जो हमेशा से मेरे अंदर होना चाहिए था, यह मैं अभी तक नहीं कह सकता था। लेकिन मुझे यह अहसास जरूर था, चाहे वह कितना भी अस्पष्ट और अनिश्चित क्यों न हो, कि मैं कम से कम सही दिशा में आगे बढ़ रहा था।
क्रेता कानो ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और सीधे मेरी ओर देखा, मानो वह मेरी कहानी के बारे में मेरी राय जानना चाहती हो। उसके हाथ अभी भी मेज पर टिके हुए थे।
“तो फिर,” मैंने कहा, “आपका मतलब यह है कि उस आदमी ने आपको एक नया व्यक्तित्व दिया, क्या मैं सही हूँ?”
“शायद उसने किया होगा,” क्रेता कानो ने सिर हिलाते हुए कहा। उसका चेहरा सूखे तालाब की तलहटी की तरह भावहीन था। “उस आदमी के स्पर्श, उसकी बाहों में जकड़े जाने और जीवन में पहली बार इतना तीव्र यौन सुख महसूस करने से, मेरे शरीर में एक बहुत बड़ा बदलाव आया। ऐसा क्यों हुआ, और सभी लोगों में से, यह उसी आदमी के साथ क्यों हुआ, मुझे इसका कोई अंदाजा नहीं है। प्रक्रिया चाहे जो भी रही हो, सच्चाई यह है कि अंत में, मैंने खुद को एक बिल्कुल नए रूप में पाया। और एक बार जब मैं उस गहरे भ्रम से बाहर निकल आई जिसका मैंने पहले जिक्र किया था, तो मैंने इस नए स्वरूप को अधिक सच्चा मानने की कोशिश की—कम से कम इसलिए कि मैं अपनी उस गहरी सुन्नता से बाहर निकल पाई थी, जो मेरे लिए एक घुटन भरी जेल थी।”

फिर भी, उस घटना का कड़वा अनुभव लंबे समय तक मेरे साथ रहा, जैसे कोई काली परछाई। जब भी मुझे उसकी दस उंगलियां याद आतीं, जब भी मुझे वह चीज़ याद आती जो उसने मेरे अंदर डाली थी, जब भी मुझे वह चिपचिपा, गांठदार पदार्थ याद आता जो मेरे अंदर से निकला (या ऐसा लगा जैसे निकला हो), मैं बुरी तरह बेचैन हो जाती। मुझे क्रोध और निराशा का ऐसा एहसास होता, जिससे निपटने का मेरे पास कोई रास्ता नहीं था। मैंने उस दिन को अपनी याददाश्त से मिटाने की कोशिश की, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाई, क्योंकि उस आदमी ने मेरे शरीर के अंदर कुछ छेड़ दिया था। छेड़े जाने का वह एहसास मेरे साथ बना रहा, उस आदमी की याद से अटूट रूप से जुड़ गया, साथ ही अपवित्रता का एक स्पष्ट एहसास भी। यह एक विरोधाभासी भावना थी। क्या आप समझ रहे हैं मैं क्या कहना चाहती हूं? जो परिवर्तन मैंने अनुभव किया वह निस्संदेह सही और सच्चा था, लेकिन वह परिवर्तन किसी गंदी, गलत और झूठी चीज़ के कारण हुआ था। यह विरोधाभास—यह विभाजन— मुझे बहुत लंबे समय तक सताता रहेगा।
क्रेता कानो ने एक बार फिर मेज पर रखे अपने हाथों को घूरकर देखा।
“उसके बाद, मैंने अपना शरीर बेचना बंद कर दिया। इसमें अब कोई मतलब नहीं रह गया था।” क्रेता कानो के चेहरे पर कोई भाव नहीं था।
मैंने पूछा, "क्या तुम यूं ही नौकरी छोड़ सकते हो?"
उसने सिर हिलाया। “बस यूं ही,” उसने कहा। “मैंने किसी से कुछ नहीं कहा, बस खुद को बेचना बंद कर दिया, लेकिन इससे कोई समस्या नहीं हुई। यह लगभग निराशाजनक रूप से आसान था। मैंने सोचा था कि वे कम से कम मुझे फोन करेंगे, और मैं उस दिन के लिए खुद को तैयार कर रही थी, लेकिन वह दिन कभी नहीं आया। उन्होंने मुझसे कुछ नहीं

कहा। उन्हें मेरा पता पता था। उन्हें मेरा फोन नंबर पता था। वे मुझे धमकी दे सकते थे। लेकिन कुछ नहीं हुआ।”
“और इस तरह, कम से कम ऊपरी तौर पर, मैं फिर से एक साधारण लड़की बन गई थी। उस समय तक, मैंने अपने माता-पिता का सारा कर्ज़ चुका दिया था और अच्छी खासी रकम बचा ली थी। मैंने जो पैसे उसे दिए थे, उससे मेरे भाई ने अपना समय बर्बाद करने के लिए एक और नई कार खरीद ली थी, लेकिन वह कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था कि मैंने उसे चुकाने के लिए क्या किया था।”
मुझे अपने नए स्वरूप को समझने में समय लगा। मेरा यह स्वरूप किस प्रकार का था? यह कैसे कार्य करता था? यह कैसा महसूस करता था— और कैसे? मुझे इन सभी चीजों को अनुभव के माध्यम से समझना था, उन्हें याद रखना था और संचित करना था। क्या आप समझ रहे हैं मैं क्या कह रहा हूँ? मेरे भीतर का लगभग सब कुछ बिखर गया था और खो गया था। जिस समय मैं पूरी तरह से नया था, उसी समय मैं लगभग पूरी तरह से खाली भी था। मुझे उस खालीपन को धीरे-धीरे भरना था। एक-एक करके, अपने हाथों से, मुझे उस चीज को बनाना था जिसे मैं 'मैं' कहता हूँ—या, यूँ कहें कि उन चीजों को बनाना था जिनसे मैं बना था।
“मैं आधिकारिक तौर पर अभी भी एक छात्रा थी, लेकिन विश्वविद्यालय लौटने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मैं सुबह घर से निकलकर पार्क जाती और सारा दिन अकेले बेंच पर बैठी रहती, कुछ नहीं करती। या फिर पार्क के रास्तों पर इधर-उधर घूमती रहती। जब बारिश होती, तो मैं पुस्तकालय जाती, अपने सामने मेज पर एक किताब रखती और पढ़ने का नाटक करती। कभी-कभी मैं पूरा दिन सिनेमाघर में या यामानोटे सर्कल लाइन पर शहर के चक्कर लगाते हुए बिता देती। मुझे ऐसा लगता था जैसे मैं घोर अंधेरे में अकेली तैर रही हूँ। सलाह के लिए

मेरे पास कोई नहीं था। अगर मेरी बहन माल्टा वहाँ होती, तो मैं उससे सब कुछ बाँट सकती थी, लेकिन उस समय, ज़ाहिर है, वह माल्टा द्वीप पर दूर एकांत में तपस्या कर रही थी। मुझे उसका पता नहीं था। उससे संपर्क करने का कोई तरीका नहीं था। इसलिए मुझे इन समस्याओं का समाधान पूरी तरह से खुद ही करना पड़ा। किसी भी किताब ने मेरे अनुभव को इस तरह से नहीं समझाया। फिर भी, हालाँकि मैं अकेली थी, दुखी नहीं थी। मैं सक्षम थी खुद से चिपके रहना। कम से कम अब मेरे पास खुद का सहारा तो था।
“मेरा नया स्वरूप दर्द को महसूस कर सकता था, हालांकि पहले जैसी तीव्रता से नहीं। मैं इसे महसूस कर सकता था, लेकिन साथ ही मैंने इससे बचने का एक तरीका भी सीख लिया था। कहने का तात्पर्य यह है कि मैं उस शारीरिक स्वरूप से अलग हो सकता था जो दर्द महसूस कर रहा था। क्या आप समझ रहे हैं मैं क्या कह रहा हूँ? मैं स्वयं को एक शारीरिक स्वरूप और एक गैर-शारीरिक स्वरूप में विभाजित कर सकता था। इस तरह वर्णन करने पर यह कठिन लग सकता है, लेकिन एक बार जब आप यह तरीका सीख लेते हैं, तो यह बिल्कुल भी कठिन नहीं है। जब मुझे दर्द होता है, तो मैं अपने शारीरिक स्वरूप को छोड़ देता हूँ। यह ठीक वैसे ही है जैसे किसी ऐसे व्यक्ति के आने पर चुपचाप दूसरे कमरे में चले जाना जिससे आप मिलना नहीं चाहते। मैं इसे बहुत सहजता से कर सकता हूँ। मैं पहचान लेता हूँ कि मेरे शरीर में दर्द आया है; मैं दर्द की उपस्थिति को महसूस करता हूँ; लेकिन मैं वहाँ नहीं होता। मैं दूसरे कमरे में होता हूँ। और इसलिए दर्द का बंधन मुझे जकड़ नहीं पाता।”
"और आप जब चाहें तब इस तरह खुद से अलग हो सकते हैं?"
“नहीं,” क्रेता कानो ने कुछ देर सोचने के बाद कहा। “शुरुआत में मैं ऐसा तभी कर पाती थी जब मेरे शरीर में शारीरिक पीड़ा होती

थी। पीड़ा ही मेरी चेतना को अलग करने की कुंजी थी। बाद में, माल्टा कानो की मदद से, मैंने इसे कुछ हद तक अपनी इच्छा से करना सीख लिया। लेकिन यह बहुत बाद की बात है।”
कुछ ही समय बाद माल्टा कानो का एक पत्र आया। उसने मुझे बताया कि उसने माल्टा में चल रही तीन साल की ट्रेनिंग पूरी कर ली है और एक हफ्ते के अंदर जापान लौट रही है। उसने जापान में स्थायी रूप से रहने की योजना बनाई थी। उससे दोबारा मिलने की संभावना से मैं बहुत खुश हुआ। हम लगभग आठ साल से अलग थे। और जैसा कि मैंने पहले बताया, माल्टा ही दुनिया की एकमात्र ऐसी इंसान थी जिससे मैं अपने दिल की हर बात खुलकर कह सकता था।
“जिस दिन वह जापान लौटी, मैंने माल्टा को अपने साथ घटी हर बात बताई। उसने बिना कुछ कहे, बिना एक भी सवाल पूछे, मेरी लंबी, अजीब कहानी अंत तक सुनी। और जब मेरी बात खत्म हुई, तो उसने एक गहरी साँस ली और मुझसे कहा, ‘मुझे पता है कि मुझे तुम्हारे साथ होना चाहिए था, मुझे हर समय तुम्हारी देखभाल करनी चाहिए थी। किसी कारण से, मुझे कभी एहसास नहीं हुआ कि तुम्हें इतनी गंभीर समस्याएँ हैं। शायद इसलिए कि तुम मेरे बहुत करीब थे। लेकिन जो भी हो, कुछ काम थे जो मुझे करने थे। कुछ जगहें थीं जहाँ मुझे अकेले जाना था। मेरे पास कोई विकल्प नहीं था।’”
मैंने उससे कहा कि उसे इन बातों से परेशान नहीं होना चाहिए। आखिर ये मेरी ही समस्याएं थीं, और मैं धीरे-धीरे सुधर रहा था। उसने कुछ देर सोचा, कुछ नहीं कहा, और फिर बोली, ‘जापान छोड़ने के बाद से तुमने जो कुछ भी सहा है, वह तुम्हारे लिए बहुत कष्टदायक और कड़वा रहा है, लेकिन जैसा कि तुम कहते हो, तुम धीरे-धीरे सही रास्ते पर आगे बढ़ रहे हो। तुम्हारे लिए सबसे बुरा समय बीत चुका है, और वह कभी वापस नहीं आएगा। ऐसी बातें तुम्हारे साथ फिर कभी

नहीं होंगी। यह आसान नहीं होगा, लेकिन कुछ समय बीतने के बाद तुम बहुत सी बातें भूल पाओगे। लेकिन सच्चे आत्म के बिना कोई व्यक्ति जी नहीं सकता। यह उस ज़मीन की तरह है जिस पर हम खड़े होते हैं। ज़मीन के बिना हम कुछ भी नहीं बना सकते।’
“‘लेकिन एक बात है जिसे तुम्हें कभी नहीं भूलना चाहिए, और वह यह है कि उस पुरुष ने तुम्हारे शरीर को अपवित्र कर दिया है। यह एक ऐसी घटना है जो कभी नहीं होनी चाहिए थी। तुम हमेशा के लिए खो सकती थी; तुम्हें हमेशा के लिए वास्तविक शून्यता में भटकना पड़ सकता था। सौभाग्य से, तुम्हारी वर्तमान अवस्था तुम्हारी वास्तविक, मूल अवस्था नहीं थी, और इसलिए इसका विपरीत प्रभाव पड़ा। तुम्हें फंसाने के बजाय, इसने तुम्हें तुम्हारी क्षणभंगुर अवस्था से मुक्त कर दिया। यह महज़ सौभाग्य से हुआ। हालाँकि, अपवित्रता तुम्हारे भीतर बनी हुई है, और किसी न किसी समय तुम्हें इससे छुटकारा पाना ही होगा। यह मैं तुम्हारे लिए नहीं कर सकता। मैं तुम्हें यह भी नहीं बता सकता कि यह कैसे करना है। तुम्हें स्वयं ही इसका तरीका खोजना होगा, और इसे स्वयं ही करना होगा।’
“मेरी बहन ने मुझे मेरा नया नाम दिया: क्रेता कानो। उसने कहा, मेरा नया जन्म हुआ है, इसलिए मुझे एक नए नाम की ज़रूरत थी। मुझे यह नाम शुरू से ही पसंद आ गया। माल्टा कानो ने मुझे आध्यात्मिक माध्यम के रूप में इस्तेमाल करना शुरू किया। उनके मार्गदर्शन में, मैंने अपने नए स्वरूप को नियंत्रित करना और शरीर को आत्मा से अलग करना सीखा। अंततः, अपने जीवन में पहली बार, मैं शांति के साथ जीने में सक्षम हुई। बेशक, मेरा असली स्वरूप अभी भी मेरी पहुँच से बाहर था। इसके लिए मुझमें अभी भी बहुत कुछ कमी थी। लेकिन अब, माल्टा कानो के रूप में, मेरे पास एक साथी था, जिस पर

मैं भरोसा कर सकती थी, जो मुझे समझती थी और मुझे स्वीकार करती थी। वह मेरी मार्गदर्शक और रक्षक बन गईं।”
लेकिन फिर आपकी मुलाकात नोबोरू वटाया से दोबारा हुई, है ना? क्रेता कानो ने सिर हिलाया। “यह सच है,” उसने कहा। “मैं नोबोरू वटाया से दोबारा मिली थी। यह इस साल मार्च की शुरुआत में हुआ था। मुझे उसके द्वारा ले जाए जाने और मेरे रूपांतरण से गुज़रने और माल्टा कानो के साथ काम शुरू करने के बाद पाँच साल से ज़्यादा समय बीत चुका था। जब वह माल्टा से मिलने हमारे घर आया, तब हम फिर से आमने-सामने आए। हमने एक-दूसरे से बात नहीं की। मैंने उसे प्रवेश द्वार पर बस एक झलक देखा, लेकिन वह एक झलक ही मुझे बिजली के झटके की तरह स्तब्ध करने के लिए काफी थी। वह वही आदमी था—आखिरी आदमी जिसने मुझे खरीदा था।”
“मैंने माल्टा कानो को एक तरफ बुलाया और उसे बताया कि यही वह आदमी है जिसने मेरे साथ दुष्कर्म किया है। ‘ठीक है,’ उसने कहा। ‘सब कुछ मुझ पर छोड़ दो। चिंता मत करो। तुम नज़र से दूर रहो। ध्यान रखना कि वह तुम्हें न देख पाए।’ मैंने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था। इसीलिए मुझे नहीं पता कि उस समय उसने और माल्टा कानो ने क्या बात की।”
"नोबोरू वाटाया माल्टा कानो से आखिर क्या चाहता होगा?"
क्रेता कानो ने सिर हिलाया। "मुझे माफ कीजिए, श्रीमान ओकाडा, मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है।"
"लोग आपके घर इसलिए आते हैं क्योंकि उन्हें कुछ चाहिए होता है, क्या आमतौर पर ऐसा ही नहीं होता?"
"हां यह है।"
वे किस तरह की चीजों के लिए आते हैं?
"हर तरह की चीजें।"

“लेकिन किस तरह की चीजें? क्या आप मुझे एक उदाहरण दे सकते हैं?” क्रेता कानो ने एक पल के लिए अपने होंठ दबाए। “खोई हुई चीजें। उनका भाग्य। भविष्य। सब कुछ।”
“और आप दोनों को इन चीजों के बारे में पता है?”
“जी हां। सब कुछ तो नहीं, लेकिन अधिकतर जवाब यहीं हैं,” क्रेता कानो ने अपनी कनपटी की ओर इशारा करते हुए कहा। “आपको बस अंदर जाना होगा।”
"जैसे किसी कुएं में उतरना?"
“हां, बिलकुल वैसे ही।”
मैंने अपनी कोहनियों को मेज पर रखा और एक लंबी, गहरी सांस ली। “अब, अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं आपसे कुछ जानना चाहता हूँ। आप कुछ बार मेरे सपनों में आए। आपने जानबूझकर ऐसा किया। आपने ऐसा होने की इच्छा की। क्या मैं सही कह रहा हूँ?”
“हां, आप सही कह रहे हैं,” क्रेता कानो ने कहा। “यह इच्छाशक्ति का कार्य था। मैं आपकी चेतना में प्रवेश कर गई और अपने शरीर को आपके शरीर से जोड़ लिया।”
“क्या आप इस तरह की चीजें कर सकते हैं?”
“हां, मैं कर सकता हूं। यह मेरे कार्यों में से एक है।”
“तुम और मैंने मन ही मन में अपने शरीर को एक कर लिया।” जब मैंने खुद को ये शब्द बोलते हुए सुना, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने किसी सफेद दीवार पर एक बेबाक, अतियथार्थवादी पेंटिंग टांग दी हो। और फिर, जैसे दूर से पेंटिंग को देखकर यह सुनिश्चित कर रहा हो कि वह टेढ़ी तो नहीं टंगी है, मैंने फिर से वही शब्द कहे: “तुम और मैंने मन ही मन में अपने शरीर को एक कर लिया। लेकिन मैंने तुम दोनों से कभी कुछ नहीं माँगा। तुम्हारे बारे में कुछ जानने का

ख्याल भी मेरे मन में कभी नहीं आया। है ना? तो फिर तुमने ऐसा करने का जिम्मा क्यों उठाया?”
"क्योंकि मुझे माल्टा कानो द्वारा ऐसा करने का आदेश दिया गया था।"
“इसका मतलब है कि माल्टा कानो ने मेरे दिमाग में झाँकने के लिए तुम्हारा इस्तेमाल एक माध्यम के रूप में किया। वह क्या खोज रही थी? नोबोरू वटाया के लिए जवाब? या कुमिको के लिए?”
क्रेता कानो कुछ देर तक चुप रहीं। वह उलझन में लग रही थीं। उन्होंने कहा, "मुझे सच में नहीं पता। मुझे विस्तृत जानकारी नहीं दी गई। इस तरह मैं एक माध्यम के रूप में अधिक सहजता से काम कर सकती हूँ। मेरा एकमात्र काम लोगों के विचारों को अपने माध्यम से महसूस कराना है। माल्टा कानो का काम है कि वह मेरे द्वारा प्राप्त विचारों को अर्थ दें। लेकिन कृपया समझें, श्री ओकाडा: माल्टा कानो मूल रूप से आपके पक्ष में हैं। आप जानते हैं, मैं नोबोरू वटाया से नफरत करती हूँ, और माल्टा कानो की पहली चिंता मेरे लिए है। उन्होंने यह सब आपके लिए किया, श्री ओकाडा। मेरा यही मानना है।"

•

क्रेता कानो पड़ोस के सुपरमार्केट में खरीदारी करने गई। मैंने उसे पैसे दिए और सुझाव दिया कि जब वह बाहर जा ही रही है, तो उसे शालीन कपड़े पहन लेने चाहिए। उसने सिर हिलाया और कुमिको के कमरे में गई, जहाँ उसने एक सफेद सूती ब्लाउज और फूलों के डिज़ाइन वाली स्कर्ट पहनी।
"क्या आपको कोई आपत्ति नहीं है, श्री ओकाडा, अगर मैं आपकी पत्नी के कपड़े पहन लूं?"

मैंने सिर हिलाया। “उसके पत्र में लिखा था कि मैं ये सब फेंक दूं। अगर तुम उसकी चीजें पहनोगी तो किसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा।”
जैसा मैंने सोचा था, सब कुछ उस पर एकदम फिट बैठ रहा था—लगभग अजीब तरह से। यहाँ तक कि उसके जूतों का साइज़ भी एक जैसा था। क्रेता कानो कुमिको की सैंडल पहनकर घर से निकली। क्रेता कानो को कुमिको के कपड़ों में देखकर मुझे एक बार फिर ऐसा लगा कि वास्तविकता अपनी दिशा बदल रही है, ठीक वैसे ही जैसे कोई विशाल यात्री जहाज धीरे-धीरे नए रास्ते पर चल पड़ता है।
क्रेता कानो के बाहर जाने के बाद, मैं सोफे पर लेटा हुआ बगीचे को देखता रहा, मेरा दिमाग बिल्कुल खाली था। तीस मिनट बाद वह टैक्सी से वापस आई, उसके हाथ में किराने के सामान से भरे तीन बड़े बैग थे। फिर उसने मेरे लिए हैम, अंडे और सार्डिन का सलाद बनाया। "मुझे बताइए, श्रीमान ओकाडा, क्या आपको क्रीट में कोई दिलचस्पी है?" खाना खाने के बाद क्रीटा कानो ने अचानक पूछा।
“क्रीट?” मैंने कहा। “आपका मतलब भूमध्य सागर में स्थित क्रीट द्वीप से है?”
"हाँ।"
मैंने सिर हिलाया। "मुझे नहीं पता," मैंने कहा। "ऐसा नहीं है कि मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। मैंने इसके बारे में कभी ज्यादा सोचा ही नहीं।"
क्या आप मेरे साथ क्रीट जाना चाहेंगे?
“क्या मैं तुम्हारे साथ क्रीट चलूँ?” मैंने भी यही सवाल दोहराया।
दरअसल, मैं कुछ समय के लिए जापान से दूर जाना चाहती हूँ। आपके जाने के बाद जब मैं कुएँ में थी, तब से यही सोच रही थी। माल्टा ने

जब मुझे क्रीट नाम दिया, तब से मेरा मन करता है कि मैं एक दिन क्रीट जाऊँ। तैयारी के लिए मैंने द्वीप के बारे में कई किताबें पढ़ीं। मैंने खुद से ग्रीक भाषा भी सीखी, ताकि समय आने पर मैं वहाँ रह सकूँ। मेरे पास अच्छी-खासी बचत है, जिससे हम वहाँ आराम से लंबे समय तक रह सकते हैं। आपको पैसों की चिंता करने की ज़रूरत नहीं होगी।
"क्या माल्टा कानो को पता है कि आप क्रीट जाने की योजना बना रहे हैं?"
नहीं। मैंने उससे इस बारे में कुछ नहीं कहा है, लेकिन मुझे यकीन है कि उसे कोई आपत्ति नहीं होगी। शायद वह इसे मेरे लिए अच्छा ही समझेगी। पिछले पाँच सालों से वह मुझे एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल कर रही है, लेकिन ऐसा नहीं है कि वह सिर्फ मेरा शोषण कर रही है। वह मेरी रिकवरी में मदद करने के लिए भी ऐसा कर रही है। उसका मानना है कि अलग-अलग लोगों के मन या अहंकार को मेरे माध्यम से गुजारकर, वह मुझे खुद को अच्छी तरह समझने में मदद करेगी। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? यह मेरे लिए एक तरह से अहंकार होने का अप्रत्यक्ष अनुभव है।
“सोचकर देखें तो, मैंने अपने जीवन में कभी किसी से स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा, ‘मैं यह करना चाहता हूँ।’ वास्तव में, मैंने कभी स्वयं से भी यह नहीं सोचा, ‘मैं यह करना चाहता हूँ।’ जन्म से ही, मेरे जीवन का केंद्र दर्द ही रहा है। मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य तीव्र दर्द के साथ सह-अस्तित्व का मार्ग खोजना था। और जब मैं बीस वर्ष का हुआ और आत्महत्या का प्रयास करने पर दर्द गायब हो गया, तो उस दर्द की जगह एक गहरी, गहरी सुन्नता ने ले ली। मैं एक चलते-फिरते मुर्दे जैसा था। मेरे ऊपर भावनाओं का एक घना पर्दा पड़ा हुआ था। मेरे पास कुछ भी नहीं था—एक अंश भी नहीं—

जिसे मेरी अपनी इच्छा कहा जा सके। और फिर, जब नोबोरू वटाया ने मेरे शरीर का उल्लंघन किया और मेरे मन को खोल दिया, तब मुझे अपना तीसरा स्वरूप प्राप्त हुआ। फिर भी, मैं अभी भी स्वयं नहीं था। मैं बस इतना ही कर पाया था कि स्वयं के लिए न्यूनतम आवश्यक ढाँचा—महज एक ढाँचा—प्राप्त कर पाया था। और उस ढाँचे के रूप में, माल्टा कानो के मार्गदर्शन में, मैंने अपने भीतर कई अहमों को समाहित किया।”
“तो इस तरह मैंने अपने जीवन के छब्बीस साल बिताए हैं। ज़रा सोचिए: छब्बीस साल तक मैं कुछ भी नहीं थी। कुएँ में अकेले बैठकर सोचते समय यही विचार मेरे मन में ज़ोर से कौंधा। इतने लंबे समय के दौरान, जिसे मैं ‘मैं’ कहती थी, वह वास्तव में कुछ भी नहीं थी, मुझे एहसास हुआ। मैं एक वेश्या के सिवा कुछ नहीं थी। देह की वेश्या। मन की वेश्या।”
“लेकिन अब मैं अपने नए स्वरूप को समझने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं न तो कोई पात्र हूँ और न ही किसी मार्ग का माध्यम। मैं इस धरती पर अपनी पहचान स्थापित करने का प्रयास कर रहा हूँ।”
"मैं आपकी बात समझ रहा हूँ, लेकिन फिर भी, आप मेरे साथ क्रीट क्यों जाना चाहते हैं?"
“क्योंकि यह शायद हम दोनों के लिए अच्छा होगा: आपके लिए, श्री ओकाडा, और मेरे लिए,” क्रेता कानो ने कहा। “फिलहाल हम दोनों में से किसी को भी यहाँ रहने की ज़रूरत नहीं है। और अगर ऐसा है, तो मुझे लगता है कि हमारे लिए यहाँ न रहना ही बेहतर होगा। श्री ओकाडा, मुझे बताइए, क्या आपके पास कोई कार्ययोजना है जिसका आपको पालन करना है—क्या आपके पास आगे की कोई योजना है?”
“मुझे बस कुमिको से बात करनी है। जब तक हम आमने-सामने नहीं मिलते और वो मुझे ये नहीं बताती कि हमारा साथ खत्म हो गया है, तब

तक मैं कुछ नहीं कर सकता। लेकिन मैं उसे कैसे ढूंढूंगा, ये मुझे बिल्कुल नहीं पता।”
“लेकिन अगर आपको वो मिल जाए और आपकी शादी, जैसा कि आप कहते हैं, ‘खत्म’ हो जाए, तो क्या आप मेरे साथ क्रीट आने पर विचार करेंगे? हम दोनों को किसी न किसी मोड़ पर कुछ नया शुरू करना होगा,” क्रीटा कानो ने मेरी आँखों में देखते हुए कहा। “मुझे लगता है कि क्रीट द्वीप जाना एक अच्छी शुरुआत होगी।”
मैंने कहा, "बिल्कुल भी बुरा नहीं है। थोड़ा अचानक ज़रूर है, लेकिन शुरुआत बुरी नहीं है।"
क्रेता कानो ने मेरी तरफ मुस्कुराया। जब मैंने इस बारे में सोचा, तो मुझे एहसास हुआ कि यह पहली बार था जब उसने ऐसा किया था। इससे मुझे लगा कि कुछ हद तक इतिहास सही दिशा में आगे बढ़ रहा है। उसने कहा, "हमारे पास अभी भी समय है। अगर मैं जल्दी भी करूँ, तो भी तैयार होने में कम से कम दो हफ्ते लगेंगे। श्री ओकाडा, कृपया इस समय का सदुपयोग करके इस पर विचार करें। मुझे नहीं पता कि मैं आपको कुछ दे सकती हूँ या नहीं। मुझे लगता है कि इस समय मेरे पास देने के लिए कुछ भी नहीं है। मैं सचमुच खाली हूँ। मैं अभी शुरुआत कर रही हूँ, धीरे-धीरे इस खाली पात्र में कुछ भर रही हूँ। श्री ओकाडा, अगर आप चाहें तो मैं खुद को आपको दे सकती हूँ। मुझे विश्वास है कि हम एक-दूसरे की मदद कर सकते हैं।"
मैंने सिर हिलाया। “मैं इस बारे में सोचूंगा,” मैंने कहा। “मुझे बहुत खुशी है कि आपने मुझे यह प्रस्ताव दिया, और मुझे लगता है कि अगर हम साथ चलें तो बहुत अच्छा होगा। सच में। लेकिन मुझे बहुत सी चीजों के बारे में सोचना है और बहुत सी चीजों को सुलझाना है।”

और अगर अंत में आप कहते हैं कि आप क्रीट नहीं जाना चाहते, तो चिंता मत कीजिए। मुझे बुरा नहीं लगेगा। मुझे खेद जरूर होगा, लेकिन मुझे आपका ईमानदार जवाब चाहिए।

•

उस रात क्रेता कानो फिर मेरे घर पर रुकी। सूरज ढलने लगा तो उसने मुझे पड़ोस के पार्क में टहलने के लिए बुलाया। मैंने अपने चोट के बारे में भूलकर घर से निकलने का फैसला किया। भला ऐसी बातों की चिंता करने का क्या फायदा? हम सुहावनी गर्मी की शाम में एक घंटे तक टहले, फिर घर आकर खाना खाया।
रात के खाने के बाद, क्रेता कानो ने कहा कि वह मेरे साथ सोना चाहती है। उसने कहा कि वह मेरे साथ शारीरिक संबंध बनाना चाहती है। यह सब इतना अचानक हुआ कि मुझे समझ नहीं आया कि क्या करूं, और मैंने भी उससे यही कहा: "यह सब इतना अचानक हुआ। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं।"
मेरी ओर सीधे देखते हुए, क्रेता कानो ने कहा, “श्री ओकाडा, आप मेरे साथ क्रेते चलें या न चलें, इससे बिल्कुल अलग, मैं चाहती हूँ कि आप मुझे एक बार—सिर्फ एक बार—वेश्या के रूप में अपनाएँ। मैं चाहती हूँ कि आप मेरा जिस्म खरीदें। यहीं। आज रात। यह मेरा आखिरी मौका होगा। मैं वेश्यावृत्ति छोड़ दूँगी, चाहे वह देह की हो या मन की। मैं क्रेता कानो नाम भी त्याग दूँगी। लेकिन ऐसा करने के लिए, मैं एक स्पष्ट सीमा रेखा चाहती हूँ, कुछ ऐसा जो कहे, ‘यह यहीं समाप्त होता है’।”
"मैं समझती हूं कि आप एक सीमा रेखा चाहते हैं, लेकिन आपको मेरे साथ सोने की क्या जरूरत है?"
“क्या आप नहीं समझते, श्री ओकाडा? आपके वास्तविक स्वरूप के साथ सोने से, वास्तविकता में अपने शरीर को आपके शरीर से जोड़ने से,

मैं आपके, श्री ओकाडा नामक इस व्यक्ति के भीतर से गुजरना चाहती हूँ। ऐसा करके, मैं अपने भीतर मौजूद इस अपवित्रता से मुक्त होना चाहती हूँ। यही वह सीमा बिंदु होगा।”
"खैर, मुझे खेद है, लेकिन मैं लोगों का मांस नहीं खरीदता।" क्रेता कानो ने अपने होंठ दबाए। “तो फिर ऐसा क्यों नहीं करते? पैसों के बजाय, मुझे अपनी पत्नी के कुछ कपड़े और जूते दे दो। इसे ही मेरे शरीर की औपचारिक कीमत मान लेते हैं। ठीक रहेगा, है ना? फिर तो मेरी मुक्ति हो जाएगी।”
“बच गए। इसका मतलब यह है कि नोबोरू वटाया द्वारा तुम्हारे अंदर छोड़ी गई अपवित्रता से तुम्हें मुक्ति मिल जाएगी?”
“हां, मेरा मतलब बिल्कुल यही है,” क्रेता कानो ने कहा।
मैंने उसे घूर कर देखा। नकली पलकों के बिना, क्रेता कानो का चेहरा पहले से कहीं ज़्यादा बचकाना लग रहा था। मैंने कहा, "बताओ, आखिर यह नोबोरू वटाया कौन है? वह मेरी पत्नी का भाई है, लेकिन मैं उसे ठीक से जानता भी नहीं। वह क्या सोच रहा है? वह क्या चाहता है? मुझे बस इतना पता है कि हम दोनों एक-दूसरे से नफ़रत करते हैं।"
“नोबोरू वाटाया एक ऐसी दुनिया से ताल्लुक रखता है जो आपकी दुनिया से बिलकुल उलट है,” क्रेता कानो ने कहा। फिर वह अपनी बात जारी रखने के लिए सही शब्द ढूंढती हुई दिखीं। “एक ऐसी दुनिया में जहाँ आप सब कुछ खो रहे हैं, श्री ओकाडा, नोबोरू वाटाया सब कुछ हासिल कर रहा है। एक ऐसी दुनिया में जहाँ आपको ठुकराया जा रहा है, उसे स्वीकार किया जा रहा है। और इसका ठीक उल्टा भी उतना ही सच है। इसीलिए वह आपसे इतनी नफरत करता है।”

मुझे समझ नहीं आता। वो मेरी मौजूदगी पर ध्यान ही क्यों देगा? वो मशहूर है, ताकतवर है। उसके मुकाबले मैं कुछ भी नहीं। उसे मुझ पर नफरत करने में समय और मेहनत क्यों लगानी चाहिए?
क्रेता कानो ने सिर हिलाया। “नफरत एक लंबी, गहरी परछाई की तरह है। अक्सर तो जिस पर यह पड़ती है, उसे खुद भी नहीं पता होता कि यह कहां से आती है। यह दोधारी तलवार की तरह है। जब आप दूसरे को चोट पहुंचाते हैं, तो आप खुद को भी चोट पहुंचाते हैं। आप जितना हिंसक रूप से दूसरे पर वार करते हैं, उतना ही हिंसक रूप से आप खुद पर भी वार करते हैं। यह अक्सर जानलेवा हो सकती है। लेकिन इससे छुटकारा पाना आसान नहीं है। कृपया सावधान रहें, श्री ओकाडा। यह बहुत खतरनाक है। एक बार दिल में जड़ जमा लेने के बाद, नफरत से छुटकारा पाना दुनिया में सबसे मुश्किल काम है।”
और आप इसे महसूस कर पा रहे थे, है ना?—नोबोरू वटाया के दिल में बसी नफरत की जड़ को।"
“हाँ, मैं थी। मैं हूँ,” क्रेता कानो ने कहा। “उसी चीज़ ने मेरे शरीर को दो टुकड़ों में बाँट दिया, मुझे अपवित्र कर दिया, श्री ओकाडा। इसीलिए मैं नहीं चाहती कि वह वेश्या के रूप में मेरा आखिरी ग्राहक हो। क्या आप समझते हैं?”
उस रात मैं क्रेता कानो के साथ बिस्तर पर गया। मैंने कुमिको के कपड़े उतार दिए और अपने शरीर को उसके शरीर से मिला लिया। चुपचाप और कोमल भाव से। ऐसा लगा जैसे यह मेरे सपने का ही विस्तार हो, मानो मैं सपने में क्रेता कानो के साथ जो कुछ किया था, उसे वास्तविकता में हूबहू दोहरा रहा हूँ। उसका शरीर वास्तविक और सजीव था। लेकिन कुछ कमी थी: यह स्पष्ट अहसास कि यह सब सचमुच हो रहा है। कई बार मुझे यह भ्रम हुआ कि मैं यह सब कुमिको के साथ कर रहा हूँ, क्रेता कानो के साथ नहीं। मुझे यकीन था कि मैं चरम सुख

पाते ही जाग जाऊँगा। लेकिन मैं नहीं जागा। मैं उसके भीतर ही चरम सुख तक पहुँचा। यह वास्तविकता थी। सच्ची वास्तविकता। लेकिन हर बार जब मैंने इस तथ्य को पहचाना, तो वास्तविकता थोड़ी कम वास्तविक लगने लगी। वास्तविकता बिखर रही थी और वास्तविकता से धीरे-धीरे दूर होती जा रही थी, एक-एक कदम करके। लेकिन फिर भी, यह वास्तविकता ही थी।
“श्री ओकाडा,” क्रेता कानो ने मेरी पीठ पर बाहें लपेटते हुए कहा, “चलिए, हम साथ में क्रेते चलते हैं। यह जगह अब हमारे लिए नहीं है: न आपके लिए और न मेरे लिए। हमें क्रेते जाना ही होगा। अगर आप यहाँ रहे, तो आपके साथ कुछ बुरा होगा। मुझे पता है। मुझे पूरा यकीन है।”
"कुछ बुरा हुआ?"
"कुछ बहुत ही बुरा होने वाला है," क्रेता कानो ने भविष्यवाणी की
- एक छोटी लेकिन मर्मस्पर्शी आवाज में, जैसे जंगल में रहने वाला भविष्यवक्ता पक्षी।

मई कासाहारा के घर में अब तक की एकमात्र बुरी घटना

•

मे कासाहारा ऊष्मा के चिपचिपे स्रोत पर

“हेलो, मिस्टर विंड-अप बर्ड,” महिला की आवाज़ आई। रिसीवर कान से लगाकर मैंने घड़ी देखी। दोपहर के चार बज रहे थे। जब फ़ोन बजा, मैं पसीने से भीगा हुआ सोफ़े पर सो रहा था। नींद छोटी और अप्रिय थी। और अब भी मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे सोते समय कोई मेरे ऊपर बैठा हो। जो भी था, उसने मेरे सोने का इंतज़ार किया, मेरे ऊपर आकर बैठा और मेरे जागने से ठीक पहले उठकर चला गया।
“हेलो,” महिला की आवाज़ लगभग फुसफुसाते हुए सुनाई दी। ऐसा लगा जैसे वह आवाज़ मुझ तक पहुँचने के लिए किसी बेहद पतली हवा से गुज़री हो। “मैं मे कासाहारा बोल रही हूँ…।”
“हे,” मैंने कहने की कोशिश की, लेकिन मेरा मुंह अभी भी उस तरह नहीं चल रहा था जैसा मैं चाहता था। शायद मेरे मुंह से निकला वह शब्द उसे किसी कराह की तरह लगा हो।
“अब तुम क्या कर रहे हो?” उसने व्यंग्यात्मक लहजे में पूछा। मैंने अपना गला साफ करने के लिए माइक्रोफोन को दूर हटाते हुए कहा, "कुछ नहीं। बस झपकी ले रहा हूँ।"
क्या मैंने तुम्हें जगा दिया?
“हाँ, तुमने झपकी ली थी। लेकिन कोई बात नहीं। बस थोड़ी देर की झपकी थी।”
मेई कासाहारा एक पल के लिए झिझकी। फिर उसने कहा, "क्या कहते हो, मिस्टर विंड-अप बर्ड: क्या आप मेरे घर आएंगे?"

मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। अँधेरे में अलग-अलग रंगों और आकृतियों की रोशनी मंडरा रही थी।
मैंने कहा, "मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"
मैं आंगन में धूप सेंक रही हूँ, इसलिए आप पीछे से अंदर आ जाइए। "ठीक है।"
"बताइए, मिस्टर विंड-अप बर्ड, क्या आप मुझसे नाराज हैं?"
मैंने कहा, "मुझे पक्का नहीं पता। खैर, मैं नहाकर कपड़े बदल लेता हूँ, फिर आता हूँ। मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।"
मैंने दिमाग को तरोताज़ा करने के लिए जल्दी से ठंडे पानी से स्नान किया, फिर गर्म पानी से नहाया और अंत में ठंडे पानी से। इससे मेरी नींद तो खुली, लेकिन शरीर में सुस्ती और भारीपन महसूस हो रहा था। मेरे पैर कांपने लगे और नहाते समय कई बार मुझे तौलिया टांगनी पड़ी या टब के किनारे बैठना पड़ा। शायद मैं जितना सोच रहा था उससे कहीं ज़्यादा थका हुआ था।
शावर से बाहर निकलकर खुद को पोंछने के बाद, मैंने अपने दांत ब्रश किए और शीशे में खुद को देखा। मेरे दाहिने गाल पर गहरा नीला निशान अभी भी था, न ज़्यादा गहरा हुआ था न ज़्यादा हल्का। मेरी आँखों की पुतलियों पर छोटी-छोटी लाल लकीरों का जाल था, और आँखों के नीचे काले घेरे थे। मेरे गाल पिचके हुए लग रहे थे, और मेरे बालों को ट्रिम करने की ज़रूरत थी। मैं एक ऐसे मुर्दे की तरह दिख रहा था जो अभी-अभी ज़िंदा होकर कब्र से बाहर निकला हो। मैंने टी-शर्ट, शॉर्ट्स, टोपी और काले चश्मे पहन लिए। गली में बाहर निकलकर मैंने देखा कि गर्मी का दिन अभी खत्म नहीं हुआ था। ज़मीन के ऊपर हर जीवित प्राणी—जो भी दिखाई दे रहा था—अचानक बारिश की उम्मीद में हांफ रहा था, लेकिन आसमान में बादल का नामोनिशान नहीं था। गर्म, स्थिर हवा की चादर ने गली को घेर रखा

था। हमेशा की तरह जगह सुनसान थी। अच्छा ही था। ऐसे गर्म दिन में, और मेरा चेहरा इतना खराब दिख रहा था, मैं किसी से मिलना नहीं चाहता था।
खाली घर के आंगन में, चिड़िया की मूर्ति हमेशा की तरह आसमान को घूर रही थी, उसकी चोंच ऊपर उठी हुई थी। पिछली बार जब मैंने उसे देखा था, उससे कहीं ज़्यादा मैली और घिसी-पिटी लग रही थी। और उसकी निगाहों में कुछ तनाव सा था। ऐसा लग रहा था मानो वह आसमान में तैरते किसी बेहद निराशाजनक दृश्य को टकटकी लगाए देख रही हो। काश, चिड़िया अपनी निगाहें हटा पाती, लेकिन उसकी आंखें जिस तरह एक जगह टिकी हुई थीं, उसके पास देखने के अलावा कोई चारा नहीं था। मूर्ति के चारों ओर उगी लंबी घासें स्थिर खड़ी थीं, मानो किसी ग्रीक त्रासदी के गायक दल किसी भविष्यवाणी का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हों। छत पर लगा टीवी एंटीना बेपरवाही से अपने चांदी जैसे नुकीले सिरे दम घोंटने वाली गर्मी में फैलाए खड़ा था। गर्मी की तेज़ धूप में, सब कुछ सूखा और मुरझाया हुआ सा लग रहा था।
खाली घर के आंगन का जायज़ा लेने के बाद, मैं मे कासाहारा के आंगन में चला गया। ओक के पेड़ की ठंडी छाया लॉन पर पड़ रही थी, लेकिन मे कासाहारा ने जाहिर तौर पर उस छाया से बचकर तेज़ धूप में आराम किया था। वह एक डेक कुर्सी पर पीठ के बल लेटी हुई थी, उसने बेहद छोटी चॉकलेट रंग की बिकिनी पहनी हुई थी, जिसके छोटे-छोटे कपड़े के पैच धागे से बंधे हुए थे। मैं यह सोचे बिना नहीं रह सका कि क्या कोई सच में ऐसी बिकिनी पहनकर तैर सकता है। उसने वही धूप का चश्मा पहना हुआ था जो उसने हमारी पहली मुलाकात के समय पहना था, और उसके चेहरे पर पसीने की बड़ी-बड़ी बूंदें थीं। उसकी डेक कुर्सी के नीचे एक सफेद बीच टॉवल, सनटैन क्रीम का एक डिब्बा और

कुछ पत्रिकाएँ रखी थीं। पास ही स्प्राइट के दो खाली कैन पड़े थे, जिनमें से एक शायद ऐशट्रे का काम कर रहा था। लॉन पर एक प्लास्टिक की नली और स्प्रिंकलर पड़ा था, जिसे आखिरी बार इस्तेमाल करने के बाद किसी ने समेटने की जहमत नहीं उठाई थी।
जब मैं पास पहुँचा, तो मे कासाहारा उठ बैठी और अपना रेडियो बंद करने के लिए हाथ बढ़ाया। पिछली बार की तुलना में उसका रंग कहीं ज़्यादा गहरा था। यह समुद्र तट पर बिताए गए एक सप्ताहांत के सामान्य रंग से नहीं था। उसके शरीर का हर हिस्सा—सचमुच सिर से पैर तक—खूबसूरती से झुलस गया था। ऐसा लग रहा था कि उसने यहाँ सारा दिन धूप सेंकी थी—इसमें वह पूरा समय भी शामिल है जब मैं कुएँ में था, इसमें कोई शक नहीं। मैंने एक पल के लिए आँगन पर नज़र डाली। वह लगभग पहले जैसा ही दिख रहा था, चौड़ा लॉन अच्छी तरह से कटा हुआ था, तालाब अभी भी खाली था और इतना सूखा लग रहा था कि प्यास लगने लगे।
मैं उसकी कुर्सी के बगल वाली डेक चेयर पर बैठ गया और अपनी जेब से एक लेमन ड्रॉप निकाली। गर्मी के कारण कैंडी का रैपर उससे चिपक गया था।
मेई कासाहारा ने कुछ देर तक बिना कुछ कहे मेरी ओर देखा। “तुम्हें क्या हुआ, मिस्टर विंड-अप बर्ड? तुम्हारे चेहरे पर ये निशान क्या है? ये एक निशान ही तो है, है ना?”
“मुझे लगता है कि यह वही है। शायद। लेकिन मुझे नहीं पता कि यह कैसे हुआ। मैंने देखा—और यह वहीं था।”
मेई कासाहारा एक कोहनी के बल उठी और मेरे चेहरे को घूरने लगी। उसने नाक के पास पसीने की बूंदों को पोंछा और अपने धूप के चश्मे को थोड़ा ऊपर करके सही जगह पर लगा लिया। गहरे रंग के लेंस ने उसकी आँखों को लगभग छिपा ही लिया था।

“आपको बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है? आपको जरा भी अंदाजा नहीं है कि यह कहां हुआ या कैसे हुआ?”
"बिल्कुल भी नहीं।"
"कोई नहीं?"
“मैं कुएं से बाहर निकला, और थोड़ी देर बाद मैंने आईने में देखा, और वह वहीं था। सचमुच। बस इतना ही।”
"दर्द हो रहा है क्या?"
"इसमें दर्द नहीं होता, खुजली भी नहीं होती। हालांकि, थोड़ी गर्मी जरूर लगती है।"
"क्या तुम डॉक़्टर के पास गए थे?"
मैंने सिर हिलाया। "शायद यह समय की बर्बादी होगी।"
“शायद,” मेई कासाहारा ने कहा। “मुझे भी डॉक्टर से नफरत है।” मैंने अपनी टोपी और धूप का चश्मा उतार दिया और अपने रुमाल से माथे से पसीना पोंछा। मेरी ग्रे टी-शर्ट की बगलें पसीने से काली हो चुकी थीं।
मैंने कहा, "शानदार बिकिनी!"
"धन्यवाद।"
"ऐसा लगता है कि उन्होंने इसे कबाड़ से जोड़कर बनाया है - हमारे सीमित प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग करते हुए।"
"जब सब लोग बाहर चले जाते हैं तो मैं ऊपर का हिस्सा उतार देता हूँ।"
“अच्छा, अच्छा,” मैंने कहा।
"ऐसा नहीं है कि इसके नीचे कुछ खास छिपा हुआ है जिसे उजागर किया जा सके," उसने बहाने के तौर पर कहा।
सच है, बिकिनी टॉप के अंदर उसके स्तन अभी भी छोटे और अविकसित थे।
"क्या तुमने कभी इसे पहनकर तैराकी की है?" मैंने पूछा।

“कभी नहीं। मुझे तैरना नहीं आता। आपका क्या ख्याल है, मिस्टर विंड-अप बर्ड?”
"हां, मैं तैर सकता हूँ।"
"कितनी दूर?"
"दूर।"
“दस किलोमीटर?”
“शायद… अभी घर पर कोई नहीं है?”
“वे कल इज़ू में हमारे ग्रीष्मकालीन घर के लिए रवाना हो गए। वे सभी सप्ताहांत में तैरने जाना चाहते हैं। ‘सभी’ से मेरा मतलब मेरे माता-पिता और मेरा छोटा भाई है।”
"आप नहीं?"
उसने हल्के से कंधे उचकाए। फिर उसने अपने बीच टॉवल की तहों से अपनी पसंदीदा सिगरेट और माचिस निकाली और सिगरेट जलाई।
"आप बेहद खराब दिख रहे हैं, मिस्टर विंड-अप बर्ड।"
"बेशक मैं बहुत बुरी हालत में दिख रहा हूँ - कई दिनों तक कुएँ की तलहटी में बिना कुछ खाए-पिए रहने के बाद, कौन बुरी हालत में नहीं दिखेगा?"
मेई कासाहारा ने अपना चश्मा उतारा और मेरी ओर मुड़ी। उसकी आँख के पास का गहरा घाव अब भी दिख रहा था। "बताइए, मिस्टर विंड-अप बर्ड। क्या आप मुझसे नाराज़ हैं?"
मुझे पक्का नहीं पता। तुम्हारे ऊपर गुस्सा करने से पहले मुझे बहुत सी चीजों के बारे में सोचना है।
“क्या आपकी पत्नी वापस आ गई?”
मैंने सिर हिलाया। “उसने मुझे एक पत्र भेजा है। उसमें लिखा है कि वह कभी वापस नहीं आएगी।”

“बेचारे मिस्टर विंड-अप बर्ड,” मे कासाहारा ने कहा। वह उठ बैठी और अपना हाथ हल्के से मेरे घुटने पर रख दिया। “बेचारे मिस्टर विंड-अप बर्ड। आपको शायद यकीन न हो, लेकिन मैं आखिर में आपको कुएँ से बचाने की योजना बना रही थी। मैं बस आपको थोड़ा डराना चाहती थी, थोड़ा परेशान करना चाहती थी। मैं देखना चाहती थी कि क्या मैं आपको चीखने पर मजबूर कर सकती हूँ। मैं देखना चाहती थी कि आपको कितना परेशान होना पड़ेगा जब तक कि आप अपनी दुनिया ही न खो बैठें।”
मुझे समझ नहीं आया कि इसका जवाब कैसे दूं, इसलिए मैंने बस सिर हिला दिया।
"क्या तुम्हें लगा था कि जब मैंने कहा था कि मैं तुम्हें वहीं मरने दूंगा, तो मैं सच में गंभीर था?"
तुरंत जवाब देने के बजाय, मैंने लेमन कैंडी के रैपर को गोल-गोल घुमा लिया। फिर मैंने कहा, “मुझे सच में यकीन नहीं था। आपकी आवाज़ गंभीर लग रही थी, लेकिन ऐसा भी लग रहा था जैसे आप मुझे डराना चाह रहे हों। जब आप किसी कुएँ में नीचे होते हैं और ऊपर किसी से बात कर रहे होते हैं, तो आवाज़ में कुछ अजीब सा बदलाव आ जाता है: आप दूसरे व्यक्ति की आवाज़ में छिपे भाव को ठीक से पकड़ नहीं पाते। लेकिन आखिरकार, यह सवाल नहीं है कि कौन सही है। मेरा मतलब है, वास्तविकता इन अलग-अलग परतों से बनी होती है। तो हो सकता है कि उस वास्तविकता में आप मुझे जान से मारने की कोशिश में गंभीर थे, लेकिन इस वास्तविकता में नहीं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कौन सी वास्तविकता को मानते हैं और मैं कौन सी वास्तविकता को।”
मैंने अपनी मुड़ी हुई कैंडी के रैपर को स्प्राइट के कैन के छेद में धकेल दिया।

“श्रीमान विंड-अप बर्ड, क्या आप मेरी एक मदद कर सकते हैं?” मेई कासाहारा ने लॉन पर रखे पाइप की ओर इशारा करते हुए कहा। “क्या आप मुझ पर इससे पानी छिड़क देंगे? बहुत गर्मी है! अगर मैंने खुद को गीला नहीं किया तो मेरा दिमाग जल जाएगा।”
मैं अपनी डेक कुर्सी से उठा और लॉन पर पड़ी नीली प्लास्टिक की नली को उठाने के लिए चला गया। वह गर्म और ढीली थी। मैंने झाड़ियों के पीछे हाथ डालकर नल चालू किया। पहले तो नली के अंदर गर्म हुआ गर्म पानी ही निकला, लेकिन धीरे-धीरे ठंडा होकर उससे ठंडा पानी निकलने लगा। मे कासाहारा लॉन पर लेट गई, और मैंने उस पर पानी की तेज़ बौछार की।
उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और पानी को अपने शरीर पर बहने दिया। "ओह, कितना अच्छा लग रहा है! आपको भी ऐसा करना चाहिए, मिस्टर विंड-अप बर्ड।"
“ये तो स्विमिंग सूट नहीं है,” मैंने कहा, लेकिन मे कासाहारा को देखकर लग रहा था कि वो पानी का खूब आनंद ले रही है, और गर्मी इतनी तेज़ थी कि मैं खुद को रोक नहीं पा रही थी। मैंने पसीने से भीगी अपनी टी-शर्ट उतार दी, आगे झुकी और ठंडे पानी को अपने सिर पर बहने दिया। इसी बीच मैंने पानी का एक घूंट पिया: ये ठंडा और स्वादिष्ट था।
मैंने पूछा, "अरे, क्या यह कुएं का पानी है?"
“जी हाँ, बिल्कुल! यह पंप से आता है। कितना अच्छा लगता है, है ना? कितना ठंडा है। इसे पी भी सकते हैं। हमने स्वास्थ्य विभाग से एक आदमी को पानी की गुणवत्ता की जाँच के लिए बुलाया था, और उसने कहा कि इसमें कोई खराबी नहीं है, टोक्यो में इतना साफ पानी शायद ही कभी मिलता है। वह हैरान था। लेकिन फिर भी, हमें इसे पीने में

थोड़ा डर लग रहा है। इतने सारे घर एक साथ सटे हुए हैं, पता नहीं इसमें क्या-क्या मिल सकता है।”
लेकिन क्या आपको यह अजीब नहीं लगता? मियावाकी परिवार का कुआँ बिल्कुल सूखा है, जबकि आपके कुएँ में इतना अच्छा, ताज़ा पानी है। वे तो बस गली के उस पार ही रहते हैं। आखिर उनमें इतना अंतर क्यों होना चाहिए?
“हाँ, बिल्कुल,” मेई कासाहारा ने सिर झुकाते हुए कहा। “शायद किसी वजह से भूमिगत जल प्रवाह में थोड़ा सा बदलाव आ गया हो, इसलिए उनका कुआँ सूख गया और हमारा नहीं। बेशक, मुझे इसका सटीक कारण नहीं पता।”
मैंने पूछा, "क्या आपके घर में कुछ बुरा हुआ है?"
मेई कासाहारा ने अपना चेहरा सिकोड़ा और सिर हिलाया। "पिछले दस सालों में इस घर में जो एक ही बुरी बात हुई है, वो ये है कि ये बेहद उबाऊ है!"
मेई कासाहारा ने खुद को पोंछा और मुझसे पूछा कि क्या मैं बीयर पीना चाहता हूँ। मैंने हाँ कहा। वह घर से हाइनेकेन के दो ठंडे कैन ले आई। उसने एक पी लिया और मैंने दूसरा।
"तो बताइए, मिस्टर विंड-अप बर्ड, अब आपकी आगे की योजना क्या है?" मैंने कहा, "मैंने अभी तक पक्का फैसला नहीं किया है। लेकिन शायद मैं यहाँ से निकल जाऊँगा। हो सकता है मैं जापान से भी निकल जाऊँ।"
“जापान से बाहर निकलना? आप कहाँ जाएँगे?”
"क्रीट के लिए।"
“क्रीट? क्या इसका उस क्रीट की महिला से कोई संबंध है?”
“कुछ तो है, हाँ।”
माय कासाहारा ने इस बारे में एक पल के लिए सोचा।

और क्या क्रेता (उसका नाम क्या था?) ने ही तुम्हें कुएँ से बचाया था?
मैंने कहा, "क्रेता कानो। हाँ, वही है।"
"आपके तो बहुत सारे दोस्त हैं, है ना, मिस्टर विंड-अप बर्ड?"
"सच में नहीं। बल्कि, मैं तो इस बात के लिए मशहूर हूं कि मेरे बहुत कम दोस्त हैं।"
फिर भी, मुझे आश्चर्य है कि क्रीटा कानो को कैसे पता चला कि तुम कुएं में हो। तुमने किसी को बताया नहीं था कि तुम वहां जा रहे हो, है ना? तो उसे कैसे पता चला कि तुम कहां हो?
मैंने कहा, "मुझे नहीं पता।"
लेकिन खैर, आप क्रीट जा रहे हैं, है ना?
“मैंने अभी तक पक्का फैसला नहीं किया है कि मैं जाऊंगी या नहीं। यह सिर्फ एक संभावना है। मुझे पहले कुमिको से बात करके मामला सुलझाना होगा।”
मेई कासाहारा ने अपने मुंह में सिगरेट रखी और उसे जलाया। फिर उसने अपनी छोटी उंगली के सिरे से अपनी आंख के पास लगे घाव को छुआ।
“जानते हो, मिस्टर विंड-अप बर्ड, जब तक तुम कुएँ में थे, मैं यहाँ धूप सेंक रही थी। मैं खाली घर के बगीचे को देख रही थी, धूप में तप रही थी और तुम्हारे बारे में सोच रही थी, कि तुम भूख से मर रहे थे और धीरे-धीरे मौत के करीब पहुँच रहे थे। मैं अकेली थी जिसे पता था कि तुम वहाँ नीचे हो और बाहर नहीं निकल सकते। और जब मैंने इसके बारे में सोचा, तो मुझे तुम्हारी पीड़ा, बेचैनी और डर का एकदम स्पष्ट एहसास हुआ। क्या तुम समझ रहे हो मैं क्या कहना चाहती हूँ? ऐसा करके मैं तुम्हारे बहुत करीब आ सकी! मैं तुम्हें मरने नहीं देना चाहती थी। यह सच है। बिल्कुल। लेकिन मैं अंत तक

जीना चाहती थी। बिल्कुल आखिरी पल तक। जब तक तुम पूरी तरह टूट न जाओ, डर से कांपने न लगो और बर्दाश्त न कर पाओ। मुझे सच में लगा कि यही सबसे अच्छा होगा—मेरे लिए भी और तुम्हारे लिए भी।” “अच्छा, मैं तुम्हें बताता हूँ,” मैंने कहा। “मुझे लगता है कि अगर तुम सचमुच आखिरी दम तक पहुँच जाते, तो शायद तुम अंत तक जाना चाहते। यह तुम्हारे सोचे से कहीं ज़्यादा आसान हो सकता था। अगर तुम इतनी दूर तक पहुँच जाते, तो बस एक आखिरी कोशिश ही काफी होती। और फिर बाद में तुम खुद से कहते कि यही सबसे अच्छा था—मेरे लिए भी और तुम्हारे लिए भी।” मैंने बीयर का एक घूंट लिया।
मेई कासाहारा ने कुछ देर तक इस बारे में सोचा और अपने होंठ दबाए। "हो सकता है आप सही हों," उसने कहा। "मुझे भी पक्का पता नहीं है।"
मैंने बियर का आखिरी घूंट लिया और खड़ा हो गया। मैंने अपने सनग्लास लगाए और पसीने से भीगी हुई टी-शर्ट पहन ली। "बियर के लिए धन्यवाद।"
“आप जानते हैं, मिस्टर विंड-अप बर्ड,” मे कासाहारा ने कहा, “कल रात, जब मेरा परिवार गर्मियों के घर के लिए रवाना हो गया, तो मैं कुएं में उतर गई। मैं वहां कुल मिलाकर पांच या शायद छह घंटे तक बस चुपचाप बैठी रही।”
"तो तुम ही हो जिसने रस्सी की सीढ़ी हटाई थी।"
“हां,” मेई कासाहारा ने थोड़ा frowning करते हुए कहा। “मैं ही हूं।”
मैंने अपनी निगाहें चौड़े लॉन पर घुमाईं। नमी से भरी मिट्टी से भाप निकल रही थी जो देखने में झिलमिलाहट जैसी लग रही थी। मेई कासाहारा ने अपनी सिगरेट का बट एक खाली स्प्राइट के डिब्बे में डाल दिया।

“पहले कुछ घंटों तक मुझे कुछ खास महसूस नहीं हुआ। बेशक, इतनी अंधेरी जगह में होना थोड़ा अजीब लगा, लेकिन मैं डरी हुई या सहमी हुई नहीं थी। मैं उन आम लड़कियों में से नहीं हूँ जो हर छोटी बात पर चीखने लगती हैं। लेकिन मुझे पता था कि यह सिर्फ अंधेरा नहीं था। आप कई दिनों से वहाँ थे, मिस्टर विंड-अप बर्ड। आपको पता है कि वहाँ डरने की कोई बात नहीं है। लेकिन कुछ घंटों के बाद, मुझे धीरे-धीरे यह एहसास कम होता गया कि मैं कौन हूँ। अंधेरे में चुपचाप बैठे-बैठे, मुझे महसूस हुआ कि मेरे अंदर—मेरे शरीर के अंदर—कुछ बड़ा होता जा रहा है। ऐसा लग रहा था जैसे मेरे अंदर की यह चीज गमले में पेड़ की जड़ों की तरह बढ़ रही हो, और जब यह काफी बड़ी हो जाएगी तो मुझे तोड़ देगी। यह मेरा अंत होगा, जैसे गमला लाखों टुकड़ों में बिखर जाए। यह जो भी चीज थी, धूप में रहने पर यह मेरे अंदर ही रहती थी, लेकिन अंधेरे में इसने किसी खास तरह का पोषण सोख लिया और इतनी तेजी से बढ़ने लगी कि डर लगने लगा। मैंने इसे रोकने की कोशिश की। नीचे झुकने की कोशिश की, लेकिन झुक नहीं सका। और तभी मुझे सच में डर लगा। मैं अपनी ज़िंदगी में इतना कभी नहीं डरा था। मेरे अंदर एक अजीब सी चीज़ थी, एक चिपचिपा सफेद सा पदार्थ, जैसे चर्बी का एक टुकड़ा, जो मुझ पर हावी हो रहा था, मुझे खा रहा था। यह चिपचिपा सा पदार्थ पहले बहुत छोटा था, मिस्टर विंड-अप बर्ड।
मेई कासाहारा थोड़ी देर के लिए चुप हो गई और अपने हाथों को घूरने लगी, मानो उसे उस दिन अपने साथ हुई घटना याद आ रही हो। "मैं बहुत डरी हुई थी," उसने कहा। "शायद मैं यही चाहती थी कि तुम भी ऐसा ही महसूस करो। शायद मैं चाहती थी कि तुम उस चीज़ की आवाज़ सुनो जो तुम्हें चबा रही थी।"

मैं एक डेक कुर्सी पर बैठ गया और मे कासाहारा के शरीर को देखने लगा, जो उसकी छोटी सी बिकिनी से मुश्किल से ढका हुआ था। वह सोलह साल की थी, लेकिन उसका शरीर तेरह या चौदह साल की लड़की जैसा था। उसके स्तन और कूल्हे अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुए थे। उसका शरीर मुझे उन चित्रों की याद दिलाता था जिनमें रेखाओं का न्यूनतम उपयोग होता है, फिर भी वास्तविकता का अद्भुत एहसास होता है। लेकिन फिर भी, साथ ही साथ, उसमें कुछ ऐसा था जो अत्यधिक वृद्धावस्था का आभास देता था।
फिर अचानक मेरे मन में यह सवाल आया कि मैं उससे पूछूं, "क्या तुम्हें कभी ऐसा महसूस हुआ है कि किसी चीज ने तुम्हें अपवित्र कर दिया है?"
“अपवित्र?” उसने मेरी ओर देखा, उसकी आँखें थोड़ी सिकुड़ी हुई थीं। “तुम्हारा मतलब शारीरिक रूप से है? तुम्हारा मतलब बलात्कार से है?”
“शारीरिक रूप से। मानसिक रूप से। दोनों में से कोई भी।”
मेई कासाहारा ने अपने शरीर की ओर देखा, फिर अपनी नज़र मुझ पर डाली। “शारीरिक रूप से नहीं। मेरा मतलब है, मैं अभी भी कुंवारी हूँ। मैंने एक लड़के को मुझे छूने दिया है। लेकिन सिर्फ़ कपड़ों के ऊपर से।”
मेंने सिर हिलाया।
"मानसिक रूप से, हम्म, मुझे यकीन नहीं है। मुझे वास्तव में नहीं पता कि मानसिक रूप से अपवित्र होने का क्या मतलब है।"
मैंने कहा, "मुझे भी नहीं लगता। बात सिर्फ इतनी है कि आपको ऐसा महसूस हुआ है या नहीं। अगर आपको ऐसा महसूस नहीं होता, तो शायद इसका मतलब है कि आप अपवित्र नहीं हुए हैं।"
आप मुझसे इसके बारे में क्यों पूछ रहे हैं?

“क्योंकि मेरे कुछ परिचितों को ऐसा ही महसूस होता है। और इससे कई तरह की जटिल समस्याएं पैदा होती हैं। लेकिन मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ। आप हमेशा मृत्यु के बारे में क्यों सोचते रहते हैं?”
उसने अपने होठों के बीच एक सिगरेट रखी और फुर्ती से एक हाथ से माचिस जलाई। फिर उसने धूप का चश्मा पहन लिया।
"क्या मतलब, आप मृत्यु के बारे में ज्यादा नहीं सोचते, मिस्टर विंड-अप बर्ड?"
"मैं मृत्यु के बारे में सोचता तो हूँ, बिल्कुल। लेकिन हर समय नहीं। बस कभी-कभार। ज्यादातर लोगों की तरह।"
“मिस्टर विंड-अप बर्ड, मेरा मानना है कि हर कोई अपने अस्तित्व के मूल में कुछ न कुछ लेकर पैदा होता है। और वह चीज, चाहे जो भी हो, एक ऊर्जा के स्रोत की तरह बन जाती है जो हर व्यक्ति को अंदर से चलाती है। मेरे अंदर भी वह चीज है, बिल्कुल। जैसे हर किसी के अंदर होती है। लेकिन कभी-कभी यह बेकाबू हो जाती है। यह मेरे अंदर कभी बढ़ती है तो कभी घटती है, और मुझे झकझोर देती है। मैं वास्तव में उस भावना को किसी दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाने का तरीका खोजना चाहती हूँ। लेकिन मैं ऐसा कर नहीं पाती। वे इसे समझ ही नहीं पाते। बेशक, समस्या यह हो सकती है कि मैं इसे ठीक से समझा नहीं पा रही हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि असल में समस्या यह है कि वे ध्यान से सुन नहीं रहे हैं। वे सुनने का नाटक करते हैं, लेकिन वास्तव में नहीं सुन रहे होते। इसलिए कभी-कभी मैं उत्तेजित हो जाती हूँ, और कुछ अजीब हरकतें कर बैठती हूँ।” “पागलपन भरी बातें?”

"जैसे, मान लीजिए, आपको कुएं में फंसा देना, या, जैसे, जब मैं मोटरसाइकिल के पीछे बैठा होता हूं, तो ड्राइवर की आंखों पर हाथ रख देना।"
यह कहते हुए उसने अपनी आंख के पास के घाव को छुआ।
“और इस तरह मोटरसाइकिल दुर्घटना हुई?” मैंने पूछा।
मेई कासाहारा ने मुझे सवालिया निगाहों से देखा, मानो उसने मेरी बात सुनी ही न हो। लेकिन मेरे बोले हुए हर शब्द को उसे सुनना चाहिए था। काले चश्मे के पीछे उसकी आँखों के भाव मैं समझ नहीं पा रही थी, लेकिन उसके चेहरे पर एक तरह की सुन्नता छा गई थी, मानो शांत पानी पर तेल डाल दिया गया हो।
मैंने पूछा, "उस आदमी का क्या हुआ?"
होठों के बीच सिगरेट दबाए, मेई कासाहारा मुझे देखती रही। या यूं कहें कि वह मेरे निशान को देखती रही। "क्या मुझे इस सवाल का जवाब देना ही होगा, मिस्टर विंड-अप बर्ड?"
“अगर आप नहीं चाहते तो कोई बात नहीं। आपने ही तो यह मुद्दा उठाया था। अगर आप इस बारे में बात नहीं करना चाहते तो मत कीजिए।”
मेई कासाहारा एकदम शांत हो गईं। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। फिर उन्होंने सिगरेट का धुआँ एक कश में भरा और धीरे-धीरे बाहर निकाला। भारी-भारी हरकत करते हुए उन्होंने अपने धूप के चश्मे उतारे और आँखें कसकर बंद करके सूरज की ओर मुँह कर लिया। उन्हें देखते हुए मुझे ऐसा लगा जैसे समय की गति धीरे-धीरे कम हो रही हो—जैसे समय का वसंत ढलने लगा हो।
अंत में उसने भावहीन स्वर में कहा, "उनकी मृत्यु हो गई," मानो उसने किसी बात को स्वीकार कर लिया हो।
"उसकी मृत्यु हो गई?"

मेई कासाहारा ने अपनी सिगरेट की राख झाड़ी। फिर उसने अपना तौलिया उठाया और बार-बार अपने चेहरे से पसीना पोंछा। अंत में, मानो उसे कोई भूला हुआ काम याद आ गया हो, उसने संक्षिप्त और पेशेवर लहजे में कहा, "हम काफी तेज़ गति से जा रहे थे। यह घटना एनोशिमा के पास घटी।"
मैंने बिना कुछ कहे उसे देखा। उसने अपने दोनों हाथों में बीच टॉवल के किनारे पकड़े हुए थे और उन्हें अपने गालों से दबा रखा था। उसकी उंगलियों के बीच सिगरेट से सफेद धुआं उठ रहा था। हवा न चलने के कारण धुआं सीधा ऊपर उठ रहा था, मानो कोई छोटा सा धुएं का संकेत हो। जाहिर तौर पर वह तय नहीं कर पा रही थी कि रोए या हंसे। कम से कम मुझे तो ऐसा ही लग रहा था। वह एक दुविधा में फंसी हुई थी, लेकिन अंत में किसी भी तरफ नहीं झुकी। मे कासाहारा ने अपने चेहरे के भावों को संभाला, टॉवल को जमीन पर रखा और सिगरेट का एक कश लिया। लगभग पांच बज रहे थे, लेकिन गर्मी कम होने का कोई आसार नहीं था।
“मैंने उसे मार डाला,” उसने कहा। “बेशक, मेरा उसे मारने का इरादा नहीं था। मैं बस हदें पार करना चाहती थी। हम अक्सर ऐसा करते थे। यह एक खेल जैसा था। जब हम साइकिल पर होते थे तो मैं उसकी आँखें ढक देती थी या उसे गुदगुदी करती थी। लेकिन कभी कुछ नहीं हुआ। उस दिन तक…”
मे कासाहारा ने अपना चेहरा ऊपर उठाया और सीधे मेरी ओर देखा। “खैर, मिस्टर विंड-अप बर्ड, नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता कि मैं अपवित्र हो गई हूँ। मैं बस उस चिपचिपी चीज़ के करीब जाना चाहती थी, अगर हो सके तो। मैं उसे बहला-फुसलाकर अपने अंदर से बाहर निकालना चाहती थी और फिर उसे टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहती थी। अगर आपको उसे बहला-फुसलाकर बाहर निकालना है, तो आपको हदें पार

करनी होंगी। यही एकमात्र तरीका है। आपको उसे अच्छा चारा देना होगा।” उसने धीरे से अपना सिर हिलाया। “नहीं, मुझे नहीं लगता कि मैं अपवित्र हो गई हूँ। लेकिन मुझे मुक्ति भी नहीं मिली है। मिस्टर विंड-अप बर्ड, अभी मुझे कोई नहीं बचा सकता। दुनिया मुझे बिल्कुल खाली दिखती है। मेरे आस-पास जो कुछ भी दिखता है, वह नकली लगता है। एकमात्र चीज़ जो नकली नहीं है, वह मेरे अंदर की वह चिपचिपी चीज़ है।”
मेई कासाहारा काफी देर तक वहीं बैठी रहीं, छोटी-छोटी, नियमित साँसें लेती रहीं। आसपास कोई और आवाज़ नहीं थी, न पक्षियों की, न कीड़ों की। आँगन में एक भयानक सन्नाटा छा गया, मानो दुनिया सचमुच खाली हो गई हो।
मेई कासाहारा अपनी कुर्सी पर बैठी मेरी ओर मुड़ी। मानो उसे अचानक कुछ याद आ गया हो। अब उसके चेहरे से सारे भाव गायब हो गए थे, जैसे उसे धोकर साफ कर दिया गया हो। "बताइए, मिस्टर विंड-अप बर्ड, क्या आपने उस क्रीटा कानो नाम की महिला के साथ संबंध बनाए थे?"
मेंने सिर हिलाया।
"क्या आप मुझे क्रीट से पत्र लिखेंगी?" मे कासाहारा ने पूछा। “ज़रूर करूँगा। अगर मैं गया तो।”
“आप जानते हैं, मिस्टर विंड-अप बर्ड,” उसने कुछ हिचकिचाहट के बाद कहा, “मुझे लगता है कि मैं वापस स्कूल जा सकती हूँ।”
"ओह, तो तुमने स्कूल जाने का इरादा बदल लिया है, है ना?"
उसने हल्के से कंधे उचकाए। “यह एक अलग स्कूल है। मैं अपने पुराने स्कूल में बिल्कुल वापस नहीं जाना चाहती। नया स्कूल यहाँ से काफी दूर है। इसलिए, शायद मैं आपसे कुछ समय तक मिल नहीं पाऊँगी।”

मैंने सिर हिलाया। फिर मैंने अपनी जेब से एक लेमन कैंडी निकाली और उसे अपने मुंह में डाल लिया। मेई कासाहारा ने चारों ओर देखा और एक सिगरेट जला ली।
"मुझे बताइए, मिस्टर विंड-अप बर्ड, क्या कई अलग-अलग महिलाओं के साथ सोना मजेदार होता है?"
"यह बात मायने नहीं रखती।"
"हां, मैंने वह पहले ही सुन लिया है।"
“ठीक है,” मैंने कहा, लेकिन मुझे और कुछ कहना नहीं आता था।
"अरे छोड़ो भी। लेकिन तुम्हें पता है, मिस्टर विंड-अप बर्ड, तुमसे मिलने के बाद ही मैंने आखिरकार स्कूल वापस जाने का फैसला किया है। सच में।"
मैंने पूछा, "ऐसा क्यों?"
“हाँ, ऐसा क्यों?” मेई कासाहारा ने कहा। फिर उसने अपनी आँखों के कोने सिकोड़े और मेरी तरफ देखा। “शायद मैं एक सामान्य दुनिया में वापस जाना चाहती थी। लेकिन सच में, मिस्टर विंड-अप बर्ड, आपके साथ रहना बहुत मज़ेदार रहा। सच कह रही हूँ। मतलब, आप इतने सामान्य हैं, लेकिन आप इतनी असामान्य हरकतें करते हैं। और आप इतने—क्या?—अप्रत्याशित हैं। इसलिए आपके साथ समय बिताना बिल्कुल भी उबाऊ नहीं रहा। आपको अंदाज़ा भी नहीं है कि इससे मुझे कितना सुकून मिला है। उबाऊ न होने का मतलब है बहुत सारी फालतू बातों के बारे में न सोचना। है ना? तो इस लिहाज़ से, मुझे खुशी है कि आप आस-पास रहे। लेकिन सच कहूँ तो, इससे मुझे घबराहट भी हुई है।”
"किस तरह से?"
“अच्छा, मैं इसे कैसे कहूँ? कभी-कभी, जब मैं तुम्हें देखता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे तुम मेरे लिए किसी चीज़ से जी-जान से

लड़ रहे हो। मुझे पता है यह अजीब लग रहा है, लेकिन जब ऐसा होता है, तो मुझे लगता है कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम्हारे साथ पसीना बहा रहा हूँ। समझे? तुम हमेशा इतने शांत दिखते हो, जैसे चाहे कुछ भी हो जाए, उससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन असल में तुम ऐसे नहीं हो। अपने तरीके से, तुम वहाँ पूरी ताकत से लड़ रहे हो, भले ही दूसरे लोग तुम्हें देखकर यह न समझ पाएँ। अगर ऐसा नहीं होता, तो तुम कुएँ में ऐसे नहीं जाते, है ना? खैर, तुम मेरे लिए नहीं लड़ रहे हो, ज़ाहिर है। तुम खुद को पूरी तरह से झोंक रहे हो, उस बड़ी सी चीज़ से जूझने की कोशिश कर रहे हो, और तुम यह सब सिर्फ कुमिको को ढूंढने के लिए कर रहे हो। इसलिए मेरे तुम्हारे लिए पसीना बहाने का कोई मतलब नहीं है। मुझे यह सब पता है, लेकिन फिर भी, मुझे लगता है कि तुम मेरे लिए लड़ रहे हो, मिस्टर विंड-अप।” बर्ड—एक तरह से, तुम कुमिको के लिए लड़ने के साथ-साथ शायद कई और लोगों के लिए भी लड़ रहे हो। और शायद इसीलिए तुम कभी-कभी बिल्कुल बेवकूफ लगते हो। मुझे तो यही लगता है, मिस्टर विंड-अप बर्ड। लेकिन जब मैं तुम्हें ऐसा करते देखता हूँ, तो मैं बहुत तनावग्रस्त और घबरा जाता हूँ, और अंत में पूरी तरह से थका हुआ महसूस करता हूँ। मेरा मतलब है, ऐसा लगता है कि तुम जीत ही नहीं सकते। अगर मुझे मैच पर शर्त लगानी होती, तो मैं तुम्हारे हारने पर शर्त लगाता। माफ करना, लेकिन यही सच है। मैं तुम्हें बहुत पसंद करता हूँ, लेकिन मैं दिवालिया नहीं होना चाहता।
मैं पूरी तरह समझता हूँ।
“मैं तुम्हें डूबते हुए नहीं देखना चाहती, और तुम्हारे लिए जितना पसीना बहा चुकी हूँ, उससे ज़्यादा नहीं बहाना चाहती।
इसीलिए मैंने एक ऐसी दुनिया में लौटने का फैसला किया है जो

थोड़ी ज़्यादा सामान्य है। लेकिन अगर मैं तुमसे यहाँ—इस खाली घर के सामने—न मिली होती, तो मुझे नहीं लगता कि हालात ऐसे होते। मैं कभी स्कूल वापस जाने के बारे में सोचती भी नहीं। मैं अब भी किसी असामान्य दुनिया में भटक रही होती। तो इस लिहाज़ से, यह सब तुम्हारी वजह से है, मिस्टर विंड-अप बर्ड। तुम पूरी तरह बेकार नहीं हो।”
मैंने सिर हिलाया। बहुत समय बाद ऐसा हुआ था कि किसी ने मेरे बारे में कुछ अच्छा कहा था।
“इधर आओ, मिस्टर विंड-अप बर्ड,” मे कासाहारा ने कहा। वह अपनी डेक कुर्सी पर उठ बैठी।
मैं अपनी कुर्सी से उठा और उसकी कुर्सी के पास गया।
"मिस्टर विंड-अप बर्ड, यहीं बैठ जाइए," मे कासाहारा ने कहा।
मैंने वैसा ही किया जैसा मुझे कहा गया था और उसके बगल में बैठ गया।
"अपना चेहरा दिखाओ, मिस्टर विंड-अप बर्ड।"
वह कुछ देर तक सीधे मेरी ओर देखती रही। फिर, एक हाथ मेरे घुटने पर रखकर, उसने दूसरे हाथ की हथेली मेरे गाल पर बने निशान पर दबा दी।
“बेचारे मिस्टर विंड-अप बर्ड,” मे कासाहारा ने लगभग फुसफुसाते हुए कहा। “मुझे पता है कि तुम हर तरह की ज़िम्मेदारी उठाओगे। तुम्हें पता भी नहीं चलेगा। और इस मामले में तुम्हारे पास कोई विकल्प नहीं होगा। ठीक वैसे ही जैसे खेत में बारिश होती है। और अब अपनी आँखें बंद कर लो, मिस्टर विंड-अप बर्ड। एकदम कसकर। जैसे चिपका दी गई हों।”
मैंने अपनी आंखें कसकर बंद कर लीं।

मेई कासाहारा ने अपने होंठ मेरे निशान पर छुए—उसके होंठ छोटे और पतले थे, मानो किसी नकली निशान की तरह हों। फिर उसने अपने होंठ खोले और अपनी जीभ से मेरे निशान को धीरे-धीरे छुआ—हर कोने को छूते हुए। उसका हाथ जो उसने मेरे घुटने पर रखा था, वहीं बना रहा। उसका गर्म, नम स्पर्श मुझे बहुत दूर से महसूस हुआ, मानो दुनिया के सारे खेतों को पार करने से भी कहीं ज़्यादा दूर से। फिर उसने मेरा हाथ पकड़ा और उसे अपनी आँख के पास वाले घाव पर लगाया। मैंने उस आधे इंच के निशान को सहलाया। ऐसा करते ही, उसकी चेतना की लहरें मेरी उंगलियों से होकर मुझमें समा गईं—एक कोमल तड़प की गूंज। शायद किसी को इस लड़की को अपनी बाहों में लेना चाहिए और उसे कसकर गले लगाना चाहिए, मैंने सोचा। शायद मेरे अलावा कोई और। कोई ऐसा जो उसे कुछ दे सके।
अलविदा, मिस्टर विंड-अप बर्ड। फिर कभी मिलेंगे।

सबसे सरल बात

•

बदला लेने का एक परिष्कृत रूप

•

गिटार के डिब्बे में रखी चीज़
अगले दिन मैंने अपने चाचा को फोन किया और बताया कि शायद मैं अगले कुछ हफ्तों में घर छोड़ दूँगी। मैंने अचानक बताने के लिए माफी मांगी, लेकिन समझाया कि कुमिको ने मुझे बिना किसी पूर्व सूचना के छोड़ दिया है। अब इसे छुपाने का कोई फायदा नहीं था। मैंने उन्हें बताया कि उसने लिखकर कहा है कि वह वापस नहीं आएगी, और मैं इस जगह से दूर जाना चाहती हूँ, हालांकि कितने समय के लिए, यह मैं निश्चित नहीं कह सकती। मेरी संक्षिप्त व्याख्या के बाद, फोन पर चाचा की ओर से कुछ देर तक गहरी चुप्पी छाई रही। ऐसा लग रहा था जैसे वह कुछ सोच रहे हों। फिर उन्होंने कहा, "क्या मैं जल्द ही आपसे मिलने आ सकता हूँ? मैं खुद देखना चाहता हूँ कि क्या हो रहा है। और मैं काफी समय से घर नहीं गया हूँ।"

•

दो शाम बाद मेरे चाचा घर आए। उन्होंने मेरे निशान को देखा, लेकिन उस पर कुछ नहीं कहा। शायद उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें। उन्होंने बस एक अजीब सी नज़र डाली, आँखें सिकोड़कर। वे मेरे लिए स्कॉच की एक अच्छी बोतल और ओडावारा से खरीदी हुई मछली के पेस्ट से बनी केक का एक पैकेट लाए थे। हम बरामदे में बैठकर केक खा रहे थे और व्हिस्की पी रहे थे।
“वार्डरोब में फिर से बैठना कितना सुखद है,” मेरे चाचा ने कई बार सिर हिलाते हुए कहा। “हमारे अपार्टमेंट में तो वॉर्डरोब नहीं

है। कभी-कभी मुझे इस जगह की बहुत याद आती है। वॉर्डरोब में बैठने का एक अलग ही एहसास होता है, जो कहीं और नहीं मिल सकता।” कुछ देर तक वह वहीं बैठा चाँद को निहारता रहा, चाँद का पतला, सफ़ेद अर्धचंद्राकार टुकड़ा, मानो किसी ने अभी-अभी उसे तराशा हो। ऐसी चीज़ का आसमान में तैरते रहना मुझे किसी चमत्कार से कम नहीं लगा।
फिर, बिल्कुल सहज भाव से, मेरे चाचा ने पूछा, "तुम्हें यह निशान कैसे मिला?"
मैंने कहा, "मुझे सच में नहीं पता," और व्हिस्की का एक घूंट लिया। "अचानक से ही ये सब हो गया। शायद एक हफ़्ते पहले? काश मैं इसे और अच्छे से समझा पाता, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि कैसे समझाऊं।"
क्या आप इसे लेकर डॉक्टर के पास गए थे?
मैंने अपना सिर हिलाया।
"मैं उन मामलों में दखल नहीं देना चाहता जहां मेरी जरूरत नहीं है, लेकिन बस इतना कहना चाहता हूं: आपको वास्तव में बैठकर इस बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए कि आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है।"
मैंने सिर हिलाया। “मैं इस बारे में सोच रही थी,” मैंने कहा। “लेकिन चीजें इतनी जटिल और आपस में उलझी हुई हैं कि मैं उन्हें अलग-अलग करके एक-एक काम नहीं कर पा रही हूँ। मुझे नहीं पता कि इन उलझनों को कैसे सुलझाऊँ।”
मेरे चाचा मुस्कुराए। “जानते हो मैं क्या सोचता हूँ? मेरा मानना है कि तुम्हें सबसे पहले सरल बातों के बारे में सोचना शुरू करना चाहिए और फिर आगे बढ़ना चाहिए। उदाहरण के लिए, तुम किसी सड़क के कोने पर रोज़ खड़े होकर वहाँ से गुज़रने वाले

लोगों को देख सकते हो। तुम्हें कोई भी फैसला लेने की जल्दी नहीं है। यह मुश्किल हो सकता है, लेकिन कभी-कभी रुककर समय लेना ज़रूरी होता है। तुम्हें खुद को चीज़ों को अपनी आँखों से देखने का अभ्यास कराना चाहिए, जब तक कि कोई बात स्पष्ट न हो जाए। और इसमें समय लगाने से डरो मत। किसी चीज़ पर भरपूर समय बिताना बदला लेने का सबसे परिष्कृत तरीका हो सकता है।”
“बदला?! ‘बदला’ से तुम्हारा क्या मतलब है? किसके खिलाफ बदला?” मेरे चाचा ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम्हें जल्द ही समझ आ जाएगा।"

•

कुल मिलाकर, हम बरामदे में बैठकर एक घंटे से ज़्यादा समय तक साथ में शराब पीते रहे। फिर, यह कहते हुए कि उन्हें बहुत देर हो गई है, मेरे चाचा उठे और चले गए। फिर से अकेले। मैं बरामदे में एक खंभे से टेक लगाकर बैठा रहा और चाँदनी रात में बगीचे को निहारता रहा। कुछ देर के लिए, मैं यथार्थवाद की हवा में गहरी साँस ले सका, या जो भी वह मेरे चाचा पीछे छोड़ गए थे, और बहुत लंबे समय बाद पहली बार, मुझे सच्ची राहत का एहसास हुआ।
कुछ ही घंटों के भीतर, वह उदासी छंटने लगी, और एक तरह का हल्का दुख मुझे फिर से घेरने लगा। अंततः, मैं अपनी दुनिया में लौट आया, और मेरे चाचा अपनी दुनिया में।

•

मेरे चाचा ने कहा था कि मुझे पहले सचमुच सरल चीजों के बारे में सोचना चाहिए, लेकिन मेरे लिए सरल और कठिन में अंतर करना असंभव था। इसलिए अगली सुबह, भीड़भाड़ खत्म होने के बाद, मैं शिंजुकु के लिए ट्रेन में सवार हो गया। मैंने बस वहीं खड़े होकर लोगों के चेहरों को ध्यान से देखने का फैसला किया। मुझे नहीं पता था

शुरुआत में, मेरी नज़र सिर्फ़ उन पुरुषों पर पड़ती थी जिनके बाल झड़ रहे थे, क्योंकि विग बनाने वाली कंपनी में मे कासाहारा के साथ सर्वे करते हुए मुझे यही ट्रेनिंग मिली थी। देखते ही देखते, मेरी नज़र किसी गंजे सिर पर टिक जाती और मैं उसे A, B या C श्रेणी में डाल देती। इस हिसाब से तो बेहतर यही होता कि मैं मे कासाहारा को फ़ोन करके फिर से उनके साथ काम करने का प्रस्ताव रख देती।
कुछ दिन बीतने के बाद, मैंने पाया कि मैं बिना किसी विचार के बस बैठकर लोगों के चेहरों को निहार सकता था। उस जगह से गुजरने वाले अधिकांश लोग ऊँची इमारत में स्थित दफ्तरों में काम करने वाले पुरुष और महिलाएं थे। पुरुष सफेद कमीज और टाई पहने हुए थे और ब्रीफकेस लिए हुए थे, जबकि महिलाएं ज्यादातर ऊँची एड़ी के जूते पहने हुए थीं। अन्य लोगों में इमारत के रेस्तरां और दुकानों के ग्राहक, सबसे ऊपरी मंजिल पर बने अवलोकन डेक की ओर जाने वाले पारिवारिक समूह और कुछ ऐसे लोग भी थे जो बस वहाँ से गुजर रहे थे, एक जगह से दूसरी जगह जा रहे थे। यहाँ ज्यादातर लोग बहुत तेज नहीं चलते थे। मैं बस बिना किसी स्पष्ट उद्देश्य के उन सभी को देखता रहता था। कभी-कभी कुछ लोग किसी न किसी कारण से मेरा ध्यान आकर्षित करते थे, और तब मैं उनके चेहरों पर ध्यान केंद्रित करता और अपनी आँखों से उनका पीछा करता।
हर दिन, मैं भीड़भाड़ के बाद, सुबह दस बजे शिंजुकु जाने वाली ट्रेन लेता, चौक में बेंच पर बैठता और शाम चार बजे तक लगभग बिना हिले-डुले लोगों के चेहरों को देखता रहता। जब मैंने इसे खुद आजमाया, तब मुझे एहसास हुआ कि एक के बाद एक गुजरते चेहरे को देखते रहने से मेरा दिमाग पूरी तरह खाली हो जाता था, जैसे किसी बोतल से ढक्कन निकाल दिया गया हो। मैं किसी से बात नहीं करता था,

छोटी लग रही थी, लेकिन उसकी नाक के पास की झुर्रियों में एक खास तरह की उदासी झलक रही थी।
“क्या तुम्हारे पास पैसे हैं?” उसने पूछा।
इससे मैं चौंक गया। "पैसा? आपका क्या मतलब है, क्या मेरे पास कोई पैसा है?"
मैं बस पूछ रहा हूँ: क्या आपके पास पैसे हैं? क्या आप कंगाल हो गए हैं?
“नहीं। फिलहाल मैं कंगाल नहीं हूँ,” मैंने कहा।
उसने अपने होंठ हल्के से एक तरफ किए, मानो मेरी कही हुई बात को परख रही हो, और अपना सारा ध्यान मुझ पर केंद्रित कर लिया। फिर उसने सिर हिलाया। और फिर उसने अपने धूप के चश्मे पहने, सिगरेट ज़मीन पर गिरा दी, अपनी सीट से सलीके से उठी, और मेरी तरफ देखे बिना ही चली गई। मैं अचंभित होकर उसे भीड़ में गायब होते देखता रहा। शायद वह थोड़ी पागल थी। लेकिन उसकी सलीके से की गई वेशभूषा को देखकर यह मानना मुश्किल था। मैंने उसकी फेंकी हुई सिगरेट पर पैर रख दिया, जिससे वह बुझ गई, और फिर मैंने अपने आस-पास के वातावरण का धीरे-धीरे जायजा लिया, जो कि आम दुनिया जैसा ही था। लोग इधर-उधर जा रहे थे, हर किसी का अपना-अपना मकसद था। मैं नहीं जानता था कि वे कौन थे, और वे नहीं जानते थे कि मैं कौन था। मैंने गहरी सांस ली और बिना कुछ सोचे-समझे इन लोगों के चेहरों को देखने के अपने काम में वापस लग गया।
मैं ग्यारह दिनों तक वहीं बैठा रहा। हर दिन, मैं अपनी कॉफ़ी और डोनट्स खाता और बस आने-जाने वाले लोगों के चेहरों को देखता रहता। मेरे पास आई एक सजी-धजी महिला से हुई बेमतलब की बातचीत के अलावा, मैंने पूरे ग्यारह दिनों तक किसी से बात नहीं की। मैंने कुछ खास नहीं किया, और मेरे साथ कुछ खास घटित भी नहीं हुआ। फिर

भी, इस ग्यारह दिनों के खालीपन के बाद भी, मैं किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाया। मैं अब भी एक जटिल भूलभुलैया में उलझा हुआ था, सबसे सरल समस्या को भी हल करने में असमर्थ था।
लेकिन फिर, ग्यारहवें दिन की शाम को, कुछ बहुत ही अजीब हुआ। रविवार का दिन था, और मैं वहाँ सामान्य से ज़्यादा देर तक लोगों के चेहरे देखता रहा। रविवार को शिंजुकु आने वाले लोग आम दिनों की भीड़ से अलग थे, और कोई भीड़भाड़ नहीं थी। मेरी नज़र एक युवक पर पड़ी जिसके पास एक काला गिटार केस था। उसकी लंबाई औसत थी। उसने काले प्लास्टिक के फ्रेम वाला चश्मा पहना था, उसके बाल कंधों तक लंबे थे, उसने नीले डेनिम टॉप और बॉटम पहने थे, और वह घिसे-पिटे स्नीकर्स में धीरे-धीरे चल रहा था। वह मेरे पास से सीधे आगे देखते हुए गुज़रा, उसकी आँखों में एक विचारशील भाव था। जब मैंने उसे देखा, तो कुछ मेरे दिमाग में कौंध गया। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। मैं उस लड़के को जानता हूँ, मैंने सोचा। मैंने उसे कहीं देखा है। लेकिन मुझे याद आने में कुछ सेकंड लगे कि वह कौन था—वही गायक जिसे मैंने उस रात साप्पोरो के स्नैक बार में देखा था। इसमें कोई शक नहीं: वही था।
मैं तुरंत अपनी बेंच से उठा और उसके पीछे दौड़ पड़ा। उसकी धीमी चाल को देखते हुए, उसके साथ चलना मुश्किल नहीं था। मैं उससे दस कदम पीछे चल रहा था, अपनी चाल उसके अनुसार ढालते हुए। मैं उससे बात करने के बारे में गंभीरता से सोच रहा था। मैं उससे कुछ ऐसा कहता, “तीन साल पहले आप सपोरो में गा रहे थे, है ना? मैंने आपको वहाँ सुना था।”
“ओह, सच में?” वह कहता। “बहुत-बहुत धन्यवाद।” और फिर क्या? क्या मुझे कहना चाहिए, “मेरी पत्नी ने उस रात गर्भपात करवा लिया था। और वह कुछ समय पहले ही मुझे छोड़कर चली गई है। वह किसी दूसरे

आदमी के साथ सो रही थी”? मैंने बस उसका पीछा करने और देखने का फैसला किया कि क्या होता है। शायद चलते-चलते मुझे इससे निपटने का कोई अच्छा तरीका मिल जाए।
वह स्टेशन से दूर जा रहा था। ऊंची-ऊंची इमारतों की कतार पार करते हुए, उसने ओमे हाईवे को पार किया और योयोगी की ओर चल पड़ा। वह गहरी सोच में डूबा हुआ लग रहा था। जाहिर तौर पर उस इलाके में सहज महसूस करने वाला वह व्यक्ति न तो हिचकिचाता था और न ही इधर-उधर देखता था। वह एक ही गति से सीधा आगे बढ़ता रहा। मैं उसके पीछे-पीछे चल पड़ा, कुमिको के गर्भपात वाले दिन के बारे में सोचते हुए। मार्च की शुरुआत में साप्पोरो। धरती सख्त और जमी हुई थी, और कभी-कभार बर्फ के कुछ टुकड़े गिरते थे। मैं फिर से उन्हीं गलियों में था, मेरे फेफड़े जमी हुई हवा से भरे हुए थे। मैंने लोगों के मुंह से निकलती सफेद सांस देखी।
फिर मुझे एहसास हुआ: शायद यहीं से चीजें बदलने लगीं। जी हाँ, बिल्कुल। वह एक निर्णायक मोड़ था। उसके बाद, मेरे आस-पास का माहौल बदलने लगा था। अब जब मैं इस बारे में सोचती हूँ, तो मुझे लगता है कि वह गर्भपात हम दोनों के लिए बहुत महत्वपूर्ण घटना थी। हालाँकि, उस समय मैं इसके असली महत्व को समझ नहीं पाई थी। मैं गर्भपात की प्रक्रिया में ही इतनी मग्न थी कि शायद असली बात कुछ और ही थी।
मुझे ऐसा करना ही पड़ा, उसने कहा। मुझे लगा कि यही सही है, हम दोनों के लिए सबसे अच्छा है। लेकिन एक और बात है, जिसके बारे में तुम नहीं जानते, जिसे मैं अभी शब्दों में बयां नहीं कर सकती। मैं तुमसे कुछ छिपा नहीं रही हूँ। बस मुझे यकीन नहीं है कि यह सच है या नहीं। इसीलिए मैं इसे अभी शब्दों में बयां नहीं कर सकती।

उस समय, वह इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं थी कि वह बात सच थी। और वह बात, निःसंदेह, गर्भपात से ज़्यादा गर्भावस्था से जुड़ी थी। शायद उसका संबंध उसके गर्भ में पल रहे बच्चे से था। आखिर वह क्या हो सकता था? किस बात ने उसे इतनी उलझन में डाल दिया था? क्या उसके किसी दूसरे पुरुष से संबंध थे और उसने उसके बच्चे को जन्म देने से इनकार कर दिया था? नहीं, ऐसा तो हो ही नहीं सकता था। उसने खुद कहा था कि ऐसा संभव नहीं है। वह मेरा बच्चा था, यह तो निश्चित था। लेकिन फिर भी, कुछ ऐसा था जो वह मुझे बता नहीं पा रही थी। और वह बात मुझे छोड़ने के उसके फैसले से अटूट रूप से जुड़ी हुई थी। सब कुछ वहीं से शुरू हुआ था।
लेकिन वो रहस्य क्या था, वहाँ क्या छिपा था, मुझे इसका कोई अंदाज़ा नहीं था। मैं अकेला रह गया था, अंधेरे में अकेला। मुझे बस इतना पता था कि जब तक मैं उस रहस्य को सुलझा नहीं लेता, कुमिको कभी मेरे पास वापस नहीं आएगी। धीरे-धीरे, मुझे अपने शरीर में एक शांत क्रोध बढ़ता हुआ महसूस होने लगा, एक ऐसा क्रोध जो उस अदृश्य चीज़ के प्रति था। मैंने अपनी पीठ सीधी की, गहरी साँस ली और अपने दिल की धड़कन को शांत किया। फिर भी, क्रोध पानी की तरह चुपचाप मेरे शरीर के हर कोने में समा गया। यह दुःख से भरा क्रोध था। इसे किसी चीज़ पर लात मारकर मिटाने का कोई तरीका नहीं था, इसे दूर करने के लिए मैं कुछ भी नहीं कर सकता था।

•

वह आदमी एक ही स्थिर गति से चलता रहा। उसने ओडाक्यू लाइन की पटरियों को पार किया, दुकानों की एक कतार से गुजरा, एक मंदिर से होते हुए गलियों के एक भूलभुलैया से निकल गया। मैं उसके पीछे- पीछे चलता रहा, हर बार अपनी दूरी इस तरह से बढ़ाता रहा ताकि वह मुझे देख न सके। और यह स्पष्ट था कि उसने मुझे नहीं देखा था।

मैं इस सुनसान गली में यूं ही नहीं रुक सकता था। मैं सामने के दरवाजे तक गया और उसे धक्का दिया। मेरा अंदाज़ा सही था: दरवाजा बंद नहीं था और आसानी से अंदर की ओर खुल गया। मैं कुछ पल दरवाजे पर खड़ा रहा, अंदर के माहौल को समझने की कोशिश कर रहा था, लेकिन अंधेरे में मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। सारी खिड़कियां बंद थीं, और अंदर गर्म, बासी हवा भरी हुई थी। यहां की फफूंद की गंध मुझे कुएं की तलहटी की हवा की याद दिला रही थी। गर्मी से मेरी बगलें पसीने से तर हो रही थीं। मेरे कान के पीछे पसीने की एक बूंद बह गई। कुछ पल हिचकिचाने के बाद, मैं अंदर चला गया और चुपचाप दरवाजा बंद कर लिया। मेलबॉक्स या जूते रखने वाली अलमारी पर लगे नाम टैग (अगर कोई थे तो) देखकर मैं यह पता लगाना चाहता था कि क्या यहां कोई रहता है, लेकिन ऐसा करने से पहले ही मुझे एहसास हुआ कि कोई वहां है। कोई मुझे देख रहा है।
प्रवेश द्वार के ठीक दाहिनी ओर एक लंबा सा जूतों का कैबिनेट या कुछ इसी तरह की कोई चीज़ खड़ी थी, और कोई उसके ठीक पीछे छिपा हुआ था, मानो छुपने की कोशिश कर रहा हो। मैंने अपनी सांस रोक ली और उस धुंधली सी गर्माहट में झाँका। वहाँ खड़ा व्यक्ति वही युवक था जिसके पास गिटार का डिब्बा था। ज़ाहिर है, अंदर आने के बाद से ही वह जूतों के कैबिनेट के पीछे छिपा हुआ था। मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था, जैसे कोई हथौड़ा कील ठोक रहा हो। वह वहाँ क्या कर रहा था? मेरा इंतज़ार कर रहा था? "नमस्ते," मैंने खुद को मजबूर करके कहा। "मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था—"
मेरे मुंह से शब्द निकले ही थे कि किसी चीज ने मेरे कंधे पर ज़ोर से टक्कर मारी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। उस पल मुझे बस एक असहनीय आघात का एहसास हुआ। मैं वहीं खड़ा रहा, असमंजस में। लेकिन फिर, अगले ही पल, मुझे समझ आया कि क्या हो रहा

फिर मुझे एहसास हुआ कि वह आदमी मुस्कुरा रहा था। मैं उसे मारता रहा, फिर भी वह मेरी तरफ मुस्कुराता रहा—जितना ज़्यादा मैं उसे मारता, उसकी मुस्कान उतनी ही बड़ी होती जाती, आखिरकार, नाक और होंठों से खून बहने लगा और वह अपनी ही थूक में घुटते हुए ज़ोर से हँस पड़ा। मैंने सोचा, वह ज़रूर पागल है, और मैंने उसे मारना बंद कर दिया और सीधा खड़ा हो गया।
मैंने चारों ओर देखा और जूते रखने वाली अलमारी के किनारे एक काला गिटार का डिब्बा रखा हुआ पाया। मैंने उस आदमी को वहीं पड़ा छोड़ दिया, वह अभी भी हंस रहा था, और गिटार के डिब्बे के पास गया। उसे ज़मीन पर रखकर, मैंने कुंडी खोली और ढक्कन उठाया। अंदर कुछ नहीं था। वह बिल्कुल खाली था—न गिटार, न मोमबत्ती। वह आदमी हंसते और खांसते हुए मेरी तरफ देख रहा था। मेरी सांसें रुक गईं। अचानक, इस इमारत के अंदर की गर्म, उमस भरी हवा असहनीय हो गई। फफूंद की गंध, मेरे पसीने का स्पर्श, खून और लार की गंध, मेरा अपना गुस्सा और नफरत: सब कुछ मेरे लिए असहनीय हो गया। मैंने दरवाजा धक्का देकर खोला और बाहर चला गया, दरवाजा अपने पीछे बंद कर लिया। पहले की तरह, आसपास किसी का कोई निशान नहीं था। बस एक बड़ी भूरी बिल्ली धीरे-धीरे खाली जगह से गुजर रही थी, मेरी तरफ बिल्कुल बेखबर।
मैं वहाँ से किसी के देखने से पहले निकलना चाहता था। मुझे पता नहीं था कि मुझे किस तरफ जाना चाहिए, लेकिन मैं चलने लगा और थोड़ी ही देर में मुझे "शिंजुकु स्टेशन" लिखा हुआ बस स्टॉप मिल गया। अगली बस आने से पहले मैं अपनी साँसों को शांत करना और दिमाग को स्थिर करना चाहता था, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। मैं बार-बार खुद से कह रहा था: मैं बस लोगों के चेहरों को देखने की कोशिश कर रहा था! मैं बस सड़क पर गुजर रहे लोगों के चेहरों को देख रहा

था, जैसा मेरे चाचा ने कहा था। मैं बस अपनी ज़िंदगी की सबसे छोटी-छोटी उलझनों को सुलझाने की कोशिश कर रहा था, बस इतना ही। जब मैं बस में चढ़ा, तो यात्री मेरी तरफ मुड़े। हर किसी ने मुझे एक ही तरह से हैरानी भरी नज़र से देखा और फिर अपनी नज़रें हटा लीं। मुझे लगा कि यह मेरे चेहरे पर लगे निशान की वजह से था। कुछ देर बाद मुझे एहसास हुआ कि यह मेरी सफेद कमीज़ पर उस आदमी के खून (ज़्यादातर उसकी नाक का खून) और मेरे हाथों में पकड़े बेसबॉल बैट के छींटों की वजह से था।
मैं उस बल्ले को अपने साथ घर तक ले आया और उसे अलमारी में फेंक दिया।
उस रात मैं सूरज उगने तक जागता रहा। मेरे कंधे और बाएँ हाथ पर जहाँ उस आदमी ने मुझे बल्ले से मारा था, वहाँ सूजन आ गई थी और दर्द से धड़कन तेज़ हो रही थी, और मेरी दाहिनी मुट्ठी में अभी भी उस आदमी को बार-बार घूँट मारने का एहसास था। मुझे एहसास हुआ कि मेरा हाथ अभी भी मुट्ठी बना हुआ था, अभी भी गेंद की तरह जकड़ा हुआ था और लड़ने के लिए तैयार था। मैंने उसे ढीला करने की कोशिश की, लेकिन हाथ ने साथ नहीं दिया। और जहाँ तक सोने की बात थी, यह नींद न आने की बात कम और नींद न आने की बात ज़्यादा थी। अगर मैं इस हालत में सो जाता, तो भयानक सपने आने से बचना नामुमकिन था। खुद को शांत करने की कोशिश करते हुए, मैं रसोई की मेज पर बैठ गया, अपने चाचा द्वारा छोड़ी गई व्हिस्की के घूँट लेता रहा और कैसेट प्लेयर पर धीमा संगीत सुनता रहा। मैं किसी से बात करना चाहता था। मैं चाहता था कि कोई मुझसे बात करे। मैंने टेलीफोन को मेज पर रख दिया और घंटों उसे देखता रहा। मुझे फोन करो, कोई, प्लीज़, कोई भी—यहाँ तक कि वह रहस्यमयी फोन वाली औरत भी; मुझे परवाह नहीं थी। चाहे वह कितनी भी गंदी और अर्थहीन बात हो, कितनी भी

घिनौनी और खतरनाक बातचीत हो। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। मैं बस इतना चाहती थी कि कोई मुझसे बात करे।
लेकिन फ़ोन की घंटी नहीं बजी। मैंने बची हुई आधी बोतल स्कॉच खत्म की, और जब उजाला हुआ तो मैं बिस्तर पर लेट गया और सो गया। कृपया मुझे सपने न देखने दें, बस मेरी नींद को एक खालीपन ही रहने दें, कम से कम आज के लिए।
लेकिन हां, मैंने सपना देखा था। और जैसा मैंने सोचा था, वह एक भयानक सपना था। गिटार केस वाला आदमी सपने में था। मैंने सपने में भी वही किया जो असलियत में किया था—उसके पीछे जाना, अपार्टमेंट का दरवाज़ा खोलना, बल्ले की मार झेलना और उस आदमी को लगातार मारना। लेकिन उसके बाद सब कुछ बदल गया। जब मैंने उसे मारना बंद किया और खड़ा हुआ, तो वह आदमी, असलियत की तरह ही मुंह से लार टपकाते और बेतहाशा हंसते हुए, अपनी जेब से एक चाकू निकाला—एक छोटा, तेज़ धार वाला चाकू। पर्दों से छनकर आती हल्की शाम की रोशनी में चाकू की धार चमक रही थी, मानो हड्डी जैसी सफेद चमक हो। लेकिन उस आदमी ने चाकू से मुझ पर हमला नहीं किया। इसके बजाय, उसने अपने सारे कपड़े उतार दिए और अपनी त्वचा को ऐसे छीलने लगा जैसे सेब का छिलका हो। वह तेज़ी से काम कर रहा था और लगातार ज़ोर-ज़ोर से हंस रहा था। उसके शरीर से खून बह निकला, जिससे ज़मीन पर एक काला, डरावना तालाब बन गया। अपने दाहिने हाथ से उसने अपनी बाईं बांह की चमड़ी छीली, और अपने खून से लथपथ, छिले हुए बाएं हाथ से उसने अपनी दाहिनी बांह की चमड़ी छीली। अंत में, वह मांस का एक चमकीला लाल लोथड़ा बन गया, लेकिन तब भी, वह अपने खुले हुए मुंह के अंधेरे छेद से हंसता रहा, उसकी सफेद पुतलियां मांस के कच्चे लोथड़े पर रुक-रुक कर हिल रही थीं। जल्द ही, मानो उसकी असामान्य रूप से तेज हंसी के जवाब में, उस आदमी की

□□□□□ □□□: □ □□□□□□□□ (□□□□□□□ 1984 □□ □□□□□□ 1985)

सर्दियों में चाबी भरने वाला पक्षी

•

उस अजीब गर्मी के अंत और सर्दियों के आगमन के बीच, मेरा जीवन बिना किसी बदलाव के चलता रहा। हर दिन बिना किसी घटना के शुरू होता और वैसे ही समाप्त होता। सितंबर में खूब बारिश हुई। अक्टूबर में कई गर्म और उमस भरे दिन रहे। मौसम के अलावा, एक दिन को दूसरे दिन से अलग करने वाली कोई खास बात नहीं थी। मैंने अपना ध्यान वास्तविक और उपयोगी चीजों पर केंद्रित करने की कोशिश की। मैं लगभग हर दिन लंबे समय तक तैरने के लिए पूल जाता, सैर करता और अपने लिए तीन समय का भोजन बनाता।
लेकिन फिर भी, कभी-कभी मुझे अकेलेपन का तीव्र दर्द महसूस होता था। जो पानी मैं पीता था, जो हवा मैं सांस लेता था, वो सब मुझे लंबी, नुकीली सुइयों की तरह चुभती थीं। मेरे हाथों में किताब के पन्ने रेज़र ब्लेड की तरह तीखे और खतरनाक लगते थे। सुबह चार बजे जब दुनिया शांत हो जाती थी, तब भी मुझे अपने अंदर अकेलेपन की जड़ें रेंगती सुनाई देती थीं।

•

फिर भी कुछ लोग ऐसे थे जो मेरा पीछा नहीं छोड़ रहे थे—कुमिको के परिवार के लोग, जो मुझे चिट्ठियाँ लिखते थे। उनका कहना था कि कुमिको मेरे साथ शादीशुदा ज़िंदगी नहीं जी सकती, इसलिए मुझे तुरंत तलाक के लिए राज़ी हो जाना चाहिए। उनका मानना था कि इससे सारी समस्याएँ हल हो जाएँगी। पहली कुछ चिट्ठियों में उन्होंने पेशेवर अंदाज़ में मुझ पर दबाव डालने की कोशिश की। जब मैंने जवाब नहीं दिया, तो उन्होंने धमकियों का सहारा लिया और अंत में गिड़गिड़ाने लगे। सबका मकसद एक ही था।

अंततः, कुमिको के पिता का फोन आया।
मैंने कहा, “मैं ये नहीं कह रहा कि मैं तलाक के बिलकुल खिलाफ हूँ। लेकिन पहले मैं कुमिको से अकेले में मिलना और बात करना चाहता हूँ। अगर वो मुझे यकीन दिला दे कि वो यही चाहती है, तो मैं उसे तलाक दे दूँगा। यही एकमात्र तरीका है जिससे मैं इसके लिए राज़ी हो जाऊँगा।”
मैंने रसोई की खिड़की की ओर मुड़कर दूर तक फैले काले, बारिश से भरे आसमान को देखा। लगातार चार दिनों से बारिश हो रही थी, जिससे पूरा आसमान भीगा और काला लग रहा था।
"कुमिको और मैंने शादी का फैसला करने से पहले हर बात पर विस्तार से चर्चा की थी, और अगर हमें उस शादी को खत्म करना ही है, तो मैं इसे उसी तरह से खत्म करना चाहता हूं।"
कुमिको के पिता और मैं एक-दूसरे के समानांतर बयान देते रहे, लेकिन किसी नतीजे पर नहीं पहुंचे—या कम से कम सार्थक नतीजे पर तो नहीं।

•

कई सवाल अनुत्तरित रह गए। क्या कुमिको सचमुच मुझसे तलाक लेना चाहती थी? और क्या उसने अपने माता-पिता से मुझे इसके लिए मनाने की कोशिश करने को कहा था? "कुमिको कहती है कि वह तुमसे मिलना नहीं चाहती," उसके पिता ने मुझसे कहा था, ठीक वैसे ही जैसे उसके भाई नोबोरू वटाया ने कहा था। यह शायद पूरी तरह झूठ नहीं था। कुमिको के माता-पिता बातों को अपने हिसाब से समझने में संकोच नहीं करते थे, लेकिन जहाँ तक मुझे पता था, वे मनगढ़ंत बातें करने वाले लोग नहीं थे। वे अच्छे या बुरे, यथार्थवादी लोग थे। अगर उसके पिता की बात सच थी, तो क्या कुमिको अब उनके "संरक्षण" में थी?

कभी-कभी मुझे क्रेता कानो के साथ बिताई वो रात याद आ जाती थी, लेकिन वो यादें रहस्यमय तरीके से धुंधली थीं। उस रात मैंने उसे अपनी बाहों में भर लिया था और कई बार अपने शरीर को उसके साथ मिलाया था: ये एक निर्विवाद तथ्य था। लेकिन जैसे-जैसे हफ्ते बीतते गए, निश्चितता का एहसास गायब होने लगा। मैं उसके शरीर की या उसके मेरे साथ जुड़ने के तरीकों की ठोस तस्वीरें याद नहीं कर पा रहा था। बल्कि, उस रात की वास्तविकता की यादों की तुलना में, मेरे मन में उसके साथ पहले जो कुछ हुआ था, उसकी यादें कहीं अधिक स्पष्ट थीं। कुमिको की नीली पोशाक पहने, उस अजीब से होटल के कमरे में, मेरे ऊपर लेटी हुई उसकी छवि, आश्चर्यजनक स्पष्टता के साथ बार-बार मेरे सामने आती थी।

•

अक्टूबर की शुरुआत में, नीगाटा के प्रतिनिधि के रूप में सेवा कर रहे नोबोरू वटाया के चाचा का निधन हो गया। नीगाटा के अस्पताल में आधी रात के कुछ समय बाद उन्हें दिल का दौरा पड़ा और भोर तक, डॉक्टरों के तमाम प्रयासों के बावजूद, उनकी जान बच गई। उनकी मृत्यु की आशंका पहले से ही थी, और जल्द ही आम चुनाव होने वाले थे, इसलिए चाचा के समर्थकों ने नोबोरू वटाया को निर्वाचन क्षेत्र का उत्तराधिकारी बनाने की अपनी पूर्व योजना को तुरंत अंतिम रूप दे दिया। दिवंगत प्रतिनिधि की वोट जुटाने की रणनीति सुदृढ़ और रूढ़िवादी थी। किसी अप्रत्याशित घटना को छोड़कर, नोबोरू वटाया का चुनाव लगभग निश्चित था।
पुस्तकालय के अखबार में लेख पढ़ते ही सबसे पहले मेरे मन में यही ख्याल आया कि अब से वटाया परिवार कितना व्यस्त रहने वाला है। कुमिको के तलाक की बात तो किसी के भी दिमाग में दूर-दूर तक नहीं होगी।

•

जिनमें बसंत के मौसम की रंगीन पोशाकों, ब्लाउज़ और स्कर्ट की तस्वीरें थीं। सर्दी बहुत तेज़ थी, लेकिन मैं कभी-कभी हीटर चलाना भूल जाती थी, मुझे समझ नहीं आता था कि ठंड असली है या सिर्फ मेरे अंदर का वहम। मैं हीटर तभी चलाती थी जब थर्मामीटर देखकर मुझे यकीन हो जाता था कि वाकई ठंड है, लेकिन फिर भी, ठंड कम नहीं होती थी।

•

मैंने लेफ्टिनेंट मामिया को अपने साथ घटी घटनाओं का संक्षिप्त विवरण देते हुए पत्र लिखा। शायद उन्हें पत्र पाकर खुशी से ज़्यादा शर्मिंदगी महसूस होती, लेकिन मुझे कोई और समझ नहीं आ रहा था जिसे मैं पत्र लिख सकूँ। मैंने पत्र की शुरुआत उसी माफीनामे से की। फिर मैंने उन्हें बताया कि जिस दिन वे मेरे घर आए थे, उसी दिन कुमिको मुझे छोड़कर चली गई थी, वह कुछ महीनों से किसी और पुरुष के साथ संबंध रख रही थी, मैंने लगभग तीन दिन कुएँ की तलहटी में यह सोचते हुए बिताए कि अब मैं यहाँ बिल्कुल अकेला रह रहा हूँ, और श्री होंडा की दी हुई निशानी एक खाली व्हिस्की की डिब्बी के सिवा कुछ नहीं थी।
लेफ्टिनेंट मामिया ने मुझे एक सप्ताह बाद जवाब भेजा।
सच कहूँ तो, हमारी पिछली मुलाकात के बाद से आप मेरे ख्यालों में हद से ज़्यादा छाए हुए हैं। आपके घर से निकलते समय मुझे लगा था कि हमें और बात करनी चाहिए, एक-दूसरे से दिल खोलकर बातें करनी चाहिए, और ऐसा न कर पाने का मुझे बहुत अफ़सोस है। लेकिन दुर्भाग्यवश, कुछ ज़रूरी काम आ गया, जिसकी वजह से मुझे उसी रात हिरोशिमा लौटना पड़ा। इसलिए, एक तरह से, मुझे आपका पत्र पाकर बहुत खुशी हुई। मुझे लगता है कि शायद श्री होंडा का इरादा हम दोनों को मिलवाना ही था। शायद उन्हें लगा होगा कि मेरा आपसे

मिलना और आपका मुझसे मिलना अच्छा रहेगा। स्मृति चिन्हों का बंटवारा शायद मुझे आपसे मिलने का बहाना रहा हो। शायद इसी वजह से वह खाली डिब्बा था। आपसे मिलना ही उनके लिए एक स्मृति चिन्ह होता।
यह सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि आपने कुएँ में समय बिताया था, क्योंकि मैं भी कुओं की ओर बहुत आकर्षित होता हूँ। अपने साथ हुए उस भयानक अनुभव को देखते हुए, कोई सोचेगा कि मैं फिर कभी कुआँ देखना नहीं चाहूँगा, लेकिन इसके बिल्कुल विपरीत, आज भी जब भी मैं कोई कुआँ देखता हूँ, तो उसमें झाँकने से खुद को रोक नहीं पाता। और अगर वह सूखा कुआँ निकलता है, तो मुझे उसमें उतरने की तीव्र इच्छा होती है। शायद मैं यह उम्मीद करता हूँ कि मुझे वहाँ कुछ मिल जाएगा, कि अगर मैं अंदर जाकर बस इंतज़ार करूँ, तो मुझे कुछ न कुछ ज़रूर मिल जाएगा। ऐसा नहीं है कि मैं उससे अपना जीवन वापस पाने की उम्मीद करता हूँ। नहीं, मैं ऐसी उम्मीद रखने के लिए बहुत बूढ़ा हो चुका हूँ। मैं जो खोजना चाहता हूँ, वह है उस जीवन का अर्थ जो मैंने खो दिया है। वह मुझसे किसने छीना, और क्यों? मैं इन सवालों के जवाब पूरी निश्चितता के साथ जानना चाहता हूँ। और मैं यहाँ तक कहूँगा कि अगर मुझे वे जवाब मिल जाएँ, तो मुझे पहले से भी ज़्यादा गहरे खोए होने में कोई आपत्ति नहीं होगी। वास्तव में, मेरे जीवन के जितने भी वर्ष शेष हों, मैं सहर्ष इस प्रकार का बोझ स्वीकार करूंगा।
आपकी पत्नी के आपको छोड़कर चले जाने की खबर सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ, लेकिन इस विषय पर मैं आपको कोई सलाह नहीं दे सकता। मैंने बहुत लंबा समय प्रेम और परिवार के अभाव में बिताया है, इसलिए ऐसे मामलों पर बोलने के लिए मैं योग्य नहीं हूँ। हालांकि, मेरा मानना है कि यदि आप उसके लौटने का कुछ समय और इंतजार करने को

तैयार हैं, तो शायद आपको वहीं इंतजार करते रहना चाहिए। यह मेरी राय है, चाहे इसका कोई खास महत्व हो या न हो। मैं भली-भांति समझता हूँ कि किसी ऐसे स्थान पर अकेले रहना कितना कठिन होता है जहाँ से कोई आपको छोड़कर चला गया हो, लेकिन इस दुनिया में आशा की कोई किरण न होने की निराशा से बढ़कर कोई क्रूर बात नहीं है। अगर संभव हुआ तो मैं जल्द ही टोक्यो आकर आपसे दोबारा मिलना चाहूंगा, लेकिन दुर्भाग्यवश मेरे एक पैर में थोड़ी समस्या है और उसके इलाज में कुछ समय लगेगा। कृपया अपना ख्याल रखें और स्वस्थ रहें।
कभी-कभी मैं बगीचे की दीवार पर चढ़कर घुमावदार गली से नीचे उस जगह जाता जहाँ कभी खाली पड़ा मियावाकी का घर हुआ करता था। तीन चौथाई लंबाई का कोट पहने और ठुड्डी के नीचे दुपट्टा ओढ़े, मैं गली की सूखी सर्दियों की घास पर पैर रखता था। ऊपर से गुजरती बिजली की तारों से बर्फीली ठंडी हवा के छोटे-छोटे झोंके सीटी बजाते हुए गुजरते थे। घर पूरी तरह से ध्वस्त हो चुका था, और अब आँगन ऊँची लकड़ी की बाड़ से घिरा हुआ था। मैं बाड़ के छेदों से अंदर देख सकता था, लेकिन वहाँ देखने के लिए कुछ भी नहीं था—न घर, न पत्थर, न कुआँ, न पेड़, न टीवी एंटीना, न पक्षी की मूर्ति: बस ठंडी दिखने वाली ज़मीन का एक सपाट, काला हिस्सा, जो बुलडोजर के पहियों से दबा हुआ था, और कुछ बिखरे हुए खरपतवारों के गुच्छे। मुझे मुश्किल से विश्वास हो रहा था कि कभी आँगन में एक गहरा कुआँ हुआ करता था और मैं उसमें उतरा था।
मैं बाड़ से टिककर मेई कासाहारा के घर की ओर देख रहा था, जहाँ दूसरी मंजिल पर उसका कमरा था। लेकिन वह अब वहाँ नहीं थी। वह अब बाहर आकर मुझे "हाय, मिस्टर विंड-अप बर्ड" नहीं कहेगी।

•

फरवरी के मध्य में एक कड़ाके की ठंड वाली दोपहर को, मैं स्टेशन के पास स्थित उस रियल एस्टेट ऑफिस में गया जिसके बारे में मेरे चाचा ने मुझे बताया था, सेतागाया दाई-इची रियल्टर्स। अंदर जाते ही सबसे पहले मेरी नज़र एक अधेड़ उम्र की महिला रिसेप्शनिस्ट पर पड़ी। प्रवेश द्वार के पास कई डेस्क कतार में लगे थे, लेकिन उनकी कुर्सियाँ खाली थीं, मानो सभी ब्रोकर अपॉइंटमेंट के लिए बाहर गए हों। कमरे के बीचोंबीच एक बड़ा गैस हीटर तेज़ लाल रंग में चमक रहा था। पीछे की ओर बने छोटे से रिसेप्शन एरिया में एक सोफे पर दुबला-पतला बूढ़ा आदमी अखबार में मग्न बैठा था। मैंने रिसेप्शनिस्ट से पूछा कि क्या श्री इचिकावा यहाँ हैं? "जी हाँ, मैं ही हूँ," बूढ़े आदमी ने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा। "क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ?"
मैंने अपना परिचय अपने चाचा के भतीजे के रूप में दिया और बताया कि मैं अपने चाचा के स्वामित्व वाले घरों में से एक में रहता हूं।
“ओह, मैं समझ गया,” बूढ़े आदमी ने अपना कागज़ नीचे रखते हुए कहा। “तो आप श्री त्सुरुता के भतीजे हैं!” उन्होंने अपना चश्मा मोड़ा और मुझे सिर से पैर तक देखा। मैं समझ नहीं पा रहा था कि मैं उन पर कैसा प्रभाव डाल रहा हूँ। “अंदर आइए, अंदर आइए। क्या मैं आपको एक कप चाय पिलाऊँ?”
मैंने उसे कहा कि परेशान होने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन या तो उसने मेरी बात सुनी नहीं या उसने मेरी बात अनसुनी कर दी। उसने रिसेप्शनिस्ट से चाय बनवाई। उसे चाय लाने में ज़्यादा समय नहीं लगा, लेकिन जब तक हम दोनों आमने-सामने बैठकर चाय पी रहे थे, तब तक चूल्हा बुझ चुका था और कमरा ठंडा होने लगा था। दीवार पर इलाके के सभी घरों को दर्शाने वाला एक विस्तृत नक्शा टंगा हुआ था, जिस

पर जगह-जगह पेंसिल या स्केच पेन से निशान लगे थे। उसके बगल में वैन गॉग की मशहूर पुल की पेंटिंग वाला एक कैलेंडर टंगा था: एक बैंक कैलेंडर।
“मैंने तुम्हारे चाचा को काफी समय से नहीं देखा। वो कैसे हैं?” बूढ़े आदमी ने चाय की एक घूंट लेते हुए पूछा।
मैंने कहा, "मुझे लगता है कि वह ठीक हैं, हमेशा की तरह व्यस्त हैं। मैं खुद उनसे ज्यादा नहीं मिलता।"
“यह जानकर खुशी हुई कि वह ठीक है। उसे देखे हुए कितने साल हो गए? मुझे हैरानी होती है। कम से कम ऐसा लगता तो है जैसे कई साल बीत गए हों।” उसने अपनी जैकेट की जेब से एक सिगरेट निकाली और बड़ी सावधानी से निशाना साधकर ज़ोर से माचिस जलाई। “मैंने ही उसके लिए वह घर ढूंढा था और लंबे समय तक उसका काम भी संभाला था। खैर, यह जानकर अच्छा लगा कि वह व्यस्त है।”
स्वयं श्री इचिकावा बिल्कुल भी व्यस्त नहीं लग रहे थे। मुझे लगा कि वे आधे सेवानिवृत्त हो चुके होंगे और कभी-कभार कार्यालय आकर पुराने ग्राहकों की देखभाल करते होंगे।
“तो आपको घर कैसा लगा? कोई समस्या तो नहीं है?”
“नहीं, बिलकुल नहीं,” मैंने कहा।
बूढ़े आदमी ने सिर हिलाया। “यह अच्छी बात है। यह एक अच्छी जगह है। शायद थोड़ी छोटी है, लेकिन रहने के लिए अच्छी जगह है। यहाँ रहने वाले लोगों के लिए हमेशा सब कुछ अच्छा रहा है। आपके लिए भी?”
“बुरा नहीं,” मैंने उससे कहा। कम से कम मैं ज़िंदा तो हूँ, मैंने मन ही मन कहा। “वैसे, मुझे आपसे कुछ पूछना था। मेरे चाचा कहते हैं कि आप इस इलाके के बारे में सबसे ज़्यादा जानते हैं।”

बूढ़े आदमी ने खिलखिलाकर हंसते हुए कहा, "इस इलाके के बारे में मुझे अच्छी जानकारी है। मैं यहां करीब चालीस सालों से रियल एस्टेट का कारोबार कर रहा हूं।"
"मैं आपसे जिस बारे में पूछना चाहता हूं, वह हमारे पीछे वाली मियावाकी की जगह है। उन्होंने उसे बुलडोजर से गिरा दिया है, आप जानते हैं।"
“हाँ, मुझे पता है,” बूढ़े आदमी ने होंठ सिकोड़ते हुए कहा, मानो वह अपने दिमाग में कुछ याद करने की कोशिश कर रहा हो। “यह पिछले अगस्त में बिक गया। आखिरकार उन्होंने गिरवी, मालिकाना हक और कानूनी सारी समस्याएँ सुलझा लीं और इसे बाज़ार में बेच दिया। एक सट्टेबाज ने इसे खरीद लिया, ताकि घर को गिराकर ज़मीन बेच सके। इतने लंबे समय तक घर खाली पड़ा रहे, चाहे वह कितना भी अच्छा क्यों न हो, बिकेगा नहीं। ज़ाहिर है, इसे खरीदने वाले लोग यहाँ के नहीं हैं। यहाँ का कोई भी व्यक्ति इस जगह को हाथ नहीं लगाएगा। क्या आपने कुछ कहानियाँ सुनी हैं?”
"जी हां, मुझे मेरे चाचा से मिला है।"
“तो फिर आप समझ ही गए होंगे कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि हम इसे खरीदकर किसी ऐसे व्यक्ति को बेच सकते थे जिसे इसके बारे में ज्यादा जानकारी न हो, लेकिन हम इस तरह से व्यापार नहीं करते। इससे मन में एक कड़वाहट सी रह जाती है।” मैंने सहमति में सिर हिलाया। "तो फिर इसे किसने खरीदा?"
बूढ़े आदमी ने अपनी भौंहें सिकोड़ीं और सिर हिलाया, फिर मुझे एक मशहूर रियल एस्टेट कंपनी का नाम बताया। “शायद उन्होंने कोई रिसर्च नहीं की, बस जगह और कीमत देखते ही खरीद ली, सोचा कि जल्दी मुनाफा कमा लेंगे। लेकिन ये इतना आसान नहीं होने वाला।”
“क्या वे इसे बेच नहीं पाए?”

“वे कई बार करीब आ गए थे,” बूढ़े आदमी ने हाथ जोड़ते हुए कहा। “ज़मीन खरीदना सस्ता नहीं होता। यह ज़िंदगी भर का निवेश है। लोग सावधान रहते हैं। जब वे किसी चीज़ की छानबीन शुरू करते हैं, तो सारी बातें सामने आ जाती हैं, और इस मामले में, उनमें से एक भी अच्छी नहीं है। ऐसी कहानियाँ सुनकर आम आदमी ज़मीन नहीं खरीदेगा। यहाँ आस-पास रहने वाले ज़्यादातर लोग उस जगह के बारे में कहानियाँ जानते हैं।”
वे क्या पूछ रहे हैं?
“पूछ रहे हैं?”
"उस जमीन की कीमत जिस पर मियावाकी का घर था।"
बूढ़े श्री इचिकावा ने मेरी ओर ऐसे देखा मानो कह रहे हों कि मैंने उनकी जिज्ञासा जगा दी है। “चलिए देखते हैं। यह प्लॉट पैंतीस सौ वर्ग फुट से थोड़ा अधिक है। लगभग सौ त्सुबो। बाज़ार में इसकी कीमत डेढ़ मिलियन येन प्रति त्सुबो होगी। मतलब, यह एक बेहतरीन प्लॉट है—शानदार लोकेशन, दक्षिणमुखी। डेढ़ मिलियन, कोई दिक्कत नहीं, भले ही बाज़ार में मंदी हो। आपको थोड़ा इंतज़ार करना पड़ सकता है, लेकिन उस जगह पर आपको मनचाही कीमत मिल जाएगी। आमतौर पर। लेकिन मियावाकी की ज़मीन साधारण नहीं है। चाहे आप कितना भी इंतज़ार करें, वह बिकने वाली नहीं है। इसलिए कीमत कम होनी ही है। यह पहले ही एक मिलियन दस प्रति त्सुबो तक गिर चुकी है, इसलिए थोड़ी और मोलभाव करके आप शायद पूरी ज़मीन पूरे एक सौ मिलियन में खरीद सकते हैं।”
"क्या आपको लगता है कि कीमत में गिरावट जारी रहेगी?"
बूढ़े आदमी ने तेज़ी से सिर हिलाया। “ज़ाहिर है, इसकी कीमत गिरेगी। नौ लाख प्रति त्सुबो तक आसानी से गिर जाएगी। उन्होंने इसे इतने में ही खरीदा था। अब वे सच में चिंतित हो रहे हैं। अगर

उन्हें बराबर का भी नुकसान न हो, तो वे बहुत खुश होंगे। मुझे नहीं पता कि वे इससे नीचे जाएंगे या नहीं। अगर उन्हें पैसों की तंगी है, तो वे नुकसान भी उठा सकते हैं। वरना, वे इंतज़ार कर सकते हैं। मुझे बस इतना नहीं पता कि कंपनी के अंदर क्या चल रहा है। मुझे इतना ज़रूर पता है कि उन्हें इस जगह को खरीदने का पछतावा है। उस ज़मीन के चक्कर में पड़ना किसी के लिए भी अच्छा नहीं होगा।” उन्होंने अपनी राख ऐशट्रे में झाड़ दी।
“आंगन में एक कुआँ है, है ना?” मैंने पूछा। “क्या आप कुएँ के बारे में कुछ जानते हैं?”
“हम्म, इसमें एक कुआँ तो है ना?” श्री इचिकावा ने कहा। “एक गहरा कुआँ। लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने इसे भर दिया होगा। आखिर यह सूखा था। बेकार था।”
"क्या आपको पता है कि यह कब सूख गया?"
बूढ़ा आदमी कुछ देर तक बाँहें बाँधे छत को घूरता रहा। “बहुत समय हो गया है। मुझे ठीक से याद नहीं, लेकिन मुझे यकीन है कि मैंने सुना था कि युद्ध से पहले इसमें पानी हुआ करता था। युद्ध के बाद यह सूख गया होगा। मुझे ठीक-ठीक समय नहीं पता। लेकिन मुझे पता है कि जब वह अभिनेत्री रहने आई थी, तब यह सूखा था। उस समय कुएँ को भरने के बारे में बहुत चर्चा हुई थी। लेकिन किसी ने कुछ नहीं किया। शायद यह बहुत झंझट का काम था।”
"गली के उस पार कसाहारा के घर में जो कुआँ है, उसमें अभी भी काफी पानी है - अच्छा पानी, मुझे बताया गया है।"
“शायद हाँ, शायद हाँ। उस इलाके के कुओं से हमेशा अच्छा पानी निकलता था। मिट्टी का इससे कुछ लेना-देना है। आप जानते हैं, पानी की धाराएँ बहुत नाजुक होती हैं। एक जगह पानी मिलना और ठीक

उसके पास कहीं पानी न होना कोई असामान्य बात नहीं है। क्या उस कुएँ में कुछ ऐसा है जो आपको दिलचस्प लगता है?”
सच कहूं तो, मैं वह जमीन खरीदना चाहता हूं।
बूढ़े आदमी ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और मेरी आँखों में देखा।
फिर उसने अपनी चाय का प्याला उठाया और चुपचाप एक घूंट पिया। "क्या आप वह ज़मीन खरीदना चाहते हैं?"
मैंने सिर्फ सिर हिलाकर जवाब दिया।
बूढ़े आदमी ने अपने पैकेट से एक और सिगरेट निकाली और उसे मेज पर थपथपाया। लेकिन फिर, उसे जलाने के बजाय, उसने उसे अपनी उंगलियों के बीच पकड़ लिया। उसकी जीभ उसके होठों पर फिरी। “मैं एक बार फिर कहना चाहता हूँ कि वह जगह समस्याओं से भरी है। वहाँ कोई भी— मेरा मतलब है कोई भी—कभी कामयाब नहीं हुआ है। क्या तुम्हें यह एहसास है? चाहे वह कितनी भी सस्ती हो जाए, वह जगह कभी भी फायदे का सौदा नहीं हो सकती। लेकिन फिर भी तुम उसे चाहते हो?”
“हाँ, मुझे अब भी वह जगह चाहिए, चाहे मुझे सब कुछ पता हो। लेकिन मैं एक बात स्पष्ट करना चाहता हूँ: मेरे पास अभी उस जगह को खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं हैं, चाहे कीमत बाज़ार मूल्य से कितनी भी कम क्यों न हो जाए। लेकिन मैं पैसे जुटाने का इरादा रखता हूँ, चाहे इसमें थोड़ा समय लगे। इसलिए मैं चाहता हूँ कि मुझे हर नई जानकारी मिलती रहे। क्या आप मुझे कीमत में बदलाव होने पर या कोई खरीदार मिलने पर सूचित करेंगे?”
कुछ देर तक बूढ़ा आदमी अपनी बुझी सिगरेट को देखता रहा, सोच में डूबा हुआ। फिर खाँसी के साथ गला साफ़ करते हुए बोला, “चिंता मत करो, तुम्हारे पास समय है; मैं तुम्हें गारंटी देता हूँ कि वह जगह अभी कुछ समय तक नहीं बिकेगी। जब तक वे उसे लगभग मुफ़्त में नहीं देंगे, तब तक वह बिकेगी नहीं, और ऐसा होने में अभी कुछ समय

लगेगा। इसलिए पैसे जुटाने के लिए जितना समय चाहिए ले लो। अगर तुम सच में उसे खरीदना चाहते हो।”
मैंने उसे अपना फ़ोन नंबर बताया। उस बूढ़े आदमी ने उसे पसीने से भीगी एक छोटी काली नोटबुक में लिख लिया। नोटबुक को अपनी जैकेट की जेब में वापस रखने के बाद, उसने कुछ देर तक मेरी आँखों में देखा और फिर मेरे गाल पर बने निशान को देखा।

•

फरवरी का महीना खत्म हुआ और मार्च का आधा महीना बीत चुका था कि कड़ाके की ठंड थोड़ी कम होने लगी। दक्षिण से गर्म हवाएं चलने लगीं। पेड़ों पर कलियां खिलने लगीं और बगीचे में नए पक्षी दिखाई देने लगे। गर्म दिनों में मैं बरामदे में बैठकर बगीचे को निहारने में समय बिताने लगा। एक शाम मुझे श्री इचिकावा का फोन आया। उन्होंने बताया कि मियावाकी की जमीन अभी तक बिकी नहीं है और कीमत थोड़ी कम हो गई है।
“मैंने तुमसे कहा था ना कि यह कुछ समय तक नहीं हिलेगा,” उसने थोड़ा गर्व से कहा। “चिंता मत करो, अब से यह धीरे-धीरे नीचे खिसकेगा। इस बीच, तुम कैसे हो? क्या चंदा इकट्ठा हो रहा है?”

•

उस रात आठ बजे जब मैं चेहरा धो रही थी, तभी मैंने देखा कि मेरे निशान में हल्का बुखार सा आ गया है। जब मैंने उस पर उंगली रखी, तो मुझे एक अजीब सी गर्माहट महसूस हुई जो पहले कभी नहीं थी। उसका रंग भी पहले से ज़्यादा गहरा, लगभग बैंगनी सा लग रहा था। साँसें रुक-रुक कर लेते हुए, मैं काफी देर तक आईने में देखती रही — इतनी देर तक कि मुझे अपना चेहरा किसी और के जैसा लगने लगा। वह निशान मुझे कुछ कहना चाह रहा था: वह मुझसे कुछ चाहता था। मैं

आईने के उस पार खुद को देखती रही, और वह खुद भी बिना कुछ बोले, आईने के उस पार से मुझे देखती रही।
मुझे वह कुआँ चाहिए ही चाहिए। चाहे कुछ भी हो जाए, मुझे वह कुआँ चाहिए ही चाहिए।
यही वह निष्कर्ष था जिस पर मैं पहुंचा था।

शीतनिद्रा से जागना

•

एक और नाम कार्ड

•

पैसे की गुमनामी
सिर्फ ज़मीन चाहने से वो मेरी नहीं हो जाती, ज़ाहिर है। मेरे पास असल में जुटाने के लिए पैसे न के बराबर थे। मेरी माँ ने मेरे लिए जो कुछ छोड़ा था, उसमें से थोड़ा-बहुत बचा था, लेकिन वो भी जल्द ही खत्म हो जाएगा। मेरे पास कोई नौकरी नहीं थी, न ही कुछ ऐसा जिसे मैं गिरवी रख सकूँ। और दुनिया में कोई भी बैंक ऐसा नहीं था जो मुझ जैसे किसी को दया भाव से उधार दे। मुझे तो जादू से पैसा पैदा करना पड़ेगा। और वो भी जल्दी।
एक सुबह मैं स्टेशन तक पैदल गया और लगातार अंकों वाले दस पचास मिलियन येन के लॉटरी टिकट खरीदे। मैंने पिनों की मदद से रसोई की दीवार के एक हिस्से को उनसे ढक दिया और हर दिन उन्हें देखता था। कभी-कभी मैं एक घंटे तक कुर्सी पर बैठकर उन्हें घूरता रहता था, मानो किसी गुप्त संकेत के प्रकट होने का इंतज़ार कर रहा हो जिसे केवल मैं ही देख सकूँ। कई दिनों तक ऐसा करने के बाद, अचानक मेरे मन में यह विचार आया: मैं कभी लॉटरी नहीं जीत पाऊँगा।
कुछ ही समय में, मुझे यह बात पूरी तरह से समझ आ गई। कुछ लॉटरी टिकट खरीदकर और नतीजों का इंतज़ार करके समस्या इतनी आसानी से हल नहीं होने वाली थी। मुझे खुद मेहनत करके पैसे जुटाने होंगे। मैंने लॉटरी टिकट फाड़ दिए और फेंक दिए। फिर मैं वॉशबेसिन के शीशे के सामने खड़ा हो गया और उसमें गहराई से झाँका। मैंने शीशे

में खुद से कहा, कोई न कोई रास्ता तो ज़रूर होगा, लेकिन ज़ाहिर है, कोई जवाब नहीं मिला।

•

घर में अपने विचारों के साथ बंद रहने से ऊबकर, मैं आस-पड़ोस में घूमने निकल पड़ा। तीन-चार दिन तक मैं यूं ही बिना किसी मकसद के घूमता रहा, और जब आस-पड़ोस से ऊब गया, तो शिंजुकु जाने वाली ट्रेन पकड़ ली। स्टेशन पर पहुँचते ही मुझे शहर जाने का ख्याल आया। कभी-कभी, मैं सोचता था, किसी अलग माहौल में चीजों के बारे में सोचना मददगार होता है। मुझे यह भी याद आया कि मैंने बहुत लंबे समय से ट्रेन में सफर नहीं किया था। दरअसल, टिकट मशीन में पैसे डालते समय, मुझे वही घबराहट महसूस हुई जो किसी अपरिचित काम को करते समय होती है। मैं आखिरी बार शहर की सड़कों पर कब निकला था? शायद छह महीने से भी पहले, जब मैंने शिंजुकु के पश्चिमी प्रवेश द्वार से गिटार का डिब्बा लिए उस आदमी का पीछा किया था। शिंजुकु स्टेशन पर भीड़ का नजारा देखकर मैं दंग रह गया। लोगों की इतनी भीड़ देखकर मेरी सांसें थम गईं और दिल की धड़कन भी तेज हो गई—और यह तो भीड़भाड़ का समय भी नहीं था! पहले तो मुझे इतनी भीड़ में से रास्ता बनाने में मुश्किल हुई। यह सिर्फ भीड़ नहीं, बल्कि एक उग्र जलप्रपात था—ऐसा सैलाब जो पूरे घरों को बहा ले जाता है। कुछ ही मिनट चलने के बाद मुझे लगा कि मुझे अपने मन को शांत करना चाहिए। मैं सड़क के किनारे एक कैफे में गया और उसकी बड़ी कांच की खिड़कियों के पास बैठ गया। सुबह का समय होने के कारण कैफे में ज्यादा भीड़ नहीं थी। मैंने एक कप कोको ऑर्डर किया और बाहर से गुजरते लोगों को देखता रहा।
मुझे समय का बिल्कुल भी पता नहीं चला। शायद पंद्रह मिनट या बीस मिनट बीत चुके थे, जब मुझे एहसास हुआ कि मेरी नज़रें भीड़भाड़

वाली सड़क पर धीरे-धीरे आगे बढ़ती हर चमकीली मर्सिडीज-बेंज, जगुआर और पोर्श पर टिकी हुई थीं। बारिश भरी रात के बाद सुबह की ताज़ी धूप में ये कारें किसी प्रतीक की तरह बेहद चमक रही थीं। बिल्कुल बेदाग थीं। उन लोगों के पास खूब पैसा है। ऐसा ख्याल मेरे मन में पहले कभी नहीं आया था। मैंने शीशे में अपना चेहरा देखा और सिर हिलाया। यह मेरे जीवन में पहली बार था जब मुझे पैसों की इतनी सख्त ज़रूरत महसूस हुई।
जब दोपहर के भोजन के समय कैफे में भीड़ बढ़ने लगी, तो मैंने टहलने का फैसला किया। मेरा कोई खास मकसद नहीं था, बस उस शहर में घूमना था जिसे मैंने इतने लंबे समय से नहीं देखा था। मैं एक गली से दूसरी गली में चलता रहा, बस यही सोचता रहा कि सामने से आ रहे लोगों से टकरा न जाऊं। मैं दाएं या बाएं मुड़ता या सीधा चलता, ट्रैफिक सिग्नल के बदलने या उस पल के मन के अनुसार। जेब में हाथ डाले, मैं चलने की क्रिया पर ध्यान केंद्रित कर रहा था— डिपार्टमेंट स्टोरों और डिस्प्ले विंडो वाली कतारों से सजी सड़कों से लेकर भड़कीले ढंग से सजी पोर्नो दुकानों वाली तंग गलियों तक, सिनेमाघरों वाली चहल-पहल भरी सड़कों तक, एक शिंटो मंदिर के शांत परिसर से होते हुए, और फिर वापस सड़कों पर। दोपहर का मौसम सुहावना था, और लगभग आधे लोग अपने कोट घर के अंदर ही छोड़ आए थे। कभी-कभार चलने वाली हवा सुखद लग रही थी। देखते ही देखते, मैं अपने परिचित परिवेश में खड़ा था। मैंने अपने पैरों के नीचे की टाइलों को देखा, वहां खड़ी छोटी सी मूर्ति को देखा, और मेरे ऊपर खड़ी विशाल कांच की इमारत को देखा। मैं उस ऊँची इमारत के बाहर बने छोटे से चौक के बीचोंबीच खड़ा था, ठीक उसी जगह जहाँ मैं पिछली गर्मियों में लोगों को आते-जाते देखने गया था, जैसा कि मेरे चाचा ने मुझे सलाह दी थी। तब मैंने ग्यारह दिन तक

ऐसा ही किया था, जिसके अंत में मैं गिटार का डिब्बा लिए उस अजीब से आदमी के पीछे-पीछे उस अजीब से अपार्टमेंट की लॉबी में चला गया था, जहाँ उसने बल्ले से मुझ पर हमला कर दिया था। शिंजुकु में यूँ ही बिना किसी मकसद के घूमते-घूमते मैं ठीक उसी जगह पहुँच गया था।
पहले की तरह, मैंने डंकिन डोनट्स से अपने लिए एक कॉफ़ी और एक डोनट खरीदा और उन्हें लेकर प्लाज़ा की बेंच पर बैठ गया। मैं बैठ गया और आने-जाने वाले लोगों के चेहरों को देखने लगा, जिससे मेरा मन शांत और सुकून से भर गया। पता नहीं क्यों, मुझे अच्छा लग रहा था, जैसे मुझे किसी दीवार में एक आरामदायक जगह मिल गई हो जहाँ लोग मुझे देखते हुए नोटिस नहीं करेंगे। बहुत समय हो गया था जब मैंने लोगों के चेहरों को इतने ध्यान से देखा था। और सिर्फ़ लोगों के चेहरे ही नहीं, मुझे एहसास हुआ। पिछले छह महीनों में मैंने शायद ही किसी चीज़ को ध्यान से देखा हो। मैं बेंच पर सीधा बैठ गया और चीज़ों को देखने के लिए तैयार हो गया। मैंने लोगों को देखा, मैंने ऊपर आसमान छूती इमारतों को देखा, मैंने बसंत के उस आसमान को देखा जहाँ बादल छंट गए थे, मैंने रंग-बिरंगे बिलबोर्ड्स को देखा, मैंने पास पड़ा एक अखबार उठाया और उसे पढ़ा। जैसे-जैसे शाम ढल रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे चीज़ों में रंग वापस लौट रहा हो।

•

अगली सुबह मैं फिर से शिंजुकु के लिए ट्रेन में सवार हुआ। मैं उसी बेंच पर बैठा और आने-जाने वाले लोगों के चेहरों को देखता रहा। दोपहर के भोजन में मैंने फिर से एक डोनट और कॉफी ली। शाम की भीड़भाड़ शुरू होने से पहले मैं ट्रेन से घर लौट आया। मैंने अपने लिए रात का खाना बनाया, एक बियर पी और रेडियो पर संगीत

सुना। अगले दिन भी मैंने ठीक यही किया। उस दिन भी कुछ नहीं हुआ। मैंने कोई खोज नहीं की, कोई पहेली नहीं सुलझाई, किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। लेकिन मुझे एक अस्पष्ट अहसास था कि मैं धीरे- धीरे किसी चीज़ के करीब पहुँच रहा हूँ। जब भी मैं सिंक के ऊपर लगे दर्पण में खुद को देखता, तो मुझे यह हलचल, यह धीरे-धीरे बढ़ती निकटता दिखाई देती। मेरे निशान का रंग पहले से ज़्यादा गहरा, पहले से ज़्यादा गर्म था। मैंने खुद से कहा, मेरा निशान जीवित है। जैसे मैं जीवित हूँ, वैसे ही मेरा निशान भी जीवित है। मैंने हर दिन वही दिनचर्या दोहराई, जैसा मैंने पिछली गर्मियों में किया था। दस बजे के ठीक बाद शहर जाने वाली ट्रेन में चढ़ता, ऊंची इमारत के पास चौक में बेंच पर बैठता और दिन भर बिना किसी विचार के लोगों को आते-जाते देखता रहता। कभी-कभी, मेरे आस-पास की असली आवाज़ें दूर होती जातीं और मंद पड़ जातीं। उस समय मुझे केवल बहते पानी की गहरी, शांत आवाज़ सुनाई देती। मुझे माल्टा कानो की याद आई। उन्होंने पानी की आवाज़ सुनने के बारे में बात की थी। पानी उनका मुख्य विषय था। लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा था कि माल्टा कानो ने पानी की आवाज़ के बारे में क्या कहा था। न ही मुझे उनका चेहरा याद आ रहा था। मुझे बस उनकी विनाइल टोपी का लाल रंग याद आ रहा था। वह हमेशा वही लाल विनाइल टोपी क्यों पहनती थीं?
लेकिन फिर धीरे-धीरे मुझे आवाजें सुनाई देने लगीं, और मैंने एक बार फिर लोगों के चेहरों पर अपनी नजरें टिका दीं।

•

शहर में आने के आठवें दिन दोपहर को एक महिला ने मुझसे बात की। उस समय मैं खाली कॉफी का कप हाथ में लिए दूसरी तरफ देख रहा था। "माफ़ कीजिए," उसने कहा। मैं मुड़ा और सामने खड़ी महिला के

सिगरेट का एक तिहाई हिस्सा ही जला था कि उसने उसे ज़मीन पर गिरा दिया और अपनी ऊँची एड़ी वाली जूती के तले से उसे सावधानीपूर्वक कुचल दिया। फिर उसने अपने पतले से हैंडबैग से चमड़े का कॉलिंग कार्ड केस निकाला और एक कार्ड मेरे हाथ में थमा दिया।
“कल दोपहर ठीक चार बजे इस पते पर आइए,” उसने कहा।
कार्ड पर सिर्फ पता लिखा था—अमीर अकासाका जिले में एक दफ्तर की इमारत का पता। नाम नहीं था। मैंने कार्ड को पलटकर पीछे देखा, लेकिन वह खाली था। मैंने कार्ड को नाक के पास लाया, लेकिन उसमें कोई खुशबू नहीं थी। वह बस एक साधारण सफेद कागज का कार्ड था। “कोई नाम नहीं?” मैंने कहा।
वह पहली बार मुस्कुराई और धीरे से अपना सिर अगल-बगल हिलाया। "मुझे लगता है कि आपको पैसे की ज़रूरत है। क्या पैसे का कोई नाम होता है?"
मैंने भी उसकी तरह सिर हिलाया। ज़ाहिर है, पैसे का कोई नाम नहीं होता। और अगर उसका कोई नाम होता भी, तो वह पैसा नहीं रह जाता। पैसे को उसका असली अर्थ तो उसकी नामहीनता और उसकी अद्भुत अदला- बदली में ही मिलता है।
वह बेंच से उठ खड़ी हुई। "तो आप चार बजे आ सकते हैं?"
"अगर मैं ऐसा करता हूँ, तो तुम मेरे हाथ में पैसे दोगे?"
“मुझे आश्चर्य हो रहा है,” उसने कहा, उसकी आँखों के कोनों पर एक हल्की सी मुस्कान थी, मानो रेत पर हवा से बनी आकृतियाँ हों। उसने आसपास के दृश्य पर एक बार फिर नज़र डाली, फिर लापरवाही से हाथ फेरते हुए अपनी स्कर्ट को ठीक किया।
तेज़ कदमों से चलते हुए वह लोगों की भीड़ में गायब हो गई। मैं उसकी बुझाई हुई सिगरेट और उसके फिल्टर के सिरे पर लगी लिपस्टिक

को देखता रहा। चटख लाल रंग ने मुझे माल्टा कानो की विनाइल टोपी की याद दिला दी।
अगर मेरे पक्ष में कुछ था, तो वह यह था कि मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं था। शायद।

रात में क्या हुआ?

•

लड़के ने आधी रात को एक कर्कश आवाज़ सुनी। वह जाग गया, उसने फर्श पर रखे लैंप को उठाया और लैंप जलते ही उठकर कमरे में चारों ओर देखा। दीवार घड़ी में दो बजने में कुछ ही मिनट बाकी थे। लड़का कल्पना भी नहीं कर पा रहा था कि ऐसे समय में दुनिया में क्या घट रहा होगा।
फिर वही आवाज़ दोबारा आई—उसे यकीन था कि खिड़की के बाहर से आ रही है। ऐसा लग रहा था जैसे कोई बहुत बड़ा स्प्रिंग घुमा रहा हो। आधी रात को कौन स्प्रिंग घुमा सकता है? नहीं, रुको: ऐसा लग रहा था जैसे कोई स्प्रिंग घुमा रहा हो, लेकिन असल में वो स्प्रिंग नहीं था। ये किसी चिड़िया की आवाज़ थी। लड़का एक कुर्सी खिड़की के पास ले गया और उस पर चढ़ गया। उसने पर्दे हटाए और खिड़की को थोड़ा सा खोला। आसमान के बीचोंबीच एक बड़ा सफेद चाँद लटका हुआ था, पतझड़ के अंत का पूरा चाँद, जिसकी रोशनी नीचे आँगन को रोशन कर रही थी। रात में बाहर के पेड़ दिन के उजाले से लड़के को बहुत अलग लग रहे थे। उनमें वो सामान्य मित्रता नहीं थी। सदाबहार ओक का पेड़ लगभग नाराज़ लग रहा था, जो कभी-कभार हवा के झोंके से एक अप्रिय चरमराहट की आवाज़ के साथ काँप रहा था। बगीचे के पत्थर सामान्य से ज़्यादा सफेद और चिकने लग रहे थे, मानो मरे हुए लोगों के चेहरों की तरह बेजान होकर आसमान को घूर रहे हों।
चिड़िया की आवाज़ चीड़ के पेड़ से आती हुई प्रतीत हुई। लड़का खिड़की से बाहर झुककर ऊपर देखने लगा, लेकिन इस निचले कोण से चीड़ की बड़ी-बड़ी शाखाओं ने चिड़िया को छिपा लिया था। वह देखना

चाहता था कि वह कैसी दिखती है। वह उसका रंग और आकार याद रखना चाहता था ताकि कल वह उसे अपने सचित्र विश्वकोश में ढूंढ सके। जानने की तीव्र इच्छा ने उसे पूरी तरह जगा दिया था। अपने विश्वकोश में पक्षियों, मछलियों और अन्य जानवरों को ढूंढना उसकी सबसे बड़ी खुशी थी। उसके कमरे की एक अलमारी में विश्वकोश की मोटी-मोटी प्रतियां रखी थीं। उसने अभी तक प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश नहीं किया था, लेकिन वह पढ़ना जानता था।
लगातार कई बार स्प्रिंग घुमाने के बाद चिड़िया चुप हो गई। लड़का सोचने लगा कि क्या किसी और ने भी उसकी आवाज़ सुनी थी? क्या उसके माता-पिता ने सुनी थी? उसकी दादी ने? अगर नहीं, तो वह सुबह सबको इसके बारे में बता देगा: कल रात दो बजे एक चिड़िया चीड़ के पेड़ पर बैठी थी, जिसकी आवाज़ बिल्कुल स्प्रिंग घुमाने जैसी थी। काश, वह उसे देख पाता! फिर वह सबको उसका नाम बता देता। लेकिन चिड़िया ने फिर कभी आवाज नहीं उठाई। चांदनी में नहाए चीड़ के पेड़ों की डालियों पर वह पत्थर की तरह शांत हो गई। थोड़ी देर में कमरे में ठंडी हवा चली, मानो उसे कोई चेतावनी दे रही हो। लड़का सिहर उठा और खिड़की बंद कर ली। वह जानता था कि यह एक अलग तरह की चिड़िया थी, कोई गौरैया या कबूतर नहीं, जो बिना झिझक लोगों को दिख जाती है। उसने अपने ज्ञानकोश में पढ़ा था कि ज्यादातर रात में निकलने वाली चिड़िया चालाक और सतर्क होती हैं। चिड़िया शायद जानती थी कि वह उसका इंतजार कर रहा है। जब तक वह उसके निकलने का इंतजार करता रहेगा, वह कभी बाहर नहीं आएगी। लड़के ने सोचा कि क्या उसे बाथरूम जाना चाहिए। इसका मतलब होगा उस लंबे, अंधेरे गलियारे से होकर जाना। नहीं, वह वापस बिस्तर पर चला जाएगा। इतनी भी बुरी बात नहीं थी कि वह सुबह तक इंतजार न कर सके।

लड़के ने बत्ती बुझाई और आँखें बंद कर लीं, लेकिन चीड़ के पेड़ पर बैठी चिड़िया के ख्यालों ने उसे जगाए रखा। पर्दों के नीचे से चाँदनी ऐसे छनकर आ रही थी मानो बुला रही हो। जब चाबी वाली चिड़िया ने एक बार फिर आवाज़ निकाली, तो लड़का बिस्तर से उछल पड़ा। इस बार उसने बत्ती नहीं जलाई, बल्कि पजामे के ऊपर एक रुमाल पहनकर खिड़की के पास वाली कुर्सी पर चढ़ गया। पर्दों को ज़रा सा हटाकर उसने चीड़ के पेड़ की ओर देखा। इस तरह चिड़िया को पता नहीं चलेगा कि वह वहाँ है।

•

इस बार लड़के ने जो देखा, वह दो आदमियों की आकृति थी। उसकी सांसें थम गईं। वे दोनों आदमी चीड़ के पेड़ के नीचे दो काली परछाइयों की तरह घुटनों के बल बैठे थे। दोनों ने गहरे रंग के कपड़े पहने थे। एक ने टोपी नहीं पहनी थी, जबकि दूसरे ने किनारे वाली ऊनी टोपी जैसी कोई चीज़ पहनी थी। लड़का सोचने लगा, "आधी रात को ये अजनबी आदमी हमारे बगीचे में क्यों हैं? कुत्ता उन पर भौंक क्यों नहीं रहा था?" शायद उसे अपने माता-पिता को तुरंत बता देना चाहिए था। लेकिन उसकी जिज्ञासा उसे खिड़की पर ही रोके रखी। वह देखना चाहता था कि वे आदमी क्या कर रहे हैं।
फिर अचानक, चाबी भरने वाली चिड़िया फिर से चिल्लाई। एक से ज़्यादा बार, उसकी लंबी, कर्कश आवाज़ रात के सन्नाटे में गूंज उठी। लेकिन उन आदमियों ने मानो ध्यान ही नहीं दिया। वे हिले तक नहीं, ऊपर देखा तक नहीं। वे पेड़ के नीचे आमने-सामने घुटनों के बल बैठे रहे। ऐसा लग रहा था जैसे वे धीमी आवाज़ में कुछ बात कर रहे हों, लेकिन डालियों के कारण चांदनी न दिखने की वजह से लड़का उनके चेहरे नहीं देख पाया। थोड़ी देर बाद, दोनों आदमी एक साथ खड़े हो गए। उनकी ऊँचाई में लगभग आठ इंच का अंतर था। दोनों आदमी

पतले थे, और लंबे वाले (टोपी वाले) ने लंबा कोट पहना हुआ था। छोटे वाले ने शरीर से चिपके हुए कपड़े पहने थे।
छोटा कद वाला आदमी चीड़ के पेड़ के पास पहुँचा और वहाँ खड़ा होकर उसकी शाखाओं को देखने लगा। थोड़ी देर बाद, वह दोनों हाथों से पेड़ के तने को थपथपाने और पकड़ने लगा, मानो उसका निरीक्षण कर रहा हो, और फिर अचानक उस पर कूद पड़ा। फिर, बिना किसी मेहनत के (या लड़के को ऐसा ही लगा), वह सर्कस के कलाकार की तरह तेज़ी से पेड़ पर चढ़ गया। लड़का उस पेड़ को अपने पुराने दोस्त की तरह जानता था। वह जानता था कि उस पर चढ़ना आसान नहीं था। उसका तना चिकना और फिसलन भरा था, और जब तक आप काफी ऊपर नहीं पहुँच जाते, तब तक पकड़ने के लिए कुछ भी नहीं था। लेकिन वह आदमी आधी रात को पेड़ पर क्यों चढ़ रहा था? क्या वह चाबी से चलने वाली चिड़िया को पकड़ने की कोशिश कर रहा था?
लंबा आदमी पेड़ के नीचे खड़ा ऊपर की ओर देख रहा था। थोड़ी देर बाद, छोटा आदमी नज़र से ओझल हो गया। डालियाँ बीच-बीच में सरसरा रही थीं, जिसका मतलब था कि वह अभी भी ऊँचे चीड़ के पेड़ पर चढ़ रहा होगा। चाबी से चलने वाली चिड़िया को उसके आने की आहट ज़रूर सुनाई देगी और वह उड़ जाएगी। वह आदमी पेड़ पर चढ़ने में माहिर हो सकता है, लेकिन चाबी से चलने वाली चिड़िया को पकड़ना इतना आसान नहीं होगा। हालाँकि, अगर उसकी किस्मत अच्छी रही, तो लड़का उम्मीद कर रहा था कि उड़ते समय उसे चाबी से चलने वाली चिड़िया की एक झलक मिल जाए। उसने अपनी साँस रोक ली, पंखों की फड़फड़ाहट की आवाज़ का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन न तो पंखों की फड़फड़ाहट की आवाज़ आई, न ही कोई चीख सुनाई दी।

•

बहुत देर तक कोई आवाज़ या हलचल नहीं थी। सब कुछ चाँद की सफ़ेद, अवास्तविक रोशनी में नहाया हुआ था, आँगन किसी ऐसे समुद्र की गीली तलहटी जैसा लग रहा था जिससे अचानक पानी हट गया हो। मंत्रमुग्ध, स्थिर, लड़का चीड़ के पेड़ और पीछे छूटे लंबे आदमी को घूरता रहा। चाहकर भी वह अपनी नज़रें हटा नहीं सकता था। उसकी साँसों से शीशा धुंधला हो गया था। बाहर ज़रूर ठंड होगी। लंबा आदमी ऊपर की ओर देखता हुआ, कमर पर हाथ रखे, बिना हिले-डुले खड़ा था, मानो अपनी जगह पर जम गया हो। लड़के ने सोचा कि वह अपने छोटे साथी के बारे में चिंतित होगा, किसी काम को पूरा करके चीड़ के पेड़ से नीचे उतरने का इंतज़ार कर रहा होगा। और उस आदमी का चिंतित होना कोई अजीब बात नहीं थी: लड़का जानता था कि ऊँचे पेड़ पर चढ़ने से ज़्यादा उतरना मुश्किल होता है। लेकिन फिर, अचानक, लंबा आदमी रात के अंधेरे में चला गया, मानो उसने सारा काम ही छोड़ दिया हो।
लड़के को लगा कि अब वही अकेला रह गया है। छोटा आदमी चीड़ के पेड़ में गायब हो गया था, और लंबा आदमी कहीं चला गया था। चाबी से चलने वाली चिड़िया चुप थी। लड़के ने सोचा कि क्या उसे अपने पिता को जगाना चाहिए। लेकिन वह जानता था कि वह उन्हें इस बात पर यकीन नहीं दिला पाएगा। "मुझे यकीन है कि तुमने बस एक और सपना देखा होगा," उसके पिता कहेंगे। यह सच था, लड़का अक्सर सपने देखता था, और अक्सर अपने सपनों को हकीकत समझ लेता था, लेकिन उसे किसी की परवाह नहीं थी: यह सब सच था—चाबी से चलने वाली चिड़िया और काले कपड़े पहने दो आदमी। वे अचानक गायब हो गए थे, बस इतना ही। अगर वह अच्छी तरह से समझा दे कि क्या हुआ था, तो उसके पिता उस पर विश्वास कर लेंगे।

तभी लड़के को एहसास हुआ: वह छोटा आदमी उसके पिता जैसा दिखता था। बेशक, वह उसके पिता से कद में छोटा था, लेकिन इसके अलावा, वह बिल्कुल वैसा ही था: कद-काठी, चाल-ढाल। लेकिन नहीं, उसके पिता कभी भी उस तरह से पेड़ पर नहीं चढ़ सकते थे। वे इतने फुर्तीले या ताकतवर नहीं थे। जितना ज़्यादा वह इसके बारे में सोचता, उतना ही ज़्यादा लड़का उलझन में पड़ जाता।
लंबा आदमी पेड़ के नीचे लौट आया। अब उसके हाथों में कुछ था—एक फावड़ा और एक बड़ा कपड़े का थैला। उसने थैला ज़मीन पर रख दिया और पेड़ की जड़ों के पास खोदना शुरू कर दिया। फावड़े से मिट्टी में एक तेज़, साफ आवाज़ आई। लड़के ने सोचा, अब तो सब जाग ही जाएँगे। कितनी तेज़ और साफ आवाज़ थी!
लेकिन कोई नहीं जागा। वह आदमी बिना रुके खोदता रहा, मानो उसे इस बात की कोई परवाह ही न हो कि कोई उसे सुन सकता है। लंबा और पतला होने के बावजूद, वह जितना दिखता था उससे कहीं अधिक शक्तिशाली था, यह उसके फावड़े के इस्तेमाल के तरीके से पता चलता था। वह बिना किसी फालतू हरकत के लगातार काम करता रहा। जब उसे मनचाहा गड्ढा मिल गया, तो उस आदमी ने फावड़े को पेड़ से टिका दिया और नीचे की ओर देखने लगा। उसने एक बार भी ऊपर नहीं देखा, मानो वह पेड़ पर चढ़े उस आदमी को पूरी तरह भूल गया हो। ऐसा लग रहा था कि अब उसके दिमाग में सिर्फ गड्ढा ही था। लड़के को यह अच्छा नहीं लगा। उसे तो पेड़ पर चढ़े उस आदमी की चिंता होनी चाहिए थी। आदमी द्वारा खोदी गई मिट्टी के ढेर को देखकर लड़का समझ गया कि गड्ढा ज़्यादा गहरा नहीं था—शायद उसके घुटनों तक ही। आदमी गड्ढे के आकार और माप से संतुष्ट लग रहा था। उसने थैले की ओर मुड़कर उसमें से कपड़े में लिपटी एक काली सी वस्तु को धीरे से निकाला। जिस तरह से आदमी ने उसे पकड़ा हुआ था, वह नरम और बेजान

नए जूते खरीदना

•

वह चीज़ जो घर वापस आई
मैं अकासाका सबवे स्टेशन से रेस्तरां और बार से सजी एक चहल-पहल भरी सड़क पर चलकर उस जगह पहुँचा जहाँ वह ऑफिस की इमारत खड़ी थी, जो एक हल्की ढलान पर थोड़ी दूर ऊपर थी। वह एक साधारण सी इमारत थी, न नई, न पुरानी, न बड़ी, न भव्य, न जर्जर। भूतल के एक हिस्से में एक ट्रैवल एजेंसी थी, जिसकी बड़ी खिड़की पर माइकोनोस और सैन फ्रांसिस्को केबल कार के पोस्टर लगे थे। खिड़की पर लंबे समय तक लगे रहने के कारण दोनों पोस्टर फीके पड़ गए थे। फर्म के तीन कर्मचारी शीशे के दूसरी तरफ काम में व्यस्त थे, कुछ टेलीफोन पर बात कर रहे थे तो कुछ कंप्यूटर कीबोर्ड पर टाइप कर रहे थे। पोस्टरों को देखने का नाटक करते हुए, मैं ऑफिस के दृश्य को देखता रहा और ठीक चार बजने का इंतजार करता रहा। पता नहीं क्यों, माइकोनोस और सैन फ्रांसिस्को दोनों ही मुझे मीलों दूर लग रहे थे।
जैसे-जैसे मैं इस इमारत को देखता गया, मुझे एहसास होता गया कि यह कितनी साधारण थी, मानो इसे किसी छोटे बच्चे के "इमारत बनाओ" कहे जाने पर बनाए गए पेंसिल स्केच की तरह बनाया गया हो, या मानो इसे जानबूझकर अपने आसपास के वातावरण में बेमेल दिखने के लिए डिज़ाइन किया गया हो। जगह की तलाश में मैंने पतों की सावधानीपूर्वक जाँच की थी, फिर भी मैं इसे अनदेखा करने ही वाला था, क्योंकि यह बहुत ही सादी थी। इमारत का साधारण सा मुख्य द्वार ट्रैवल एजेंसी के दरवाजे के पास था। नामपट्टियों पर सरसरी नज़र डालने से मुझे लगा कि अधिकांश कार्यालय छोटे

व्यवसायों द्वारा संचालित थे—वकील कार्यालय, वास्तुकार, आयातक, दंत चिकित्सक। कई नामपट्टियाँ इतनी चमकदार थीं कि मैं उनमें अपना चेहरा देख सकता था, लेकिन कमरा नंबर 602 की नामपट्टी समय के साथ धुंधली पड़ गई थी। जाहिर है, उस महिला का कार्यालय यहाँ काफी समय से था। उस पर लिखा था, "अकासाका फैशन डिज़ाइन"। नामपट्टी की अत्यधिक उम्र ने मेरे संदेह को कुछ हद तक कम कर दिया।
प्रवेश द्वार और लिफ्ट के बीच एक बंद कांच का दरवाजा था। मैंने 602 नंबर की घंटी बजाई और उस क्लोज्ड-सर्किट टीवी कैमरे को ढूंढने लगा जो शायद मेरी तस्वीर अंदर लगे मॉनिटर पर भेज रहा होगा। प्रवेश द्वार की छत के एक कोने में एक छोटा सा, कैमरे जैसा उपकरण लगा हुआ था। थोड़ी देर में बजर बजा और दरवाजा खुल गया, और मैं अंदर चला गया।
मैं बिल्कुल सादी सी लिफ्ट से छठी मंजिल पर गया और कुछ पल उस बिल्कुल सादे गलियारे में अनिश्चितता से बिताने के बाद, मुझे 602 नंबर का दरवाजा मिल गया। पहले मैंने यह सुनिश्चित किया कि दरवाजे पर लगे साइन पर "अकासाका फैशन डिजाइन" लिखा है, फिर मैंने घंटी को एक छोटी सी घंटी बजाई।
छोटे बालों और बेहद सलीकेदार चेहरे वाले एक दुबले-पतले युवक ने दरवाजा खोला। शायद वह मेरी जिंदगी में देखा हुआ सबसे खूबसूरत आदमी था। लेकिन उसके चेहरे से भी ज्यादा, उसकी पोशाक ने मेरा ध्यान खींचा। उसने लगभग चुभने वाली सफेद शर्ट और बारीक डिज़ाइन वाली गहरे हरे रंग की टाई पहनी हुई थी। टाई न केवल स्टाइलिश थी, बल्कि उसे इतनी खूबसूरती से बांधा गया था कि हर मोड़ और घुमाव बिल्कुल वैसा ही था जैसा किसी फैशन मैगज़ीन में देखने को मिलता है। मैं कभी इतनी अच्छी टाई नहीं बांध सकता था, और मैं सोचने लगा

मैंने लगभग वही कपड़े पहने थे जो मैंने एक दिन पहले पहने थे— बेसबॉल जैकेट, हुडी वाली स्वेटशर्ट, नीली जींस और टेनिस शूज़। घर से निकलने से पहले मैंने जो भी हाथ लगा, वही पहन लिया था। इस साफ-सुथरे, व्यवस्थित कमरे में, इस आकर्षक, सुंदर युवक की मौजूदगी में, मेरे टेनिस शूज़ बेहद गंदे और घिसे-पिटे लग रहे थे। जी हाँ, वे सचमुच गंदे और घिसे-पिटे थे, एड़ियाँ लगभग गायब हो चुकी थीं, रंग एक अजीब सा ग्रे था, और ऊपरी हिस्सा छेदों से भरा हुआ था। इन जूतों ने बहुत कुछ झेला था, अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को घातक निश्चितता के साथ सोख लिया था। मैंने पिछले एक साल से इन्हें हर दिन पहना था, अनगिनत बार पीछे की दीवार फांदी थी, गली में आते-जाते कभी-कभार कुत्ते की गंदगी पर पैर रखा था, कुएँ की तलहटी तक उतरा था। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि वे गंदे और घिसे-पिटे थे। नौकरी छोड़ने के बाद से मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि मैंने कौन से जूते पहने हैं। इस तरह उन्हें इतने करीब से देखते हुए, मुझे नए सिरे से एहसास हुआ कि मैं कितना अकेला हूँ, दुनिया ने मुझे कितना पीछे छोड़ दिया है। मैंने खुद से कहा, अब मुझे नए जूते खरीदने का समय आ गया है। ये तो बेहद ही भयानक थे।
कुछ ही देर में हेडन का संगीत अचानक और अस्त-व्यस्त तरीके से समाप्त हो गया। थोड़ी देर रुकने के बाद बाख की हार्पसीकोर्ड की कोई धुन बजने लगी (हालाँकि मुझे पक्का यकीन नहीं था कि यह बाख की ही धुन थी)। मैंने अपने पैर बार-बार क्रॉस किए। तभी टेलीफोन की घंटी बजी। उस युवक ने कागज की पर्ची से उस जगह को चिह्नित किया जहाँ वह पढ़ रहा था, अपनी किताब एक तरफ रखी और रिसीवर उठाया। उसने रिसीवर कान से लगाया और हल्का सा सिर हिलाया। अपने डेस्कटॉप कैलेंडर पर ध्यान केंद्रित करते हुए, उसने पेंसिल से

उस पर निशान लगाया। फिर उसने रिसीवर को डेस्क के पास रखा और लकड़ी पर दो बार ऐसे खटखटाया जैसे किसी दरवाजे पर दस्तक दे रहा हो। इसके बाद उसने फोन रख दिया। कॉल लगभग बीस सेकंड तक चली, इस दौरान उस युवक ने एक शब्द भी नहीं बोला। वास्तव में, मुझे कमरे में आने देने के बाद से उसने एक भी आवाज नहीं निकाली थी। क्या वह बोल नहीं पा रहा था? निश्चित रूप से वह सुन सकता था, जिस तरह से उसने फोन उठाया और दूसरी तरफ कही जा रही बातों को सुना, उससे तो यही लगता था।
वह कुछ देर तक अपने फोन को देखते हुए, मानो सोच में डूबे बैठे रहे। फिर चुपचाप उठे, अपनी डेस्क के चारों ओर घूमे, सीधे मेरी तरफ आए और मेरे बगल में बैठ गए। फिर उन्होंने अपने हाथों को घुटनों पर बिल्कुल सीध में रखा। उनके हाथ पतले और सुडौल थे, जैसा कि उनके चेहरे से अंदाजा लगाया जा सकता था। उनकी उंगलियों के जोड़ों पर कुछ झुर्रियां थीं; बिना झुर्रियों वाली उंगलियां तो होती ही नहीं: उन्हें हिलने-डुलने और मुड़ने के लिए कुछ झुर्रियों की जरूरत होती है। लेकिन उनकी उंगलियों पर बहुत ज्यादा झुर्रियां नहीं थीं—जरूरत से ज्यादा नहीं। मैंने जितना हो सके चुपचाप उनके हाथों को देखा। मैंने सोचा, यह युवक जरूर उस महिला का बेटा होगा। उसकी उंगलियां बिल्कुल उसकी उंगलियों जैसी थीं। जैसे ही यह विचार मेरे मन में आया, मैंने दूसरी समानताएं भी देखीं: छोटी, थोड़ी नुकीली नाक, आंखों की क्रिस्टल जैसी चमक। उनके होठों पर फिर से वही प्यारी सी मुस्कान आ गई थी, जो लहरों के साये में समुद्र किनारे की गुफा की तरह सहजता से आती-जाती रहती थी। कुछ ही देर में वह उसी फुर्ती से उठ खड़ा हुआ, जिस फुर्ती से वह मेरे बगल में बैठा था, और उसके होंठों से खामोशी से ये शब्द निकले, "इधर आइए।" आवाज़ न होने के

बावजूद, मुझे समझ आ गया कि वह क्या कहना चाहता है। मैं खड़ा हुआ और उसके पीछे-पीछे चला। उसने अंदर का दरवाज़ा खोला और मुझे अंदर ले गया।
दरवाजे के उस पार एक छोटी रसोई और वॉशबेसिन था, और उसके आगे एक और कमरा था, जो उस रिसेप्शन रूम जैसा ही था जिसमें मैं बैठा था, लेकिन आकार में थोड़ा छोटा था। उसमें भी उसी तरह का पुराना चमड़े का सोफा और उसी आकार की खिड़की थी। फर्श पर बिछी कालीन का रंग भी पहले वाले कमरे जैसा ही था। कमरे के बीच में एक बड़ी वर्कबेंच थी, जिस पर कैंची, औजारों के डिब्बे, पेंसिल और डिज़ाइन की किताबें करीने से रखी हुई थीं। वहाँ दो दर्जी के पुतले भी थे। खिड़की पर सिर्फ एक ब्लाइंड नहीं था, बल्कि कपड़े और लेस के दो पर्दे लगे थे, दोनों कसकर बंद थे। छत की बत्ती बंद होने के कारण कमरा उदास था, जैसे किसी बादल भरे दिन की शाम हो। सोफे के पास रखे फ्लोर लैंप का एक बल्ब बंद था। सोफे के सामने कॉफी टेबल पर ग्लेडियोलस के फूलों से भरा एक कांच का फूलदान रखा था। फूल ताज़े थे, मानो कुछ ही पल पहले तोड़े गए हों, फूलदान का पानी साफ था। इस कमरे में संगीत सुनाई नहीं दे रहा था, और दीवारों पर कोई चित्र या घड़ी भी नहीं थी।
उस युवक ने फिर चुपचाप इशारा किया, इस बार मुझे सोफे पर बैठने के लिए। उसके निर्देशानुसार (वैसे ही आरामदायक सोफे पर) बैठते ही उसने अपनी पैंट की जेब से तैराकी के चश्मे जैसी कोई चीज़ निकाली और उसे मेरी आँखों के सामने फैला दिया। वे तैराकी के चश्मे ही थे, बस साधारण रबर और प्लास्टिक के बने चश्मे, बिल्कुल वैसे ही जैसे मैं वार्ड के पूल में तैरते समय इस्तेमाल करता था। वह उन्हें यहाँ क्यों लाया था, मुझे इसका कोई अंदाज़ा नहीं था। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था।

“डरो मत,” उस युवक ने मुझसे कहा। सच कहें तो उसने कुछ कहा नहीं। उसने बस अपने होंठ उस तरह हिलाए और अपनी उंगलियों को बहुत हल्के से घुमाया। फिर भी, मैं उसकी बात को पूरी तरह समझ गया। मैंने सिर हिलाया।
कृपया इन्हें पहन लीजिए। इन्हें खुद मत उतारिएगा। मैं उतार दूँगा। आप इन्हें हिला भी मत दीजिए। समझे?
मैंने फिर से सिर हिलाया।
मैं आपको किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा। आप ठीक रहेंगे। चिंता मत करो।
मेंने सिर हिलाया।
वह युवक सोफे के पीछे गया और मेरी आँखों पर चश्मा लगा दिया। उसने रबर की पट्टी को मेरे सिर के पीछे तक खींचा और चश्मे के ढक्कनों को इस तरह समायोजित किया कि फोम के पैड मेरी आँखों को ठीक से घेर लें। ये चश्मे उन चश्मों से इस मायने में अलग थे जिन्हें मैं हमेशा इस्तेमाल करता था कि मैं इनके आर-पार कुछ भी नहीं देख पा रहा था। पारदर्शी प्लास्टिक पर किसी चीज़ की मोटी परत चढ़ा दी गई थी। चारों ओर घना और कृत्रिम अंधेरा छा गया था। मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मुझे यह भी नहीं पता था कि फ्लोर लैंप की रोशनी कहाँ पड़ रही है। मुझे ऐसा भ्रम हो रहा था मानो मेरे ऊपर ही किसी चीज़ की मोटी परत चढ़ा दी गई हो।
उस युवक ने मुझे हिम्मत देने के लिए हल्के से मेरे कंधों पर हाथ रखा। उसकी उंगलियां पतली और नाजुक थीं, लेकिन वे बिल्कुल भी कमजोर नहीं थीं। उनमें पियानोवादक की उंगलियों जैसी दृढ़ता थी, और उनके माध्यम से मुझे एक प्रकार की सद्भावना का भाव महसूस हुआ — या, अगर ठीक सद्भावना नहीं तो उसके बहुत करीब कुछ। <तुम ठीक हो जाओगे। चिंता मत करो,> उसने मुझे यह संदेश दिया। मैंने सिर

हिलाया। फिर वह कमरे से चला गया। अंधेरे में, मैं उसके कदमों की आहट दूर होते हुए सुन सका, और फिर एक दरवाजा खुलने और बंद होने की आवाज।

•

उस युवक के कमरे से चले जाने के बाद भी मैं कुछ देर तक उसी स्थिति में बैठा रहा। जिस अंधेरे में मैं बैठा था, उसमें कुछ अजीब सा था। कुछ भी दिखाई न देने के कारण वह ठीक वैसा ही था जैसा मैंने कुएँ में अनुभव किया था, लेकिन इसके अलावा उसमें एक ऐसी विशेषता थी जो उसे पूरी तरह से अलग बनाती थी। उसमें न कोई दिशा थी, न कोई गहराई, न कोई भार, न कोई ठोसपन। वह अंधेरे से ज़्यादा शून्यता जैसा था। मुझे कृत्रिम साधनों से अस्थायी रूप से अंधा कर दिया गया था। मुझे अपनी मांसपेशियाँ अकड़ती हुई, मुँह और गला सूखता हुआ महसूस हुआ। अब मेरा क्या होगा? लेकिन तभी मुझे उस युवक की उंगलियों का स्पर्श याद आया। चिंता मत करो, उन्होंने मुझसे कहा था। बिना किसी स्पष्ट कारण के, मुझे लगा कि उसके उन "शब्दों" पर मैं विश्वास कर सकता हूँ।
कमरा इतना शांत था कि जब मैंने अपनी सांस रोकी तो मुझे ऐसा लगा मानो दुनिया थम सी गई हो और सब कुछ अंततः पानी में समा जाएगा, अनंत गहराइयों में डूब जाएगा। लेकिन नहीं, दुनिया तो मानो अभी भी चल रही थी। कुछ ही देर में एक महिला ने दरवाजा खोला और चुपचाप कमरे में प्रवेश किया।
उसके इत्र की हल्की खुशबू से ही मैं समझ गया कि वह एक महिला है। यह ऐसी खुशबू नहीं थी जिसे कोई पुरुष लगाता हो। शायद यह कोई महंगा इत्र था। मैंने उस खुशबू को याद करने की कोशिश की, लेकिन मैं पूरी तरह से याद नहीं कर पाया। अचानक मेरी दृष्टि चली गई और मेरी सूंघने की शक्ति भी बेकाबू हो गई। एक बात तो पक्की थी कि अब

में एक स्त्री है। मैं उसे देख नहीं सकता, लेकिन अब मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर वह यहाँ अंदर कुछ खोज रही है, तो मैं उसे दे ही देता हूँ।

•

समय का बीतना धीरे-धीरे अस्पष्ट होता जा रहा है। यहाँ मौजूद समय के सभी प्रकारों में से, मैं यह भूल जाता हूँ कि मैं किस प्रकार का समय बिता रहा हूँ। मेरी चेतना धीरे-धीरे मेरे शरीर में वापस लौटती है, और बदले में वह महिला भी जाती हुई प्रतीत होती है। वह कमरे से उतनी ही खामोशी से निकल जाती है जितनी खामोशी से आई थी। कपड़ों की सरसराहट। इत्र की झिलमिलाती खुशबू। एक दरवाजे के खुलने और फिर बंद होने की आवाज़। मेरी चेतना का एक हिस्सा अभी भी एक खाली घर के रूप में मौजूद है। साथ ही, मैं अभी भी यहाँ, इस सोफे पर, अपने असली रूप में मौजूद हूँ। मैं सोचता हूँ, अब मुझे क्या करना चाहिए? मैं तय नहीं कर पा रहा हूँ कि वास्तविकता क्या है। धीरे-धीरे, "यहाँ" शब्द मेरे भीतर दो भागों में बँटता हुआ प्रतीत होता है। मैं यहाँ हूँ, लेकिन मैं यहाँ भी हूँ। दोनों ही मुझे समान रूप से वास्तविक लगते हैं। सोफे पर बैठे-बैठे मैं इस अजीब अलगाव में डूब जाता हूँ।

•

कुछ देर बाद दरवाजा खुला और कोई कमरे में आया। कदमों की आहट से मैं समझ गया कि वह वही युवक था। वह मेरे पीछे आया और चश्मा उतार दिया। कमरा अंधेरा था, बस एक फ्लोर लैंप का बल्ब ही रोशनी दे रहा था। मैंने अपनी हथेलियों से अपनी आँखें मलीं, ताकि वे वास्तविकता की दुनिया से अभ्यस्त हो जाएँ। युवक ने अब सूट कोट पहन रखा था। उसका गहरा ग्रे रंग, जिसमें हरे रंग की झलक थी, उसकी टाई के रंग से बिल्कुल मेल खा रहा था। हल्की मुस्कान के साथ,

उसने मेरा हाथ पकड़ा, मुझे खड़े होने में मदद की और मुझे कमरे के पिछले दरवाजे तक ले गया। उसने दरवाजा खोला तो दूसरी तरफ एक बाथरूम दिखाई दिया। उसमें एक शौचालय था और शौचालय के आगे एक छोटा सा शॉवर था। शौचालय का ढक्कन नीचे था, और उसने मुझे उस पर बैठने को कहा जबकि उसने शॉवर चालू कर दिया। उसने गर्म पानी के बहने का इंतजार किया, फिर उसने मुझे नहाने का इशारा किया। उसने साबुन की एक नई टिकिया खोली और मुझे दे दी। फिर वह बाथरूम से बाहर गया और दरवाजा बंद कर दिया। मुझे यहाँ क्यों नहाना पड़ रहा था? मुझे समझ नहीं आया।
कपड़े उतारते-उतारते मुझे आखिरकार समझ आ गया। मैं अपनी अंडरपैंट में ही स्खलित हो गया था। मैं गर्म पानी के शॉवर में गया और नए हरे साबुन से खुद को धोया। मैंने अपने गुप्तांगों के बालों पर चिपके वीर्य को धो डाला। शॉवर से बाहर निकला और एक बड़े तौलिए से खुद को सुखाया। तौलिए के पास मुझे कैल्विन क्लेन की एक बॉक्सर शॉर्ट्स और एक टी-शर्ट मिली, दोनों अभी भी विनाइल रैपर में थीं और दोनों मेरे साइज की थीं। शायद उन्होंने यही योजना बनाई थी कि मैं अपनी पैंट में ही स्खलित हो जाऊं। मैंने कुछ देर तक शीशे में खुद को देखा, लेकिन मेरा दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा था। मैंने अपनी गंदी अंडरपैंट कूड़ेदान में फेंक दी और साफ, सफेद नई अंडरपैंट और साफ, सफेद नई टी-शर्ट पहन ली। फिर मैंने अपनी जींस पहनी और स्वेटशर्ट सिर के ऊपर से उतार ली। मैंने अपने मोजे और गंदे टेनिस शूज़ पहने और आखिर में अपनी बेसबॉल जैकेट पहनी। फिर मैं बाथरूम से बाहर निकल गया।

•

वह युवक बाहर मेरा इंतजार कर रहा था और उसने मुझे मेरे मूल प्रतीक्षालय तक पहुँचाया।

कमरा पहले जैसा ही दिख रहा था। मेज पर वही खुली किताब पड़ी थी, जिसके बगल में कंप्यूटर रखा था। स्पीकर से गुमनाम शास्त्रीय संगीत बज रहा था। उस युवक ने मुझे सोफे पर बैठने को कहा और मेरे लिए ठंडा मिनरल वाटर का गिलास लाया। मैंने आधा गिलास पी लिया। "मुझे थकान महसूस हो रही है," मैंने कहा। मेरी आवाज़ मेरी नहीं लग रही थी। न ही मेरा ऐसा कुछ कहने का इरादा था। शब्द अचानक ही निकल आए, मेरी इच्छा के बिना। हालांकि, आवाज़ निश्चित रूप से मेरी ही थी।
उस युवक ने सिर हिलाया। उसने अपने सूट कोट की भीतरी जेब से एक सफेद लिफाफा निकाला और उसे मेरी बेसबॉल जैकेट की भीतरी जेब में डाल दिया। फिर उसने एक बार फिर सिर हिलाया। मैंने बाहर देखा। आसमान अंधेरा था और सड़क नियॉन साइनबोर्ड, दफ्तरों की खिड़कियों की रोशनी, स्ट्रीटलाइट और गाड़ियों की हेडलाइट्स से जगमगा रही थी। इस कमरे में और अधिक देर रुकना असहनीय होता जा रहा था। बिना कुछ कहे, मैं उठा, कमरे को पार किया, दरवाजा खोला और बाहर निकल गया। वह युवक अपनी डेस्क के पास खड़े-खड़े मुझे देखता रहा, लेकिन वह हमेशा की तरह चुप रहा और मुझे जाने से रोकने की कोई कोशिश नहीं की।

•

वापसी की यात्रा में अकासाका मित्सुके स्टेशन पर काफी भीड़ थी। मेट्रो की उमस भरी हवा में सफर करने का मन नहीं था, इसलिए मैंने जितना हो सके पैदल चलने का फैसला किया। मैं विदेशी मेहमानों के महल के पास से होते हुए योत्सुया स्टेशन तक पैदल गया। फिर मैं शिंजुकु बुलेवार्ड पर चला और एक शांत, छोटी सी जगह पर जाकर एक गिलास ड्राफ्ट बियर पी। पहला घूंट लेते ही मुझे एहसास हुआ कि मुझे कितनी भूख लगी है, इसलिए मैंने एक स्नैक ऑर्डर किया। मैंने

अपनी घड़ी देखी और पाया कि लगभग सात बज चुके थे। वैसे, समय मेरे लिए कोई मायने नहीं रखता था।
एक पल मुझे अपनी जैकेट की अंदरूनी जेब में कुछ दिखा। जाते समय उस युवक ने मुझे जो लिफाफा दिया था, मैं उसके बारे में पूरी तरह भूल गया था। वह एक साधारण सा सफेद लिफाफा था, लेकिन उसे पकड़ते ही मुझे एहसास हुआ कि वह दिखने में जितना भारी लग रहा था, उससे कहीं ज्यादा भारी था। भारी ही नहीं, बल्कि उसके वजन में कुछ अजीब सा था, मानो अंदर कुछ सांस रोके हुए हो। कुछ पल असमंजस के बाद, मैंने उसे फाड़कर खोला—जो मुझे कभी न कभी करना ही था। अंदर दस हजार येन के नोटों का एक साफ-सुथरा बंडल था। एकदम नए दस हजार येन के नोट, बिना किसी सिलवट या झुर्री के। वे इतने नए लग रहे थे कि असली नहीं लग रहे थे, हालांकि मुझे उनके नए न होने का कोई कारण समझ नहीं आ रहा था। कुल बीस नोट थे। मैंने उन्हें दोबारा गिनकर पक्का कर लिया। जी हां, कोई शक नहीं: बीस नोट। दो लाख येन। मैंने पैसे लिफाफे में वापस रख दिए और लिफाफा अपनी जेब में रख लिया। फिर मैंने मेज से कांटा उठाया और बिना किसी कारण के उसे घूरने लगा। सबसे पहले मेरे दिमाग में यही आया कि मैं इन पैसों से अपने लिए एक जोड़ी नए जूते खरीदूंगा। यही एक चीज़ थी जिसकी मुझे सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। मैंने बिल चुकाया और शिंजुकु बुलेवार्ड की ओर वापस चला गया, जहाँ एक बड़ा जूतों का स्टोर था। मैंने कुछ साधारण नीले स्नीकर्स चुने और बिना कीमत देखे दुकानदार को अपना साइज़ बता दिया। मैंने कहा कि अगर फिट आए तो मैं उन्हें पहनकर घर चला जाऊंगा। दुकानदार (जो शायद मालिक था) ने दोनों स्नीकर्स के छेदों में सफेद फीते पिरोए और पूछा, "आपके पुराने जूतों का क्या करूं?" मैंने कहा कि वह उन्हें फेंक दे,

लेकिन फिर मैंने दोबारा सोचा और कहा कि मैं उन्हें घर ले जाऊंगा।
उन्होंने मुझे प्यारी सी मुस्कान दी। “पुराने अच्छे जूते काम आ सकते हैं, भले ही वे थोड़े गंदे हों,” उन्होंने कहा, मानो यह जता रहे हों कि उन्हें ऐसे गंदे जूते अक्सर देखने की आदत है। फिर उन्होंने पुराने जूतों को उसी डिब्बे में रख दिया जिसमें नए जूते आए थे और डिब्बे को एक शॉपिंग बैग में डाल दिया। नए डिब्बे में पड़े पुराने टेनिस के जूते किसी छोटे जानवर की लाश जैसे लग रहे थे। मैंने लिफाफे में से एक नए दस हज़ार येन के नोट से बिल चुकाया और बदले में कुछ पुराने हज़ार येन के नोट मिले। पुराने जूतों वाला बैग लेकर मैं ओडाक्यू ट्रेन में चढ़ गया और घर चला गया। मैं ट्रेन की सीट का पट्टा पकड़े घर जा रहे यात्रियों के बीच घुलमिल गया और अपने नए कपड़ों के बारे में सोचने लगा—मेरी नई अंडरवियर, टी-शर्ट और जूते।

•

घर लौटकर, मैं हमेशा की तरह रसोई की मेज पर बैठा, बीयर पी रहा था और रेडियो पर संगीत सुन रहा था। तभी मुझे ख्याल आया कि मैं किसी से बात करना चाहता हूँ—मौसम के बारे में, राजनीतिक मूर्खता के बारे में; कुछ भी हो सकता है। मैं बस किसी से बात करना चाहता था, लेकिन मुझे कोई याद नहीं आ रहा था, एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं जिससे मैं बात कर सकूँ। मेरे पास बिल्ली भी नहीं थी।

•

अगली सुबह शेव करते समय, मैंने हमेशा की तरह अपने चेहरे पर बने निशान को ध्यान से देखा। मुझे उसमें कोई बदलाव नहीं दिखा। मैं बरामदे में बैठ गया और बहुत दिनों बाद पहली बार पूरा दिन पीछे के बगीचे को निहारते हुए बिताया। सुबह और दोपहर दोनों ही

सुहावने थे। वसंत ऋतु की हल्की हवा में पेड़ों के पत्ते लहरा रहे थे।
मैंने अपनी जैकेट की जेब से उन्नीस दस हज़ार येन के नोटों वाला लिफाफा निकाला और उसे अपनी डेस्क की दराज में रख दिया। हाथ में वह अभी भी अजीब तरह से भारी लग रहा था। उस भारीपन में मानो कोई अर्थ छिपा था, पर मैं समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या था। अचानक मुझे एहसास हुआ कि वह मुझे किसी चीज़ की याद दिला रहा है। मैंने जो किया था, वह मुझे किसी चीज़ की याद दिला रहा था। दराज में रखे लिफाफे को घूरते हुए मैंने याद करने की कोशिश की कि वह क्या था, लेकिन मैं याद नहीं कर पाया।
मैंने दराज बंद किया, रसोई में गई, अपने लिए चाय बनाई और सिंक के पास खड़ी चाय पी रही थी, तभी मुझे याद आया कि क्या हुआ था। मैंने कल जो किया था, वह क्रेता कानो के वेश्यावृत्ति के काम से आश्चर्यजनक रूप से मिलता-जुलता था। आप एक तय जगह पर जाते हैं, किसी अनजान व्यक्ति के साथ सोते हैं और पैसे लेते हैं। मैं उस औरत के साथ सोई तो नहीं थी (बस वीर्यपात हो गया था), लेकिन इसके अलावा, बात बिल्कुल एक जैसी थी। पैसों की ज़रूरत में, मैंने किसी को अपना जिस्म बेचा था। चाय पीते हुए मैं यही सोच रही थी। दूर कहीं एक कुत्ते के भौंकने की आवाज़ आई। थोड़ी देर बाद, मुझे एक छोटा सा हवाई जहाज़ चलने की आवाज़ सुनाई दी। लेकिन मेरे विचार सुलझ नहीं रहे थे। मैं फिर से बरामदे में गई और दोपहर की धूप में नहाए बगीचे को देखने लगी। जब मैं इससे ऊब गई, तो मैंने अपनी हथेलियों को देखा। सोचो, मैं वेश्या बन गई थी! किसने सोचा होगा कि मैं पैसों के लिए अपना शरीर बेच दूंगी? या उन पैसों से पहले नए स्नीकर्स खरीद लूंगी?

मुझे ताज़ी हवा में सांस लेने की बहुत इच्छा थी, इसलिए मैंने पास ही में खरीदारी करने का फैसला किया। मैं अपने नए स्नीकर्स पहने सड़क पर चल पड़ी। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे इन नए जूतों ने मुझे एक नया इंसान बना दिया हो, बिल्कुल अलग जो मैं पहले थी। सड़क का नज़ारा और आस-पास के लोगों के चेहरे भी कुछ अलग लग रहे थे। पड़ोस के सुपरमार्केट में, मैंने सब्जियां, अंडे, दूध, मछली और कॉफी बीन्स खरीदीं और पिछली रात जूते की दुकान से मिले खुले पैसों से उनका भुगतान किया। मैं काउंटर पर बैठी गोल चेहरे वाली अधेड़ उम्र की महिला को बताना चाहती थी कि मैंने ये पैसे कल अपना शरीर बेचकर कमाए थे। मैंने दो लाख येन कमाए थे। दो लाख येन! मैं जिस लॉ ऑफिस में काम करती थी, वहाँ एक महीने तक रोज़ाना ओवरटाइम करके भी अगर काम करती, तो शायद डेढ़ लाख येन से थोड़ा ज़्यादा कमा पाती। यही मैं उससे कहना चाहती थी। लेकिन ज़ाहिर है, मैंने कुछ नहीं कहा। मैंने पैसे दिए और बदले में किराने के सामान से भरा एक थैला ले लिया।
एक बात तो पक्की थी: चीज़ें आगे बढ़ने लगी थीं। किराने का सामान से भरा थैला पकड़े घर लौटते हुए मैंने खुद से यही कहा। अब मुझे बस इतना करना था कि गिरने से बचने के लिए कसकर पकड़ कर रखूँ। अगर मैं ऐसा कर पाई, तो शायद मैं कहीं पहुँच जाऊँगी—कम से कम जहाँ मैं अभी हूँ, उससे अलग कोई जगह।

•

मेरी आशंका गलत नहीं निकली। जब मैं घर पहुँचा, तो बिल्ली मेरा स्वागत करने के लिए बाहर आ गई। जैसे ही मैंने सामने का दरवाज़ा खोला, उसने ज़ोर से म्याऊँ किया, मानो वह दिन भर से इंतज़ार कर रही हो, और झुकी हुई पूंछ ऊपर उठाए मेरे पास आ गई। यह नोबोरू

[illegible], [illegible]

एक ऐसी जगह जिसे आप समझ सकते हैं, अगर आप इसके बारे में बहुत गहराई से सोचें (मे कासाहारा का दृष्टिकोण: 1)

•

नमस्कार, श्रीमान विंड-अप बर्ड।
मुझे यकीन है कि आप सोच रहे होंगे कि मैं कहीं किसी क्लासरूम में बैठी हूँ, सामने किताब खोलकर पढ़ रही हूँ, किसी आम हाई स्कूल की बच्ची की तरह। हाँ, पिछली बार जब हम मिले थे, मैंने खुद आपको बताया था कि मैं "किसी दूसरे स्कूल" में जाऊँगी, इसलिए आपका ऐसा सोचना स्वाभाविक है। और सच में, मैं दूसरे स्कूल में गई भी थी, लड़कियों के लिए एक प्राइवेट बोर्डिंग स्कूल, बहुत दूर, एक आलीशान स्कूल, जिसमें होटल के कमरों जैसे बड़े, साफ़-सुथरे कमरे थे, एक कैफ़ेटेरिया जहाँ आप जो चाहें खा सकते थे, बड़े, चमकदार नए टेनिस कोर्ट और एक स्विमिंग पूल था, इसलिए ज़ाहिर है कि यह काफ़ी महंगा था, अमीर लड़कियों के लिए एक जगह। समस्याग्रस्त अमीर लड़कियाँ। आप कल्पना कर सकते हैं कि यह कैसा रहा होगा— पहाड़ों में एक सचमुच परिष्कृत देहाती स्कूल जैसा। यह एक ऊंची दीवार से घिरा हुआ था जिसके ऊपर कांटेदार तार लगे थे, और इसमें एक विशाल लोहे का गेट था जिसे खुद गॉडज़िला भी नहीं तोड़ सकता था, और चौबीसों घंटे पहरेदार रोबोट की तरह इधर-उधर घूमते रहते थे - बाहर से लोगों को अंदर आने से रोकने के लिए नहीं, बल्कि अंदर से लोगों को बाहर जाने से रोकने के लिए।
तो अब आप मुझसे पूछेंगे, "जब आपको पता था कि यह जगह इतनी भयानक है, तो आप वहाँ क्यों गए?" आप सही कह रहे हैं, लेकिन मेरे पास कोई चारा नहीं था। मेरी सबसे बड़ी इच्छा घर से बाहर निकलना थी, लेकिन मैंने जितनी भी परेशानियाँ खड़ी की थीं, उसके बाद वही

एकमात्र स्कूल था जिसने मुझे ट्रांसफर स्टूडेंट के रूप में स्वीकार किया। इसलिए मैंने वहीं टिके रहने का फैसला कर लिया। लेकिन यह सचमुच भयानक था! लोग इसे "डरावना" कहते हैं, लेकिन यह उससे भी बदतर था। मुझे उस जगह पर सचमुच बुरे सपने आते थे—हर समय — और मैं पसीने से भीग कर उठता था, लेकिन तब भी मैं चाहता था कि काश मैं सपने देखता ही रहूँ, क्योंकि उस जगह की हकीकत से मेरे बुरे सपने कहीं बेहतर थे। मुझे आश्चर्य है कि क्या आप जानते हैं कि यह कैसा होता है, मिस्टर विंड-अप बर्ड। मुझे आश्चर्य है कि क्या आप कभी ऐसी भयानक स्थिति में रहे हैं।
तो आखिरकार, मैं इस आलीशान होटल/जेल/देहाती स्कूल में सिर्फ एक सेमेस्टर के लिए ही रही। जब मैं वसंत की छुट्टियों में घर लौटी, तो मैंने अपने माता-पिता को बताया कि अगर मुझे वापस वहाँ जाना पड़ा, तो मैं आत्महत्या कर लूँगी। मैं तीन टैम्पोन अपने गले में ठूँस लूँगी और खूब सारा पानी पी लूँगी; मैं अपनी कलाई काट लूँगी; मैं स्कूल की छत से सिर के बल कूद जाऊँगी। और मैंने जो कहा, वो सच था। मैं मज़ाक नहीं कर रही थी। मेरे माता-पिता दोनों की कल्पना शक्ति तो एक मेंढक जैसी है, लेकिन उन्हें अपने अनुभव से पता था कि जब मैं इस तरह का व्यवहार करने लगती हूँ, तो वह सिर्फ़ एक धमकी नहीं होती।
खैर, मैं उस जगह कभी वापस नहीं गई। मार्च से अप्रैल तक, मैंने खुद को घर में बंद कर लिया, पढ़ती रही, टीवी देखती रही और बस यूं ही समय बिताती रही। और दिन में सौ बार सोचती, काश मैं मिस्टर विंड-अप बर्ड को देख पाती। मैं गली में चुपके से जाना चाहती, बाड़ फांदकर तुम्हारे पास आना चाहती और तुमसे लंबी-लंबी बातें करना चाहती। लेकिन यह इतना आसान नहीं था। यह गर्मियों की तरह ही होता। इसलिए मैं अपने कमरे से गली को देखती रही और मन ही मन

सोचती रही, मिस्टर विंड-अप बर्ड अब क्या कर रहे हैं? बसंत धीरे- धीरे, चुपचाप पूरी दुनिया पर छा रहा है, और मिस्टर विंड-अप बर्ड भी उसमें शामिल हैं, लेकिन उनके जीवन में क्या चल रहा है? क्या कुमिको उनके पास घर लौट आई है? उन अजीब महिलाओं माल्टा कानो और क्रेता कानो का क्या चल रहा है? क्या बिल्ली नोबोरू वटाया वापस आ गई है? क्या मिस्टर विंड-अप बर्ड के गाल से निशान गायब हो गया है...?
एक महीने तक इस तरह रहने के बाद, मैं इसे और सहन नहीं कर सकी। मुझे नहीं पता कैसे और कब हुआ, लेकिन मेरे लिए वह इलाका अब "मिस्टर विंड-अप बर्ड की दुनिया" के सिवा कुछ नहीं है, और जब मैं उसमें होती हूँ, तो मैं बस "मिस्टर विंड-अप बर्ड की दुनिया में समाई हुई मैं" होती हूँ। और यह सिर्फ कुछ हद तक ही नहीं है। बेशक, इसमें आपकी कोई गलती नहीं है, लेकिन फिर भी... इसलिए मुझे अपनी खुद की जगह ढूंढनी पड़ी।
मैंने इसके बारे में बहुत सोचा, और आखिरकार मुझे समझ आ गया कि मुझे कहाँ जाना है।
(संकेत) अगर आप बहुत ध्यान से सोचें तो आप उस जगह का पता लगा सकते हैं। थोड़ी सी कोशिश करने पर आप समझ जाएंगे कि मैं कहाँ हूँ। यह कोई स्कूल नहीं है, कोई होटल नहीं है, कोई अस्पताल नहीं है, कोई जेल नहीं है, कोई घर नहीं है। यह एक बहुत ही खास जगह है, बहुत दूर। यह... एक रहस्य है। फिलहाल तो यही है।
मैं फिर से पहाड़ों में हूँ, एक और ऐसी जगह पर जो चारों तरफ से दीवार से घिरी है (लेकिन इतनी बड़ी दीवार नहीं), और वहाँ एक गेट है और एक भले-से बूढ़े आदमी गेट की रखवाली करते हैं, लेकिन आप जब चाहें अंदर-बाहर आ-जा सकते हैं। यह ज़मीन का एक बहुत बड़ा टुकड़ा है, जिसमें अपना छोटा सा जंगल और एक तालाब है, और अगर आप

सूरज उगने के समय टहलने निकलें तो आपको बहुत सारे जानवर दिखेंगे: शेर और ज़ेबरा और—नहीं, मैं मज़ाक कर रहा हूँ, लेकिन आपको बिज्जू और तीतर जैसे प्यारे छोटे जानवर भी दिखेंगे। वहाँ एक छात्रावास है, और मैं वहीं रहता हूँ।
मैं यह पत्र एक छोटे से कमरे में, एक छोटी सी मेज पर, एक छोटे से बिस्तर के पास, एक छोटी सी किताबों की अलमारी के बगल में, एक छोटी सी कोठरी के पास लिख रहा हूँ। इनमें से किसी में भी सजावट का नामोनिशान नहीं है, और ये सभी केवल न्यूनतम कार्यात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाए गए हैं। मेज पर एक फ्लोरोसेंट लैंप, एक चाय का कप, पत्र लिखने के लिए स्टेशनरी और एक शब्दकोश रखा है। सच कहूँ तो, मैं शब्दकोश का उपयोग लगभग कभी नहीं करता। मुझे शब्दकोश पसंद ही नहीं हैं। मुझे उनका रूप-रंग पसंद नहीं है, और न ही उनमें लिखी बातें। जब भी मैं शब्दकोश का उपयोग करता हूँ, तो मुँह बनाता हूँ और सोचता हूँ, इसे जानने की किसे ज़रूरत है? मुझ जैसे लोगों का शब्दकोशों से कोई वास्ता नहीं होता। मान लीजिए मैंने "परिवर्तन" शब्द खोजा और उसमें लिखा है: "एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाना।" मैं सोचता हूँ, तो क्या हुआ? इसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए जब मैं अपनी मेज पर शब्दकोश देखता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे कोई अजीब कुत्ता हमारे पिछवाड़े के लॉन में टेढ़ा-मेढ़ा मल त्याग रहा हो। लेकिन खैर, मैंने एक डिक्शनरी खरीद ली क्योंकि मुझे लगा कि आपको लिखते समय मुझे शायद कुछ शब्दों का अर्थ देखना पड़ सकता है, श्रीमान विंड-अप बर्ड।
मेरे पास एक दर्जन पेंसिलें भी हैं, सभी नुकीली की हुई और एक कतार में रखी हुई। ये एकदम नई हैं। मैंने इन्हें अभी-अभी स्टेशनरी की दुकान से खरीदा है—खास तौर पर तुम्हें लिखने के

लिए (ऐसा नहीं है कि मैं तुम्हें एहसानमंद महसूस करवाना चाहती हूँ: नई-नई नुकीली पेंसिलें वाकई बहुत अच्छी लगती हैं, है ना?)। मेरे पास एक ऐशट्रे, सिगरेट और माचिस भी हैं। मैं अब पहले जितना सिगरेट नहीं पीती, बस कभी-कभार मूड बदलने के लिए (जैसे अभी)। तो यही सब मेरी मेज पर रखा है। मेज खिड़की के सामने है, और खिड़की पर पर्दे लगे हैं। पर्दों पर एक प्यारा सा फूल का डिज़ाइन बना है—ऐसा नहीं है कि मैंने उन्हें खुद चुना हो: वे खिड़की के साथ ही आए थे। वह फूल का डिज़ाइन ही यहाँ एकमात्र ऐसी चीज़ है जो बिल्कुल सादी और साधारण नहीं दिखती। यह एक किशोरी के लिए एकदम सही कमरा है—या शायद नहीं। नहीं, यह तो पहली बार अपराध करने वालों के लिए अच्छे इरादों से डिज़ाइन की गई एक आदर्श जेल कोठरी जैसा है। मेरा बूम बॉक्स शेल्फ पर रखा है (बड़ा वाला—याद है वो विंड-अप बर्ड?), और अभी मैंने ब्रूस स्प्रिंगस्टीन का गाना लगा रखा है। रविवार की दोपहर है और सब लोग मौज-मस्ती कर रहे हैं, इसलिए अगर मैं आवाज़ तेज़ कर दूं तो कोई शिकायत नहीं करेगा। आजकल मैं बस वीकेंड पर पास के कस्बे में जाकर अपनी पसंद की कैसेट टेप खरीदती हूँ, तभी मेरा मन करता है। (मैं किताबें तो लगभग कभी नहीं खरीदती। अगर मुझे कुछ पढ़ना होता है, तो मैं उसे अपनी छोटी सी लाइब्रेरी से ले लेती हूँ।) पड़ोस में रहने वाली लड़की से मेरी अच्छी दोस्ती है। उसने एक पुरानी कार खरीदी है, इसलिए जब भी मुझे शहर जाना होता है, मैं उसके साथ जाती हूँ। और पता है क्या? मैं उसे चलाना सीख रही हूँ। यहाँ इतनी खुली जगह है कि मैं जितना चाहूँ अभ्यास कर सकती हूँ। मेरे पास अभी लाइसेंस नहीं है, लेकिन मैं अच्छी ड्राइवर हूँ।
सच कहूँ तो, संगीत टेप खरीदने के अलावा, शहर जाना उतना मज़ेदार नहीं है। सब कहते हैं कि उन्हें हफ्ते में एक बार बाहर जाना ही

पड़ता है, वरना पागल हो जाएँगे, लेकिन मुझे तो तब सुकून मिलता है जब सब चले जाते हैं और मैं यहीं रहकर अपना पसंदीदा संगीत सुनती हूँ। एक बार मैं अपनी कार वाली दोस्त के साथ एक तरह की डबल डेट पर गई थी। बस ऐसे ही। वो यहीं आसपास की है, इसलिए वो बहुत से लोगों को जानती है। मेरा साथी एक अच्छा लड़का था, कॉलेज का छात्र, लेकिन पता नहीं, मुझे अभी भी कई बातें ठीक से समझ नहीं आतीं। ऐसा लगता है जैसे वो कहीं दूर, शूटिंग गैलरी में गुड़ियों की तरह कतार में खड़ी हैं, और मेरे और उन गुड़ियों के बीच पारदर्शी पर्दे लटके हुए हैं।
सच कहूँ तो, उस गर्मी में जब मैं आपसे मिल रही थी, मिस्टर विंड-अप बर्ड, जैसे कि हम रसोई की मेज पर बैठकर बातें कर रहे थे, बीयर पी रहे थे, तब मैं सोचती थी, अगर मिस्टर विंड-अप बर्ड अचानक मुझे धक्का देकर गिरा दें और मेरा बलात्कार करने की कोशिश करें तो मैं क्या करूँगी? मुझे नहीं पता था मैं क्या करूँगी। बेशक, मैं विरोध करती और कहती, "नहीं, मिस्टर विंड-अप बर्ड, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए!" लेकिन मैं यह भी सोच रही होती कि मुझे समझाना होगा कि यह गलत क्यों है और आपको ऐसा क्यों नहीं करना चाहिए, और जितना मैं सोचती, उतना ही मैं उलझन में पड़ जाती, और तब तक शायद आप मेरा बलात्कार कर चुके होते। जब मैं इसके बारे में सोचती तो मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगता, और मुझे लगता कि यह सब कुछ अन्यायपूर्ण है। मुझे यकीन है कि आपको कभी अंदाज़ा भी नहीं था कि मेरे दिमाग में ऐसे विचार चल रहे थे। क्या आपको लगता है कि यह बेवकूफी है? शायद आपको लगता होगा। मेरा मतलब है, यह बेवकूफी है। लेकिन उस समय, मैं इन बातों को लेकर बेहद गंभीर थी। मुझे लगता है, इसीलिए मैंने कुएं से सीढ़ी निकाल ली और उस पर ढक्कन लगा दिया, जबकि तुम अंदर थे, मानो तुम्हें पूरी तरह से अलग कर दिया हो। इस तरह, वो

विंड-अप बर्ड अब आसपास नहीं रहेगा, और मुझे कुछ समय के लिए उन विचारों से छुटकारा मिल जाएगा।
मुझे खेद है। मुझे पता है कि मुझे तुम्हारे साथ (या किसी और के साथ) ऐसा कभी नहीं करना चाहिए था। लेकिन कभी-कभी मैं खुद को रोक नहीं पाता। मुझे पता है कि मैं क्या कर रहा हूँ, फिर भी मैं रुक नहीं पाता। यही मेरी सबसे बड़ी कमजोरी है।
मुझे नहीं लगता कि तुम कभी मेरा बलात्कार करोगे, मिस्टर विंड-अप बर्ड। अब मुझे ये बात समझ आ गई है, जैसे कि पता चल ही गई हो। ऐसा नहीं है कि तुम कभी ऐसा करोगे ही नहीं (मतलब, किसी को पक्का पता नहीं होता कि क्या होगा), लेकिन शायद कम से कम मुझे भ्रमित करने के लिए तो नहीं करोगे। मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा कि इसे कैसे कहूँ, पर मुझे ऐसा ही लग रहा है।
ठीक है, अब बलात्कार की बातें बंद करते हैं।
खैर, भले ही मैं किसी लड़के के साथ डेट पर जाऊं, भावनात्मक रूप से मैं ध्यान केंद्रित नहीं कर पाऊंगी। मैं मुस्कुराती और बातें करती रहूंगी, और मेरा दिमाग कहीं और भटकता रहेगा, जैसे टूटी डोर वाला गुब्बारा। मैं एक के बाद एक बेमतलब की बातें सोचती रहूंगी। पता नहीं, शायद अब मैं कुछ और समय अकेले रहना चाहती हूं। और मैं अपने विचारों को आज़ादी से भटकने देना चाहती हूं। इस लिहाज़ से, शायद मैं अभी भी "ठीक होने की राह पर" हूं। मैं जल्द ही दोबारा लिखूंगा। अगली बार शायद मैं कई विषयों पर और विस्तार से लिख पाऊंगा।
पुनश्च: अगला पत्र आने से पहले, यह अनुमान लगाने की कोशिश करें कि मैं कहाँ हूँ और क्या कर रहा हूँ।

जायफल और दालचीनी

•

बिल्ली नाक से पूंछ तक सूखी मिट्टी के गुच्छों से ढकी हुई थी, उसके बाल छोटे-छोटे गोलों की तरह आपस में चिपके हुए थे, मानो वह लंबे समय तक किसी गंदी जगह पर लोटती रही हो। जब मैंने उसे उठाया और उसकी पूरी जांच की, तो वह खुशी से गुर्राने लगी। वह थोड़ी दुबली-पतली ज़रूर थी, लेकिन इसके अलावा, वह पिछली बार जब मैंने उसे देखा था, उससे ज़्यादा अलग नहीं लग रही थी: चेहरा, शरीर, बाल। उसकी आँखें साफ़ थीं, और उस पर कोई घाव नहीं था। वह निश्चित रूप से ऐसी बिल्ली नहीं लग रही थी जो एक साल से लापता हो। ऐसा लग रहा था मानो वह एक रात मौज-मस्ती करने के बाद घर लौटी हो।
मैंने उसे बरामदे में खाना खिलाया: सुपरमार्केट से खरीदी हुई कटी हुई मैकेरल मछली की एक प्लेट भर कर। ज़ाहिर है, वह भूखा था। उसने मछली के टुकड़े इतनी जल्दी चट कर लिए कि बीच-बीच में उसे उल्टी आने लगी और वह टुकड़े वापस प्लेट में थूक देता था। मैंने सिंक के नीचे बिल्ली का पानी का कटोरा ढूंढा और उसे पूरा भर दिया। वह उसे लगभग खाली करने ही वाला था। इतना करने के बाद, वह अपने मिट्टी से सने हुए फर को चाटने लगा, लेकिन फिर, जैसे अचानक उसे याद आया कि मैं वहाँ हूँ, वह मेरी गोद में चढ़ गया, सिकुड़कर लेट गया और सो गया।
बिल्ली अपने अगले पैरों को शरीर के नीचे दबाकर, अपना चेहरा पूंछ में छिपाकर सो रही थी। पहले तो वह ज़ोर से गुर्रा रही थी, लेकिन धीरे-धीरे उसकी आवाज़ कम होती गई, और अंत में वह गहरी और शांत नींद में सो गई, मानो उसने सारी संवेदनाएं त्याग दी हों। मैं बरामदे में धूप वाली जगह पर बैठी थी, उसे जगाए बिना धीरे से सहला

रही थी। मैंने बहुत समय से बिल्ली के उस खास कोमल, गर्म स्पर्श के बारे में नहीं सोचा था। मेरे साथ इतनी सारी बातें हो रही थीं कि मैं लगभग भूल ही गई थी कि बिल्ली गायब हो गई है। लेकिन इस कोमल, छोटे से जीव को इस तरह अपनी गोद में लेकर और उसे मुझ पर पूरे भरोसे के साथ सोते हुए देखकर, मेरे सीने में एक गर्माहट सी दौड़ गई। मैंने अपना हाथ बिल्ली की छाती पर रखा और उसके दिल की धड़कन महसूस की। नाड़ी धीमी और तेज़ थी, लेकिन उसका दिल, मेरे दिल की तरह, अपने छोटे से शरीर के लिए निर्धारित समय को मेरी ही तरह बेचैनी और लगन से गिन रहा था।
यह बिल्ली एक साल से कहाँ थी? वह क्या कर रही थी? अचानक अब वापस क्यों लौटी? और बीते हुए समय का कोई निशान कहाँ था? काश मैं उससे ये सवाल पूछ पाती। काश वह मुझे जवाब दे पाती!

•

मैं बरामदे में एक पुराना तकिया लेकर आई और बिल्ली को उस पर लिटा दिया। वह बिल्कुल बेजान सी थी। जब मैंने उसे उठाया, तो उसकी आँखें थोड़ी खुलीं और उसने अपना मुँह भी खोला, लेकिन कोई आवाज़ नहीं निकाली। वह तकिए पर आराम से लेट गई, एक जम्हाई ली और फिर सो गई। जब मुझे तसल्ली हो गई कि वह आराम कर रही है, तो मैं रसोई में गई और घर लाए हुए किराने का सामान रखने लगी। मैंने टोफू, सब्ज़ियाँ और मछली फ्रिज के खानों में रख दीं, फिर बरामदे की तरफ देखा। बिल्ली उसी तरह सो रही थी। हम उसे हमेशा नोबोरू वटाया कहते थे क्योंकि उसकी आँखों की चमक कुमिको के भाई जैसी थी, लेकिन यह तो बस हमारा एक मज़ाक था, बिल्ली का असली नाम नहीं। असल में, हमने छह साल तक उसे कोई नाम नहीं दिया था।
मज़ाक में भी, नोबोरू वाटाया नाम हमारी बिल्ली के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं था। पिछले छह वर्षों में नोबोरू वाटाया की

मौजूदगी इतनी ज़बरदस्त हो गई थी कि उसका प्रभाव बहुत बढ़ गया था — खासकर अब जब वह प्रतिनिधि सभा के लिए निर्वाचित हो चुका था। बिल्ली को हमेशा के लिए यह नाम देना नामुमकिन था। जब तक वह इस सदन में रहेगा, उसे एक नया नाम देना ज़रूरी होगा, एक ऐसा नाम जो उसका अपना हो—और जितनी जल्दी हो सके उतना अच्छा। यह एक सरल, व्यावहारिक और वास्तविक नाम होना चाहिए, जिसे आप अपनी आँखों से देख सकें और अपने हाथों से महसूस कर सकें, एक ऐसा नाम जो नोबोरू वाटाया नाम की ध्वनि, स्मृति और अर्थ को मिटा दे।
मैं मछली वाली थाली ले आया। वह इतनी साफ लग रही थी मानो अभी-अभी धोकर पोंछी गई हो। बिल्ली ने ज़रूर मज़े से खाना खाया होगा। मुझे खुशी थी कि मैंने ठीक उसी समय मैकेरल मछली खरीदी थी जब बिल्ली घर आई थी। यह एक शुभ संकेत लग रहा था, मेरे और बिल्ली दोनों के लिए सौभाग्यशाली। हाँ, यही सही था: मैं उसका नाम मैकेरल रखूंगा। उसके कानों के पीछे सहलाते हुए, मैंने उसे अपने नाम में बदलाव के बारे में बताया: "अब तुम नोबोरू वटाया नहीं हो," मैंने कहा। "अब से तुम्हारा नाम मैकेरल है।" मैं यह बात सबको बताना चाहता था।
मैं बरामदे में मैकरेल नाम की बिल्ली के पास बैठकर किताब पढ़ रही थी, सूरज डूबने तक। बिल्ली इतनी गहरी नींद में सो रही थी मानो बेहोश हो गई हो, उसकी धीमी साँसें दूर से आती हुई किसी भारी आवाज़ जैसी लग रही थीं, उसका शरीर उस आवाज़ के साथ ऊपर-नीचे हो रहा था। मैं बीच-बीच में हाथ बढ़ाकर उसकी गर्माहट महसूस करती और देखती कि बिल्ली सच में वहीं है। ऐसा कर पाना कितना अद्भुत था: किसी चीज़ को छूना, किसी गर्म चीज़ को महसूस करना। मुझे इस तरह के अनुभव की बहुत कमी महसूस हो रही थी।

•

अगली सुबह भी मैकरेल वहीं था। वह गायब नहीं हुआ था। जब मैं उठा, तो मैंने उसे अपने बगल में करवट लेकर, टांगें सीधी फैलाए सोता हुआ पाया। वह रात में जाग गया होगा और खुद को चाटकर साफ कर लिया होगा। कीचड़ और बालों के गुच्छे गायब हो गए थे। वह लगभग पहले जैसा ही दिख रहा था। उसके शरीर पर हमेशा से ही सुंदर फर थे। मैंने उसे थोड़ी देर तक गोद में रखा, फिर उसे नाश्ता खिलाया और पानी बदल दिया। फिर मैं उससे दूर हट गया और उसका नाम लेकर पुकारने की कोशिश की: "मैकरेल।" आखिरकार, तीसरी कोशिश में, वह मेरी तरफ मुड़ा और हल्की सी म्याऊं की आवाज निकाली।
अब मेरे नए दिन की शुरुआत का समय आ गया था। बिल्ली मेरे पास लौट आई थी, और मुझे कुछ हद तक आगे बढ़ना ही था। मैंने नहाया और धुली हुई कमीज़ को इस्त्री किया। मैंने सूती पैंट और अपने नए स्नीकर्स पहने। आसमान में धुंध छाई हुई थी, लेकिन मौसम ज़्यादा ठंडा नहीं था। मैंने कोट के बजाय मोटा स्वेटर पहनने का फैसला किया। हमेशा की तरह, मैं शिंजुकु जाने वाली ट्रेन में चढ़ा, भूमिगत मार्ग से पश्चिम निकास प्लाज़ा तक गया और अपनी पसंदीदा बेंच पर बैठ गया।

•

वह महिला लगभग तीन बजे के कुछ देर बाद आई। मुझे देखकर वह बिल्कुल भी हैरान नहीं हुई, और मैंने भी उसके आने पर कोई हैरानी नहीं दिखाई। हमारी मुलाकात पूरी तरह स्वाभाविक थी। हमने एक-दूसरे को नमस्कार नहीं किया, मानो यह सब पहले से तय था। मैंने अपना चेहरा थोड़ा ऊपर उठाया, और उसने होठों को हल्के से हिलाते हुए मेरी ओर देखा।
उसने वसंत ऋतु के रंग का नारंगी सूती टॉप, पुखराज रंग की तंग स्कर्ट और छोटे सोने के झुमके पहने थे। वह मेरे बगल में बैठ गई

नहीं समझाती थीं कि क्या हो रहा है। स्पष्टीकरण को एक तरह की बुराई मानकर खारिज कर दिया जाता था जो केवल फिल्मों की "वास्तविकता" को नष्ट कर सकती थी। यह सोचने का एक तरीका था, चीजों को देखने का एक तरीका था, इसमें कोई संदेह नहीं, लेकिन एक वास्तविक, जीवित इंसान होने के नाते, मेरे लिए ऐसी दुनिया में प्रवेश करना अजीब सा लगा।
मेरी कद-काठी औसत है, इसलिए दोनों सूटों में आस्तीन और पैंट के पाँवों को ठीक करने के अलावा कोई बदलाव नहीं करना पड़ा। उस महिला ने तीन फॉर्मल शर्ट और हर शर्ट से मेल खाने वाली तीन टाई, फिर दो बेल्ट और आधा दर्जन मोजे चुने। उसने क्रेडिट कार्ड से भुगतान किया और सारा सामान मेरे घर पहुँचाने का आदेश दिया। ऐसा लग रहा था जैसे उसके मन में मेरी छवि साफ़ थी कि मुझे कैसा दिखना चाहिए। उसने मेरे लिए जो सामान खरीदा, उसे चुनने में उसे ज़रा भी समय नहीं लगा। मैं तो किसी स्टेशनरी की दुकान पर नया इरेज़र चुनने में ही इतना समय लगा देता। लेकिन मुझे मानना पड़ेगा कि कपड़ों के मामले में उसका स्वाद वाकई अद्भुत था। उसने जो भी शर्ट और टाई चुनीं, उनका रंग और स्टाइल बिल्कुल मेल खा रहा था, मानो उसने उन्हें बहुत सोच-समझकर चुना हो। और उसके बनाए हुए कॉम्बिनेशन भी ज़रा साधारण नहीं थे।
इसके बाद, वह मुझे एक जूते की दुकान पर ले गई और मेरे सूट के साथ पहनने के लिए दो जोड़ी जूते खरीद लाई। इसमें भी उसे ज़रा भी समय नहीं लगा। उसने फिर से क्रेडिट कार्ड से भुगतान किया और सामान मेरे घर पहुंचाने के लिए कहा। दो जोड़ी जूतों के मामले में डिलीवरी की शायद ही कोई ज़रूरत थी, लेकिन जाहिर तौर पर यही उसका तरीका था: जल्दी से चीज़ें चुनो, क्रेडिट कार्ड से भुगतान करो और सामान घर मंगवा लो।

इसके बाद, हम एक घड़ीसाज़ के पास गए और वही प्रक्रिया दोहराई। उसने मेरे सूट के साथ मैच करने के लिए मगरमच्छ की चमड़ी के पट्टे वाली एक स्टाइलिश, शानदार घड़ी खरीदी, और फिर से उसे चुनने में उसने ज़रा भी समय नहीं लगाया। कीमत लगभग पचास से साठ हज़ार येन के बीच थी। मेरे पास एक सस्ती प्लास्टिक की घड़ी थी, लेकिन ज़ाहिर तौर पर वह उसे पसंद नहीं आई। कम से कम घड़ी तो उसने मंगवाई नहीं। इसके बजाय, उसने उसे पैक करवाया और बिना कुछ कहे मुझे सौंप दी।
इसके बाद, वह मुझे एक यूनिसेक्स हेयर सैलून में ले गई। वह जगह किसी डांस स्टूडियो जैसी थी, चमकदार लकड़ी के फर्श और दीवारों पर लगे शीशों से सजी हुई। वहाँ पंद्रह कुर्सियाँ थीं, और हर जगह टेक्नीशियन कैंची, हेयरब्रश और अन्य सामान लिए आ-जा रहे थे। फर्श पर जगह-जगह गमलों में पौधे रखे थे, और छत पर लगे दो काले बोस स्पीकरों से कीथ जैरेट के पियानो सोलो की हल्की-हल्की धुन आ रही थी। मुझे तुरंत एक कुर्सी पर बैठा दिया गया। उस महिला ने शायद उन दुकानों में से किसी एक से मेरे लिए अपॉइंटमेंट बुक करवाया था जहाँ हम गए थे। उसने मेरे बाल काटने वाले दुबले-पतले आदमी को विस्तार से निर्देश दिए। वे दोनों एक-दूसरे को जानते थे। जैसे ही वह उसके हर निर्देश का पालन कर रहा था, उसकी नज़रें शीशे में मेरे चेहरे पर टिकी हुई थीं, मानो वह अजवाइन के रेशों से भरे कटोरे को खा रहा हो। उसका चेहरा युवा सोल्झेनित्सिन जैसा था। महिला ने उससे कहा, "जब तुम्हारा काम हो जाएगा, मैं वापस आ जाऊँगी," और तेज़ी से कदम बढ़ाते हुए सैलून से चली गई।
बाल काटते समय वह आदमी बहुत कम बोलता था—शैंपू करने के समय “इधर आइए,” और बाल झाड़ते समय “माफ़ कीजिए।” कभी-कभी जब वह दूर चला जाता, तो मैं नाई के कपड़े के नीचे से हाथ निकालकर अपने

दाहिने गाल पर बने निशान को छू लेता। घर के शीशे के अलावा मैंने इसे पहली बार किसी और शीशे में देखा था। दीवार जितने बड़े शीशों में कई लोगों की छवियाँ दिख रही थीं, जिनमें मेरी भी छवि थी। और मेरे चेहरे पर यह चमकीला नीला निशान दिखाई दे रहा था। यह मुझे बदसूरत या गंदा नहीं लगता था। यह बस मेरा एक हिस्सा था, जिसे मुझे स्वीकार करना ही था। मैं महसूस कर सकता था कि लोग इसे देख रहे हैं—शीशे में इसकी छवि को देख रहे हैं। लेकिन शीशे में इतनी सारी छवियाँ थीं कि मैं बता नहीं सकता था कि कौन देख रहा है। मुझे बस इतना महसूस होता था कि उनकी निगाहें उस निशान पर टिकी हुई हैं।
आधे घंटे में मेरे बाल कट गए। नौकरी छोड़ने के बाद से मेरे बाल लगातार बढ़ते जा रहे थे, लेकिन अब वे फिर से छोटे हो गए थे। मैं दीवार के पास लगी कुर्सियों में से एक पर जाकर बैठ गया और संगीत सुनने लगा और एक पत्रिका पढ़ने लगा जिसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी, जब तक कि वह महिला वापस नहीं आ गई। वह मेरे नए हेयरस्टाइल से खुश लग रही थी। उसने अपने पर्स से दस हज़ार येन का नोट निकाला, बिल चुकाया और मुझे बाहर ले गई। वहाँ आकर वह रुक गई और मुझे सिर से पैर तक ऐसे ही देखने लगी जैसे मैं हमेशा बिल्ली को देखता था, मानो यह देखना चाहती हो कि कहीं वह कुछ करना भूल तो नहीं गई। ज़ाहिर है, कुछ नहीं भूली थी। फिर उसने अपनी सोने की घड़ी पर नज़र डाली और एक गहरी साँस ली। लगभग सात बज चुके थे।
“चलो खाना खाते हैं,” उसने कहा। “क्या तुम खा सकते हो?”
मैंने नाश्ते में टोस्ट का एक टुकड़ा और दोपहर के भोजन में एक डोनट खाया था। "शायद," मैंने कहा।

वह मुझे पास के एक इतालवी रेस्तरां में ले गई। वहाँ सब उसे जानते थे। बिना कुछ कहे, हमें पीछे एक शांत मेज पर बैठा दिया गया। जैसे ही मैं उसके सामने बैठा, उसने मुझे अपनी पैंट की जेबों का सारा सामान मेज पर रखने का आदेश दिया। मैंने वैसा ही किया, बिना कुछ कहे। मानो मेरी वास्तविकता मुझसे दूर हो गई हो और अब आसपास भटक रही हो। काश वह मुझे ढूंढ ले, मैंने सोचा। मेरी जेबों में कुछ खास नहीं था: चाबियाँ, रुमाल, बटुआ। उसने बिना किसी रुचि के उन्हें देखा, फिर बटुआ उठाया और अंदर देखा। उसमें लगभग पचपन सौ येन नकद, एक टेलीफोन कार्ड, एक एटीएम कार्ड और मेरा वार्ड पूल आईडी था, बस इतना ही। कुछ भी असामान्य नहीं। ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे किसी को उसे सूंघने, नापने, हिलाने, पानी में डुबोने या रोशनी में देखने की ज़रूरत महसूस हो। उसने बिना किसी भाव परिवर्तन के बटुआ मुझे वापस दे दिया।
“मैं चाहती हूँ कि तुम कल बाहर जाओ और एक दर्जन रुमाल, एक नया बटुआ और चाबी का डिब्बा खरीद लो,” उसने कहा। “मुझे यकीन है कि तुम इतना तो खुद ही चुन लोगे। और तुमने आखिरी बार अपने लिए नए अंडरवियर कब खरीदे थे?”
मैंने एक पल सोचा, लेकिन मुझे याद नहीं आया। "मुझे याद नहीं आ रहा," मैंने कहा। "काफी समय हो गया है, मुझे लगता है, लेकिन मैं सफाई को लेकर थोड़ा सनकी हूँ, और अकेले रहने वाले आदमी के लिए, मैं अपने कपड़े धोने में अच्छा हूँ—"
कोई बात नहीं। मैं चाहता हूँ कि तुम एक दर्जन टॉप और बॉटम खरीद लो।
मैंने बिना कुछ बोले सिर हिलाया।
“बस मुझे रसीद ले आना। मैं भुगतान कर दूंगा। और ध्यान रखना कि तुम सबसे अच्छी चीज़ें ही खरीदो। मैं तुम्हारे सफाई के बिल भी

भर दूंगा। एक ही कमीज़ को एक से ज़्यादा बार मत पहनना, उसे साफ करवाने के लिए भेज देना। ठीक है?”
मैंने फिर सिर हिलाया। स्टेशन के पास सफाईकर्मी यह सुनकर खुश होगा। लेकिन, मैंने मन ही मन सोचा, और खिड़की से सतही तनाव के कारण चिपके इस संक्षिप्त वाक्य को एक पूर्ण वाक्य में बदलने की कोशिश की: "लेकिन आप यह सब क्यों कर रहे हैं—मेरे लिए पूरे नए कपड़े क्यों खरीद रहे हैं, मेरे बाल कटवाने और सफाई का खर्च क्यों उठा रहे हैं?"
उसने मुझे कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उसने अपने पर्स से एक वर्जीनिया स्लिम सिगरेट निकाली और मुँह में डाल ली। तभी अचानक एक लंबा, सामान्य चेहरे वाला वेटर कहीं से प्रकट हुआ और बड़ी कुशलता से माचिस से उसकी सिगरेट जला दी। उसने माचिस को साफ, सूखी आवाज के साथ जलाया—ऐसी आवाज जो किसी की भूख बढ़ा दे। जब उसने जलाना खत्म किया, तो उसने हमें मेनू दे दिए। लेकिन उसने मेनू देखने की जहमत नहीं उठाई और वेटर से कहा कि आज के स्पेशल व्यंजनों की चिंता न करे। “मुझे एक सलाद, एक डिनर रोल और सफेद मांस वाली कोई मछली ला दो। सलाद पर बस कुछ बूँदें ड्रेसिंग और थोड़ी सी काली मिर्च डाल देना। और एक गिलास स्पार्कलिंग वॉटर, बर्फ नहीं।” मुझे मेनू देखने की ज़हमत नहीं उठानी थी। “मुझे भी वही चाहिए,” मैंने कहा। वेटर ने झुककर अभिवादन किया और चला गया। ऐसा लग रहा था मानो मेरी वास्तविकता मुझे ढूंढने में अभी भी असमर्थ थी।
मैंने उससे स्पष्टीकरण पाने की एक और कोशिश करते हुए कहा, "मैं तो बस जिज्ञासावश पूछ रही हूँ। इन सब चीज़ों के लिए आप मुझे दोषी नहीं ठहरा रही हैं, लेकिन क्या वाकई इसमें लगने वाला सारा समय, मेहनत और पैसा इसके लायक है?"

फिर भी उसने कोई जवाब नहीं दिया।
मैंने फिर कहा, "मुझे बस जिज्ञासा है।"
फिर कोई जवाब नहीं। वह दीवार पर टंगी तेल चित्रकला को देखने में इतनी मग्न थी कि मेरे सवाल का जवाब ही नहीं दे पाई। चित्र में मुझे लगा कि इटली का कोई प्राकृतिक दृश्य है, जिसमें एक अच्छी तरह से छंटा हुआ चीड़ का पेड़ और पहाड़ियों पर बने कई लाल रंग के फार्महाउस हैं। सभी घर थोड़े छोटे थे, लेकिन देखने में अच्छे थे। मैं सोच रहा था कि ऐसे घरों में किस तरह के लोग रहते होंगे: शायद सामान्य लोग, सामान्य जीवन जीते होंगे। उनमें से किसी के भी घर में ऐसी रहस्यमयी औरतें नहीं आती होंगी जो कहीं से आकर उन्हें सूट, जूते और घड़ियाँ खरीदकर दें। उनमें से किसी को भी सूखे हुए कुएँ पर कब्ज़ा करने के लिए लगने वाले भारी भरकम पैसों का हिसाब-किताब नहीं करना पड़ता होगा। मुझे ऐसे सामान्य जीवन जीने वाले लोगों से ईर्ष्या होने लगी। ईर्ष्या एक ऐसी भावना नहीं है जो मुझे अक्सर महसूस होती है, लेकिन चित्र के दृश्य ने उस भावना को मुझमें लगभग आश्चर्यजनक हद तक जगा दिया। काश, मैं उसी क्षण उस चित्र में प्रवेश कर पाता! काश, मैं उन फार्महाउसों में से किसी एक में जा पाता, एक गिलास वाइन पी पाता, फिर चादर ओढ़कर बिना किसी विचार के सो जाता!
कुछ ही देर में वेटर आया और उसने उस महिला और मेरे सामने स्पार्कलिंग वॉटर के गिलास रख दिए। उसने ऐशट्रे में अपनी सिगरेट बुझा दी।
“आप मुझसे कुछ और क्यों नहीं पूछते?” उसने कहा।
जब मैं कुछ और पूछने के बारे में सोच ही रही थी, तभी उसने अपने स्पार्कलिंग वॉटर का एक घूंट लिया।

मैंने पूछा, "क्या अकासाका स्थित दफ्तर में बैठा वह युवक आपका बेटा था?"
“बेशक,” उसने बिना किसी झिझक के जवाब दिया।
क्या वह बोलने में असमर्थ है?
महिला ने सिर हिलाया। “शुरू से ही वह ज्यादा बोलता नहीं था, लेकिन अचानक छह साल की उम्र में उसने बोलना बिल्कुल बंद कर दिया। उसने अपनी आवाज का इस्तेमाल करना पूरी तरह से बंद कर दिया।”
क्या इसके पीछे कोई कारण था?
उसने इस सवाल को नज़रअंदाज़ कर दिया। मैंने दूसरा सवाल सोचने की कोशिश की। "अगर वह बोलता ही नहीं, तो फिर अपना काम कैसे संभालता है?"
उसने अपनी भौंहें हल्की सी सिकोड़ीं। उसने मेरे सवाल को अनदेखा नहीं किया था, लेकिन जाहिर तौर पर उसका जवाब देने का कोई इरादा नहीं था।
मुझे पूरा यकीन है कि तुमने उसके सिर से लेकर पैर तक, हर एक चीज खुद चुनी होगी। ठीक वैसे ही जैसे तुमने मेरे साथ किया था।
मुझे तब बिल्कुल अच्छा नहीं लगता जब लोग गलत कपड़े पहनते हैं। बस इतना ही। यह ऐसी चीज है जिसे मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं कम से कम यह तो चाहता हूं कि मेरे आस-पास के लोग अच्छे से कपड़े पहनें। मैं चाहता हूं कि उनका हर रूप सही दिखे, चाहे वह दिखाई दे या न दे।
मैंने मजाक करने की कोशिश करते हुए कहा, "मुझे लगता है कि आपको मेरा अपेंडिक्स पसंद नहीं है।"

“क्या आपको अपने अपेंडिक्स के आकार से कोई समस्या है?” उसने एकदम गंभीर भाव से मेरी ओर देखते हुए पूछा। मुझे अपने उस मज़ाक पर पछतावा हुआ।
मैंने कहा, "अभी तो कुछ नहीं। मेरा इससे कोई खास मतलब नहीं था। यह तो बस एक उदाहरण के तौर पर था।"
उसने कुछ देर तक अपनी प्रश्नवाचक निगाहें मुझ पर टिकाए रखीं— शायद वह मेरे अपेंडिक्स के बारे में सोच रही थी।
तो खैर, मैं चाहती हूँ कि मेरे आस-पास के लोग अच्छे दिखें, भले ही इसके लिए मुझे खुद ही कीमत चुकानी पड़े। बस यही बात है। इसलिए चिंता मत कीजिए। मैं ये सब सिर्फ अपने लिए कर रही हूँ। मुझे गंदे कपड़ों से व्यक्तिगत तौर पर, लगभग शारीरिक रूप से, घृणा होती है।
“जिस तरह एक संगीतकार बेसुरा संगीत सुनना बर्दाश्त नहीं कर सकता?”
"ऐसा कुछ।"
"तो क्या आप अपने आस-पास के सभी लोगों के लिए इसी तरह कपड़े खरीदते हैं?"
“मुझे लगता है कि मैं करती हूँ। वैसे भी, मेरे आस-पास इतने सारे लोग नहीं हैं। मेरा मतलब है, हो सकता है कि मुझे उनके पहनावे पसंद न हों, लेकिन मैं दुनिया के सभी लोगों के लिए कपड़े तो खरीद नहीं सकती, है ना?”
मैंने कहा, "हर चीज की एक सीमा होती है।"
"बिल्कुल।"

•

कुछ ही देर में हमारी सलाद मेज पर आ गई और हमने उसे खाया। जैसा कि उस महिला ने बताया था, हर सलाद में ड्रेसिंग की बस कुछ बूँदें ही थीं—इतनी कम कि उन्हें उंगलियों पर गिना जा सकता था।
“क्या आप मुझसे कुछ और पूछना चाहते हैं?” उसने पूछा।
मैंने कहा, "मैं आपका नाम जानना चाहूंगा। मेरा मतलब है, अगर आपका कोई नाम या ऐसा कोई नाम हो जिसे मैं इस्तेमाल कर सकूं तो यह मददगार होगा।"
कुछ पल तक वह मूली चबाती रही और कुछ नहीं बोली। फिर उसकी भौंहों के बीच गहरी झुर्री पड़ गई, मानो गलती से उसके मुंह में कुछ कड़वा आ गया हो। “तुम्हें मेरा नाम क्यों लेना है? मुझे यकीन है कि तुम मुझे कोई पत्र नहीं लिखोगे। नाम तो वैसे भी अप्रासंगिक हैं।”
"लेकिन अगर मुझे आपको पीछे से बुलाना पड़े, उदाहरण के लिए? उसके लिए मुझे आपका नाम चाहिए होगा।"
उसने अपना कांटा प्लेट में रखा और नैपकिन से अपना मुंह पोंछा। "मैं समझ गई," उसने कहा। "यह बात मेरे दिमाग में कभी नहीं आई। वैसे, आप सही कह रहे हैं। ऐसी स्थिति में आपको शायद मेरे नाम की ज़रूरत पड़ सकती है।"
वह काफी देर तक सोचती रही। जब वह सोच रही थी, मैंने अपना सलाद खाया।
"चलिए देखते हैं: आपको एक ऐसा उपयुक्त नाम चाहिए जिसका इस्तेमाल आप मुझे पीछे से बुलाने जैसी चीजों के लिए कर सकें, है ना?"
"कि यह बहुत सुंदर है।"
"तो जरूरी नहीं कि यह मेरा असली नाम ही हो, है ना?"
मेंने सिर हिलाया।
“एक नाम, एक नाम… किस तरह का नाम सबसे अच्छा रहेगा?”

“कुछ सरल, कुछ ऐसा जिसे आसानी से बोला जा सके, मैं यही सोचूंगा। अगर संभव हो तो, कुछ ठोस, कुछ वास्तविक, कुछ ऐसा जिसे आप सचमुच छू और देख सकें। इस तरह, इसे याद रखना आसान होगा।”
"उदाहरण के लिए?"
उदाहरण के लिए, मैं अपनी बिल्ली को मैकरेल कहता हूँ। दरअसल, मैंने उसका नाम कल ही रखा है।
“मैकरेल,” उसने ज़ोर से कहा, मानो शब्द की ध्वनि की पुष्टि कर रही हो। फिर उसने मेज पर रखे नमक और काली मिर्च के डिब्बों को कुछ देर तक देखा, अपना चेहरा मेरी ओर उठाया और बोली, “जायफल।” "जायफल?"
“यह अचानक मेरे दिमाग में आया। अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो आप मुझे इसी नाम से बुला सकते हैं।”
“नहीं, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। तो मैं आपके बेटे का क्या नाम रखूँ?”
"दालचीनी।"
मैंने मधुर स्वर में कहा, "अजवाइन, सेज, रोजमेरी और थाइम।" “जायफल अकासाका और दालचीनी अकासाका। बुरा नहीं है, है ना?” जायफल अकासाका और दालचीनी अकासाका: अगर मे कासाहारा को पता चलता कि मेरी ऐसे लोगों से जान-पहचान हो गई है, तो वह कितनी हैरान होती! "भगवान के लिए, मिस्टर विंड-अप बर्ड, आप कभी थोड़े सामान्य लोगों से दोस्ती क्यों नहीं करते?" वाकई, क्यों नहीं, मे कासाहारा? यह एक ऐसा सवाल था जिसका जवाब मैं कभी नहीं दे सकता था।
मैंने कहा, “अब याद आया, पिछले साल मेरी मुलाकात माल्टा कानो और क्रेता कानो नाम की दो महिलाओं से हुई थी। जिसके परिणामस्वरूप,

मेरे साथ कई तरह की घटनाएं घटीं। हालांकि, अब उनमें से कोई भी जीवित नहीं है।”
जायफल ने हल्के से सिर हिलाया लेकिन जवाब में कोई राय नहीं दी। मैंने धीमी आवाज़ में कहा, "वे कहीं गायब हो गए। जैसे गर्मी की सुबह की ओस।" या जैसे भोर में कोई तारा।
उसने चिकोरी जैसी दिखने वाली किसी चीज़ को कांटे से उठाकर अपने मुंह में डाला। फिर, मानो उसे बहुत पहले किया गया कोई वादा अचानक याद आ गया हो, उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और पानी पी लिया। “क्या आप उस पैसे के बारे में नहीं जानना चाहते? वह पैसा जो आपको परसों मिला था? क्या मैं गलत हूँ?”
“नहीं, आप गलत नहीं हैं। मैं इसके बारे में जानना चाहूंगा।” मुझे आपको बताने में कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन यह बहुत लंबी कहानी हो सकती है।
"ऐसा कार्यक्रम जो मिठाई के साथ समाप्त हो?"
"शायद नहीं," नटमेग अकासाका ने कहा।

फांसी के घर का रहस्य

•

सेतागाया, टोक्यो: फांसी के घर का रहस्य
परिवार में आत्महत्या के बाद किसने मनहूस जमीन खरीदी? पॉश इलाके में क्या चल रहा है?
[द वीकली से, 7 अक्टूबर]

स्थानीय लोग सेतागाया के 2-चोमे में स्थित इस भूखंड को "फांसी का घर" कहते हैं। एक शांत आवासीय क्षेत्र में स्थित, दक्षिण दिशा की ओर मुख वाली यह 3,500 वर्ग फुट की प्रमुख संपत्ति घर बनाने के लिए लगभग आदर्श स्थान है, लेकिन जानकार एक बात पर सहमत हैं: अगर आप इसे उन्हें मुफ्त में भी दें तो भी वे इसे नहीं लेंगे। और इसका कारण सरल है: इस संपत्ति के हर ज्ञात मालिक का अंत दुखद हुआ है। हमारी जांच से पता चला है कि 1926 में शोवा काल की शुरुआत से लेकर अब तक, इस संपत्ति के कम से कम सात मालिकों ने आत्महत्या कर ली है, जिनमें से अधिकांश ने फांसी या दम घुटने से अपनी जान गंवाई है।
[आत्महत्याओं से संबंधित विवरण यहां शामिल नहीं किए गए हैं]

फर्जी कंपनी ने मनहूस जमीन खरीदी
इन त्रासदियों की श्रृंखला में सबसे हालिया घटना कोजिरो मियावाकी [फोटो] के परिवार की हत्या-आत्महत्या है, जिसे संयोगवश घटित त्रासदी नहीं कहा जा सकता। मियावाकी गिंजा में स्थित अपने लंबे समय से स्थापित रूफटॉप ग्रिल रेस्तरां श्रृंखला के मालिक

थे। भारी कर्ज के चलते मियावाकी ने दो साल पहले अपने सभी रेस्तरां बेच दिए और दिवालियापन घोषित कर दिया। इसके बाद संगठित अपराध से जुड़े कई गैर-बैंक ऋणदाताओं ने उनका पीछा किया। अंततः, इस वर्ष जनवरी में, मियावाकी ने ताकामात्सु शहर के एक सराय में अपनी चौदह वर्षीय बेटी युकी का सोते समय बेल्ट से गला घोंट दिया। इसके बाद उन्होंने और उनकी पत्नी नात्सुको ने अपने साथ लाई रस्सियों से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मियावाकी की सबसे बड़ी बेटी, जो उस समय कॉलेज की छात्रा थी, अभी भी लापता है।
अप्रैल 1972 में जब मियावाकी ने वह संपत्ति खरीदी, तो उन्हें उस जगह से जुड़ी अशुभ अफवाहों की जानकारी थी, लेकिन उन्होंने उन्हें यह कहकर खारिज कर दिया, "ये महज़ संयोग थे।" ज़मीन खरीदने के बाद, उन्होंने लंबे समय से खाली पड़े मकान को तुड़वा दिया और ज़मीन को समतल करवाया। एहतियात के तौर पर, उन्होंने एक शिंटो पुजारी को बुलाया ताकि वहां मंडरा रही किसी भी बुरी आत्मा को भगाया जा सके, और उसके बाद ही उन्होंने अपना नया, दो मंजिला घर बनवाया। उसके बाद सब कुछ ठीक रहा। परिवार शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा था। पड़ोसियों का भी यही मानना है कि मियावाकी का घर सामंजस्यपूर्ण दिखता था, बेटियां होशियार और खुशमिजाज थीं। लेकिन दस साल बाद, परिवार की किस्मत अचानक एक भयानक मोड़ पर आ गई।
मियावाकी ने 1983 की शरद ऋतु में अपना वह घर खो दिया, जिसे उन्होंने गिरवी रखा था। लेकिन उनके लेनदारों के बीच मुआवजे के क्रम को लेकर चल रहे विवाद के कारण इसका अंतिम निपटान तब तक रुका रहा जब तक कि पिछली गर्मियों में अदालत की मध्यस्थता से एक समझौता नहीं हो गया, जिसने जमीन की बिक्री का रास्ता खोल दिया।

इसे शुरू में टोक्यो की एक प्रमुख रियल एस्टेट कंपनी, लैंड एंड बिल्डिंग्स ने मौजूदा बाजार मूल्य से काफी कम कीमत पर खरीदा था। कंपनी ने मियावाकी के घर को ध्वस्त कर दिया और इसे खाली जमीन के रूप में बेचने की कोशिश की। सेतागाया की एक प्रमुख संपत्ति होने के कारण, इसने बहुत रुचि आकर्षित की, लेकिन जब खरीदारों को जमीन से जुड़े अपशगुन के बारे में पता चला तो हर सौदा विफल हो गया। लैंड एंड बिल्डिंग्स के बिक्री विभाग के प्रमुख श्री एम के अनुसार:
“हां, हमने इस प्रॉपर्टी से जुड़ी कुछ बुरी कहानियां तो सुनी ही थीं, लेकिन आखिरकार यह एक बेहतरीन जगह है, और आजकल हर कोई प्राइम रियल एस्टेट के लिए इतना बेताब है, तो हमने सोचा कि अगर हम कीमत काफी कम रखेंगे तो कोई न कोई इसे खरीद ही लेगा। हम आशावादी थे। जब से हमने इसे बाजार में उतारा है, इसकी कीमत में कोई बदलाव नहीं आया है। लोगों को कीमत की परवाह नहीं है—वे कहानियां सुनते ही पीछे हट जाते हैं। और समय भी कितना खराब था! बेचारे मियावाकी परिवार ने जनवरी में आत्महत्या कर ली, और सभी समाचार रिपोर्टों में इस जमीन का जिक्र था। सच कहूं तो, हमें समझ नहीं आ रहा था कि हम इसका क्या करें।”
आखिरकार इस साल अप्रैल में वह ज़मीन बिक गई। श्री एम कहते हैं, "कृपया मुझसे खरीदार या कीमत के बारे में न पूछें," इसलिए ज़्यादा जानकारी मिलना मुश्किल है, लेकिन रियल एस्टेट जगत में फैली अफवाहों के अनुसार, लैंड एंड बिल्डिंग्स को इसे तय कीमत से काफी कम में बेचना पड़ा। बेहतर था कि थोड़ा नुकसान उठा लिया जाए, बजाय इसके कि उस संपत्ति पर बैंक को ब्याज चुकाते रहें जो कभी बिकती ही नहीं। श्री एम कहते हैं, "खरीदारों को पता था कि वे क्या खरीद रहे हैं। हम अपने ग्राहकों को धोखा नहीं देते। हमने

उन्हें सब कुछ पहले ही समझा दिया था। उन्होंने उस जगह के पूरे इतिहास को जानते हुए ही उसे खरीदा।"
इससे हमारे सामने यह सवाल खड़ा होता है कि ऐसी मनहूस ज़मीन कौन खरीदना चाहेगा। हमारी जाँच-पड़ताल हमारी कल्पना से कहीं ज़्यादा मुश्किल साबित हुई है। वार्ड कार्यालय के रजिस्टर के अनुसार, खरीदार मिनाटो वार्ड में स्थित अकासाका रिसर्च नाम की एक कंपनी है, जो खुद को "आर्थिक अनुसंधान और परामर्श" का काम करने वाली कंपनी बताती है। ज़मीन खरीदने का उनका मकसद "कंपनी के आवास का निर्माण" बताया गया है। दरअसल, यह "कंपनी का आवास" इसी वसंत में बनकर तैयार हो गया, लेकिन कंपनी खुद एक आम "कागज़ी कंपनी" है। हमने दस्तावेज़ों में दर्ज अकासाका 2-चोमे के पते पर जाकर देखा, लेकिन वहाँ एक छोटे से अपार्टमेंट की इमारत के दरवाज़े पर सिर्फ़ "अकासाका रिसर्च" की एक छोटी सी पट्टिका मिली और घंटी बजाने पर भी किसी ने जवाब नहीं दिया।

कड़ी सुरक्षा और गोपनीयता
वर्तमान "पूर्व मियावाकी निवास" के चारों ओर की दीवार पड़ोस की किसी भी अन्य इमारत से कहीं अधिक ऊंची है। इसमें झाँकने से रोकने के लिए एक विशाल, ठोस, काले लोहे की बाड़ लगाई गई है (फोटो देखें) और गेट के खंभे के ऊपर एक वीडियो कैमरा लगा है। हमने घंटी बजाने की कोशिश की, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। पड़ोसियों ने बिजली का गेट खुलते और रंगीन खिड़कियों वाली एक काली मर्सिडीज 500SEL को दिन में कई बार अंदर-बाहर आते-जाते देखा है, लेकिन अंदर आने-जाने का कोई और संकेत नहीं मिला है, और उस जगह से कभी कोई आवाज नहीं आती है।

निर्माण कार्य मई में शुरू हुआ, लेकिन हमेशा ऊंची बाड़ के पीछे ही रहा, इसलिए पड़ोसियों को घर के बारे में कोई जानकारी नहीं है। इसका निर्माण अविश्वसनीय गति से हुआ: शुरू से अंत तक ढाई महीने में। निर्माण स्थल पर दोपहर का भोजन पहुंचाने वाले एक स्थानीय खानपान सेवा प्रदाता ने हमें बताया: “इमारत हमेशा एक कैनवास की स्क्रीन के पीछे छिपी रहती थी, इसलिए मैं ठीक से बता नहीं सकता, लेकिन यह कोई बड़ा घर नहीं था—सिर्फ एक मंजिल का, कंक्रीट के डिब्बे जैसा, बिल्कुल सादा। मुझे याद है कि मुझे लगा था कि वे किसी तरह का हवाई हमले से बचाव का आश्रय बना रहे हैं। यह आम लोगों के रहने वाले आम घरों जैसा नहीं दिखता था—बहुत छोटा और खिड़कियां भी कम थीं। लेकिन यह कोई दफ्तर की इमारत भी नहीं थी। स्थानीय लोगों ने आकर पूरे परिसर में कुछ बेहद खूबसूरत पेड़ लगाए। आंगन पर शायद बहुत पैसा खर्च हुआ होगा।” हमने टोक्यो की हर बड़ी लैंडस्केपिंग कंपनी को फोन करने की कोशिश की, आखिरकार हमें वो कंपनी मिल गई जिसने "मियावाकी के पुराने घर" पर काम किया था, लेकिन मालिक हमें उस कंपनी के बारे में कुछ नहीं बता सका जिसने काम का ऑर्डर दिया था। निर्माण कंपनी ने उन्हें बगीचे का नक्शा और अच्छी तरह से विकसित, सुडौल पेड़ों का एक अच्छा समूह लगाने के लिखित आदेश दिए थे। "हमारी बोली ऊंची थी, लेकिन उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया और कभी मोलभाव करने की कोशिश नहीं की।"
लैंडस्केपर ने हमें यह भी बताया कि जब वे बगीचे में काम कर रहे थे, उसी दौरान एक कुआं खोदने वाली कंपनी को बुलाया गया और उसने एक गहरा कुआं खोदा।
“उन्होंने बगीचे के एक कोने में मिट्टी निकालने के लिए मचान बनाया। मैं पास ही में एक खजूर का पेड़ लगा रहा था, इसलिए मुझे

काम देखने का अच्छा मौका मिला। वे एक पुराने, भरे हुए कुएं को खोद रहे थे। उसमें अभी भी कंक्रीट की पाइप लगी हुई थी। उन्हें काम में आसानी हो रही थी, क्योंकि उसे कुछ ही समय पहले भरा गया था। अजीब बात यह है कि उन्हें पानी नहीं मिला। मतलब, वह कुआँ पहले से ही सूखा था, और वे उसे उसकी मूल स्थिति में ला रहे थे, इसलिए पानी मिलने की कोई उम्मीद ही नहीं थी। पता नहीं, यह अजीब था, जैसे उनके ऐसा करने के पीछे कोई खास वजह हो।”
दुर्भाग्यवश, हम कुआँ खोदने वाली कंपनी का पता नहीं लगा पाए हैं, लेकिन हमें यह जानकारी मिली है कि मर्सिडीज 500SEL चियोडा वार्ड में मुख्यालय वाली एक प्रमुख लीजिंग कंपनी की संपत्ति है और इस वाहन को मिनाटो वार्ड की एक कंपनी ने जुलाई से एक वर्ष के लिए लीज पर लिया था। लीजिंग कंपनी ने हमें अपने ग्राहक की पहचान नहीं बताई, लेकिन घटनाओं के क्रम को देखते हुए, यह लगभग निश्चित रूप से अकासाका रिसर्च कंपनी है। हम यह भी बताना चाहेंगे कि मर्सिडीज 500SEL के लिए अनुमानित वार्षिक लीजिंग शुल्क ——— येन है। कंपनी हर कार के साथ ड्राइवर की सुविधा देती है, लेकिन हम यह पता नहीं लगा पाए हैं कि इस विशेष 500SEL के साथ ड्राइवर था या नहीं।
आस-पड़ोस के लोग "फांसी वाले घर" के बारे में हमसे बात करने को उत्सुक नहीं थे। यह इलाका अपने मेलजोल के लिए मशहूर नहीं है, और ज़्यादातर लोग शायद इसमें शामिल नहीं होना चाहते। स्थानीय निवासी श्री ए ने हमसे कहा:
“जब वे पहली बार यहाँ आए थे, तब मैं उन पर नज़र रखता था और उन्हें समझने की कोशिश करता था, लेकिन मुझे यकीन है कि ये कोई गुंडे या राजनीतिक संगठन नहीं हैं। यहाँ इतने कम लोग आते-जाते हैं कि ऐसा हो ही नहीं सकता। मुझे समझ नहीं आ रहा। यह सच है कि वे सुरक्षा

के कुछ बेहतरीन इंतज़ाम करते हैं, लेकिन मुझे शिकायत करने का कोई कारण नहीं है, और मुझे नहीं लगता कि बाकी पड़ोसियों को भी कोई चिंता है। यह उस खाली घर से कहीं बेहतर है जिसके बारे में अजीबोगरीब अफवाहें फैली रहती थीं।”
फिर भी, हम यह जानना चाहेंगे कि नया मालिक कौन है और यह "मिस्टर एक्स" इस जगह का इस्तेमाल किसलिए कर रहा है। रहस्य और भी गहराता जा रहा है।

कुएँ में

•

मैं कुएँ के किनारे लगी स्टील की सीढ़ी से नीचे उतरता हूँ, और नीचे अंधेरे में, उस चमगादड़ को महसूस करने की कोशिश करता हूँ जिसे मैं हमेशा दीवार के सहारे छोड़ देता हूँ—वही चमगादड़ जिसे मैं लगभग अनजाने में उस घर से अपने साथ ले आया था जहाँ मैं गिटार केस वाले आदमी का पीछा कर रहा था। कुएँ के नीचे अंधेरे में उस पुराने, ज़ख्मी चमगादड़ को छूने से मुझे एक अजीब सी शांति का एहसास होता है। इससे मुझे ध्यान केंद्रित करने में भी मदद मिलती है।
जब मुझे बल्ला मिलता है, तो मैं उसके हैंडल को कसकर पकड़ लेता हूँ, ठीक वैसे ही जैसे कोई बेसबॉल खिलाड़ी बैटिंग बॉक्स में प्रवेश करता है, और खुद को यकीन दिलाता हूँ कि यही मेरा बल्ला है। फिर मैं यह जाँचने लगता हूँ कि इस अँधेरे में, जहाँ कुछ भी दिखाई नहीं देता, कुछ बदला तो नहीं है। मैं ध्यान से सुनता हूँ कि कहीं कोई नई आवाज़ तो नहीं आ रही; मैं गहरी साँस लेता हूँ; मैं अपने जूते के तलवे से ज़मीन को रगड़ता हूँ; मैं बल्ले की नोक से दीवार पर हल्के-हल्के थपथपाकर उसकी कठोरता जाँचता हूँ। ये सब बस मुझे शांत करने के लिए किए जाने वाले कुछ अनुष्ठान हैं। कुएँ की तलहटी समुद्र की तलहटी जैसी है। यहाँ की चीज़ें एकदम स्थिर रहती हैं, अपने मूल रूप में बनी रहती हैं, मानो किसी भारी दबाव में हों, और दिन-प्रतिदिन अपरिवर्तित रहती हैं।
मेरे ऊपर आसमान में प्रकाश की एक गोल सी किरण तैर रही है: शाम का आकाश। ऊपर देखते हुए, मैं अक्टूबर की शाम की दुनिया के बारे में सोचता हूँ, जहाँ "लोग" अपने जीवन में व्यस्त होंगे। उस हल्की

शरद ऋतु की रोशनी में, वे सड़कों पर चल रहे होंगे, दुकान से सामान खरीदने जा रहे होंगे, खाना बना रहे होंगे, घर जाने के लिए ट्रेन पकड़ रहे होंगे। और वे सोचते होंगे—अगर वे सोचते भी हों — कि ये बातें इतनी स्वाभाविक हैं कि इनके बारे में सोचने की ज़रूरत ही नहीं, ठीक वैसे ही जैसे मैं पहले सोचता था (या नहीं सोचता था)। वे अस्पष्ट रूप से परिभाषित "लोग" हैं, और मैं कभी उनमें से एक गुमनाम था। स्वीकार करते हुए और स्वीकारे जाते हुए, वे उस प्रकाश के नीचे एक-दूसरे के साथ रहते हैं, और चाहे वह प्रकाश हमेशा के लिए रहे या क्षण भर के लिए, जब तक वे उस प्रकाश में डूबे रहते हैं, उनके बीच एक तरह की निकटता अवश्य होती है। हालाँकि, अब मैं उनमें से एक नहीं हूँ। वे ऊपर, धरती पर हैं; मैं यहाँ नीचे, एक कुएँ की तलहटी में हूँ। प्रकाश उनके पास है, जबकि मैं उसे खोने की प्रक्रिया में हूँ। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि मैं शायद उस दुनिया में कभी वापस न जा पाऊँ, शायद मैं फिर कभी प्रकाश में घिरे होने की शांति का अनुभव न कर पाऊँ, शायद मैं फिर कभी बिल्ली के कोमल शरीर को अपनी बाहों में न थाम पाऊँ। और फिर मुझे सीने में एक हल्का दर्द महसूस होता है, मानो अंदर कुछ मर रहा हो।
लेकिन जैसे ही मैं अपने टेनिस शू के रबर के तले से कुएँ की तलहटी की नरम मिट्टी खोदता हूँ, धरती की सतह के दृश्य और भी दूर होते चले जाते हैं। वास्तविकता का एहसास धीरे-धीरे कम होता जाता है, और कुएँ की निकटता मुझे अपने घेरे में ले लेती है। यहाँ, कुआँ गर्म और शांत है, और भीतरी मिट्टी की कोमलता मेरी त्वचा को सहलाती है। मेरे भीतर का दर्द पानी की लहरों की तरह गायब हो जाता है। यह जगह मुझे अपना लेती है, और मैं इस जगह को अपना लेता

में फूलों का एक बड़ा गुलदस्ता रखा है, और हवा उनकी मोहक खुशबू से भरी है। प्रवेश द्वार के पास एक बड़ा सा फ्लोर लैंप रखा है, लेकिन उसका बल्ब सुबह के चांद की तरह सफेद और बेजान है। फिर भी, अगर मैं ध्यान से देखूं, तो कुछ देर बाद कमरे में आने वाली हल्की रोशनी में चीजों की आकृतियां धुंधली-धुंधली दिखाई देने लगती हैं, ठीक वैसे ही जैसे सिनेमा हॉल के अंधेरे में आंखें अभ्यस्त हो जाती हैं। कमरे के बीच में छोटी सी मेज पर कटी सार्क की एक बोतल रखी है, जिसमें थोड़ी सी ही शराब बची है। बर्फ की बाल्टी में बर्फ के नए टुकड़े हैं (उनके साफ, सख्त किनारों से ऐसा लगता है), और किसी ने वहां रखे गिलास में स्कॉच ऑन द रॉक्स बनाया है। मेज पर स्टेनलेस स्टील की ट्रे रखी है, जो एकदम ठंडी है। समय का अंदाजा लगाना नामुमकिन है। सुबह हो सकती है, शाम हो सकती है या आधी रात भी हो सकती है। या शायद इस जगह का कोई समय ही नहीं है। सुइट के पिछले हिस्से में बिस्तर पर एक महिला लेटी है। मुझे चादरों में उसकी करवट सुनाई देती है। उसके गिलास में बर्फ की मधुर खनक सुनाई देती है। हवा में तैरते पराग के छोटे-छोटे कण उस ध्वनि के साथ कांपते हैं, मानो जीवित प्राणी हों। हवा में ध्वनि की हर छोटी सी लहर उनमें से कुछ को अचानक जीवंत कर देती है। हल्का अंधेरा पराग के लिए खुल जाता है, और पराग अंदर समाकर अंधेरे का घनत्व बढ़ा देता है। महिला व्हिस्की का गिलास अपने होठों तक लाती है, कुछ बूंदें अपने गले से नीचे उतरने देती है, और फिर मुझसे बात करने की कोशिश करती है। शयनकक्ष अंधेरा है।
मुझे परछाइयों की हल्की हलचल के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता।
लेकिन उसे मुझसे कुछ कहना है। मैं उसके बोलने का इंतजार करता हूँ। मैं उसके शब्दों को सुनने का इंतजार करता हूँ।
वो वहां थे।

•

आवाज़ ने उस रास्ते को पूरी तरह बंद कर दिया जो मेरे लिए धीरे- धीरे आकार लेने लगा था।
ऐसा हर बार होता है।

•

एक बार फिर मैं अपने ही शरीर में हूँ, कुएँ की तलहटी में बैठा हूँ, मेरी पीठ दीवार से लगी है, मेरे हाथ बेसबॉल बैट को कसकर पकड़े हुए हैं। "इस तरफ" की दुनिया का स्पर्श धीरे-धीरे मेरे हाथों में लौटता है, जैसे कोई छवि स्पष्ट होती है। मैं अपनी हथेलियों पर पसीने की हल्की नमी महसूस करता हूँ। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा है। मेरे कानों में उस कठोर, दुनिया को चीर देने वाली दस्तक की आवाज़ गूंज रही है, और मैं अंधेरे में दरवाज़े की मूठ के धीरे-धीरे घूमने की आवाज़ भी सुन सकता हूँ। बाहर कोई (या कुछ) दरवाज़ा खोल रहा है, चुपचाप अंदर आने की तैयारी कर रहा है, लेकिन ठीक उसी क्षण, सारी छवियाँ गायब हो जाती हैं। दीवार पहले की तरह ही कठोर है, और मैं वापस इस तरफ आ गिरता हूँ।
अंधेरे में, मैं बल्ले के सिरे से अपने सामने की दीवार पर थपथपाता हूँ—वही कठोर, ठंडी कंक्रीट की दीवार। मैं सीमेंट के एक सिलेंडर में घिरा हुआ हूँ। लगभग पहुँच ही गया था, मैं खुद से कहता हूँ। मैं करीब पहुँच रहा हूँ। मुझे पूरा यकीन है। किसी न किसी पल, मैं इस बाधा को तोड़कर "अंदर" पहुँच जाऊँगा। मैं कमरे में घुस जाऊँगा और वहाँ खड़ा रहूँगा, तैयार, जब दस्तक होगी। लेकिन ऐसा होने में कितना समय लगेगा? और मेरे पास कितना समय बचा है?
साथ ही, मुझे डर भी है कि ऐसा सचमुच हो जाएगा। क्योंकि तब मुझे उस चीज़ का सामना करना पड़ेगा जो वहाँ होनी ही है।

[illegible]

चिड़ियाघर पर हमला (या, एक भद्दा नरसंहार)

•

नटमेग अकासाका ने अगस्त 1945 की भीषण गर्मी में सैनिकों द्वारा मारे गए बाघों, तेंदुओं, भेड़ियों और भालुओं की कहानी सुनाई। उन्होंने एक स्पष्ट और सुव्यवस्थित तरीके से वर्णन किया, मानो किसी सफेद स्क्रीन पर कोई वृत्तचित्र चल रहा हो। उन्होंने कुछ भी अस्पष्ट नहीं छोड़ा। हालांकि, उन्होंने स्वयं उस दृश्य को अपनी आँखों से नहीं देखा था। जब यह घटना घट रही थी, तब वह मंचूरिया से शरणार्थियों को जापान वापस ले जा रहे एक जहाज के डेक पर खड़ी थीं। उन्होंने वास्तव में जो देखा था, वह एक अमेरिकी पनडुब्बी का सतह पर आना था।
बाकी सब लोगों की तरह, वह और दूसरे बच्चे भी जहाज़ के निचले हिस्से की असहनीय भाप से बचने के लिए डेक की रेलिंग से टेक लगाकर शांत, निर्मल समुद्र पर बहने वाली हल्की हवाओं का आनंद लेने के लिए ऊपर आ गए थे, तभी अचानक पनडुब्बी किसी सपने की तरह सतह पर तैरने लगी। सबसे पहले एंटीना, रडार बीकन और पेरिस्कोप पानी की सतह पर दिखाई दिए। फिर कॉनिंग टावर ऊपर आया, पानी को चीरते हुए लहरें बनाता हुआ। और अंत में, स्टील का पूरा तगड़ा ढांचा गर्मी के सूरज के सामने अपनी सुंदर नग्नता को प्रकट कर गया। हालाँकि रूप और आकार में वह चीज़ एक पनडुब्बी के अलावा कुछ और नहीं हो सकती थी, फिर भी वह किसी प्रतीकात्मक चिन्ह या समझ से परे रूपक की तरह लग रही थी।
पनडुब्बी कुछ देर तक जहाज के समानांतर चलती रही, मानो अपने शिकार का पीछा कर रही हो। जल्द ही एक हैच खुला, और एक-एक करके चालक दल के सदस्य धीरे-धीरे, लगभग सुस्ती से डेक पर चढ़ गए।

कॉनिंग टॉवर डेक से, अधिकारियों ने विशाल दूरबीनों से परिवहन जहाज के हर विवरण का निरीक्षण किया, जिनके लेंस सूर्य के प्रकाश में बार-बार चमक रहे थे। परिवहन जहाज जापान लौट रहे नागरिकों से भरा हुआ था, उनका गंतव्य सासेबो बंदरगाह था। इनमें से अधिकांश महिलाएं और बच्चे थे, जो कठपुतली मंचुकुओ सरकार में जापानी अधिकारियों और जापानी स्वामित्व वाली दक्षिण मंचूरिया रेलवे के उच्च पदस्थ अधिकारियों के परिवार थे, जो युद्ध में जापान की आसन्न हार के बाद उत्पन्न होने वाली अराजकता से बचने के लिए अपने वतन भाग रहे थे। अपरिहार्य भयावहता का सामना करने के बजाय, वे खुले समुद्र में अमेरिकी पनडुब्बी के हमले का जोखिम उठाने को तैयार थे—कम से कम अभी तक तो।

•

पनडुब्बी के अधिकारी यह जाँच रहे थे कि परिवहन जहाज निहत्था है और उसके साथ कोई नौसैनिक सुरक्षा दल तो नहीं है। उन्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं थी। अब वायु सेना पर भी अमेरिकियों का पूर्ण नियंत्रण था। ओकिनावा पर कब्ज़ा हो चुका था, और जापानी धरती पर शायद ही कोई लड़ाकू विमान बचा था। घबराने की कोई ज़रूरत नहीं थी: समय उनके पक्ष में था। एक छोटे अधिकारी ने आदेश दिए, और तीन नाविकों ने डेक गन को घुमाने वाले हैंडल को तब तक घुमाया जब तक कि वह परिवहन जहाज की ओर लक्षित नहीं हो गई। दो अन्य नाविकों ने पिछले डेक का हैच खोला और भारी गोले ऊपर खींचकर तोप में डाले। नाविकों का एक और दस्ता, सधे हुए अंदाज़ में, एक मशीन गन लोड कर रहा था जिसे उन्होंने कॉनिंग टॉवर के पास डेक के एक ऊँचे हिस्से पर रखा था। हमले की तैयारी कर रहे सभी नाविकों ने लड़ाकू हेलमेट पहने हुए थे, हालाँकि उनमें से कुछ कमर से ऊपर नग्न थे और लगभग आधे ने शॉर्ट्स पहने हुए थे। अगर नटमेग उन्हें ध्यान से देखती,

कमांड टावर पर सफेद रंग से लिखे अंक देखे। उसने उसके ऊपर घूमते हुए रडार एंटीना को देखा। उसने काले चश्मे पहने सुनहरे बालों वाले अधिकारी को देखा। उसने सोचा, यह पनडुब्बी समुद्र की गहराई से हम सबको मारने आई है, लेकिन इसमें कुछ अजीब नहीं है, ऐसा कभी भी हो सकता है। इसका युद्ध से कोई लेना-देना नहीं है; यह किसी के साथ भी कहीं भी हो सकता है। हर कोई सोचता है कि यह युद्ध की वजह से हो रहा है। लेकिन यह सच नहीं है। युद्ध तो बस उन चीजों में से एक है जो हो सकती हैं।
पनडुब्बी और उसकी विशाल तोप के सामने खड़ी नटमेग को ज़रा भी डर नहीं लग रहा था। उसकी माँ उस पर चिल्ला रही थी, लेकिन उसके शब्द उसे समझ नहीं आ रहे थे। तभी उसे महसूस हुआ कि किसी ने उसकी कलाई पकड़ ली है और खींच रही है। लेकिन उसके हाथ रेलिंग पर ही जमे रहे। उसके चारों ओर की आवाज़ें धीरे-धीरे दूर होती जा रही थीं, मानो कोई रेडियो की आवाज़ कम कर रहा हो। मुझे बहुत नींद आ रही है, उसने सोचा। बहुत नींद आ रही है। मुझे इतनी नींद क्यों आ रही है? उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, और उसकी चेतना तेज़ी से दूर चली गई, डेक को बहुत पीछे छोड़ते हुए।

•

नटमेग ने विशाल चिड़ियाघर में जापानी सैनिकों को घूमते हुए देखा, जो किसी भी ऐसे जानवर को गोली मार रहे थे जो इंसानों पर हमला कर सकता था। अधिकारी ने आदेश दिया और मॉडल 38 राइफलों की गोलियां बाघ की चिकनी खाल को चीरती हुई उसकी आंतों को चीर गईं। गर्मी का आसमान नीला था और आसपास के पेड़ों से झींगुरों की चीखें अचानक बारिश की तरह बरस रही थीं।
सैनिक चुप थे। उनके झुलसे हुए चेहरों से खून गायब हो चुका था, जिससे वे प्राचीन कलशों पर चित्रित चित्रों जैसे लग रहे थे।

कर लिया और भयंकर प्रतिरोध किया, लेकिन पीछे से समर्थन न मिलने के कारण, सोवियत संघ की भारी गोलाबारी के आगे वे नष्ट हो गए। जनरल स्टाफ के सदस्यों और अन्य उच्च पदस्थ अधिकारियों ने कोरियाई सीमा के पास टोंगहुआ में स्थित नए मुख्यालय में अपना "स्थानांतरण" करवा लिया, और कठपुतली सम्राट हेनरी पु-यी और उनका परिवार अपना सामान समेटकर निजी ट्रेन से राजधानी से भाग निकले। मांचुकुओ सेना में तैनात अधिकांश चीनी सैनिक, जिन्हें राजधानी की रक्षा का जिम्मा सौंपा गया था, सोवियत संघ के आक्रमण की खबर सुनते ही भाग गए या फिर उन्होंने विद्रोह कर दिया और अपने जापानी कमांडिंग अधिकारियों को गोली मार दी। उनका इरादा श्रेष्ठ सोवियत सैनिकों के खिलाफ संघर्ष में जापान के लिए अपनी जान कुर्बान करने का नहीं था।
इन परस्पर संबंधित घटनाक्रमों के परिणामस्वरूप, मांचुकुओ की राजधानी, जिसे आधुनिक जापानी राज्य ने "विशेष नई राजधानी, ह्सिन-चिंग" के रूप में स्थापित करने के लिए अपनी प्रतिष्ठा दांव पर लगा दी थी, एक विचित्र राजनीतिक शून्य में लटक गई। अनावश्यक अराजकता और रक्तपात से बचने के लिए, मांचुकुओ के उच्च पदस्थ चीनी अधिकारियों ने तर्क दिया कि ह्सिन-चिंग को एक खुला शहर घोषित कर दिया जाए और बिना सशस्त्र प्रतिरोध के आत्मसमर्पण कर दिया जाए, लेकिन क्वांगतुंग सेना ने इसे अस्वीकार कर दिया। चिड़ियाघर भेजे गए सैनिकों ने अपना भाग्य स्वीकार कर लिया था। उन्हें लगा कि कुछ ही दिनों में वे सोवियत सेना से लड़ते हुए मर जाएंगे (हालांकि वास्तव में, निरस्त्रीकरण के बाद, उन्हें साइबेरिया की कोयला खदानों में काम करने के लिए भेजा जाएगा—और उनमें से तीन सैनिकों को तो वहीं मरने के लिए भेज दिया जाएगा)। वे बस यही प्रार्थना कर सकते थे कि उनकी मृत्यु अधिक दर्दनाक न

हो। उनमें से कोई भी धीमी गति से चलने वाले टैंक के पहियों के नीचे कुचलकर या ज्वाला प्रज्वलन यंत्रों की गर्मी में खाई में जलकर या पेट में गोली लगने से धीरे-धीरे मरना नहीं चाहता था। सिर या दिल में गोली लगना बेहतर था। लेकिन पहले उन्हें चिड़ियाघर के इन जानवरों को मारना था।

•

यदि संभव हो तो, उन्हें जानवरों को जहर देकर मारना था ताकि बची हुई कुछ गोलियां बचाई जा सकें। ऑपरेशन के प्रभारी युवा लेफ्टिनेंट को उनके वरिष्ठ अधिकारी ने यही निर्देश दिया था और बताया था कि चिड़ियाघर को काम पूरा करने के लिए पर्याप्त जहर मिल चुका है। लेफ्टिनेंट आठ पूरी तरह से हथियारों से लैस जवानों को लेकर मुख्यालय से बीस मिनट की पैदल दूरी पर स्थित चिड़ियाघर पहुंचे। सोवियत आक्रमण के बाद से चिड़ियाघर के द्वार बंद थे और दो सैनिक प्रवेश द्वार पर राइफलों पर संगीनें लगाए पहरा दे रहे थे। लेफ्टिनेंट ने उन्हें अपने आदेश दिखाए और अपने जवानों को अंदर ले गए।
चिड़ियाघर के निदेशक ने पुष्टि की कि उन्हें वास्तव में आपात स्थिति में हिंसक जानवरों को "खत्म" करने और जहर का इस्तेमाल करने का आदेश दिया गया था, लेकिन उन्होंने कहा कि जहर की खेप कभी नहीं पहुंची। यह सुनकर लेफ्टिनेंट हैरान रह गया। वह एक लेखाकार था, जिसे वेतन अधिकारी के कार्यालय में तैनात किया गया था, और मुख्यालय में अपने डेस्क से इस आपातकालीन कार्य के लिए बुलाए जाने से पहले, उसे कभी भी सैनिकों की टुकड़ी का नेतृत्व करने का जिम्मा नहीं सौंपा गया था। उसे अपनी दराज में अपनी पिस्तौल ढूंढनी पड़ी, जिसकी उसने वर्षों से कोई मरम्मत नहीं करवाई थी, और उसे यह भी यकीन नहीं था कि वह चलेगी भी या नहीं।

“लेफ्टिनेंट, नौकरशाही का काम हमेशा ऐसा ही होता है,” चिड़ियाघर के निदेशक ने कहा, जो उनसे कई साल बड़े थे और उन्होंने दया भाव से उनकी ओर देखा। “आपको जिन चीजों की जरूरत होती है, वे कभी उपलब्ध नहीं होतीं।”
मामले की और अधिक जांच करने के लिए, निदेशक ने चिड़ियाघर के मुख्य पशु चिकित्सक को बुलाया, जिसने लेफ्टिनेंट को बताया कि चिड़ियाघर में ज़हर की बहुत थोड़ी मात्रा थी, जो शायद घोड़े को मारने के लिए पर्याप्त नहीं थी। पशु चिकित्सक तीस वर्ष की आयु के आसपास का एक लंबा, सुंदर व्यक्ति था, जिसके दाहिने गाल पर एक बच्चे की हथेली के आकार का नीला-काला निशान था। लेफ्टिनेंट ने अनुमान लगाया कि यह निशान जन्म से ही था।
चिड़ियाघर निदेशक के कार्यालय से लेफ्टिनेंट ने मुख्यालय को फोन करके आगे के निर्देश मांगे, लेकिन सोवियत सेना द्वारा कुछ दिन पहले सीमा पार करने के बाद से क्वांगतुंग सेना मुख्यालय में घोर अफरा-तफरी मची हुई थी और अधिकांश उच्च पदस्थ अधिकारी गायब हो गए थे। बचे हुए कुछ अधिकारी व्यस्त थे, कुछ आंगन में महत्वपूर्ण दस्तावेजों के ढेर जला रहे थे तो कुछ सैनिकों को शहर के बाहरी इलाके में ले जाकर टैंक रोधी खाइयां खोद रहे थे। लेफ्टिनेंट को आदेश देने वाला मेजर कहीं नहीं मिल रहा था। इसलिए अब लेफ्टिनेंट को समझ नहीं आ रहा था कि उन्हें आवश्यक जहर कहां से मिलेगा। क्वांगतुंग सेना में जहर का प्रभारी कौन होगा? उनका फोन एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय में ट्रांसफर होता रहा, जब तक कि एक चिकित्सा कोर कर्नल ने फोन नहीं उठाया और लेफ्टिनेंट पर चिल्लाते हुए कहा, "अरे बेवकूफ! पूरा देश बर्बाद हो रहा है, और तुम मुझसे एक चिड़ियाघर के बारे में पूछ रहे हो?! मुझे क्या फर्क पड़ता है?"

लेफ्टिनेंट ने सोचा, आखिर कौन? निश्चित रूप से खुद लेफ्टिनेंट तो नहीं। निराश होकर उसने फोन काट दिया और जहर का भंडार जमा करने का विचार छोड़ दिया। अब उसके सामने दो विकल्प थे। या तो वह जानवरों को मारने का विचार छोड़ दे और अपने आदमियों को वहाँ से बाहर निकाल ले, या फिर वे गोलियों से काम तमाम कर दें। दोनों ही तरीके उसके आदेशों का उल्लंघन होते, लेकिन अंत में उसने गोली चलाने का फैसला किया। इस तरह, हो सकता है बाद में उसे कीमती गोला-बारूद बर्बाद करने के लिए फटकार मिले, लेकिन कम से कम खतरनाक जानवरों को "खत्म" करने का लक्ष्य तो पूरा हो जाता। दूसरी ओर, अगर वह जानवरों को नहीं मारता, तो आदेशों का पालन न करने के लिए उस पर कोर्ट-मार्शल हो सकता था। युद्ध के इस अंतिम चरण में कोर्ट-मार्शल होगा भी या नहीं, इस पर कुछ संदेह था, लेकिन आखिरकार, आदेश तो आदेश होते हैं। जब तक सेना अस्तित्व में है, उसके आदेशों का पालन करना ही होगा।
लेफ्टिनेंट ने पूरी ईमानदारी से मन ही मन कहा, "अगर मुमकिन हो तो मैं किसी भी जानवर को मारना नहीं चाहता।" लेकिन चिड़ियाघर में जानवरों को खिलाने के लिए चीज़ें कम पड़ रही थीं, और ज़्यादातर जानवर (खासकर बड़े जानवर) पहले से ही लंबे समय से भूख से मर रहे थे। हालात और भी बदतर हो सकते थे—या कम से कम सुधरने की कोई उम्मीद नहीं थी। जानवरों के लिए गोली मारना शायद ज़्यादा आसान होता—एक झटपट और साफ़ मौत। और अगर भूख से मरते जानवर भीषण लड़ाई या हवाई हमलों के दौरान शहर की सड़कों पर भाग निकले, तो तबाही होना नामुमकिन था।
डायरेक्टर ने लेफ्टिनेंट को चिड़ियाघर के नक्शे के साथ उन जानवरों की सूची सौंपी, जिन्हें "आपातकालीन रूप से नष्ट" किया जाना था। सूची उसे तैयार करने का निर्देश दिया गया था। गाल पर

निशान वाले पशु चिकित्सक और दो चीनी कर्मचारियों को फायरिंग दस्ते के साथ भेजा गया। लेफ्टिनेंट ने सूची पर नज़र डाली और यह देखकर राहत महसूस की कि यह उसकी कल्पना से छोटी थी। हालांकि, "नष्ट" किए जाने वाले जानवरों में दो भारतीय हाथी भी शामिल थे। हाथी? लेफ्टिनेंट ने भौंहें चढ़ाते हुए सोचा। हम हाथियों को कैसे मारेंगे?
चिड़ियाघर की बनावट को देखते हुए, सबसे पहले बाघों को मारना तय था। हाथियों को तो वैसे भी सबसे आखिर में मारना था। बाघों के पिंजरे पर लगी पट्टिका में लिखा था कि इन दोनों को मंचूरिया के ग्रेटर खिंगन पर्वतमाला में पकड़ा गया था। लेफ्टिनेंट ने प्रत्येक बाघ के लिए चार-चार आदमी तैनात किए और उन्हें दिल पर निशाना लगाने को कहा—दिल कहाँ है, यह उसके लिए एक और रहस्य था। खैर, कम से कम एक गोली तो निशाने पर लगनी ही थी। जब आठ आदमियों ने एक साथ अपनी मॉडल 38 पिस्तौल के लीवर खींचे और प्रत्येक चैंबर में एक कारतूस लोड किया, तो उस भयानक सूखी क्लिक की आवाज ने पूरे माहौल को बदल दिया। आवाज सुनते ही बाघ खड़े हो गए। लोहे की सलाखों के पार से सैनिकों को घूरते हुए, उन्होंने ज़ोरदार दहाड़ें मारीं। अतिरिक्त सावधानी के तौर पर, लेफ्टिनेंट ने अपनी स्वचालित पिस्तौल निकाली और सेफ्टी लॉक खोल दिया। खुद को शांत करने के लिए, उसने गला साफ किया। यह कुछ भी नहीं है, उसने खुद को समझाने की कोशिश की। हर कोई इस तरह के काम अक्सर करता रहता है।
सैनिक घुटनों के बल बैठ गए, सावधानीपूर्वक निशाना साधा और लेफ्टिनेंट के आदेश पर ट्रिगर दबा दिए। धमाके से उनके कंधे हिल गए और एक पल के लिए उनका दिमाग सुन्न हो गया, मानो कुछ धराशायी हो गया हो। एक साथ चली गोलियों की गर्जना सुनसान चिड़ियाघर में

गूंज उठी, इमारत से इमारत, दीवार से दीवार तक गूंजती हुई, जंगलों को चीरती हुई, पानी की सतहों को पार करती हुई, दूर की गड़गड़ाहट की तरह, जिसने भी इसे सुना उसके दिल में चुभ गई। जानवरों ने अपनी सांस रोक ली। यहां तक कि टिड्डियों ने भी आवाज करना बंद कर दिया। गोलियों की गूंज दूर तक सुनाई देने के काफी देर बाद, सन्नाटा छा गया। मानो किसी अदृश्य दानव ने उन्हें किसी भारी लाठी से मारा हो, बाघ एक पल के लिए हवा में उछले, फिर धड़ाम से पिंजरे के फर्श पर गिर पड़े, दर्द से तड़पते हुए, खून की उल्टी करते हुए। सैनिक एक ही बार में बाघों को खत्म करने में नाकाम रहे थे। अपनी तंद्रा से बाहर आकर, सैनिकों ने अपनी राइफलों के लीवर खींचे, खाली कारतूस बाहर निकाले और फिर से निशाना साधा।

•

लेफ्टिनेंट ने अपने एक आदमी को पिंजरे में यह सुनिश्चित करने के लिए भेजा कि दोनों बाघ मर चुके हैं। वे सचमुच मरे हुए लग रहे थे—आँखें बंद, दाँत बाहर निकले हुए, कोई हरकत नहीं। लेकिन यह सुनिश्चित करना ज़रूरी था। पशु चिकित्सक ने पिंजरा खोला, और युवा सैनिक (वह अभी बीस साल का हुआ था) डरते हुए अंदर दाखिल हुआ, अपनी संगीन को आगे बढ़ाते हुए। यह एक अजीब हरकत थी, लेकिन कोई हँसा नहीं। उसने अपने जूते की एड़ी से एक बाघ के पिछले हिस्से पर हल्का सा लात मारी। बाघ हिल नहीं पाया। उसने उसी जगह पर फिर से लात मारी, इस बार थोड़ा ज़ोर से। बाघ निस्संदेह मर चुका था। दूसरा बाघ (मादा) भी उतनी ही शांत पड़ी थी। युवा सैनिक ने अपने जीवन में कभी चिड़ियाघर नहीं देखा था, न ही उसने पहले कभी असली बाघ देखा था। शायद इसीलिए उसे यकीन नहीं हो रहा था कि वे एक असली, जीवित बाघ को मारने में कामयाब हो गए हैं। उसे बस यही महसूस हो रहा था कि उसे एक ऐसी जगह पर घसीटकर लाया गया है जिसका

उससे कोई लेना-देना नहीं है और वहाँ उससे एक ऐसा काम करवाया गया है जिसका उससे कोई संबंध नहीं है। काले खून के सागर में खड़ा होकर, वह मंत्रमुग्ध होकर बाघों के शवों को निहार रहा था। मरने के बाद वे जीवित अवस्था से कहीं अधिक बड़े दिख रहे थे। ऐसा क्यों था? उसने आश्चर्य से खुद से पूछा।
पिंजरे के कंक्रीट के फर्श पर बड़ी बिल्लियों के मूत्र की तीखी गंध फैली हुई थी, और उसमें खून की गर्म गंध भी मिली हुई थी। बाघों के शरीर में हुए छेदों से खून अभी भी बह रहा था, जिससे उसके पैरों के आसपास एक चिपचिपा काला तालाब बन गया था। अचानक, उसके हाथों में राइफल भारी और ठंडी लगने लगी। वह उसे फेंक देना चाहता था, झुकना चाहता था, और अपने पेट का सारा खाना फर्श पर उल्टी कर देना चाहता था। कितनी राहत मिलती! लेकिन उल्टी करना नामुमकिन था—स्क्वाड लीडर उसका चेहरा बुरी तरह पीट देता। (बेशक, इस सैनिक को यह बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि सत्रह महीने बाद उसकी मौत हो जाएगी जब इरकुत्स्क के पास एक खदान में तैनात सोवियत गार्ड फावड़े से उसकी खोपड़ी चीर देगा।) उसने अपनी कलाई के पिछले हिस्से से माथे का पसीना पोंछा। उसका हेलमेट उस पर भारी पड़ रहा था। एक टिड्डा, फिर दूसरा, फिर से रोने लगा, मानो आखिरकार उसे जीवन मिल गया हो। जल्द ही उनकी आवाज़ों में एक पक्षी की आवाज़ भी शामिल हो गई—अजीबोगरीब विशिष्ट आवाज़ें, जैसे किसी स्प्रिंग के खुलने की आवाज़: क्रीक। क्रीक! बारह साल की उम्र में वह नौजवान सैनिक अपने माता-पिता के साथ होक्काइडो के एक पहाड़ी गाँव से समुद्र पार करके चीन आ गया था। वे सब मिलकर बेइआन के एक सीमावर्ती गाँव में खेती करते थे, जब तक कि एक साल पहले उसे सेना में भर्ती नहीं कर लिया गया। इसलिए वह मंचूरिया के सभी पक्षियों को जानता था, लेकिन अजीब बात यह थी कि उसने उस

खास आवाज वाले पक्षी को पहले कभी नहीं सुना था। शायद यह किसी दूर देश से लाया गया पक्षी था, जो चिड़ियाघर के किसी दूसरे हिस्से में अपने पिंजरे में रो रहा था। फिर भी, आवाज पास के एक पेड़ की ऊपरी शाखाओं से आती हुई प्रतीत हुई। उसने मुड़कर आवाज की दिशा में ध्यान से देखा, लेकिन उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। घने पत्तों वाला एक विशाल एल्म का पेड़ नीचे जमीन पर अपनी ठंडी, तीखी छाया डाल रहा था।
उसने लेफ्टिनेंट की ओर देखा, मानो निर्देश मांग रहा हो। लेफ्टिनेंट ने सिर हिलाया, उसे पिंजरे से बाहर आने का आदेश दिया और चिड़ियाघर का नक्शा फिर से खोल दिया। बाघों का काम हो गया। अब हम तेंदुओं को देखेंगे। फिर शायद भेड़ियों को। भालुओं से भी निपटना है। बाकी सब खत्म होने के बाद हाथियों के बारे में सोचेंगे, उसने सोचा। और फिर उसे एहसास हुआ कि कितनी गर्मी है। "थोड़ा आराम करो," उसने अपने आदमियों से कहा। "पानी पी लो।" उन्होंने अपनी पानी की बोतलों से पानी पिया। फिर उन्होंने अपनी राइफलें कंधों पर रखीं, अपनी-अपनी जगह पर खड़े हुए और तेंदुए के पिंजरे की ओर चल पड़े। एक पेड़ पर, लगातार चहचहाता हुआ एक अनजान पक्षी अपनी स्प्रिंग घुमाता रहा। सैनिकों की छोटी आस्तीन वाली कमीजें पसीने से काली हो गई थीं। जैसे ही पूरी तरह से हथियारों से लैस सैनिकों का यह दस्ता आगे बढ़ा, तरह-तरह की धातु की वस्तुओं की खड़खड़ाहट सुनसान चिड़ियाघर में गूंज उठी। पिंजरों की सलाखों से चिपके बंदरों की चीखें गूंज उठीं, मानो चिड़ियाघर के बाकी जानवरों को चेतावनी दे रही हों। बाकी जानवर भी अपने- अपने अंदाज़ में चीखने लगे। भेड़िये आसमान की ओर लंबी-लंबी दहाड़ें मार रहे थे, पक्षी अपने पंख फड़फड़ा रहे थे, और कहीं कोई बड़ा जानवर अपने पिंजरे से टकरा रहा था, मानो धमकी दे रहा हो।

अचानक कहीं से मुट्ठी के आकार का एक बादल दिखाई दिया और कुछ देर के लिए सूरज को ढक लिया। अगस्त की उस दोपहर, इंसान, जानवर—हर कोई मौत के बारे में सोच रहा था। आज इंसान जानवरों को मारेंगे; कल सोवियत सैनिक इंसानों को मार डालेंगे। शायद।

•

हम हमेशा एक ही रेस्टोरेंट में एक ही टेबल पर आमने-सामने बैठकर बातें करते थे। वह वहाँ नियमित रूप से आती थी, और ज़ाहिर है, बिल हमेशा वही देती थी। रेस्टोरेंट का पिछला हिस्सा अलग-अलग हिस्सों में बँटा हुआ था, ताकि एक टेबल पर हो रही बातचीत दूसरी टेबल तक न पहुँच सके। शाम को सिर्फ़ एक ही बार बैठने की व्यवस्था होती थी, जिसका मतलब था कि हम आराम से, रेस्टोरेंट बंद होने तक, बिना किसी की दखलंदाज़ी के बातें कर सकते थे—यहाँ तक कि वेटर भी नहीं, जो सिर्फ़ खाना लाने या हटाने के लिए ही टेबल पर आते थे। वह हमेशा एक खास तरह की बरगंडी की बोतल मंगवाती थी और हमेशा आधी बोतल बिना पिए छोड़ देती थी।
“एक पक्षी जो स्प्रिंग घुमाता है?” मैंने अपने भोजन से नज़रें उठाकर पूछा।
“एक पक्षी जो स्प्रिंग घुमाता है?” नटमेग ने ठीक वैसे ही शब्द दोहराते हुए कहा जैसे मैंने कहे थे, फिर उसने अपने होंठों को थोड़ा सा सिकोड़ा। “मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम क्या कह रहे हो। तुम किस बारे में बात कर रहे हो?”
"क्या आपने अभी-अभी किसी ऐसे पक्षी के बारे में कुछ कहा था जो स्प्रिंग को घुमाता है?"
उसने धीरे से अपना सिर हिलाया। "हम्म। अब मुझे याद नहीं आ रहा। मुझे नहीं लगता कि मैंने किसी पक्षी के बारे में कुछ कहा था।"

मुझे समझ आ गया था कि यह असंभव है। वह हमेशा अपनी कहानियां इसी तरह सुनाती थी। मैंने उससे उस निशान के बारे में भी नहीं पूछा। “तो आपका जन्म मंचूरिया में हुआ था?” मैंने पूछा।
उसने फिर सिर हिलाया। “मेरा जन्म योकोहामा में हुआ था। मेरे माता-पिता मुझे तीन साल की उम्र में मंचूरिया ले गए। मेरे पिता पशु चिकित्सा विद्यालय में पढ़ाते थे, लेकिन जब शिनचिंग नगर के प्रशासकों ने अपने नए चिड़ियाघर के लिए जापान से किसी को मुख्य पशु चिकित्सक के रूप में भेजने की इच्छा जताई, तो उन्होंने स्वेच्छा से यह पद स्वीकार कर लिया। मेरी माँ जापान में बसे अपने जीवन को छोड़कर इतनी दूर नहीं जाना चाहती थीं, लेकिन मेरे पिता ने ज़िद की। शायद वे जापान से कहीं अधिक बड़े और खुले स्थान पर खुद को परखना चाहते थे। मैं इतनी छोटी थी कि मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि मैं कहाँ हूँ, लेकिन मुझे चिड़ियाघर में रहना बहुत अच्छा लगता था। वह एक अद्भुत जीवन था। मेरे पिता से हमेशा जानवरों की गंध आती थी। सभी अलग-अलग जानवरों की गंध आपस में मिल जाती थी, और हर दिन थोड़ी अलग होती थी, जैसे इत्र में सामग्री का मिश्रण बदल दिया जाता है। जब वे घर आते थे तो मैं उनकी गोद में चढ़ जाती थी और उन्हें चुपचाप बैठाए रखती थी ताकि मैं उन्हें सूंघ सकूँ।”
लेकिन फिर युद्ध का रुख बिगड़ गया और हम खतरे में पड़ गए, इसलिए मेरे पिता ने बहुत देर होने से पहले मेरी माँ और मुझे जापान वापस भेजने का फैसला किया। हम कई अन्य लोगों के साथ ह्सिन-चिंग से कोरिया के लिए ट्रेन से गए, जहाँ हमारे लिए एक विशेष नाव इंतज़ार कर रही थी। मेरे पिता ह्सिन-चिंग में ही रुक गए। आखिरी बार जब मैंने उन्हें देखा, तो वे स्टेशन पर खड़े होकर हमें हाथ हिला रहे थे। मैंने खिड़की से अपना सिर बाहर निकाला और उन्हें

धीरे-धीरे छोटा होते हुए देखा, जब तक कि वे प्लेटफार्म पर भीड़ में गायब नहीं हो गए। उसके बाद उनका क्या हुआ, यह कोई नहीं जानता। मुझे लगता है कि उन्हें सोवियत संघ ने बंदी बना लिया होगा और साइबेरिया भेज दिया होगा, जहाँ उनसे जबरन मजदूरी करवाई गई होगी और कई अन्य लोगों की तरह, उनकी भी वहीं मृत्यु हो गई होगी। शायद उन्हें किसी ठंडी, सुनसान जगह पर दफना दिया गया होगा, जहाँ उनकी कब्र पर कोई निशान नहीं होगा।
“मुझे ह्सिन-चिंग चिड़ियाघर के बारे में सब कुछ आज भी पूरी तरह से याद है। मैं सब कुछ अपने दिमाग में फिर से याद कर सकती हूँ— हर रास्ता, हर जानवर। हम चिड़ियाघर परिसर के अंदर मुख्य पशु चिकित्सक के आधिकारिक आवास में रहते थे। चिड़ियाघर के सभी कर्मचारी मुझे जानते थे, और वे मुझे जहाँ भी जाना चाहती थीं, जाने देते थे—यहाँ तक कि छुट्टियों में भी, जब चिड़ियाघर बंद रहता था।”
जायफल ने उस दृश्य को अपने मन में फिर से जीवंत करने के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। मैं बिना कुछ बोले, उसकी कहानी जारी रखने का इंतजार करता रहा।
फिर भी, मुझे यकीन नहीं है कि चिड़ियाघर वैसा ही था जैसा मुझे याद है। मैं इसे कैसे समझाऊं? कभी-कभी मुझे लगता है कि यह बहुत ही सजीव है, अगर आप समझ रहे हैं कि मेरा क्या मतलब है। और जब मेरे मन में ऐसे विचार आने लगते हैं, तो जितना मैं इसके बारे में सोचता हूं, उतना ही यह बताना मुश्किल हो जाता है कि इसमें कितनी सच्चाई है और कितना मेरी कल्पना की उपज है। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं किसी भूलभुलैया में भटक गया हूं। क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है?

नहीं था। मैंने पूछा, "क्या आपको पता है कि ह्सिन-चिंग में चिड़ियाघर अभी भी है?"
“मुझे आश्चर्य हो रहा है,” नटमेग ने अपनी बाली के सिरे को छूते हुए कहा। “मैंने सुना था कि युद्ध के बाद वह जगह बंद हो गई थी, लेकिन मुझे नहीं पता कि वह अभी भी बंद है या नहीं।”

•

बहुत लंबे समय तक, नटमेग अकासाका ही दुनिया में एकमात्र ऐसी व्यक्ति थीं जिनसे मैं खुलकर बात कर सकता था। हम हफ्ते में एक या दो बार मिलते और रेस्टोरेंट में बैठकर बातें करते। कई बार मिलने के बाद मुझे पता चला कि वह एक बेहतरीन श्रोता थीं। वह बातों को तुरंत समझ जाती थीं और चतुराई से पूछे गए सवालों और जवाबों के जरिए बातचीत को आगे बढ़ाने का तरीका जानती थीं। उन्हें किसी भी तरह से नाराज़ न करने के लिए, जब भी हम मिलते, मैं हमेशा इस बात का खास ध्यान रखता था कि मेरे कपड़े साफ-सुथरे और अच्छे से चुने हुए हों। मैं हमेशा धुली हुई कमीज़ पहनता और उसके रंग से मेल खाती टाई चुनता। मेरे जूते हमेशा चमके हुए और बेदाग होते थे। मुझे देखते ही सबसे पहले वो मुझे ऊपर से नीचे तक ऐसे देखती जैसे कोई शेफ सब्ज़ियाँ चुन रहा हो। अगर उन्हें कुछ भी पसंद नहीं आता, तो वो मुझे सीधे किसी बुटीक में ले जातीं और मेरे लिए सही कपड़ा खरीदतीं। अगर मुमकिन होता, तो वो मुझे वहीं पर कपड़े बदलने के लिए कहतीं। कपड़ों के मामले में, वो पूर्णता से कम कुछ भी स्वीकार नहीं करती थीं।
नतीजतन, मुझे पता भी नहीं चला और मेरी अलमारी धीरे-धीरे कपड़ों से भरती चली गई। धीरे-धीरे, नए सूट, नई जैकेट और नई कमीज़ें उस जगह पर कब्ज़ा जमाती जा रही थीं जहाँ कभी कुमिको की स्कर्ट और ड्रेस हुआ करती थीं। देखते ही देखते अलमारी तंग होने लगी, इसलिए

मैंने कुमिको के कपड़े तह करके, उन्हें कपूर की गोलियों से भरे डिब्बों में पैक किया और एक सुरक्षित जगह पर रख दिया। मुझे पता था कि अगर वह कभी वापस आई, तो उसे यह सोचना ही पड़ेगा कि उसकी गैरमौजूदगी में आखिर क्या हुआ था।
मैंने नटमेग को कुमिको के बारे में धीरे-धीरे समझाने में काफी समय लगाया—कि मुझे उसे बचाना था और उसे वापस यहाँ लाना था। उसने अपनी कोहनी मेज पर टिकाई, ठुड्डी को हाथ में रखा और कुछ देर तक मेरी ओर देखती रही।
"तो आप कुमिको को कहाँ से बचाने जा रहे हैं? क्या उस जगह का कोई नाम है?"
मैंने अंतरिक्ष में उन शब्दों को खोजा। लेकिन वे अंतरिक्ष में नहीं थे। न ही वे ज़मीन के नीचे थे। "कहीं दूर," मैंने कहा। नटमेग मुस्कुराई। “यह कुछ-कुछ 'द मैजिक फ्लूट' जैसा है। तुम्हें पता है: मोजार्ट का ओपेरा। एक जादुई बांसुरी और जादुई घंटियों का इस्तेमाल करके, उन्हें एक राजकुमारी को बचाना होता है जिसे एक दूर के महल में कैद कर रखा गया है। मुझे वह ओपेरा बहुत पसंद है। मैंने उसे न जाने कितनी बार देखा है। मुझे उसकी पंक्तियाँ ज़बानी याद हैं: 'मैं पक्षी पकड़ने वाला, पापागेनो हूँ, पूरे देश में मशहूर।' क्या तुमने इसे कभी देखा है?”
मैंने अपना सिर हिलाया। मैंने इसे कभी नहीं देखा था।
“ओपेरा में, राजकुमार और चिड़िया पकड़ने वाले को बादल पर सवार तीन बच्चे महल तक ले जाते हैं। लेकिन असल में दिन और रात के बीच युद्ध चल रहा होता है। रात की धरती दिन की धरती से राजकुमारी को वापस लेने की कोशिश कर रही होती है। ओपेरा के बीच में, नायकों को यह समझ नहीं आता कि कौन सही है—किसे बंदी बनाया गया है और किसे नहीं। अंत में, राजकुमार को राजकुमारी मिल जाती है, पापागेनो को

पापागेना मिल जाती है, और खलनायक नरक में गिर जाते हैं।” जायफल ने अपने गिलास के किनारे पर उंगली फेरते हुए कहा, “खैर, इस समय तो न तो चिड़िया पकड़ने वाला है, न जादुई बांसुरी, न घंटियाँ।” “लेकिन मेरे पास एक कुआँ है,” मैंने कहा।

•

जब भी मैं बोलते-बोलते थक जाती या शब्दों का पता न चलने के कारण अपनी कहानी सुनाना बंद कर देती, तो नटमेग मुझे अपने शुरुआती जीवन के बारे में बताकर थोड़ा आराम देती, और उसकी कहानियाँ मेरी कहानियों से कहीं ज़्यादा लंबी और उलझी हुई होती थीं। और मेरे विपरीत, वह अपनी कहानियों को किसी क्रम में नहीं रखती थी, बल्कि अपनी भावनाओं के अनुसार एक विषय से दूसरे विषय पर चली जाती थी। बिना किसी स्पष्टीकरण के, वह कालानुक्रम उलट देती या अचानक किसी ऐसे व्यक्ति को मुख्य पात्र के रूप में पेश कर देती जिसका ज़िक्र उसने पहले कभी मुझसे नहीं किया था। यह जानने के लिए कि वह जिस अंश को सुना रही है वह उसके जीवन के किस काल से संबंधित है, मुझे सावधानीपूर्वक अनुमान लगाना पड़ता था, हालाँकि कुछ मामलों में कोई भी अनुमान काम नहीं आता था। वह उन घटनाओं का वर्णन करती थी जिन्हें उसने अपनी आँखों से देखा था, साथ ही उन घटनाओं का भी जिन्हें उसने कभी नहीं देखा था।

•

उन्होंने तेंदुओं को मार डाला। उन्होंने भेड़ियों को मार डाला। उन्होंने भालुओं को मार डाला। भालुओं को मारने में सबसे ज़्यादा समय लगा। दो विशालकाय जानवरों को दर्जनों गोलियां लगने के बाद भी, वे अपने पिंजरे की सलाखों से टकराते रहे, आदमियों पर दहाड़ते रहे और लार टपकाते रहे, उनके दांत बाहर निकले हुए थे। बिल्लियों के विपरीत, जो अपनी मौत को स्वीकार

हैं। उन्होंने अक्सर चीनियों को ऐसा काम करते देखा था और वे जानते थे कि वे बिल्कुल भी अनाड़ी नहीं होते। पल भर में, एक जानवर खाल, मांस, अंगों और हड्डियों में बदल जाता, मानो ये तत्व मूल रूप से बिल्कुल अलग थे और बस कुछ समय के लिए एक साथ आ गए हों। मुझे यकीन है कि जब तक मैं अपनी नींद से जागूंगा, मांस के वे टुकड़े बाज़ार में होंगे। यही वास्तविकता है: तेज़ और कुशल। उन्होंने मुट्ठी भर घास तोड़ी और कुछ देर तक उसकी कोमलता से खेलते रहे। फिर उसने अपनी सिगरेट बुझाई और एक गहरी साँस लेते हुए अपने फेफड़ों में बचा सारा धुआँ बाहर निकाल दिया। जब उसने अपनी आँखें बंद कीं, तो अँधेरे में टिड्डों के पंखों की आवाज़ और भी तेज़ सुनाई दी। पशु चिकित्सक को यह भ्रम सताने लगा कि उसके चारों ओर मेंढक के आकार के विशालकाय टिड्डे उछल-कूद कर रहे हैं।
शायद दुनिया एक घूमते हुए दरवाज़े की तरह थी, यह विचार उसके मन में तब आया जब उसकी चेतना धीरे-धीरे थम रही थी। और आप किस हिस्से में पहुँचते हैं, यह बस इस बात पर निर्भर करता था कि आपका पैर कहाँ पड़ता है। एक हिस्से में बाघ थे, दूसरे में नहीं। शायद बात इतनी ही सरल थी। और एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक कोई तार्किक निरंतरता नहीं थी। और ठीक इसी तार्किक निरंतरता की कमी के कारण विकल्पों का कोई खास महत्व नहीं था। क्या यही कारण था कि वह एक दुनिया और दूसरी दुनिया के बीच के अंतर को महसूस नहीं कर पा रहा था? लेकिन उसके विचार यहीं तक सीमित थे। वह इससे ज़्यादा गहराई से सोच नहीं पा रहा था। उसके शरीर में थकान इतनी भारी और घुटन भरी थी जैसे कोई भीगा हुआ कंबल। उसके मन में और कोई विचार नहीं आया, और वह बस वहीं लेटा रहा, घास की खुशबू को सूंघता रहा,

टिड्डियों के पंखों की आवाज़ सुनता रहा, और अपनी त्वचा के माध्यम से अपने ऊपर छाए घने अंधेरे को महसूस करता रहा।
और अंत में उसका मन दोपहर की गहरी नींद में डूब गया।

•

आदेशानुसार परिवहन जहाज ने अपने इंजन बंद कर दिए और जल्द ही वह समुद्र की सतह पर रुक गया। इतनी तेज, आधुनिक पनडुब्बी से बच निकलने की संभावना दस हजार में एक से भी कम थी। पनडुब्बी की डेक गन और मशीन गन अभी भी परिवहन जहाज पर निशाना साधे हुए थीं, और उसका चालक दल हमले के लिए तैयार था। फिर भी दोनों जहाजों के बीच एक अजीब सी शांति छाई हुई थी। पनडुब्बी का चालक दल डेक पर सबके सामने खड़ा था, पंक्तिबद्ध होकर परिवहन जहाज को ऐसे देख रहा था मानो उनके पास समय हो। उनमें से कई ने तो युद्ध हेलमेट भी नहीं पहने थे। उस गर्मी की दोपहर में हवा लगभग न के बराबर थी, और अब, दोनों इंजन बंद होने के कारण, एकमात्र ध्वनि दोनों जहाजों के पतवारों से टकराती लहरों की धीमी आवाज थी। परिवहन जहाज ने पनडुब्बी को संकेत दिया: “हम निहत्थे नागरिकों को ले जाने वाला एक परिवहन जहाज हैं। हमारे पास न तो गोला-बारूद है और न ही सैन्यकर्मी। हमारे पास कुछ ही जीवनरक्षक नौकाएँ हैं।” इस पर पनडुब्बी ने रूखेपन से जवाब दिया: “यह हमारी समस्या नहीं है। निकासी हो या न हो, हम ठीक दस मिनट में गोलीबारी शुरू कर देंगे।” इसके साथ ही दोनों जहाजों के बीच संकेतों का आदान-प्रदान समाप्त हो गया। परिवहन जहाज के कप्तान ने अपने यात्रियों को यह संदेश न देने का फैसला किया। भला इससे क्या फायदा होता? उनमें से कुछ शायद बच जाएं, लेकिन अधिकतर इस जर्जर जहाज के साथ समुद्र की गहराई में डूब जाएंगे। कप्तान को एक आखिरी घूंट पीने की तीव्र इच्छा हुई, लेकिन व्हिस्की की बोतल—जो उन्होंने बचाकर

रखी थी—उनके केबिन में डेस्क की दराज में थी, और अब उसे लेने का समय नहीं था। उन्होंने अपनी टोपी उतारी और आकाश की ओर देखा, इस उम्मीद में कि किसी चमत्कार से जापानी लड़ाकू विमानों का एक दस्ता अचानक वहां प्रकट हो जाए। लेकिन आज चमत्कारों का दिन नहीं था। कप्तान ने अपनी पूरी कोशिश कर ली थी। उन्होंने फिर से अपनी व्हिस्की के बारे में सोचा।
दस मिनट की मोहलत खत्म होने ही वाली थी कि पनडुब्बी के डेक पर अजीब हलचल शुरू हो गई। कमांड टावर डेक पर खड़े अधिकारियों के बीच अफरा-तफरी मच गई और एक अधिकारी मुख्य डेक पर उतरकर चालक दल के बीच दौड़ पड़ा और किसी तरह का आदेश देता हुआ चिल्लाने लगा। वह जहाँ भी गया, वहाँ तैनात सैनिकों में हलचल मच गई। एक नाविक ने अपना सिर अगल-बगल हिलाया और मुट्ठी बांधकर डेक गन के बैरल पर घूंसा मारा। दूसरे ने अपना हेलमेट उतारकर आसमान की ओर देखा। सैनिकों की ये हरकतें शायद क्रोध, खुशी, निराशा या उत्तेजना को व्यक्त कर रही थीं। परिवहन जहाज पर सवार यात्रियों के लिए यह समझना नामुमकिन था कि क्या हो रहा है या इसका क्या मतलब है। जैसे कोई दर्शक बिना किसी कार्यक्रम के मूक अभिनय देख रहा हो (लेकिन जिसमें एक बहुत महत्वपूर्ण संदेश छिपा हो), वे अपनी सांसें रोककर नाविकों की हर हरकत पर नजर गड़ाए बैठे रहे, किसी छोटे से संकेत की उम्मीद में। अंततः, नाविकों के बीच फैली अफरा- तफरी की लहरें शांत होने लगीं, और पुल से मिले आदेश के जवाब में, डेक गन से गोले बड़ी तेज़ी से हटा दिए गए। लोगों ने क्रैंक घुमाकर बैरल को परिवहन जहाज से दूर तब तक घुमाया जब तक कि बंदूक फिर से सीधी दिशा में न हो गई, फिर उन्होंने बैरल के भयानक काले छेद को बंद कर दिया। बंदूक के गोले वापस डेक के नीचे ले जाए गए, और चालक दल हैच की ओर भागा। अपनी पिछली गतिविधियों के विपरीत,

अब वे सब कुछ गति और कुशलता से कर रहे थे। कोई बातचीत या व्यर्थ की हलचल नहीं थी।
पनडुब्बी के इंजन एक ज़ोरदार गर्जना के साथ चालू हुए, और लगभग उसी क्षण सायरन ने "सभी लोग डेक के नीचे आ जाएँ!" का संकेत देते हुए तेज़ आवाज़ की। पनडुब्बी आगे बढ़ने लगी, और एक पल बाद ही वह नीचे की ओर गोता लगाने लगी, झाग का एक बड़ा सफेद धब्बा ऊपर उठाते हुए, मानो वह लोगों के नीचे जाकर हैच बंद करने का इंतज़ार भी नहीं कर पाई हो। समुद्र के पानी की एक परत ने लंबे, संकरे डेक को आगे से पीछे तक निगल लिया, तोप सतह के नीचे डूब गई, कॉनिंग टॉवर गहरे नीले पानी को चीरता हुआ नीचे की ओर खिसक गया, और अंत में एंटीना और पेरिस्कोप आँखों से ओझल हो गए, मानो हवा से उनके होने के सभी सबूत मिटाना चाहते हों। कुछ देर के लिए समुद्र की सतह पर लहरें उठीं, लेकिन जल्द ही वे भी शांत हो गईं, केवल अजीब तरह से शांत दोपहर का समुद्र ही रह गया।
पनडुब्बी के सतह के नीचे उसी आश्चर्यजनक अचानकता के साथ डूब जाने के बाद भी, जिस अचानकता से वह प्रकट हुई थी, यात्री डेक पर जमे खड़े रहे, पानी के विशाल विस्तार को घूरते रहे। किसी ने खाँसी भी नहीं की। कप्तान ने होश संभाला और नेविगेटर को आदेश दिया, जिसने इसे इंजन कक्ष तक पहुँचाया, और अंततः, लंबे समय तक गड़गड़ाहट के बाद, पुराना इंजन ऐसे चालू हुआ जैसे कोई सोया हुआ कुत्ता अपने मालिक द्वारा लात मारकर जगाया गया हो।
परिवहन जहाज के चालक दल ने सांस रोक ली, टॉरपीडो हमले का इंतजार करते हुए। अमेरिकियों ने शायद अपनी योजना बदल दी हो, यह सोचकर कि तोप से लगातार गोले दागने की बजाय टॉरपीडो से जहाज को डुबाना तेज़ और आसान होगा। जहाज टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर चल रहा था, कप्तान और नाविक दूरबीन से समुद्र की सतह को स्कैन कर रहे थे,

टॉरपीडो के घातक सफेद निशान की तलाश में। लेकिन कोई टॉरपीडो नहीं था। पनडुब्बी के लहरों में गायब होने के बीस मिनट बाद, लोग आखिरकार अपने ऊपर मंडरा रहे मृत्यु के अभिशाप से मुक्त होने लगे। पहले तो उन्हें इस पर आधा ही यकीन हुआ, लेकिन धीरे-धीरे उन्हें लगने लगा कि यह सच है: वे मौत के मुंह से बचकर ज़िंदा वापस आ गए थे। कप्तान को भी नहीं पता था कि अमेरिकियों ने अचानक अपना हमला क्यों रोक दिया। आखिर किस बात ने उनका इरादा बदल दिया होगा? (बाद में ही यह स्पष्ट हुआ कि हमले शुरू होने से ठीक पहले मुख्यालय से निर्देश आए थे, जिसमें उन्हें दुश्मन द्वारा हमला किए जाने की स्थिति में सभी प्रकार की शत्रुता को स्थगित करने की सलाह दी गई थी। जापानी सरकार ने मित्र देशों को टेलीग्राम भेजकर सूचित किया था कि वे पॉट्सडैम घोषणा को स्वीकार करने और बिना शर्त आत्मसमर्पण करने के लिए तैयार हैं।) असहनीय तनाव से मुक्त होकर, कई यात्री डेक पर ही बैठ गए और विलाप करने लगे, लेकिन उनमें से अधिकांश न तो रो सके और न ही हंस सके। कई घंटों तक—और कुछ के मामले में, कई दिनों तक—वे पूर्णतः एक तरह के सदमे में रहे, एक लंबे और भयावह दुःस्वप्न का दर्द उनके फेफड़ों, उनके दिलों, उनकी रीढ़ की हड्डी, उनके दिमाग और उनके गर्भ में बेरहमी से चुभता रहा।
छोटी नटमेग अकासाका इस पूरे घटनाक्रम के दौरान अपनी माँ की गोद में गहरी नींद में सो रही थी। वह पूरे बीस घंटे सोई, मानो बेहोश हो गई हो। उसकी माँ ने चिल्लाकर और उसके गालों पर थप्पड़ मारकर उसे जगाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मानो वह समुद्र की गहराई में डूब गई हो। उसकी साँसों के बीच का अंतराल बढ़ता गया और उसकी नाड़ी धीमी होती गई। उसकी साँसें लगभग सुनाई नहीं दे रही थीं। लेकिन जब जहाज सासेबो पहुँचा, तो वह अचानक जाग

उठी, मानो किसी महान शक्ति ने उसे वापस इस दुनिया में खींच लिया हो। इसलिए नटमेग ने खुद असफल हमले और अमेरिकी पनडुब्बी के गायब होने से जुड़ी घटनाओं को नहीं देखा। उसने यह सब बहुत बाद में अपनी माँ से सुना।
मालवाहक जहाज अंततः 16 अगस्त की सुबह दस बजे के कुछ देर बाद सासेबो बंदरगाह पर लड़खड़ाते हुए पहुँचा, यह उस हमले के एक दिन बाद का दिन था जब कोई हमला नहीं हुआ था। बंदरगाह पर अजीब सी खामोशी छाई हुई थी, और कोई भी जहाज का स्वागत करने के लिए बाहर नहीं आया। बंदरगाह के मुहाने पर बने विमानरोधी ठिकाने पर भी इंसानियत का कोई निशान नहीं था। गर्मी की धूप ज़मीन को बेबस कर रही थी। पूरी दुनिया एक गहरे स्तब्धता में डूबी हुई लग रही थी, और जहाज पर सवार कुछ लोगों को ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वे गलती से मृत्युलोक में आ गए हों। विदेशों में बिताए वर्षों के बाद, वे अपने पूर्वजों के देश को चुपचाप देखते रह गए। 15 अगस्त की दोपहर को, रेडियो पर सम्राट द्वारा युद्ध की समाप्ति की घोषणा प्रसारित हुई थी। उससे छह दिन पहले, पास के शहर नागासाकी को एक परमाणु बम से जलाकर राख कर दिया गया था। मंचुकुओ का काल्पनिक साम्राज्य इतिहास में लुप्त हो रहा था। और घूमते दरवाजे के गलत हिस्से में अनजाने में फंसा हुआ, गाल पर निशान वाला पशु चिकित्सक भी मंचुकुओ के भाग्य का शिकार होने वाला था।

तो फिर, अगली समस्या (मे कासाहारा का दृष्टिकोण: 2)

•

नमस्कार, श्रीमान विंड-अप बर्ड।
क्या आपने इस बारे में सोचा है कि मैं कहाँ हूँ और क्या कर रहा हूँ, जैसा कि मैंने आपको अपने पिछले पत्र के अंत में बताया था? क्या आप कुछ भी कल्पना कर पाए?
खैर, मुझे लगता है कि मैं यही मानकर चलूंगा कि आप कुछ भी नहीं समझ पाए—जो मुझे यकीन है कि सच है।
तो चलिए मैं सीधे मुद्दे पर आता हूँ और आपको शुरू से ही बता देता हूँ।
मैं एक कारखाने में काम करता हूँ—मान लीजिए—एक बड़ी फैक्ट्री। यह एक छोटे से प्रांतीय शहर में है—या यूँ कहूँ, उस प्रांतीय शहर के बाहरी इलाके में पहाड़ों में है, जहाँ से जापान सागर दिखाई देता है। लेकिन "कारखाना" शब्द से भ्रमित मत होइए। यह वैसा नहीं है जैसा आप कल्पना करते हैं: कोई ऐसा आलीशान कारखाना जहाँ बड़ी-बड़ी, अत्याधुनिक मशीनें चलती हों, कन्वेयर बेल्ट दौड़ती हों और चिमनियों से धुआँ निकलता हो। यह बड़ा तो है, लेकिन इसका परिसर काफी बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है और यह उज्ज्वल और शांत है। यहाँ बिल्कुल भी धुआँ नहीं निकलता। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि दुनिया में इतने दूर-दूर तक फैले कारखाने भी हो सकते हैं। मैंने आज तक सिर्फ टोक्यो की कारमेल फैक्ट्री देखी है, जहाँ हमारी कक्षा प्राथमिक विद्यालय में एक फील्ड ट्रिप पर गई थी, और मुझे बस इतना याद है कि वह कितनी शोरगुल भरी और तंग जगह थी और लोग उदास चेहरों के साथ कैसे मेहनत

कर रहे थे। इसलिए मेरे लिए, "कारखाना" हमेशा किसी पाठ्यपुस्तक में "औद्योगिक क्रांति" के अंतर्गत दिखाई देने वाले चित्र जैसा ही था।
यहां काम करने वाले लगभग सभी लोग लड़कियां हैं। पास में ही एक अलग इमारत है, एक प्रयोगशाला, जहां सफेद कोट पहने पुरुष उत्पाद विकास पर काम करते हैं, उनके चेहरे पर गंभीर भाव रहते हैं, लेकिन वे कुल संख्या का बहुत छोटा हिस्सा हैं। बाकी सभी लड़कियां हैं, जिनकी उम्र 18 से 20 साल के बीच है, और उनमें से लगभग सत्तर प्रतिशत मेरे जैसी ही कंपनी परिसर के अंदर बने छात्रावासों में रहती हैं। शहर से हर दिन बस या कार से यहां आना-जाना बहुत मुश्किल है, लेकिन छात्रावास अच्छे हैं। इमारतें नई हैं, सभी कमरे सिंगल हैं, खाना अच्छा है और आप अपनी पसंद का खाना चुन सकते हैं, सुविधाएं पूरी हैं, और इन सबके हिसाब से रहने-खाने का खर्च सस्ता है। यहां एक गर्म स्विमिंग पूल और एक पुस्तकालय है, और अगर आप चाहें तो चाय समारोह और फूलों की सजावट जैसी चीजें कर सकते हैं (लेकिन मैं नहीं करना चाहती), और यहां तक कि खेलों की टीमें भी सक्रिय रूप से चलती हैं, इसलिए बहुत सी लड़कियां जो शुरुआत में आने-जाने में समय बिताती हैं, वे अंत में छात्रावास में रहने लगती हैं। वे सभी सप्ताहांत में अपने परिवार के साथ खाना खाने, फिल्म देखने, अपने बॉयफ्रेंड के साथ डेट पर जाने आदि के लिए घर लौट आते हैं, इसलिए शनिवार को यह जगह सुनसान और वीरान हो जाती है। मेरे जैसे लोग बहुत कम हैं जिनके पास सप्ताहांत में घर जाने के लिए परिवार न हो। लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा, मुझे सप्ताहांत में इस जगह का खालीपन और सन्नाटा अच्छा लगता है। मैं पूरा दिन पढ़ने, तेज़ आवाज़ में संगीत सुनने, पहाड़ियों में

घूमने या, जैसा कि अभी, अपनी डेस्क पर बैठकर आपको, मिस्टर विंड-अप बर्ड, लिखने में बिता सकता हूँ।
यहां काम करने वाली सभी लड़कियां यहीं की रहने वाली हैं—यानी किसानों की बेटियां। खैर, शायद सभी नहीं, लेकिन उनमें से ज्यादातर खुश, स्वस्थ, आशावादी और मेहनती हैं। इस जिले में बड़े उद्योग नहीं हैं, इसलिए पहले लड़कियां हाई स्कूल से पास होने के बाद नौकरी ढूंढने शहर चली जाती थीं। इसका मतलब यह था कि शहर में बचे लड़कों को शादी के लिए कोई नहीं मिलता था, जिससे जनसंख्या घटने की समस्या और बढ़ जाती थी। तब शहर के लोगों ने मिलकर व्यवसायों को कारखाना लगाने के लिए जमीन का यह बड़ा टुकड़ा दिया, और लड़कियों को शहर छोड़कर नहीं जाना पड़ा। मुझे लगता है यह एक अच्छा विचार था। मतलब, देखिए, उन्होंने मुझ जैसे किसी को इतनी दूर यहां आने के लिए मना लिया। तो अब, हाई स्कूल से पास होने के बाद (या मेरी तरह बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने पर), सभी लड़कियां कारखाने में काम करने जाती हैं, पैसे बचाती हैं, और जब उनकी शादी हो जाती है तो नौकरी छोड़ देती हैं, दो बच्चे पैदा करती हैं और मोटी होकर एक जैसी दिखने लगती हैं। बेशक, कुछ लड़कियां शादी के बाद भी यहां काम करती रहती हैं, लेकिन उनमें से ज्यादातर नौकरी छोड़ देती हैं।
इससे आपको इस जगह के बारे में काफी अच्छा अंदाजा हो जाएगा। ठीक है?
तो अब आपके लिए अगला सवाल यह है: इस कारखाने में क्या बनाया जाता है?
संकेत: एक बार हम दोनों इससे जुड़े एक काम पर गए थे। याद है? हम गिन्ज़ा गए थे और एक सर्वेक्षण किया था।

अरे, छोड़ो भी! अब तक तो तुम्हें भी समझ आ गया होगा, मिस्टर विंड-अप बर्ड!
बस! मैं विग बनाने की फैक्ट्री में काम कर रही हूँ! हैरान हैं? मैंने आपको पहले भी बताया था कि कैसे मैं उस आलीशान होटल/जेल/देहाती स्कूल से छह महीने बाद निकल गई और घर पर ऐसे ही पड़ी रही, जैसे कोई टूटा हुआ पैर वाला कुत्ता। फिर अचानक मेरे दिमाग में विग कंपनी की फैक्ट्री का ख्याल आया। मुझे याद आया कि कंपनी में मेरे बॉस ने मुझसे एक बार मज़ाक में कहा था कि फैक्ट्री में लड़कियों की कभी कमी नहीं होती और जब भी मैं वहाँ काम करना चाहूँ, वे मुझे रख लेंगे। उन्होंने मुझे उस जगह का एक पैम्फलेट भी दिखाया था, और मुझे याद है कि मैंने सोचा था कि यह एक बहुत ही बढ़िया फैक्ट्री है और मुझे वहाँ काम करने में कोई आपत्ति नहीं होगी। मेरे बॉस ने बताया कि वहाँ की सभी लड़कियाँ हाथों से काम करती हैं, विग में बाल लगाती हैं। विग बहुत ही नाजुक चीज़ होती है, किसी एल्युमीनियम के बर्तन की तरह नहीं जिसे आप झटपट बना लें। अच्छी क्वालिटी का विग बनाने के लिए असली बालों के छोटे-छोटे गुच्छों को बहुत-बहुत सावधानी से, एक-एक करके लगाना पड़ता है। क्या इसके बारे में सोचकर ही चक्कर नहीं आ जाता? मेरा मतलब है, आपको क्या लगता है कि एक इंसान के सिर पर कितने बाल होते हैं? इनकी गिनती लाखों में होगी! और एक विग बनाने के लिए इन्हें हाथ से लगाना पड़ता है, ठीक वैसे ही जैसे धान के खेत में पौधे लगाए जाते हैं। हालांकि, यहां की कोई भी लड़की काम की शिकायत नहीं करती। उन्हें कोई आपत्ति नहीं है क्योंकि यह इलाका बर्फीला है, जहां सर्दियों के लंबे मौसम में पैसे कमाने के लिए खेत की महिलाएं हमेशा से ही बारीक कारीगरी

करती आई हैं। शायद इसीलिए कंपनी ने इस इलाके को अपनी फैक्ट्री के लिए चुना।
सच कहूँ तो, मुझे इस तरह का शारीरिक श्रम करने में कभी कोई आपत्ति नहीं हुई। मुझे पता है कि मैं देखने में ऐसी नहीं लगती, लेकिन मैं सिलाई में वाकई बहुत अच्छी हूँ। मैंने हमेशा अपने शिक्षकों को प्रभावित किया है। अब भी यकीन नहीं हो रहा? लेकिन यह सच है! इसीलिए मुझे ख्याल आया कि शायद मुझे पहाड़ों में किसी कारखाने में अपना कुछ समय बिताना अच्छा लगे, जहाँ सुबह से शाम तक मेरे हाथ व्यस्त रहें और मुझे किसी भी परेशान करने वाली बात की चिंता न हो। मैं स्कूल से तंग आ चुकी थी, लेकिन मुझे बस यूँ ही बैठे रहना और अपने माता-पिता पर निर्भर रहना बिल्कुल पसंद नहीं था (और मुझे यकीन है कि उन्हें भी यह बात पसंद नहीं आती होगी), लेकिन मेरे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसे मैं दिल से करना चाहती थी, इसलिए जितना मैं इसके बारे में सोचती, उतना ही मुझे लगता कि मेरे लिए इस कारखाने में काम करने के अलावा कोई और चारा नहीं है।
मैंने अपने माता-पिता को अपना स्पॉन्सर बना लिया और अपने बॉस से सिफारिश भी ले ली (उन्हें मेरा सर्वे का काम पसंद आया था)। मैंने कंपनी के मुख्यालय में इंटरव्यू पास कर लिया और अगले ही हफ्ते मैंने सारा सामान पैक कर लिया (वैसे मैंने अपने कपड़ों और म्यूजिक बॉक्स के अलावा कुछ और नहीं लिया था)। मैं अकेले ही बुलेट ट्रेन में चढ़ी, फिर पहाड़ियों की ओर जाने वाली एक छोटी सी प्यारी ट्रेन में बदली और इस छोटे से कस्बे तक पहुँच गई। लेकिन ऐसा लगा जैसे मैं दुनिया के दूसरे छोर पर आ गई हूँ। ट्रेन से उतरते ही मैं बहुत निराश हो गई! मुझे लगा जैसे मैंने बहुत बड़ी गलती कर दी हो। लेकिन आखिरकार, नहीं: मुझे यहाँ आए छह महीने

हो गए हैं और मुझे कोई खास परेशानी नहीं हुई है, और मैं यहाँ पूरी तरह से रम गई हूँ।
पता नहीं क्या बात है, लेकिन मुझे विग में हमेशा से दिलचस्पी रही है। या शायद मुझे कहना चाहिए कि मैं हमेशा से उनकी तरफ आकर्षित रही हूँ, जैसे कुछ लोग मोटरसाइकिलों की तरफ आकर्षित होते हैं। सच कहूँ तो, मुझे पहले इसका एहसास नहीं था, लेकिन जब मैं बाज़ार अनुसंधान के लिए निकली और मुझे उन सभी गंजे पुरुषों (या जिन्हें कंपनी "बाल झड़ने की समस्या वाले पुरुष" कहती है) को देखने का मौका मिला, तो मुझे सच में एहसास हुआ कि दुनिया में कितने सारे ऐसे पुरुष हैं! ऐसा नहीं है कि गंजे (या जिनके बाल झड़ने की समस्या है) पुरुषों के प्रति मेरी कोई व्यक्तिगत भावनाएँ हैं। मैं उन्हें न तो खास "पसंद" करती हूँ और न ही "नापसंद"। उदाहरण के लिए, आप ही ले लीजिए, मिस्टर विंड-अप बर्ड। भले ही आपके बाल अभी से भी पतले हो जाएँ (और जल्द ही हो जाएँगे), आपके प्रति मेरी भावनाएँ बिल्कुल नहीं बदलेंगी। जब मैं किसी ऐसे पुरुष को देखती हूँ जिसके बाल झड़ने की समस्या है, तो मेरे मन में बस एक ही प्रबल भावना आती है, वही एहसास जो मैंने शायद आपको पहले भी बताया था, कि जीवन धीरे-धीरे खत्म हो रहा है। अब, यह एक ऐसी चीज है जिसमें मुझे वास्तव में दिलचस्पी है!
मैंने कहीं सुना था कि लोगों की लंबाई एक निश्चित उम्र में सबसे ज़्यादा बढ़ती है (मुझे याद नहीं कि वो उन्नीस या बीस साल की उम्र थी), जिसके बाद शरीर कमज़ोर होने लगता है। अगर ऐसा है, तो बालों का झड़ना और पतला होना शरीर के कमज़ोर होने का ही एक हिस्सा है। इसमें कुछ भी अजीब नहीं है। शायद यह सामान्य और स्वाभाविक है। अगर इसमें कोई समस्या है, तो वो ये है कि कुछ लोग कम उम्र में ही गंजे हो जाते हैं और कुछ बुढ़ापे में भी नहीं

गंजे होते। मुझे पता है अगर मैं गंजा होता, तो मुझे ये अन्याय लगता। मतलब, ये शरीर का वो हिस्सा है जो सबसे अलग दिखता है! मैं उनकी भावनाओं को समझता हूँ, और बालों के पतले होने की समस्या से मेरा कोई लेना-देना नहीं है।
ज़्यादातर मामलों में, बाल झड़ने वाले व्यक्ति की ज़िम्मेदारी इस बात पर बिल्कुल नहीं होती कि उसके बाल दूसरों की तुलना में कम झड़ते हैं या ज़्यादा। जब मैं पार्ट टाइम काम कर रहा था, तब मेरे बॉस ने मुझे बताया कि जीन ही 90 प्रतिशत तय करते हैं कि कोई व्यक्ति गंजा होगा या नहीं। जिस व्यक्ति को अपने दादा-दादी से बालों के पतले होने का जीन विरासत में मिला है, उसके बाल देर-सवेर झड़ेंगे ही, चाहे वह इसे रोकने के लिए कुछ भी कर ले। "जहाँ चाह है, वहाँ राह है" वाली कहावत गंजेपन पर लागू नहीं होती। जब जीन अपना असर दिखाने लगते हैं (यानी, अगर जीन अपना असर दिखा सकते हैं), तो बालों के पास झड़ने के अलावा कोई चारा नहीं बचता। यह अन्याय है, है ना? मुझे तो लगता है।
तो अब आप जानते हैं कि मैं यहाँ इस कारखाने में, आपसे बहुत दूर, हर दिन कड़ी मेहनत कर रहा हूँ। और आप विग और उसके निर्माण में मेरी गहरी व्यक्तिगत रुचि के बारे में भी जानते हैं। आगे मैं यहाँ अपने जीवन और काम के बारे में कुछ और विस्तार से बताऊंगा।
नहीं, भूल जाओ। अलविदा।

क्या यह फावड़ा असली फावड़ा है? (रात में क्या हुआ: 2)

•

गहरी नींद में सो जाने के बाद लड़के ने एक जीवंत सपना देखा। हालांकि, उसे पता था कि यह एक सपना है, जिससे उसे कुछ राहत मिली। मुझे पता है कि यह एक सपना है, इसलिए इससे पहले जो हुआ वह सपना नहीं था। यह सचमुच हुआ था। मैं दोनों में फर्क बता सकता हूँ। सपने में लड़का बगीचे में गया था। अभी भी आधी रात का समय था और वह अकेला था। उसने फावड़ा उठाया और उस गड्ढे को खोदना शुरू किया जिसे लंबे आदमी ने भर दिया था। उस आदमी ने फावड़ा पेड़ के तने से टिकाकर छोड़ दिया था। नया भरा हुआ गड्ढा खोदना उतना मुश्किल नहीं था, लेकिन भारी फावड़ा उठाना ही लड़के की सांस रोक देने के लिए काफी था। और उसने जूते भी नहीं पहने थे। उसके पैरों के तलवे ठंड से जम रहे थे। फिर भी, वह हांफता हुआ खोदता रहा जब तक कि उसने कपड़े का वह बंडल नहीं निकाल लिया जिसे उस आदमी ने दबा दिया था। चाबी भरने वाली चिड़िया अब नहीं रोई। पेड़ पर चढ़ा आदमी कभी नीचे नहीं आया। रात इतनी खामोश थी कि लड़के के कान सुन्न हो गए। ऐसा लगा जैसे वह आदमी गायब हो गया हो। लेकिन आखिर यह एक सपना ही तो है, लड़के ने सोचा। चाबी भरने वाली चिड़िया का रोना और उसके पिता जैसे दिखने वाले आदमी का पेड़ पर चढ़ना सपना नहीं था। ये सब सच में हुआ था। तो फिर इसका और उसका कोई संबंध नहीं हो सकता। अजीब बात यह थी कि वह सपने में ही असली गड्ढा खोद रहा था। तो वह कैसे समझे कि क्या सपना है और क्या नहीं? क्या यह फावड़ा असली था? या फिर सपने का फावड़ा?

चढ़कर लड़का अपने गर्म, आरामदायक कमरे में लौट आया। उसने अपने पैरों से कीचड़ झाड़कर कूड़ेदान में डाल दिया ताकि चादर गंदी न हो, और बिस्तर पर लेटने लगा। लेकिन तभी उसे एहसास हुआ कि वहाँ पहले से ही कोई लेटा हुआ है। कोई उसके बिस्तर पर, चादर के नीचे, उसकी जगह सो रहा था।
अब गुस्से में आकर लड़के ने चादर हटा दी। “अरे, यहाँ से हट जाओ! यह मेरा बिस्तर है!” वह उस व्यक्ति पर चिल्लाना चाहता था। लेकिन उसकी आवाज़ नहीं निकली, क्योंकि बिस्तर पर वह खुद था। वह पहले से ही अपने बिस्तर पर सो रहा था, शांति से साँस ले रहा था। लड़का वहीं जम गया, कुछ बोल नहीं पा रहा था। अगर मैं यहाँ सो रहा हूँ, तो यह मैं कहाँ सोऊँ? अब, पहली बार, लड़के को डर लगा, ऐसा डर जो उसे अंदर तक कंपा देगा। लड़का चिल्लाना चाहता था। वह जितना हो सके ज़ोर से चीखना चाहता था ताकि सोए हुए खुद को और घर में बाकी सबको जगा सके। लेकिन उसकी आवाज़ नहीं निकली। उसने पूरी ताकत लगा दी, लेकिन कोई आवाज़ नहीं निकली। बिलकुल भी नहीं। इसलिए उसने अपना हाथ अपने सोए हुए शरीर के कंधे पर रखा और उसे जितना हो सके ज़ोर से हिलाया। लेकिन सोता हुआ लड़का नहीं जागा।

•

अब उसके पास और कोई चारा नहीं था। लड़के ने अपना रुमाल उतारकर ज़मीन पर फेंक दिया। फिर उसने अपने सोए हुए शरीर को बिस्तर के बीच से ज़ोर से धक्का देकर किनारे पर बची छोटी सी जगह में ठूंस लिया। उसे यहाँ अपनी जगह बनानी ही थी। वरना, उसे इस दुनिया से बाहर धकेल दिया जाता जहाँ वह रहता था। तंग जगह में और बिना तकिए के भी, लेटते ही लड़के को ज़बरदस्त नींद आने लगी। वह कुछ सोच नहीं पा रहा था। अगले ही पल, वह गहरी नींद में सो गया।

सुबह जब लड़का जागा, तो वह बिस्तर के बीचोंबीच अकेला था। हमेशा की तरह उसका तकिया उसके सिर के नीचे था। वह धीरे-धीरे उठा और कमरे में चारों ओर देखा। पहली नज़र में कमरा बदला हुआ सा लग रहा था। वही डेस्क, वही अलमारी, वही कोठरी, वही फ्लोर लैंप था। दीवार घड़ी की सुइयाँ छह बजकर बीस मिनट पर थीं। लेकिन लड़के को कुछ अजीब लगा। सब कुछ वैसा ही दिख रहा था, लेकिन यह वह जगह नहीं थी जहाँ वह पिछली रात सोया था। हवा, रोशनी, आवाज़ें, गंध, सब कुछ पहले से थोड़ा अलग था। दूसरे लोग शायद ध्यान न दें, लेकिन लड़का जानता था। उसने चादर हटाई और खुद को देखा। उसने अपने हाथ ऊपर उठाए और बारी-बारी से अपनी उंगलियाँ हिलाईं। वे सामान्य रूप से हिल रही थीं। और उसके पैर भी हिल रहे थे। उसे कोई दर्द या खुजली महसूस नहीं हुई। वह बिस्तर से उठा और शौचालय चला गया। पेशाब करने के बाद, वह सिंक के पास खड़ा हुआ और आईने में अपना चेहरा देखा। उसने अपने पजामा का ऊपरी हिस्सा उतारा, कुर्सी पर खड़ा हुआ और अपने गोरे रंग के छोटे से शरीर के प्रतिबिंब को देखा। उसे कुछ भी असामान्य नहीं लगा।
फिर भी कुछ अलग था। उसे ऐसा लगा जैसे उसका अस्तित्व एक नए पात्र में समा गया हो। वह जानता था कि वह अभी भी अपने इस नए शरीर से पूरी तरह अभ्यस्त नहीं हुआ है। उसे लगा कि इस शरीर में कुछ ऐसा है जो उसके मूल स्वरूप से मेल नहीं खाता। अचानक असहायता की भावना ने उसे घेर लिया और उसने अपनी माँ को पुकारने की कोशिश की, लेकिन शब्द उसके गले से नहीं निकले। उसकी स्वरयंत्र हवा में गूंजने में असमर्थ थे, मानो "माँ" शब्द ही दुनिया से गायब हो गया हो। कुछ ही देर में लड़के को एहसास हुआ कि शब्द गायब नहीं हुआ था।

एम का गुप्त इलाज

•

गुप्त विद्याओं से कलंकित शो बिजनेस जगत
[द मंथली, नवंबर से]

... मनोरंजन जगत के सदस्यों के बीच एक तरह का जुनून बन चुके ये तांत्रिक उपचार मुख्य रूप से मौखिक रूप से फैलते हैं, लेकिन कुछ मामलों में इन पर कुछ गुप्त संगठनों की छाप होती है।
उदाहरण के तौर पर, "एम" को ही लीजिए: 33 वर्षीय एम ने दस साल पहले एक टीवी ड्रामा सीरियल में सहायक अभिनेत्री के रूप में अपने करियर की शुरुआत की, जिसे काफी सराहा गया। तब से वह टीवी और फिल्मों में मुख्य भूमिकाएं निभा रही हैं। छह साल पहले उन्होंने एक होनहार रियल एस्टेट डेवलपर से शादी की। शादी के पहले दो साल बिना किसी परेशानी के बीते। उनका व्यवसाय खूब फला- फूला और उन्होंने फिल्मों में भी बेहतरीन अभिनय किया। लेकिन फिर उनके नाम पर खोला गया साइडलाइन डिनर क्लब और बुटीक मुश्किल में पड़ गया और उनके पति ने चेक बाउंस करना शुरू कर दिया, जिसकी जिम्मेदारी एम पर आ गई। शुरू से ही व्यवसाय में आने की इच्छुक न होने के बावजूद, एम को उनके पति ने मजबूर कर दिया था, जो अपना व्यवसाय बढ़ाना चाहते थे। एक मत यह भी है कि पति किसी तरह के घोटाले का शिकार हो गए थे। इसके अलावा, एम और उनके ससुराल वालों के बीच हमेशा से ही गंभीर मतभेद रहे थे।
जल्द ही एम और उसके पति के बीच चल रही अनबन की अफवाहें फैल गईं और कुछ ही समय में दोनों अलग रहने लगे। दो साल पहले एक मध्यस्थ

की मदद से उन्होंने अपने कर्ज का निपटारा किया और तलाक की औपचारिक कार्यवाही पूरी कर ली, लेकिन उसके बाद एम में अवसाद के लक्षण दिखने लगे और थेरेपी की ज़रूरत ने उन्हें लगभग काम से रिटायर कर दिया। जिस स्टूडियो में वह काम करती थी, वहां के एक सूत्र के अनुसार, तलाक के बाद एम को अक्सर गंभीर भ्रम होने लगे थे। उन्होंने एंटीडिप्रेसेंट दवाओं से अपना स्वास्थ्य खराब कर लिया और हालत इस हद तक पहुंच गई कि लोग कहने लगे, "अभिनेत्री के तौर पर उनका करियर खत्म हो चुका है।" हमारे सूत्र ने बताया, "अभिनय के लिए ज़रूरी एकाग्रता की शक्ति उनमें खत्म हो गई थी और उनके रूप-रंग में जो बदलाव आया, वह चौंकाने वाला था। यह भी एक वजह थी कि वह स्वभाव से गंभीर थीं और छोटी-छोटी बातों पर इतना सोचती थीं कि उसका असर उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने लगा। कम से कम आर्थिक निपटारे से उनकी आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक हो गई थी, इसलिए वह कुछ समय तक बिना काम किए गुज़ारा कर सकती थीं।"
एम की एक दूर की रिश्तेदार एक प्रसिद्ध राजनेता और पूर्व मंत्रिमंडल मंत्री की पत्नी थीं। एम उनके लिए लगभग बेटी के समान थीं, जिन्होंने उन्हें एक ऐसी महिला से मिलवाया जो बहुत ही सीमित, उच्च वर्ग के ग्राहकों के लिए आध्यात्मिक उपचार करती थीं। एम एक साल तक नियमित रूप से अवसाद के इलाज के लिए उनके पास जाती रहीं, लेकिन यह उपचार वास्तव में क्या था, यह कोई नहीं जानता। एम ने खुद इसे पूरी तरह गुप्त रखा। जो भी था, ऐसा लगता है कि इससे फायदा हुआ। कुछ ही समय बाद एम ने अवसादरोधी दवाएं लेना बंद कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप दवा के कारण होने वाली उनकी सूजन गायब हो गई, उनके बाल फिर से घने हो गए और उनकी सुंदरता लौट आई। वे मानसिक रूप से भी ठीक हो गईं और धीरे-धीरे फिर से सक्रिय हो गईं। उस समय उन्होंने उपचार बंद कर दिया।

हालांकि, इसी साल अक्टूबर में, जब उसके बुरे सपने की याद धुंधली पड़ने लगी थी, तभी एम को अचानक एक ऐसा दौरा पड़ा जिसमें बिना किसी स्पष्ट कारण के उसके लक्षण फिर से उभर आए। समय इससे बुरा नहीं हो सकता था: कुछ ही दिनों बाद उसका एक बड़ा अभिनय कार्यक्रम था, जिसे वह अपनी वर्तमान स्थिति में पूरा नहीं कर सकती थी। एम ने उस महिला से संपर्क किया और सामान्य उपचार का अनुरोध किया, लेकिन महिला ने उसे बताया कि वह अब अभ्यास नहीं करती है। उसने कहा, "मुझे खेद है, लेकिन मैं आपके लिए कुछ नहीं कर सकती। मैं अब योग्य नहीं हूं। मेरी शक्तियां समाप्त हो गई हैं। मैं आपको किसी से मिलवा सकती हूं, लेकिन आपको पूरी तरह से गोपनीयता की शपथ लेनी होगी। अगर आपने इसके बारे में किसी को एक शब्द भी बताया, तो आपको पछतावा होगा। क्या यह स्पष्ट है?"
एम को कथित तौर पर एक निश्चित स्थान पर जाने का निर्देश दिया गया था, जहाँ उसे एक ऐसे व्यक्ति के सामने लाया गया जिसके चेहरे पर नीले रंग का निशान था। लगभग तीस वर्षीय उस व्यक्ति ने एम के वहाँ रहते हुए एक शब्द भी नहीं बोला, लेकिन उसका उपचार "अत्यंत प्रभावी" रहा। एम ने यह बताने से इनकार कर दिया कि उसने उपचार के लिए कितना भुगतान किया, लेकिन हम अनुमान लगा सकते हैं कि "परामर्श शुल्क" काफी अधिक रहा होगा।
इस रहस्यमयी इलाज के बारे में हमें जो कुछ पता है, वह एम ने अपने एक भरोसेमंद और बेहद करीबी दोस्त को बताया था। सबसे पहले उसे "शहर के एक खास होटल" में जाना पड़ा, जहाँ उसकी मुलाकात एक युवक से हुई जिसका काम उसे वैद्य तक पहुँचाना था। वे एक खास अंडरग्राउंड वीआईपी पार्किंग से "एक बड़ी काली कार" में निकले और उस जगह गए जहाँ इलाज किया गया। लेकिन इलाज के बारे में हमें कुछ भी पता नहीं चल पाया है। कहा जाता है कि एम ने अपने दोस्त से

कहा था, "उन लोगों के पास अद्भुत शक्तियाँ हैं। अगर मैंने अपना वादा तोड़ा तो मेरे साथ कुछ भयानक हो सकता है।"
एम ने उस जगह का सिर्फ एक बार दौरा किया था, और उसके बाद से उसे कोई दौरा नहीं पड़ा है। हमने इलाज और उस रहस्यमयी महिला के बारे में अधिक जानकारी के लिए एम से सीधे संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन जैसा कि उम्मीद थी, उसने हमसे मिलने से इनकार कर दिया। एक विश्वसनीय सूत्र के अनुसार, यह "संगठन" आम तौर पर मनोरंजन जगत से संपर्क से बचता है और राजनीति और वित्त की अधिक गुप्त दुनिया पर ध्यान केंद्रित करता है। कला जगत में हमारे संपर्कों से अब तक कोई और जानकारी नहीं मिली है...

प्रतीक्षारत व्यक्ति

•

जिसे दूर नहीं किया जा सकता था

•

आइलैंड में कोई व्यक्ति नहीं
आठ बज चुके थे और चारों ओर अंधेरा था जब मैंने पिछला गेट खोला और गली में कदम रखा। मुझे बगल से होकर निकलना पड़ा। तीन फुट से भी कम ऊँचाई वाला गेट बाड़ के कोने में इस तरह चालाकी से छिपाया गया था कि बाहर से दिखाई न दे। गली रात के अंधेरे से बाहर निकली, हमेशा की तरह मे कासाहारा के घर के बगीचे में जल रहे पारे के दीपक की ठंडी सफेद रोशनी से जगमगा रही थी।
मैंने गेट बंद किया और गली में घुस गया। एक के बाद एक बाड़ के पार से मुझे खाने-पीने और बैठक में बैठे लोगों की झलक मिली, जो खाना खा रहे थे और टीवी पर सीरियल देख रहे थे। रसोई की खिड़कियों और एग्जॉस्ट फैन से खाने की खुशबू गली में आ रही थी। एक किशोर लड़का अपनी इलेक्ट्रिक गिटार पर तेज़ धुन बजाने का अभ्यास कर रहा था, आवाज़ धीमी थी। दूसरी मंज़िल की खिड़की में एक छोटी लड़की अपनी डेस्क पर पढ़ाई कर रही थी, उसके चेहरे पर गंभीर भाव थे। एक विवाहित जोड़ा गरमागरम बहस कर रहा था, उनकी आवाज़ गली में गूंज रही थी। एक बच्चा रो रहा था। एक टेलीफोन की घंटी बजी। वास्तविकता गली में ऐसे फैल रही थी जैसे किसी भरे हुए कटोरे से पानी छलक रहा हो—आवाज़ के रूप में, गंध के रूप में, छवि के रूप में, गुहार के रूप में, प्रतिक्रिया के रूप में।
मैंने अपने रोज़ाना वाले टेनिस शूज़ पहने ताकि मेरे कदमों की आहट सुनाई न दे। मेरी चाल न तो बहुत तेज़ थी और न ही बहुत धीमी।

ज़रूरी बात यह थी कि लोगों का ध्यान मेरी तरफ़ न जाए, ताकि कोई मेरी मौजूदगी को महसूस न कर सके। मुझे सारे मोड़ और सारी रुकावटें पता थीं। अंधेरे में भी मैं बिना किसी चीज़ से टकराए गली से निकल सकता था। जब मैं आख़िरकार अपने घर के पीछे पहुँचा, तो मैं रुका, चारों ओर देखा और नीची दीवार फांदकर अंदर चला गया। घर अंधेरे में चुपचाप दुबका हुआ था, मानो किसी विशाल जानवर का खोल हो। मैंने रसोई का दरवाज़ा खोला, बत्ती जलाई और बिल्ली का पानी बदल दिया। मैंने अलमारी से बिल्ली के खाने का डिब्बा निकाला और उसे खोला। मैकरेल ने आवाज़ सुनी और अचानक प्रकट हो गया। उसने अपना सिर मेरे पैर से कुछ बार रगड़ा, फिर अपना खाना खाने लगा। जब वह खा रहा था, मैंने फ्रिज से एक ठंडी बीयर निकाली। मैं हमेशा "घर" में ही रात का खाना खाता था—जो सिनेमन मेरे लिए बनाती थी—इसलिए यहाँ मुझे ज़्यादा से ज़्यादा सलाद या पनीर का एक टुकड़ा ही मिलता था। बीयर पीते हुए, मैंने बिल्ली को अपनी गोद में लिया और अपने हाथों से उसकी गर्माहट और कोमलता को महसूस किया। दिन भर अलग-अलग जगहों पर रहने के बाद, हम दोनों को इस बात का एहसास हुआ कि हम घर आ गए हैं।

•

लेकिन आज रात, जब मैंने अपने जूते उतारे और रसोई की बत्ती जलाने के लिए हाथ बढ़ाया, तो मुझे किसी की मौजूदगी का एहसास हुआ। मैंने अंधेरे में अपना हाथ रोक लिया और चुपचाप सांस लेते हुए सुनने की कोशिश की। मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया, लेकिन तंबाकू की हल्की सी गंध आई। घर में कोई था, कोई मेरा इंतज़ार कर रहा था, कोई जिसने शायद कुछ पल पहले सिगरेट जलाने की कोशिश छोड़ दी होगी और कुछ कश लेकर खिड़की खोल दी होगी ताकि धुआं बाहर निकल जाए, लेकिन फिर भी गंध बाकी थी। यह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता जिसे मैं

जानती हूँ। घर अभी भी बंद था, और मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानती थी जो सिगरेट पीता हो, सिवाय नटमेग अकासाका के, जो अगर मुझसे मिलना चाहती तो अंधेरे में मेरा इंतज़ार क्यों करती। सहज ही, मेरा हाथ अंधेरे में चमगादड़ को महसूस करने के लिए बढ़ा। लेकिन वह वहाँ नहीं था। वह अब कुएँ की तलहटी में था। मेरे दिल की धड़कन की आवाज़ लगभग अवास्तविक थी, मानो दिल ही मेरी छाती से निकलकर मेरे कान के पास धड़क रहा हो। मैंने अपनी साँसों को नियमित रखने की कोशिश की। शायद मुझे चमगादड़ की ज़रूरत नहीं थी। अगर कोई मुझे नुकसान पहुँचाने के लिए यहाँ होता, तो वह अंदर नहीं बैठा होता। फिर भी, मेरी हथेलियाँ उत्सुकता से खुजली कर रही थीं। मेरे हाथ चमगादड़ के स्पर्श को तरस रहे थे। मैकरेल कहीं अंधेरे से आया और हमेशा की तरह म्याऊँ करने लगा और अपना सिर मेरे पैर से रगड़ने लगा। लेकिन वह हमेशा की तरह भूखा नहीं था। मैं उसकी आवाज़ों से समझ गया। मैंने हाथ बढ़ाकर रसोई की बत्ती जला दी।
"माफ़ कीजिए, लेकिन मैंने बिल्ली को उसका खाना दे दिया है," बैठक के सोफे पर बैठे उस आदमी ने बड़ी सहजता से कहा। "मैं बहुत देर से आपका इंतज़ार कर रहा था, श्रीमान ओकाडा, और बिल्ली मेरे पैरों पर चढ़कर म्याऊं-म्याऊं कर रही थी, इसलिए - उम्मीद है आपको बुरा न लगे - मैंने अलमारी में बिल्ली के खाने का डिब्बा ढूंढा और उसे दे दिया। सच कहूँ तो, मुझे बिल्लियों के साथ ज़्यादा अच्छा व्यवहार करना नहीं आता।"
उसने उठने का कोई संकेत नहीं दिया। मैं उसे वहीं बैठे देखता रहा और कुछ नहीं बोला।
मुझे यकीन है कि यह आपके लिए काफी चौंकाने वाला था—अपने घर में किसी को अंधेरे में आपका इंतज़ार करते हुए पाना। मुझे खेद है।

सचमुच। लेकिन अगर मैंने बत्ती जला दी होती, तो शायद आप अंदर नहीं आते। यकीन मानिए, मैं आपको कोई नुकसान पहुंचाने नहीं आया हूँ, इसलिए मुझे उस नज़र से देखने की ज़रूरत नहीं है। मुझे बस आपसे थोड़ी बात करनी है।
वह एक छोटा कद का आदमी था, सूट पहने हुए। बैठे हुए उसकी लंबाई का अंदाज़ा लगाना मुश्किल था, लेकिन वह पाँच फीट से ज़्यादा लंबा नहीं रहा होगा। पैंतालीस से पचास साल के बीच का, वह गंजे सिर वाले एक गोल-मटोल छोटे मेंढक जैसा दिखता था—मे कासाहारा के वर्गीकरण के हिसाब से वह बिल्कुल A ग्रेड का था। उसके कानों के ऊपर खोपड़ी पर बालों के कुछ गुच्छे चिपके हुए थे, लेकिन उनकी अजीबोगरीब काली बनावट ने उस खाली जगह को और भी ज़्यादा उभार दिया था। उसकी नाक बड़ी थी, जो शायद थोड़ी दबी हुई थी, क्योंकि हर साँस के साथ वह धौंकनी की तरह फैलती और सिकुड़ती थी। उसकी नाक पर मोटे फ्रेम का चश्मा लगा हुआ था। वह कुछ शब्दों का उच्चारण इस तरह करता था कि उसका ऊपरी होंठ मुड़ जाता था, जिससे उसके टेढ़े-मेढ़े, तंबाकू से सने दाँत दिखाई देते थे। वह निस्संदेह, मेरी नज़र में अब तक मिले सबसे बदसूरत इंसानों में से एक था। और वह सिर्फ शारीरिक रूप से ही बदसूरत नहीं था: उसमें एक अजीब सी चिपचिपी विचित्रता थी जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता था—ठीक वैसा ही एहसास जैसा अंधेरे में किसी बड़े, अजीब से कीड़े से आपका हाथ टकराने पर होता है। वह किसी वास्तविक इंसान से ज़्यादा किसी पुराने, भूले हुए बुरे सपने के जीव जैसा दिखता था।
“अगर मैं सिगरेट पी लूँ तो क्या आपको कोई आपत्ति होगी?” उसने पूछा। “मैं पहले सिगरेट न पीने की कोशिश कर रहा था, लेकिन बिना

सिगरेट के बैठे रहना किसी यातना से कम नहीं है। यह बहुत बुरी आदत है।”
बोलने में कठिनाई महसूस करते हुए, मैंने बस सिर हिला दिया। उस अजीब से दिखने वाले आदमी ने अपनी जैकेट की जेब से एक बिना फिल्टर वाली पीस सिगरेट निकाली, उसे अपने होठों के बीच रखा और माचिस से जलाते हुए एक तेज़, सूखी सी आवाज़ निकाली। फिर उसने अपने पैरों के पास पड़ा बिल्ली के खाने का खाली डिब्बा उठाया और माचिस उसमें डाल दी। तो वह डिब्बे को ऐशट्रे की तरह इस्तेमाल कर रहा था। उसने धुएं को बड़े आनंद से अपने फेफड़ों में खींचा, अपनी घनी भौहों को एक सीधी रेखा में सिकोड़ लिया और हल्की आहें भरीं। हर लंबे कश से सिगरेट का सिरा जलते हुए कोयले की तरह चमकदार लाल हो रहा था। मैंने आँगन का दरवाज़ा खोला और बाहर की हवा अंदर आने दी। हल्की बारिश हो रही थी। मैं उसे देख या सुन नहीं पा रहा था, लेकिन उसकी गंध से मुझे पता चल गया था कि बारिश हो रही है।
उस आदमी ने भूरा सूट, सफेद कमीज और लाल टाई पहन रखी थी, सब कुछ एक ही घटिया और घिसा-पिटा था। सूट का रंग किसी पुरानी खटारा गाड़ी पर अनाड़ी पेंट जैसा लग रहा था। पैंट और जैकेट की गहरी सिलवटें हवाई तस्वीर में दिखने वाली घाटियों की तरह स्थायी लग रही थीं। सफेद कमीज पीली पड़ गई थी और सीने का एक बटन टूटने ही वाला था। ऊपर का बटन खुला और कॉलर टेढ़ा होने के कारण वह एक-दो साइज छोटी भी लग रही थी। टाई, जिस पर अजीबोगरीब पैटर्न बना हुआ था, ऐसा लग रहा था मानो ऑसमंड ब्रदर्स के ज़माने से वहीं पड़ी हो। उसे देखते ही समझ जाता कि यह आदमी कपड़ों के मामले में बिलकुल बेपरवाह है। उसने जो पहना था, वह सिर्फ इसलिए पहना था क्योंकि दूसरों से मिलते समय उसके पास कुछ पहनने के अलावा कोई चारा नहीं

था, मानो उसे कपड़े पहनने का विचार ही पसंद न हो। हो सकता है कि वह इन कपड़ों को तब तक हर दिन एक ही तरह से पहनने की योजना बना रहा हो जब तक कि वे फट न जाएं—ठीक वैसे ही जैसे कोई पहाड़ी किसान अपने गधे को सुबह से शाम तक तब तक हांकता रहता है जब तक कि वह मर न जाए।
जब उसने अपनी ज़रूरत के हिसाब से निकोटीन फेफड़ों में भर लिया, तो उसने राहत की साँस ली और उसके चेहरे पर एक अजीब सा भाव आया जो मुस्कान और व्यंग्य के बीच कहीं मंडरा रहा था। फिर उसने अपना मुँह खोला।
अच्छा, अब मैं अपना परिचय देना न भूलें। मैं आमतौर पर इतना असभ्य नहीं होता। मेरा नाम उशिकावा है। उशी का अर्थ है 'बैल' और कावा का अर्थ है 'नदी'। याद रखना आसान है, है ना? सब मुझे उशी कहते हैं। अजीब बात है: जितना ज़्यादा मैं यह सुनता हूँ, उतना ही मुझे लगता है कि मैं सचमुच एक बैल हूँ। यहाँ तक कि जब भी मैं कहीं खेत में किसी बैल को देखता हूँ, तो मुझे उससे एक तरह का अपनापन महसूस होता है। नाम अजीब चीज़ें हैं, है ना, श्रीमान ओकाडा? उदाहरण के लिए, ओकाडा को ही ले लीजिए। यह एक अच्छा, साफ-सुथरा नाम है: 'पहाड़ी-खेत'। कभी-कभी मेरी इच्छा होती है कि मेरा भी ऐसा ही कोई सामान्य नाम होता, लेकिन दुर्भाग्य से, उपनाम ऐसी चीज़ नहीं है जिसे आप अपनी मर्ज़ी से चुन सकें। एक बार जब आप इस दुनिया में उशिकावा के रूप में जन्म लेते हैं, तो आप जीवन भर उशिकावा ही रहते हैं, चाहे आपको पसंद हो या न हो। जब से मैंने बालवाड़ी जाना शुरू किया है, तब से लोग मुझे उशी ही बुलाते आ रहे हैं। इसका कोई विकल्प नहीं है। अगर किसी का नाम उशिकावा हो, तो लोग उसे उशी ही बुलाएँगे, है ना? नाम उस चीज़ को व्यक्त करता है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन मुझे लगता है कि शायद यह

उल्टा है—वह चीज़ धीरे-धीरे अपने नाम जैसी होती जाती है। खैर, मुझे उशिकावा समझिए, और अगर आपका मन करे तो मुझे उशी कहिए। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।
मैं रसोई में गया और फ्रिज से बीयर का एक कैन ले आया। मैंने उशिकावा को बीयर नहीं दी। आखिर मैंने उसे यहाँ बुलाया तो नहीं था। मैंने कुछ नहीं कहा और अपनी बीयर पी ली, और उशिकावा ने भी कुछ नहीं कहा और अपनी सिगरेट का गहरा कश लिया। मैं उसके सामने वाली कुर्सी पर नहीं बैठा, बल्कि एक खंभे से टेक लगाकर खड़ा रहा और उसे देखता रहा। आखिर में उसने खाली बिल्ली के खाने के डिब्बे में सिगरेट बुझाई और मेरी तरफ देखा।
“मुझे यकीन है कि आप सोच रहे होंगे कि मैं यहाँ कैसे आया, श्री ओकाडा। है ना? आपको पूरा यकीन होगा कि आपने दरवाजा बंद किया था। और वास्तव में, यह बंद था। लेकिन मेरे पास एक चाबी है। एक असली चाबी। देखिए, यह रही।”
उसने अपना हाथ जैकेट की जेब में डाला, एक चाबी वाला छल्ला निकाला और मुझे दिखाने के लिए ऊपर उठाया। यह वाकई इस घर की चाबी लग रही थी। लेकिन जिस चीज़ ने मेरा ध्यान खींचा, वह था चाबी रखने का स्टैंड। यह बिल्कुल कुमिको के स्टैंड जैसा था—एक साधारण हरे रंग का चमड़े का चाबी रखने का स्टैंड, जिसका छल्ला एक अनोखे तरीके से खुलता था।
“यह असली है,” उशिकावा ने कहा। “जैसा कि आप देख सकते हैं। और यह आपकी पत्नी का है। किसी भी गलतफहमी से बचने के लिए मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ: यह मुझे आपकी पत्नी कुमिको ने दिया था। मैंने इसे चुराया या जबरदस्ती नहीं लिया।”
"कुमिको कहाँ है?" मैंने लड़खड़ाती हुई आवाज़ में पूछा।

उशिकावा ने अपना चश्मा उतारा, मानो लेंस में धुंधलापन जांच रहे हों, फिर उसे वापस पहन लिया। उन्होंने कहा, "मुझे ठीक-ठीक पता है कि वह कहाँ है। दरअसल, मैं उसकी देखभाल कर रहा हूँ।"
“‘उसकी देखभाल करना’?”
“अब, मुझे गलत मत समझिए। मेरा मतलब वो नहीं है। चिंता मत कीजिए,” उशिकावा ने मुस्कुराते हुए कहा। जब वो मुस्कुराए, तो उनका चेहरा दोनों तरफ से असमान रूप से फट गया और उनके चश्मे एक कोण पर ऊपर उठ गए। “कृपया मुझे इस तरह घूरिए मत। मैं बस अपने काम के हिस्से के तौर पर उनकी मदद कर रहा हूँ—छोटे-मोटे काम कर रहा हूँ, इधर-उधर के काम कर रहा हूँ। मैं बस एक छोटा-मोटा काम करने वाला हूँ, बस। आप जानते ही हैं कि वो बाहर नहीं जा सकतीं।” “‘बाहर नहीं जा सकते’?” मैंने उसके शब्दों को फिर से दोहराया। वह एक पल के लिए झिझका, उसकी जीभ होठों पर फिर गई। “खैर, शायद आपको नहीं पता। कोई बात नहीं। मैं पक्का नहीं कह सकता कि वह बाहर नहीं जा सकती या जाना नहीं चाहती। मुझे यकीन है कि आप जानना चाहेंगे, श्री ओकाडा, लेकिन कृपया मुझसे न पूछें। मुझे भी सारी जानकारी नहीं है। लेकिन आपको चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। उसे उसकी मर्ज़ी के खिलाफ़ नहीं रखा गया है। मेरा मतलब है, यह कोई फ़िल्म या उपन्यास नहीं है। हम ऐसा नहीं कर सकते।” मैंने बीयर का कैन सावधानी से अपने पैरों के पास रख दिया। "तो बताओ, तुम यहाँ किसलिए आए हो?"
अपने घुटनों को फैली हथेलियों से कई बार थपथपाने के बाद, उशिकावा ने एक गहरी, तीखी सिर हिलाहट की। “अरे हाँ। मैं यह बताना भूल गया था, है ना? मैंने अपना परिचय देने में इतनी मेहनत की, और फिर यह बताना भूल गया कि मैं यहाँ किसलिए आया हूँ! सालों से मेरी यही एक सबसे बड़ी कमजोरी रही है: मैं फालतू की बातें

करता रहता हूँ और मुख्य बात भूल जाता हूँ। इसीलिए तो मैं हमेशा गलत काम करता हूँ! खैर, देर से ही सही, मैं बताता हूँ: मैं आपकी पत्नी कुमिको के बड़े भाई के लिए काम करता हूँ। मेरा नाम उशिकावा है—लेकिन मैंने आपको यह पहले ही बता दिया है, उशी के बारे में और बाकी सब। मैं डॉ. नोबोरू वटाया के यहाँ एक तरह का निजी सचिव हूँ—हालाँकि आम तौर पर संसद सदस्य के पास जो 'निजी सचिव' होता है, वैसा नहीं। एक खास तरह का व्यक्ति, एक श्रेष्ठ व्यक्ति ही असली 'निजी सचिव' हो सकता है। इस शब्द में कई तरह के लोग शामिल हैं। मेरा मतलब है, निजी सचिव होते हैं, और फिर निजी सचिव होते हैं, और मैं दूसरे प्रकार के निजी सचिव के जितना करीब हो सकता हूँ, उतना ही हूँ। मैं वहाँ नीचे हूँ—मेरा मतलब है, बहुत नीचे। नीचे। अगर हर जगह आत्माएं मंडरा रही हैं, तो मैं भी बाथरूम या कोठरी के कोने में छिपी उन गंदी आत्माओं में से एक हूँ। लेकिन मैं शिकायत नहीं कर सकता। अगर कोई इतना गंदा इंसान सबके सामने आ जाए, तो सोचिए डॉ. वटाया की साफ-सुथरी छवि का क्या हाल हो जाएगा! नहीं, कैमरों का सामना करने वाले तो स्मार्ट और बुद्धिमान दिखने वाले होने चाहिए, गंजे बौने नहीं। 'हैलो दोस्तों, मैं हूँ डॉ. वटाया का निजी सचिव।' क्या मज़ाक है! है ना, मिस्टर ओकाडा?
जब वह लगातार बकबक करता रहा तो मैं चुप रहा।
“तो डॉक्टर के लिए मैं जो काम करता हूँ, वो सब छिपे हुए काम हैं, एक तरह से कहें तो ‘गुप्त’ काम, वो काम जो सबके सामने नहीं होते। मैं बरामदे के नीचे बैठकर काम करने वाला हूँ। ऐसे काम मेरी खासियत हैं। जैसे कि ये सुश्री कुमिको का मामला। लेकिन मुझे गलत मत समझिएगा: ये मत सोचिए कि उनकी देखभाल करना किसी मामूली कर्मचारी का काम मात्र है। अगर मेरी बातों से आपको ऐसा लगा है,

तो ये बिलकुल झूठ है। आखिर सुश्री कुमिको डॉक्टर की इकलौती प्यारी छोटी बहन हैं। यकीन मानिए, मुझे इतना महत्वपूर्ण काम सौंपे जाने पर बहुत गर्व है!”
वैसे, यह शायद थोड़ा असभ्य लगे, लेकिन क्या मैं आपसे एक बियर मांग सकता हूँ? इतनी बातें करने से मुझे बहुत प्यास लग गई है। अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं खुद ही एक बियर ले आता हूँ। मुझे पता है बियर कहाँ रखी है। इंतज़ार करते-करते मैंने फ्रिज में झाँक लिया।
मैंने उसे सिर हिलाकर सहमति दी। उशिकावा रसोई में गया और फ्रिज से बीयर की एक बोतल ले आया। फिर वह सोफे पर बैठ गया और बड़े चाव से सीधे बोतल से ही पीने लगा, उसकी बड़ी सी कंठ उसकी टाई की गांठ के ऊपर किसी जानवर की तरह फड़क रही थी।
“मैं आपसे कहता हूँ, श्री ओकाडा, दिन के अंत में एक ठंडी बीयर जीवन की सबसे अच्छी चीज़ है। कुछ नखरेबाज़ लोग कहते हैं कि ज़्यादा ठंडी बीयर का स्वाद अच्छा नहीं होता, लेकिन मैं इससे बिल्कुल सहमत नहीं हूँ। पहली बीयर इतनी ठंडी होनी चाहिए कि उसका स्वाद ही न आए। दूसरी थोड़ी कम ठंडी होनी चाहिए, लेकिन मैं चाहता हूँ कि पहली बीयर बर्फ़ जैसी ठंडी हो। मैं चाहता हूँ कि वह इतनी ठंडी हो कि मेरे सिर में दर्द होने लगे। यह तो ज़ाहिर सी बात है, मेरी निजी पसंद है।”
खंभे से टेक लगाकर खड़े-खड़े मैंने अपनी बियर का एक और घूंट लिया। होंठ कसकर बंद करके उशिकावा ने कुछ पल कमरे का जायजा लिया।
श्री ओकाडा, मुझे कहना पड़ेगा कि पत्नीविहीन होकर भी आप घर को बहुत साफ रखते हैं। मैं बहुत प्रभावित हूँ। मैं खुद तो बिल्कुल निकम्मा हूँ, यह कहते हुए मुझे शर्म आ रही है। मेरा घर तो

बिल्कुल गंदा है, कूड़े का ढेर है, सूअरों का बाड़ा है। मैंने बाथटब को एक साल से भी ज्यादा समय से नहीं धोया है। शायद मैंने आपको यह बताना भूल गया कि मेरी पत्नी ने भी मुझे छोड़ दिया था। पाँच साल पहले। इसलिए श्री ओकाडा, मैं आपके लिए कुछ सहानुभूति महसूस कर सकता हूँ, या गलतफहमी से बचने के लिए, मैं बस इतना कहूँगा कि मैं समझ सकता हूँ कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं। बेशक, मेरी स्थिति आपकी स्थिति से अलग थी। मेरी पत्नी का मुझे छोड़ना स्वाभाविक ही था। मैं दुनिया का सबसे बुरा पति था। शिकायत करने की बजाय, मुझे उसकी प्रशंसा करनी चाहिए कि उसने इतने लंबे समय तक मुझे सहन किया। मैं उसे पीटता था। किसी और को नहीं: वही अकेली थी जिसे मैं पीट सकता था। आप समझ सकते हैं कि मैं कितना कमजोर हूँ। मेरा दिल तो एक मक्खी जितना है। मैं घर के बाहर सिर्फ चापलूसी करता था; लोग मुझे बुलाते थे। उशी मुझे आदेश देती रहती थी और मैं उनकी और भी ज़्यादा चापलूसी करता था। इसलिए जब मैं घर आता तो अपनी पत्नी पर गुस्सा निकालता था। हा हा हा—काफी बुरा, है ना? और मुझे पता था कि मैं कितना बुरा था, लेकिन मैं रुक नहीं पाता था। यह एक बीमारी की तरह था। मैं उसका चेहरा इतना बिगाड़ देता था कि उसे पहचानना मुश्किल हो जाता था। और सिर्फ पीटता ही नहीं था: मैं उसे दीवार से धक्का देता, लात मारता, उस पर गर्म चाय डालता, उस पर चीजें फेंकता, न जाने क्या-क्या करता। बच्चे मुझे रोकने की कोशिश करते, और मैं उन्हें पीट देता। छोटे बच्चे: सात, आठ साल के। और सिर्फ धक्का ही नहीं देता था: मैं अपनी पूरी ताकत से उन्हें पीटता था। मैं बिलकुल शैतान था। मैं खुद को रोकने की कोशिश करता, लेकिन रोक नहीं पाता था। मैं खुद पर काबू नहीं रख पाता था। एक समय के बाद, मैं खुद से कहता कि मैंने बहुत नुकसान कर दिया है, मुझे रुकना होगा, लेकिन मुझे पता नहीं था कि कैसे

रुकूं। क्या आप देख सकते हैं कि मैं कितना भयानक था? फिर, पाँच साल पहले, जब मेरी बेटी जब मेरी पत्नी पाँच साल की थी, मैंने उसका हाथ तोड़ दिया—बिल्कुल चटका दिया। तभी मेरी पत्नी मुझसे तंग आ गई और दोनों बच्चों को लेकर चली गई। तब से मैंने उनमें से किसी को नहीं देखा। उनसे कोई बात भी नहीं हुई। लेकिन मैं क्या करूँ? ये सब मेरी ही गलती है।
मैंने उससे कुछ नहीं कहा। बिल्ली मेरे पास आई और हल्की सी म्याऊं की, मानो मेरा ध्यान अपनी ओर खींचना चाहती हो।
खैर, मुझे माफ़ करना, मैं आपको इन उबाऊ बातों से थकाना नहीं चाहता था। आप सोच रहे होंगे कि क्या आज शाम मुझे यहाँ आने का कोई काम है? जी हाँ, है। श्री ओकाडा, मैं यहाँ यूँ ही बातचीत करने नहीं आया हूँ। डॉक्टर - यानी डॉ. वटाया - ने मुझे आपसे मिलने का आदेश दिया है। अब मैं आपको वही बताऊंगा जो उन्होंने मुझे बताया है, इसलिए कृपया ध्यान से सुनें।
“सबसे पहले, डॉ. वटाया को आपके और सुश्री कुमिको के बीच संबंधों पर पुनर्विचार करने में कोई आपत्ति नहीं है। दूसरे शब्दों में, अगर आप दोनों अपने पुराने रिश्ते में वापस लौटना चाहें, तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी। फिलहाल, सुश्री कुमिको की ऐसी कोई मंशा नहीं है, इसलिए तुरंत कुछ नहीं होगा, लेकिन अगर आप तलाक की किसी भी संभावना को नकार दें और जितना समय लगे उतना इंतजार करने पर जोर दें, तो वे इसे स्वीकार कर सकते हैं। वे अब तलाक के लिए जोर नहीं देंगे, जैसा कि वे पहले देते थे, इसलिए अगर आप सुश्री कुमिको से कुछ कहना चाहें, तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी अगर आप मुझे माध्यम बनाकर उनसे बात करना चाहें। दूसरे शब्दों में, अब हर छोटी बात पर झगड़ा नहीं: एक तरह से कूटनीतिक

संबंधों का नवीनीकरण। यह पहला मुद्दा है। श्री ओकाडा, इस बारे में आपका क्या विचार है?”
मैं ज़मीन पर बैठ गया और बिल्ली के सिर पर हाथ फेरा, लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा। उशिकावा ने कुछ देर तक मुझे और बिल्ली को देखा, फिर बोलना शुरू किया।
“जी हाँ, श्रीमान ओकाडा, जब तक आप मेरी सारी बातें नहीं सुन लेते, तब तक आप एक शब्द भी नहीं बोल सकते। ठीक है, तो मैं अंत तक बोलता हूँ। ये दूसरा मुद्दा है। मुझे खेद है कि यह थोड़ा पेचीदा है। इसका संबंध ‘द हैंगिंग हाउस’ नामक एक लेख से है, जो एक साप्ताहिक पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। मुझे नहीं पता कि आपने इसे पढ़ा है या नहीं, श्रीमान ओकाडा, लेकिन यह बहुत ही रोचक लेख है। बढ़िया लिखा गया है। ‘सेतागाया के पॉश रिहायशी इलाके में मनहूस ज़मीन। वर्षों से वहाँ कई लोगों की असमय मृत्यु हुई है। किस रहस्यमय व्यक्ति ने हाल ही में वह जगह खरीदी है? उस ऊँची बाड़ के पीछे क्या चल रहा है? एक के बाद एक रहस्य…’”
खैर, डॉ. वटाया ने वह लेख पढ़ा और उन्हें एहसास हुआ कि 'फांसी वाला घर' आपके घर के बहुत करीब है, श्री ओकाडा। उनके मन में यह ख्याल घर कर गया कि शायद इसका आपसे कोई संबंध हो। इसलिए उन्होंने छानबीन की... या यूं कहूं कि बेचारे उशिकावा ने, अपने छोटे-छोटे पैरों से, इस मामले की छानबीन करने की हिम्मत जुटाई, और - वाह! - आप वहीं थे, श्री ओकाडा, जैसा कि उन्होंने अनुमान लगाया था, हर रोज उस पिछले रास्ते से दूसरे घर में आते-जाते, जाहिर तौर पर अंदर जो कुछ भी चल रहा था, उसमें आपका पूरा हाथ था। मैं खुद डॉ. वटाया की इतनी गहरी समझ देखकर सचमुच चकित रह गया। “अभी तक तो सिर्फ़ एक ही लेख छपा है, और उसके बाद कोई अपडेट नहीं आया, पर कौन जाने? बुझती हुई चिंगारी फिर से भड़क सकती है। मतलब,

ये तो काफ़ी दिलचस्प कहानी है। तो डॉ. वटाया काफ़ी घबराए हुए हैं। अगर उनके बहनोई का नाम किसी अप्रिय घटना में सामने आ जाए तो क्या होगा? सोचिए कितना बड़ा घोटाला हो सकता है! आख़िरकार, डॉ. वटाया इस समय चर्चा में हैं। मीडिया को तो जैसे तमाशा ही मिल जाएगा। और फिर आपके और सुश्री कुमिको के साथ ये मुश्किल मामला भी है। वे इसे हद से ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर पेश करेंगे। मतलब, हर किसी के पास कुछ न कुछ ऐसा होता है जिसे वो सार्वजनिक रूप से ज़ाहिर नहीं करना चाहता, है ना? खासकर जब बात निजी मामलों की हो। आख़िरकार, डॉक्टर के राजनीतिक करियर का ये एक नाज़ुक मोड़ है। उन्हें पूरी सावधानी से आगे बढ़ना होगा जब तक कि वो उड़ान भरने के लिए तैयार न हो जाएं। तो उन्होंने आपके लिए एक तरह का सौदा सोच रखा है। अगर आप इस ‘फांसी के घर’ से सारे संबंध तोड़ देंगे, श्री ओकाडा, तो वो आपको और सुश्री कुमिको फिर से एक साथ आ गई हैं। बस इतना ही है। श्री ओकाडा, आपको यह कैसा लगा? क्या मैंने इसे स्पष्ट रूप से समझा दिया है?
मैंने कहा, "शायद।"
तो आप क्या सोचते हैं? इस सब पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है? बिल्ली की गर्दन सहलाते हुए, मैंने कुछ देर सोचा। फिर मैंने कहा, "मुझे समझ नहीं आ रहा। नोबोरू वटाया को ऐसा क्यों लगा कि उस घर से मेरा कोई संबंध है? उसने यह बात कैसे समझी?"
उशिकावा के चेहरे पर एक बार फिर वही बड़ी मुस्कान खिल उठी, लेकिन उसकी आँखें काँच की तरह ठंडी थीं। उसने अपनी जेब से सिगरेट का एक कुचला हुआ पैकेट निकाला और माचिस से जलाया। “आह, श्रीमान ओकाडा, आप इतने मुश्किल सवाल पूछते हैं। याद रखिए, मैं तो बस एक मामूली संदेशवाहक हूँ। एक बेवकूफ कबूतर। मैं कागज़ की पर्चियाँ इधर-उधर पहुँचाता हूँ। मुझे लगता है आप समझते हैं।

लेकिन मैं इतना ज़रूर कह सकता हूँ: डॉक्टर कोई मूर्ख नहीं हैं। उन्हें अपने दिमाग का इस्तेमाल करना आता है, और उनके पास एक तरह की छठी इंद्री है, जो आम लोगों के पास नहीं होती। और श्रीमान ओकाडा, मैं आपको यह भी बता दूँ: उनके पास एक ऐसी असली शक्ति है जिसका वे इस दुनिया में इस्तेमाल कर सकते हैं, एक ऐसी शक्ति जो हर दिन और मज़बूत होती जा रही है। बेहतर होगा कि आप इसे नज़रअंदाज़ न करें। हो सकता है कि आपके उन्हें नापसंद करने के अपने कारण हों—और जहाँ तक मेरा सवाल है, यह बिल्कुल ठीक है, इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं—लेकिन बात सिर्फ़ पसंद-नापसंद से आगे बढ़ चुकी है। मैं चाहता हूँ कि आप यह समझें।”
“अगर नोबोरू वटाया इतना शक्तिशाली है, तो वह पत्रिका को और लेख प्रकाशित करने से क्यों नहीं रोक देता? यह कहीं ज्यादा आसान होगा।”
उशिकावा मुस्कुराया। फिर उसने सिगरेट का एक गहरा कश लिया। “प्रिय श्री ओकाडा, आपको ऐसी गैरजिम्मेदाराना बातें नहीं कहनी चाहिए। आखिर हम जापान में रहते हैं, जो दुनिया के सबसे सच्चे लोकतांत्रिक देशों में से एक है। सही कहा ना? यह कोई तानाशाही नहीं है जहाँ चारों ओर सिर्फ केले के बागान और फुटबॉल के मैदान ही दिखाई देते हों। इस देश में किसी राजनेता के पास चाहे कितनी भी शक्ति क्यों न हो, किसी पत्रिका में छपे लेख को दबाना आसान नहीं है। यह बेहद खतरनाक होगा। आप शायद कंपनी के बड़े अधिकारियों को अपने वश में करने में सफल हो जाएँ, लेकिन कोई न कोई असंतुष्ट रह जाएगा। और इससे मामला और भी ज्यादा चर्चा में आ सकता है। जब इतनी संवेदनशील खबर हो तो लोगों को धमकाने की कोशिश करना उचित नहीं है। यह सच है।”

“और सच कहूँ तो, इस मामले में कुछ शातिर लोग शामिल हो सकते हैं, जिनके बारे में आपको कुछ पता नहीं है, श्री ओकाडा। अगर ऐसा है, तो इसमें हमारे प्यारे डॉक्टर से भी ज़्यादा लोग शामिल होंगे। एक बार ऐसा हो गया, तो मामला पूरी तरह से बदल जाएगा। चलिए इसकी तुलना दंत चिकित्सक के पास जाने से करते हैं। अभी तक हम उस जगह पर हैं जहाँ नोवोकेन का असर अभी भी है। इसीलिए कोई शिकायत नहीं कर रहा है। लेकिन जल्द ही ड्रिल किसी नस पर लग जाएगी, और फिर कोई कुर्सी से उछल पड़ेगा। कोई बहुत गुस्सा हो सकता है। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? मैं आपको धमकाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, लेकिन मुझे—यहाँ बूढ़े उशिकावा को—लगता है कि आपको धीरे- धीरे बिना एहसास हुए ही खतरनाक रास्ते पर घसीटा जा रहा है।” अंततः उशिकावा अपनी बात समझाने में सफल प्रतीत हुए।
मैंने पूछा, "क्या आपका मतलब है कि मुझे चोट लगने से पहले ही पीछे हट जाना चाहिए?"
उशिकावा ने सिर हिलाया। "यह तो एक्सप्रेसवे के बीचोंबीच कैच-कैच खेलने जैसा है, श्री ओकाडा। यह बहुत खतरनाक खेल है।"
इसके अलावा, इससे नोबोरू वटाया को बहुत परेशानी होगी। इसलिए अगर मैं हार मान लेता हूँ, तो वह मुझे कुमिको से मिलवा देगा। उशिकावा ने फिर सिर हिलाया। "बस यही बात है।"
मैंने बीयर का एक घूंट लिया। फिर मैंने कहा, “सबसे पहले, मैं आपको यह बता दूं। मैं कुमिको को वापस लाऊंगा, लेकिन मैं यह खुद करूंगा, नोबोरू वटाया की मदद से नहीं। मुझे उसकी मदद नहीं चाहिए। और आप एक बात में बिल्कुल सही हैं: मुझे नोबोरू वटाया पसंद नहीं है। जैसा कि आपने कहा, यह सिर्फ पसंद-नापसंद का मामला नहीं है। यह उससे कहीं अधिक बुनियादी बात है। मैं उसे सिर्फ नापसंद नहीं करता: मैं उसके अस्तित्व को ही स्वीकार नहीं कर

सकता। इसलिए मैं उससे कोई समझौता नहीं करूंगा। कृपया मेरी ओर से उसे यह बात बता दीजिएगा। और मेरी अनुमति के बिना फिर कभी इस घर में मत आना। यह मेरा घर है, कोई होटल की लॉबी या रेलवे स्टेशन नहीं।”
उशिकावा ने अपनी आँखें सिकोड़ीं और चश्मे के पीछे से कुछ देर तक मुझे घूरते रहे। उनकी आँखें हिली नहीं। पहले की तरह, उनमें कोई भाव नहीं था। ऐसा नहीं था कि वे भावहीन थीं। बल्कि, उस समय उनके चेहरे पर जो भाव थे, वे बस अस्थायी रूप से बनावटी थे। उसी क्षण, उन्होंने अपनी अत्यधिक बड़ी दाहिनी हथेली ऊपर उठाई, मानो बारिश की जाँच कर रहे हों।
“मैं पूरी तरह समझता हूँ,” उन्होंने कहा। “मैंने कभी सोचा नहीं था कि यह इतना आसान होगा, इसलिए आपके जवाब से मुझे कोई खास हैरानी नहीं हुई। वैसे भी, मुझे आसानी से हैरानी नहीं होती। मैं समझता हूँ कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं, और मुझे खुशी है कि सब कुछ खुलकर सामने आ गया है, कोई आनाकानी नहीं, बस एक सीधा हाँ या ना। इससे सबके लिए आसानी हो जाती है। मुझे तो बस एक और उलझा हुआ जवाब चाहिए जिसमें काले-सफेद में फर्क करना मुश्किल हो! दुनिया में पहले से ही ऐसे जवाबों की भरमार है! मैं शिकायत नहीं कर रहा, लेकिन मुझे लगता है कि हर दिन मुझे बस पहेलियाँ ही मिलती हैं। यह काम मेरी सेहत के लिए खराब है, मैं आपको बता दूँ। इस तरह जीने से, देखते ही देखते, इंसान स्वभाव से ही कुटिल हो जाता है। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं, श्री ओकाडा? आप शक्की हो जाते हैं, हमेशा छिपे हुए इरादों की तलाश में रहते हैं, कभी भी किसी स्पष्ट और सरल बात पर भरोसा नहीं कर पाते। यह बहुत बुरी बात है, श्री ओकाडा, सच में।”

“तो ठीक है, श्रीमान ओकाडा, मैं डॉक्टर को बता दूँगी कि आपने उन्हें एकदम स्पष्ट जवाब दे दिया है। लेकिन यह मत सोचिए कि बात यहीं खत्म हो जाएगी। आप शायद इस मामले को खत्म करना चाहते हों, पर यह इतना आसान नहीं है। मुझे शायद आपसे दोबारा मिलने आना पड़ेगा। मुझे खेद है कि आपको इस तरह के बदसूरत, गंदे छोटे से साथी से निपटना पड़ रहा है, लेकिन कृपया कम से कम मेरे अस्तित्व को स्वीकार करने की कोशिश कीजिए। श्रीमान ओकाडा, मेरे मन में आपके प्रति कोई भावना नहीं है। सच में। लेकिन फिलहाल, चाहे आपको पसंद हो या न हो, मैं उन चीजों में से एक रहूँगी जिन्हें आप यूँ ही मिटा नहीं सकते। मुझे पता है कि यह कहने का एक अजीब तरीका है, लेकिन कृपया मुझे इसी तरह समझने की कोशिश कीजिए। मैं आपको एक बात का वादा कर सकती हूँ। मैं दोबारा आपके घर में नहीं घुसूँगी। आप बिल्कुल सही हैं: यह व्यवहार करने का सही तरीका नहीं है। मुझे घुटनों पर बैठकर भीख माँगनी चाहिए थी। इस बार मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। कृपया समझने की कोशिश कीजिए। मैं हमेशा ऐसी नहीं रहती।” कितना लापरवाह! देखने में भले ही ऐसा लगे, लेकिन मैं एक साधारण इंसान हूँ। अब से मैं दूसरों की तरह पहले फोन करूँगा। ठीक रहेगा, है ना? मैं एक बार घंटी बजाऊँगा, फिर रख दूँगा, फिर दोबारा घंटी बजाऊँगा। इस तरह आपको पता चल जाएगा कि मैं ही हूँ, और फोन उठाते समय आप खुद से कह सकते हैं, 'अरे, फिर से वही बेवकूफ उशिकावा है।' लेकिन फोन जरूर उठा लेना। वरना मेरे पास दोबारा अंदर आने के अलावा कोई चारा नहीं बचेगा। वैसे तो मैं ऐसा करना नहीं चाहता, लेकिन मुझे पूंछ हिलाने के लिए पैसे मिलते हैं, इसलिए जब मेरा बॉस कहता है 'करो!' तो मुझे पूरी कोशिश करनी पड़ती है। समझे?

मैंने उससे कुछ नहीं कहा। उशिकावा ने बिल्ली के खाने के डिब्बे के नीचे अपनी सिगरेट का बचा हुआ हिस्सा मसल दिया, फिर अचानक कुछ याद आने पर अपनी घड़ी पर नज़र डाली। “अरे बाप रे—देखो कितनी देर हो गई! पहले मैं धक्के मारते हुए आया, फिर तुमसे बातें करते- करते थक गया और तुम्हारी बीयर ले ली। मुझे माफ़ कर दीजिए। जैसा कि मैंने पहले कहा था, मेरे पास घर जाने के लिए कोई नहीं है, इसलिए जब मुझे कोई बात करने वाला मिल जाता है, तो मैं यहीं रात बिता देता हूँ। दुख की बात है, है ना? मैं आपको बता दूँ, श्री ओकाडा, अकेले रहना ज़्यादा दिन तक नहीं चलना चाहिए। कहते हैं ना? ‘कोई भी इंसान अकेला नहीं रह सकता।’ या फिर ‘खाली हाथों में शैतान की छुप होती है’?”
अपनी गोद से कुछ काल्पनिक धूल झाड़ने के बाद, उशिकावा धीरे-धीरे खड़ा हो गया।
“मुझे बाहर तक छोड़ने की ज़रूरत नहीं,” उसने कहा। “मैं खुद अंदर आया था; मैं खुद बाहर भी जा सकता हूँ। मैं दरवाज़ा ज़रूर बंद कर दूँगा। लेकिन श्री ओकाडा, एक आख़िरी सलाह, भले ही आप इसे सुनना न चाहें: इस दुनिया में कुछ ऐसी बातें हैं जिनके बारे में न जानना ही बेहतर है। बेशक, लोग उन्हीं बातों के बारे में सबसे ज़्यादा जानना चाहते हैं। यह अजीब है। मुझे पता है मैं बहुत सामान्य बातें कर रहा हूँ… पता नहीं हम फिर कब मिलेंगे? उम्मीद है तब तक हालात बेहतर हो जाएँगे। अच्छा, शुभ रात्रि।”

•

रात भर हल्की बारिश होती रही, भोर होते-होते यह धीमी पड़ गई, लेकिन उस अजीब से छोटे आदमी की चिपचिपी उपस्थिति और उसकी बिना फिल्टर वाली सिगरेट की गंध घर में तब तक बनी रही जब तक कि बची हुई नमी भी बरकरार रही।

सिनेमन की विचित्र सांकेतिक भाषा

•

संगीतमय प्रस्तुति
“सिनेमन ने अपने छठे जन्मदिन से ठीक पहले हमेशा के लिए बोलना बंद कर दिया,” नटमेग ने मुझसे कहा। “यह वही साल था जब उसे प्राथमिक विद्यालय में दाखिला लेना चाहिए था। अचानक, उस फरवरी में, उसने बोलना बंद कर दिया। और यह कितना भी अजीब लगे, रात होने तक हमें पता ही नहीं चला कि उसने पूरे दिन एक शब्द भी नहीं बोला था। सच है, वह वैसे भी ज्यादा बोलने वाला नहीं था, लेकिन फिर भी। जब आखिरकार मुझे समझ आया कि क्या हो रहा है, तो मैंने उसे बुलवाने के लिए हर संभव कोशिश की। मैंने उससे बात की, उसे हिलाया; कुछ भी काम नहीं आया। वह पत्थर की तरह था। मुझे नहीं पता था कि उसने अचानक बोलने की शक्ति खो दी थी या उसने खुद ही बोलने से मना कर दिया था। और मुझे अब भी नहीं पता। लेकिन उसने फिर कभी एक शब्द भी नहीं बोला—कभी कोई आवाज़ नहीं निकाली। दर्द होने पर वह कभी चीखता नहीं है, और आप उसे गुदगुदी कर सकते हैं लेकिन वह कभी ज़ोर से नहीं हँसेगा।”
नटमेग अपने बेटे को कई अलग-अलग कान, नाक और गले के विशेषज्ञों के पास ले गई, लेकिन उनमें से कोई भी कारण का पता नहीं लगा सका। वे केवल इतना ही बता पाए कि यह शारीरिक समस्या नहीं थी। सिनेमन को सुनाई तो बिल्कुल नहीं देता था, लेकिन वह बोलता नहीं था। सभी डॉक्टरों ने यही निष्कर्ष निकाला कि इसका कारण मनोवैज्ञानिक ही होगा। नटमेग उसे अपने एक मनोचिकित्सक मित्र के पास ले गई, लेकिन वह भी सिनेमन के लगातार चुप रहने का कारण पता नहीं लगा सका। उसने बुद्धि परीक्षण किया, लेकिन उसमें कोई समस्या नहीं

पाई गई। वास्तव में, उसकी बुद्धि असामान्य रूप से उच्च निकली। डॉक्टर को भावनात्मक समस्याओं का भी कोई सबूत नहीं मिला। मनोचिकित्सक ने नटमेग से पूछा, "क्या उसे किसी तरह का असामान्य आघात लगा है? ज़रा सोचिए। क्या उसने कुछ असामान्य देखा होगा या घर पर उसके साथ हिंसा हुई होगी?" लेकिन नटमेग को कुछ भी समझ नहीं आया। एक दिन उसका बेटा हर तरह से सामान्य था: उसने सामान्य तरीके से खाना खाया, उससे सामान्य बातचीत की, समय पर सोया, उसे सोने में कोई परेशानी नहीं हुई। और अगली सुबह वह गहरी खामोशी की दुनिया में डूब गया। घर में कोई समस्या नहीं थी। नटमेग और उसकी माँ की निरंतर निगरानी में बच्चे का पालन-पोषण हो रहा था, और दोनों में से किसी ने भी उस पर कभी हाथ नहीं उठाया था। डॉक्टर ने निष्कर्ष निकाला कि वे केवल उस पर नज़र रख सकते हैं और उम्मीद कर सकते हैं कि कुछ पता चल जाए। जब तक कारण पता नहीं चलता, उसका इलाज संभव नहीं था। नटमेग को सिनेमन को सप्ताह में एक बार डॉक्टर के पास लाना चाहिए, इस दौरान शायद उन्हें पता चल जाए कि क्या हुआ था। यह संभव है कि वह अचानक फिर से बोलने लगे, जैसे कोई सपने से जागता है। वे बस इंतजार कर सकते थे। सच है, बच्चा बोल नहीं रहा था, लेकिन उसमें और कोई समस्या नहीं थी...
और इसलिए वे इंतजार करते रहे, लेकिन सिनेमन फिर कभी उसकी गहरी चुप्पी के सागर की सतह पर नहीं आया।

•

सुबह नौ बजे, कार का मुख्य द्वार अंदर की ओर खुलने लगा, उसकी इलेक्ट्रिक मोटर से हल्की सी आवाज़ आ रही थी, और सिनेमन की मर्सिडीज-बेंज 500 एसईएल ड्राइववे में आकर रुकी। कार के फोन का एंटीना पीछे की खिड़की से ऐसे निकला हुआ था जैसे कोई नया अंकुर निकला हो। मैंने खिड़की के पर्दों के बीच से झाँका। कार किसी

ज़ाहिर है, उसने नई टाई पहनी थी, जो उस दिन के सूट से मेल खा रही थी। उसकी कमीज़ और जूते भी अलग थे। उसकी माँ, नटमेग ने शायद हमेशा की तरह उसके लिए सब कुछ खुद चुना था। उसका पहनावा ऊपर से नीचे तक उतना ही बेदाग था, जितना उसकी मर्सिडीज़ कार। हर सुबह जब वह आता, मैं उसे निहारने लगता—या यूँ कहूँ कि उससे प्रभावित हो जाता। उस बेदाग बाहरी रूप के पीछे आखिर किस तरह का इंसान छिपा हो सकता है?

•

सिनेमन ने ट्रंक से खाने-पीने और अन्य ज़रूरी सामान से भरे दो कागज़ के थैले निकाले और उन्हें बाहों में थामे हुए निवास में प्रवेश किया। उनके हाथों में थामे हुए ये साधारण से थैले भी सुंदर और कलात्मक लग रहे थे। शायद उन्हें इन्हें पकड़ने का कोई खास तरीका आता था। या हो सकता है कि बात इससे भी कहीं ज़्यादा सरल हो। मुझे देखते ही उनका चेहरा खिल उठा। उनकी मुस्कान अद्भुत थी, मानो वे घने जंगल में लंबी सैर के बाद किसी रोशन जगह पर आ गए हों। मैंने उनसे कहा, "सुप्रभात।" उन्होंने मुझसे "सुप्रभात" तो नहीं कहा, लेकिन उनके होंठ हिले। उन्होंने थैलों से किराने का सामान निकाला और उसे फ्रिज में ऐसे सजाया जैसे कोई होशियार बच्चा नई सीखी हुई बातों को याद कर रहा हो। बाकी सामान उन्होंने अलमारियों में लगाया। फिर उन्होंने मेरे साथ एक कप कॉफ़ी पी। हम रसोई की मेज पर आमने-सामने बैठे, ठीक वैसे ही जैसे कुमिको और मैं बहुत पहले हर सुबह किया करते थे।
“सिनेमन ने कभी स्कूल में एक दिन भी नहीं बिताया,” नटमेग ने कहा। “सामान्य स्कूल ऐसे बच्चे को दाखिला नहीं देते जो बोल नहीं पाता, और मुझे लगा कि उसे ऐसे स्कूल में भेजना गलत होगा जहाँ सिर्फ विकलांग बच्चे ही हों। उसके न बोल पाने का कारण—जो भी हो

— मैं जानती थी कि दूसरे बच्चों के कारणों से अलग था। और इसके अलावा, उसने कभी स्कूल जाने की इच्छा नहीं दिखाई। उसे घर पर अकेले रहना, पढ़ना, शास्त्रीय संगीत सुनना या आँगन में हमारे पास मौजूद कुत्ते के साथ खेलना सबसे अच्छा लगता था। वह कभी-कभी सैर के लिए भी जाता था, लेकिन बहुत उत्साह से नहीं, क्योंकि उसे अपनी उम्र के बच्चों को देखना पसंद नहीं था।”
नटमेग ने सांकेतिक भाषा सीखी और उसका इस्तेमाल सिनेमन से बात करने के लिए किया। जब सांकेतिक भाषा पर्याप्त नहीं होती थी, तो वे लिखकर बातचीत करते थे। लेकिन एक दिन, उसे एहसास हुआ कि वह और उसका बेटा बिना किसी अप्रत्यक्ष तरीके का सहारा लिए भी एक-दूसरे को अपनी भावनाएं बखूबी समझा सकते हैं। वह उसके हावभाव या चेहरे के भाव में आए छोटे से बदलाव से ही जान जाती थी कि वह क्या सोच रहा है या क्या चाहता है। उस पल से, उसने सिनेमन के बोलने में असमर्थ होने की चिंता करना छोड़ दिया। इससे माँ और बेटे के बीच किसी भी मानसिक आदान-प्रदान में कोई बाधा नहीं आ रही थी। बेशक, बोली जाने वाली भाषा के अभाव से उसे कभी-कभी शारीरिक असुविधा का एहसास होता था, लेकिन यह कभी भी "असुविधा" से आगे नहीं बढ़ा, और एक तरह से यही असुविधा उन दोनों के बीच संवाद की गुणवत्ता को और भी बेहतर बनाती थी।
काम के बीच खाली समय में, नटमेग सिनेमन को पढ़ना-लिखना और गणित सिखाती थी। लेकिन वास्तव में, उसे सिखाने के लिए उसके पास ज़्यादा कुछ नहीं था। उसे किताबें पसंद थीं, और वह उनका इस्तेमाल खुद ही ज़रूरी ज्ञान हासिल करने के लिए करता था। वह उसके लिए एक शिक्षिका से ज़्यादा, उसके लिए ज़रूरी किताबें चुनने वाली थी। उसे संगीत पसंद था और वह पियानो बजाना चाहता था, लेकिन एक पेशेवर पियानो शिक्षक से कुछ महीनों में बुनियादी

उंगली की हरकतें सीखने के बाद, उसने केवल मैनुअल और रिकॉर्ड किए गए टेपों का इस्तेमाल करके इतनी कम उम्र में ही तकनीकी दक्षता का उच्च स्तर हासिल कर लिया। उसे बाख और मोजार्ट का संगीत बहुत पसंद था, और पौलेंक और बार्टोक के अलावा, रोमांटिक संगीतकारों के अलावा किसी और संगीत में उसकी कोई खास रुचि नहीं थी। अपनी पढ़ाई के पहले छह वर्षों के दौरान, उसकी रुचि संगीत और पढ़ने पर केंद्रित थी, लेकिन जब वह माध्यमिक विद्यालय की उम्र में पहुँचा, तो उसने भाषाओं को सीखना शुरू कर दिया, पहले अंग्रेजी और फिर फ्रेंच। दोनों ही मामलों में, उसने छह महीने की पढ़ाई के बाद साधारण किताबें पढ़ने लायक खुद ही सीख लीं। ज़ाहिर है, उसका किसी भी भाषा में बातचीत सीखने का कोई इरादा नहीं था; वह सिर्फ किताबें पढ़ना चाहता था। उसे जटिल मशीनों के साथ छेड़छाड़ करना भी बहुत पसंद था। उसने पेशेवर उपकरणों का एक पूरा संग्रह खरीदा था, जिसकी मदद से वह रेडियो और ट्यूब एम्पलीफायर बना पाता था, और उसे घड़ियों को खोलकर ठीक करना अच्छा लगता था।
उसके आस-पास के सभी लोग—अर्थात् उसकी माँ, उसके पिता और उसकी दादी (नटमेग की माँ)—इस बात के आदी हो गए थे कि वह कभी बोलता नहीं था, और उन्होंने इसे अप्राकृतिक या असामान्य मानना छोड़ दिया था। कुछ वर्षों बाद, नटमेग ने अपने बेटे को मनोचिकित्सक के पास ले जाना बंद कर दिया। साप्ताहिक परामर्श से उसके "लक्षणों" में कोई सुधार नहीं हो रहा था, और जैसा कि डॉक्टरों ने शुरू में ही कहा था, उसके न बोलने के अलावा उसमें कोई और कमी नहीं थी। वास्तव में, वह लगभग एक आदर्श बच्चा था। नटमेग को याद नहीं था कि उसे कभी भी उसे कुछ करने के लिए मजबूर करना पड़ा हो या किसी ऐसी गलती के लिए डांटना पड़ा हो जो उसे नहीं करनी चाहिए थी। वह खुद तय करता था कि उसे क्या करना है और फिर वह उसे बिना किसी गलती के,

अपने तरीके से करता था। वह अन्य बच्चों—सामान्य बच्चों—से इतना अलग था कि उनकी तुलना करना भी लगभग व्यर्थ था। जब वह बारह वर्ष का था, तब उसकी दादी का निधन हो गया (जिसके कारण वह कई दिनों तक चुपचाप रोता रहा), जिसके बाद उसने अपनी माँ के काम पर जाने के दौरान खाना पकाने, कपड़े धोने और सफाई करने का जिम्मा खुद उठा लिया। नटमेग अपनी माँ की मृत्यु के बाद एक नौकरानी रखना चाहती थी, लेकिन सिनेमन ने इस बात को मानने से इनकार कर दिया। उसने किसी अजनबी को घर में आकर व्यवस्था बिगाड़ने देने से साफ इनकार कर दिया। इस प्रकार, सिनेमन ही घर का सारा काम संभालता था, और वह इसे अत्यंत कुशलता और अनुशासन के साथ करता था।

•

सिनेमन ने अपने हाथों से मुझसे बात की। उसे अपनी माँ की पतली, सुडौल उंगलियाँ विरासत में मिली थीं। वे लंबी थीं, लेकिन बहुत लंबी नहीं। उसने उन्हें अपने चेहरे के पास उठाया और बिना किसी झिझक के हिलाया, और मानो वे किसी सजीव प्राणी की तरह हों, वे उंगलियाँ मुझे उसके संदेश दे रही थीं।
आज दोपहर दो बजे एक ग्राहक आएंगी। आज के लिए बस इतना ही। उनके आने तक आपको कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। मैं अगले एक घंटे में अपना काम पूरा कर लूंगी, फिर उन्हें लेने और वापस छोड़ने जाऊंगी। मौसम विभाग के अनुसार आज पूरे दिन आसमान में बादल छाए रहेंगे। जब तक उजाला है, आप कुएं में समय बिता सकती हैं, इससे आपकी आंखों को कोई नुकसान नहीं होगा।
जैसा कि नटमेग ने कहा था, मुझे उसकी उंगलियों के इशारों को समझने में कोई परेशानी नहीं हुई। मैं सांकेतिक भाषा से परिचित नहीं था, लेकिन उसके जटिल, सहज हाव-भाव को समझना मेरे लिए आसान था। शायद सिनेमन की कुशलता ही थी जिसने उसके भावों को इतनी

सहजता से प्रकट किया, ठीक वैसे ही जैसे किसी विदेशी भाषा में खेला गया नाटक भावपूर्ण हो सकता है। या फिर, शायद मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं उसकी उंगलियों को हिलते हुए देख रहा हूँ, जबकि वास्तव में मैं उन्हें देख नहीं रहा था। हिलती हुई उंगलियां शायद सिर्फ एक सजावटी आवरण थीं, और मैं अर्धचेतन रूप से उसके पीछे की इमारत के किसी अन्य पहलू को देख रहा था। जब भी हम नाश्ते की मेज पर बातचीत करते, मैं उस आवरण और पृष्ठभूमि के बीच की सीमा को देखने की कोशिश करता, लेकिन मैं उसे कभी पूरी तरह से देख नहीं पाता, मानो दोनों के बीच की सीमा को चिह्नित करने वाली कोई भी रेखा लगातार हिलती और अपना आकार बदलती रहती हो।
हमारी संक्षिप्त बातचीत के बाद, सिनेमन अपनी सूट जैकेट उतारकर हैंगर पर टांग देता, टाई को शर्ट के अंदर दबा लेता और फिर सफाई या खाना पकाने का काम करने लगता। काम करते समय वह कॉम्पैक्ट स्टीरियो पर संगीत सुनता था। एक हफ्ते वह सिर्फ रॉसिनी का धार्मिक संगीत सुनता था, और दूसरे हफ्ते विवाली के वाद्य यंत्रों के लिए संगीत कार्यक्रम सुनता था, इतनी बार कि मुझे धुनें याद हो गईं।
सिनेमन बड़ी कुशलता और बिना किसी फालतू हरकत के काम करता था। पहले तो मैं उसकी मदद करने की पेशकश करती, लेकिन वह बस मुस्कुराकर सिर हिला देता। उसके काम करने का तरीका देखकर मुझे यकीन हो गया कि अगर मैं सारा काम उसी पर छोड़ दूं तो सब कुछ कहीं ज़्यादा आसानी से हो जाएगा। उसके बाद से मेरी आदत बन गई कि मैं उसके काम में दखल न दूं। जब वह सुबह के काम कर रहा होता था, मैं "फिटिंग रूम" के सोफे पर बैठकर किताब पढ़ती थी।
वह घर बड़ा नहीं था और उसमें बहुत कम सामान था। असल में वहाँ कोई रहता नहीं था, इसलिए वह कभी ज़्यादा गंदा या अस्त-व्यस्त नहीं

देखी और सूट पहन लिया। आखिर में, मुस्कुराते हुए उसने अलविदा कहा, एक आखिरी नज़र चारों ओर डाली और सामने के दरवाजे से बाहर निकल गया। मर्सिडीज-बेंज की स्टीयरिंग व्हील पर बैठकर उसने एक क्लासिकल टेप लगाया, रिमोट कंट्रोल का बटन दबाकर सामने का गेट खोला और गाड़ी चलाकर उसी रास्ते से वापस चला गया जिस रास्ते से वह आया था। गाड़ी के निकल जाने के बाद गेट बंद हो गया। मैं हमेशा की तरह कॉफी का कप पकड़े खिड़की के पर्दे की दरार से देख रहा था। पक्षी अब उतने शोर नहीं कर रहे थे जितना सिनेमन के आने पर कर रहे थे। मैं देख सकता था कि नीचे के बादल जगह-जगह से फटकर हवा से उड़ गए थे, लेकिन उनके ऊपर बादलों की एक और मोटी परत थी।

•

मैं रसोई की मेज पर बैठ गई, अपना कप नीचे रखा और उस कमरे का जायज़ा लिया जिसे सिनेमन ने बड़ी खूबसूरती से व्यवस्थित कर रखा था। यह किसी विशाल, त्रि-आयामी स्थिर चित्र जैसा लग रहा था, जिसमें घड़ी की हल्की टिक-टिक के अलावा कोई और हलचल नहीं थी। घड़ी की सुइयाँ दस बजकर बीस मिनट दिखा रही थीं। सिनेमन जिस कुर्सी पर पहले बैठी थी, उसे देखते हुए मैंने एक बार फिर खुद से पूछा कि क्या मैंने पिछली रात उशिकावा के आने के बारे में उन्हें न बताकर सही किया था? क्या इससे सिनेमन और मेरे बीच या नटमेग और मेरे बीच जो भी विश्वास था, वह कहीं टूट न जाए? हालांकि, मैंने कुछ देर रुककर हालात का जायज़ा लेना बेहतर समझा। मेरी हरकतों में ऐसा क्या था जिससे नोबोरू वटाया इतना परेशान था? मैं उसकी किस चाल में फँस रहा था? और वह क्या जवाबी कदम उठाएगा? अगर मुझे इन सवालों के जवाब मिल जाते, तो शायद मैं उसके रहस्य के थोड़ा और करीब पहुँच पाता। और इस तरह, शायद मैं कुमिको के ठिकाने के भी करीब पहुँच पाता।

जैसे ही घड़ी की सुइयां ग्यारह बजने वाली थीं (वही घड़ी जिसे सिनेमन ने आधा इंच दाईं ओर खिसकाकर उसकी सही जगह पर वापस कर दिया था), मैं कुएं में उतरने के लिए आंगन में गया।

•

“जब सिनेमन छोटा था, तब मैंने उसे पनडुब्बी और चिड़ियाघर की कहानी सुनाई थी—अगस्त 1945 में मैंने परिवहन जहाज के डेक से जो देखा था, उसके बारे में और कैसे जापानी सैनिकों ने मेरे पिता के चिड़ियाघर के जानवरों को गोली मार दी थी, जबकि एक अमेरिकी पनडुब्बी हम पर तोप ताने खड़ी थी और हमारे जहाज को डुबोने की तैयारी कर रही थी। मैंने वह कहानी बहुत लंबे समय तक अपने तक ही रखी और कभी किसी को नहीं सुनाई। मैं भ्रम और सत्य के बीच फैले अंधकारमय भूलभुलैया में चुपचाप भटकता रहा। लेकिन जब सिनेमन का जन्म हुआ, तो मुझे एहसास हुआ कि वही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जिसे मैं अपनी कहानी सुना सकता हूँ। और इसलिए, इससे पहले कि वह शब्दों को समझ पाता, मैंने उसे बार-बार, लगभग फुसफुसाते हुए, वह सब कुछ बताना शुरू कर दिया जो मुझे याद था, और जैसे-जैसे मैं बोलता गया, दृश्य मेरे सामने जीवंत हो उठते, चमकीले रंगों में, मानो मैंने कोई ढक्कन खोल दिया हो।”
जैसे-जैसे सिनेमन को भाषा समझ आने लगी, उसने मुझसे कहानी बार-बार सुनाने को कहा। मैंने उसे सौ, दो सौ, पाँच सौ बार कहानी सुनाई होगी, लेकिन हर बार एक ही बात दोहराई नहीं। जब भी मैं उसे कहानी सुनाता, सिनेमन मुझसे मुख्य कहानी में छिपी कोई दूसरी छोटी कहानी सुनाने को कहता। वह उसी पेड़ की एक अलग शाखा के बारे में जानना चाहता था। मैं उसकी बताई शाखा का अनुसरण करता और उसे कहानी का वह हिस्सा सुनाता। और इस तरह कहानी बढ़ती ही गई।

“इस तरह हम दोनों ने मिलकर मिथकों का अपना एक जटिल जाल बुन लिया। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? हम हर दिन एक-दूसरे को कहानी सुनाते-सुनाते इतने मग्न हो जाते थे कि मानो खो जाते थे। हम घंटों चिड़ियाघर के जानवरों के नामों, उनके बालों की चमक या उनकी आँखों के रंग, हवा में फैली अलग-अलग गंधों, सैनिकों के नामों और चेहरों, उनके जन्म और बचपन, उनकी राइफलों और उनके गोला- बारूद के वजन, उनके डर और प्यास, आकाश में तैरते बादलों के आकार आदि के बारे में बातें करते रहते थे…।”
“जब मैं सिनेमन को कहानी सुना रही थी, तो मुझे सारे रंग और आकृतियाँ एकदम स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं, और मैं जो देख रही थी उसे शब्दों में पिरो पा रही थी—ठीक वैसे ही शब्द जिनकी मुझे ज़रूरत थी—और उसे सब कुछ समझा पा रही थी। इसका कोई अंत नहीं था। हमेशा कुछ न कुछ और विवरण होते थे जिन्हें जोड़ा जा सकता था, और कहानी लगातार गहरी और बड़ी होती जा रही थी।”
उन बीते दिनों की बातें करते हुए नटमेग मुस्कुरा उठी। मैंने उसके चेहरे पर ऐसी स्वाभाविक मुस्कान पहले कभी नहीं देखी थी। “लेकिन फिर एक दिन यह सब खत्म हो गया,” उसने कहा। “फरवरी की उस सुबह जब सिनेमन ने बोलना बंद कर दिया, तब उसने मुझसे कहानियां साझा करना भी बंद कर दिया।”
जायफल सिगरेट जलाने के लिए रुका।
“अब मुझे पता चल गया है कि क्या हुआ था। उनके शब्द कहानियों के भूलभुलैया में खो गए, कहानियों की दुनिया में समा गए। उन कहानियों से निकली किसी चीज ने उनकी जुबान छीन ली। और कुछ साल बाद, उसी चीज ने मेरे पति की जान ले ली।”

•

सुबह की तुलना में हवा तेज़ हो गई थी, और एक के बाद एक भारी भूरे बादल पूरब की ओर सीधी रेखा में बढ़ते जा रहे थे। बादल ऐसे लग रहे थे मानो खामोश यात्री धरती के छोर की ओर जा रहे हों। आँगन में लगे पेड़ों की सूखी डालियों पर हवा कभी-कभी हल्की, खामोश सी आवाज़ निकालती थी। मैं कुएँ के पास खड़ा आसमान की ओर देख रहा था। कुमिको भी शायद कहीं उन्हें देख रही होगी। यह ख्याल बिना किसी कारण के मेरे मन में आया। बस एक एहसास था।
मैं सीढ़ी से उतरकर कुएँ की तलहटी तक पहुँचा और ढक्कन बंद करने के लिए रस्सी खींची। दो-तीन गहरी साँसें लेने के बाद, मैंने बैट को पकड़ा और धीरे से अँधेरे में बैठ गया। घोर अँधेरा। हाँ, यही सबसे ज़रूरी था। इस निर्मल अँधेरे में ही रहस्य छिपा था। यह कुछ-कुछ टीवी पर चल रहे खाना पकाने के कार्यक्रम जैसा था। “अब सबको समझ आ गया? इस नुस्खे का राज़ घोर अँधेरा है। ध्यान रहे कि आप सबसे मोटा बैट इस्तेमाल करें।” और सबसे मज़बूत बैट, जो आपको मिल सके, मैंने अँधेरे में एक पल के लिए मुस्कुराते हुए कहा। मेरे गाल पर बने निशान में मुझे एक अजीब सी गर्माहट महसूस हुई। इसने मुझे बताया कि मैं धीरे-धीरे सच्चाई के करीब पहुँच रहा हूँ। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। मेरे कानों में अभी भी वही संगीत गूँज रहा था जिसे सिनेमन उस सुबह काम करते हुए बार-बार सुन रहा था। यह बाख का "म्यूजिकल ऑफरिंग" था, जो मेरे दिमाग में अभी भी किसी ऊँची छत वाले सभागार में भीड़ की धीमी फुसफुसाहट की तरह गूंज रहा था। आखिरकार, सन्नाटा छा गया और धीरे-धीरे मेरे दिमाग की परतों में अपनी जगह बनाने लगा, एक-एक करके, जैसे कोई कीड़ा अंडे देता है। मैंने अपनी आँखें खोलीं, फिर बंद कर लीं। अंदर और बाहर का अँधेरा आपस में घुलने लगा, और मैं अपने आप से, उस खोल से बाहर निकलने लगा जिसमें मैं समाया हुआ था।

हमेशा की तरह।

यह अंत हो सकता है (मे कासाहारा का दृष्टिकोण: 3)

•

नमस्कार, श्रीमान विंड-अप बर्ड।
पिछली बार मैंने आपको बताया था कि मैं पहाड़ों में स्थित एक विग फैक्ट्री में कई स्थानीय लड़कियों के साथ काम कर रही हूँ। यह उसी पत्र का अगला भाग है।
आजकल मुझे ये बात बहुत परेशान कर रही है कि पता नहीं क्यों लोग रोज़ सुबह से शाम तक इसी तरह काम करते हैं, ये थोड़ा अजीब है। क्या आपको कभी ये अजीब नहीं लगा? मतलब, मैं यहाँ बस वही काम करती हूँ जो मेरे बॉस मुझे करने को कहते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वो कहते हैं। मुझे सोचना ही नहीं पड़ता। ऐसा लगता है जैसे काम शुरू करने से पहले मैं अपना दिमाग एक लॉकर में रख देती हूँ और घर लौटते समय उसे निकाल लेती हूँ। मैं दिन में सात घंटे वर्कबेंच पर बाल लगाती हूँ, फिर कैंटीन में खाना खाती हूँ, नहाती हूँ, और ज़ाहिर है, बाकी सब लोगों की तरह मुझे भी सोना पड़ता है। तो चौबीस घंटे के दिन में मेरे पास खाली समय न के बराबर ही होता है। और क्योंकि मैं काम से इतनी थकी होती हूँ, तो जो थोड़ा-बहुत खाली समय मिलता है, वो भी मैं बस यूँ ही लेटी रहती हूँ। मेरे पास बैठकर कुछ सोचने का समय ही नहीं होता। बेशक, मुझे सप्ताहांत में काम नहीं करना पड़ता, लेकिन फिर मुझे कपड़े धोने और सफाई के अधूरे काम निपटाने पड़ते हैं, और कभी-कभी मैं शहर भी चली जाती हूँ, और देखते ही देखते सप्ताहांत खत्म हो जाता है। एक बार मैंने डायरी लिखने का मन बनाया था, लेकिन लिखने के लिए कुछ था ही नहीं, इसलिए एक हफ्ते बाद ही छोड़ दिया। मतलब, मैं रोज़ाना एक ही काम बार-बार करती रहती हूँ।

लेकिन फिर भी—फिर भी—मुझे इस बात से ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ता कि मैं अब अपने काम का ही एक हिस्सा हूँ। मुझे अपने जीवन से ज़रा भी अलगाव महसूस नहीं होता। बल्कि, कभी-कभी तो मुझे ऐसा लगता है कि चींटी की तरह बिना सोचे-समझे पूरी लगन से अपने काम पर ध्यान केंद्रित करके मैं अपने असली स्वरूप के करीब पहुँच रहा हूँ। मैं इसे शब्दों में ठीक से नहीं कह सकता, लेकिन ऐसा लगता है कि अपने बारे में न सोचकर मैं अपने भीतर के सार के करीब पहुँच रहा हूँ। "थोड़ा अजीब" कहने का मेरा यही मतलब है।
मैं इस काम में अपना पूरा दिल लगा रही हूँ। शेखी नहीं बघार रही, लेकिन मुझे महीने का सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी भी चुना गया है। मैंने आपको बताया था ना, देखने में भले ही ऐसा न लगे, लेकिन मैं कारीगरी में बहुत माहिर हूँ। काम करते समय हम टीमों में बँट जाते हैं, और जिस भी टीम में मैं शामिल होती हूँ, उसका प्रदर्शन बेहतर हो जाता है। अपना काम खत्म करने के बाद मैं धीमी गति से काम करने वाली लड़कियों की मदद करती हूँ। इसलिए अब मैं बाकी लड़कियों में लोकप्रिय हो गई हूँ। यकीन मानिए? मैं, लोकप्रिय! खैर, मिस्टर विंड-अप बर्ड, मैं आपको यह बताना चाहती थी कि जब से मैं इस कारखाने में आई हूँ, तब से मैं बस काम, काम, काम ही कर रही हूँ। एक चींटी की तरह। गाँव के लोहार की तरह। क्या मेरी बात आपको समझ आ गई?
खैर, जिस जगह मैं अपना असली काम करती हूँ, वो बहुत अजीब है। ये बहुत बड़ा है, किसी हैंगर जैसा, ऊँची छत वाला, और खुला हुआ। वहाँ डेढ़ सौ लड़कियाँ कतार में बैठकर काम करती हैं। ये नज़ारा देखने लायक होता है। ज़ाहिर है, उन्हें इतनी बड़ी फैक्ट्री बनाने की ज़रूरत नहीं थी। ऐसा तो है नहीं कि हम पनडुब्बियाँ बना रहे हैं या कुछ और। वे हमें अलग-अलग कमरों में बाँट सकते थे।

लेकिन शायद उन्हें लगा होगा कि इतने सारे लोगों के एक साथ काम करने से हमारे बीच आपसी एकता की भावना बढ़ेगी। या शायद बॉस के लिए हम सब पर एक साथ नज़र रखना आसान हो। मुझे लगता है कि वे हम पर किसी तरह की साइकोलॉजी का इस्तेमाल कर रहे हैं। हमें टीमों में बाँटा गया है, वर्कबेंच के चारों ओर, ठीक वैसे ही जैसे साइंस क्लास में मेंढकों का विच्छेदन करते हैं, और एक बड़ी लड़की टीम लीडर बनकर कोने में बैठती है। जब तक आप अपने हाथों को हिलाते रहें, तब तक बात करना ठीक है (मेरा मतलब है, आप पूरे दिन चुपचाप बैठकर ये सब नहीं कर सकते), लेकिन अगर आप बहुत ज़ोर से बात करते हैं या हंसते हैं या अपनी बातचीत में बहुत मग्न हो जाते हैं, तो टीम लीडर नाराज़ होकर आपके पास आएगा और कहेगा, "ठीक है, युमिको, चलो हाथों को हिलाते रहो, मुंह को नहीं। लगता है तुम पीछे रह रही हो।" इसलिए हम सब रात के अंधेरे में चोरों की तरह एक-दूसरे से फुसफुसाते हैं।
वे कारखाने में संगीत बजाते हैं। संगीत की शैली दिन के समय के अनुसार बदलती रहती है। अगर आप बैरी मैनिलो या एयर सप्लाई, मिस्टर विंड-अप बर्ड के बड़े प्रशंसक हैं, तो आपको यह जगह पसंद आ सकती है। मुझे अपनी एक विग बनाने में कुछ दिन लग जाते हैं। बेशक, उत्पाद की गुणवत्ता के अनुसार समय अलग-अलग होता है, लेकिन विग बनाने में लगने वाले समय को दिनों में मापना पड़ता है। पहले आप आधार को चेकरबोर्ड के चौकोर खानों में बांटते हैं, और फिर एक-एक करके उनमें बाल लगाते हैं। हालांकि, यह चैपलिन की फिल्म के कारखाने की तरह असेंबली लाइन का काम नहीं है, जहां आप एक बोल्ट कसते हैं और फिर दूसरा कसते हैं; हर विग "मेरी" है। जब मैं एक विग बना लेती हूं, तो मेरा मन करता है कि मैं उस पर हस्ताक्षर और तारीख लिख दूं। लेकिन मैं ऐसा नहीं करती, क्योंकि वे मुझसे

नाराज़ हो जाएंगे। हालांकि, यह जानकर बहुत अच्छा लगता है कि दुनिया में कोई न कोई मेरी बनाई हुई विग पहने हुए है। इससे मुझे एक तरह का जुड़ाव महसूस होता है।
ज़िंदगी कितनी अजीब है! अगर तीन साल पहले किसी ने मुझसे कहा होता, "तीन साल बाद तुम पहाड़ों की किसी फैक्ट्री में देहाती लड़कियों के साथ विग बना रही होगी," तो मैं उसके चेहरे पर हंस देती। मैंने कभी इसकी कल्पना भी नहीं की थी। और तीन साल बाद मैं क्या कर रही होऊंगी, इसका जवाब भी किसी को नहीं पता। क्या तुम्हें पता है कि तुम तीन साल बाद क्या कर रही होगी, मिस्टर विंड-अप बर्ड? मुझे यकीन है कि तुम्हें नहीं पता। तीन साल की बात छोड़ो: मैं अपने सारे पैसे दांव पर लगा सकती हूं कि तुम्हें यह भी नहीं पता होगा कि तुम एक महीने बाद क्या कर रही होगी! लेकिन मेरे आस-पास की लड़कियाँ लगभग जानती हैं कि तीन साल बाद वे कहाँ होंगी। या कम से कम उन्हें ऐसा लगता है। वे सोचती हैं कि वे यहाँ कमाए पैसे बचाएँगी, कुछ सालों बाद सही जीवनसाथी ढूँढेंगी और खुशी-खुशी शादी कर लेंगी।
इन लड़कियों की शादी जिन लड़कों से होने वाली है, वे ज़्यादातर किसानों के बेटे हैं या वो लड़के हैं जिन्हें अपने पिता से दुकान विरासत में मिलेगी या फिर स्थानीय छोटी कंपनियों में काम करने वाले लड़के हैं। जैसा कि मैंने पहले भी कहा था, यहाँ जवान लड़कियों की हमेशा कमी रहती है, इसलिए उनकी शादी बहुत जल्दी हो जाती है। किसी के लिए भी शादी के लिए कोई न कोई मिल ही जाता है, इसलिए सभी को शादी के लिए कोई न कोई मिल ही जाता है। ये वाकई दिलचस्प है। और जैसा कि मैंने अपने पिछले पत्र में कहा था, ज़्यादातर लोग शादी के बाद नौकरी छोड़ देते हैं। विग बनाने की फैक्ट्री में उनकी नौकरी बस एक पड़ाव है जो हाई स्कूल से

ग्रेजुएशन करने और शादी के बीच के कुछ सालों को भर देती है— जैसे कोई कमरा जिसमें वे आते हैं, थोड़ी देर रुकते हैं और फिर चले जाते हैं।
विग बनाने वाली कंपनी को इससे कोई आपत्ति नहीं है; बल्कि वे यही पसंद करते हैं कि लड़कियां कुछ साल काम करें और शादी के बाद नौकरी छोड़ दें। वेतन, भत्ते, यूनियन वगैरह की चिंता करने के बजाय कर्मचारियों का लगातार आना-जाना उनके लिए कहीं बेहतर है। कंपनी काबिल लड़कियों का थोड़ा बेहतर ख्याल रखती है, जो टीम लीडर बन जाती हैं, लेकिन बाकी साधारण लड़कियां उनके लिए सिर्फ उपभोक्ता वस्तु हैं। इस तरह लड़कियों और कंपनी के बीच एक अलिखित समझौता है कि वे शादी करके नौकरी छोड़ देंगी। इसलिए लड़कियों के लिए तीन साल बाद क्या होगा, इसकी कल्पना करने पर सिर्फ दो ही संभावनाएं बचती हैं: या तो वे यहीं काम करते हुए जीवनसाथी की तलाश करेंगी, या फिर शादी करने के लिए नौकरी छोड़ देंगी। वाह, कितनी सरलता है!
यहां मेरे जैसी कोई नहीं है जो सोचती हो, 'पता नहीं तीन साल बाद मेरा क्या होगा।' यहां सभी मेहनती हैं, कोई भी काम अधूरा नहीं छोड़ता या काम की शिकायत नहीं करता। कभी-कभार कोई कैंटीन के खाने की शिकायत कर देता है, बस इतना ही। बेशक, हम काम की बात कर रहे हैं, इसलिए हमेशा मज़ा तो नहीं आ सकता; कोई सुबह नौ से शाम पांच बजे तक काम करती होगी क्योंकि उसे मजबूरी में करना पड़ता है, भले ही उसका मन दिन भर की छुट्टी का हो, लेकिन ज़्यादातर लोग काम का आनंद लेते हैं। शायद इसलिए क्योंकि वे जानते हैं कि यह एक सीमित समय है जो एक दुनिया से दूसरी दुनिया के बीच का पड़ाव है। इसीलिए वे यहां रहते हुए जितना हो सके उतना मज़ा लेना चाहते हैं। आखिरकार, यह उनके लिए बस एक बदलाव का दौर है।

लेकिन मेरे लिए नहीं। यह मेरे लिए ठहराव या बदलाव का समय नहीं है। मुझे बिल्कुल भी नहीं पता कि मैं यहाँ से कहाँ जा रही हूँ। मेरे लिए, यह अंत हो सकता है। क्या आप समझ रहे हैं मेरा मतलब? तो सीधे शब्दों में कहें तो, मुझे यहाँ काम करने में आनंद नहीं आ रहा है। मैं बस हर संभव तरीके से काम को स्वीकार करने की कोशिश कर रही हूँ। जब मैं विग बनाती हूँ, तो मैं उस विग को बनाने के अलावा और कुछ नहीं सोचती। मैं पूरी तरह से गंभीर हो जाती हूँ— इतनी कि मुझे पसीना आ जाता है।
मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा कि इसे कैसे कहूँ, पर आजकल मैं उस लड़के के बारे में सोच रही हूँ जो मोटरसाइकिल दुर्घटना में मारा गया था। सच कहूँ तो, मैंने उसके बारे में पहले कभी ज़्यादा नहीं सोचा था। शायद दुर्घटना के सदमे ने मेरी याददाश्त को अजीब तरह से बिगाड़ दिया है, क्योंकि मुझे उसके बारे में बस कुछ अजीब-सी बातें ही याद हैं, जैसे उसकी बदबूदार बगलें, या वो कितना बेवकूफ था, या उसकी उंगलियाँ मेरे शरीर के अजीब-अजीब हिस्सों में जाने की कोशिश करती थीं। लेकिन कभी-कभी, उसकी कुछ अच्छी बातें भी याद आ जाती हैं। खासकर जब मेरा दिमाग खाली होता है और मैं बस विग के बेस में बाल लगा रही होती हूँ, तो ये बातें अचानक से याद आ जाती हैं। अरे हाँ, मैं सोचती हूँ, वो ऐसा ही था। लगता है समय क्रम से नहीं चलता, है ना—ए, बी, सी, डी? ये बस जहाँ मन करता है, वहीं चला जाता है।
क्या मैं आपसे सच बोल सकती हूँ, श्रीमान विंड-अप बर्ड? मतलब, बिल्कुल सच? कभी-कभी मैं बहुत डर जाती हूँ! मैं आधी रात को जाग जाती हूँ, बिल्कुल अकेली, सैकड़ों मील दूर, चारों तरफ़ घना अंधेरा होता है, और मुझे बिल्कुल भी पता नहीं होता कि आगे मेरे साथ क्या होगा, और मैं इतनी डर जाती हूँ कि चीखना चाहती हूँ।

क्या आपके साथ भी ऐसा होता है, श्रीमान विंड-अप बर्ड? जब ऐसा होता है, तो मैं खुद को याद दिलाने की कोशिश करती हूँ कि मैं दूसरों से जुड़ी हुई हूँ—दूसरी चीज़ों और दूसरे लोगों से। मैं पूरी कोशिश करती हूँ कि उनके नाम अपने दिमाग में याद कर लूँ। उस सूची में, ज़ाहिर है, आप भी हैं, श्रीमान विंड-अप बर्ड। और वो गली, और कुआँ, और तेंदू का पेड़, और इस तरह की चीज़ें। और वो विग जो मैंने यहाँ अपने हाथों से बनाई हैं। और उस लड़के के बारे में मुझे जो छोटी-छोटी बातें याद हैं। ये सारी छोटी-छोटी बातें (हालाँकि आप सिर्फ़ एक छोटी सी बात नहीं हैं, मिस्टर विंड-अप बर्ड, लेकिन फिर भी...) मुझे धीरे-धीरे "यहाँ" वापस आने में मदद करती हैं। फिर मुझे अफ़सोस होने लगता है कि मैंने अपने बॉयफ्रेंड को कभी भी खुद को नग्न देखने या छूने नहीं दिया। उस समय, मैंने ठान लिया था कि मैं उसे अपने ऊपर हाथ नहीं लगाने दूँगी। कभी-कभी, मिस्टर विंड-अप बर्ड, मुझे लगता है कि मैं पूरी ज़िंदगी कुंवारी ही रहना चाहूँगी। सच में। इस बारे में आपका क्या ख्याल है?
अलविदा, मिस्टर विंड-अप बर्ड। आशा है कुमिको जल्द ही वापस आ जाएगी।

विश्व की थकावट और बोझ

•

जादुई चिराग
रात साढ़े नौ बजे फोन की घंटी बजी। एक बार बजी, फिर बंद हो गई और फिर बजने लगी। यही उशिकावा का संकेत था।
“नमस्कार, श्री ओकाडा,” उशिकावा की आवाज़ सुनाई दी। “मैं उशिकावा हूँ। मैं आपके पड़ोस में ही हूँ और सोचा कि अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो आपसे मिलने आ जाऊँ। मुझे पता है कि देर हो गई है, लेकिन मैं आपसे आमने-सामने कुछ बात करना चाहता हूँ। आपका क्या विचार है? यह सुश्री कुमिको से संबंधित है, इसलिए मुझे लगा कि शायद आपको इसमें दिलचस्पी हो।”
जब मैं उसकी बात सुन रहा था, तो मैंने फोन के दूसरी तरफ उशिकावा के चेहरे के भावों की कल्पना कर ली। उसके चेहरे पर आत्मसंतुष्ट मुस्कान थी, होंठ मुड़े हुए थे और गंदे दांत दिख रहे थे, मानो वह कह रहा हो, मुझे पता है कि यह ऐसा प्रस्ताव है जिसे तुम ठुकरा नहीं सकते; और दुर्भाग्य से, वह सही था।

•

मेरे घर पहुँचने में उसे ठीक दस मिनट लगे। उसने वही कपड़े पहने थे जो उसने तीन दिन पहले पहने थे। शायद मैं गलत थी, लेकिन उसने वही सूट, कमीज़ और टाई पहनी थी, सब गंदे, सिकुड़े हुए और ढीले- ढाले। ये बदहाल कपड़े ऐसे लग रहे थे मानो इन्हें दुनिया की थकान और बोझ का अनुचित हिस्सा सहने के लिए मजबूर किया गया हो। अगर किसी पुनर्जन्म के ज़रिए उशिकावा के कपड़ों के रूप में पुनर्जन्म लेना संभव होता, और अगले जन्म में असाधारण यश की गारंटी होती, तब भी मैं ऐसा नहीं करना चाहती।

मेरी अनुमति लेने के बाद, उशिकावा ने फ्रिज से एक बीयर निकाली। पहले उसने यह सुनिश्चित किया कि बोतल ठीक से ठंडी हो गई है, फिर उसने पास में मिले एक गिलास में बीयर डाली। हम रसोई की मेज पर बैठ गए।
“ठीक है,” उशिकावा ने कहा। “समय बचाने के लिए, मैं फालतू की बातें छोड़ कर सीधे मुद्दे पर आता हूँ। श्री ओकाडा, आप सुश्री कुमिको से बात करना चाहेंगे, है ना? सीधे। सिर्फ़ आप दोनों। मुझे लगता है कि आप यही काफी समय से चाहते हैं। आपकी पहली प्राथमिकता। क्या मैं सही कह रहा हूँ?”
मैंने इस बारे में थोड़ा सोचा। या यूं कहें कि मैं कुछ क्षणों के लिए रुक गया, मानो इस पर विचार कर रहा हो।
"अगर संभव हो तो मैं निश्चित रूप से उससे बात करना चाहूंगा।" "यह असंभव नहीं है," उशिकावा ने धीरे से सिर हिलाते हुए कहा। लेकिन इसके साथ कुछ शर्तें जुड़ी हुई हैं…?
“इसमें कोई शर्त नहीं है।” उशिकावा ने अपनी बीयर का एक घूंट लिया। “लेकिन आज शाम मेरे पास आपके लिए एक नया प्रस्ताव है। कृपया मेरी बात ध्यान से सुनें और उस पर गंभीरता से विचार करें। यह सुश्री कुमिको से बात करने या न करने के प्रश्न से बिल्कुल अलग है।”
मैंने बिना कुछ बोले उसकी ओर देखा।
“तो सबसे पहले, श्रीमान ओकाडा, आप वह ज़मीन और उस पर बना मकान एक कंपनी से किराए पर ले रहे हैं, है ना? मेरा मतलब है, वह 'लटका हुआ मकान'। आप इसके लिए हर महीने अच्छी-खासी रकम चुका रहे हैं। आपका पट्टा सामान्य पट्टा नहीं है, बल्कि कुछ वर्षों बाद खरीदने का विकल्प वाला पट्टा है। सही कहा ना? आपका अनुबंध ज़ाहिर तौर पर सार्वजनिक रिकॉर्ड में नहीं है, इसलिए आपका नाम कहीं भी नहीं है

— और यही तो सारी साज़िश का मकसद है। हालांकि, आप संपत्ति के वास्तविक मालिक हैं, और आप जो किराया चुकाते हैं, वह गिरवी भुगतान के बराबर है। चलिए देखते हैं—मकान सहित, आपको कुल मिलाकर लगभग अस्सी मिलियन येन चुकाने होंगे, है ना? इस हिसाब से, आप दो साल से भी कम समय में ज़मीन और इमारत के मालिक बन सकते हैं। वाह! बहुत बढ़िया! बहुत तेज़ काम! मैं आपको बधाई देता हूँ।” उशिकावा ने अपनी कही हर बात की पुष्टि के लिए मेरी ओर देखा, लेकिन मैं चुप रहा।
“कृपया मुझसे यह मत पूछिए कि मुझे ये सारी बातें कैसे पता चलीं। अगर आप ठीक से छानबीन करें, तो आपको वो सब मिल जाएगा जो आप जानना चाहते हैं—बशर्ते आपको छानबीन करने का तरीका पता हो। और मुझे काफी हद तक पता है कि उस फर्जी कंपनी के पीछे कौन है। अब, ये तो बहुत मुश्किल काम था! इसके लिए मुझे एक भूलभुलैया से गुजरना पड़ा। ये ऐसा था जैसे किसी चोरी की कार को ढूंढना जिसे दोबारा रंग दिया गया हो, नए टायर लगा दिए गए हों, सीटें बदल दी गई हों और इंजन का सीरियल नंबर मिटा दिया गया हो। उन्होंने हर संभव कोशिश की है। वे सच में माहिर हैं। लेकिन अब मुझे काफी हद तक पता चल गया है कि क्या चल रहा है—शायद आपसे भी बेहतर, मिस्टर ओकाडा। मुझे यकीन है कि आपको यह भी नहीं पता होगा कि आप किसे पैसे वापस कर रहे हैं, है ना?”
कोई बात नहीं। पैसे के साथ नाम नहीं जुड़े होते।
उशिकावा हँसे। “आप बिलकुल सही कह रहे हैं, श्रीमान ओकाडा। पैसे के साथ नाम नहीं जुड़े होते। बहुत खूब! मैं इसे लिख लूँगा। लेकिन अंत में, श्रीमान ओकाडा, चीजें हमेशा आपकी इच्छा के अनुसार नहीं होतीं। उदाहरण के लिए, कर कार्यालय के लोगों को ही ले लीजिए। वे ज़्यादा समझदार नहीं हैं। उन्हें सिर्फ़ नाम वाली

जगहों से कर वसूलना आता है। इसलिए वे जानबूझकर उन जगहों पर नाम लिख देते हैं जहाँ कोई नाम नहीं होता। और सिर्फ़ नाम ही नहीं, बल्कि संख्याएँ भी। इस प्रक्रिया में भावनाओं का कोई नामोनिशान नहीं होता, मानो वे रोबोट हों। लेकिन यही वह आधार है जिस पर हमारा यह पूंजीवादी समाज टिका है… जिससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जिस पैसे की हम दोनों अभी बात कर रहे हैं, उसके साथ वाकई एक नाम जुड़ा है, और वह एक बहुत ही शानदार नाम है।”
जब उशिकावा बोल रहा था, मैंने उसके सिर की ओर देखा। रोशनी के कोण के आधार पर, उसकी खोपड़ी पर कुछ अजीब से निशान दिखाई दे रहे थे। “चिंता मत करो,” उसने हंसते हुए कहा। “टैक्स वाला यहाँ नहीं आएगा। और अगर आ भी गया, तो इस भूलभुलैया में रेंगते हुए, वह किसी न किसी चीज़ से टकरा ही जाएगा। धड़ाम! उसके सिर पर ज़ोरदार चोट लग जाएगी। और आखिर में, यह उसके लिए सिर्फ़ एक काम है: वह इसे करते हुए खुद को चोट नहीं पहुँचाना चाहता। अगर उसे अपना पैसा मिल सकता है, तो वह मुश्किल तरीके के बजाय आसान तरीका अपनाना पसंद करेगा: जितना आसान उतना अच्छा। जब तक उसे अपना मनचाहा मिल जाता है, वाहवाही बराबर ही रहती है। खासकर अगर उसका बॉस उसे आसान तरीका अपनाने को कहे, तो कोई भी आम आदमी वही चुनेगा। मुझे जो मिला, वह इसलिए मिला क्योंकि मैंने खुद ही खोजबीन की थी। शेखी नहीं बघार रहा, लेकिन मैं माहिर हूँ। शायद मैं देखने में ऐसा न लगे, लेकिन मैं सच में माहिर हूँ। मुझे चोट से बचना आता है। मुझे रात में, जब चारों ओर घना अंधेरा होता है, तब भी चुपके से निकलना आता है।”
लेकिन सच कहूँ तो, श्री ओकाडा (और मुझे पता है कि आप ही वो एक व्यक्ति हैं जिनसे मैं खुलकर बात कर सकता हूँ), मुझे भी नहीं पता

कि आप उस जगह क्या कर रहे हैं। मुझे इतना ज़रूर पता है कि वहाँ आपसे मिलने आने वाले लोग मोटी रकम खर्च कर रहे हैं। तो ज़रूर आप उनके लिए कुछ खास कर रहे होंगे जो इतने पैसे के लायक है। यह बात तो बर्फ पर कौवों को गिनने जितनी ही अस्पष्ट है। लेकिन आप असल में क्या करते हैं, और उस खास ज़मीन पर क्यों अटके हुए हैं, मुझे इसका ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है। ये दो सबसे अहम बातें हैं, लेकिन ये सबसे ज़्यादा छिपी हुई हैं, जैसे किसी हस्तरेखा विशेषज्ञ के चिन्ह का केंद्र। यही बात मुझे परेशान करती है।
"यानी, यही बात नोबोरू वटाया को चिंतित करती है," मैंने कहा। जवाब देने के बजाय, उशिकावा अपने कानों के ऊपर उलझे हुए बालों को खींचने लगा।
“यह बात सिर्फ आपके और मेरे बीच की है, श्री ओकाडा, लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैं वास्तव में आपकी बहुत प्रशंसा करता हूँ। इसमें कोई चापलूसी का भाव नहीं है। यह शायद अजीब लगे, लेकिन आप मूलतः एक बहुत ही साधारण व्यक्ति हैं। या सीधे शब्दों में कहूँ तो, आपमें कुछ भी खास नहीं है। इसके लिए क्षमा करें, लेकिन इसे गलत न समझें। हालाँकि, समाज में आपकी भूमिका के संदर्भ में यह सच है। लेकिन आपसे आमने-सामने मिलकर और इस तरह बात करके, मैं आपसे बहुत प्रभावित हुआ हूँ—आपके व्यवहार से। मेरा मतलब है, देखिए आपने डॉ. वटाया जैसे व्यक्ति को कैसे झकझोर दिया! इसीलिए मैं तो बस एक माध्यम हूँ। एक साधारण व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता था।”
“यही बात मुझे तुम्हारे बारे में पसंद है। मैं झूठ नहीं बोल रहा। मैं भले ही निकम्मा और निकम्मा हूँ, लेकिन मैं ऐसी बातों पर झूठ नहीं बोलता। और मैं तुम्हें पूरी तरह निष्पक्ष नज़रिए से भी नहीं देखता। अगर समाज में तुम्हारी जगह को लेकर तुममें

जोखिम भरे काम करके अपना जीवन यापन करता था। अगर मैं इसे जारी रखता, तो अब तक जेल में होता—या मर चुका होता। सच में। डॉक्टर के चाचा ने मुझे ऐन मौके पर बचा लिया। इसलिए मेरी इन छोटी आँखों ने बहुत कुछ देखा है। इस दुनिया में हर कोई थक कर हार जाता है: शौकिया हो या पेशेवर, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, सब थक कर हार जाते हैं।” हर किसी को चोट लगती है, चाहे वो अच्छे लोग हों या बुरे। इसीलिए हर कोई थोड़ा-बहुत बीमा करवा लेता है। मेरे पास भी थोड़ा-बहुत बीमा है, क्योंकि मैं सबसे निचले पायदान पर हूँ। इससे अगर आप थककर चूर हो जाएँ तो भी गुज़ारा हो सकता है। अगर आप बिल्कुल अकेले हैं और कहीं के नहीं हैं, तो एक बार गिरे तो सब खत्म।
“शायद मुझे आपसे ये नहीं कहना चाहिए, श्री ओकाडा, लेकिन आप गिरने के लिए तैयार हैं। ये बिल्कुल तय है। मेरी किताब में, दो- तीन पन्ने आगे बड़े-बड़े काले अक्षरों में यही लिखा है: ‘टोरू ओकाडा गिरने के लिए तैयार।’ ये सच है। मैं आपको डराने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। इस दुनिया में मेरा अनुमान टीवी पर मौसम के पूर्वानुमानों से कहीं ज़्यादा सटीक है। इसलिए मैं बस इतना ही कहना चाहता हूँ: एक समय ऐसा आता है जब पीछे हटने का सही समय होता है।”
उस समय उशिकावा ने अपना मुंह बंद कर लिया और मेरी तरफ देखा। फिर उन्होंने आगे कहा:
“तो चलिए, श्री ओकाडा, अब एक-दूसरे को परखने का यह सिलसिला बंद करते हैं और काम की बात पर आते हैं…। इसी के साथ हमारा यह लंबा परिचय समाप्त होता है, तो अब मैं आपको वह प्रस्ताव दे सकता हूँ जिसके लिए मैं यहाँ आया हूँ।”

उशिकावा ने अपने दोनों हाथ मेज पर रखे। फिर उसने अपनी जीभ अपने होठों पर फिराई।
“तो मान लीजिए कि मैंने अभी-अभी आपसे कहा है कि आपको उस ज़मीन से अपना नाता तोड़ लेना चाहिए और सौदे से पीछे हट जाना चाहिए। लेकिन शायद आप चाहकर भी पीछे नहीं हट सकते। शायद आप तब तक फँसे रहेंगे जब तक आप अपना कर्ज़ चुका नहीं देते।” उशिकावा ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी और मुझे गौर से देखा। “अगर पैसे की समस्या है, तो हमारे पास आपको देने के लिए पैसे हैं। अगर आपको अस्सी मिलियन येन चाहिए, तो मैं आपको अस्सी मिलियन येन एक अच्छे, करीने से बंधे हुए बंडल में ला सकता हूँ। यानी आठ हज़ार दस हज़ार येन के नोट। आप अपना सारा कर्ज़ चुका सकते हैं और बाकी पैसे बिना किसी झंझट के अपनी जेब में रख सकते हैं। फिर तो जश्न का समय होगा! अरे, क्या कहते हो?”
तो फिर यह जमीन और इमारत नोबोरू वटाया की है? क्या यही इरादा है? “हाँ, मुझे लगता है कि ऐसा ही है, चीजें इसी तरह चलती हैं। हालाँकि, मुझे लगता है कि बहुत सारी परेशान करने वाली छोटी-छोटी बातें हैं जिनका ध्यान रखना होगा…।”
मैंने उसके प्रस्ताव पर कुछ देर सोचा। “उशिकावा, सच कहूँ तो, मुझे यह बात समझ नहीं आ रही। मुझे समझ नहीं आता कि नोबोरू वटाया मुझे उस संपत्ति से दूर करने के लिए इतना उत्सुक क्यों है। एक बार जब वह उसका मालिक बन जाएगा, तो वह उसके साथ क्या करने की योजना बना रहा है?”
उशिकावा ने धीरे से अपनी हथेली से एक गाल को रगड़ा। “माफ़ कीजिए, श्रीमान ओकाडा, मुझे इन सब बातों की जानकारी नहीं है। जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, मैं बस एक साधारण संदेशवाहक हूँ। मेरा मालिक मुझे बताता है कि क्या करना है, और मैं वही करता

हूँ। और वह मुझे जो भी काम देता है, उनमें से ज़्यादातर अप्रिय होते हैं। जब मैं अलादीन की कहानी पढ़ता था, तो मुझे हमेशा जिन्न पर तरस आता था, जिस तरह से उससे इतनी मेहनत करवाई जाती थी, लेकिन मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं बड़ा होकर उसके जैसा बनूँगा। यह एक दुखद कहानी है, मैं आपको बता दूँ। लेकिन अंत में, मैंने आपसे जो कुछ भी कहा है, वह एक संदेश है जो मुझे पहुँचाने के लिए भेजा गया है। यह डॉ. वटाया की ओर से है। चुनाव आपका है। तो आप क्या कहते हैं? मुझे क्या जवाब लेकर वापस जाना चाहिए?”
मेंने कुछ नहीं कहा।
“बेशक, आपको सोचने के लिए समय चाहिए होगा। कोई बात नहीं। हम आपको समय दे सकते हैं। मेरा मतलब यह नहीं है कि आप अभी तुरंत फैसला कर लें। मैं कहना चाहूँगा कि आप जितना चाहें उतना समय ले सकते हैं, लेकिन मुझे खेद है कि हम इतने लचीले नहीं हो सकते। अब, श्रीमान ओकाडा, मैं बस इतना कहना चाहता हूँ। मैं आपको अपनी निजी राय देना चाहता हूँ। इस तरह का बढ़िया प्रस्ताव हमेशा के लिए मेज पर नहीं पड़ा रहेगा। आप एक पल के लिए भी नज़र हटाएँ, और जब आप वापस आएँ तो यह गायब हो सकता है। यह खिड़की के शीशे पर जमी धुंध की तरह गायब हो सकता है। इसलिए कृपया इस पर गंभीरता से विचार करें—जल्दी। मेरा मतलब है, यह कोई बुरा प्रस्ताव नहीं है। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं?”
उशिकावा ने आह भरी और अपनी घड़ी देखी। “अरे बाप रे—मुझे जाना होगा। लगता है मैं यहाँ ज़रूरत से ज़्यादा रुक गया। एक और बियर पी ली। और हमेशा की तरह, सारी बातें मैंने ही कीं। उसके लिए माफ़ करना। मैं बहाने नहीं बना रहा, लेकिन पता नहीं, जब मैं यहाँ आता

हूँ तो बस यहीं बस जाता हूँ। आपका घर तो आरामदायक है, श्री ओकाडा। शायद यही वजह है।”
उशिकावा खड़ा हुआ और अपना गिलास, बीयर की बोतल और ऐशट्रे लेकर रसोई के सिंक की ओर चला गया।
“श्री ओकाडा, मैं जल्द ही आपसे संपर्क करूंगा। और मैं आपके लिए सुश्री कुमिको से बात करने की व्यवस्था करूंगा, यह मेरा वादा है। आप जल्द ही इसका इंतजार कर सकते हैं।”

•

उशिकावा के जाने के बाद, मैंने खिड़कियाँ खोल दीं और जमा हुआ सिगरेट का धुआँ बाहर निकाल दिया। फिर मैंने एक गिलास पानी पिया। सोफे पर बैठकर, मैंने अपनी बिल्ली, मैकरेल को गोद में लेकर सहलाया। मैंने कल्पना की कि उशिकावा मेरे दरवाजे से एक कदम आगे बढ़ते ही अपना भेस उतार देगा और नोबोरू वटाया के पास वापस उड़ जाएगा। यह कल्पना करना मूर्खतापूर्ण था।

फिटिंग रूम

•

एक उत्तराधिकारी
नटमेग को अपने पास आने वाली महिलाओं के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उनमें से किसी ने भी अपने बारे में कोई जानकारी नहीं दी, और नटमेग ने कभी पूछा भी नहीं। जिन नामों से उन्होंने अपनी मुलाक़ात तय की थी, वे स्पष्ट रूप से मनगढ़ंत थे। लेकिन उनके आसपास सत्ता और धन के मेल से पैदा होने वाली एक खास गंध फैली हुई थी। महिलाओं ने खुद कभी इसका दिखावा नहीं किया, लेकिन नटमेग उनके कपड़ों की शैली और फिटिंग से समझ गई कि वे उच्च वर्ग के परिवारों से थीं।
अकासाका में एक साधारण सी इमारत में, एक शांत जगह पर, उसने अपने ग्राहकों की निजता के प्रति अत्यधिक सतर्कता का सम्मान करते हुए एक कमरा किराए पर लिया। काफी सोच-विचार के बाद, उसने इसे एक फैशन डिज़ाइन स्टूडियो बनाने का फैसला किया। दरअसल, वह खुद एक फैशन डिज़ाइनर रह चुकी थी, और इतनी बड़ी संख्या में अलग-अलग तरह की महिलाओं का उससे मिलने आना किसी को भी संदिग्ध नहीं लगता। उसकी सभी ग्राहक तीस से पचास वर्ष की आयु की महिलाएं थीं, जिनसे महंगे, दर्जी द्वारा सिले हुए कपड़े पहनने की उम्मीद की जा सकती थी। उसने कमरे को कपड़ों, डिज़ाइन स्केच और फैशन पत्रिकाओं से भर दिया, फैशन डिज़ाइन के लिए आवश्यक औजार, वर्कबेंच और पुतले मंगवाए, और यहाँ तक कि जगह को प्रामाणिकता का आभास देने के लिए कुछ पोशाकें खुद डिज़ाइन भी कीं। दो कमरों में से छोटे वाले को उसने फिटिंग रूम बना दिया। उसके ग्राहकों को इस "फिटिंग रूम"

में ले जाया जाता था, और सोफे पर नटमेग द्वारा उनकी "फिटिंग" की जाती थी।
उनकी क्लाइंट लिस्ट एक बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर के मालिक की पत्नी ने तैयार की थी। उस महिला ने अपने दोस्तों के व्यापक दायरे में से चुनिंदा भरोसेमंद उम्मीदवारों को बड़ी सावधानी से चुना था, क्योंकि उसे पूरा यकीन था कि किसी भी तरह के स्कैंडल से बचने के लिए उसे इसे एक खास क्लब बनाना होगा, जिसकी सदस्यता सीमित हो। अन्यथा, इस व्यवस्था की खबर तेजी से फैल जाएगी। चुनी गई महिलाओं को चेतावनी दी गई थी कि वे अपने "सदस्य बनने" के बारे में किसी को कुछ न बताएं। वे न केवल बेहद सतर्क थीं, बल्कि उन्हें यह भी पता था कि अगर उन्होंने अपना वादा तोड़ा तो उन्हें क्लब से हमेशा के लिए निकाल दिया जाएगा।
हर ग्राहक फ़ोन करके "फिटिंग" के लिए अपॉइंटमेंट लेती और तय समय पर पहुँच जाती, यह जानते हुए कि उसे किसी अन्य ग्राहक से मिलने का डर नहीं है, उसकी निजता पूरी तरह सुरक्षित रहेगी। मानदेय मौके पर ही नकद में दिया जाता था, जिसका साइज़ डिपार्टमेंट स्टोर के मालिक की पत्नी तय करती थी—जो नटमेग की कल्पना से कहीं ज़्यादा था, हालाँकि यह कभी उसके लिए कोई बाधा नहीं बना। नटमेग से "फिटिंग" करवाने वाली हर महिला बिना किसी अपवाद के हमेशा दोबारा अपॉइंटमेंट लेती थी। डिपार्टमेंट स्टोर के मालिक की पत्नी ने नटमेग को समझाया, "पैसा आपके लिए बोझ न बने। जितना ज़्यादा पैसा वे देती हैं, उतना ही ज़्यादा वे महिलाएं आश्वस्त महसूस करती हैं।" नटमेग हफ्ते में तीन दिन अपने "ऑफिस" जाती और एक दिन में एक "फिटिंग" करती। बस इतना ही उसका काम था।
सोलह वर्ष की आयु में सिनेमन अपनी माँ का सहायक बन गया। तब तक नटमेग के लिए सभी लिपिकीय कार्यों को स्वयं संभालना कठिन हो

गया था, लेकिन वह किसी अनजान व्यक्ति को काम पर रखने से हिचकिचा रही थी। बहुत विचार-विमर्श के बाद जब उसने सिनेमन से अपने काम में मदद करने के लिए कहा, तो उसने बिना पूछे ही तुरंत सहमति दे दी कि वह किस प्रकार का काम करती है। वह हर सुबह दस बजे टैक्सी से दफ्तर जाता (बसों या मेट्रो ट्रेनों में दूसरों के साथ यात्रा करना उसे असहनीय लगता था), सफाई और धूल झाड़ता, हर चीज़ को उसकी जगह पर रखता, गुलदस्तों में ताज़े फूल भरता, कॉफ़ी बनाता, ज़रूरत का सारा सामान खरीदता, कैसेट प्लेयर पर धीमी आवाज़ में शास्त्रीय संगीत बजाता और हिसाब-किताब रखता।
कुछ ही समय में, सिनेमन ऑफिस में एक अपरिहार्य व्यक्ति बन गया। चाहे उस दिन क्लाइंट आने वाले हों या नहीं, वह सूट और टाई पहनकर वेटिंग रूम डेस्क पर अपनी जगह ले लेता। किसी भी क्लाइंट ने उसके कम बोलने की शिकायत नहीं की। इससे उन्हें कभी कोई असुविधा नहीं हुई, बल्कि वे इसे ही पसंद करते थे। अपॉइंटमेंट लेने पर वही उनका फोन उठाता था। वे अपना पसंदीदा समय और तारीख बतातीं, और वह जवाब में डेस्कटॉप पर खटखटाता: एक बार "नहीं" के लिए और दो बार "हाँ" के लिए। महिलाओं को यह संक्षिप्तता पसंद आती थी। वह इतने आकर्षक चेहरे-मोहरे वाला युवक था कि उसे मूर्ति बनाकर संग्रहालय में प्रदर्शित किया जा सकता था, और कई अन्य सुंदर युवकों के विपरीत, वह कभी भी बोलते समय अपनी छवि को खराब नहीं करता था। महिलाएं आते-जाते समय उससे बात करतीं, और वह मुस्कुराकर और सिर हिलाकर जवाब देता। ये "बातचीत" उन्हें सुकून देती, बाहरी दुनिया से लाए गए तनाव को कम करती और "फिटिंग" के बाद होने वाली असहजता को दूर करती। और स्वयं सिनेमन को भी, जो आमतौर पर अजनबियों से संपर्क करना नापसंद करता था, महिलाओं के साथ बातचीत करने में कोई तकलीफ नहीं हुई।

अठारह साल की उम्र में सिनेमन को ड्राइविंग लाइसेंस मिल गया। नटमेग ने उसके लिए एक दयालु ड्राइविंग प्रशिक्षक ढूंढा, जो उसे निजी तौर पर ड्राइविंग सिखाता था, लेकिन सिनेमन ने पहले ही हर उपलब्ध निर्देश पुस्तिका पढ़ ली थी और सारी बारीकियां आत्मसात कर ली थीं। उसे केवल व्यावहारिक ज्ञान की आवश्यकता थी, जो किताबों से नहीं मिल सकता था, और उसने कुछ ही दिनों में गाड़ी चलाकर इसे हासिल कर लिया। लाइसेंस मिलते ही उसने पुरानी कारों की किताबों का अध्ययन किया और अपनी मां के लिए काम करके बचाए गए सारे पैसे (जिनमें से उसे कभी भी अपने खर्चों के लिए इस्तेमाल नहीं करना पड़ा) डाउन पेमेंट के रूप में इस्तेमाल करके एक पोर्श कैरेरा खरीद ली। उसने इंजन को चमकाया, डाक से सारे नए पुर्जे मंगवाए, नए टायर लगवाए और कुल मिलाकर कार को रेसिंग स्तर तक पहुंचा दिया। हालांकि, वह इसे हर रोज अपने घर हिरोओ से अकासाका स्थित कार्यालय तक उसी छोटे, भीड़भाड़ वाले रास्ते पर चलाता था, और शायद ही कभी चालीस मील प्रति घंटे से अधिक की गति से चलाता था। इसी वजह से यह दुनिया की दुर्लभ पोर्श 911 कारों में से एक बन गई।

•

नटमेग ने सात साल से अधिक समय तक अपना काम जारी रखा, इस दौरान उसने तीन ग्राहकों को खो दिया: पहले की कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई; दूसरे को एक मामूली गलती के लिए "स्थायी निष्कासन" का सामना करना पड़ा; और तीसरी अपने पति के काम के सिलसिले में "बहुत दूर" चली गई। इनकी जगह चार नए ग्राहक आए, सभी एक ही तरह की आकर्षक अधेड़ उम्र की महिलाएं थीं जो महंगे कपड़े पहनती थीं और छद्म नामों का इस्तेमाल करती थीं। सात वर्षों के दौरान काम में कोई बदलाव नहीं आया। वह अपने ग्राहकों को "फिटिंग" करती रही, और

सिनेमन ऑफिस की सफाई, हिसाब-किताब और पोर्श कार चलाने का काम करता रहा। न कोई प्रगति हुई, न कोई गिरावट, बस सभी लोग धीरे-धीरे बूढ़े होते गए। नटमेग पचास के करीब पहुंच रही थी, और सिनेमन बीस साल का हो गया था। सिनेमन को अपना काम पसंद आता था, लेकिन नटमेग धीरे-धीरे लाचारी की भावना से घिरती चली गई। वर्षों तक, वह अपने प्रत्येक ग्राहक के भीतर छिपी "किसी चीज़" को "फिटिंग" करती रही। वह कभी पूरी तरह से नहीं समझ पाई कि वह उनके लिए क्या कर रही थी, लेकिन उसने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास जारी रखा। इस बीच, वे "समस्याएँ" कभी ठीक नहीं हुईं। वह उन्हें पूरी तरह से दूर नहीं कर पाई; उसकी उपचार शक्तियाँ केवल कुछ समय के लिए उनकी सक्रियता को थोड़ा कम कर सकती थीं। कुछ ही दिनों में (आमतौर पर तीन से दस दिनों में), हर समस्या फिर से शुरू हो जाती, थोड़े समय में बढ़ती और घटती, लेकिन समय के साथ स्पष्ट रूप से बड़ी होती जाती—जैसे कैंसर कोशिकाएँ। नटमेग उन्हें अपने हाथों में बढ़ते हुए महसूस कर सकती थी। वे उसे कहतीं: तुम अपना समय बर्बाद कर रही हो; चाहे तुम कुछ भी करो, अंत में जीत हमारी ही होगी। और वे सही थीं। उसे जीत की कोई उम्मीद नहीं थी। वह केवल उनकी प्रगति को थोड़ा धीमा कर सकती थी, ताकि उसके ग्राहकों को कुछ दिनों की शांति मिल सके।
नटमेग अक्सर खुद से पूछती थी, "क्या ये सिर्फ इन महिलाओं की बात है? क्या दुनिया की सभी महिलाओं के अंदर इस तरह की कोई 'खासियत' होती है? और यहाँ आने वाली सभी महिलाएं अधेड़ उम्र की ही क्यों होती हैं? क्या मेरे अंदर भी ऐसी ही कोई 'खासियत' है?"
लेकिन नटमेग को अपने सवालों के जवाब जानने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं थी। उसे बस इतना ही यकीन था कि हालात ने किसी तरह उसे उसके कमरे में कैद कर रखा था। लोगों को उसकी ज़रूरत थी, और जब तक

उन्हें उसकी ज़रूरत पड़ती रहेगी, वह बाहर नहीं निकल सकती थी। कभी-कभी उसकी बेबसी का एहसास बहुत गहरा और भयानक होता था, और वह खुद को एक खाली खोल की तरह महसूस करती थी। वह अंदर से टूट रही थी, एक अंधेरे शून्य में विलीन होती जा रही थी। ऐसे समय में, वह अपने शांत बेटे से अपने दिल की बात कहती, और सिनेमन ध्यान से अपनी माँ की बातें सुनता हुआ सिर हिलाता रहता। वह कभी कुछ नहीं कहता था, लेकिन उससे इस तरह बात करने से उसे एक अजीब तरह की शांति मिलती थी। उसे महसूस होता था कि वह पूरी तरह अकेली नहीं है, और न ही पूरी तरह बेबस है। कितना अजीब है, उसने सोचा: मैं दूसरों को ठीक करती हूँ, और सिनेमन मुझे ठीक करता है। लेकिन सिनेमन को कौन ठीक करता है? क्या वह एक ब्लैक होल की तरह है, जो सारे दर्द और अकेलेपन को खुद ही सोख लेता है? एक बार—और सिर्फ एक बार—उसने अपने ग्राहकों के कपड़ों की फिटिंग करते समय जिस तरह से अपना हाथ उसके माथे पर रखती थी, उसी तरह उसके भीतर कुछ भी महसूस करने की कोशिश की। लेकिन उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ।
कुछ ही समय बाद, नटमेग को लगा कि वह अपना काम छोड़ देना चाहती है। “मुझमें अब ज़्यादा ताकत नहीं बची है। अगर मैं ऐसे ही चलती रही, तो मैं पूरी तरह से थक जाऊंगी। मेरे पास कुछ भी नहीं बचेगा।” लेकिन लोगों को उसकी “फिटिंग” की बहुत ज़रूरत थी। वह अपने ग्राहकों को सिर्फ़ अपनी सुविधा के लिए छोड़ना नहीं चाहती थी।
उसी साल गर्मियों में नटमेग को अपना उत्तराधिकारी मिल गया। शिंजुकु में एक इमारत के सामने बैठे युवक के गाल पर निशान देखते ही वह समझ गई।

एक मूर्ख वृक्ष मेंढक की बेटी
(मे कासाहारा का दृष्टिकोण: 4)

•

नमस्कार, श्रीमान विंड-अप बर्ड।
सुबह के ढाई बज रहे हैं। मेरे सभी पड़ोसी गहरी नींद में सो रहे हैं, लेकिन मुझे आज रात नींद नहीं आ रही है, इसलिए मैं जागकर आपको यह पत्र लिख रहा हूँ। सच कहूँ तो, मुझे नींद न आना उतना ही असामान्य है जितना कि सूमो पहलवानों का टोपी में अच्छा दिखना। आमतौर पर, जब सोने का समय होता है तो मैं तुरंत सो जाता हूँ और जब उठने का समय होता है तो तुरंत जाग जाता हूँ। मेरे पास अलार्म घड़ी तो है, लेकिन मैं उसका इस्तेमाल लगभग कभी नहीं करता। हालाँकि, कभी-कभार ऐसा होता है: मैं आधी रात को जाग जाता हूँ और फिर सो नहीं पाता।
मैं अपनी डेस्क पर बैठकर तुम्हें यह पत्र लिखने की योजना बना रहा हूँ, जब तक मुझे नींद न आ जाए, इसलिए मुझे नहीं पता कि यह पत्र लंबा होगा या छोटा। वैसे भी, जब भी मैं तुम्हें पत्र लिखता हूँ, मुझे अंत तक यह पक्का पता नहीं होता।
खैर, मुझे तो ऐसा लगता है कि ज़्यादातर लोग जिस तरह से जीते हैं (शायद कुछ अपवाद हों), वे सोचते हैं कि दुनिया या ज़िंदगी (या जो भी हो) एक ऐसी जगह है जहाँ सब कुछ मूल रूप से तार्किक और सुसंगत है (या होना चाहिए)। यहाँ अपने पड़ोसियों से बात करते हुए मुझे अक्सर यही लगता है। जैसे, जब कुछ होता है, चाहे वह कोई बड़ी घटना हो जो पूरे समाज को प्रभावित करे या कोई छोटी और निजी बात, लोग उसके बारे में ऐसे बात करते हैं, "अरे हाँ, ऐसा तो हुआ ही होगा," और ज़्यादातर लोग मान जाते हैं और कहते हैं, "हाँ, ठीक है, मैं

समझ गया," लेकिन मुझे यह बात समझ नहीं आती। "A ऐसा है, इसलिए B हुआ।" मेरा मतलब है, इससे कुछ भी स्पष्ट नहीं होता। यह ऐसा है जैसे आप माइक्रोवेव में एक कटोरे में इंस्टेंट राइस पुडिंग मिक्स डालते हैं और बटन दबाते हैं, और जब घंटी बजती है तो आप ढक्कन हटाते हैं, और आपको राइस पुडिंग मिल जाती है। मेरा मतलब है, स्विच दबाने और माइक्रोवेव की घंटी बजने के बीच क्या होता है? आप यह नहीं बता सकते कि ढक्कन के नीचे क्या हो रहा है। हो सकता है कि इंस्टेंट राइस पुडिंग पहले अंधेरे में, जब कोई नहीं देख रहा होता, मैकरोनी ग्रैटिन में बदल जाए और फिर वापस राइस पुडिंग बन जाए। हमें लगता है कि राइस पुडिंग मिक्स को माइक्रोवेव में रखने और घंटी बजने के बाद राइस पुडिंग बनना स्वाभाविक है, लेकिन मेरे लिए यह सिर्फ एक अनुमान है। अगर कभी- कभार राइस पुडिंग मिक्स को माइक्रोवेव में रखने के बाद घंटी बजती और ढक्कन खोलने पर मैकरोनी ग्रैटिन बन जाए, तो मुझे थोड़ी राहत मिलेगी। मुझे लगता है कि मैं चौंक जाऊंगी, बेशक, लेकिन पता नहीं, मुझे लगता है कि मुझे थोड़ी राहत भी मिलेगी। या कम से कम मुझे लगता है कि मैं इतनी परेशान नहीं होऊंगी, क्योंकि यह कुछ मायनों में कहीं ज्यादा वास्तविक लगेगा।
“ज़्यादा वास्तविक” क्यों? इसे तार्किक रूप से, शब्दों में समझाना बहुत, बहुत, बहुत मुश्किल होगा, लेकिन शायद अगर आप मेरे जीवन के सफर को उदाहरण मानकर इस पर गहराई से विचार करें, तो आप समझ पाएंगे कि इसमें “स्थिरता” जैसा कुछ भी नहीं रहा है। सबसे पहले तो, यह एक रहस्य ही है कि मुझ जैसी बेटी दो ऐसे माता-पिता की संतान कैसे बन गई जो पेड़ पर बैठे मेंढकों की तरह उबाऊ थे। मुझे पता है कि यह कहना थोड़ा अजीब लग सकता है, लेकिन मैं उन दोनों से कहीं ज़्यादा गंभीर हूँ। मैं कोई शेखी नहीं मार रही; यह बस एक

सच्चाई है। मेरा यह मतलब नहीं है कि मैं उनसे बेहतर हूँ, लेकिन मैं उनसे ज़्यादा गंभीर इंसान हूँ। अगर आप उनसे मिलते, तो आप समझ जाते कि मेरा क्या मतलब है, मिस्टर विंड-अप बर्ड। वे लोग मानते हैं कि दुनिया उतनी ही स्थिर और समझने योग्य है जितनी किसी महंगे इलाके में बने नए घर का लेआउट, इसलिए अगर आप हर काम तार्किक और स्थिर तरीके से करें, तो अंत में सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसीलिए जब मैं वैसा नहीं होता तो वे परेशान, दुखी और गुस्सा हो जाते हैं।
मैं इस दुनिया में ऐसे सरासर मूर्खों की संतान बनकर क्यों पैदा हुई? और उन्हीं लोगों के बीच पली-बढ़ी होने के बावजूद मैं उन्हीं जैसी मूर्ख मेंढक की बेटी क्यों नहीं बनी? मैं बचपन से यही सोचती आ रही हूँ। पर इसका कोई हल नहीं निकलता। मुझे लगता है कि इसके पीछे कोई अच्छा कारण होना चाहिए, पर वो कारण मुझे समझ नहीं आ रहा। और भी बहुत सी बातें हैं जिनका कोई तार्किक स्पष्टीकरण नहीं है। जैसे, "सब लोग मुझसे इतनी नफरत क्यों करते हैं?" मैंने कुछ भी गलत नहीं किया। मैं तो बस अपनी जिंदगी सामान्य तरीके से जी रही थी। लेकिन फिर अचानक एक दिन मैंने देखा कि कोई मुझे पसंद नहीं करता। मुझे समझ नहीं आता।
फिर एक के बाद एक कई बातें हुईं, और इसी तरह तरह-तरह की घटनाएं घटीं। जैसे, मेरी मुलाकात मोटरसाइकिल वाले लड़के से हुई और हमारा वो बेवकूफी भरा एक्सीडेंट हो गया। मुझे याद है—या यूं कहूं कि ये सारी घटनाएं मेरे दिमाग में एक क्रम में लगी हैं— ऐसा नहीं है कि “यह इस तरह हुआ, तो स्वाभाविक रूप से वह उस तरह हुआ।” हर बार जब घंटी बजती है और मैं पर्दा हटाता हूं, तो मुझे कुछ ऐसा मिल जाता है जो मैंने पहले कभी नहीं देखा होता।

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि मेरे साथ क्या हो रहा है, और देखते ही देखते मैं स्कूल जाना छोड़ चुकी थी और घर पर इधर-उधर घूम रही थी, और तभी मेरी मुलाकात आपसे हुई, मिस्टर विंड-अप बर्ड। नहीं, उससे पहले मैं एक विग कंपनी के लिए सर्वे कर रही थी। लेकिन विग कंपनी ही क्यों? यह भी एक रहस्य है। मुझे याद नहीं आ रहा। शायद दुर्घटना में मेरे सिर पर चोट लगी हो और मेरे दिमाग की स्थिति बिगड़ गई हो। या शायद उस मनोवैज्ञानिक सदमे के कारण मैंने अपनी सारी यादें मिटानी शुरू कर दीं, जैसे कोई गिलहरी अखरोट छिपाती है और भूल जाती है कि उसने उसे कहाँ दबाया है। (क्या आपने कभी ऐसा होते देखा है, मिस्टर विंड-अप बर्ड? मैंने देखा है। जब मैं छोटी थी। मुझे वह बेवकूफ गिलहरी बहुत मज़ेदार लगती थी! मुझे कभी यह ख्याल भी नहीं आया कि मेरे साथ भी ऐसा ही होगा।)
खैर, मैंने विग कंपनी के लिए सर्वे करना शुरू किया, और इसी से मुझे विगों से इतना लगाव हो गया जैसे कि ये मेरी किस्मत में लिखा हो। बिल्कुल बेमेल! विग ही क्यों, मोज़े या चावल के चम्मच क्यों नहीं? अगर मोज़े या चावल के चम्मच होते, तो मैं इस विग फैक्ट्री में इतनी मेहनत नहीं कर रही होती। है ना? और अगर मैंने वो बेवकूफी भरा बाइक एक्सीडेंट न किया होता, तो शायद उस गर्मी में तुम्हारी मुलाकात उस गली में न हुई होती, और अगर तुम मुझसे न मिले होते, तो शायद तुम्हें मियावाकी के कुएं के बारे में कभी पता न चलता, इसलिए तुम्हारे चेहरे पर वो निशान न पड़ता, और तुम उन सब अजीबोगरीब चीजों में न उलझते... शायद। जब मैं इस तरह सोचती हूँ, तो खुद से पूछे बिना नहीं रह पाती, "इस दुनिया में कोई तार्किक संगति कहाँ है?"
मुझे नहीं पता—शायद दुनिया में दो तरह के लोग हैं, और एक तरह के लोगों के लिए दुनिया एकदम तार्किक और चावल की खीर जैसी है, और

दूसरे तरह के लोगों के लिए यह सब कुछ अंदाजे से बनने वाली मैकरोनी ग्रैटिन जैसा है। मुझे यकीन है कि अगर मेरे उन मेंढक जैसे माता-पिता ने माइक्रोवेव में चावल की खीर का मिश्रण डाला और घंटी बजने पर मैकरोनी ग्रैटिन बन गई, तो वे खुद से कहेंगे, "ओह, हमने गलती से मैकरोनी ग्रैटिन का मिश्रण डाल दिया होगा," या वे मैकरोनी ग्रैटिन को बाहर निकालेंगे और खुद को समझाने की कोशिश करेंगे, "यह मैकरोनी ग्रैटिन जैसा दिखता है, लेकिन असल में यह चावल की खीर है।" और अगर मैं प्यार से उन्हें समझाने की कोशिश करूं कि कभी-कभी चावल की खीर का मिश्रण डालने पर मैकरोनी ग्रैटिन बन जाती है, तो वे कभी मेरी बात नहीं मानेंगे। वे शायद गुस्सा हो जाएंगे। क्या आप समझ रहे हैं कि मैं आपको क्या बताने की कोशिश कर रहा हूं, मिस्टर विंड-अप बर्ड?
याद है जब मैंने उस समय तुम्हारे निशान को चूमा था? पिछली गर्मियों में तुमसे विदा लेने के बाद से मैं उसी के बारे में सोच रही हूँ, बार-बार, जैसे कोई बिल्ली बारिश को देखती है, और सोचती हूँ कि आखिर वो सब क्या था? सच कहूँ तो मुझे नहीं लगता कि मैं खुद उसे समझा सकती हूँ। भविष्य में कभी, शायद दस या बीस साल बाद, अगर हमें इस बारे में बात करने का मौका मिला, और अगर मैं तब तक ज़्यादा समझदार और होशियार हो जाऊँगी, तो शायद मैं तुम्हें बता पाऊँगी कि उसका क्या मतलब था। लेकिन अभी, मुझे अफ़सोस है, मुझे लगता है कि मुझमें उसे सही शब्दों में बयां करने की क्षमता या बुद्धि नहीं है।
लेकिन एक बात मैं आपसे ईमानदारी से कह सकती हूँ, श्रीमान विंड-अप बर्ड, कि मुझे आप बिना निशान के ज़्यादा अच्छे लगते हैं। नहीं; एक मिनट रुकिए; यह ठीक नहीं है। आपने जानबूझकर निशान नहीं लगाया था। शायद मुझे कहना चाहिए कि निशान के बिना भी आप मेरे

लिए काफी अच्छे हैं। क्या यही सही है? नहीं, इससे कुछ भी स्पष्ट नहीं होता।
मुझे लगता है, मिस्टर विंड-अप बर्ड। वह निशान शायद आपको कुछ महत्वपूर्ण दिलाएगा। लेकिन साथ ही साथ वह आपसे कुछ छीन भी रहा होगा। एक तरह का लेन-देन। और अगर हर कोई आपसे इसी तरह चीजें छीनता रहेगा, तो आप धीरे-धीरे कमजोर होते चले जाएंगे और अंत में आपका कुछ भी शेष नहीं बचेगा। तो, मुझे नहीं पता, शायद मैं वास्तव में यही कहना चाहता हूं कि अगर आपके पास वह निशान न भी हो, तो भी मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।
कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं यहाँ बैठकर हर दिन इस तरह के विग इसलिए बना रही हूँ क्योंकि मैंने उस समय आपके निशान को चूमा था। उसी के कारण मैंने उस जगह को छोड़ने का, आपसे जितना हो सके दूर जाने का फैसला किया था। मुझे पता है कि ऐसा कहकर मैं आपको दुख पहुँचा रही हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि यह सच है। फिर भी, उसी के कारण मुझे आखिरकार वह जगह मिल पाई जहाँ मैं रहती हूँ। तो, एक तरह से, मैं आपकी आभारी हूँ, श्रीमान विंड-अप बर्ड। मुझे नहीं लगता कि किसी का "एक तरह से" आभारी होना कोई मज़ेदार बात है, है ना? तो अब मुझे लगता है कि मैंने आपसे लगभग सब कुछ कह दिया है, श्रीमान विंड-अप बर्ड। सुबह के लगभग चार बज रहे हैं। मुझे साढ़े सात बजे उठना है, तो शायद मैं तीन घंटे और कुछ मिनट सो पाऊँ। आशा है कि मैं तुरंत सो जाऊँगी। खैर, मैं यह पत्र यहीं समाप्त करती हूँ। अलविदा, श्रीमान विंड-अप बर्ड। कृपया मेरे लिए एक छोटी सी प्रार्थना कर दीजिए ताकि मैं सो सकूँ।

भूमिगत भूलभुलैया

•

सिनेमन के दो दरवाजे
“उस घर में एक कंप्यूटर है, है ना, श्री ओकाडा? हालांकि, मुझे नहीं पता कि इसका इस्तेमाल कौन कर रहा है,” उशिकावा ने कहा। रात के नौ बज रहे थे, और मैं रसोई की मेज पर बैठा था, फोन मेरे कान से लगा हुआ था।
“हाँ,” मैंने कहा और बात वहीं खत्म कर दी।
उशिकावा ने नाक सिकोड़ते हुए कहा, "मैं अपनी रोज़ाना की जासूसी से इतना तो जानता ही हूँ। बेशक, मैं इस बात पर कुछ नहीं कह रहा कि आपके पास वहाँ कंप्यूटर है। आजकल, किसी भी तरह का दिमागी काम करने वाले व्यक्ति के पास कंप्यूटर होना ज़रूरी है। इसमें कुछ भी अजीब नहीं है।"
संक्षेप में कहें तो, मुझे यह विचार आया कि अगर मैं कंप्यूटर के ज़रिए आपसे संपर्क कर सकूँ तो अच्छा रहेगा। इसलिए मैंने इसके बारे में पता लगाया, लेकिन सच कहूँ तो, यह मेरी कल्पना से कहीं ज़्यादा पेचीदा है। साधारण फ़ोन से कॉल करने पर कनेक्शन नहीं हो पाता। साथ ही, इसके लिए एक विशेष पासवर्ड की ज़रूरत होती है। पासवर्ड न हो तो दरवाज़ा खुलता ही नहीं। बस, यहीं पर मेरा काम तमाम हो गया।
मैं चुप रहा।
“श्रीमान ओकाडा, मुझे गलत मत समझिए। मेरा इरादा आपके कंप्यूटर में घुसकर उसमें छेड़छाड़ करने का नहीं है। ऐसा कुछ भी नहीं है। आपने जो सुरक्षा व्यवस्था की है, उसके चलते चाहकर भी मैं डेटा नहीं निकाल सकता। नहीं, यह कभी कोई मुद्दा ही नहीं था। मेरा

मकसद बस आप और सुश्री कुमिको के बीच बातचीत करवाना है। याद है, मैंने आपसे वादा किया था कि मैं आप दोनों को आमने-सामने बात करवाने की पूरी कोशिश करूंगा। उन्हें आपके घर से गए काफी समय हो गया है, और इस तरह बात अधूरी छोड़ना ठीक नहीं है। अभी जिस तरह की स्थिति है, आपकी जिंदगी शायद और भी अजीब होती जाएगी। लोगों के लिए आमने-सामने बात करना, खुलकर अपनी भावनाएं व्यक्त करना हमेशा बेहतर होता है। वरना गलतफहमियां होना तय है, और गलतफहमियां लोगों को दुखी करती हैं… खैर, मैंने सुश्री कुमिको से इसी तरह बात करने की कोशिश की। मैंने अपनी तरफ से हर संभव प्रयास किया।”
लेकिन मैं उसे राजी नहीं कर पा रहा था। उसने साफ मना कर दिया कि वह आपसे सीधे बात नहीं करेगी—फोन पर भी नहीं (क्योंकि आमने- सामने की मुलाकात तो मुमकिन ही नहीं थी)। फोन पर भी नहीं! मैं हार मानने को तैयार था। मैंने हर संभव कोशिश की, लेकिन उसका मन पक्का था। एकदम पत्थर की तरह।
उशिकावा ने मेरी प्रतिक्रिया जानने के लिए कुछ देर रुककर इंतजार किया, लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा।
फिर भी, मैं उसकी बात मानकर पीछे नहीं हट सकता था। अगर मैंने ऐसा बर्ताव किया तो डॉ. वटाया मुझे खूब खरी-खोटी सुनाएंगी। सामने वाला चाहे कितना भी अड़ियल हो, मैं समझौता करने का कोई न कोई रास्ता निकाल ही लूंगा। यही तो हमारा काम है: समझौता करने का रास्ता ढूंढना। अगर वे आपको फ्रिज नहीं बेचेंगे, तो उनसे बर्फ ही खरीद लो। इसलिए मैंने इस काम को करने का कोई तरीका ढूंढने के लिए खूब दिमाग लगाया। सच कहूं तो, यही तो हमें इंसान बनाता है— लाखों तरह के विचार सोचना। तभी अचानक मेरे धुंधले दिमाग में एक बढ़िया विचार कौंधा, जैसे बादलों के बीच से कोई तारा चमक रहा

हो। ‘बस यही!’ मैंने खुद से कहा। ‘क्यों न कंप्यूटर स्क्रीन पर बातचीत की जाए?’ मतलब: कीबोर्ड से स्क्रीन पर शब्द लिखना। आप ये कर सकते हैं ना, मिस्टर ओकाडा?’
मैंने लॉ फर्म में काम करते समय कंप्यूटर का इस्तेमाल किया था, जिसमें मैं पूर्व उदाहरणों पर शोध करती थी, ग्राहकों के व्यक्तिगत डेटा की खोज करती थी और ईमेल के माध्यम से संवाद करती थी। कुमिको भी काम पर कंप्यूटर का इस्तेमाल करती थी। वह जिस स्वास्थ्य खाद्य पत्रिका का संपादन करती थी, उसमें व्यंजनों और पोषण संबंधी विश्लेषणों से संबंधित कंप्यूटर फाइलें थीं।
“यह किसी भी पुराने कंप्यूटर पर काम नहीं करेगा,” उशिकावा ने आगे कहा, “लेकिन हमारे और आपके कंप्यूटर से आप दोनों काफी तेज़ गति से संवाद कर पाएंगे। सुश्री कुमिको कहती हैं कि वह आपसे इस तरह बात करने को तैयार हैं। मैं उन्हें इससे ज़्यादा राज़ी नहीं कर पाया। संदेशों का आदान-प्रदान वास्तविक समय में होगा, यह लगभग एक-दूसरे से बात करने जैसा होगा। यही एक आख़िरी समझौता था जो मैं कर पाया। बंदर से ज्ञान निकलवाना। आपका क्या कहना है? हो सकता है आपको यह विचार ज़्यादा पसंद न आए, लेकिन मैंने इसके लिए अपना दिमाग खपा दिया है। सच कहूँ तो, बिना दिमाग के इतना सोचना बहुत थकाने वाला काम है!”
मैंने चुपचाप रिसीवर को अपने बाएं हाथ में ले लिया।
“हेलो? श्री ओकाडा? क्या आप सुन रहे हैं?”
मैंने कहा, "मैं सुन रहा हूँ।"
ठीक है, तो मुझे आपसे बस एक ही चीज़ चाहिए: आपके कंप्यूटर तक पहुँचने का पासवर्ड। फिर मैं आपके और सुश्री कुमिको के बीच बातचीत करवा सकता हूँ। आपका क्या कहना है?

"मेरा मानना है कि कुछ व्यावहारिक समस्याएं इसमें बाधा डाल रही हैं।"
“अरे? और वे क्या हो सकते हैं?”
“अच्छा, सबसे पहले तो, मैं यह कैसे सुनिश्चित करूँ कि सामने वाला व्यक्ति कुमिको ही है? जब आप कंप्यूटर स्क्रीन पर बात कर रहे होते हैं, तो आप दूसरे लोगों के चेहरे नहीं देख सकते और न ही उनकी आवाज़ सुन सकते हैं। कोई और कीबोर्ड पर बैठा हो सकता है, जो कुमिको होने का नाटक कर रहा हो।”
“मैं समझ गया आप क्या कहना चाहते हैं,” उशिकावा ने प्रभावित होकर कहा। “मैंने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं था। लेकिन मुझे यकीन है कि इसका कोई न कोई उपाय जरूर होगा। आपकी तारीफ करने का मेरा कोई इरादा नहीं है, लेकिन चीजों को संदेह की नजर से देखना, मन में शंका रखना अच्छी बात है। ‘मैं संदेह करता हूँ, इसलिए मैं हूँ।’ ठीक है, तो फिर ऐसा क्यों न करें? आप एक ऐसा सवाल पूछिए जिसका जवाब सिर्फ कुमिको को ही पता हो। अगर दूसरा व्यक्ति जवाब दे पाता है, तो वह कुमिको ही होंगी। मेरा मतलब है, आप दोनों कई सालों तक पति-पत्नी की तरह साथ रहे हैं; ऐसी कुछ बातें तो जरूर होंगी जो सिर्फ आप दोनों को ही पता होंगी।”
उशिकावा की बात समझ में आ रही थी। मैंने कहा, "शायद यह काम कर जाए, लेकिन मुझे पासवर्ड नहीं पता। मैंने उस मशीन को कभी छुआ भी नहीं है।"

•

नटमेग ने मुझे बताया था कि सिनेमन ने कंप्यूटर सिस्टम के हर एक हिस्से को अपनी इच्छानुसार अनुकूलित किया था। उसने अपना खुद का एक जटिल डेटाबेस तैयार किया था और उसे एक गुप्त कोड और अन्य चालाकी भरे उपकरणों से बाहरी पहुँच से सुरक्षित रखा था।

रिश्ता था। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि उसके लिए वास्तविकता सांसारिक दुनिया में नहीं, बल्कि उसकी भूमिगत भूलभुलैया में बसती थी। शायद उस दुनिया में सिनेमन की आवाज़ बुलंद और स्पष्ट थी, जिससे वह धाराप्रवाह बोलता था, हँसता था और खुलकर रोता था।

•

मैंने उशिकावा से पूछा, "क्या मैं यहाँ वाले कंप्यूटर से आपके कंप्यूटर तक नहीं पहुँच सकता?" उशिकावा ने जवाब दिया, "फिर आपको पासवर्ड की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"
“नहीं, यह काम नहीं करेगा। आपके संदेश शायद यहाँ तक पहुँच जाएँ, लेकिन यहाँ से भेजे गए संदेश वहाँ तक नहीं पहुँचेंगे। असली समस्या पासवर्ड है—वही चाबी जो दरवाज़ा खोलने का काम करती है। उसके बिना हम कुछ नहीं कर सकते। भेड़िया चाहे अपनी आवाज़ कितनी भी बदल ले, उसके लिए दरवाज़ा नहीं खुलेगा। वह दस्तक देकर कह सकता है, ‘हाय, मैं हूँ आपका दोस्त रैबिट,’ लेकिन अगर उसके पास पासवर्ड नहीं है, तो उसे दरवाज़े से ही लौटा दिया जाएगा। हम यहाँ एक लोहे के बंधन की बात कर रहे हैं।”
उशिकावा ने अपने छोर पर माचिस जलाई और सिगरेट जलाई। मैंने उसके टेढ़े-मेढ़े पीले दांत और लटके हुए मुंह की कल्पना की।
“यह तीन अक्षरों का अल्फ़ान्यूमेरिक पासवर्ड है। प्रॉम्प्ट दिखने के बाद इसे दर्ज करने के लिए आपके पास दस सेकंड का समय है। तीन बार गलत दर्ज करने पर एक्सेस बंद हो जाएगा और अलार्म भी बज जाएगा। वैसे तो कोई सायरन नहीं बजता, लेकिन भेड़िया अपने पैरों के निशान छोड़ जाता है, जिससे आपको पता चल जाता है कि वह वहाँ था। चालाकी है ना? अगर आप छब्बीस अक्षरों और दस अंकों के सभी संभावित क्रमपरिवर्तन और संयोजनों की गणना करें, तो यह लगभग

अनंत है। आपको बस पासवर्ड पता होना चाहिए, वरना आप कुछ नहीं कर सकते।”
मैंने कुछ देर तक इस बारे में सोचा और फिर जवाब दिया।
"क्या आपके पास कोई अच्छे विचार हैं, श्री ओकाडा?"

•

अगले दिन दोपहर को जब ग्राहक मर्सिडीज की पिछली सीट पर बैठकर चला गया, तो मैं सिनेमन के छोटे से कार्यालय में गया, उसके कंप्यूटर के सामने बैठ गया और स्विच ऑन कर दिया। मॉनिटर की ठंडी नीली रोशनी एक साधारण संदेश के साथ जल उठी:
दस सेकंड के भीतर पासवर्ड दर्ज करें।
मैंने पहले से तैयार किया हुआ तीन अक्षरों वाला शब्द इनपुट किया:
चिड़ियाघर
कंप्यूटर ने एक बार बीप की आवाज़ की और एक त्रुटि संदेश प्रदर्शित किया:
गलत पासवर्ड।
दस सेकंड के भीतर पासवर्ड दर्ज करें।
स्क्रीन पर दस सेकंड की उलटी गिनती शुरू हो गई। मैंने अक्षरों को बड़े अक्षरों में बदलकर वही अक्षर टाइप किए:
चिड़ियाघर
मुझे फिर से प्रवेश से मना कर दिया गया:
गलत पासवर्ड।
दस सेकंड के भीतर सही पासवर्ड दर्ज करें। गलत पासवर्ड दोबारा दर्ज करने पर, एक्सेस स्वतः ही अस्वीकार कर दिया जाएगा। स्क्रीन पर फिर से दस सेकंड की उलटी गिनती शुरू हो गई। इस बार मैंने सिर्फ Z को कैपिटल लेटर में लिखा। यह मेरा आखिरी मौका था।

चिड़ियाघर
त्रुटि संदेश के बजाय, एक मेनू स्क्रीन खुली, जिसमें यह निर्देश था:
निम्नलिखित कार्यक्रमों में से एक का चयन करें।
मैंने एक लंबी, धीमी सांस छोड़ी, फिर प्रोग्रामों की लंबी सूची में स्क्रॉल करना शुरू किया जब तक कि मुझे संचार सॉफ्टवेयर नहीं मिल गया। इसे हाइलाइट करके, मैंने माउस बटन दबाया।
निम्नलिखित कार्यक्रमों में से एक का चयन करें।
मैंने "चैट मोड" चुना और माउस पर क्लिक किया।
दस सेकंड के भीतर पासवर्ड दर्ज करें।
सिनेमन के लिए अपने कंप्यूटर तक पहुंच को लॉक करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण बिंदु था। और यदि यह बिंदु महत्वपूर्ण था, तो पासवर्ड भी महत्वपूर्ण होना चाहिए था। मैंने टाइप किया:
उप
स्क्रीन पर यह लिखा था:
गलत पासवर्ड।
दस सेकंड के भीतर सही पासवर्ड दर्ज करें।
उलटी गिनती शुरू हुई: 10, 9, 8…
मैंने अपरकेस और लोअरकेस अक्षरों के उस संयोजन को आजमाया जो पहली बार काम कर गया था:
उप
स्क्रीन पर एक संदेश दिखाई दिया:
टेलीफोन नंबर दर्ज करें।
मैंने अपनी बाहें मोड़ लीं और इस नए संदेश को ध्यान से पढ़ा। बुरा नहीं। मैं सिनेमन की भूलभुलैया में दो दरवाजे खोलने में कामयाब हो गया था। नहीं, बिलकुल भी बुरा नहीं। "ज़ू" और "सब" से

काम हो जाएगा। मैंने "एग्जिट" पर क्लिक किया और मुख्य मेनू पर वापस आ गया, फिर "शटडाउन" चुना, जिससे निम्नलिखित विकल्प सामने आए:
क्या प्रक्रियाओं को संचालन फ़ाइल में दर्ज किया जाना चाहिए? हाँ/नहीं (हाँ)
उशिकावा के निर्देशानुसार, मैंने अभी-अभी किए गए कार्यों का कोई रिकॉर्ड न छोड़ने के लिए "नहीं" चुना।
स्क्रीन अचानक बंद हो गई। मैंने अपने माथे से पसीना पोंछा। यह सुनिश्चित करने के बाद कि मैंने कीबोर्ड और माउस को ठीक उसी जगह छोड़ दिया है जहाँ से मैंने उन्हें लिया था, मैं अब ठंडे हो चुके मॉनिटर से दूर हट गया।

जायफल की कहानी

•

नटमेग अकासाका को अपनी जीवन कहानी सुनाने में कई महीने लग गए। यह एक बहुत लंबी कहानी थी, जिसमें कई मोड़ थे, इसलिए मैं यहाँ जो लिख रहा हूँ वह पूरी कहानी का एक बहुत ही सरलीकृत (हालाँकि ज़रूरी नहीं कि संक्षिप्त) सारांश है। मैं पूरी ईमानदारी से यह दावा नहीं कर सकता कि इसमें उनकी कहानी का सार समाहित है, लेकिन यह कम से कम उनके जीवन के महत्वपूर्ण मोड़ों पर घटी घटनाओं की रूपरेखा तो प्रस्तुत कर ही देगा।

•

नटमेग और उसकी माँ मंचूरिया से भागकर जापान पहुँचीं। उनके पास पहनने के लिए केवल गहने ही बचे थे। वे सासेबो बंदरगाह से योकोहामा तक गईं और अपनी माँ के परिवार के साथ रहने लगीं, जिनका लंबे समय से आयात-निर्यात का कारोबार था, जो मुख्य रूप से ताइवान पर केंद्रित था। युद्ध से पहले समृद्ध रहे इस परिवार ने ताइवान पर जापान के कब्ज़े के बाद अपना अधिकांश कारोबार खो दिया। पिता की हृदय रोग से मृत्यु हो गई और परिवार का दूसरा बेटा, जो दूसरे नंबर का कमांडर था, युद्ध समाप्त होने से ठीक पहले एक हवाई हमले में मारा गया। सबसे बड़े बेटे ने पारिवारिक व्यवसाय संभालने के लिए अपनी अध्यापन की नौकरी छोड़ दी, लेकिन स्वभाव से व्यापारिक जीवन के अनुकूल न होने के कारण वह परिवार की संपत्ति को फिर से संवारने में असमर्थ रहा। उनके पास अभी भी अपना आरामदायक घर और ज़मीन थी, लेकिन युद्ध के बाद के उन कठिन वर्षों में नटमेग और उसकी माँ के लिए वहाँ रहना सुखद नहीं था, क्योंकि उन्हें परिवार के अतिरिक्त सदस्यों का भरण-पोषण करना

हाई स्कूल के सुख-सुविधाओं से बहुत दूर एक अलग ही दुनिया में थी।
उसे फैशन के अलावा किसी और चीज़ की परवाह नहीं थी। सुबह से शाम तक उसका दिमाग कपड़ों के ख्यालों में डूबा रहता था। ऐसा नहीं था कि उसके पास फैशनेबल कपड़े पहनने के लिए पैसे थे: वह बस फैशन मैगज़ीन पढ़ती रहती थी और उन्हें बार-बार पढ़ती थी, और अपनी नोटबुक में उन मैगज़ीन में छपे कपड़ों की नकल करके या खुद के बनाए कपड़ों के चित्र बनाती रहती थी। उसे समझ नहीं आता था कि उन फैंसी ड्रेस में ऐसा क्या था जो उसकी कल्पना को इतना मोहित कर लेता था। शायद, उसने कहा, यह उसकी उस आदत की वजह से था जिसमें वह हमेशा मंचूरिया में अपनी माँ के विशाल वार्डरोब से खेलती रहती थी। उसकी माँ को कपड़ों का बहुत शौक था। उनके पास इतने किमोनो और ड्रेस थे कि उन्हें रखने के लिए बक्सों में जगह ही नहीं थी, और छोटी नटमेग जब भी मौका मिलता उन्हें निकाल कर छू लेती थी। जब वे दोनों मंचूरिया से निकलीं तो उनमें से ज़्यादातर ड्रेस और किमोनो वहीं छूट गए थे, और जो कुछ भी वे अपने बैग में भर पाई थीं, उन्हें रास्ते में खाने के बदले बेचना पड़ा था। उसकी मां अगली पोशाक को, जिसे अदला-बदली के लिए रखा जाना था, फैला देती और उसे देने से पहले उस पर आह भरती।
“कपड़े डिज़ाइन करना मेरे लिए एक अलग ही दुनिया का गुप्त द्वार था,” नटमेग ने कहा, “एक ऐसी दुनिया जो सिर्फ़ मेरी थी। उस दुनिया में कल्पना ही सब कुछ थी। आप जितनी अच्छी तरह से अपनी कल्पना कर पाते, उतनी ही दूर आप वास्तविकता से भाग सकते थे। और मुझे इसमें जो सबसे ज़्यादा पसंद था, वह यह था कि यह मुफ़्त था। इसमें कुछ भी खर्च नहीं होता था। यह अद्भुत था! अपने मन में सुंदर कपड़ों की कल्पना करना और उन छवियों को कागज़ पर उतारना मेरे लिए

सिर्फ़ वास्तविकता को पीछे छोड़कर सपनों में खो जाने का तरीका नहीं था। मुझे जीने के लिए इसकी ज़रूरत थी। यह मेरे लिए साँस लेने जितना ही स्वाभाविक और सहज था। इसलिए मैंने मान लिया कि बाकी सब भी ऐसा ही करते होंगे। जब मुझे एहसास हुआ कि बाकी सब ऐसा नहीं कर रहे हैं—कि वे कोशिश करने पर भी ऐसा नहीं कर सकते—तो मैंने खुद से कहा, ‘मैं बाकी लोगों से अलग हूँ, इसलिए मेरा जीवन भी उनसे अलग होना चाहिए।’”
नटमेग ने हाई स्कूल छोड़ दिया और सिलाई-कढ़ाई के स्कूल में दाखिला ले लिया। अपनी पढ़ाई का खर्च जुटाने के लिए उसने अपनी माँ से अपने बचे हुए गहनों में से एक बेचने की गुहार लगाई। उस पैसे से वह दो साल तक सिलाई, कटिंग, डिजाइनिंग और ऐसे ही अन्य उपयोगी हुनर सीख सकी। स्नातक होने के बाद उसने एक अपार्टमेंट किराए पर लिया और अकेले रहने लगी। उसने रेस्टोरेंट में वेट्रेस का काम करके और सिलाई-बुनाई के छोटे-मोटे काम करके एक प्रोफेशनल फैशन डिजाइन स्कूल में दाखिला लिया। और जब उसने आखिरकार इस स्कूल से स्नातक की उपाधि प्राप्त कर ली, तो वह उच्च गुणवत्ता वाले महिलाओं के कपड़ों के निर्माता के यहाँ काम करने लगी, जहाँ उसे डिजाइन विभाग में नियुक्त कर दिया गया।
इसमें कोई शक नहीं था कि उनमें एक अनोखी प्रतिभा थी। वह न केवल अच्छी चित्रकारी कर सकती थीं, बल्कि उनके विचार और दृष्टिकोण भी दूसरों से अलग थे। उन्हें ठीक-ठीक पता होता था कि उन्हें क्या बनाना है, और यह किसी और से उधार लिया हुआ नहीं होता था: यह हमेशा उनका अपना होता था, और हमेशा स्वाभाविक रूप से उनके अंदर से निकलता था। वह अपनी छवि के छोटे-छोटे विवरणों पर उसी लगन से काम करती थीं, जैसे कोई सैल्मन मछली किसी बड़ी नदी में उसके उद्गम तक पहुंचने के लिए धारा के विपरीत तैरती है। उनके पास

उसका दिमाग कपड़ों की छवियों से भरा रहता था और किसी पुरुष के डिज़ाइन का उस पर पुरुष से कहीं अधिक गहरा प्रभाव पड़ता था।
जब नटमेग सत्ताईस साल की हुई, तो उद्योग जगत की नव वर्ष पार्टी में उसकी मुलाकात एक अजीब से दिखने वाले आदमी से हुई। उस आदमी के चेहरे के हाव-भाव तो सामान्य थे, लेकिन उसके बाल बिखरे हुए थे और उसकी नाक और ठोड़ी पत्थर के औजारों की तरह सख्त और नुकीली थीं। वह किसी पाखंडी उपदेशक जैसा लग रहा था, न कि महिलाओं के कपड़ों का डिज़ाइनर। वह नटमेग से एक साल छोटा था, तार की तरह पतला था और उसकी आँखें असीम गहराई से भरी थीं, जिनसे वह लोगों को आक्रामक निगाहों से देखता था, मानो उन्हें जानबूझकर असहज महसूस कराने के लिए ही बना हो। लेकिन उसकी आँखों में नटमेग को अपनी ही परछाई दिखाई दी। उस समय वह एक अनजान लेकिन उभरता हुआ डिज़ाइनर था और दोनों की पहली मुलाकात थी। उसने बेशक उसके बारे में लोगों को बातें करते सुना था। लोगों का कहना था कि उसमें एक अनोखी प्रतिभा है, लेकिन वह घमंडी, अहंकारी और झगड़ालू है, और लगभग कोई उसे पसंद नहीं करता।
“हम दोनों एक जैसे थे,” उसने कहा। “दोनों का जन्म महाद्वीप पर हुआ था। युद्ध के बाद उसे भी वापस भेज दिया गया था, उसके मामले में कोरिया से, उसका सारा सामान छीन लिया गया था। उसके पिता एक पेशेवर सैनिक थे, और युद्ध के बाद के वर्षों में उन्होंने घोर गरीबी झेली। जब वह बहुत छोटा था, उसकी माँ की टाइफस से मृत्यु हो गई थी, और मुझे लगता है कि इसी वजह से महिलाओं के कपड़ों में उसकी इतनी दिलचस्पी पैदा हुई। उसमें प्रतिभा तो थी, लेकिन उसे लोगों से व्यवहार करना नहीं आता था। वह महिलाओं के कपड़ों का डिज़ाइनर था, लेकिन जब वह किसी महिला के सामने आता, तो उसका

चेहरा लाल हो जाता और वह पागलों जैसा व्यवहार करने लगता। दूसरे शब्दों में, हम दोनों झुंड से बिछड़े हुए भटके हुए लोग थे।” उनकी शादी अगले साल, 1963 में हुई, और उसके अगले साल (टोक्यो ओलंपिक के वर्ष) वसंत ऋतु में उनके बच्चे का जन्म हुआ, जिसका नाम सिनेमन था। “उसका नाम सिनेमन था, है ना?” सिनेमन के जन्म के तुरंत बाद नटमेग अपनी माँ को उसकी देखभाल के लिए घर ले आई। उसकी माँ को सुबह से शाम तक लगातार काम करना पड़ता था और उसके पास शिशुओं की देखभाल करने का समय नहीं था। इस प्रकार सिनेमन का पालन-पोषण लगभग उसकी दादी ने ही किया।

•

नटमेग को कभी यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि क्या उसने अपने पति को एक पुरुष के रूप में कभी सचमुच प्यार किया था। उसके पास ऐसा निर्णय लेने का कोई मापदंड नहीं था, और यही बात उसके पति के लिए भी सच थी। उन्हें एक संयोगवश हुई मुलाकात और फैशन डिजाइन के प्रति उनके साझा जुनून ने एक साथ लाया था। फिर भी, उनके साथ बिताए पहले दस साल दोनों के लिए फलदायी रहे। शादी के तुरंत बाद, उन्होंने अपनी-अपनी कंपनियों को छोड़ दिया और आओयामा एवेन्यू के ठीक पीछे एक छोटी, पश्चिममुखी इमारत में एक छोटे से अपार्टमेंट में अपना स्वतंत्र डिजाइन स्टूडियो स्थापित किया। खराब वेंटिलेशन और एयर कंडीशनिंग के अभाव के कारण, गर्मियों में वह जगह इतनी गर्म हो जाती थी कि पसीने से उनकी पेंसिलें उनके हाथों से फिसल जाती थीं। शुरुआत में व्यवसाय सुचारू रूप से नहीं चला। नटमेग और उसके पति दोनों में व्यावहारिक व्यावसायिक समझ की लगभग चौंकाने वाली कमी थी, जिसके परिणामस्वरूप वे उद्योग के बेईमान सदस्यों द्वारा आसानी से ठगे जाते थे, या वे मानक प्रक्रियाओं से अनभिज्ञ होने के कारण

ऑर्डर प्राप्त करने में असफल रहते थे या अविश्वसनीय रूप से सरल गलतियाँ करते थे जो उन्हें सही रास्ते पर आने से रोकती थीं। उनका कर्ज इतना बढ़ गया था कि एक समय ऐसा लगा कि भाग जाने के अलावा कोई चारा नहीं है। लेकिन किस्मत का साथ तब मिला जब नटमेग की मुलाकात एक काबिल बिजनेस मैनेजर से हुई, जिसने उनकी प्रतिभा को पहचाना और ईमानदारी से उनकी मदद की। उस दिन से कंपनी इतनी तेजी से आगे बढ़ी कि उनकी पिछली सारी परेशानियां एक बुरे सपने जैसी लगने लगीं। उनकी बिक्री हर साल दोगुनी होती गई और 1970 तक, जिस छोटी सी कंपनी को उन्होंने बहुत कम पूंजी से शुरू किया था, वह चमत्कारिक रूप से सफल हो गई - इतनी सफल कि इसे शुरू करने वाले घमंडी और अलग-थलग रहने वाले युवा जोड़े को भी आश्चर्य हुआ। उन्होंने अपने कर्मचारियों की संख्या बढ़ाई, एवेन्यू पर एक बड़ी इमारत में चले गए और गिन्ज़ा, आओयामा और शिंजुकु जैसे फैशनेबल इलाकों में अपनी दुकानें खोलीं। उनके डिजाइनर कपड़ों की मूल श्रृंखला अक्सर मीडिया में छाई रहती थी और व्यापक रूप से प्रसिद्ध हो गई।

•

जब कंपनी एक निश्चित आकार तक पहुँच गई, तो उनके बीच काम के बंटवारे का तरीका बदलने लगा। कपड़े डिजाइन करना और बनाना एक रचनात्मक प्रक्रिया तो थी, लेकिन मूर्तिकला या उपन्यास लेखन के विपरीत, यह एक ऐसा व्यवसाय था जिस पर कई लोगों का भविष्य टिका हुआ था। कोई भी घर पर बैठकर मनचाहा काम नहीं कर सकता था। किसी न किसी को बाहर जाकर कंपनी का चेहरा दुनिया के सामने पेश करना ही पड़ता था। कंपनी के लेन-देन का आकार बढ़ने के साथ-साथ यह ज़रूरत भी बढ़ती गई। उनमें से किसी एक को पार्टियों और फैशन शो में जाकर छोटे-मोटे भाषण देने, मेहमानों से मेलजोल बढ़ाने और

मीडिया के इंटरव्यू देने की ज़रूरत पड़ती थी। नटमेग का इस भूमिका को निभाने का बिल्कुल भी इरादा नहीं था, इसलिए उनके पति ने आगे बढ़कर ज़िम्मेदारी संभाली। नटमेग की तरह ही सामाजिक मेलजोल में कमज़ोर होने के कारण, उन्हें शुरू में यह सब बेहद कष्टदायक लगा। वे बहुत सारे अजनबियों के सामने ठीक से बोल नहीं पाते थे, इसलिए हर बार ऐसे आयोजन से थके-हारे घर लौटते थे। हालाँकि, छह महीने बाद उन्होंने महसूस किया कि अब उन्हें यह उतना कष्टदायक नहीं लग रहा था। वह अब भी बहुत अच्छे वक्ता नहीं थे, लेकिन उनके रूखे और अटपटे व्यवहार पर लोगों की प्रतिक्रिया वैसी नहीं रही जैसी उनके युवावस्था में होती थी; अब तो लोग उनकी ओर आकर्षित होने लगे थे। उनकी संक्षिप्त शैली (जो उनके स्वाभाविक अंतर्मुखी स्वभाव से उपजी थी) को वे अहंकारपूर्ण अलगाव का नहीं, बल्कि एक आकर्षक कलात्मक व्यक्तित्व का प्रमाण मानते थे। वास्तव में, उन्हें अपनी इस नई स्थिति में आनंद आने लगा और जल्द ही उन्हें अपने समय के सांस्कृतिक नायक के रूप में सम्मानित किया जाने लगा।
"आपने शायद उनका नाम सुना होगा," नटमेग ने कहा। “लेकिन असल में, तब तक मैं डिज़ाइन का दो-तिहाई काम खुद ही कर रहा था। उनके साहसिक, मौलिक विचारों को व्यावसायिक रूप से सफलता मिल चुकी थी, और उन्होंने हमें चलाने के लिए पर्याप्त से ज़्यादा विचार तैयार कर लिए थे। मेरा काम उन्हें विकसित करना, उनका विस्तार करना और उन्हें आकार देना था। कंपनी चाहे कितनी भी बड़ी हो जाए, हमने कभी दूसरे डिज़ाइनरों को काम पर नहीं रखा। हमारे सहायक कर्मचारियों की संख्या बढ़ी, लेकिन महत्वपूर्ण हिस्सा हमने खुद ही किया। हम बस वही कपड़े बनाना चाहते थे जो हम बनाना चाहते थे, इस बात की चिंता नहीं कि उन्हें कौन खरीदेगा। हमने बिल्कुल

भी बाज़ार अनुसंधान, लागत गणना या रणनीति योजना नहीं बनाई। अगर हमने तय कर लिया कि हमें कोई चीज़ किसी खास तरीके से बनानी है, तो हम उसे उसी तरह डिज़ाइन करते थे, सबसे अच्छी सामग्री का इस्तेमाल करते थे और उसे बनाने में जितना समय लगता था उतना लेते थे। जो काम दूसरे घराने दो चरणों में कर लेते थे, हम उसे चार चरणों में कर देते थे। जहाँ वे तीन गज कपड़े का इस्तेमाल करते थे, हम चार गज का। हम व्यक्तिगत रूप से अपने कारखाने से निकलने वाले हर कपड़े का निरीक्षण करते थे और उसे मंज़ूरी देते थे। जो नहीं बिकता था, उसे हम फेंक देते थे। हम कुछ भी छूट पर नहीं बेचते थे। हमारी कीमतें बेशक ऊंची थीं। उद्योग के लोग सोचते थे कि हम पागल हैं, लेकिन हमारे कपड़े उस युग का प्रतीक बन गए।” पीटर मैक्स, वुडस्टॉक, ट्विगी, ईज़ी राइडर और उन सभी के साथ। उन दिनों कपड़े डिज़ाइन करने में हमें बहुत मज़ा आता था! हम बेमिसाल चीज़ें कर सकते थे, और हमारे ग्राहक भी हमारे साथ थे। ऐसा लगता था मानो हमें बड़े-बड़े पंख मिल गए हों और हम जहाँ चाहें उड़ सकते हों।

•

जैसे ही उनका कारोबार फलने-फूलने लगा, नटमेग और उसके पति के बीच दूरियाँ बढ़ने लगीं। साथ-साथ काम करते हुए भी, नटमेग को कभी-कभी यह एहसास होता था कि उसका दिल कहीं दूर भटक रहा है। उसकी आँखों में वह भूखी चमक गायब हो गई थी जो कभी उसमें हुआ करती थी। वह हिंसक प्रवृत्ति जो उसे चीज़ें फेंकने पर मजबूर करती थी, अब लगभग न के बराबर दिखाई देती थी। इसके बजाय, वह अक्सर उसे कहीं खोया हुआ पाती, मानो गहरी सोच में डूबा हो। वे दोनों काम की जगह के बाहर शायद ही कभी बात करते थे, और ऐसे दिनों की संख्या बढ़ती जा रही थी जब वह घर नहीं आता था। नटमेग को एहसास हुआ कि अब उसके

जीवन में कई महिलाएँ हैं, लेकिन यह उसके लिए दुख का कारण नहीं था। उसने इसे अपरिहार्य समझा, क्योंकि उनके बीच शारीरिक संबंध बहुत पहले ही समाप्त हो चुके थे (मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि नटमेग की यौन इच्छा समाप्त हो गई थी)।

•

सन् 1975 के अंत में, जब नटमेग चालीस वर्ष की और सिनेमन ग्यारह वर्ष की थीं, तब उनके पति की हत्या कर दी गई। उनका शव अकासाका के एक होटल के कमरे में मिला, जिसे बुरी तरह से काट दिया गया था। नौकरानी ने सुबह ग्यारह बजे सफाई के लिए कमरे में प्रवेश करते समय अपनी पासकी का इस्तेमाल किया और उन्हें देखा। शौचालय ऐसा लग रहा था मानो वहाँ खून बहा हो। शरीर से लगभग सारा रस निकाल लिया गया था, और उसमें हृदय, पेट, यकृत, दोनों गुर्दे और अग्न्याशय गायब थे, मानो जिसने भी उन्हें मारा हो, उसने उन अंगों को काटकर प्लास्टिक की थैलियों या किसी अन्य डिब्बे में भरकर कहीं ले गया हो। सिर धड़ से अलग कर दिया गया था और शौचालय के ढक्कन पर बाहर की ओर मुंह करके रखा गया था, चेहरा बुरी तरह से कटा हुआ था। हत्यारे ने जाहिर तौर पर पहले सिर को काटा और टुकड़े-टुकड़े किया, फिर अंगों को इकट्ठा करना शुरू किया। किसी इंसान के शरीर से अंगों को काटकर निकालना बेहद धारदार औजारों और काफी तकनीकी कौशल की मांग करता होगा। कई पसलियों को आरी से काटना पड़ा था—यह एक समय लेने वाला और खून से लथपथ ऑपरेशन था। यह भी स्पष्ट नहीं था कि कोई इतना कष्ट क्यों उठाएगा।
छुट्टियों की भीड़ में व्यस्त होने के कारण, रिसेप्शन पर मौजूद क्लर्क को बस इतना याद था कि नटमेग के पति पिछली रात दस बजे एक महिला के साथ बारहवीं मंजिल के अपने कमरे में चेक-इन हुए थे। वह

हत्या कर दी गई थी। कुछ समय तक अफवाहें उड़ती रहीं कि इसमें "कुछ असामान्य" शामिल था, लेकिन इससे ज्यादा कोई ठोस जानकारी सामने नहीं आई। पुलिस ने बड़े पैमाने पर जांच की, लेकिन हत्यारा कभी पकड़ा नहीं गया और न ही हत्या का मकसद पता चल पाया।
नटमेग ने कहा, "होटल का वह कमरा शायद अभी भी सील है।"

•

अपने पति की मृत्यु के बाद अगले वर्ष की वसंत ऋतु में, नटमेग ने अपनी कंपनी - खुदरा दुकानों, माल और ब्रांड नाम सहित - एक प्रमुख फैशन निर्माता को बेच दी। जब उनके लिए सौदेबाजी करने वाले वकील अनुबंध लेकर आए, तो नटमेग ने बिना कुछ कहे और बिक्री मूल्य पर मुश्किल से एक नज़र डाले ही उस पर अपनी मुहर लगा दी।
कंपनी छोड़ने के बाद, नटमेग ने पाया कि कपड़ों की डिज़ाइनिंग के प्रति उसका जुनून पूरी तरह से खत्म हो चुका था। उसकी तीव्र इच्छा का प्रवाह सूख गया था, जो कभी उसके जीवन का उद्देश्य हुआ करता था। वह कभी-कभार कोई काम स्वीकार कर लेती और उसे एक कुशल पेशेवर की तरह पूरा कर लेती, लेकिन उसे ज़रा भी खुशी नहीं मिलती थी। यह ऐसा था जैसे बेस्वाद खाना खा रही हो। उसे ऐसा महसूस होता था जैसे "उन्होंने" उसके भीतर के अंग निकाल लिए हों। जो लोग उसकी पहले वाली ऊर्जा और कौशल को जानते थे, वे नटमेग को एक महान व्यक्तित्व के रूप में याद करते थे, और ऐसे लोगों से अनुरोध आते रहते थे, लेकिन कुछ गिने-चुने अनुरोधों को छोड़कर, जिन्हें वह मना नहीं कर सकती थी, उसने बाकी सभी को ठुकरा दिया। अपने अकाउंटेंट की सलाह पर, उसने अपना पैसा शेयर बाज़ार और रियल एस्टेट में निवेश किया, और विकास के उन वर्षों में उसकी संपत्ति बढ़ती गई।

कंपनी बेचने के कुछ ही समय बाद, उनकी माँ का हृदय रोग से निधन हो गया। अगस्त की एक गर्म दोपहर में, वह घर के सामने फुटपाथ पर पानी छिड़क रही थीं, तभी अचानक उन्होंने कहा कि उन्हें "अच्छा नहीं लग रहा"। वह लेट गईं और सो गईं, उनकी खर्राटे की आवाज़ इतनी तेज़ थी कि कुछ ही देर में उनका निधन हो गया। नटमेग और सिनेमन दुनिया में अकेले रह गए। नटमेग एक साल से ज़्यादा समय तक घर में ही बंद रहीं, हर दिन सोफे पर बैठकर बगीचे को देखती रहीं, मानो वह अपने जीवन में अब तक खोई हुई शांति और सुकून को फिर से पाना चाहती हों। वह मुश्किल से ही कुछ खाती थीं और दिन में दस घंटे सोती थीं। सिनेमन, जो आम तौर पर मिडिल स्कूल में पढ़ रहा होता, अपनी माँ की जगह घर की देखभाल करने लगा, कामों के बीच मोजार्ट और हेडन के सोनाटा सुनता और कई भाषाएँ सीखता रहा।
उसके जीवन में यह लगभग खाली, शांत अंतराल एक साल तक चलता रहा, जब संयोगवश नटमेग को पता चला कि उसके पास एक विशेष "शक्ति" है, एक विचित्र क्षमता जिसके बारे में उसे कोई जानकारी नहीं थी। उसने सोचा कि शायद यह उसके भीतर उस तीव्र डिज़ाइन प्रेम की जगह लेने के लिए उभरी हो जो पूरी तरह से समाप्त हो गया था। और वास्तव में, यह शक्ति उसका नया पेशा बन गई, हालाँकि यह वह चीज़ नहीं थी जिसे उसने स्वयं चुना था।

•

उसकी अनोखी शक्ति का पहला लाभ एक डिपार्टमेंट स्टोर के मालिक की पत्नी को मिला, जो एक प्रतिभाशाली और ऊर्जावान महिला थी और युवावस्था में ओपेरा गायिका रह चुकी थी। उसने नटमेग की प्रतिभा को तब पहचान लिया था जब वह एक प्रसिद्ध डिज़ाइनर भी नहीं बनी थी, और उसने उसके करियर पर नज़र रखी थी। इस महिला के समर्थन के बिना, नटमेग की कंपनी शायद अपने शुरुआती दौर में ही असफल हो जाती।

किए गए काम के लिए उम्मीद से कहीं अधिक भुगतान प्राप्त होने पर आश्चर्य हुआ।
घटना के लगभग एक महीने बाद डिपार्टमेंट स्टोर के मालिक की पत्नी ने नटमेग को फोन किया और उसे दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया। खाना खाने के बाद, उसने अपने घर चलने का सुझाव दिया और नटमेग से कहा, "क्या तुम्हें बुरा लगेगा अगर तुम पहले की तरह मेरे सिर पर हाथ रखो? मुझे कुछ जाँचना है।" नटमेग के पास मना करने का कोई खास कारण नहीं था। वह उस महिला के बगल में बैठ गई और अपनी हथेली उसके कनपटी पर रख दी। उसे वही "कुछ" महसूस हुआ जो उसने पहले महसूस किया था। अब उसने अपना सारा ध्यान उस पर केंद्रित किया ताकि उसके आकार को बेहतर ढंग से समझ सके, लेकिन वह आकार मुड़ने और बदलने लगा। यह जीवित है! नटमेग को डर का एक झटका लगा। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और ह्सिन-चिंग चिड़ियाघर के बारे में सोचने लगी। यह उसके लिए मुश्किल नहीं था। उसे बस दालचीनी को सुनाई गई कहानी और उसके द्वारा वर्णित दृश्यों को याद करना था। उसकी चेतना उसके शरीर से निकल गई, कुछ देर तक स्मृति और कहानी के बीच भटकती रही, फिर वापस आ गई। जब उसे होश आया, तो महिला ने उसका हाथ पकड़कर उसे धन्यवाद दिया। नटमेग ने अभी-अभी हुई घटना के बारे में कुछ नहीं पूछा, और उस महिला ने भी कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया। पहले की तरह, नटमेग को हल्की थकान महसूस हो रही थी, और उसके माथे पर पसीने की हल्की परत जमी हुई थी। जब वह जाने लगी, तो महिला ने आने के लिए समय और मेहनत देने के लिए उसे धन्यवाद दिया और उसे पैसों से भरा एक लिफाफा देने की कोशिश की, लेकिन नटमेग ने विनम्रता से, लेकिन दृढ़ता से, उसे लेने से इनकार कर दिया। उसने कहा, "यह मेरा काम नहीं है, और वैसे

भी, आपने पिछली बार मुझे बहुत ज़्यादा पैसे दिए थे।" महिला ने ज़ोर नहीं दिया।
कुछ सप्ताह बाद, उस महिला ने नटमेग का परिचय एक और महिला से कराया। यह महिला लगभग चालीस वर्ष की थी। वह कद में छोटी थी और उसकी आँखें धँसी हुई थीं। उसने जो कपड़े पहने थे वे बेहद उच्च गुणवत्ता के थे, लेकिन चाँदी की अंगूठी के अलावा उसने कोई और आभूषण नहीं पहना था। उसके हाव-भाव से स्पष्ट था कि वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं थी। डिपार्टमेंट स्टोर के मालिक की पत्नी ने नटमेग से कहा, “वह चाहती है कि तुम उसके लिए भी वही करो जो तुमने मेरे लिए किया था। अब, कृपया मना मत करना, और जब वह तुम्हें पैसे दे, तो कुछ मत कहना, बस ले लेना। अंततः, यह तुम्हारे लिए और मेरे लिए भी महत्वपूर्ण होगा।”
जायफल उस औरत के साथ एक अंदरूनी कमरे में गया और पहले की तरह ही अपनी हथेली उसके कनपटी पर रख दी। इस औरत के अंदर एक अलग ही "कुछ" था। यह डिपार्टमेंट स्टोर के मालिक की पत्नी के अंदर मौजूद "कुछ" से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली था और इसकी हलचलें भी तेज़ थीं। जायफल ने अपनी आँखें बंद कर लीं, अपनी साँस रोक ली और उस हलचल को शांत करने की कोशिश की। उसने और ज़्यादा ध्यान केंद्रित किया और अपनी यादों को और ज़्यादा स्पष्ट रूप से याद करने की कोशिश की। वहाँ मौजूद सबसे छोटी परतों में भी गहराई तक उतरकर, उसने अपनी यादों की गर्माहट उस "कुछ" में प्रवाहित कर दी।
“और देखते ही देखते, यही मेरा काम बन गया,” नटमेग ने कहा। उसे एहसास हुआ कि वह एक महान प्रवाह में समा गई है। और जब सिनेमन बड़ा हुआ, तो वह अपनी माँ का सहायक बन गया।

फांसी के घर का रहस्य: 2

•

सेतागाया, टोक्यो: फांसी के घर के लोग
प्रसिद्ध राजनेता की परछाई:
अब दिखती है, अब नहीं दिखती
अद्भुत, विलक्षण अदृश्यता का लबादा—यह कौन सा रहस्य छिपा रहा है?
[द वीकली से, 21 नवंबर]

जैसा कि इस पत्रिका के 7 अक्टूबर के अंक में पहली बार खुलासा हुआ था, सेतागाया के एक शांत आवासीय इलाके में एक घर है जिसे स्थानीय लोग "फांसी वाला घर" के नाम से जानते हैं। वहां रहने वाले सभी लोग दुर्भाग्य का शिकार हुए और उन्होंने आत्महत्या कर ली, जिनमें से अधिकांश ने फांसी लगाकर अपनी जान दी।
[पूर्व लेख का सारांश हटा दिया गया है]
हमारी जांच से हमें केवल एक ही ठोस तथ्य मिला है: वह यह कि "लटकते घर" के नए मालिक की पहचान जानने के हमारे सभी प्रयासों में हमें हर जगह निराशा ही हाथ लगी है। हमने घर बनाने वाली निर्माण कंपनी का पता तो लगा लिया, लेकिन उनसे जानकारी प्राप्त करने के सभी प्रयास विफल रहे। जिस फर्जी कंपनी के माध्यम से जमीन खरीदी गई थी, वह कानूनी रूप से पूरी तरह से वैध है और कोई जानकारी देने को तैयार नहीं है। पूरे सौदे को इतनी चालाकी और बारीकी से अंजाम दिया गया था कि हम केवल यही अनुमान लगा सकते हैं कि इसके पीछे कोई खास कारण रहा होगा।

एक और बात जिसने हमारी जिज्ञासा जगाई, वह थी वह लेखा फर्म जिसने जमीन खरीदने वाली फर्जी कंपनी स्थापित करने में मदद की थी। हमारी जांच से पता चला है कि यह फर्म पांच साल पहले राजनीतिक हलकों में मशहूर एक लेखा फर्म के एक तरह के गुप्त "उप-ठेकेदार" के रूप में स्थापित की गई थी। उस प्रतिष्ठित लेखा फर्म के कई ऐसे "उप-ठेकेदार" हैं, जिनमें से प्रत्येक को एक विशेष प्रकार का काम संभालने के लिए बनाया गया है और मुसीबत आने पर उन्हें तुरंत हटा दिया जाता है। इस लेखा फर्म की स्वयं अभियोजक कार्यालय द्वारा कभी जांच नहीं की गई है, लेकिन एक प्रमुख समाचार पत्र के राजनीतिक संवाददाता के अनुसार, "इसका नाम कई राजनीतिक घोटालों में सामने आया है, इसलिए जाहिर है कि अधिकारियों की नजर इस पर है।" ऐसे में यह अनुमान लगाना मुश्किल नहीं है कि "फांसी के घर" के नए निवासी और किसी शक्तिशाली राजनेता के बीच किसी न किसी तरह का संबंध है। ऊंची दीवारें, नवीनतम इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से लैस कड़ी सुरक्षा, किराए पर ली गई काली मर्सिडीज, चालाकी से बनाई गई फर्जी कंपनी: इस तरह की जानकारी हमें किसी बड़े राजनीतिक व्यक्ति की संलिप्तता की ओर इशारा करती है।

पूर्ण गोपनीयता
हमारी न्यूज़ टीम ने काली मर्सिडीज़ कार द्वारा "फांसी वाले घर" में आने-जाने का सर्वेक्षण किया। दस दिनों की अवधि में, कार ने कुल इक्कीस बार उस घर का दौरा किया, यानी लगभग दो बार प्रतिदिन। उन्होंने इन दौरों में एक नियमित पैटर्न देखा। सबसे पहले, कार सुबह नौ बजे आती और साढ़े दस बजे चली जाती। ड्राइवर बहुत समय का पाबंद था, प्रतिदिन पाँच मिनट से ज़्यादा का अंतर

नहीं होता था। हालांकि, सुबह के दौरों की नियमितता के विपरीत, बाकी दौर बहुत अनियमित थे। अधिकांश दौर दोपहर एक से तीन बजे के बीच दर्ज किए गए, लेकिन आने-जाने का समय काफी भिन्न था। परिसर में कार के खड़े रहने की अवधि में भी काफी भिन्नता थी, जो बीस मिनट से कम से लेकर पूरे एक घंटे तक थी।
इन तथ्यों के आधार पर हमने निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले हैं:
1. कार का सुबह नियमित आना-जाना: इससे संकेत मिलता है कि कोई इस घर में "आने-जाने" के लिए आता-जाता है। हालांकि, कार के चारों ओर लगे काले रंग के शीशे के कारण "आने-जाने वाले" की पहचान स्पष्ट नहीं है।
2. कार का शाम के समय अनियमित रूप से आना: इससे मेहमानों के आने का संकेत मिलता है और संभवतः यह मेहमानों की सुविधा के अनुसार किया जाता है। ये "मेहमान" अकेले आते हैं या दूसरों के साथ, यह स्पष्ट नहीं है।
3. रात के समय घर में कोई हलचल नहीं दिखती। यह भी स्पष्ट नहीं है कि वहां कोई रहता है या नहीं। दीवार के बाहर से यह बताना असंभव है कि कोई रोशनी जल रही है या नहीं।
एक और महत्वपूर्ण बात: हमारे दस दिनों के सर्वेक्षण के दौरान संपत्ति में आने-जाने वाली एकमात्र चीज़ काली मर्सिडीज़ थी: कोई अन्य कार नहीं, कोई पैदल यात्री नहीं। सामान्य ज्ञान कहता है कि यहाँ कुछ अजीब चल रहा है। घर में रहने वाला "कोई" कभी खरीदारी या सैर के लिए बाहर नहीं जाता। लोग केवल गहरे रंग की खिड़कियों वाली बड़ी मर्सिडीज़ में ही आते-जाते हैं। दूसरे शब्दों में, किसी कारण से, वे किसी भी परिस्थिति में अपना चेहरा नहीं दिखाना चाहते। इसका कारण क्या हो सकता है? वे अपने काम को

पूरी तरह गुप्त रखने के लिए इतनी परेशानी और खर्च क्यों उठाते हैं?
यहां यह भी बताना जरूरी है कि सामने का गेट ही संपत्ति में आने- जाने का एकमात्र रास्ता है। प्लॉट के पीछे एक संकरी गली है, लेकिन यह कहीं नहीं जाती। इस गली में आने-जाने का एकमात्र रास्ता किसी की निजी संपत्ति से होकर गुजरता है। पड़ोसियों के अनुसार, फिलहाल कोई भी निवासी इस गली का उपयोग नहीं कर रहा है, शायद इसीलिए घर के पीछे वाली गली में कोई गेट नहीं है। वहां सिर्फ एक विशाल दीवार है, जो किसी किले की प्राचीर जैसी दिखती है।
दस दिनों के दौरान कई बार मुख्य द्वार पर लगे इंटरकॉम का बटन उन लोगों द्वारा दबाया गया जो अखबार के प्रचारक या विक्रेता प्रतीत होते थे, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। यदि अंदर कोई था, तो यह संभव है कि आगंतुकों की निगरानी के लिए एक क्लोज-सर्किट वीडियो कैमरा का उपयोग किया जा रहा था। न तो डाक की डिलीवरी हुई और न ही किसी एक्सप्रेस सेवा द्वारा कोई सेवा प्रदान की गई।
इन कारणों से, हमारे पास जांच का एकमात्र रास्ता मर्सिडीज का पीछा करना और उसके गंतव्य का पता लगाना ही बचा था। शहर के ट्रैफिक में उस चमकदार, धीमी गति से चलने वाली कार का पीछा करना मुश्किल नहीं था, लेकिन हम अकासाका के एक उच्च श्रेणी के होटल के भूमिगत पार्किंग स्थल के प्रवेश द्वार तक ही पहुँच पाए। वहाँ एक वर्दीधारी गार्ड तैनात था, और अंदर जाने का एकमात्र तरीका एक विशेष पास कार्ड था, इसलिए हमारी कार मर्सिडीज के पीछे अंदर नहीं जा सकी। यह विशेष होटल कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन स्थल है, जिसका अर्थ है कि कई वीआईपी और विदेशों के कई

प्रसिद्ध कलाकार यहाँ ठहरते हैं। उनकी सुरक्षा और गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए, वीआईपी पार्किंग स्थल आम मेहमानों के पार्किंग स्थल से अलग है, और कई लिफ्ट वीआईपी के विशेष उपयोग के लिए आरक्षित हैं, जिनमें उनकी गतिविधियों का कोई बाहरी संकेत नहीं होता है। इससे इन विशेष मेहमानों के लिए बिना किसी को पता चले चेक-इन और चेक-आउट करना संभव हो जाता है। मर्सिडीज जाहिर तौर पर वीआईपी पार्किंग स्थलों में से एक में खड़ी है। इस पत्रिका की पूछताछ के जवाब में होटल प्रबंधन द्वारा दिए गए संक्षिप्त और सावधानीपूर्वक दिए गए जवाब के अनुसार, ये विशेष स्थान "आम तौर पर" केवल विशिष्ट रूप से योग्य कॉर्पोरेट संस्थाओं को "पूरी तरह से पृष्ठभूमि जांच" के बाद विशेष दर पर पट्टे पर दिए जाते हैं, लेकिन हम उपयोग की शर्तों या उपयोगकर्ताओं के बारे में कोई विस्तृत जानकारी प्राप्त करने में असमर्थ थे।
होटल में एक शॉपिंग आर्केड, कई कैफे और रेस्टोरेंट, चार वेडिंग हॉल और तीन कॉन्फ्रेंस हॉल हैं, जिसका मतलब है कि यह दिन-रात बड़ी संख्या में विभिन्न प्रकार के लोगों द्वारा उपयोग में लाया जाता है। ऐसी जगह पर मर्सिडीज में बैठे यात्रियों की पहचान विशेष अनुमति के बिना असंभव होगी। लोग कार से उतरकर पास के किसी भी विशेष लिफ्ट में जा सकते हैं, अपनी पसंद के किसी भी फ्लोर पर उतर सकते हैं और भीड़ में घुलमिल सकते हैं। इन सब से यह स्पष्ट है कि पूर्ण गोपनीयता बनाए रखने की व्यवस्था पूरी तरह से लागू है। यहाँ हमें धन और राजनीतिक शक्ति के अत्यधिक उपयोग की झलक मिलती है। जैसा कि होटल प्रबंधन के स्पष्टीकरण से पता चलता है, इन वीआईपी पार्किंग स्थलों में से किसी एक को किराए पर लेना और उपयोग करना आसान नहीं है। "पूरी तरह से पृष्ठभूमि जांच"

की आवश्यकता में, निस्संदेह, विदेशी गणमान्य व्यक्तियों की सुरक्षा में शामिल सुरक्षा अधिकारियों की योजनाओं का भी योगदान है, जिसका अर्थ है कि कुछ राजनीतिक संबंध जरूर शामिल होंगे। केवल बहुत सारा पैसा होना ही काफी नहीं होगा, हालांकि यह कहने की जरूरत नहीं है कि इन सब के लिए काफी धन की आवश्यकता होगी।
[यहाँ इस बात का उल्लेख नहीं किया गया है: यह अटकल कि संपत्ति का उपयोग एक शक्तिशाली राजनेता के समर्थन प्राप्त धार्मिक संगठन द्वारा किया जा रहा है।]

दुनिया भर की जेलीफिश

•

चीजों का रूपांतरित हुआ
मैं तय समय पर सिनेमन के कंप्यूटर के सामने बैठ जाता हूँ और पासवर्ड का इस्तेमाल करके संचार प्रोग्राम खोलता हूँ। फिर मैं उशिकावा द्वारा दिए गए नंबर डालता हूँ। सर्किट को कनेक्ट होने में पाँच मिनट लगेंगे। मैं अपनी बनाई हुई कॉफ़ी की चुस्की लेने लगता हूँ और अपनी साँसों को स्थिर करने की कोशिश करता हूँ। हालाँकि, कॉफ़ी का कोई स्वाद नहीं है और जो हवा मैं अंदर ले रहा हूँ, उसमें एक कड़वाहट सी है।
आखिरकार, कंप्यूटर से बीप की आवाज़ आती है और स्क्रीन पर एक संदेश दिखाई देता है, जिससे मुझे पता चलता है कि कनेक्शन स्थापित हो गया है और कंप्यूटर दो-तरफ़ा संचार के लिए तैयार है। मैं यह स्पष्ट करता हूँ कि यह एक कॉल है। अगर मैं इस लेन-देन का कोई रिकॉर्ड बनने से रोकने में सावधानी बरतूँ, तो मैं सिनेमन को यह पता चलने से रोक पाऊँगा कि मैंने कंप्यूटर का इस्तेमाल किया था (हालाँकि मुझे इस बात का ज़रा भी भरोसा नहीं है: यह उसकी भूलभुलैया है; मैं यहाँ एक असहाय अजनबी के अलावा कुछ नहीं हूँ)। जितना मैंने अनुमान लगाया था, उससे कहीं अधिक समय बीत जाता है, लेकिन अंततः संदेश आता है कि दूसरे पक्ष ने आरोपों को स्वीकार कर लिया है। इस स्क्रीन के पार, टोक्यो के भूमिगत अंधेरे में रेंगते हुए केबल के दूसरे छोर पर, शायद कुमिको हो। उसे भी मॉनिटर के सामने कीबोर्ड पर हाथ रखे हुए होना चाहिए। असल में, मुझे केवल अपना मॉनिटर दिखाई दे रहा है, जो वहाँ एक हल्की सी इलेक्ट्रॉनिक आवाज़ निकाल रहा है। मैं 'भेजें' मोड चुनने के लिए

बॉक्स पर क्लिक करता हूँ और वे शब्द टाइप करता हूँ जिनका मैं अपने दिमाग में बार-बार अभ्यास कर रहा था।
मेरा आपसे एक सवाल है। वैसे तो यह कोई बड़ा सवाल नहीं है, लेकिन मुझे इस बात का सबूत चाहिए कि आप ही वहां हैं। सवाल यह है: शादी से बहुत पहले, जब हम पहली बार साथ घूमने गए थे, तब हम एक्वेरियम गए थे। आप मुझे बताएं कि वहां आपको सबसे ज्यादा क्या देखकर हैरानी हुई थी।
मैं टेक्स्ट भेजने के प्रतीक पर क्लिक करता हूँ (मैं चाहता हूँ कि आप मुझे बताएँ कि आपको वहाँ सबसे ज़्यादा क्या देखकर आश्चर्य हुआ।)। फिर मैं रिसीव मोड पर स्विच करता हूँ।
कुछ देर के मौन अंतराल के बाद उत्तर आता है। यह एक संक्षिप्त उत्तर है।
जेलीफिश। दुनिया भर की जेलीफिश।
मेरा सवाल और उसका जवाब स्क्रीन के ऊपरी और निचले हिस्सों पर एक ही लाइन में लगे हुए हैं। मैं उन्हें कुछ देर तक देखता रहता हूँ। दुनिया भर की जेलीफिश।
यह कुमिको ही होनी चाहिए। असली कुमिको। लेकिन यही बात मुझे और भी पीड़ा पहुँचाती है। ऐसा लगता है जैसे मेरे अंदर से सब कुछ छिन्न-भिन्न हो रहा हो। हम दोनों के बीच बात करने का यही एकमात्र तरीका क्यों है? अब मेरे पास इसे स्वीकार करने के अलावा कोई चारा नहीं है। और इसलिए मैं टाइप करना शुरू करती हूँ।
चलिए अच्छी खबर से शुरुआत करते हैं। बिल्ली इस वसंत में वापस आ गई। एकदम अचानक। वह थोड़ी दुबली-पतली थी, लेकिन स्वस्थ और सुरक्षित थी। तब से वह घर पर ही है। मुझे पता है कि मुझे ऐसा करने से पहले आपसे सलाह लेनी चाहिए थी, लेकिन मैंने उसका एक नया

नाम रख दिया है। मैकेरल। मछली की तरह। हम दोनों की आपस में खूब बनती है। लगता है यह अच्छी खबर है।
कुछ देर का विलंब होता है। मैं यह नहीं कह सकता कि यह संचार के इस स्वरूप में निहित समय अंतराल के कारण है या कुमिको की ओर से चुप्पी के कारण।
मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि बिल्ली अभी भी जीवित है! मुझे उसकी चिंता हो रही थी।
मैंने अपने सूखे हुए मुंह को नम करने के लिए कॉफी का एक घूंट लिया। फिर मैंने दोबारा टाइप करना शुरू किया।
अब बुरी खबर की बारी। दरअसल, बिल्ली के वापस आने के अलावा, लगता है कि बाकी सब कुछ बुरी खबर ही होने वाला है। सबसे पहले तो, मैं अभी तक कोई भी पहेली हल नहीं कर पाया हूँ।
मैंने जो लिखा है उसे दोबारा पढ़ा, फिर टाइप करना जारी रखा। पहली पहेली: तुम अभी कहाँ हो? वहाँ क्या कर रहे हो? मुझसे दूर क्यों रहते हो? मुझसे मिलना क्यों नहीं चाहते? क्या इसका कोई कारण है? मेरा मतलब है, ऐसी कितनी बातें हैं जिन पर हम दोनों को आमने-सामने बैठकर बात करनी है। क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता? उसे जवाब देने में कुछ समय लगता है। मैं कल्पना करता हूँ कि वह कीबोर्ड के सामने बैठी है, होंठ चबा रही है और सोच रही है। आखिरकार, उसकी उंगलियों की हरकत के जवाब में कर्सर स्क्रीन पर तेज़ी से चलने लगता है।
जो कुछ मैं तुमसे कहना चाहती थी, वह मैंने तुम्हें भेजे पत्र में लिख दिया। मैं तुम्हें बस इतना समझाना चाहती हूँ कि कई मायनों में मैं अब वह कुमिको नहीं रही जिसे तुम जानते थे। लोग कई कारणों से बदलते हैं, और कुछ मामलों में यह बदलाव उन्हें

बुरा बना देता है। इसीलिए मैं तुमसे मिलना नहीं चाहती। और इसीलिए मैं तुम्हारे पास वापस नहीं आना चाहती।
कर्सर एक ही जगह पर रुक जाता है और शब्दों की खोज में झपकता रहता है। मैं दस-बीस सेकंड तक उस पर नज़र गड़ाए रखता हूँ, स्क्रीन पर नए शब्द बनने का इंतज़ार करता हूँ। क्या इस बदलाव से वे शब्द खराब हो जाते हैं?
अगर मुमकिन हो तो, मैं चाहूँगा कि आप मुझे जल्द से जल्द भूल जाएँ। हम दोनों के लिए सबसे अच्छा यही होगा कि आप तलाक की औपचारिकताएँ पूरी करके एक नई ज़िंदगी शुरू करें। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं अभी कहाँ हूँ या क्या कर रहा हूँ। सबसे ज़रूरी बात यह है कि, चाहे जो भी कारण हो, हम दोनों पूरी तरह से अलग-अलग दुनिया में बँट चुके हैं। और अब हम कभी भी पहले जैसे नहीं हो सकते। कृपया समझने की कोशिश करें कि इस तरह आपसे बात करना मेरे लिए कितना दर्दनाक है। आप शायद कल्पना भी नहीं कर सकते कि यह मुझे कितना तोड़ रहा है।
मैंने कुमिको के शब्दों को कई बार पढ़ा। मुझे उनमें ज़रा भी संकोच नहीं दिखा, ऐसा कोई संकेत नहीं मिला कि वे किसी और भावना से प्रेरित हैं, सिवाय गहरी, सबसे पीड़ादायक दृढ़ विश्वास के। उसने शायद मन ही मन उन्हें कई बार दोहराया होगा। फिर भी, मुझे उसकी इस अभेद्य दीवार को हिलाने का कोई न कोई तरीका ढूंढना ही होगा, कम से कम उसे थोड़ा सा हिलाने के लिए। मैं कीबोर्ड पर वापस लौटता हूँ।
आपकी बातें कुछ अस्पष्ट हैं और मुझे समझ में नहीं आ रही हैं। आप कहती हैं कि आप बिगड़ गई हैं, लेकिन इसका ठोस अर्थ क्या है? मुझे समझ नहीं आ रहा। टमाटर खराब हो जाते हैं। छाते खराब हो जाते हैं। यह तो मैं समझ सकती हूँ। टमाटर सड़ जाते हैं और छाते टेढ़े-

मेढ़े हो जाते हैं। लेकिन यह कहने का क्या मतलब है कि आप "बिगड़ गई हैं"? इससे मुझे कोई स्पष्ट तस्वीर नहीं मिलती। आपने अपने पत्र में कहा कि आपने मेरे अलावा किसी और के साथ यौन संबंध बनाए, लेकिन क्या इससे आप "बिगड़" सकती हैं? हाँ, बेशक यह मेरे लिए एक झटका था। लेकिन मेरे विचार से यह किसी इंसान को "बिगड़ने" से थोड़ा अलग है।
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहता है। मुझे चिंता होने लगती है कि कुमिको कहीं गायब हो गई है। लेकिन तभी स्क्रीन पर उसके लिखे अक्षर दिखने लगते हैं।
आप सही हो सकते हैं, लेकिन इसमें और भी बहुत कुछ है।
फिर से गहरी खामोशी छा जाती है। वह अपने शब्दों को बड़ी सावधानी से चुन रही है, मानो उन्हें दराज से निकाल रही हो।
यह तो बस एक झलक है। "हालात बिगड़ना" एक ऐसी चीज़ है जो लंबे समय में धीरे-धीरे होती है। यह सब पहले से तय था, मेरी जानकारी के बिना, किसी अंधेरे कमरे में, किसी और के हाथों। जब मैं तुमसे मिली और तुमसे शादी की, तो मुझे लगा जैसे मेरे लिए संभावनाओं का एक नया संसार खुल गया हो। मुझे उम्मीद थी कि शायद मैं कहीं से किसी रास्ते से बच निकल सकूँगी। लेकिन लगता है कि यह सिर्फ़ एक भ्रम था। हर चीज़ के संकेत होते हैं, इसीलिए जब हमारी बिल्ली उस समय गायब हुई थी, तो मैंने उसे ढूंढने की इतनी कोशिश की थी।
मैं स्क्रीन पर संदेश को लगातार देखता रहता हूँ, लेकिन अभी तक भेजने का निशान नहीं दिख रहा है। मेरा कंप्यूटर अभी भी 'प्राप्त करें' मोड पर सेट है। कुमिको सोच रही है कि आगे क्या लिखे। "हालात बिगड़ना" एक ऐसी चीज़ है जो लंबे समय में धीरे-धीरे विकसित होती है। वह मुझे क्या बताने की कोशिश कर रही है? मैं अपना ध्यान स्क्रीन पर केंद्रित करता हूँ, लेकिन मुझे वहाँ एक

अदृश्य दीवार जैसी कोई चीज़ दिखाई नहीं देती। एक बार फिर स्क्रीन पर अक्षर दिखने लगते हैं।
अगर हो सके तो मैं चाहती हूँ कि आप मेरे बारे में इस तरह सोचें: कि मैं एक लाइलाज बीमारी से धीरे-धीरे मर रही हूँ—एक ऐसी बीमारी जिससे मेरा चेहरा और शरीर धीरे-धीरे गलकर बिखर रहा है। यह तो बस एक रूपक है, बेशक। मेरा चेहरा और शरीर सचमुच गलकर नहीं बिखर रहे हैं। लेकिन यह सच्चाई के बहुत करीब है। और इसीलिए मैं खुद को आपको दिखाना नहीं चाहती। मुझे पता है कि इस तरह का अस्पष्ट रूपक आपको मेरी स्थिति के बारे में पूरी तरह से समझाने में मदद नहीं करेगा। मुझे उम्मीद नहीं है कि इससे आप मेरी बातों की सच्चाई पर यकीन कर लेंगे। मुझे इस बात का बहुत दुख है, लेकिन मैं इससे ज्यादा कुछ कह नहीं सकती। आप बस इसे स्वीकार कर सकते हैं।
एक लाइलाज बीमारी।
मैं यह सुनिश्चित करने के लिए जांच करता हूं कि मैं सेंड मोड में हूं और टाइप करना शुरू करता हूं।
अगर आप कहते हैं कि मैं आपके उपमा को स्वीकार कर लूँ, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन एक बात है जो मुझे बिल्कुल समझ नहीं आ रही। मान लीजिए कि जैसा आप कहते हैं, आप "बिगड़ गए हैं" और आपको "एक लाइलाज बीमारी" है, तो फिर आप ही क्यों नोबोरू वटाया के पास गए? आप मेरे साथ यहाँ क्यों नहीं रहे? हम साथ क्यों नहीं हैं? क्या हमने शादी इसी के लिए नहीं की थी?
सन्नाटा। मैं लगभग अपने हाथों में इसका भार और कठोरता महसूस कर सकती हूँ। मैं मेज पर हाथ जोड़कर कई गहरी साँसें लेती हूँ। फिर उत्तर आता है।

चाहे मुझे पसंद हो या न हो, मैं यहाँ इसलिए हूँ क्योंकि यही मेरे लिए सही जगह है। मुझे यहीं होना है। मेरे पास कोई और विकल्प चुनने का अधिकार नहीं है। अगर मैं तुम्हें देखना भी चाहूँ, तो भी नहीं देख सकती। क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हें देखना नहीं चाहती?
एक पल के लिए ऐसा लगता है मानो वह अपनी सांस रोक रही हो। फिर उसकी उंगलियां दोबारा चलने लगती हैं।
तो कृपया, अब मुझे इस बारे में और परेशान मत करो। अगर तुम मेरे लिए कुछ कर सकते हो, तो वह यही होगा कि मुझे जल्द से जल्द भुला दो। हमारे साथ बिताए उन सालों को अपनी यादों से ऐसे मिटा दो जैसे वे कभी थे ही नहीं। यही हम दोनों के लिए सबसे अच्छा होगा। यही मेरा सच्चा विश्वास है।
इसके जवाब में मैं कहता हूँ:
तुम कहती हो कि तुम चाहती हो कि मैं सब कुछ भूल जाऊं। तुम कहती हो कि तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें अकेला छोड़ दूं। लेकिन फिर भी, उसी समय, इस दुनिया में कहीं से, तुम मेरी मदद की गुहार लगा रही हो। वह आवाज़ धीमी और दूर से आती है, लेकिन शांत रातों में मैं उसे साफ़-साफ़ सुन सकता हूँ। यह तुम्हारी ही आवाज़ है: मुझे पूरा यकीन है। मैं यह बात मान सकता हूँ कि एक कुमिको मुझसे दूर जाने की पूरी कोशिश कर रही है, और शायद उसके ऐसा करने के अपने कारण भी हों। लेकिन एक दूसरी कुमिको भी है, जो मेरे करीब आने की उतनी ही कोशिश कर रही है। यही मेरा सच्चा विश्वास है। तुम यहाँ मुझसे कुछ भी कहो, मुझे उस कुमिको पर विश्वास करना होगा जो मेरी मदद चाहती है और मेरे करीब आने की कोशिश कर रही है। तुम मुझे कुछ भी बताओ, तुम्हारे कारण कितने भी जायज़ क्यों न हों, मैं तुम्हें कभी नहीं भूल सकता, मैं तुम्हारे साथ बिताए उन सालों को

अपने दिमाग से कभी नहीं निकाल सकता। मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि वे सच में हुए थे, वे मेरे जीवन का हिस्सा हैं, और उन्हें मिटाने का कोई तरीका नहीं है। ऐसा करना मानो खुद को मिटाना होगा। मुझे यह जानना होगा कि ऐसा करने का वैध कारण क्या हो सकता है।
एक और सन्नाटा छा जाता है। मॉनिटर के ज़रिए मैं उसकी खामोशी महसूस कर सकती हूँ। घने धुएँ की तरह, यह स्क्रीन के एक कोने से अंदर आती है और ज़मीन पर फैल जाती है। मैं कुमिको की इन खामोशियों से वाकिफ हूँ। मैंने इन्हें देखा है, अपने जीवन में अनगिनत बार इनका अनुभव किया है। वह अब साँस रोके बैठी है, कंप्यूटर स्क्रीन के सामने पूरी एकाग्रता से भौंहें सिकोड़े बैठी है। मैं अपना कप उठाती हूँ और ठंडी कॉफ़ी की एक घूँट लेती हूँ। फिर, खाली कप को हाथों में लिए, मैं भी साँस रोककर स्क्रीन को उसी तरह देखती हूँ जैसे कुमिको देख रही है। हम दोनों खामोशी के उस गहरे बंधन से जुड़े हैं जो हमारी दो दुनियाओं को अलग करने वाली दीवार को पार कर जाता है। मुझे इसमें कोई शक नहीं कि हमें एक-दूसरे की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है।
मुझे नहीं पता।
हाँ, मुझे पता है।
मैंने अपना कॉफी का कप नीचे रखा और जितनी जल्दी हो सके टाइप करने लगी, मानो समय की क्षणभंगुर लकीर को पकड़ने की कोशिश कर रही हो।
मुझे यह पता है। मुझे पता है कि मैं तुम्हारे पास पहुँचना चाहता हूँ—तुम, कुमिको, जो चाहती है कि मैं उसे बचाऊँ। दुर्भाग्य से, मुझे अभी तक यह नहीं पता कि वहाँ कैसे पहुँचना है और वहाँ मेरा क्या इंतज़ार कर रहा है। तुम्हारे जाने के बाद से इस पूरे लंबे

समय में, मैं ऐसे जी रहा हूँ जैसे मुझे घोर अंधकार में धकेल दिया गया हो। लेकिन धीरे-धीरे, मैं उस मूल के करीब पहुँच रहा हूँ, उस जगह के जहाँ सब कुछ का सार स्थित है। मैं तुम्हें यह बताना चाहता था। मैं तुम्हारे करीब पहुँच रहा हूँ, और मैं और भी करीब जाना चाहता हूँ।
मैंने अपने हाथ कीबोर्ड पर रखे और उसके जवाब का इंतजार करने लगा।
मुझे इनमें से कुछ भी समझ नहीं आया।
कुमिको ने यह टाइप किया और हमारी बातचीत समाप्त कर दी:
अलविदा

•

स्क्रीन पर मुझे पता चलता है कि दूसरी तरफ से संपर्क टूट गया है। हमारी बातचीत खत्म हो गई है। फिर भी, मैं स्क्रीन को घूरता रहता हूँ, कुछ होने की उम्मीद में। शायद कुमिको अपना मन बदल ले और वापस ऑनलाइन आ जाए। शायद उसे कुछ याद आ जाए जो वह कहना भूल गई हो। लेकिन वह वापस नहीं आती। बीस मिनट बाद मैं हार मान लेता हूँ। मैं फ़ाइल सेव करता हूँ, फिर ठंडा पानी पीने के लिए रसोई में जाता हूँ। मैं कुछ देर के लिए फ्रिज के पास बैठकर गहरी साँसें लेता हूँ और अपने दिमाग को शांत करता हूँ। मानो चारों ओर एक भयानक सन्नाटा छा गया हो। मुझे ऐसा लगता है जैसे दुनिया मेरे अगले विचार को सुनने के लिए बेताब है। लेकिन मुझे कुछ भी सूझ नहीं रहा। माफ़ कीजिए, लेकिन मुझे कुछ भी सूझ नहीं रहा।
मैं कंप्यूटर पर वापस जाता हूँ और वहीं बैठकर, चमकती हुई स्क्रीन पर हमारी पूरी बातचीत को शुरू से अंत तक ध्यान से पढ़ता हूँ: मैंने क्या कहा, उसने क्या कहा, मैंने उसके जवाब में क्या कहा, उसने उसके जवाब में क्या कहा। सब कुछ अभी भी स्क्रीन पर

स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। जैसे-जैसे मेरी नज़र उसके द्वारा लिखे गए अक्षरों की पंक्तियों पर जाती है, मुझे उसकी आवाज़ सुनाई देती है। मैं उसकी आवाज़ के उतार-चढ़ाव, सूक्ष्म स्वरों और ठहरावों को पहचान सकता हूँ। आखिरी पंक्ति पर कर्सर धड़कन की तरह नियमित रूप से झपकता रहता है, अगले शब्द के आने का बेसब्री से इंतज़ार करता है। लेकिन अगला शब्द नहीं आता।
पूरी बातचीत को अपने दिमाग में बिठाने के बाद (मैंने तय किया कि इसे प्रिंट न करना ही बेहतर होगा), मैंने कम्युनिकेशन मोड से बाहर निकलने के लिए बॉक्स पर क्लिक किया। मैंने प्रोग्राम को निर्देश दिया कि वह ऑपरेशन फाइल में कोई रिकॉर्ड न छोड़े, और यह सुनिश्चित करने के बाद कि यह हो गया है, मैंने स्विच बंद कर दिया। कंप्यूटर बीप करता है, और मॉनिटर की स्क्रीन एकदम सफेद हो जाती है। वह नीरस यांत्रिक ध्वनि कमरे की खामोशी में समा जाती है, मानो कोई जीवंत सपना शून्यता के हाथों से छीन लिया गया हो।

•

मुझे नहीं पता तब से कितना समय बीत गया है। लेकिन जब मुझे एहसास हुआ कि मैं कहाँ हूँ, तो मैंने खुद को मेज पर रखे अपने हाथों को घूरते हुए पाया। उन पर लंबे समय तक किसी की निगाहें टिकी रहने के निशान थे।
"हालात बिगड़ना" एक ऐसी प्रक्रिया है जो लंबे समय में धीरे-धीरे घटती है।
यह कितने समय की अवधि है?

भेड़ों की गिनती

•

वृत्त के केंद्र में स्थित वस्तु
उशिकावा की पहली मुलाकात के कुछ दिनों बाद, मैंने सिनेमन से कहा कि जब भी वह निवास स्थान पर आए, मेरे लिए एक अखबार ले आए। अब समय आ गया था कि मैं बाहरी दुनिया की वास्तविकता से रूबरू हो जाऊं। चाहे आप इससे बचने की कितनी भी कोशिश करें, समय आने पर वे आपको घेर ही लेते हैं।
सिनेमन ने सिर हिलाया, और उसके बाद वह हर दिन तीन अखबार लेकर आने लगा।
मैं सुबह नाश्ते के बाद अखबार देखता था। मैंने इतने लंबे समय से अखबार नहीं पढ़े थे कि अब वे मुझे अजीब से लगते थे—ठंडे और खाली। स्याही की तेज़ गंध से मेरा सिर दर्द करने लगता था, और गहरे काले रंग के छोटे-छोटे अक्षर मेरी आँखों में चुभते थे। अखबार का लेआउट, हेडलाइन की टाइपिंग और लिखने का लहजा मुझे अवास्तविक लगता था। अक्सर मुझे अखबार नीचे रखना पड़ता, आँखें बंद करनी पड़तीं और राहत की साँस लेनी पड़ती। पुराने ज़माने में ऐसा नहीं होता होगा। अखबार पढ़ना मेरे लिए इससे कहीं ज़्यादा सामान्य अनुभव रहा होगा। अखबारों में इतना बदलाव क्यों आ गया? या यूँ कहें कि मुझमें इतना बदलाव क्यों आ गया? कुछ समय तक अखबार पढ़ने के बाद, मुझे नोबोरू वटाया के बारे में एक बात स्पष्ट रूप से समझ में आ गई: कि वे समाज में अपनी स्थिति लगातार मजबूत कर रहे थे। एक ओर वे प्रतिनिधि सभा के उभरते हुए नए सदस्यों में से एक के रूप में महत्वाकांक्षी राजनीतिक गतिविधियों में लगे हुए थे, वहीं दूसरी ओर वे एक पत्रिका के

स्तंभकार और टीवी पर नियमित टिप्पणीकार के रूप में लगातार सार्वजनिक बयान दे रहे थे। उनका नाम हर जगह दिखाई देता था। पता नहीं क्यों, लोग सचमुच उनकी राय सुन रहे थे—और पूरे उत्साह के साथ। वे राजनीतिक मंच पर बिल्कुल नए थे, लेकिन उन्हें पहले से ही उन युवा राजनेताओं में गिना जाने लगा था जिनसे बड़ी उम्मीदें थीं। एक महिला पत्रिका द्वारा कराए गए सर्वेक्षण में उन्हें देश का सबसे लोकप्रिय राजनेता घोषित किया गया। उन्हें एक सक्रिय बुद्धिजीवी, एक ऐसे बुद्धिमान राजनेता के रूप में सराहा गया, जैसा पहले कभी नहीं देखा गया था।
जब मैंने समसामयिक घटनाओं और उनमें नोबोरू वटाया की प्रमुख भूमिका के बारे में जितना पढ़ सकता था, पढ़ लिया, तो मैंने मंचुकुओ पर अपनी बढ़ती हुई पुस्तकों के संग्रह की ओर रुख किया। सिनेमन मुझे इस विषय पर जो कुछ भी मिल पाता था, सब कुछ लाकर देता था। फिर भी, यहाँ भी मैं नोबोरू वटाया की छाया से बच नहीं सका। उस दिन यह छाया रसद संबंधी समस्याओं पर लिखी एक पुस्तक के पन्नों से उभर कर सामने आई। 1978 में प्रकाशित, पुस्तकालय की यह प्रति इससे पहले केवल एक बार उधार ली गई थी, जब पुस्तक नई थी, और लगभग तुरंत ही लौटा दी गई थी। शायद मंचुकुओ में रसद संबंधी समस्याओं में केवल लेफ्टिनेंट मामिया के परिचितों की ही रुचि थी।
लेखक के अनुसार, 1920 की शुरुआत में ही, जापान की शाही सेना सोवियत संघ के साथ पूर्ण युद्ध की आशंका में सर्दियों में जीवित रहने के लिए आवश्यक उपकरणों का विशाल भंडार जमा करने की संभावना तलाश रही थी। भीषण ठंड में लड़ने के लिए सेना को सुसज्जित करना एक अत्यावश्यक मामला माना जा रहा था क्योंकि साइबेरिया जैसी भीषण ठंड वाली किसी भी जगह पर वास्तविक युद्ध

न हो, निडरता और आत्म-त्याग के साथ लड़ें; सच्ची युद्ध-विजय तो तब मिलती है जब आप संख्या में कम और हथियारों से रहित होते हुए भी एक शक्तिशाली शत्रु को जीत लें। शत्रु पर प्रहार करो और इतनी तेज़ी से आगे बढ़ो कि रसद आपूर्ति न पहुँच पाए: यही सम्मान का मार्ग है।
पूर्ण तकनीकी विशेषज्ञ योशिताका वटाया के लिए यह सरासर बेतुका था। उनके विचार में, रसद संबंधी सहायता के बिना दीर्घकालिक युद्ध शुरू करना आत्महत्या के समान था। स्टालिन की गहन आर्थिक विकास की पंचवर्षीय योजना के माध्यम से सोवियत संघ ने अपनी सैन्य क्षमता का व्यापक विस्तार और आधुनिकीकरण किया था। प्रथम विश्व युद्ध के पाँच रक्तपातपूर्ण वर्षों ने पुरानी विश्व की मान्यताओं को नष्ट कर दिया था, और मशीनीकृत युद्ध ने रणनीति और रसद के संबंध में यूरोपीय सोच में क्रांति ला दी थी। बर्लिन में दो वर्षों तक तैनात रहने के कारण, योशिताका वटाया इस सच्चाई को भली-भांति जानते थे, लेकिन जापान के अधिकांश सैन्य अधिकारियों की मानसिकता लगभग तीस वर्ष पूर्व रूस-जापान युद्ध में मिली विजय के नशे से अभी तक बाहर नहीं निकली थी।
योशिताका वटाया, इशिवारा के तर्कों, उनके विश्वदृष्टिकोण और उनके करिश्माई व्यक्तित्व के प्रबल प्रशंसक बनकर जापान लौटे और उनका घनिष्ठ संबंध कई वर्षों तक कायम रहा। प्रतिष्ठित अधिकारी इशिवारा को मंचूरिया से वापस बुलाकर माइजुरु के एकांत किले की कमान सौंपे जाने के बाद भी वे अक्सर उनसे मिलने जाते थे। मंचुकुओ में भेड़ पालन और ऊन प्रसंस्करण पर योशिताका वटाया की सटीक और विस्तृत रिपोर्ट जापान लौटने के तुरंत बाद मुख्यालय को सौंपी गई और उसकी खूब प्रशंसा हुई। हालाँकि, 1939 में नोमोनहान की लड़ाई में जापान की करारी हार और अमेरिका और

ब्रिटेन द्वारा लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों के बढ़ने के साथ ही, सेना ने अपना ध्यान दक्षिण की ओर मोड़ना शुरू कर दिया और सोवियत संघ के खिलाफ काल्पनिक युद्ध छेड़ने वाली शोध टीम की गतिविधियाँ धीरे-धीरे समाप्त हो गईं। निश्चित रूप से, शरद ऋतु की शुरुआत में ही नोमोनहान की लड़ाई को शीघ्र समाप्त करने और इसे पूर्ण पैमाने के युद्ध में तब्दील न होने देने के निर्णय के पीछे एक कारण शोध दल की वह निर्णायक रिपोर्ट थी जिसमें कहा गया था कि "हमारी वर्तमान तैयारियों को देखते हुए हम सोवियत सेना के विरुद्ध शीतकालीन अभियान चलाने में असमर्थ हैं।" शरद ऋतु की हवाएँ चलते ही, आमतौर पर प्रतिष्ठा को लेकर सजग रहने वाली जापानी सेना के लिए एक असामान्य कदम उठाते हुए, शाही मुख्यालय ने लड़ाई से अपना हाथ खींच लिया और राजनयिक वार्ताओं के माध्यम से बंजर हुलुनबुइर स्टेपी को बाहरी मंगोलियाई और सोवियत सैनिकों को सौंप दिया।
एक फुटनोट में लेखक ने बताया कि युद्ध के बाद मैकार्थर के कब्जे के दौरान योशिताका वटाया को सार्वजनिक पद से हटा दिया गया था और कुछ समय तक वे अपने पैतृक शहर निगाता में एकांतवास में रहे थे। लेकिन पद से हटाए जाने के बाद कंजर्वेटिव पार्टी ने उन्हें चुनाव लड़ने के लिए राजी कर लिया और उन्होंने ऊपरी सदन में दो कार्यकाल पूरे किए, जिसके बाद वे निचले सदन में चले गए। उनके कार्यालय की दीवार पर कांजी इशिवारा की सुलेख वाली एक पांडुलिपि टंगी हुई थी।
मुझे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि संसद सदस्य नोबोरू वटाया के चाचा किस तरह के नेता थे या उन्होंने एक राजनीतिज्ञ के रूप में क्या-क्या उपलब्धियां हासिल की थीं। उन्होंने एक बार मंत्रिमंडल मंत्री के रूप में कार्य किया था और ऐसा लगता है कि

वे अपने जिले के लोगों के बीच काफी प्रभावशाली थे, लेकिन वे राष्ट्रीय राजनीति में कभी नेता नहीं बन पाए। अब उनकी राजनीतिक सत्ता उनके भतीजे नोबोरू वटाया को विरासत में मिली है।

•

मैंने किताब एक तरफ रख दी और अपने हाथों को सिर के पीछे मोड़कर खिड़की से बाहर, सामने के गेट की धुंधली दिशा में देखने लगी। जल्द ही गेट अंदर की ओर खुलेगा और मर्सिडीज-बेंज दिखाई देगी, जिसमें सिनेमन ड्राइवर सीट पर होगा। वह एक और "ग्राहक" को ला रहा होगा। ये "ग्राहक" और मैं, मेरे गाल पर बने निशान से जुड़े हुए थे। सिनेमन के दादा (नटमेग के पिता) और मैं भी मेरे गाल पर बने निशान से जुड़े हुए थे। सिनेमन के दादा और लेफ्टिनेंट मामिया, ह्सिन-चिंग शहर से जुड़े हुए थे। लेफ्टिनेंट मामिया और भविष्यवक्ता श्री होंडा, मंचूरियन-मंगोलियाई सीमा पर अपने विशेष कर्तव्यों से जुड़े हुए थे, और कुमिको और मुझे श्री होंडा से नोबोरू वटाया के परिवार ने मिलवाया था। लेफ्टिनेंट मामिया और मैं, अपने-अपने कुओं में अपने अनुभवों से जुड़े हुए थे—उनका मंगोलिया में, मेरा उस ज़मीन पर जहाँ मैं अभी बैठी थी। इसी ज़मीन पर कभी एक सेना अधिकारी भी रहते थे, जिन्होंने चीन में सैनिकों की कमान संभाली थी। ये सभी घटनाएँ एक वृत्त की तरह आपस में जुड़ी हुई थीं, जिसके केंद्र में युद्ध-पूर्व मंचूरिया, पूर्वी एशिया महाद्वीप और 1939 में नोमोनहान में हुआ संक्षिप्त युद्ध स्थित था। लेकिन कुमिको और मैं इस ऐतिहासिक घटनाक्रम में क्यों उलझ गए, यह मेरी समझ से परे था। ये सभी घटनाएँ कुमिको और मेरे जन्म से बहुत पहले घटित हो चुकी थीं। मैं सिनेमन की डेस्क पर बैठ गया और कीबोर्ड पर हाथ रख दिए। कुमिको से हुई बातचीत के बाद भी मेरी उंगलियों का कीबोर्ड पर

सिग्नल लाल हो जाता है

•

लंबी भुजा आगे बढ़ती है
अगली सुबह नौ बजे जब सिनेमन पहुंचा तो वह अकेला नहीं था। उसके बगल में यात्री सीट पर उसकी मां, नटमेग अकासाका बैठी थीं। वह एक महीने से अधिक समय से यहां नहीं आई थीं। उस समय भी वह सिनेमन के साथ बिना सूचना दिए आई थीं, मेरे साथ नाश्ता किया और लगभग एक घंटे की हल्की-फुल्की बातचीत के बाद चली गईं।
सिनेमन ने अपना सूट कोट टांग दिया और लगातार तीसरे दिन हैंडेल का कॉन्सर्टो ग्रॉसो सुनते हुए रसोई में अपनी माँ के लिए चाय और टोस्ट बनाने चला गया, जिन्होंने अभी तक नाश्ता नहीं किया था। वह हमेशा एकदम बढ़िया टोस्ट बनाता था, मानो किसी विज्ञापन में इस्तेमाल होने वाला हो। फिर, जब सिनेमन हमेशा की तरह रसोई को ठीक कर रहा था, मैं और नटमेग एक छोटी सी मेज पर बैठकर चाय पी रहे थे। उसने मक्खन के साथ टोस्ट का सिर्फ एक टुकड़ा खाया। बाहर ठंडी, बर्फीली बारिश हो रही थी। नटमेग ने कम ही कुछ कहा, और मैंने भी कम ही—मौसम के बारे में कुछ बातें। हालाँकि, ऐसा लग रहा था कि वह कुछ कहना चाहती है। यह उसके चेहरे के भाव और बोलने के तरीके से साफ था। उसने छोटे-छोटे टोस्ट के टुकड़े तोड़े और एक-एक करके अपने मुँह में डाले। हम बीच-बीच में बारिश को देखते रहे, मानो वह हमारी पुरानी दोस्त हो।
जब सिनेमन ने रसोई का काम खत्म कर लिया और सफाई शुरू की, तो नटमेग मुझे "फिटिंग रूम" में ले गई। यह कमरा अकासाका कार्यालय के "फिटिंग रूम" जैसा ही बनाया गया था। आकार और बनावट लगभग एक जैसी थी। यहाँ की खिड़की पर भी दो परतें पर्दे लगे थे और दिन में

भी अंधेरा रहता था। सिनेमन के कमरे की सफाई करते समय पर्दे दस मिनट से ज़्यादा देर तक खुले नहीं रहते थे। यहाँ एक चमड़े का सोफा, मेज पर फूलों से भरा एक कांच का फूलदान और एक लंबा फ्लोर लैंप था। कमरे के बीच में एक बड़ी वर्कबेंच थी, जिस पर कैंची, कपड़े के टुकड़े, सुई-धागे से भरा एक लकड़ी का डिब्बा, पेंसिलें, एक डिज़ाइन बुक (जिसमें कुछ असली डिज़ाइन स्केच बने थे) और कई पेशेवर औजार रखे थे, जिनके नाम और उपयोग मुझे नहीं पता थे। दीवार पर एक बड़ा सा शीशा लगा था और कमरे का एक कोना कपड़े बदलने के लिए एक स्क्रीन से अलग किया गया था। रेजिडेंस में आने वाले ग्राहकों को हमेशा इसी कमरे में ले जाया जाता था।
मुझे समझ नहीं आया कि सिनेमन और उसकी माँ को इस घर में मूल "फिटिंग रूम" की हूबहू नकल क्यों बनानी पड़ी। यहाँ तो ऐसी दिखावट की कोई ज़रूरत ही नहीं थी। शायद वे (और उनके ग्राहक) अकासाका दफ्तर के "फिटिंग रूम" के इतने आदी हो गए थे कि इस जगह को सजाने के लिए उनके पास कोई नया विचार ही नहीं बचा था। वैसे, वे यह भी पूछ सकते थे, "फिटिंग रूम में क्या बुराई है?" इसे बनाने का कारण चाहे जो भी हो, मुझे तो यह कमरा अच्छा लगा। यह "फिटिंग रूम" था, कोई और कमरा नहीं, और सिलाई के सभी औजारों से घिरे होने के कारण मुझे वहाँ एक अजीब सी सुरक्षा का एहसास होता था। यह एक अवास्तविक सा माहौल था, पर अस्वाभाविक नहीं।
नटमेग ने मुझे चमड़े के सोफे पर बैठने को कहा और वह खुद मेरे बगल में बैठ गई।
“तो, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?” उसने पूछा।
“बुरा नहीं,” मैंने जवाब दिया।
नटमेग ने चमकीले हरे रंग का सूट पहना हुआ था। स्कर्ट छोटी थी और बड़े-बड़े षट्भुजाकार बटन गले तक आते थे, बिल्कुल उन पुराने

नेहरू जैकेटों की तरह। कंधों पर ब्रेड के आकार के पैड लगे थे। यह पहनावा मुझे बहुत पहले देखी गई एक साइंस फिक्शन फिल्म की याद दिलाता था, जो निकट भविष्य में घटित हुई थी। फिल्म में लगभग सभी महिलाएं इसी तरह के सूट पहनती थीं और एक भविष्यवादी शहर में रहती थीं।
नटमेग की बालियां बड़ी-बड़ी प्लास्टिक की थीं, बिल्कुल उसके सूट के रंग की। उनका रंग गहरा हरा था, जो कई रंगों को मिलाकर बना लगता था, इसलिए शायद उन्हें सूट से मैच करने के लिए खास तौर पर बनवाया गया था। या शायद इसका उल्टा सच था: सूट बालियों से मैच करने के लिए बनाया गया था—जैसे दीवार में फ्रिज के आकार का खांचा बनाना। शायद चीजों को देखने का यह तरीका बुरा नहीं है, मैंने सोचा। बारिश के बावजूद वह धूप का चश्मा पहने आई थी, और उसके लेंस लगभग निश्चित रूप से हरे थे। उसकी मोजे भी हरे थे। आज साफ तौर पर हरा दिन था।
अपनी हमेशा की सहज और लयबद्ध हरकतों के साथ, नटमेग ने अपने बैग से एक सिगरेट निकाली, उसे मुंह में डाला और सिगरेट लाइटर से जलाते हुए अपने होंठों को हल्का सा सिकोड़ा। लाइटर, कम से कम, हरा नहीं था बल्कि वही महंगा दिखने वाला पतला सोने का लाइटर था जिसे वह हमेशा इस्तेमाल करती थी। वैसे, वह हरे रंग के साथ बहुत अच्छा लग रहा था। फिर नटमेग ने अपनी हरी मोजे वाली टांगों को क्रॉस किया। अपने घुटनों को ध्यान से देखते हुए, उसने अपनी स्कर्ट को ठीक किया। फिर, मानो वह उसके घुटनों का ही एक हिस्सा हो, उसने मेरे चेहरे की ओर देखा।
“बुरा नहीं,” मैंने फिर कहा। “हमेशा की तरह ही।
नटमेग ने सिर हिलाया। "क्या तुम थके हुए नहीं हो? क्या तुम्हें आराम की ज़रूरत महसूस नहीं हो रही है?"

नहीं, ऐसा खास नहीं है। मुझे लगता है कि मुझे काम की आदत हो गई है। अब यह मेरे लिए पहले की तुलना में बहुत आसान है।
जायफल ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसकी सिगरेट का धुआँ किसी भारतीय फकीर की जादुई रस्सी की तरह सीधा ऊपर उठा और छत पर लगे वेंटिलेटर में समा गया। जहाँ तक मुझे पता था, यह वेंटिलेटर दुनिया का सबसे शांत और सबसे शक्तिशाली वेंटिलेटर था।
मैंने पूछा, "आप कैसे हैं?"
"मुझे?"
"क्या आप थके हैं?"
नटमेग ने मेरी तरफ देखा। "क्या मैं थकी हुई लग रही हूँ?"
दरअसल, जब हमारी पहली नजरें मिलीं तभी से वह मुझे थकी हुई लग रही थी। जब मैंने उसे यह बताया, तो उसने एक छोटी सी आह भरी।
“आज सुबह एक पत्रिका में इस जगह के बारे में एक और लेख छपा है— यह ‘फांसी वाले घर का रहस्य’ श्रृंखला का हिस्सा है। यह किसी हॉरर फिल्म के शीर्षक जैसा लगता है।”
“यह दूसरा वाला है, है ना?” मैंने कहा।
“बिल्कुल,” नटमेग ने कहा। “और वास्तव में, एक अन्य पत्रिका में कुछ समय पहले इससे संबंधित एक लेख छपा था, लेकिन सौभाग्य से अभी तक किसी ने भी इस संबंध पर ध्यान नहीं दिया है।”
“क्या हमारे बारे में कुछ नया सामने आया है?”
उसने ऐशट्रे की ओर हाथ बढ़ाया और सावधानी से अपनी सिगरेट बुझाई। फिर उसने अपना सिर थोड़ा सा हिलाया। उसके हरे झुमके वसंत ऋतु की शुरुआत में तितलियों की तरह फड़फड़ा रहे थे।
“सच में नहीं,” उसने कहा, फिर थोड़ी देर रुकी। “हम कौन हैं, हम यहाँ क्या कर रहे हैं: यह अभी तक किसी को नहीं पता। मैं आपको इसकी एक प्रति दे दूंगी, ताकि अगर आपकी रुचि हो तो आप इसे पढ़

सकें। लेकिन मैं आपसे असल में उस बात के बारे में पूछना चाहती हूँ जो किसी ने मुझे कुछ दिन पहले फुसफुसाकर बताई थी: कि आपके एक जीजाजी हैं जो एक मशहूर युवा राजनेता हैं। क्या यह सच है?” “दुर्भाग्यवश, वही है,” मैंने कहा। “मेरी पत्नी का भाई।”
“क्या आपका मतलब उस पत्नी के भाई से है जो अब आपके साथ नहीं है?” "यह सही है।"
"मुझे आश्चर्य है कि क्या उसे पता चल गया है कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"
“उन्हें पता है कि मैं यहाँ हर दिन आता हूँ और कुछ न कुछ कर रहा हूँ। उन्होंने किसी को मेरे बारे में जाँच करने को कहा था। मुझे लगता है कि उन्हें इस बात की चिंता थी कि मैं क्या कर रहा हूँ। लेकिन मुझे नहीं लगता कि उन्हें अभी तक कुछ और पता चला है।” नटमेग ने मेरे जवाब के बारे में थोड़ी देर सोचा। फिर उसने अपना चेहरा मेरी ओर उठाया और पूछा, "तुम्हें अपना यह जीजाजी ज़्यादा पसंद नहीं है, है ना?"
"ज्यादा नहीं, बिल्कुल नहीं।"
और वह तुम्हें पसंद नहीं करता।
"नरम शब्दों में कहें तो।"
“और अब उसे इस बात की चिंता है कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो। ऐसा क्यों है?”
“अगर यह बात सामने आती है कि उसका साला किसी संदिग्ध गतिविधि में शामिल है, तो यह उसके लिए एक बड़ा घोटाला साबित हो सकता है। आखिर वह इस समय सबकी नजरों में है। मुझे लगता है कि ऐसे मामलों में उसकी चिंता होना स्वाभाविक है।”
"तो फिर वह इस जगह के बारे में जानकारी जनसंचार माध्यमों को लीक करने वाला व्यक्ति तो नहीं हो सकता, है ना?"

सच कहूँ तो, मुझे नहीं पता कि नोबोरू वटाया के मन में क्या चल रहा है। लेकिन सामान्य ज्ञान कहता है कि प्रेस को जानकारी लीक करने से उन्हें कोई फायदा नहीं होगा। वे शायद चीजों को गुप्त रखना चाहेंगे।
काफी देर तक जायफल अपनी उंगलियों में पतले सोने के लाइटर को घुमाती रही। यह किसी शांत दिन में सोने की पवनचक्की की तरह लग रहा था।
“आपने अपने इस जीजा के बारे में हमें कुछ क्यों नहीं बताया?” नटमेग ने पूछा।
“सिर्फ़ तुम ही नहीं। मैं किसी से भी उसका ज़िक्र नहीं करती,” मैंने कहा। “हम शुरू से ही एक-दूसरे को पसंद नहीं करते थे, और अब तो हम एक-दूसरे से नफ़रत ही करते हैं। मैं उसे तुमसे छिपा नहीं रही थी। मुझे बस लगा कि इस विषय को उठाने की कोई ज़रूरत नहीं है।”
जायफल ने थोड़ी लंबी आह भरी। "तुम्हें हमें बताना चाहिए था।" मैंने कहा, "शायद मुझे ऐसा करना चाहिए था।"
“मुझे यकीन है कि आप समझ सकते हैं कि इसमें क्या-क्या शामिल है। हमारे पास राजनीति और व्यापार जगत से ग्राहक आते हैं। प्रभावशाली लोग। और मशहूर हस्तियां। उनकी निजता की रक्षा करना जरूरी है। इसीलिए हमने इतनी कड़ी सावधानी बरती है। आप इतना तो जानते ही हैं।”
मेंने सिर हिलाया।
“सिनेमन ने हमारी गोपनीयता बनाए रखने के लिए जो सटीक और जटिल प्रणाली बनाई है, उसे तैयार करने में बहुत समय और मेहनत लगाई है — फर्जी कंपनियों का जाल, कई परतों में छिपी किताबें, अकासाका के उस होटल में पूरी तरह से गुमनाम पार्किंग स्थल, ग्राहकों का

कड़ा प्रबंधन, आय और व्यय पर नियंत्रण, इस घर का डिज़ाइन: यह सब उसी के दिमाग की उपज है। अब तक, यह प्रणाली लगभग पूरी तरह से उसकी गणनाओं के अनुसार काम कर रही है। बेशक, ऐसी प्रणाली को चलाने के लिए बहुत धन की आवश्यकता होती है, लेकिन हमारे लिए धन कोई समस्या नहीं है। महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे पास आने वाली महिलाएं निश्चिंत रह सकें कि उनकी पूरी तरह से रक्षा की जाएगी।”
"आपका कहना है कि उस सुरक्षा को कमजोर किया जा रहा है।"
"हां दुर्भाग्य से।"
जायफल ने सिगरेट का एक डिब्बा उठाया और उसमें से एक सिगरेट निकाली, लेकिन उसने उसे बिना जलाए काफी देर तक अपनी उंगलियों के बीच पकड़े रखा।
और स्थिति को और भी बदतर बनाने के लिए, मेरा एक जीजा है जो काफी प्रसिद्ध राजनेता है, जिससे घोटाले की संभावना और भी बढ़ जाती है।
"बिल्कुल सही," नटमेग ने अपने होंठों को थोड़ा सा मोड़ते हुए कहा।
तो इस स्थिति के बारे में सिनेमन का विश्लेषण क्या है?
“वह कुछ नहीं कह रहा है। जैसे समुद्र की तलहटी में पड़ा कोई बड़ा सीप। वह अपने अंदर सिमट गया है, दरवाजा बंद कर लिया है और गंभीरता से सोच रहा है।”
जायफल की निगाहें मुझ पर टिकी थीं। आखिरकार, मानो उसे याद आया कि सिगरेट उसके हाथ में है, उसने अपनी सिगरेट जलाई। फिर उसने कहा, “मैं अब भी इसके बारे में बहुत सोचती हूँ—अपने पति और जिस तरह से उनकी हत्या की गई। उन्हें उनकी हत्या क्यों करनी पड़ी? उन्हें होटल के कमरे को खून से क्यों लपेटना पड़ा और उनके शरीर

के अंदरूनी अंगों को निकालकर क्यों ले जाना पड़ा? मुझे ऐसा करने का कोई कारण समझ नहीं आता। मेरे पति ऐसे व्यक्ति नहीं थे जिन्हें इस तरह से मारा जाना चाहिए था।”
“लेकिन मेरे पति की मृत्यु ही एकमात्र घटना नहीं है। मेरे जीवन में अब तक घटी ये सभी अनसुलझी घटनाएँ—फैशन डिज़ाइन के लिए मेरे भीतर उमड़ा तीव्र जुनून और उसका अचानक गायब हो जाना; सिनेमन का बोलना बंद कर देना; और इस अजीबोगरीब काम में मेरा पूरी तरह डूब जाना—ऐसा लगता है मानो ये सब मुझे यहाँ, जहाँ मैं आज हूँ, लाने के उद्देश्य से ही शुरू से ही चतुराई से रची गई थीं। यह एक ऐसा विचार है जिसे मैं अपने मन से निकाल नहीं पा रही हूँ। मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरी हर हरकत किसी दूर स्थित शक्ति द्वारा नियंत्रित हो रही है, और मेरा जीवन इन सभी घटनाओं के लिए एक सुविधाजनक मार्ग मात्र रहा है।”
बगल वाले कमरे से सिनेमन के वैक्यूम क्लीनर चलाने की हल्की आवाज़ आ रही थी। वह हमेशा की तरह एकाग्रता और व्यवस्थित ढंग से अपना काम कर रहा था।
“क्या तुम्हें कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ?” नटमेग ने मुझसे पूछा। मैंने कहा, "मुझे ऐसा नहीं लगता कि मैं किसी चीज में 'बहक' गया हूँ। मैं यहाँ इसलिए हूँ क्योंकि मेरा यहाँ होना ज़रूरी था।" "तो क्या तुम जादुई बांसुरी बजाकर कुमिको को ढूंढ सकते हो?" "यह सही है।"
“तुम किसी चीज़ की तलाश कर रही हो,” उसने धीरे से अपनी हरी मोजे वाली टांगों को फिर से क्रॉस करते हुए कहा। “और हर चीज़ की एक कीमत होती है।”
मैं चुप रह गया।

फिर अंत में नटमेग ने अपना निष्कर्ष सुनाया: “हमने कुछ समय के लिए यहाँ किसी भी ग्राहक को न लाने का फैसला किया है। यह सिनेमन का निर्णय था। पत्रिका में छपे लेखों और आपके जीजाजी के दखल के कारण स्थिति बदल गई है। कल हमने आज से शुरू होने वाली सभी शेष नियुक्तियाँ रद्द कर दीं।”
“‘थोड़ी देर’ का मतलब कितना लंबा होगा?”
“जब तक सिनेमन सिस्टम की खामियों को ठीक नहीं कर देता और हम यह सुनिश्चित नहीं कर लेते कि किसी भी संकट को पूरी तरह से टाल दिया गया है, तब तक हम कोई जोखिम नहीं लेना चाहते। माफ कीजिए, लेकिन हम कोई जोखिम नहीं लेना चाहते—बिल्कुल भी नहीं। सिनेमन हमेशा की तरह हर दिन यहाँ आएगा, लेकिन अब कोई ग्राहक नहीं होंगे।”

•

जब तक सिनेमन और नटमेग चली गईं, सुबह की बारिश रुक चुकी थी। ड्राइववे में बने एक छोटे से गड्ढे में आधा दर्जन गौरैया अपने पंख धो रही थीं। जब सिनेमन की मर्सिडीज गायब हो गई और ऑटोमैटिक गेट बंद हो गया, तो मैं खिड़की पर बैठकर पेड़ों की डालियों के पार बादलों से घिरे सर्दियों के आसमान को देखने लगा। नटमेग के शब्द याद आ गए: "कहीं दूर से कोई बेहद लंबी भुजा आ रही हो।" मैंने कल्पना की कि वह भुजा गहरे, नीचे लटके बादलों से नीचे आ रही है— जैसे किसी डरावनी चित्र पुस्तिका का कोई चित्र हो।

त्रिकोणीय कान

•

बेपहियों वाली गाड़ी की घंटी
मैंने बाकी का दिन मंचुकुओ के बारे में पढ़ते हुए बिताया। मुझे घर वापस जाने की कोई जल्दी नहीं थी। मुझे लगा कि मुझे देर हो सकती है, इसलिए सुबह निकलते समय मैंने मैकरेल को दो दिन का सूखा बिल्ली का खाना दे दिया था। हो सकता है उसे यह ज़्यादा पसंद न आए, लेकिन कम से कम वह भूखा तो नहीं रहेगा। इससे घर वापस जाने का ख्याल उतना अच्छा नहीं लगा। मैं लेटना और झपकी लेना चाहती थी। मैंने अलमारी से एक कंबल और तकिया निकाला, उन्हें कमरे में सोफे पर बिछाया और लाइट बंद कर दी। फिर मैं लेट गई, आँखें बंद कर लीं और मैकरेल के बारे में सोचने लगी। मैं बिल्ली के बारे में सोचते-सोचते सो जाना चाहती थी। वह मेरे पास वापस आ गया था। वह कहीं दूर से मेरे पास वापस आ गया था। यह किसी आशीर्वाद जैसा ही था। आँखें बंद करके लेटे हुए, मैं बिल्ली के पंजों के नीचे की कोमल त्वचा, ठंडे त्रिकोणीय कानों और गुलाबी जीभ के बारे में सोच रही थी। मेरे मन में, मैकरेल सिकुड़कर चुपचाप सो रहा था। मैंने अपनी हथेली से उसकी गर्माहट महसूस की। मैं उसकी नियमित साँसें सुन सकती थी। मैं सामान्य से कहीं अधिक बेचैन थी, लेकिन फिर भी कुछ ही देर में मुझे नींद आ गई, एक गहरी नींद जिसमें सपने नहीं आए।
मैं आधी रात को जाग गया। मुझे लगा जैसे कहीं दूर से स्लेज की घंटियों की आवाज़ आ रही हो, जैसे क्रिसमस के संगीत की पृष्ठभूमि में बज रही हो।
बेपहियों वाली गाड़ी की घंटी?

मैं सोफे पर उठकर बैठ गई और कॉफी टेबल पर रखी अपनी घड़ी को टटोला। चमकती हुई सुइयाँ डेढ़ बज रही थीं। मुझे उम्मीद से ज़्यादा गहरी नींद आ गई थी। मैं चुपचाप बैठी रही और ध्यान से सुनने की कोशिश की, लेकिन मुझे सिर्फ़ अपने दिल की हल्की, सूखी धड़कन सुनाई दे रही थी। शायद मैंने स्लेज की घंटियों की आवाज़ को सिर्फ़ कल्पना किया था। शायद मैं सपना ही देख रही थी। फिर भी, मैंने घर में देखने का फैसला किया। मैंने चप्पल पहनी और रसोई की ओर चल पड़ी। कमरे से बाहर निकलते ही आवाज़ और साफ़ हो गई। यह सचमुच स्लेज की घंटियों जैसी आवाज़ थी, और ऐसा लग रहा था कि यह सिनेमन के दफ्तर से आ रही है। मैं थोड़ी देर दरवाजे के पास खड़ी होकर सुनती रही, फिर मैंने दस्तक दी। शायद मेरे सोते समय सिनेमन घर वापस आ गई हो। लेकिन कोई जवाब नहीं आया। मैंने दरवाजा थोड़ा सा खोला और अंदर देखा।
अँधेरे में, कमर की ऊँचाई के आसपास, मुझे एक चौकोर आकार की सफ़ेद चमक दिखाई दी। यह कंप्यूटर स्क्रीन की चमक थी, और घंटी की आवाज़ मशीन की बार-बार बजने वाली बीप थी (एक नई तरह की बीप, जो मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी)। कंप्यूटर मुझे पुकार रहा था। मानो उसकी ओर खिंचा चला जा रहा हो, मैं उस चमक के सामने बैठ गया और स्क्रीन पर संदेश पढ़ा:
अब आपको "द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल" प्रोग्राम तक पहुंच प्राप्त हो गई है। एक दस्तावेज़ (1-16) चुनें।
किसी ने कंप्यूटर चालू किया और "द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल" शीर्षक वाले दस्तावेज़ खोले। मेरे अलावा घर में कोई नहीं होना चाहिए था। क्या किसी ने घर के बाहर से ऐसा किया होगा? अगर हाँ, तो यह सिर्फ़ सिनेमन ही हो सकती है। "द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल"?

कंप्यूटर से हल्की, मधुर ध्वनि, मानो स्लेज की घंटियों की आवाज़ हो, लगातार आ रही थी, मानो क्रिसमस की सुबह हो। ऐसा लग रहा था जैसे वह मुझे कोई निर्णय लेने के लिए प्रेरित कर रही हो। कुछ हिचकिचाहट के बाद, मैंने बिना किसी खास कारण के #8 चुन लिया। घंटी बजना तुरंत बंद हो गई, और स्क्रीन पर एक दस्तावेज़ खुल गया, मानो मेरे सामने क्षैतिज रूप से कोई चित्र फैला हुआ हो।

विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल #8 (या, एक दूसरा अनाड़ी नरसंहार)

•

पशुचिकित्सक सुबह 6:00 बजे से पहले उठ गए। ठंडे पानी से चेहरा धोने के बाद उन्होंने नाश्ता बनाया। गर्मियों में सूर्योदय जल्दी हो जाता है और चिड़ियाघर के अधिकांश जानवर पहले ही जाग चुके होते हैं। खुली खिड़की से उनकी आवाज़ें और उनके साथ आने वाली हवा अंदर आती थी, जिससे उन्हें बाहर देखे बिना ही मौसम का पता चल जाता था। यह उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। वे पहले आवाज़ें सुनते, फिर सुबह की ताज़ी हवा में सांस लेते और इस तरह हर नए दिन के लिए खुद को तैयार करते।
लेकिन आज का दिन बीते दिन से अलग होना चाहिए था। होना ही था। कितनी ही आवाज़ें और गंध खो गई थीं! बाघ, तेंदुए, भेड़िये, भालू: सभी को पिछली दोपहर सैनिकों ने मार गिराया था। अब, एक रात की नींद के बाद, वे घटनाएँ उसे किसी पुराने बुरे सपने की तरह लग रही थीं। लेकिन वह जानता था कि वे सचमुच घटी थीं। सैनिकों की राइफलों की गर्जना से उसके कानों में अभी भी हल्का दर्द हो रहा था। यह सपना नहीं हो सकता था। अब अगस्त का महीना था, साल 1945 था, और वह यहाँ ह्सिनचिंग शहर में था, जहाँ सीमा पार कर चुके सोवियत सैनिक हर घंटे और करीब आते जा रहे थे। यह हकीकत थी—उतनी ही असली जितनी उसके सामने सिंक और टूथब्रश।
हाथियों की चिंघाड़ सुनकर उसे कुछ राहत मिली। हाँ, हाथी बच गए थे। सौभाग्य से, प्लाटून के प्रभारी युवा लेफ्टिनेंट में इतनी मानवीय संवेदनशीलता थी कि उसने हाथियों को सूची से हटा दिया था, पशुचिकित्सक ने अपना चेहरा धोते हुए सोचा। मंचूरिया आने के बाद

से, वह अपने देश के कई हठीले, कट्टरपंथी युवा अधिकारियों से मिल चुका था, और यह अनुभव हमेशा उसे झकझोर देता था। उनमें से अधिकांश किसान परिवार के बेटे थे जिन्होंने अपनी जवानी के दिन मंदी भरे तीस के दशक में गरीबी की त्रासदियों में बिताए थे, जबकि उनके दिमाग में एक अहंकारी राष्ट्रवाद ठूंसा गया था। वे बिना सोचे समझे अपने वरिष्ठ के आदेशों का पालन करते थे, चाहे वे कितने भी अजीब क्यों न हों। सम्राट के नाम पर ब्राजील तक धरती खोदने का आदेश मिलने पर, वे फावड़ा उठाते और काम पर लग जाते। कुछ लोग इसे "पवित्रता" कहते थे, लेकिन पशुचिकित्सक के पास इसके लिए दूसरे शब्द थे। शहरी डॉक्टर के बेटे, जो बीसवीं सदी के अपेक्षाकृत उदार माहौल में पले-बढ़े थे, पशु चिकित्सक उन युवा अधिकारियों को कभी समझ नहीं पाए। छोटे हथियारों से दो हाथियों को मारना ब्राज़ील तक ज़मीन खोदने से कहीं ज़्यादा आसान होना चाहिए था, लेकिन फायरिंग दस्ते के प्रभारी लेफ्टिनेंट, हालांकि उनकी बोली में थोड़ा देहाती लहजा था, पशु चिकित्सक द्वारा मिले अन्य युवा अधिकारियों की तुलना में ज़्यादा सामान्य इंसान प्रतीत होते थे—ज़्यादा पढ़े-लिखे और ज़्यादा समझदार। पशु चिकित्सक को यह बात उस युवक के बोलने और व्यवहार करने के तरीके से समझ आ गई थी।
बहरहाल, हाथियों को मारा नहीं गया था, और पशुचिकित्सक ने मन ही मन सोचा कि उसे शुक्रगुजार होना चाहिए। सैनिकों को भी इस काम से मुक्ति मिलने पर खुशी हुई होगी। चीनी कामगारों को शायद इस चूक का अफसोस हुआ होगा—उन्हें बहुत सारा मांस और हाथीदांत नहीं मिल पाया था।
पशुचिकित्सक ने केतली में पानी उबाला, अपनी दाढ़ी को गर्म तौलिये में भिगोया और शेव की। फिर उन्होंने अकेले नाश्ता किया:

चाय, टोस्ट और मक्खन। मंचूरिया में भोजन का राशन पर्याप्त नहीं था, लेकिन अन्य जगहों की तुलना में यह काफी अच्छा था। यह उनके और जानवरों दोनों के लिए अच्छी खबर थी। जानवरों ने चारे की कम मात्रा पर नाराजगी जताई, लेकिन यहाँ की स्थिति जापान के चिड़ियाघरों की तुलना में कहीं बेहतर थी, जहाँ भोजन की कमी हो चुकी थी। भविष्य का कोई अनुमान नहीं लगा सकता था, लेकिन फिलहाल, कम से कम, जानवर और इंसान दोनों ही भीषण भूख के दर्द से बच रहे थे।
वह सोच रहा था कि उसकी पत्नी और बेटी कैसी होंगी। अगर सब योजना के मुताबिक होता, तो उनकी ट्रेन अब तक पुसान पहुँच जानी चाहिए थी। वहाँ उसका चचेरा भाई रहता था जो रेलवे कंपनी में काम करता था, और जब तक पशु चिकित्सक की पत्नी और बेटी जापान ले जाने वाले जहाज पर सवार नहीं हो जातीं, तब तक वे अपने चचेरे भाई के परिवार के साथ रहेंगी। डॉक्टर को सुबह उठते ही उन्हें देखने की कमी खल रही थी। नाश्ता बनाते समय उनकी चहचहाहट भरी आवाज़ें सुनने की कमी खल रही थी। घर में सन्नाटा पसरा हुआ था। यह अब वह घर नहीं था जिससे वह प्यार करता था, वह जगह जहाँ वह रहता था। फिर भी, उसी समय, इस खाली सरकारी आवास में अकेले रह जाने पर उसे एक अजीब सी खुशी महसूस हो रही थी; अब वह अपने शरीर और हड्डियों में भाग्य की अटल शक्ति को महसूस कर पा रहा था।
भाग्य ही डॉक्टर की अपनी जानलेवा बीमारी थी। बचपन से ही उन्हें यह अजीबोगरीब एहसास था कि "मैं एक व्यक्ति के रूप में किसी बाहरी शक्ति के नियंत्रण में जी रहा हूँ।" शायद इसका कारण उनके दाहिने गाल पर बना गहरा नीला निशान था। बचपन में ही उन्हें यह निशान, यह छाप, जो केवल उन्हीं के शरीर पर थी, किसी और के लिए नहीं, बहुत नापसंद थी। जब भी दूसरे बच्चे उन्हें चिढ़ाते या

अजनबी उन्हें घूरते, तो उनका मन करता कि वे मर जाएँ। काश, वे चाकू से अपने शरीर का वह हिस्सा काट पाते! लेकिन जैसे-जैसे वे बड़े हुए, उन्होंने धीरे-धीरे अपने चेहरे पर बने उस निशान को चुपचाप स्वीकार कर लिया जो कभी नहीं मिटेगा। और शायद यही एक कारण था जिसने भाग्य से जुड़े हर मामले में उनके समर्पण के रवैये को आकार दिया।
ज़्यादातर समय, भाग्य की शक्ति एक शांत और नीरस धुन की तरह चलती रहती थी, जो उसके जीवन के किनारों को ही रंग देती थी। उसे शायद ही कभी इसके अस्तित्व का एहसास होता था। लेकिन कभी-कभी, जब संतुलन बिगड़ जाता (और इस संतुलन को कौन नियंत्रित करता है, यह वह कभी नहीं जान पाया: उन बदलावों में उसे कोई नियमितता नहीं मिली), तो शक्ति बढ़ जाती, और वह लगभग लकवाग्रस्त होकर हार मान लेता। ऐसे समय में, उसके पास सब कुछ त्यागकर खुद को प्रवाह के हवाले करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता था। वह अपने अनुभव से जानता था कि वह जो कुछ भी करे या सोचे, उससे स्थिति कभी नहीं बदलेगी। भाग्य अपना हिस्सा मांगेगा, और जब तक उसे वह हिस्सा नहीं मिल जाता, तब तक वह कभी दूर नहीं जाएगा। वह इस बात पर पूरे दिल से विश्वास करता था।
ऐसा नहीं था कि वह निष्क्रिय स्वभाव का था; वास्तव में, वह अधिकांश लोगों से कहीं अधिक दृढ़ निश्चयी था और अपने निर्णयों को हमेशा पूरा करता था। अपने पेशे में वह उत्कृष्ट था: असाधारण कौशल वाला पशुचिकित्सक और अथक शिक्षक। शायद उसमें रचनात्मकता की कमी रही हो, लेकिन विद्यालय में उसके हमेशा उच्च अंक आते थे और उसे कक्षा का नेता चुना जाता था। कार्यस्थल पर भी, अन्य लोग उसकी श्रेष्ठता को स्वीकार करते थे और उसके कनिष्ठ हमेशा उसका आदर करते थे। वह निश्चित रूप से भाग्यवादी नहीं था, जैसा कि

अधिकांश लोग इस शब्द का प्रयोग करते हैं। फिर भी, अपने जीवन में उसने कभी भी इस बात का अटूट विश्वास नहीं किया कि कोई निर्णय केवल उसी ने लिया है। उसे हमेशा यह आभास होता था कि भाग्य ने उसे अपने लाभ के लिए निर्णय लेने को विवश किया है। कभी-कभी, अपनी स्वतंत्र इच्छा से कोई निर्णय लेने की क्षणिक संतुष्टि के बाद, वह देखता था कि चीजें पहले से ही किसी बाहरी शक्ति द्वारा तय की जा चुकी थीं, जो चतुराई से स्वतंत्र इच्छा का आवरण धारण किए हुए थी, मानो उसके रास्ते में फेंका गया एक चारा मात्र था ताकि उसे उसी तरह व्यवहार करने के लिए लुभाया जा सके जैसा उससे अपेक्षित था। केवल उन्हीं मामलों में उसने पूर्ण स्वतंत्रता से निर्णय लिए थे जो तुच्छ थे और गहन विचार करने पर पता चलता था कि उनमें निर्णय लेने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। वह स्वयं को एक नाममात्र का राष्ट्राध्यक्ष समझता था जो राज्य में वास्तविक सत्ता रखने वाले शासक (मंचुकुओ के इस कठपुतली साम्राज्य के सम्राट की तरह) के आदेश पर केवल दस्तावेजों पर मुहर लगाता था। डॉक्टर अपनी पत्नी और बच्चे से बहुत प्यार करते थे। वे उनके जीवन की सबसे अद्भुत चीज़ थे—खासकर उनकी बेटी, जिसके लिए उनका प्यार जुनून की हद तक था। उनके लिए वे खुशी-खुशी अपनी जान दे देते। वास्तव में, उन्होंने कई बार ऐसा करने की कल्पना की थी, और उनके लिए उन्होंने जो मृत्यु सही थी, वह उन्हें सबसे मधुर मृत्यु लगती थी। लेकिन साथ ही, वे अक्सर काम से घर लौटते और अपनी पत्नी और बेटी को देखकर सोचते, "ये लोग तो मुझसे अलग इंसान हैं, जिनसे मेरा कोई संबंध नहीं है।" वे कुछ और ही थे, कुछ ऐसा जिसके बारे में उन्हें कोई सच्चा ज्ञान नहीं था। कुछ ऐसा जो डॉक्टर से बहुत दूर कहीं विद्यमान था। और जब भी उन्हें ऐसा महसूस होता, उनके मन में यह विचार आता कि उन्होंने खुद इन दोनों को नहीं

चुना था—लेकिन फिर भी वे उनसे बिना किसी संकोच के, बिना किसी शर्त के प्यार करते थे। डॉक्टर के लिए यह एक बड़ा विरोधाभास था, एक अनसुलझा सवाल, एक विशाल जाल जो उनके जीवन में बिछाया गया था। चिड़ियाघर में अपने निवास स्थान पर अकेले रह जाने के बाद, उसकी दुनिया कहीं अधिक सरल और समझने में कहीं अधिक आसान हो गई। अब उसे केवल जानवरों की देखभाल के बारे में सोचना था। उसकी पत्नी और बेटी जा चुकी थीं। फिलहाल उनके बारे में सोचने की कोई ज़रूरत नहीं थी। पशुचिकित्सक और उसका भाग्य अब अकेले एक साथ हो सकते थे।
और अगस्त 1945 में ह्सिन-चिंग शहर पर सबसे ऊपर भाग्य का ही राज था, भाग्य की विशाल शक्ति का—न कि क्वांगतुंग सेना का, न सोवियत सेना का, न कम्युनिस्टों या कुओ-मिंतांग की सेनाओं का। हर कोई देख सकता था कि यहाँ भाग्य ही शासक था और किसी व्यक्ति की इच्छा का कोई महत्व नहीं था। भाग्य ने ही एक दिन पहले हाथियों को बख्श दिया था और बाघों, तेंदुओं, भेड़ियों और भालुओं को दफना दिया था। अब वह किसे दफनाएगा और किसे बख्शेगा? ये ऐसे प्रश्न थे जिनका उत्तर कोई नहीं दे सकता था।
डॉक्टर सुबह जानवरों को खाना खिलाने की तैयारी के लिए अपने घर से निकले। उन्हें लगा था कि अब कोई काम पर नहीं आएगा, लेकिन उन्होंने अपने दफ्तर में दो चीनी लड़कों को इंतज़ार करते हुए पाया। वे उन्हें नहीं जानते थे। वे तेरह-चौदह साल के थे, सांवले और दुबले-पतले, और उनकी आंखें जानवरों जैसी चंचल थीं। एक लड़के ने कहा, "उन्होंने हमें आपकी मदद करने के लिए कहा है।" डॉक्टर ने सिर हिलाया। उन्होंने उनके नाम पूछे, लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। उनके चेहरे भावहीन थे, मानो उन्होंने सवाल सुना ही न हो। ये लड़के स्पष्ट रूप से उन चीनी लोगों द्वारा भेजे गए थे जो

एक दिन पहले तक यहां काम कर रहे थे। उन लोगों ने शायद आने वाले बदलावों की आशंका में जापानियों से सारे संपर्क तोड़ दिए थे, लेकिन उन्हें लगा था कि बच्चों को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा। लड़कों को सद्भावना के प्रतीक के रूप में भेजा गया था। कामगार जानते थे कि डॉक्टर अकेले जानवरों की देखभाल नहीं कर सकते।
पशुचिकित्सक ने प्रत्येक लड़के को दो बिस्कुट दिए और फिर उन्हें जानवरों को खाना खिलाने में मदद करने के लिए काम पर लगा दिया। वे एक खच्चर से खींची जाने वाली गाड़ी को एक पिंजरे से दूसरे पिंजरे तक ले जाते, प्रत्येक जानवर को उसका विशेष भोजन देते और उसका पानी बदलते। पिंजरों की सफाई करना उनके बस की बात नहीं थी। वे बस जल्दी से पानी से मल-मूत्र धो सकते थे। आखिर चिड़ियाघर बंद था: अगर थोड़ी बदबू भी आती तो कोई शिकायत नहीं करता।
दरअसल, बाघों, तेंदुओं, भालुओं और भेड़ियों की अनुपस्थिति ने काम को काफी आसान बना दिया। बड़े मांसाहारी जानवरों की देखभाल करना एक बड़ा और खतरनाक काम था। डॉक्टर को उनके खाली पिंजरों के पास से गुजरते समय बहुत बुरा लगा, लेकिन इस काम से मुक्ति मिलने पर उन्हें राहत भी मिली।
उन्होंने सुबह आठ बजे काम शुरू किया और दस बजे के बाद खत्म किया। फिर लड़के बिना कुछ कहे गायब हो गए। पशुचिकित्सक कड़ी शारीरिक मेहनत से थक गया था। वह वापस कार्यालय गया और चिड़ियाघर के निदेशक को बताया कि जानवरों को खाना खिला दिया गया है।

•

दोपहर से ठीक पहले, युवा लेफ्टिनेंट उन्हीं आठ सैनिकों के साथ चिड़ियाघर लौट आया, जिन्हें वह एक दिन पहले अपने साथ लाया था। पूरी तरह से हथियारों से लैस होकर, वे ऐसे धातु की खनक के साथ चल रहे थे जो उनके आने से बहुत पहले ही सुनाई दे रही थी। उनकी कमीज़ें फिर से पसीने से काली हो चुकी थीं, और पेड़ों में झींगुर फिर से चीख रहे थे। लेकिन आज वे जानवरों को मारने नहीं आए थे। लेफ्टिनेंट ने निदेशक को सलाम किया और कहा, "हमें चिड़ियाघर में उपलब्ध गाड़ियों और भार ढोने वाले जानवरों की वर्तमान स्थिति जानने की आवश्यकता है।" निदेशक ने उन्हें बताया कि उनके पास केवल एक खच्चर और एक गाड़ी है। उन्होंने कहा, "हमने दो सप्ताह पहले अपना एकमात्र ट्रक और दो घोड़े दान कर दिए थे।" लेफ्टिनेंट ने सिर हिलाया और घोषणा की कि वह क्वांगतुंग सेना मुख्यालय के आदेशों के अनुसार तुरंत खच्चर और गाड़ी पर कब्ज़ा कर लेंगे।
“ज़रा रुकिए,” पशुचिकित्सक ने बीच में टोकते हुए कहा। “हमें जानवरों को दिन में दो बार खिलाने के लिए इनकी ज़रूरत है। हमारे सभी स्थानीय लोग गायब हो गए हैं। उस खच्चर और गाड़ी के बिना हमारे जानवर भूख से मर जाएँगे। इनके होने के बावजूद भी हम मुश्किल से ही काम चला पा रहे हैं।”
“हम सब किसी तरह से काम चला रहे हैं, सर,” लाल आँखों और घनी दाढ़ी वाले लेफ्टिनेंट ने कहा। “हमारी पहली प्राथमिकता शहर की रक्षा करना है। ज़रूरत पड़ने पर आप जानवरों को पिंजरों से बाहर निकाल सकते हैं। हमने खतरनाक मांसाहारी जानवरों का ध्यान रखा है। बाकी जानवरों से कोई सुरक्षा खतरा नहीं है। ये सैन्य आदेश हैं, सर। आपको बस अपने हिसाब से काम करना होगा।”

बातचीत को बीच में ही रोकते हुए, लेफ्टिनेंट ने अपने आदमियों को खच्चर और गाड़ी ले जाने का आदेश दिया। उनके जाने के बाद, पशुचिकित्सक और निदेशक ने एक-दूसरे को देखा। निदेशक ने अपनी चाय की चुस्की ली, सिर हिलाया और कुछ नहीं कहा।
चार घंटे बाद, सैनिक खच्चर और गाड़ी लेकर वापस आए। गाड़ी में रखे सामान को एक गंदी तिरपाल से ढका गया था। खच्चर हांफ रहा था, दोपहर की गर्मी और बोझ के कारण उसकी खाल से झाग निकल रहा था। आठ सैनिक चार चीनी पुरुषों को संगीनों की नोक पर अपने आगे ले जा रहे थे—लगभग बीस वर्ष के युवा, बेसबॉल की वर्दी पहने हुए और उनके हाथ पीछे बंधे हुए थे। उनके चेहरों पर पड़े काले-नीले निशानों से स्पष्ट था कि उन्हें बुरी तरह पीटा गया था। एक व्यक्ति की दाहिनी आंख लगभग सूजी हुई थी, और दूसरे के खून बहते होंठों ने उसकी बेसबॉल शर्ट को चमकीले लाल रंग से रंग दिया था। शर्ट के सामने कुछ भी नहीं लिखा था, लेकिन छोटे-छोटे आयताकार निशान थे जहां से नाम के पैच फाड़ दिए गए थे। उनकी पीठ पर 1, 4, 7 और 9 नंबर लिखे थे। पशु चिकित्सक यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि संकट के ऐसे समय में चार युवा चीनी पुरुष बेसबॉल की वर्दी क्यों पहने हुए थे, या जापानी सैनिकों द्वारा उन्हें इतनी बुरी तरह क्यों पीटा गया और यहां तक घसीट कर लाया गया था। यह दृश्य किसी अलौकिक चीज़ जैसा लग रहा था—जैसे किसी मानसिक रोगी द्वारा बनाया गया चित्र हो।
लेफ्टिनेंट ने चिड़ियाघर के निदेशक से पूछा कि क्या उनके पास कोई कुल्हाड़ी या फावड़ा है जिसे वे इस्तेमाल कर सकें। युवा अधिकारी पहले से भी ज़्यादा पीला और थका हुआ लग रहा था। पशुचिकित्सक उसे और उसके आदमियों को कार्यालय के पीछे बने औजारों के शेड में ले गया। लेफ्टिनेंट ने अपने आदमियों के लिए

“पहले हम यहाँ एक बड़ा गड्ढा खोदते हैं,” लेफ्टिनेंट ने मानो खुद से कहते हुए कहा। वह खड़ा हुआ और अपनी कमीज़ की जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला। एक सिगरेट होठों के बीच रखकर उसने डॉक्टर को भी एक सिगरेट दी और फिर दोनों को माचिस से जला लिया।
दोनों खामोशी को भरने के लिए सिगरेट पीने में मग्न हो गए। लेफ्टिनेंट ने फिर से अपने जूते से ज़मीन खोदना शुरू किया। उसने ज़मीन पर एक तरह का रेखाचित्र बनाया और फिर उसे मिटा दिया।
आखिर में उसने पशुचिकित्सक से पूछा, “आपका जन्म कहाँ हुआ था?” डॉक्टर ने कहा, "कनागावा में। ओफुना नाम के एक कस्बे में, समुद्र के किनारे।"
लेफ्टिनेंट ने सिर हिलाया।
“और आपका जन्म कहाँ हुआ था?” पशुचिकित्सक ने पूछा।
जवाब देने के बजाय, लेफ्टिनेंट ने अपनी आँखें सिकोड़ीं और अपनी उंगलियों के बीच से उठते धुएँ को देखने लगा। नहीं, किसी सैनिक से सवाल पूछना कभी फ़ायदेमंद नहीं होता, पशुचिकित्सक ने खुद से फिर कहा। उन्हें सवाल पूछना तो पसंद होता है, लेकिन वे कभी जवाब नहीं देते। वे सचमुच में आपसे बात तक नहीं करेंगे।
“वहाँ एक फिल्म स्टूडियो है,” लेफ्टिनेंट ने कहा।
डॉक्टर को यह समझने में कुछ सेकंड लगे कि लेफ्टिनेंट ओफुना के बारे में बात कर रहा था। "हाँ, सही है। एक बड़ा स्टूडियो। हालाँकि, मैं कभी अंदर नहीं गया।"
लेफ्टिनेंट ने सिगरेट का बचा हुआ टुकड़ा ज़मीन पर गिरा दिया और उसे मसल दिया। “आशा है आप वहाँ सुरक्षित पहुँच जाएँगे,” उन्होंने कहा। “ज़ाहिर है, यहाँ से जापान के बीच एक महासागर है। शायद हम सब यहीं मर जाएँगे।” बोलते समय उनकी नज़रें ज़मीन पर टिकी हुई थीं। “बताइए, डॉक्टर, क्या आपको मौत से डर लगता है?”

कुछ देर सोचने के बाद पशुचिकित्सक ने कहा, "मुझे लगता है कि यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपकी मृत्यु कैसे होती है।" लेफ्टिनेंट ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और पशुचिकित्सक की ओर ऐसे देखा मानो उसकी जिज्ञासा जागृत हो गई हो। जाहिर तौर पर वह किसी और जवाब की उम्मीद कर रहा था। "आप सही कह रहे हैं," उसने कहा। "यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपकी मृत्यु कैसे होती है।"
दोनों कुछ देर तक चुप रहे। लेफ्टिनेंट को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वह खड़े-खड़े ही सो जाएगा। वह स्पष्ट रूप से थका हुआ था। तभी एक बड़ा सा टिड्डा पक्षी की तरह उनके ऊपर से उड़ता हुआ गया और पंखों की फड़फड़ाहट की तेज़ आवाज़ के साथ दूर घास के एक झुंड में गायब हो गया। लेफ्टिनेंट ने अपनी घड़ी देखी।
“अब शुरू करने का समय आ गया है,” उसने किसी से विशेष रूप से नहीं कहा। फिर उसने पशुचिकित्सक से बात की। “मैं चाहता हूँ कि आप थोड़ी देर यहीं रुकें। हो सकता है मुझे आपसे एक काम करवाना पड़े।”
पशुचिकित्सक ने सिर हिलाया।

•

सैनिक चीनी कैदियों को जंगल में बने खुले स्थान पर ले गए और उनके हाथ खोल दिए। कॉर्पोरल ने बेसबॉल बैट से ज़मीन पर एक बड़ा गोला बनाया—हालाँकि एक सैनिक के पास बैट क्यों होगा, यह पशुचिकित्सक के लिए एक और रहस्य था—और कैदियों को जापानी भाषा में आदेश दिया कि वे गोले के आकार का एक गहरा गड्ढा खोदें। बेसबॉल की वर्दी पहने चारों सैनिक कुदाल और फावड़े लेकर चुपचाप खुदाई करने लगे। आधी टुकड़ी उनकी रखवाली कर रही थी, जबकि बाकी आधी पेड़ों के नीचे आराम कर रही थी। ऐसा लग रहा था कि उन्हें नींद की सख्त ज़रूरत थी; जैसे ही वे पूरी वर्दी में ज़मीन पर

गिरे, वे खर्राटे लेने लगे। जो चार सैनिक जाग रहे थे, वे पास में खुदाई पर नज़र रख रहे थे, राइफलें उनकी कमर पर टिकी थीं, संगीनें लगी हुई थीं, तुरंत इस्तेमाल के लिए तैयार। लेफ्टिनेंट और कॉर्पोरल बारी-बारी से काम की निगरानी कर रहे थे और पेड़ों के नीचे झपकी ले रहे थे।
चार चीनी कैदियों को बारह फीट चौड़ा और इतना गहरा गड्ढा खोदने में एक घंटे से भी कम समय लगा कि पानी उनकी गर्दन तक आ जाए। उनमें से एक ने जापानी भाषा में पानी मांगा। लेफ्टिनेंट ने सिर हिलाया और एक सैनिक बाल्टी भर पानी ले आया। चारों चीनी बारी- बारी से बाल्टी से पानी निकालकर गटकने लगे। उन्होंने लगभग पूरी बाल्टी का पानी पी लिया। उनकी वर्दी खून, कीचड़ और पसीने से काली हो गई थी।
लेफ्टिनेंट ने दो सैनिकों को गाड़ी खींचकर गड्ढे के पास लाने को कहा। कॉर्पोरल ने तिरपाल हटाया तो गाड़ी में चार मृत व्यक्ति पड़े हुए दिखाई दिए। उन्होंने कैदियों जैसी ही बेसबॉल की वर्दी पहनी हुई थी और वे भी स्पष्ट रूप से चीनी थे। ऐसा लग रहा था कि उन्हें गोली मारी गई थी और उनकी वर्दी पर काले खून के धब्बे लगे हुए थे। बड़ी-बड़ी मक्खियाँ लाशों पर मंडराने लगी थीं। खून के सूखने के तरीके को देखकर डॉक्टर ने अनुमान लगाया कि उनकी मृत्यु लगभग चौबीस घंटे पहले हुई थी।
लेफ्टिनेंट ने गड्ढा खोदने वाले चारों चीनी सैनिकों को शवों को उसमें फेंकने का आदेश दिया। बिना कुछ कहे, भावहीन चेहरों के साथ, सैनिकों ने शवों को गाड़ी से निकाला और एक-एक करके गड्ढे में फेंक दिया। प्रत्येक शव गड्ढे में एक धीमी सी आवाज़ के साथ गिरा। मृतकों की वर्दी पर 2, 5, 6 और 8 नंबर लिखे थे। पशुचिकित्सक ने उन्हें याद कर लिया।

जब चारों चीनी सैनिकों ने शवों को गड्ढे में फेंकना समाप्त कर दिया, तो सैनिकों ने प्रत्येक व्यक्ति को पास के एक पेड़ से बांध दिया। लेफ्टिनेंट ने अपनी कलाई ऊपर उठाई और गंभीर भाव से अपनी घड़ी देखी। फिर वह कुछ देर तक आकाश में एक बिंदु की ओर देखता रहा, मानो वहाँ कुछ खोज रहा हो। वह किसी स्टेशन मास्टर की तरह लग रहा था जो प्लेटफार्म पर खड़ा होकर एक ऐसी ट्रेन का इंतजार कर रहा हो जो बहुत देर से आ रही हो। लेकिन वास्तव में वह कुछ भी नहीं देख रहा था। वह बस कुछ समय बीतने का इंतजार कर रहा था। ऐसा करने के बाद, वह कॉर्पोरल की ओर मुड़ा और उसे चार कैदियों में से तीन (नंबर 1, 7 और 9) को संगीन से मारने का संक्षिप्त आदेश दिया।
तीन सैनिकों को चुना गया और वे तीनों चीनी सैनिकों के सामने अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो गए। सैनिक उन लोगों से भी ज़्यादा पीले दिख रहे थे जिन्हें वे मारने वाले थे। चीनी सैनिक इतने थके हुए लग रहे थे कि उन्हें किसी चीज़ की उम्मीद नहीं थी। कॉर्पोरल ने तीनों को सिगरेट पीने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। उसने अपनी सिगरेट वापस अपनी कमीज़ की जेब में रख ली। पशुचिकित्सक को अपने साथ लेकर लेफ्टिनेंट अन्य सैनिकों से कुछ दूरी पर जाकर खड़ा हो गया। उसने कहा, "यह देखो। यह मरने का एक और तरीका है।"
पशुचिकित्सक ने सिर हिलाया। उसने सोचा, लेफ्टिनेंट मुझसे नहीं कह रहा है। वह खुद से कह रहा है।
लेफ्टिनेंट ने शांत स्वर में समझाया, “उन्हें गोली मारना सबसे सरल और कारगर तरीका होगा, लेकिन हमें आदेश है कि एक भी गोली बर्बाद न करें—और चीनी सैनिकों को मारने में तो बिल्कुल भी नहीं। हमें अपना गोला-बारूद रूसियों के लिए बचाकर रखना है।

शायद हम उन्हें संगीन से मार देंगे, लेकिन यह उतना आसान नहीं जितना लगता है। वैसे, डॉक्टर, क्या आपको सेना में संगीन चलाना सिखाया गया था?”
डॉक्टर ने बताया कि घुड़सवार सेना के पशु चिकित्सक होने के नाते, उन्हें संगीन का उपयोग करने का प्रशिक्षण नहीं दिया गया था।
“अच्छा, संगीन से किसी आदमी को मारने का सही तरीका ये है: पहले उसे पसलियों के नीचे घुसाओ—यहाँ।” लेफ्टिनेंट ने अपने धड़ की ओर इशारा किया, पेट के ठीक ऊपर। “फिर संगीन की नोक को उसके अंदर एक बड़े, गहरे घेरे में घुमाओ, ताकि उसके अंग बिखर जाएँ। फिर ऊपर की ओर वार करके दिल को छेद दो। तुम बस संगीन घुसाकर उसके मरने की उम्मीद नहीं कर सकते। हम सैनिकों को ये सिखाया जाता है। संगीनों से आमने-सामने की लड़ाई, रात के हमलों के साथ-साथ शाही सेना का गौरव है—हालाँकि मुख्य रूप से, ये टैंकों, विमानों और तोपों से कहीं ज़्यादा सस्ती है। बेशक, तुम जितना चाहो उतना अभ्यास कर लो, लेकिन आखिर में तुम जिसे चाकू मार रहे हो वो एक पुआल की गुड़िया है, कोई ज़िंदा इंसान नहीं। वो न तो खून बहाता है, न चीखता है, न ही उसकी आँतें ज़मीन पर बिखरती हैं। इन सैनिकों ने असल में कभी किसी इंसान को इस तरह नहीं मारा है। और न ही मैंने।”
लेफ्टिनेंट ने कॉर्पोरल की ओर देखा और उसे सिर हिलाकर इशारा किया। कॉर्पोरल ने तीनों सैनिकों को आदेश दिया, जो तुरंत सावधान मुद्रा में खड़े हो गए। फिर वे आधा कदम पीछे हटे और अपनी संगीनें निकाल लीं, हर एक ने अपनी संगीन अपने कैदी की ओर तान रखी थी। उन युवकों में से एक (नंबर 7) ने चीनी भाषा में कुछ बुदबुदाया जो गाली जैसा लग रहा था और चुनौती भरे अंदाज़ में

थूका—जो ज़मीन पर तो नहीं गिरा बल्कि उसकी बेसबॉल वर्दी के सामने वाले हिस्से पर टपक गया।
अगले आदेश की आवाज़ सुनते ही तीनों सैनिकों ने चीनी सैनिकों पर अपनी संगीनें ज़बरदस्त ताकत से गड़ा दीं। फिर, जैसा कि लेफ्टिनेंट ने कहा था, उन्होंने संगीनों के ब्लेड को इस तरह घुमाया कि उनके आंतरिक अंग चीर पड़ गए, और फिर उनकी नोकों को ऊपर की ओर धकेल दिया। चीनी सैनिकों की चीखें बहुत तेज़ नहीं थीं— चीखों से ज़्यादा गहरी सिसकियों जैसी थीं, मानो वे अपने शरीर में बची हुई सारी साँस एक ही छेद से बाहर निकाल रहे हों। सैनिकों ने अपनी संगीनें निकालीं और पीछे हट गए। कॉर्पोरल ने फिर से आदेश दिया, और सैनिकों ने ठीक पहले की तरह ही प्रक्रिया दोहराई—चाकू मारना, घुमाना, ऊपर की ओर धकेलना, और संगीनें निकालना। पशुचिकित्सक सुन्न होकर चुपचाप देखता रहा, उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वह दो हिस्सों में बँट रहा हो। वह एक ही समय में चाकू मारने वाला और चाकू से घायल दोनों बन गया था। वह अपने शिकार के शरीर में संगीन के घुसने के प्रभाव और अपने आंतरिक अंगों के टुकड़े-टुकड़े होने के दर्द दोनों को महसूस कर सकता था।
चीनी सैनिकों को मरने में जितना समय लगा, डॉक्टर ने कल्पना भी नहीं की थी। उनके क्षत-विक्षत शरीरों से ज़मीन पर भारी मात्रा में खून बह रहा था, लेकिन उनके अंग छलनी होने के बावजूद, वे कुछ देर तक हल्के-हल्के फड़फड़ाते रहे। कॉर्पोरल ने अपनी संगीन से उन रस्सियों को काटा जिनसे सैनिक पेड़ों से बंधे थे, और फिर उसने उन सैनिकों की मदद ली जिन्होंने हत्या में भाग नहीं लिया था, ताकि वे गिरे हुए शवों को गड्ढे तक घसीटकर ले जाएं और उन्हें उसमें फेंक दें। इन शवों के गिरने पर भी एक धीमी सी आवाज़ आई,

“क्या आप बेसबॉल खेलते हैं?” लेफ्टिनेंट ने पशु चिकित्सक से पूछा।
"बचपन में हर समय।"
"अब बहुत बड़े हो गए हो?"
"मेरे लिए अब और बेसबॉल नहीं," पशुचिकित्सक ने कहा, और वह पूछने ही वाला था, "आपका क्या ख्याल है, लेफ्टिनेंट?" तभी उसने अपने शब्द निगल लिए।
"मुझे आदेश दिया गया है कि मैं इस आदमी को उसी बल्ले से पीट-पीटकर मार डालूँ जिसका इस्तेमाल उसने किया था," लेफ्टिनेंट ने बल्ले की नोक से जमीन पर थपथपाते हुए रूखे स्वर में कहा। जैसे को तैसा। सच कहूँ तो, मुझे ये आदेश बिलकुल बकवास लगता है। इन लोगों को मारने से आखिर क्या फायदा? हमारे पास अब कोई विमान नहीं बचा, कोई युद्धपोत नहीं, हमारे सबसे अच्छे सैनिक मारे जा चुके हैं। किसी खास तरह के नए बम ने पलक झपकते ही हिरोशिमा शहर को तबाह कर दिया। या तो हमें मंचूरिया से खदेड़ दिया जाएगा या हम सब मारे जाएँगे, और चीन फिर से चीनियों का हो जाएगा। हम पहले ही बहुत सारे चीनियों को मार चुके हैं, और कुछ और लाशें जोड़ने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन आदेश तो आदेश होते हैं। मैं एक सैनिक हूँ, और मुझे आदेशों का पालन करना होगा। हमने कल बाघों और तेंदुओं को मारा था, और आज हमें इन लोगों को मारना है। तो ज़रा ध्यान से देखिए, डॉक्टर साहब। ये लोगों के मरने का एक और तरीका है। आप डॉक्टर हैं, तो शायद आपको चाकू, खून और आंतें देखने की आदत होगी, लेकिन आपने शायद कभी किसी को बेसबॉल के बल्ले से पीट-पीटकर मारते नहीं देखा होगा।
लेफ्टिनेंट ने कॉर्पोरल को चौथे खिलाड़ी, क्लीनअप बैटर को, होल के किनारे लाने का आदेश दिया। एक बार फिर उसके हाथ पीछे बांध

दिए गए, फिर उसकी आंखों पर पट्टी बांधकर उसे जमीन पर घुटने टेकने को कहा गया। वह लंबा-चौड़ा, मजबूत शरीर वाला युवक था, जिसकी भुजाएं ज्यादातर लोगों की जांघों जितनी चौड़ी थीं। लेफ्टिनेंट ने एक जवान सिपाही को बुलाया और उसे बल्ला थमा दिया। "इसे इससे मार डालो," उसने कहा। जवान सिपाही ने सावधान की मुद्रा में खड़े होकर सैल्यूट किया और बल्ला ले लिया, लेकिन बल्ला हाथ में लेते ही वह वहीं खड़ा रह गया, मानो अवाक हो गया हो। उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि बेसबॉल के बल्ले से एक चीनी आदमी को पीट-पीटकर मार कैसे डाला जा सकता है।
"क्या तुमने कभी बेसबॉल खेला है?" लेफ्टिनेंट ने युवा सैनिक से पूछा (वही सैनिक जिसकी खोपड़ी को अंततः इरकुत्स्क के पास एक खदान में सोवियत गार्ड द्वारा फावड़े से फोड़ दिया जाएगा)। “जी नहीं, बिल्कुल नहीं,” सिपाही ने ऊँची आवाज़ में जवाब दिया। होक्काइडो का वो गाँव जहाँ उसका जन्म हुआ था और मंचूरिया का वो गाँव जहाँ वो पला-बढ़ा था, दोनों ही इतने गरीब थे कि किसी भी परिवार के पास बेसबॉल या बैट जैसी विलासिता की चीज़ें खरीदने की हैसियत नहीं थी। उसने अपना बचपन खेतों में दौड़ते-भागते, मक्खियाँ पकड़ते और डंडों से तलवारबाज़ी का खेल खेलते हुए बिताया था। उसने अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी बेसबॉल नहीं खेला था और न ही कभी कोई खेल देखा था। ये पहली बार था जब उसने बैट पकड़ा था।
लेफ्टिनेंट ने उसे बल्ला पकड़ने का तरीका दिखाया और स्विंग की बुनियादी बातें सिखाईं, खुद भी कुछ बार करके दिखाया। “देखा? सारा खेल कूल्हों का है,” उसने दांत भींचते हुए कहा। “बैकस्विंग से शुरू करते हुए, कमर से नीचे की ओर मुड़ो। बल्ले का अगला हिस्सा अपने आप आगे बढ़ता है। समझे? अगर तुम बल्ले को घुमाने पर

ज्यादा ध्यान दोगे, तो सारा काम तुम्हारे हाथ करेंगे और ताकत कम हो जाएगी। कूल्हों से घुमाओ।”
सिपाही को लेफ्टिनेंट के निर्देश पूरी तरह समझ नहीं आए, लेकिन उसने आदेशानुसार अपना भारी सामान उतार दिया और कुछ देर तक अभ्यास किया। सब उसे देख रहे थे। लेफ्टिनेंट ने सिपाही के हाथों पर हाथ रखकर उसकी पकड़ ठीक करने में मदद की। वह एक अच्छा शिक्षक था। थोड़ी ही देर में, सिपाही का वार, हालांकि थोड़ा अटपटा था, हवा में लहराने लगा। कौशल की कमी को युवा सिपाही ने शारीरिक शक्ति से पूरा कर लिया था, क्योंकि उसने अपना पूरा जीवन खेत में काम करते हुए बिताया था।
“बस इतना काफी है,” लेफ्टिनेंट ने अपनी टोपी से माथे से पसीना पोंछते हुए कहा। “ठीक है, अब एक ही झटके में साफ-सुथरा वार करने की कोशिश करो। उसे तकलीफ मत होने दो।”
असल में वह कहना चाहता था, “मैं भी तुम्हारी तरह ये काम नहीं करना चाहता। भला इतनी बेवकूफी भरी बात कौन सोच सकता है? किसी को बेसबॉल बैट से मार डालना…” लेकिन एक अधिकारी कभी भी किसी सिपाही से ऐसी बात नहीं कह सकता।
सैनिक आँखों पर पट्टी बाँधे हुए चीनी व्यक्ति के पीछे जाकर खड़ा हो गया, जो ज़मीन पर घुटनों के बल बैठा था। जब सैनिक ने बल्ला उठाया, तो डूबते सूरज की तेज़ किरणों ने ज़मीन पर बल्ले की लंबी, मोटी छाया डाली। पशु चिकित्सक ने सोचा, यह कितना अजीब है! लेफ्टिनेंट सही कह रहा था: मैंने कभी किसी आदमी को बेसबॉल के बल्ले से मरते नहीं देखा। युवा सैनिक ने बल्ले को काफी देर तक हवा में उठाए रखा। डॉक्टर ने देखा कि उसका सिरा काँप रहा था। लेफ्टिनेंट ने सिपाही को सिर हिलाकर इशारा किया। गहरी सांस लेकर सिपाही ने बल्ले को पीछे की ओर घुमाया और पूरी ताकत से

चीनी कैडेट के सिर के पिछले हिस्से पर वार किया। उसने यह कमाल कर दिखाया। उसने ठीक वैसे ही कमर हिलाई जैसे लेफ्टिनेंट ने उसे सिखाया था, बल्ले की नोक सीधे उसके कान के पीछे लगी और वार पूरी तरह से सटीक था। खोपड़ी के चकनाचूर होने की एक धीमी सी आवाज आई। सिपाही ने कोई आवाज नहीं की। उसका शरीर एक पल के लिए अजीब सी मुद्रा में हवा में लटका रहा, फिर आगे की ओर गिर पड़ा। वह गाल के बल्ले से जमीन पर पड़ा था, एक कान से खून बह रहा था। वह हिला तक नहीं। लेफ्टिनेंट ने अपनी घड़ी देखी। बल्ला पकड़े हुए, युवा सिपाही मुंह खुला रखकर खाली जगह में घूर रहा था।
लेफ्टिनेंट एक ऐसा व्यक्ति था जो हर काम बड़ी सावधानी से करता था। उसने पूरे एक मिनट तक इंतजार किया। जब उसे यकीन हो गया कि वह युवक बिल्कुल भी हिल-डुल नहीं रहा है, तो उसने पशु चिकित्सक से कहा, "क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं और यह जांच कर सकते हैं कि वह सचमुच मर गया है?"
पशुचिकित्सक ने सिर हिलाया, जहाँ वह युवक लेटा हुआ था, वहाँ गया, घुटने टेके और उसकी आँखों पर बंधी पट्टी हटा दी। उस आदमी की आँखें चौड़ी खुली थीं, पुतलियाँ ऊपर की ओर मुड़ी हुई थीं, और उसके कान से चमकीला लाल खून बह रहा था। उसका आधा खुला मुँह अंदर फँसी हुई जीभ को दिखा रहा था। चोट के कारण उसकी गर्दन अजीब से कोण पर मुड़ गई थी। उस आदमी के नथुनों से खून के गाढ़े थक्के निकले थे, जिससे सूखी ज़मीन पर काले धब्बे बन गए थे। एक खास तौर पर चौकस—और बड़ी—मक्खी पहले ही अंडे देने के लिए उसके एक नथुने में घुस चुकी थी। यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह मर गया है, पशुचिकित्सक ने उस आदमी की कलाई पकड़ी और नब्ज़ जाँची। कोई नब्ज़ नहीं थी—निश्चित रूप से वहाँ नहीं जहाँ होनी चाहिए थी। उस युवा सैनिक ने बल्ले के एक ही वार से इस हट्टे-कट्टे आदमी की

जान ले ली थी—दरअसल, बल्ले का उसका पहला वार। पशुचिकित्सक ने लेफ्टिनेंट की ओर देखा और सिर हिलाकर संकेत दिया कि वह आदमी निस्संदेह मर चुका है। अपना निर्धारित कार्य पूरा करने के बाद, वह धीरे-धीरे अपनी पूरी ऊंचाई तक उठने लगा, तभी उसे लगा कि उसकी पीठ पर पड़ रही धूप की तीव्रता अचानक बढ़ गई है।
ठीक उसी क्षण, वर्दी नंबर 4 पहने युवा चीनी बल्लेबाज़ उठकर बैठ गया, मानो वह पूरी तरह जाग गया हो। बिना किसी झिझक या संकोच के— या कम से कम देखने वालों को तो ऐसा ही लगा—उसने डॉक्टर की कलाई पकड़ ली। यह सब पलक झपकते ही हो गया। पशु चिकित्सक समझ नहीं पा रहा था: यह आदमी मर चुका था, उसे पूरा यकीन था। लेकिन अब, मानो कहीं से अचानक आई जीवन की आखिरी बूंद के सहारे, वह आदमी डॉक्टर की कलाई को लोहे के शिकंजे की तरह कसकर पकड़े हुए था। पलकें पूरी तरह खुली हुई थीं, पुतलियाँ अभी भी ऊपर की ओर चमक रही थीं, वह आदमी गड्ढे में आगे की ओर गिर पड़ा, डॉक्टर को भी अपने साथ खींच ले गया। डॉक्टर उसके ऊपर गिर पड़ा और उसके वजन से उसकी एक पसली के टूटने की आवाज सुनी। फिर भी चीनी गेंदबाज़ ने उसकी कलाई को कसकर पकड़े रखा। सैनिकों ने यह सब होते देखा, लेकिन वे इतने स्तब्ध थे कि खड़े होकर देखने के अलावा कुछ नहीं कर सके। लेफ्टिनेंट सबसे पहले संभला और गड्ढे में कूद गया। उसने अपनी पिस्तौल कमरबंद से निकाली, उसका मुंह चीनी आदमी के सिर पर रखा और दो बार ट्रिगर दबाया। दो तीखी, एक के बाद एक चलने वाली आवाज़ें गूंजीं और आदमी की कनपटी में एक बड़ा काला छेद हो गया। अब उसकी जान पूरी तरह निकल चुकी थी, लेकिन फिर भी उसने डॉक्टर की कलाई नहीं छोड़ी। लेफ्टिनेंट घुटनों के बल बैठ गया और एक हाथ में पिस्तौल लिए, लाश की उंगलियों को एक-एक करके खोलने की बड़ी मेहनत से शुरू किया। पशु चिकित्सक उस गड्ढे में पड़ा रहा, चारों

लेकिन असल में, वह इनमें से कुछ भी नहीं देख रहा था। वह चाबी से चलने वाली चिड़िया की आवाज़ सुन रहा था। पिछली दोपहर की तरह, चिड़िया कहीं पेड़ पर थी, स्प्रिंग घुमाने जैसी चर्र-चर्र की आवाज़ कर रही थी। सिपाही ने ऊपर देखा, आवाज़ की दिशा का पता लगाने की कोशिश की, लेकिन उसे चिड़िया का कोई निशान नहीं दिखा। उसे गले में हल्की सी मतली महसूस हुई, हालांकि कल जैसी तेज़ नहीं थी।
जैसे ही उसने स्प्रिंग की आवाज़ सुनी, युवा सैनिक के सामने एक के बाद एक धुंधली छवियाँ उभरती और गायब होती दिखाई दीं। सोवियत संघ द्वारा निहत्थे किए जाने के बाद, युवा पेमास्टर लेफ्टिनेंट को चीनी सेना के हवाले कर दिया जाएगा और इन फाँसी की सजाओं में उसकी भूमिका के लिए उसे फाँसी दे दी जाएगी। कॉर्पोरल साइबेरिया के एक यातना शिविर में प्लेग से मर जाएगा: उसे एक क्वारंटाइन शेड में फेंक दिया जाएगा और मरने तक वहीं छोड़ दिया जाएगा, हालाँकि वास्तव में वह केवल कुपोषण से बेहोश हो गया था और उसे प्लेग नहीं हुआ था—कम से कम शेड में फेंके जाने से पहले तक तो नहीं। चेहरे पर निशान वाला पशु चिकित्सक एक साल बाद एक दुर्घटना में मर जाएगा। एक नागरिक होने के नाते, उसे सेना के साथ सहयोग करने के लिए सोवियत संघ द्वारा पकड़ लिया जाएगा और कठोर श्रम करने के लिए साइबेरिया के एक अन्य शिविर में भेज दिया जाएगा। वह साइबेरिया की एक कोयला खदान की गहरी खदान में काम कर रहा होगा जब बाढ़ उसे कई सैनिकों के साथ डुबो देगी। और मैं..., हाथों में बल्ला लिए युवा सैनिक ने सोचा, लेकिन वह अपना भविष्य नहीं देख पा रहा था। वह अपनी आँखों के सामने घट रही घटनाओं को भी नहीं देख पा रहा था। अब उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और चाबी से चलने वाले पक्षी की आवाज सुनने लगा।

फिर अचानक उसके मन में सागर का ख्याल आया—वही सागर जिसे उसने उस जहाज के डेक से देखा था जो उसे जापान से मंचूरिया लाया था। उसने पहले कभी सागर नहीं देखा था, और न ही उसके बाद कभी देखा। यह आठ साल पहले की बात थी। उसे नमकीन हवा की महक आज भी याद थी। सागर उसके जीवन की सबसे अद्भुत चीजों में से एक था—उसकी कल्पना से भी कहीं अधिक विशाल और गहरा। समय, स्थान और मौसम के अनुसार उसका रंग, आकार और रूप बदलता रहता था। यह उसके हृदय में गहरी उदासी जगाता था, और साथ ही उसे शांति और सुकून भी देता था। क्या वह इसे फिर कभी देख पाएगा? उसने अपनी पकड़ ढीली की और बल्ले को ज़मीन पर गिरने दिया। ज़मीन से टकराते ही एक सूखी सी आवाज़ आई। बल्ला छूटने के बाद उसे थोड़ी सी मतली महसूस हुई।
चाबी भरने वाली चिड़िया लगातार रोती रही, लेकिन उसकी आवाज कोई और नहीं सुन सका।

•

यहां "द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल #8" समाप्त हुआ।

दालचीनी की गुमशुदा कड़ियाँ

•

यहां "द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल #8" समाप्त हुआ।

•

मैंने दस्तावेज़ से बाहर निकलकर मूल मेनू पर जाकर "द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल #9" पर क्लिक किया। मैं कहानी का अगला भाग पढ़ना चाहता था। लेकिन नए दस्तावेज़ के बजाय, मुझे यह संदेश दिखाई दिया:
कोड R24 के आधार पर “द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल #9” तक पहुंच अस्वीकृत कर दी गई है।
कोई दूसरा दस्तावेज़ चुनें।
मैंने #10 को चुना, लेकिन परिणाम वही रहा।
कोड R24 के आधार पर “द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल #10” तक पहुंच अस्वीकृत। कृपया कोई अन्य दस्तावेज़ चुनें।
यही बात #11 के साथ भी हुई—और #8 समेत बाकी सभी दस्तावेज़ों के साथ भी। मुझे इस “कोड R24” के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, लेकिन यह साफ़ था कि अब यह हर चीज़ तक पहुँच को रोक रहा था। जिस समय मैंने “द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल #8” खोला था, उस समय शायद मैं उनमें से किसी एक तक पहुँच सकता था, लेकिन #8 को खोलकर बंद करने के बाद, अब सभी दस्तावेज़ों के दरवाज़े बंद हो गए थे। शायद यह प्रोग्राम एक समय में एक से ज़्यादा दस्तावेज़ों तक पहुँचने की अनुमति नहीं देता था।
मैं कंप्यूटर के सामने बैठा सोच रहा था कि आगे क्या करूं। लेकिन आगे करने के लिए मेरे पास कुछ था ही नहीं। यह एक सुव्यवस्थित दुनिया थी, जिसे सिनेमन ने अपने दिमाग में रचा था और जो उसके

सिद्धांतों के अनुसार चलती थी। मुझे इस खेल के नियम नहीं पता थे। मैंने कोशिश करना छोड़ दिया और कंप्यूटर बंद कर दिया।

•

निःसंदेह, “द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल #8” कहानी सिनेमन द्वारा सुनाई गई थी। उन्होंने “द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल” शीर्षक से सोलह कहानियाँ कंप्यूटर में डाली थीं, और संयोगवश मैंने उनमें से आठवीं कहानी चुनकर पढ़ी थी। एक कहानी की लंबाई को देखते हुए, अगर ऐसी सोलह कहानियों को छपवाया जाता तो एक मोटी किताब बन जाती।
“#8” का क्या अर्थ हो सकता है? शीर्षक में “इतिहास” शब्द का अर्थ शायद यह था कि कहानियाँ कालानुक्रमिक क्रम में लिखी गई थीं, #7 के बाद #8, #8 के बाद #9, इत्यादि। यह एक तर्कसंगत अनुमान था, भले ही यह पूरी तरह सच न हो। इन्हें किसी और क्रम में भी लिखा जा सकता था। ये वर्तमान से अतीत की ओर, उल्टे क्रम में भी लिखी जा सकती थीं। एक और साहसिक परिकल्पना यह हो सकती है कि ये एक ही कहानी के सोलह अलग-अलग संस्करण हैं जिन्हें समानांतर रूप से सुनाया गया है। किसी भी स्थिति में, मैंने जो कहानी चुनी थी, वह उस कहानी का अगला भाग थी जो सिनेमन की माँ, नटमेग ने मुझे अगस्त 1945 में ह्सिन-चिंग चिड़ियाघर में सैनिकों द्वारा जानवरों को मारने के बारे में सुनाई थी। यह कहानी उसी चिड़ियाघर में अगले दिन घटित हुई थी, और फिर से मुख्य पात्र नटमेग के पिता, सिनेमन के दादा, एक अनाम पशु चिकित्सक थे।
मुझे यह पता लगाने का कोई तरीका नहीं था कि कहानी कितनी सच थी। क्या यह पूरी तरह से सिनेमन की कल्पना थी, या इसके कुछ अंश वास्तविक घटनाओं पर आधारित थे? नटमेग ने मुझे बताया था कि उसके पिता को आखिरी बार देखने के बाद उनके साथ क्या हुआ, इसके बारे

में "बिल्कुल कुछ भी" पता नहीं था। इसका मतलब था कि कहानी पूरी तरह सच नहीं हो सकती। फिर भी, यह संभव था कि कुछ विवरण ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित हों। यह संभव था कि उस अराजकता के दौर में, मांचुकुओ सेना के अधिकारी उम्मीदवार स्कूल के कई कैडेटों को मार डाला गया हो और उन्हें ह्सिन-चिंग चिड़ियाघर में एक गड्ढे में दफना दिया गया हो, और इस अभियान के प्रभारी जापानी अधिकारी को युद्ध के बाद मार दिया गया हो। उस समय मांचुकुओ सेना के सैनिकों द्वारा भगदड़ और विद्रोह की घटनाएं दुर्लभ नहीं थीं, और हालांकि मारे गए चीनी कैडेटों को बेसबॉल की वर्दी में देखना कुछ अजीब था, ऐसा भी हो सकता था। इन तथ्यों को जानते हुए, सिनेमन ने उन्हें अपने दादा की छवि के साथ मिलाकर अपनी कहानी गढ़ ली होगी।
लेकिन आखिर सिनेमन ने ऐसी कहानियां क्यों लिखीं? और कहानियां ही क्यों? कोई और विधा क्यों नहीं? और शीर्षक में "इतिहास" शब्द का प्रयोग करना उन्हें क्यों आवश्यक लगा? मैं फिटिंग रूम के सोफे पर बैठा इन सब बातों के बारे में सोच रहा था, और अपने हाथ में रंगीन डिज़ाइन पेंसिल को बार-बार घुमा रहा था।
शायद मुझे अपने सवालों के जवाब पाने के लिए सोलहों कहानियाँ पढ़नी पड़तीं, लेकिन कहानी संख्या 8 को एक बार पढ़ने से ही मुझे कुछ हद तक, चाहे अस्पष्ट ही सही, यह समझ आ गया कि सिनेमन अपनी लेखनी में क्या खोज रहा था। वह अपने अस्तित्व के अर्थ की गंभीर खोज में लगा हुआ था। और उसे उम्मीद थी कि जन्म से पहले घटी घटनाओं का अध्ययन करके उसे यह अर्थ मिल जाएगा।
ऐसा करने के लिए, सिनेमन को अतीत के उन खाली स्थानों को भरना पड़ा जहाँ वह अपने हाथों से नहीं पहुँच सकता था। अपने हाथों से कहानी गढ़कर, वह लापता कड़ियों को जोड़ने का प्रयास कर रहा था।

अपनी माँ से बार-बार सुनी कहानियों से, उसने अपने दादाजी की रहस्यमय छवि को एक नए परिवेश में पुनर्जीवित करने के प्रयास में और कहानियाँ गढ़ीं। उसने अपनी माँ की कहानियों से वह मूल शैली विरासत में पाई जिसका उसने अपनी कहानियों में बिना किसी बदलाव के उपयोग किया: अर्थात्, यह धारणा कि तथ्य सत्य नहीं हो सकता, और सत्य तथ्यात्मक नहीं हो सकता। कहानी के कौन से भाग तथ्यात्मक थे और कौन से नहीं, यह प्रश्न शायद सिनेमन के लिए बहुत महत्वपूर्ण नहीं था। सिनेमन के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न यह नहीं था कि उसके दादाजी ने क्या किया, बल्कि यह था कि उसके दादाजी क्या कर सकते थे। कहानी सुनाने में सफल होते ही उसे इस प्रश्न का उत्तर मिल गया।
उनकी कहानियों में "घुमावदार चिड़िया" एक प्रमुख मुहावरा था, और वे लगभग निश्चित रूप से कथा को वर्तमान समय तक एक इतिहास के रूप में प्रस्तुत करती थीं (या शायद इतिहास के रूप में नहीं)। लेकिन "घुमावदार चिड़िया" शब्द सिनेमन ने नहीं गढ़ा था। यह मुहावरा उनकी माँ, नटमेग ने अनजाने में उस कहानी में बोला था जो उन्होंने मुझे आओयामा के उस रेस्तरां में सुनाई थी जहाँ हम साथ खाना खा रहे थे। नटमेग को उस समय शायद ही पता था कि मुझे "मिस्टर विंड-अप बर्ड" नाम दिया गया था। जिसका अर्थ है कि मैं किसी संयोगवश ही उनकी कहानी से जुड़ा था।
हालांकि, मैं इस बात को लेकर निश्चित नहीं हो सकता था। हो सकता है कि जायफल को पता हो कि मुझे "मज़ाकिया चिड़िया" कहा जाता था। ये शब्द उसकी कहानी (या बल्कि, उनकी कहानी) को प्रभावित कर सकते थे, उनके अवचेतन मन में समा सकते थे। माँ और बेटे की यह साझा कहानी एक निश्चित रूप में मौजूद नहीं हो सकती, बल्कि मौखिक रूप

लेफ्टिनेंट थे जिनका ज़िक्र सिनेमन की कहानी में आया था: वो मुझे लेफ्टिनेंट मामिया की याद दिलाते थे। लेफ्टिनेंट मामिया भी उस समय ह्सिनचिंग के क्वांगतुंग सेना मुख्यालय में तैनात थे। हालांकि, असली लेफ्टिनेंट मामिया कोई वेतन अधिकारी नहीं थे, बल्कि मानचित्र बनाने वाले दल से थे, और युद्ध के बाद उन्हें फांसी नहीं दी गई (किस्मत ने उन्हें मौत से दूर रखा) बल्कि युद्ध में अपना बायां हाथ गंवाकर जापान लौट आए। फिर भी, मेरे मन से ये धारणा नहीं निकल रही थी कि चीनी कैडेटों को फांसी देने का आदेश देने वाला अधिकारी वास्तव में लेफ्टिनेंट मामिया ही थे। कम से कम अगर वो लेफ्टिनेंट मामिया ही होते, तो ये बात ज़रा भी अजीब नहीं होती।
फिर बेसबॉल बैट की समस्या थी। सिनेमन जानता था कि मैंने कुएँ के तल में एक बैट छिपा रखा था। इसका मतलब यह था कि बैट की छवि उसकी कहानी में उसी तरह समा सकती थी जैसे "चाकू से चलने वाली चिड़िया की कहानी" शब्द समा गए थे। हालाँकि, अगर यह सच भी था, तो भी बैट के बारे में कुछ ऐसा था जिसे इतनी आसानी से समझाया नहीं जा सकता था: गिटार केस वाला वह आदमी जिसने सुनसान अपार्टमेंट के प्रवेश द्वार पर मुझ पर बैट से हमला किया था। यही वह आदमी था जिसने साप्पोरो के एक बार में मोमबत्ती की लौ में अपनी हथेली जलाने का नाटक किया था और जिसने बाद में मुझे बैट से मारा था, जिसके बाद मैंने उसे उसी बैट से पीटा था। यही वह आदमी था जिसने बैट मुझे सौंप दिया था।
और आखिर में, मेरे चेहरे पर दालचीनी के दादाजी के चेहरे के निशान जैसा ही रंग और आकार का निशान क्यों था? क्या यह भी उनकी कहानी में मेरी मौजूदगी के चलते आया था? क्या असल पशु चिकित्सक के चेहरे पर कोई निशान नहीं था? जायफल को अपने पिता के बारे में

बताते समय ऐसी कोई बात गढ़ने की ज़रूरत नहीं थी। जिस वजह से वह मुझे शिंजुकु की सड़कों पर "ढूंढ" पाई थी, वह यही निशान था जो हम दोनों में एक जैसा था। सब कुछ आपस में इस तरह उलझा हुआ था जैसे कोई त्रि-आयामी पहेली हो—एक ऐसी पहेली जिसमें सच्चाई ज़रूरी नहीं कि तथ्य हो और तथ्य ज़रूरी नहीं कि सच्चाई हो।

•

मैं सोफे से उठा और एक बार फिर सिनेमन के छोटे से दफ्तर में गया। वहाँ मैं डेस्क पर बैठ गया, कोहनियाँ मेज पर टिकाकर, और कंप्यूटर स्क्रीन को घूरने लगा। शायद सिनेमन वहीं अंदर था। वहाँ, उसके मौन शब्द कहानियों की तरह जीवित और साँस ले रहे थे। वे सोच सकते थे, खोज सकते थे, बढ़ सकते थे और गर्मी उत्पन्न कर सकते थे। लेकिन मेरे सामने की स्क्रीन चाँद की तरह मृत्यु के गहरे सागर में डूबी हुई थी, सिनेमन के शब्दों को एक भूलभुलैया जैसे जंगल में छिपाए हुए। न तो मॉनिटर की स्क्रीन और न ही उसके पीछे बैठा सिनेमन, मुझे उससे ज़्यादा कुछ बताने की कोशिश कर रहे थे जो मुझे पहले ही बताया जा चुका था।

आप किसी घर पर भरोसा नहीं कर सकते (मे कासाहारा का दृष्टिकोण: 5)

•

आप कैसे हैं, श्रीमान चाबी भरने वाले पक्षी?
मैंने अपने पिछले पत्र के अंत में कहा था कि मैंने तुमसे लगभग सब कुछ कह दिया है जो मैं कहना चाहता था—जैसे कि बस इतना ही काफी था। याद है? हालांकि, उसके बाद मैंने थोड़ा और सोचा, और मुझे लगा कि मुझे थोड़ा और लिखना चाहिए। तो मैं यहाँ हूँ, आधी रात को तिलचट्टे की तरह चुपके से, अपनी मेज पर बैठा हूँ और तुम्हें फिर से लिख रहा हूँ।
पता नहीं क्यों, लेकिन इन दिनों मैं मियावाकी परिवार के बारे में बहुत सोचता हूँ—बेचारे मियावाकी जो उस खाली घर में रहते थे, फिर बिल वसूलने वाले उनके पीछे पड़ गए, और उन सबने आत्महत्या कर ली। मुझे पक्का याद है कि मैंने कहीं पढ़ा था कि सिर्फ़ सबसे बड़ी बेटी ही नहीं मरी और अब किसी को नहीं पता कि वो कहाँ है… चाहे मैं काम कर रहा हूँ, या डाइनिंग हॉल में हूँ, या अपने कमरे में संगीत सुन रहा हूँ और किताब पढ़ रहा हूँ, उस परिवार की तस्वीर मेरे दिमाग में आ जाती है। ऐसा नहीं है कि वो मुझे डरा रही है या कुछ और, लेकिन जब भी थोड़ा सा भी समय मिलता है (और मेरे दिमाग में बहुत सारे समय मिलते हैं!), वो धीरे-धीरे अंदर आ जाती है और कुछ देर तक वहीं अटकी रहती है, जैसे अलाव का धुआँ खिड़की से अंदर आ जाता है। पिछले एक हफ्ते से ऐसा लगातार हो रहा है। मैं जन्म से ही गली में बने अपने घर में रहती थी और बचपन से ही उस दूसरी तरफ वाले घर को देखती आ रही थी। मेरी खिड़की ठीक उसी घर के सामने खुलती है। जब मैंने प्राथमिक विद्यालय जाना शुरू किया,

भी नहीं था जिससे आप हैरानी जताएं और कहें, "ठीक है, लेकिन इसके बारे में क्या?"
पड़ोस के लोग फुसफुसाते थे, "अगर तुम मुझे ऐसी डरावनी जगह मुफ्त में भी दो तो भी मैं वहाँ नहीं रहूँगा," लेकिन मियावाकी परिवार वहाँ इतनी शांति से रहता था कि मानो वह किसी फ्रेम में लगी तस्वीर हो जिस पर धूल का एक कण भी न हो। वे मानो परियों की कहानी के पात्र थे जिन्हें "हमेशा के लिए खुशी" मिली। कम से कम मेरे परिवार की तुलना में, वे दस गुना अधिक खुशी से रहते हुए प्रतीत होते थे। और जब भी मैं उनसे बाहर मिलती, वे दोनों लड़कियाँ बहुत प्यारी लगती थीं। मैं चाहती थी कि मेरी भी उनके जैसी बहनें हों। पूरा परिवार हमेशा हँसता हुआ लगता था—कुत्ते समेत।
मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि पलक झपकते ही सब कुछ गायब हो जाएगा। पर ऐसा ही हुआ। एक दिन मैंने देखा कि पूरा परिवार—उनके साथ जर्मन शेफर्ड कुत्ता भी—गायब हो गया था, मानो हवा का एक झोंका उन्हें उड़ा ले गया हो, सिर्फ़ घर ही बचा था। कुछ समय तक— शायद एक हफ़्ते तक—पड़ोस में किसी ने ध्यान नहीं दिया कि मियावाकी परिवार गायब हो गया है। पहले तो मुझे लगा कि रात में बत्तियाँ न जलना अजीब बात है, लेकिन मैंने सोचा कि वे शायद किसी पारिवारिक यात्रा पर गए होंगे। फिर मेरी माँ ने लोगों को कहते सुना कि मियावाकी परिवार "भाग गया" है। मुझे याद है मैंने उनसे इस शब्द का मतलब पूछा था। आजकल हम बस "भाग जाना" कहते हैं, शायद। आप इसे कुछ भी कहें, वहाँ रहने वाले लोगों के चले जाने के बाद, घर का पूरा रूप ही बदल गया। यह लगभग डरावना था। मैंने पहले कभी कोई खाली घर नहीं देखा था, इसलिए मुझे नहीं पता था कि एक आम खाली घर कैसा दिखता है, लेकिन मुझे लगा था कि वह उदास, टूटा-फूटा सा होगा, जैसे कोई परित्यक्त कुत्ता या टिड्डे का खोया हुआ खोल। लेकिन

मियावाकी परिवार का घर ऐसा बिल्कुल नहीं था। वह बिल्कुल भी टूटा-फूटा नहीं लग रहा था। जैसे ही मियावाकी परिवार वहाँ से गया, घर के चेहरे पर एक ऐसा भाव आ गया जैसे, "मैंने कभी मियावाकी नाम के किसी व्यक्ति का नाम नहीं सुना।" कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा। वह किसी मूर्ख, एहसानफरामोश कुत्ते जैसा था। उनके जाते ही, वह एक पूरी तरह से आत्मनिर्भर खाली घर में बदल गया जिसका मियावाकी परिवार की खुशी से कोई लेना-देना नहीं था। मुझे तो बहुत गुस्सा आया! मेरा मतलब है, जब मियावाकी परिवार वहाँ था, तब घर भी परिवार के बाकी सदस्यों की तरह ही खुश रहा होगा। मुझे यकीन है कि इसे इतनी अच्छी तरह से साफ-सफाई और देखभाल पाकर बहुत अच्छा लगा होगा, और अगर श्री मियावाकी ने इसे बनवाने की कृपा न की होती तो इसका अस्तित्व ही न होता। क्या आप सहमत नहीं हैं? आप किसी घर पर पूरी तरह भरोसा नहीं कर सकते।
मिस्टर विंड-अप बर्ड, आप भी मेरी तरह जानते हैं कि उसके बाद उस जगह का क्या हाल था। घर वीरान पड़ा था, उसमें कोई रहने वाला नहीं था, और पूरा घर चिड़ियों की बीट वगैरह से सना हुआ था। सालों तक जब मैं अपनी डेस्क पर बैठकर पढ़ाई करता था—या पढ़ाई का नाटक करता था—तो खिड़की से मुझे बस वही नज़ारा दिखता रहता था। चाहे मौसम साफ़ हो, बारिश हो, बर्फ़बारी हो या तूफ़ान, वह सब कुछ मेरी खिड़की के बाहर ही होता था, इसलिए जब भी मैं बाहर देखता, उसे देखना लाज़मी था। और हैरानी की बात यह है कि जैसे-जैसे साल बीतते गए, मैंने उसे नज़रअंदाज़ करने की कोशिश कम से कम कर दी। मैं अक्सर आधे घंटे तक अपनी कोहनी डेस्क पर रखकर, उस खाली घर को देखता रहता था। पता नहीं—कुछ समय पहले तक वह जगह हँसी से गूंजती रहती थी, और साफ़ सफ़ेद कपड़े हवा में ऐसे लहराते थे जैसे किसी कपड़े धोने के डिटर्जेंट के विज्ञापन में (मैं यह तो

नहीं कहूँगा कि श्रीमती मियावाकी "असामान्य" थीं, लेकिन उन्हें कपड़े धोना बहुत पसंद था—ज़्यादातर आम लोगों से कहीं ज़्यादा)। सब कुछ पल भर में गायब हो गया, आंगन खरपतवारों से भर गया, और मियावाकी परिवार के खुशहाल दिनों को याद करने वाला कोई नहीं बचा। मुझे यह बहुत अजीब लगा!
मैं बस इतना कहना चाहती हूँ: मियावाकी परिवार से मेरी कोई खास दोस्ती नहीं थी। सच कहूँ तो, मैं उनमें से किसी से भी शायद ही कभी बात करती थी, सिवाय सड़क पर "हैलो" कहने के। लेकिन क्योंकि मैं रोज़ अपनी खिड़की से उन्हें देखती रहती थी, मुझे ऐसा लगता था जैसे परिवार की खुशियाँ मेरे अंदर समा गई हों। आप जानते ही हैं कि किसी पारिवारिक तस्वीर के कोने में किसी ऐसे व्यक्ति की झलक दिखती है जिसका उनसे कोई लेना-देना नहीं होता। तो कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरा एक हिस्सा मियावाकी परिवार के साथ "गायब" हो गया हो और गायब हो गया हो। मुझे लगता है यह काफी अजीब है, है ना, कि आपको ऐसा महसूस हो कि आपका एक हिस्सा खो गया है क्योंकि वह उन लोगों के साथ "गायब" हो गया है जिन्हें आप मुश्किल से जानते हैं?
मैंने आपको एक अजीब बात बता ही दी है, तो क्यों न एक और बता दूं। अब, यह वाली तो वाकई बहुत अजीब है!
आजकल मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे मैं कुमिको बन गई हूँ। असल में मैं विंड-अप बर्ड हूँ, और किसी वजह से तुमसे भागकर यहाँ पहाड़ों में छिप गई हूँ, एक विग फैक्ट्री में काम कर रही हूँ। कई पेचीदा कारणों से मुझे "मे कासाहारा" नाम का इस्तेमाल करना पड़ता है, ये मुखौटा पहनना पड़ता है और दिखावा करना पड़ता है कि मैं कुमिको नहीं हूँ। और तुम बस अपने उस उदास से छोटे बरामदे

में बैठे मेरे लौटने का इंतज़ार कर रहे हो। पता नहीं—सच में मुझे ऐसा ही लगता है।
बताइए, श्रीमान विंड-अप बर्ड, क्या आप भी कभी इन भ्रमों में खो जाते हैं? मैं कोई शेखी नहीं बघार रही, पर सच में खो जाती हूँ। हर समय। कभी-कभी, जब ये भ्रम बहुत ज़्यादा हावी हो जाते हैं, तो मैं पूरा दिन इन्हीं भ्रमों में डूबी रहती हूँ। ज़ाहिर है, मैं तो बस ये साधारण से काम कर रही होती हूँ, इसलिए मेरे काम में कोई रुकावट नहीं आती, लेकिन दूसरी लड़कियाँ कभी-कभी मुझे अजीब नज़रों से देखती हैं। या शायद मैं मन ही मन कुछ अजीब बातें बड़बड़ाने लगती हूँ। मुझे ये सब पसंद नहीं, पर इससे लड़ने की कोशिश करने से कोई फ़ायदा नहीं। जब कोई भ्रम आना चाहता है, तो आ ही जाता है, जैसे मासिक धर्म। और आप उसे दरवाज़े पर रोककर ये नहीं कह सकते, "माफ़ कीजिए, आज मैं व्यस्त हूँ, बाद में कोशिश कीजिएगा।" खैर, मुझे उम्मीद है कि आपको बुरा नहीं लगेगा, श्रीमान विंड-अप बर्ड, कि मैं कभी-कभी कुमिको होने का नाटक करती हूँ। मतलब, मैं जानबूझकर ऐसा नहीं करती।
मैं बहुत थक गई हूँ। अब मैं तीन-चार घंटे के लिए सो जाऊँगी—मतलब गहरी नींद में—फिर उठकर सुबह से शाम तक खूब मेहनत करूँगी। बाकी लड़कियों के साथ विग बनाने में पूरा दिन लगाऊँगी, साथ में कुछ हल्का-फुल्का संगीत भी सुनूँगी। कृपया मेरे बारे में चिंता मत कीजिए। मैं हर तरह के काम अच्छे से कर लेती हूँ, चाहे मैं भ्रम में ही क्यों न हूँ। और अपने तरीके से, मैं आपके लिए छोटी-छोटी प्रार्थनाएँ कर रही हूँ, उम्मीद कर रही हूँ कि सब कुछ आपके लिए ठीक हो जाए, कुमिको वापस आ जाए और आप फिर से अपना शांत, खुशहाल जीवन जी सकें।
अलविदा।

एक खाली घर का जन्म हुआ

•

अगली सुबह नौ बजे, फिर दस बजे, दालचीनी का कोई अता-पता नहीं था। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। जब से मैंने इस जगह पर "काम" करना शुरू किया था, तब से उसने एक भी दिन छुट्टी नहीं ली थी। ठीक नौ बजे हर सुबह गेट खुलता और मर्सिडीज के बोनट पर लगे चमकदार लोगो की रोशनी दिखाई देती। दालचीनी का यह साधारण और नाटकीय रूप से प्रकट होना मेरे लिए हर दिन की शुरुआत का प्रतीक था। मैं इस नियमित दिनचर्या का आदी हो गया था, जैसे लोग गुरुत्वाकर्षण या बैरोमेट्रिक दबाव के आदी हो जाते हैं। दालचीनी की इस नियमितता में एक अलग ही गर्माहट थी, जो केवल यांत्रिक पूर्वानुमान से कहीं बढ़कर थी, कुछ ऐसा जो मुझे सुकून और हिम्मत देता था। इसीलिए दालचीनी के बिना सुबह ऐसी लगती थी जैसे किसी बेहतरीन लैंडस्केप पेंटिंग में कोई केंद्र बिंदु न हो।
मैंने उसका इंतज़ार करना छोड़ दिया, खिड़की से बाहर निकली और नाश्ते के बदले एक सेब छील लिया। फिर मैंने सिनेमन के कमरे में झाँक कर देखा कि कंप्यूटर पर कोई संदेश तो नहीं है, लेकिन स्क्रीन हमेशा की तरह बंद थी। उस समय मेरे पास बस यही चारा था कि मैं सिनेमन की तरह कपड़े धोते, फर्श पर वैक्यूम करते और खिड़कियाँ साफ़ करते हुए बारोक संगीत की टेप सुनूँ। समय बिताने के लिए, मैंने जानबूझकर हर काम धीरे-धीरे और सावधानी से किया, यहाँ तक कि रसोई के एग्जॉस्ट फैन के ब्लेड भी साफ़ किए, लेकिन फिर भी समय थम सा गया।
ग्यारह बजते-ब-दिन मेरे पास करने को कुछ नहीं बचा था, इसलिए मैं फिटिंग रूम के सोफे पर लेट गई और समय के धीमे-धीमे बीतने का आनंद

लेने लगी। मैंने खुद को समझाने की कोशिश की कि सिनेमन को किसी छोटी-मोटी बात की वजह से देर हो गई होगी। शायद गाड़ी खराब हो गई हो, या वह किसी भयानक ट्रैफिक जाम में फंस गया हो। लेकिन मुझे पता था कि ऐसा हो ही नहीं सकता। मैं इस बात पर पूरी तरह यकीन कर सकती थी। सिनेमन की गाड़ी कभी खराब नहीं होती थी, और वह हमेशा ट्रैफिक जाम की संभावना का ध्यान रखता था। साथ ही, उसके पास गाड़ी में फोन भी था जिससे वह ट्रैफिक में किसी भी अप्रत्याशित स्थिति में मुझे कॉल कर सकता था। नहीं, सिनेमन यहाँ इसलिए नहीं आया था क्योंकि उसने न आने का फैसला किया था।

•

मैंने दोपहर एक बजे से ठीक पहले नटमेग के अकासाका कार्यालय में फोन करने की कोशिश की, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। मैंने बार-बार कोशिश की, लेकिन नतीजा वही रहा। फिर मैंने उशिकावा के कार्यालय में फोन किया, लेकिन मुझे सिर्फ यह संदेश मिला कि नंबर डिस्कनेक्ट हो गया है। यह अजीब था। मैंने दो दिन पहले ही उसी नंबर पर उन्हें फोन किया था। मैंने हार मान ली और वापस फिटिंग रूम के सोफे पर बैठ गया। पिछले दो दिनों में अचानक ऐसा लग रहा था जैसे मुझसे संपर्क न करने की साजिश रची जा रही हो।
मैं खिड़की के पास वापस गया और पर्दे के पीछे से बाहर झाँका। दो फुर्तीले से दिखने वाले छोटे-छोटे सर्दियों के पक्षी आँगन में आए थे और एक डाल पर बैठे हुए थे, बड़ी-बड़ी आँखों से चारों ओर देख रहे थे। फिर, मानो वे अचानक वहाँ की हर चीज़ से ऊब गए हों, वे उड़ गए। और कुछ भी हिलता-डुलता नहीं दिख रहा था। घर एकदम नए खाली मकान जैसा लग रहा था।

•

अगले पाँच दिनों तक मैं वहाँ नहीं गया। पता नहीं क्यों, कुएँ में उतरने की मेरी इच्छा ही खत्म हो गई थी। शायद जल्द ही मैं कुआँ भी खो दूँगा। बिना ग्राहकों के मैं दो महीने से ज़्यादा समय तक अपना घर नहीं चला सकता था, इसलिए जब तक कुआँ मेरा है, मुझे उसका भरपूर इस्तेमाल करना चाहिए। मुझे घुटन महसूस हो रही थी। अचानक, वह जगह मुझे अजीब और अस्वाभाविक लगने लगी।
मैं निवास स्थान पर जाए बिना इधर-उधर भटकता रहा। दोपहर में मैं शिंजुकु पश्चिम निकास प्लाज़ा जाता और अपनी पसंदीदा बेंच पर बैठ जाता, कुछ खास न करते हुए समय बिताता, लेकिन नटमेग कभी वहाँ नहीं दिखी। मैं एक बार उसके अकासाका कार्यालय गया, लिफ्ट के पास घंटी बजाई और क्लोज्ड सर्किट कैमरे में देखा, लेकिन कोई जवाब नहीं आया। मैं हार मानने को तैयार था। नटमेग और सिनेमन ने स्पष्ट रूप से मुझसे सारे संबंध तोड़ लिए थे। यह अजीब माँ-बेटा डूबते जहाज को छोड़कर किसी सुरक्षित जगह चले गए थे। इस बात से मेरे भीतर जो गहरा दुख जागा, वह मुझे हैरान कर गया। मुझे ऐसा लगा जैसे अंततः मेरे अपने परिवार ने ही मुझे धोखा दिया हो।

माल्टा कानो की पूंछ

•

बोरिस द मैनस्किनर
मेरे सपने में (हालांकि मुझे पता नहीं था कि यह सपना है), मैं माल्टा कानो के सामने मेज पर बैठा चाय पी रहा था। आयताकार कमरा इतना लंबा और चौड़ा था कि एक छोर से दूसरे छोर तक देखना मुश्किल था, और उसमें एकदम सीधी रेखाओं में पाँच सौ या उससे अधिक वर्गाकार मेजें सजी हुई थीं। हम बीच वाली एक मेज पर बैठे थे, वहाँ केवल हम ही थे। छत पर, जो किसी बौद्ध मंदिर की छत जितनी ऊँची थी, अनगिनत भारी बीम फैले हुए थे, जिनके हर सिरे से गमलों में लगे पौधों की तरह कुछ वस्तुएँ लटकी हुई थीं जो देखने में विग जैसी लग रही थीं। ध्यान से देखने पर पता चला कि वे असल में इंसानी खोपड़ियाँ थीं। मैं उनके नीचे लगे काले खून से समझ गया था। ये नई उतारी गई खोपड़ियाँ थीं जिन्हें सूखने के लिए बीमों पर लटकाया गया था। मुझे डर था कि कहीं ताजा खून हमारी चाय में न गिर जाए। हमारे चारों ओर बारिश की बूंदों की तरह खून टपक रहा था, जिसकी आवाज उस विशाल कमरे में गूँज रही थी। केवल हमारी मेज के ऊपर लटकी हुई खोपड़ियाँ ही इतनी सूखी हुई लग रही थीं कि उनसे खून टपकने का कोई निशान नहीं था।
चाय उबल रही थी। हमारी तश्तरियों में चम्मचों के बगल में चीनी के तीन चटख हरे टुकड़े रखे थे। माल्टा कानो ने उनमें से दो टुकड़े अपनी चाय में डाले और हिलाए, लेकिन वे पिघले नहीं। अचानक कहीं से एक कुत्ता प्रकट हुआ और हमारी मेज के पास बैठ गया। उसका चेहरा उशिकावा जैसा था। वह एक बड़ा कुत्ता था, जिसका शरीर मोटा और काला था, लेकिन गर्दन से ऊपर का हिस्सा बिल्कुल उशिकावा जैसा

था, बस शरीर पर उगे घने काले बाल उसके चेहरे और सिर पर भी थे। "अरे वाह, अरे वाह, ये तो श्री ओकाडा हैं!" कुत्ते जैसे दिखने वाले उशिकावा ने कहा। और ज़रा इसे देखिए: पूरे सिर पर बाल। कुत्ते में बदलते ही ये उग आए। कमाल है! अब मेरे अंडकोष पहले से कहीं ज़्यादा बड़े हो गए हैं, और पेट में दर्द भी नहीं होता। और देखिए: चश्मा नहीं! कपड़े नहीं! मैं कितना खुश हूँ! मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैंने इसके बारे में पहले क्यों नहीं सोचा। काश मैं बहुत पहले ही कुत्ता बन गया होता! आपका क्या ख्याल है, श्री ओकाडा? आप भी एक बार कोशिश क्यों नहीं करते? माल्टा कानो ने अपने पास बची हरी चीनी की एक छोटी सी लोई उठाई और कुत्ते पर फेंक दी। लोई उशिकावा के माथे पर लगी और उससे स्याही जैसा काला खून निकल आया जो उसके चेहरे पर बहने लगा। लेकिन उशिकावा को इससे कोई तकलीफ नहीं हुई। मुस्कुराते हुए, बिना कुछ बोले, उसने अपनी पूंछ उठाई और चला गया। यह सच था: उसके अंडकोष बहुत बड़े थे।
माल्टा कानो ने ट्रेंच कोट पहना हुआ था। कोट के कॉलर सामने से कसकर बंद थे, लेकिन नग्न शरीर की हल्की सी खुशबू से मैं समझ गया कि उसने अंदर कुछ नहीं पहना था। ज़ाहिर है, उसने अपनी लाल विनाइल टोपी भी पहन रखी थी। मैंने अपना कप उठाया और चाय की एक घूंट ली, पर उसमें कोई स्वाद नहीं था। बस गर्म थी, और कुछ नहीं। “मुझे बहुत खुशी है कि आप आ सके,” माल्टा कानो ने राहत भरी आवाज़ में कहा। काफी समय बाद उनकी आवाज़ सुनकर मुझे लगा कि वह पहले से कुछ ज़्यादा खुश थीं। “मैं कई दिनों से आपको फोन कर रही थी, लेकिन आप हमेशा घर से बाहर ही रहते थे। मुझे चिंता होने लगी थी कि कहीं आपको कुछ हो न गया हो। शुक्र है आप ठीक हैं। आपकी आवाज़ सुनकर कितनी राहत मिली! खैर, इतने दिनों तक संपर्क में न रहने के

लिए माफ़ी चाहती हूँ। इस बीच मेरे जीवन में जो कुछ भी हुआ है, उसके बारे में मैं विस्तार से नहीं बता सकती, खासकर फोन पर, इसलिए मैं बस ज़रूरी बातें संक्षेप में बता रही हूँ। मुख्य बात यह है कि मैं इतने समय से यात्रा कर रही थी। मैं एक हफ़्ते पहले वापस आई हूँ। श्री ओकाडा? श्री ओकाडा? क्या आप मुझे सुन सकते हैं?”
“हाँ, मैं आपको सुन सकता हूँ,” मैंने कहा, तभी मुझे अचानक एहसास हुआ कि मैं अपने कान से फ़ोन लगाए बैठा हूँ। मेज के दूसरी तरफ बैठी माल्टा कानो भी रिसीवर पकड़े बैठी थी। उसकी आवाज़ किसी अंतरराष्ट्रीय कॉल के खराब कनेक्शन से आती हुई लग रही थी।
“मैं पूरे समय जापान से दूर, भूमध्य सागर में स्थित माल्टा द्वीप पर था। एक दिन अचानक मेरे मन में ख्याल आया, ‘अरे हाँ! मुझे माल्टा लौटना चाहिए और वहाँ के पानी के करीब जाना चाहिए। अब समय आ गया है!’ यह सब तब हुआ जब मैंने आपसे आखिरी बार बात की थी, श्री ओकाडा। क्या आपको वह बातचीत याद है? उस समय मैं क्रीट की खोज में था। खैर, मेरा जापान से इतने लंबे समय तक दूर रहने का कोई इरादा नहीं था। मैं लगभग दो सप्ताह के लिए ही वहाँ जाने की योजना बना रहा था। इसीलिए मैंने आपसे संपर्क नहीं किया।” मैंने अपने जाने के बारे में लगभग किसी को नहीं बताया था, बस अपने पहने हुए कपड़ों के अलावा कुछ भी साथ लिए बिना विमान में चढ़ गया। लेकिन वहाँ पहुँचने के बाद, मैं वहाँ से वापस नहीं जा पा रहा था। क्या आप कभी माल्टा गए हैं, श्री ओकाडा?
मैंने कहा कि मैंने ऐसा नहीं किया था। मुझे याद आया कि कुछ साल पहले मेरी इसी व्यक्ति से लगभग ऐसी ही बातचीत हुई थी।
“श्री ओकाडा? श्री ओकाडा?”
“हां, मैं अभी भी यहीं हूं,” मैंने कहा।

मुझे लगा कि मुझे माल्टा कानो को कुछ बताना है, लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा था कि क्या। आखिरकार, जब मैंने अपना सिर झुकाकर थोड़ी देर सोचा, तो मुझे याद आ गया। मैंने रिसीवर दूसरे हाथ में लिया और कहा, "ओह, हाँ, एक बात है जिसके बारे में मैं तुम्हें बहुत समय से फोन करना चाह रही थी। बिल्ली वापस आ गई है।" चार-पांच सेकंड की चुप्पी के बाद माल्टा कानो ने कहा, "क्या बिल्ली वापस आ गई?"
“हां। बिल्ली का शिकार ही एक तरह से वह वजह थी जिसने हमें शुरू में एक साथ लाया, इसलिए मैंने सोचा कि आपको बता देना बेहतर होगा।”
बिल्ली कब वापस आई?
“इस वसंत की शुरुआत में। तब से यह मेरे साथ है।”
“क्या इसकी दिखावट में कुछ बदलाव आया है? क्या गायब होने से पहले और बाद में इसमें कुछ बदला है?”
बदल गया?
“अब सोचती हूँ तो लगता है कि मुझे पूंछ का आकार थोड़ा अलग लग रहा था,” मैंने कहा। “जिस दिन बिल्ली वापस आई, उस दिन जब मैंने उसे सहलाया, तो मुझे लगा कि उसकी पूंछ पहले ज़्यादा मुड़ी हुई थी। हालांकि, मैं गलत भी हो सकती हूँ। आखिर, वो लगभग एक साल से गायब थी।”
"क्या आपको यकीन है कि यह वही बिल्ली है?"
“बिल्कुल यकीन है। वह बिल्ली मेरे पास बहुत लंबे समय से थी। मुझे पता चल जाएगा कि वह वही बिल्ली है या नहीं।”
“मैं समझ गई,” माल्टा कानो ने कहा। “सच कहूँ तो, मुझे खेद है, लेकिन बिल्ली की असली पूंछ यहीं मेरे पास है।”

माल्टा कानो ने रिसीवर मेज पर रख दिया, फिर खड़ी हुई और अपना कोट उतार दिया। जैसा कि मुझे शक था, उसने अंदर कुछ नहीं पहना था। उसके स्तनों का आकार और गुप्तांगों के बाल लगभग क्रेता कानो जैसे ही थे। उसने अपनी लाल विनाइल टोपी नहीं उतारी। वह मुड़ी और उसने अपनी पीठ मेरी तरफ कर दी। वहाँ, यकीन मानिए, उसके नितंबों के ऊपर एक बिल्ली की पूंछ लगी हुई थी। उसके शरीर के अनुपात में, यह असली पूंछ से काफी बड़ी थी, लेकिन इसका आकार मैकेरल की पूंछ जैसा ही था। इसके सिरे पर भी वही तीखा मोड़ था, लेकिन यह मैकेरल की पूंछ से कहीं अधिक असली लग रही थी।
“कृपया ध्यान से देखें,” माल्टा कानो ने कहा। “यह उस बिल्ली की असली पूंछ है जो गायब हो गई थी। बिल्ली के पास जो पूंछ है वह नकली है। देखने में तो यह असली जैसी लग सकती है, लेकिन अगर आप इसे गौर से देखेंगे तो पाएंगे कि यह अलग है।”
मैंने उसकी पूंछ छूने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन उसने झटक कर अपना हाथ दूर कर दिया। फिर, नग्न अवस्था में ही, वह एक मेज पर कूद गई। छत से खून की एक बूंद मेरी हथेली पर गिरी। यह बिल्कुल माल्टा कानो की विनाइल टोपी के गहरे लाल रंग की थी।
"क्रीटा कानो के बच्चे का नाम कोर्सिका है, श्रीमान ओकाडा," माल्टा कानो ने अपनी मेज के ऊपर से कहा, उसकी पूंछ तेजी से फड़फड़ा रही थी।
“कोर्सिका?”
“‘कोई भी इंसान अकेला नहीं रह सकता।’ कोर्सिका में ऐसा ही होता है,” कहीं से काले कुत्ते, उशिकावा की आवाज आई।
क्रेता कानो का बच्चा?
मैं पसीने से भीगा हुआ उठा।

•

बहुत समय हो गया था जब मैंने इतना लंबा, स्पष्ट और सुसंगत सपना देखा था। और अजीब भी। जागने के बाद भी मेरा दिल कुछ देर तक ज़ोर-ज़ोर से धड़कता रहा। मैंने गर्म पानी से स्नान किया और नए पजामा पहन लिए। सुबह के एक बज चुके थे, लेकिन मुझे नींद नहीं आ रही थी। खुद को शांत करने के लिए, मैंने रसोई की अलमारी के पीछे से ब्रांडी की एक पुरानी बोतल निकाली, एक गिलास में डाली और पी गई। फिर मैं मैकरेल को ढूंढने के लिए बेडरूम में गया। बिल्ली रजाई के नीचे दुबकी गहरी नींद में सो रही थी। मैंने रजाई हटाई और बिल्ली की पूंछ को हाथ में लेकर उसकी आकृति को गौर से देखा। मैं अपनी उंगलियों से उसकी पूंछ को सहला रहा था, उसके मुड़े हुए सिरे के सटीक कोण को याद करने की कोशिश कर रहा था, तभी बिल्ली ने झुंझलाहट में अंगड़ाई ली और फिर सो गई। अब मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता था कि यह वही पूंछ थी जो बिल्ली की तब थी जब उसका नाम नोबोरू वटाया था। किसी तरह, माल्टा कानो के पिछले हिस्से पर मौजूद पूंछ असली नोबोरू वटाया बिल्ली की पूंछ से कहीं अधिक मिलती-जुलती लग रही थी। सपने में मुझे उसकी आकृति और रंग अभी भी स्पष्ट रूप से याद थे।
मेरे सपने में माल्टा कानो ने कहा था कि क्रेता कानो के बच्चे का नाम कोर्सिका है।

•

अगले दिन मैं घर से ज्यादा दूर नहीं गया। सुबह मैंने स्टेशन के पास वाले सुपरमार्केट से खाने-पीने का सामान खरीदा और अपना दोपहर का खाना बनाया। मैंने बिल्ली को कुछ बड़ी ताज़ी सार्डिन मछलियाँ खिलाईं। दोपहर में, मैंने वार्ड के स्विमिंग पूल में काफी देर बाद तैराकी की। वहाँ ज्यादा लोग नहीं थे। शायद वे नए साल की तैयारियों में व्यस्त थे। छत पर लगे स्पीकर क्रिसमस के

मेरे पास आपको सब कुछ बताने का समय नहीं था। शायद इससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि उस समय मैं भावनात्मक रूप से इतना तैयार नहीं था कि अपनी बाकी कहानी किसी को भी बता सकूँ, उसे पूरी ईमानदारी से सुना सकूँ।
लेकिन तुम्हारे जाने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि मुझे व्यावहारिक बातों को आड़े नहीं आने देना चाहिए था। मुझे बिना कुछ छिपाए, अंत तक तुम्हें सब कुछ बता देना चाहिए था।
13 अगस्त, 1945 को हैलार के बाहरी इलाके में हुई भीषण लड़ाई के दौरान मुझे मशीन गन की गोली लगी और ज़मीन पर पड़े-पड़े मेरा बायाँ हाथ सोवियत टी34 टैंक के पहियों के नीचे आ गया। मुझे बेहोशी की हालत में चीता के सोवियत सैन्य अस्पताल ले जाया गया, जहाँ सर्जनों ने मेरी जान बचाई। जैसा कि मैंने पहले बताया, मैं ह्सिनचिंग में क्वांगतुंग सेना के जनरल स्टाफ के सैन्य सर्वेक्षण कोर से जुड़ा हुआ था, जिसे सोवियत संघ द्वारा जापान पर युद्ध की घोषणा करते ही पीछे हटने का आदेश दिया गया था। लेकिन मरने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर, मैंने अपना तबादला सीमा के पास स्थित हैलार इकाई में करवा लिया, जहाँ मैंने खुद को एक मानव गोली के रूप में पेश किया और अपने हाथों में बारूदी सुरंग लिए एक सोवियत टैंक पर हमला किया। जैसा कि श्री होंडा ने खल्खा नदी के किनारे भविष्यवाणी की थी, मैं इतनी आसानी से नहीं मर सका। मैंने केवल अपना हाथ खोया, अपनी जान नहीं। हालाँकि, मेरा मानना है कि मेरे अधीन सभी सैनिक मारे गए। हम शायद आदेशों का पालन कर रहे थे, लेकिन यह एक मूर्खतापूर्ण, आत्मघाती हमला था। हमारी छोटी पोर्टेबल बारूदी सुरंगें एक विशाल टी34 का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती थीं।

जाती। मुझे एक गुमनाम कब्र में दफना दिया जाता। भाग्य कितना रहस्यमय है!
उसके बाद, मुझे एक कठिन पूछताछ से गुज़रना पड़ा और कई महीनों तक वैचारिक प्रशिक्षण दिया गया, फिर मुझे साइबेरिया की एक कोयला खदान में दुभाषिया के रूप में काम करने के लिए भेज दिया गया। मैं उस दौर के विवरण में नहीं जाऊँगा, लेकिन अपने वैचारिक प्रशिक्षण के बारे में मैं इतना ज़रूर कहना चाहूँगा। युद्ध से पहले एक छात्र के रूप में, मैंने कई प्रतिबंधित मार्क्सवादी किताबें पढ़ी थीं, जिन्हें मैंने पुलिस से छिपाकर रखा था, और मैं कम्युनिस्ट विचारधारा के प्रति पूरी तरह से उदासीन नहीं था, लेकिन मैंने इतना कुछ देख लिया था कि उसे पूरी तरह से स्वीकार करना मेरे लिए संभव नहीं था। खुफिया विभाग में अपने काम की बदौलत, मैं स्टालिन और उसके कठपुतली तानाशाहों द्वारा मंगोलिया में किए गए दमन के खूनी इतिहास से भली-भांति परिचित था। क्रांति के बाद से, उन्होंने हज़ारों लामावादी पुजारियों, ज़मींदारों और विरोध के अन्य बलों को यातना शिविरों में भेज दिया था, जहाँ उन्हें बेरहमी से मार डाला गया था। और सोवियत संघ में भी कुछ ऐसा ही हुआ था। भले ही मैं कम्युनिस्ट विचारधारा में विश्वास कर सकता था, लेकिन मैं उन लोगों या व्यवस्था पर विश्वास नहीं कर सकता था जो उस विचारधारा और सिद्धांतों को व्यवहार में लाने के लिए ज़िम्मेदार थे। मंचूरिया में हम जापानियों ने जो किया था, उसके बारे में भी मेरी यही भावना थी। मुझे यकीन है कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि हैलार में गुप्त अड्डे के निर्माण के दौरान कितने चीनी मजदूर मारे गए - उन्हें जानबूझकर इसलिए मारा गया ताकि वे चुप हो जाएं, और अड्डे की निर्माण योजनाओं की गोपनीयता बनी रहे।

इसके अलावा, मैंने रूसी अधिकारी और उसके मंगोलियाई अधीनस्थों द्वारा की गई उस भयानक चमड़ी उतारने की घटना को अपनी आँखों से देखा था। मुझे एक मंगोलियाई कुएँ में फेंक दिया गया था, और उस अजीब, तीव्र रोशनी में जीने की मेरी सारी इच्छा समाप्त हो गई थी। मुझ जैसा व्यक्ति विचारधारा और राजनीति में कैसे विश्वास कर सकता है?
दुभाषिया के तौर पर, मैंने खदान में बंद जापानी युद्धबंदियों और उनके सोवियत बंदी बनाने वालों के बीच संपर्क सूत्र का काम किया। मुझे नहीं पता कि साइबेरिया के अन्य यातना शिविरों में क्या हालात थे, लेकिन जिस खदान में मैंने काम किया, वहाँ हर दिन बड़ी संख्या में लोग मर रहे थे। ऐसा नहीं था कि मौत के कारणों की कमी थी: कुपोषण, अत्यधिक काम, खदान धंसना, बाढ़, अस्वच्छ परिस्थितियाँ जिनसे महामारियाँ फैलती थीं, असहनीय ठंड, हिंसक पहरेदार, और मामूली से मामूली प्रतिरोध का भी बेरहमी से दमन। ऐसे मामले भी थे जिनमें जापानियों को उनके ही साथी जापानियों द्वारा पीट-पीटकर मार डाला गया था। ऐसी परिस्थितियों में लोग एक-दूसरे के प्रति घृणा, संदेह, भय और निराशा से ग्रस्त थे।
जब भी मरने वालों की संख्या इतनी बढ़ जाती थी कि कामगार कम पड़ने लगते थे, तो वे पूरी-पूरी ट्रेनें भरकर नए युद्धबंदियों को लाते थे। ये लोग फटे-पुराने कपड़ों में होते थे, दुबले-पतले होते थे, और उनमें से एक चौथाई तो खदान की कठोर परिस्थितियों को सहन न कर पाने के कारण पहले कुछ हफ्तों में ही मर जाते थे। मृतकों को परित्यक्त खदानों में फेंक दिया जाता था। उन सभी के लिए कब्र खोदना संभव नहीं था। वहाँ की ज़मीन साल भर जमी रहती थी। फावड़े उसे खोद नहीं पाते थे। इसलिए परित्यक्त खदानें मृतकों को ठिकाने लगाने के लिए एकदम सही थीं। वे गहरी और अंधेरी

थीं, और ठंड के कारण वहाँ कोई गंध नहीं आती थी। कभी-कभी हम शवों के ऊपर कोयले की एक परत डाल देते थे। जब कोई खदान भर जाती थी, तो वे उसे मिट्टी और पत्थरों से ढक देते थे, और फिर अगली खदान में चले जाते थे।
सिर्फ़ मरे हुए लोगों को ही गड्ढों में नहीं फेंका जाता था। कभी-कभी ज़िंदा लोगों को भी सबक सिखाने के लिए गड्ढों में फेंक दिया जाता था। जो भी जापानी सैनिक प्रतिरोध का कोई संकेत दिखाता, उसे सोवियत गार्ड बाहर निकाल कर बुरी तरह पीटते, उसके हाथ-पैर तोड़ देते और फिर उसे गड्ढे में फेंक देते। आज भी मुझे उनकी दर्द भरी चीखें सुनाई देती हैं। वह सचमुच एक जीती-जागती नरक थी।
इस खदान को पार्टी सेंट्रल से भेजे गए पोलित ब्यूरो सदस्यों द्वारा एक प्रमुख रणनीतिक सुविधा के रूप में चलाया जाता था और सेना द्वारा अधिकतम सुरक्षा के साथ इसकी निगरानी की जाती थी। कहा जाता है कि शीर्ष अधिकारी स्टालिन के अपने गृहनगर से था, एक कठोर, निर्मम पार्टी पदाधिकारी जो अभी युवा था और महत्वाकांक्षा से भरा हुआ था। उसकी एकमात्र चिंता उत्पादन के आंकड़े बढ़ाना थी। श्रमिकों की खपत उसके लिए कोई मायने नहीं रखती थी। जब तक उत्पादन के आंकड़े बढ़ते रहते, पार्टी सेंट्रल उसकी खदान को अनुकरणीय मानकर उसे अधिक श्रमिक देकर पुरस्कृत करता। चाहे कितने भी श्रमिक मरें, उनकी जगह हमेशा नए श्रमिक रखे जाते। उत्पादन के आंकड़े बढ़ाते रहने के लिए, वह उन खदानों की खुदाई को अधिकृत करता था जिन्हें सामान्य परिस्थितियों में काम करने के लिए अत्यधिक खतरनाक माना जाता था। स्वाभाविक रूप से, दुर्घटनाओं की संख्या भी बढ़ती रही, लेकिन उसे इसकी कोई परवाह नहीं थी।

काम, शिविर क्षेत्रों के बीच आने-जाने की मेरी योग्यता आदि पढ़ी। सार्जेंट ने मेरा पास लौटाया और ठोड़ी हिलाकर मुझे जाने का इशारा किया। मैं थोड़ी दूर चला और पीछे मुड़ा। वह आदमी मुझे देख रहा था। उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी, हालांकि शायद यह मेरा भ्रम था। मेरे पैर इतने कांप रहे थे कि मैं कुछ देर तक सीधा चल नहीं पाया। नौ साल पहले मैंने जो भी दहशत महसूस की थी, वह पल भर में मेरे सामने लौट आई।
मैंने कल्पना की कि वह व्यक्ति सत्ता से गिर गया था और उसे साइबेरिया के इस बंदी शिविर में भेज दिया गया था। उस समय सोवियत संघ में ऐसी घटनाएँ आम थीं। सरकार, पार्टी और सैन्य सेवाओं के भीतर भयंकर संघर्ष चल रहे थे, और स्टालिन का सनकी संदेह हारने वालों का बेरहमी से पीछा करता था। अपने पदों से हटाए जाने के बाद, ऐसे लोगों पर मनमानी अदालतों में मुकदमा चलाया जाता था और या तो उन्हें तुरंत मार दिया जाता था या यातना शिविरों में भेज दिया जाता था, हालाँकि अंततः कौन सा समूह अधिक भाग्यशाली था, यह केवल ईश्वर ही बता सकता था। मृत्यु से बच निकलने का एकमात्र परिणाम अकल्पनीय क्रूरतापूर्ण दास श्रम था। हम जापानी युद्धबंदियों को कम से कम जीवित रहने पर अपने वतन लौटने की आशा तो थी, लेकिन निर्वासित रूसियों को ऐसी कोई आशा नहीं थी। दूसरों की तरह, इस व्यक्ति का भी अंत साइबेरिया की मिट्टी में उसकी हड्डियों के सड़ने के साथ ही होगा।
मुझे उसके बारे में सिर्फ एक ही बात परेशान कर रही थी, और वो ये कि अब उसे मेरा नाम और मेरा पता पता चल गया था। युद्ध से पहले, मैंने (ज़ाहिर है, अनजाने में ही सही) जासूस यामामोतो के साथ उस गुप्त अभियान में हिस्सा लिया था, जिसमें जासूसी के लिए खल्खा नदी पार करके मंगोलियाई क्षेत्र में प्रवेश किया था। अगर वो

आदमी ये जानकारी लीक कर देता, तो मैं बहुत मुश्किल में पड़ जाता। लेकिन आखिरकार, उसने मेरे बारे में किसी को नहीं बताया। नहीं, जैसा कि मुझे बाद में पता चला, उसके मेरे लिए कहीं ज़्यादा बड़ी योजनाएँ थीं।
एक हफ्ते बाद, मैंने उसे थाने के बाहर देखा। वह अब भी जंजीरों में जकड़ा हुआ था, वही गंदे जेल के कपड़े पहने हुए था और हथौड़े से पत्थर तोड़ रहा था। मैंने उसे देखा, और उसने मुझे देखा। उसने अपना हथौड़ा ज़मीन पर रखा और मेरी तरफ मुड़ा, ठीक वैसे ही सीधा खड़ा था जैसे वह फौजी वर्दी में होता था। इस बार, साफ तौर पर, उसके चेहरे पर एक मुस्कान थी—एक हल्की सी मुस्कान, लेकिन फिर भी एक मुस्कान, जिसमें क्रूरता की झलक थी जिसने मेरी रूह कंपा दी। यही भाव उसके चेहरे पर तब भी था जब उसने यामामोतो को जिंदा छीलते हुए देखा था। मैंने कुछ नहीं कहा और आगे बढ़ गया।
उस समय शिविर के सोवियत सेना मुख्यालय में तैनात अधिकारियों में से मेरा एक दोस्त था। मेरी तरह उसने भी कॉलेज (लेनिनग्राद में) में भूगोल में स्नातक की पढ़ाई की थी। हम दोनों की उम्र लगभग एक जैसी थी और हम दोनों को मानचित्र बनाने में रुचि थी, इसलिए हम कभी-कभार काम की बातें करने का बहाना ढूंढ लेते थे। उसे क्वांगतुंग सेना द्वारा बनाए जा रहे मंचूरिया के रणनीतिक मानचित्रों में विशेष रुचि थी। ज़ाहिर है, जब उसके वरिष्ठ अधिकारी आसपास होते थे तो हम ऐसी बातें नहीं कर सकते थे। हमें उनकी अनुपस्थिति में इस पेशेवर बातचीत का आनंद लेने का मौका ढूंढना पड़ता था। कभी-कभी वह मुझे खाना देता था या कीव में छोड़ी अपनी पत्नी और बच्चों की तस्वीरें दिखाता था। सोवियत संघ में नज़रबंद रहने के दौरान वह एकमात्र रूसी था जिसके साथ मैं थोड़ा बहुत जुड़ाव महसूस करता था।

एक बार यूं ही मैंने उनसे थाने के पास काम करने वाले कैदियों के बारे में पूछा। मैंने कहा कि उनमें से एक कैदी मुझे बाकी कैदियों से बिल्कुल अलग लगा; वह देखने में ऐसा लगता था मानो कभी किसी महत्वपूर्ण पद पर रहा हो। मैंने उसके हुलिए का वर्णन किया। अधिकारी—जिनका नाम निकोलाई था—ने मुझसे गुस्से से कहा, “वह बोरिस मैनस्किनर है। बेहतर होगा कि तुम उससे कोई वास्ता न रखो।”
मैंने पूछा, "ऐसा क्यों?" निकोलाई कुछ और कहने में हिचकिचा रहा था, लेकिन वह जानता था कि मैं उसकी मदद कर सकता हूँ, इसलिए आखिरकार, अनिच्छा से ही सही, उसने मुझे बताया कि "बोरिस द मैनस्किनर" को इस खदान में भेजा गया था। "अब, किसी को मत बताना कि मैंने तुम्हें बताया है," उसने मुझे चेतावनी दी। "वह आदमी खतरनाक हो सकता है। मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ—उससे बुरा कोई नहीं होता। मैं उससे दस फुट दूर रहना चाहूँगा।"
निकोलाई ने मुझे यही बताया था। "बोरिस द मैनस्किनर" का असली नाम बोरिस ग्रोमोव था। जैसा मैंने सोचा था, वह एनकेवीडी में मेजर था। उसे 1938 में, जिस साल चोयबल-सान ने प्रधानमंत्री का पद संभाला था, उलान बटोर में सैन्य सलाहकार के रूप में तैनात किया गया था। वहाँ उसने बेरिया की एनकेवीडी की तर्ज पर मंगोलियाई गुप्त पुलिस का गठन किया और प्रति-क्रांतिकारी ताकतों को दबाने में उसने अपनी विशिष्टता साबित की। वे लोगों को पकड़ते, उन्हें यातना शिविरों में डालते और यातनाएँ देते, और जिस पर भी उन्हें ज़रा सा भी संदेह होता, उसे मार डालते।
नोमोनहान की लड़ाई समाप्त होते ही और सुदूर पूर्व का संकट टलते ही, बोरिस को मॉस्को वापस बुला लिया गया और सोवियत-कब्जे वाले पूर्वी पोलैंड में फिर से तैनात कर दिया गया, जहाँ उन्होंने

पुरानी पोलिश सेना के शुद्धिकरण का काम किया। यहीं उन्हें "बोरिस द मैनस्किनर" उपनाम मिला। लोगों की खाल उतारना, जिसके लिए वे एक ऐसे व्यक्ति का इस्तेमाल करते थे जिसे वे मंगोलिया से अपने साथ लाए थे, उनकी यातना का विशेष तरीका था। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि पोलैंड के लोग उनसे बहुत डरते थे। किसी को भी खाल उतारते हुए देखने के लिए मजबूर किया जाता, तो वह बिना किसी संकोच के सब कुछ कबूल कर लेता। जब जर्मन सेना अचानक सीमा पार कर गई और जर्मनी के साथ युद्ध शुरू हुआ, तो वे पोलैंड से वापस मॉस्को लौट आए। उस समय हिटलर के साथ मिलीभगत के संदेह में कई लोगों को गिरफ्तार किया गया। उन्हें फाँसी दे दी जाती थी या जेल शिविरों में भेज दिया जाता था। यहाँ भी, बोरिस ने बेरिया के दाहिने हाथ के रूप में अपनी विशेष यातनाओं का इस्तेमाल करते हुए अपनी पहचान बनाई। स्टालिन और बेरिया को नाज़ी आक्रमण की भविष्यवाणी करने में अपनी विफलता की ज़िम्मेदारी को छिपाने के लिए अपनी आंतरिक साजिश का सिद्धांत गढ़ना पड़ा ताकि वे अपने नेतृत्व की स्थिति को मजबूत कर सकें। कई लोग निर्दयतापूर्वक यातना सहते हुए मारे गए। कहा जाता है कि बोरिस और उसके आदमियों ने कम से कम पाँच लोगों की खालें उतारी थीं, और अफवाह थी कि उसने गर्व से उन खालों को अपने कार्यालय की दीवारों पर प्रदर्शित किया था।
बोरिस क्रूर तो था, लेकिन साथ ही बहुत सावधान भी था, इसी वजह से वह तमाम साजिशों और सफाइयों से बच पाया। बेरिया उसे बेटे की तरह प्यार करता था। लेकिन शायद इसी वजह से वह कुछ ज्यादा ही आत्मविश्वास से भर गया और अपनी हदें पार कर बैठा। उसकी गलती जानलेवा साबित हुई। उसने यूक्रेन में एक युद्ध के दौरान हिटलर की एसएस बख्तरबंद बटालियनों में से एक के साथ गुप्त रूप से

संपर्क करने के संदेह में एक बख्तरबंद बटालियन के कमांडर को गिरफ्तार कर लिया। उसने उस आदमी को यातना देकर मार डाला, उसके शरीर के हर अंग में गर्म लोहे की छड़ें ठोंकीं—कान, नाक, मलाशय, लिंग, जो भी हो। लेकिन वह अधिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के एक उच्च पदस्थ अधिकारी का भतीजा निकला। इतना ही नहीं, लाल सेना के जनरल स्टाफ की गहन जांच से पता चला कि वह व्यक्ति किसी भी गलत काम में पूरी तरह निर्दोष था। पार्टी अधिकारी ने तो जैसे विस्फोट ही कर दिया, और लाल सेना अपने सम्मान पर लगे ऐसे कलंक के बाद चुपचाप पीछे हटने वाली भी नहीं थी। इस बार तो बेरिया भी बोरिस की रक्षा नहीं कर पाया। उन्होंने उसे उसके पद से हटा दिया, उस पर मुकदमा चलाया और उसे तथा उसके मंगोलियाई सहायक को मौत की सजा सुनाई। हालांकि, एनकेवीडी ने काम किया और उसकी सजा को यातना शिविर में कठोर श्रम में बदलवा दिया (हालांकि मंगोलियाई को फांसी दे दी गई)। बेरिया ने जेल में बोरिस को एक गुप्त संदेश भेजा, जिसमें उसने सेना और पार्टी में अपने प्रभाव का इस्तेमाल करने का वादा किया: वह उसे रिहा करवाएगा और शिविर में एक साल की सजा काटने के बाद उसे फिर से सत्ता में बहाल कर देगा। कम से कम निकोलाई ने यही सुना था।
“देखो, मामिया,” निकोलाई ने धीमी आवाज़ में मुझसे कहा, “सबको लगता है कि बोरिस एक दिन मॉस्को वापस जाएगा, और बेरिया उसे जल्द ही बचा लेगा। यह सच है कि बेरिया को सावधान रहना होगा: यह शिविर अभी भी पार्टी और सेना के नियंत्रण में है। लेकिन हममें से कोई भी निश्चिंत नहीं हो सकता। हवा का रुख पल भर में बदल सकता है। और जब ऐसा हुआ, तो जिसने भी उसे यहाँ परेशान किया है, उसका बुरा हाल होगा। दुनिया मूर्खों से भरी हो सकती है, लेकिन कोई भी इतना मूर्ख नहीं है कि अपनी मौत के फरमान पर हस्ताक्षर कर दे। हमें

उसके आसपास दबे पांव चलना होगा। वह यहाँ एक सम्मानित अतिथि है। बेशक, हम उसे नौकर नहीं दे सकते और उसके साथ होटल जैसा व्यवहार नहीं कर सकते। दिखावे के लिए, हमें उसके पैर में जंजीर डालनी होगी और उसे कुछ पत्थर तोड़ने के लिए देने होंगे, लेकिन वास्तव में उसके पास अपना कमरा है और वह जितना चाहे उतना शराब और तंबाकू ले सकता है। अगर मुझसे पूछो, तो वह एक ज़हरीले साँप की तरह है। उसे ज़िंदा रखने से किसी का भला नहीं होगा। किसी को एक रात चुपके से वहाँ घुस जाना चाहिए और उसका गला काट दो।
एक और दिन जब मैं स्टेशन के पास से गुजर रहा था, तो उस बड़े सार्जेंट ने मुझे फिर रोक लिया। मैंने अपना पास निकालने की कोशिश की, लेकिन उसने सिर हिलाकर मुझे स्टेशन मास्टर के दफ्तर जाने को कहा। मैं हैरान था, लेकिन मैंने उसकी बात मान ली और दफ्तर में स्टेशन मास्टर नहीं, बल्कि बोरिस ग्रोमोव को पाया। वह मेज पर बैठे चाय पी रहे थे और जाहिर तौर पर मेरे आने का इंतजार कर रहे थे। मैं दरवाजे पर ही जम गया। उनके पैरों में हथकड़ियां नहीं थीं। उन्होंने हाथ से इशारा करके मुझे अंदर आने को कहा।
“आपको देखकर बहुत खुशी हुई, लेफ्टिनेंट मामिया। कई साल हो गए,” उन्होंने मुस्कुराते हुए खुशी से कहा। उन्होंने मुझे सिगरेट की पेशकश की, लेकिन मैंने मना कर दिया।
“ठीक नौ साल,” उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा। “या आठ? खैर, आपको ज़िंदा और स्वस्थ देखकर बहुत खुशी हुई। पुराने दोस्तों से मिलना कितना सुखद है! खासकर इतने क्रूर युद्ध के बाद। क्या आप सहमत नहीं हैं? और आप उस कुएं से कैसे बाहर निकले?”
मैं बस वहीं खड़ा रहा, कुछ नहीं बोला।

“ठीक है, कोई बात नहीं। ज़रूरी बात तो ये है कि तुम बच निकले। और फिर कहीं तुमने अपना एक हाथ खो दिया। और फिर तुमने इतनी धाराप्रवाह रूसी बोलना सीख लिया! कमाल है, कमाल है। एक हाथ के बिना भी काम चल सकता है। सबसे ज़रूरी बात ये है कि तुम ज़िंदा हो।”
मैंने जवाब दिया, "अपनी मर्जी से नहीं।"
बोरिस ज़ोर से हँसा। “लेफ्टिनेंट मामिया, आप बड़े ही दिलचस्प इंसान हैं। आप जीना नहीं चाहते, फिर भी यहाँ ज़िंदा हैं। जी हाँ, वाकई एक दिलचस्प इंसान। लेकिन मैं इतनी आसानी से बेवकूफ नहीं बनता। कोई साधारण आदमी उस गहरे कुएँ से अकेले नहीं बच सकता था— बचकर नदी पार करके मंचूरिया वापस नहीं आ सकता था। लेकिन चिंता मत करो। मैं किसी को नहीं बताऊंगा।”
“आपके बारे में बहुत हो गया। चलिए, मैं अपने बारे में बताता हूँ। जैसा कि आप देख सकते हैं, मैंने अपना पुराना पद खो दिया है और अब मैं एक यातना शिविर में मात्र एक कैदी हूँ। लेकिन मेरा इरादा हमेशा के लिए इस दुनिया के किनारे पर रहकर, हथौड़े से पत्थर तोड़ने का नहीं है। पार्टी के केंद्र में मैं पहले की तरह ही शक्तिशाली हूँ, और मैं उस शक्ति का उपयोग यहाँ दिन-प्रतिदिन अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए कर रहा हूँ। इसलिए मैं आपको पूरी ईमानदारी से बताता हूँ कि मैं आप जापानी युद्धबंदियों के साथ अच्छे संबंध रखना चाहता हूँ। आखिरकार, इस खदान की उत्पादकता आप लोगों पर निर्भर करती है—आपकी संख्या और आपकी कड़ी मेहनत पर। यदि हम आपकी शक्ति को अनदेखा करते हैं, तो हम कुछ भी हासिल नहीं कर सकते, और इसमें आपकी व्यक्तिगत शक्ति भी शामिल है, लेफ्टिनेंट मामिया। मैं चाहता हूँ कि आप मुझे अपनी कुछ शक्ति दें। आप क्वांगतुंग सेना के पूर्व खुफिया अधिकारी और एक बहुत

बहादुर व्यक्ति हैं। आप धाराप्रवाह रूसी बोलते हैं। यदि आप मेरे संपर्क अधिकारी के रूप में काम करेंगे, तो मैं आपके और आपके साथियों के लिए कुछ सहायता कर सकता हूँ। यह प्रस्ताव बुरा नहीं है।”
मैंने स्पष्ट रूप से कहा, "मैं कभी जासूस नहीं रहा हूँ, और मेरा अब जासूस बनने का कोई इरादा नहीं है।"
“मैं आपसे जासूस बनने के लिए नहीं कह रहा हूँ,” बोरिस ने मुझे शांत करने के अंदाज़ में कहा। “मैं बस इतना कह रहा हूँ कि मैं आपके लोगों के लिए चीज़ें आसान बना सकता हूँ। मैं संबंध सुधारने का प्रस्ताव दे रहा हूँ, और मैं चाहता हूँ कि आप मध्यस्थ बनें। साथ मिलकर, हम उस नीच जॉर्जियाई पोलित ब्यूरो के नेता को उसकी कुर्सी से उतार सकते हैं। मैं यह कर सकता हूँ, खुद को धोखा मत दीजिए। मुझे यकीन है कि आप जापानी लोग उससे नफरत करते हैं। एक बार जब हम उससे छुटकारा पा लेंगे, तो आप लोगों को आंशिक स्वायत्तता मिलेगी, आप समितियाँ बना सकते हैं, आप अपना संगठन चला सकते हैं। तब कम से कम आप गार्डों को जब चाहे क्रूर व्यवहार करने से रोक सकेंगे। आप सभी इसी की उम्मीद कर रहे थे, है ना?”
बोरिस उस बारे में सही था। हम इन मामलों को लेकर शिविर अधिकारियों से लंबे समय से अपील कर रहे थे, और वे हमेशा हमें साफ मना कर देते थे। "और बदले में आपको क्या चाहिए?" मैंने पूछा। “लगभग कुछ नहीं,” उन्होंने बड़ी मुस्कान के साथ दोनों बाहें फैलाते हुए कहा। “मैं बस आप जापानी युद्धबंदियों के साथ घनिष्ठ, मैत्रीपूर्ण संबंध चाहता हूँ। मैं अपने कुछ पार्टी साथियों, अपने तोवरिषों को खत्म करना चाहता हूँ, जिनके साथ लगता है कि मैं कोई समझौता नहीं कर पा रहा हूँ, और इसके लिए मुझे आप लोगों

के सहयोग की आवश्यकता है। हमारे कई हित एक जैसे हैं, तो क्यों न हम आपसी लाभ के लिए हाथ मिला लें? अमेरिकी क्या कहते हैं? ‘लेन-देन’? यदि आप मेरे साथ सहयोग करेंगे, तो मैं आपके नुकसान के लिए कुछ नहीं करूँगा। मेरे पास कोई चालबाज़ी नहीं है। मैं जानता हूँ, बेशक, मैं आपसे मुझे पसंद करने की अपेक्षा नहीं कर सकता। यह सच है कि हम दोनों के बीच कुछ अप्रिय यादें हैं। लेकिन दिखावे को छोड़ दें तो, मैं एक ईमानदार व्यक्ति हूँ। मैं हमेशा अपने वादे निभाता हूँ। तो क्यों न हम पुरानी बातों को भुला दें?” “कुछ दिन का समय लो, मेरे प्रस्ताव पर विचार करो और मुझे पक्का जवाब दो। मुझे लगता है कि कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं है। तुम लोगों का कुछ भी नुकसान नहीं होगा, क्या तुम सहमत नहीं हो? अब, यह बात सिर्फ़ उन्हीं लोगों को बताओ जिन पर तुम्हें पूरा भरोसा हो। तुम्हारे कुछ आदमी पोलित ब्यूरो सदस्य के साथ मुखबिर के तौर पर काम कर रहे हैं। ध्यान रखना कि उन्हें इसकी भनक न लगे। अगर उन्हें पता चल गया तो हालात बिगड़ सकते हैं। यहाँ मेरी शक्ति अभी भी सीमित है।”
मैं अपने इलाके में वापस गया और बोरिस के प्रस्ताव पर चर्चा करने के लिए एक आदमी को अलग ले गया। यह आदमी सेना में लेफ्टिनेंट कर्नल रह चुका था। वह एक सख्त मिजाज और तेज दिमाग वाला व्यक्ति था। एक ऐसी यूनिट का कमांडर, जिसने खुद को खिंगन पर्वत के किले में बंद कर लिया था और जापान के आत्मसमर्पण के बाद भी सफेद झंडा उठाने से इनकार कर दिया था, वह अब शिविर में बंद जापानी युद्धबंदियों का अनौपचारिक नेता था, एक ऐसी ताकत जिससे रूसियों को निपटना ही था। खलखा नदी के किनारे यामामोतो के साथ हुई घटना को छुपाते हुए, मैंने उसे बताया कि बोरिस गुप्त पुलिस में एक उच्च पदस्थ अधिकारी रह चुका है और उसके प्रस्ताव

जैसी लगे, लेकिन ये स्पष्ट रूप से अन्य जापानियों द्वारा की गई लिंचिंग थी। ये तीनों वही मुखबिर रहे होंगे जिनका जिक्र बोरिस ने किया था। इस मामले में कभी कोई जांच नहीं हुई। तब तक, बोरिस ने लगभग पूरे शिविर पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था।

चमगादड़ गायब हो जाता है

•

चोर मैगपाई की वापसी
स्वेटर और पी-कोट पहने, ऊनी टोपी को आँखों तक नीचे खींचकर, मैं पीछे की दीवार फांदकर गली में उतर गया। सूरज अभी उगने वाला नहीं था, और लोग अभी भी सो रहे थे। मैं दबे पांव गली से होते हुए निवास स्थान की ओर बढ़ा।
घर के अंदर सब कुछ वैसा ही था जैसा मैंने छह दिन पहले छोड़ा था, सिंक में गंदे बर्तन पड़े थे। मुझे कोई लिखित संदेश नहीं मिला और न ही आंसरिंग मशीन पर कोई आवाज़ आई। सिनेमन के कमरे में कंप्यूटर की स्क्रीन पहले की तरह ही ठंडी और बेजान थी। हीटर कमरे को सामान्य तापमान पर बनाए हुए था। मैंने अपना कोट और दस्ताने उतारे, फिर पानी उबाला और अपने लिए चाय बनाई। मैंने नाश्ते में कुछ बिस्कुट और पनीर खाया, सिंक में बर्तन धोए और उन्हें रख दिया। फिर से नौ बज गए, लेकिन सिनेमन का कोई अता-पता नहीं था।

•

मैं आंगन में गया, कुएँ का ढक्कन हटाया और अंदर देखने के लिए झुका। वहाँ वही घना अंधेरा था। अब मैं उस कुएँ को ऐसे जानता था मानो वह मेरे शरीर का ही एक हिस्सा हो: उसका अंधेरा, उसकी गंध और उसकी खामोशी, सब मेरे भीतर समा गए थे। एक तरह से, मैं कुएँ को कुमिको से भी ज़्यादा जानता था। उसकी यादें तो अभी भी ताज़ा थीं, बेशक। अगर मैं अपनी आँखें बंद कर लेता, तो मुझे उसकी आवाज़, उसका चेहरा, उसका शरीर, उसके चलने का तरीका, सब कुछ याद आ जाता। आख़िरकार, मैं छह साल तक उसी घर में उसके साथ रहा था। फिर भी,

मुझे लगता था कि उसके बारे में कुछ बातें ऐसी थीं जिन्हें मैं इतनी स्पष्टता से याद नहीं कर पा रहा था। या शायद मैं इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं था कि जो मैं याद कर रहा था वह सही था—ठीक वैसे ही जैसे बिल्ली के वापस आने पर उसकी पूंछ का घुमाव मुझे ठीक से याद नहीं था।
मैं कुएँ के किनारे बैठ गया, अपने हाथ कोट की जेबों में डाले और एक बार फिर अपने आस-पास का जायज़ा लिया। ऐसा लग रहा था मानो किसी भी पल ठंडी बारिश या बर्फ़बारी शुरू हो सकती है। हवा तो नहीं चल रही थी, लेकिन हवा में गहरी ठंडक थी। छोटे-छोटे पक्षियों का एक झुंड आकाश में इधर-उधर तेज़ी से उड़ रहा था, मानो कोई सांकेतिक चित्रलिपि बना रहा हो, और फिर अचानक गायब हो गया। थोड़ी देर बाद मुझे एक जेट विमान की धीमी गड़गड़ाहट सुनाई दी, लेकिन घने बादलों के ऊपर विमान दिखाई ही नहीं दिया। ऐसे अंधेरे, बादलों से घिरे दिन में, मैं बिना किसी चिंता के कुएँ में जा सकता था कि बाहर आने पर सूरज की रोशनी मेरी आँखों को चुभेगी।
फिर भी, मैं कुछ देर वहीं बैठा रहा, कुछ नहीं कर रहा था। मुझे कोई जल्दी नहीं थी। दिन अभी शुरू ही हुआ था। दोपहर होने में अभी काफी समय था। कुएं के किनारे बैठे-बैठे मैं उन विचारों में खो गया जो बेतरतीब ढंग से मेरे मन में आ रहे थे। इस आंगन में जो चिड़िया की मूर्ति हुआ करती थी, वो कहाँ चली गई? क्या वो अब किसी और आंगन की शोभा बढ़ा रही है, आसमान में उड़ने की एक अंतहीन, व्यर्थ इच्छा से प्रेरित होकर? या फिर पिछली गर्मियों में जब मियावाकी का घर गिराया गया था, तब उसे कचरे में फेंक दिया गया था? मुझे उस मूर्ति की याद आ रही थी। मुझे लगा कि चिड़िया की मूर्ति के बिना, आंगन का एक सूक्ष्म संतुलन खो गया है।

ग्यारह बजने के बाद जब मेरे सारे विचार खत्म हो गए, तो मैं स्टील की सीढ़ी से उतरकर कुएँ में गया। कुएँ की तलहटी में पैर रखते ही मैंने हमेशा की तरह गहरी साँसें लीं और हवा की जाँच की। हवा पहले जैसी ही थी, थोड़ी सी फफूंद की गंध थी, लेकिन साँस लेने लायक थी। मैंने उस चमगादड़ को ढूँढा जहाँ मैंने उसे दीवार के सहारे रखा था। वह वहाँ नहीं था। कहीं भी नहीं था। वह गायब हो गया था। पूरी तरह से। बिना किसी निशान के।

•

मैं कुएं के तल पर उतर गया और दीवार से टेक लगाकर बैठ गया, आह भरते हुए।
बल्ला किसने लिया होगा? केवल सिनेमन ही एकमात्र संभावना थी। वही एकमात्र व्यक्ति था जिसे इसके अस्तित्व के बारे में पता था, और शायद वही एकमात्र व्यक्ति था जो कुएं में उतरने के बारे में सोच सकता था। लेकिन बल्ला ले जाने का उसका क्या कारण हो सकता था? यह एक ऐसी बात थी जो मेरी समझ से परे थी—उन अनेक बातों में से एक जो मेरी समझ से परे थीं।
आज मेरे पास बल्ले के बिना आगे बढ़ने के अलावा कोई चारा नहीं था। और यह भी ठीक ही होता। आखिर बल्ला तो बस एक तरह का सुरक्षा कवच ही था। उसके बिना कोई दिक्कत नहीं थी। मैं उसके बिना ही उस कमरे में घुसने में कामयाब हो गया था, है ना? इन तर्कों को मन में बिठाने के बाद, मैंने कुएँ के ढक्कन को बंद करने वाली रस्सी खींची। मैंने अपने हाथ घुटनों पर रखे और अंधेरे में आँखें बंद कर लीं।
पिछली बार की तरह, मैं मनचाहा एकाग्रचित्त नहीं कर पाया। तरह-तरह के विचार उमड़ पड़े, मानो रास्ता रोक रहे हों। उनसे छुटकारा पाने के लिए, मैंने स्विमिंग पूल के बारे में सोचना शुरू किया—

आ रही है और साथ ही, मेरे अपने दिमाग के अंदर से भी। घोर अंधेरे में इन दोनों के बीच की सीमा निर्धारित करना लगभग असंभव था।
उस आवाज़ पर पूरा ध्यान केंद्रित करते हुए, मुझे नींद आ गई। इससे पहले मुझे नींद आने का ज़रा भी एहसास नहीं था। अचानक ही, मैं सो गया, मानो मैं किसी गलियारे में बिना किसी विचार के चल रहा था और अचानक ही मुझे एक अनजान कमरे में खींच लिया गया। यह गहरा, कीचड़ जैसा बेहोशी का भाव मुझे कितनी देर तक घेरे रहा, इसका मुझे कोई अंदाज़ा नहीं था। ज़्यादा देर नहीं हुई होगी। शायद एक पल ही बीता होगा। लेकिन जब किसी देह के आभास ने मुझे होश में लाया, तो मुझे पता चला कि मैं एक अलग ही अंधेरे में हूँ। हवा अलग थी, तापमान अलग था, अंधेरे की गुणवत्ता और गहराई अलग थी। यह अंधेरा किसी धुंधली, अस्पष्ट रोशनी से भरा हुआ था। और पराग की एक जानी-पहचानी तीखी गंध मेरी नाक में घुस गई। मैं उस अजीब से होटल के कमरे में था।
मैंने अपना चेहरा ऊपर उठाया, अपने आसपास का जायजा लिया और अपनी सांस रोक ली।
मैं दीवार तोड़कर अंदर आ गया था।
मैं कालीन बिछे फर्श पर बैठा था, मेरी पीठ कपड़े से ढकी दीवार से टिकी हुई थी। मेरे हाथ अभी भी मेरे घुटनों पर मुड़े हुए थे। कुछ ही पल पहले मेरी नींद जितनी गहरी थी, अब मैं पूरी तरह से जाग चुका था। यह अंतर इतना ज़बरदस्त था कि मुझे अपनी जागृति को समझने में थोड़ा समय लगा। मेरे दिल की तेज़ धड़कनें साफ़ सुनाई दे रही थीं। इसमें कोई शक नहीं था। मैं यहाँ था। मैं आखिरकार कमरे तक पहुँच ही गया था।

•

घने, कई परतों वाले अंधेरे में, कमरा बिल्कुल वैसा ही दिख रहा था जैसा मुझे याद था। जैसे-जैसे मेरी आँखें अंधेरे की आदी होती गईं, मुझे कुछ मामूली अंतर नज़र आने लगे। सबसे पहले, टेलीफ़ोन अपनी जगह से हट गया था। वह नाइट टेबल से हटकर एक तकिए के ऊपर आ गया था, जिसमें वह लगभग दब गया था। फिर मैंने देखा कि बोतल में व्हिस्की की मात्रा कम हो गई थी। अब बस थोड़ी सी बची थी। बाल्टी की सारी बर्फ पिघल चुकी थी और अब बस पुराना, धुंधला पानी ही था। गिलास अंदर से सूखा था, और जब मैंने उसे छुआ तो महसूस किया कि उस पर सफेद धूल जमी हुई थी। मैं बिस्तर के पास गया, फ़ोन उठाया और रिसीवर कान से लगाया। लाइन कटी हुई थी। कमरा ऐसा लग रहा था जैसे उसे छोड़ दिया गया हो, बहुत लंबे समय से भुला दिया गया हो। वहाँ किसी इंसान की मौजूदगी का कोई आभास नहीं था। केवल फूलदान में रखे फूल ही अपनी अजीब सी ताजगी बनाए हुए थे।
बिस्तर पर किसी के लेटने के संकेत मिल रहे थे: चादरें, कंबल और तकिए थोड़े अस्त-व्यस्त थे। मैंने कंबल हटाकर गर्माहट महसूस करने की कोशिश की, पर कोई गर्माहट नहीं थी। सौंदर्य प्रसाधनों की भी कोई गंध नहीं थी। ऐसा लग रहा था मानो बिस्तर छोड़े काफी समय बीत चुका हो। मैं बिस्तर के किनारे बैठ गई, कमरे का फिर से जायजा लिया और आवाजों को सुनने की कोशिश की। पर कुछ सुनाई नहीं दिया। वह जगह किसी प्राचीन मकबरे जैसी लग रही थी, जैसे कब्र लुटेरे शव को उठाकर ले गए हों।

•

अचानक फोन बजने लगा। मेरा दिल डरी हुई बिल्ली की तरह जम गया। हवा की तेज़ गड़गड़ाहट से हवा में तैरते पराग के कण हिल उठे और फूलों की पंखुड़ियाँ अंधेरे में ऊपर उठ उठीं। आखिर फोन कैसे बज रहा था? कुछ ही पल पहले तो यह बिल्कुल शांत था। मैंने अपनी

साँसों को संभाला, दिल की धड़कन को शांत किया और यह सुनिश्चित किया कि मैं अभी भी कमरे में ही हूँ। मैंने अपना हाथ बढ़ाया, अपनी उंगलियों से रिसीवर को छुआ और उसे उठाने से पहले एक पल के लिए झिझकी। तब तक फोन तीन-चार बार बज चुका था।
“हैलो।” जैसे ही मैंने रिसीवर उठाया, फोन कट गया। मौत का अपूरणीय बोझ मेरे हाथ में रेत की बोरी की तरह भारी हो गया। “हैलो,” मैंने फिर कहा, लेकिन मेरी सूखी आवाज़ वैसी ही वापस आई, मानो किसी मोटी दीवार से टकराकर वापस आ रही हो। मैंने रिसीवर नीचे रख दिया, फिर उसे उठाकर सुना। कोई आवाज़ नहीं थी। मैं बिस्तर के किनारे बैठ गया, अपनी साँसों को नियंत्रित करने की कोशिश करते हुए फोन के फिर से बजने का इंतज़ार करने लगा। फोन नहीं बजा। मैंने हवा में तैरते कणों को बेहोशी में डूबते और अंधेरे में समाते देखा। मैंने अपने मन में फोन की आवाज़ को बार-बार दोहराया। मुझे अब पूरी तरह यकीन नहीं था कि फोन बजा भी था। लेकिन अगर मैं ऐसे संदेहों को मन में आने देता, तो उनका कोई अंत नहीं होता। मुझे कहीं न कहीं एक सीमा खींचनी ही थी। वरना, इस जगह पर मेरा अस्तित्व ही सवालों के घेरे में आ जाता। फोन बजा था; इसमें कोई गलती नहीं हो सकती। और अगले ही पल, फोन कट गया। मैंने गला साफ किया, लेकिन वह आवाज़ भी हवा में तुरंत गायब हो गई।
मैं खड़ा हुआ और कमरे का एक चक्कर लगाया। मैंने फर्श को गौर से देखा, छत को टकटकी लगाकर देखा, मेज पर बैठा, दीवार से टेक लगाकर खड़ा हुआ, दरवाज़े के हैंडल को जल्दी से घुमाया, और नीचे लगे लैंप का स्विच ऑन-ऑफ किया। ज़ाहिर है, हैंडल हिला तक नहीं और लैंप भी बंद था। खिड़की बाहर से बंद थी। मैंने हर संभव आवाज़ सुनने की कोशिश की, लेकिन सन्नाटा किसी चिकनी, ऊँची दीवार जैसा था। फिर भी, मुझे यहाँ किसी चीज़ की मौजूदगी का एहसास हुआ जो

मुझे धोखा देने की कोशिश कर रही थी, मानो बाकी लोग अपनी साँस रोक रहे हों, खुद को दीवार से चिपका रहे हों, अपनी त्वचा का रंग मिटा रहे हों ताकि मुझे पता न चले कि वे वहाँ हैं। इसलिए मैंने अनदेखा करने का नाटक किया। हम एक-दूसरे को बेवकूफ बनाने में माहिर थे। मैंने फिर से गला साफ किया और अपनी उंगलियों को होठों से छुआ।
मैंने कमरे का एक बार फिर निरीक्षण करने का फैसला किया। मैंने फिर से फ्लोर लैंप जलाकर देखा, लेकिन उससे कोई रोशनी नहीं निकली। मैंने व्हिस्की की बोतल खोली और उसमें बची हुई व्हिस्की को सूंघा। गंध में कोई बदलाव नहीं था। कटी सार्क की गंध थी। मैंने ढक्कन वापस लगा दिया और बोतल को मेज पर रख दिया। मैंने एक बार फिर रिसीवर कान से लगाया, लेकिन फोन पहले से भी ज्यादा खराब था। मैंने धीरे-धीरे कुछ कदम चलकर अपने जूतों से कालीन को महसूस किया। मैंने अपना कान दीवार से सटाकर पूरी तरह ध्यान लगाकर यह सुनने की कोशिश की कि कहीं से कोई आवाज तो नहीं आ रही है, लेकिन ज़ाहिर है, कुछ भी नहीं था। मैं दरवाजे के पास गया और यह जानते हुए कि ऐसा करना व्यर्थ है, मैंने हैंडल को घुमाया। वह आसानी से दाईं ओर घूम गया। एक पल के लिए, मैं इस बात को स्वीकार नहीं कर पाया। पहले, हैंडल इतना मजबूत था मानो सीमेंट में जमा हो। मैं फिर से शुरू से कोशिश करने लगा, हैंडल से हाथ हटाकर, उसे फिर से पकड़कर आगे-पीछे घुमाया। वह मेरे हाथ में आसानी से घूम गया। इससे मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई, मानो मेरी जीभ मेरे मुंह के अंदर सूज रही हो।
दरवाज़ा खुला था।
मैंने दरवाज़े का हैंडल तब तक खींचा जब तक वह इतना अंदर नहीं खुल गया कि कमरे में तेज़ रोशनी आ गई। बल्ला! काश मेरे पास बल्ला

होता, तो मुझे ज़्यादा आत्मविश्वास होता। अरे, बल्ले को छोड़ो! मैंने दरवाज़ा पूरी तरह खोल दिया। यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई अंदर नहीं है, मैंने पहले बाएँ, फिर दाएँ देखा और बाहर कदम रखा। यह एक लंबा, कालीन बिछा हुआ गलियारा था। गलियारे में थोड़ी दूर आगे मुझे फूलों से भरा एक बड़ा फूलदान दिखाई दिया। यह वही फूलदान था जिसके पीछे मैं तब छिपा था जब सीटी बजाता हुआ वेटर इस दरवाज़े पर दस्तक दे रहा था। मेरी याद में, गलियारा लंबा था, जिसमें कई मोड़ और शाखाएँ थीं। मैं यहाँ तक इसलिए पहुँच पाया क्योंकि मुझे गलियारे में सीटी बजाता हुआ वेटर मिला और मैं उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। दरवाज़े पर लगी नंबर प्लेट से पता चला कि यह कमरा नंबर 208 था।
संभलकर कदम बढ़ाते हुए मैं फूलदान की ओर बढ़ा। मुझे उम्मीद थी कि मैं लॉबी तक पहुँचने का रास्ता खोज लूँगा, जहाँ नोबोरू वटाया टीवी पर दिखाई दे रहे थे। लॉबी में बहुत से लोग इधर-उधर आ-जा रहे थे। शायद मुझे वहाँ कोई सुराग मिल जाए। लेकिन होटल में भटकना किसी विशाल रेगिस्तान में बिना दिशा-निर्देश के भटकने जैसा था। अगर मैं लॉबी नहीं खोज पाया और फिर कमरा नंबर 208 तक वापस जाने का रास्ता भी नहीं मिला, तो मैं इस भूलभुलैया में फँस सकता था और असली दुनिया में वापस लौटना नामुमकिन हो जाता।
लेकिन अब हिचकिचाने का समय नहीं था। शायद यही मेरा आखिरी मौका था। मैं छह महीने से हर दिन कुएँ की तलहटी में इंतज़ार कर रहा था, और अब आखिरकार मेरे सामने दरवाज़ा खुल गया था। इसके अलावा, कुआँ भी जल्द ही मुझसे छीन लिया जाएगा। अगर मैं अब असफल हो गया, तो मेरा सारा समय और मेहनत व्यर्थ हो जाएगी।
मैं कई मोड़ मुड़ा। मेरे गंदे टेनिस के जूते कालीन पर बिना आवाज़ किए सरक रहे थे। मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था—न

आवाज़, न संगीत, न टीवी, यहाँ तक कि वेंटिलेटर का पंखा या लिफ्ट की आवाज़ भी नहीं। होटल एकदम शांत था, मानो समय द्वारा भुला दिया गया कोई खंडहर हो। मैं कई मोड़ मुड़ा और कई दरवाज़ों के पास से गुज़रा। गलियारा बार-बार दो भागों में बँट रहा था, और मैं हमेशा दाईं ओर जाता था, इस सोच के साथ कि अगर मुझे वापस जाना पड़ा, तो मैं केवल बाईं ओर मुड़कर अपना कमरा पा सकूँगा। लेकिन अब तक, दिशा का मेरा ज्ञान पूरी तरह से खो चुका था। मुझे किसी भी चीज़ के नज़दीक होने का एहसास नहीं हो रहा था। दरवाज़ों पर लिखे नंबरों का कोई क्रम नहीं था, और वे अंतहीन रूप से गुज़र रहे थे, इसलिए उनसे कोई मदद नहीं मिल रही थी। वे मेरी चेतना से लगभग गायब हो गए, इससे पहले कि वे मेरी स्मृति में दर्ज हो पाते। कभी- कभी मुझे लगता था कि मैं उनमें से कुछ के पास से पहले भी गुज़र चुका हूँ। मैं गलियारे के बीच में रुक गया और गहरी साँस ली। क्या मैं बार-बार उसी जगह पर चक्कर लगा रहा था, जैसे कोई जंगल में खो जाने पर करता है?

•

मैं वहीं खड़ा सोच रहा था कि क्या करूँ, तभी मुझे दूर से एक जानी- पहचानी आवाज़ सुनाई दी। यह सीटी बजाने वाले वेटर की आवाज़ थी। उसकी सीटी एकदम सटीक थी। उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था। पहले की तरह, वह रॉसिनी के संगीत 'द थीविंग मैगपाई' का ओवरचर सीटी बजा रहा था—यह आसान धुन नहीं है, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उसे कोई परेशानी नहीं हो रही हो। मैं सीटी की आवाज़ की दिशा में गलियारे में आगे बढ़ा, जो धीरे-धीरे तेज़ और साफ़ होती जा रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह मेरी तरफ आ रहा है। मैंने एक बड़ा सा खंभा देखा और उसके पीछे छिप गया।

वेटर फिर से एक चांदी की ट्रे लेकर आया, जिस पर हमेशा की तरह कटी सार्क की बोतल, एक बर्फ की बाल्टी और दो गिलास रखे थे। वह सीधे आगे देखते हुए मेरे पास से तेज़ी से गुज़रा, उसके चेहरे पर ऐसा भाव था मानो वह अपनी ही सीटी की आवाज़ में खोया हुआ हो। उसने मेरी तरफ देखा तक नहीं; वह इतनी जल्दी में था कि एक पल भी फालतू नहीं था। सब कुछ पहले जैसा ही है, मैंने सोचा। ऐसा लगा जैसे मेरा शरीर समय में पीछे चला गया हो।
वेटर के मेरे पास से गुज़रते ही मैं उसके पीछे चल दिया। उसकी चांदी की ट्रे उसकी सीटी की धुन पर धीरे-धीरे हिल रही थी, और बीच-बीच में छत की बत्ती की रोशनी उस पर पड़ रही थी। वह 'द थीविंग मैगपाई' की धुन को बार-बार दोहरा रहा था, मानो कोई जादू कर रहा हो। 'द थीविंग मैगपाई' किस तरह का ओपेरा था? मैंने सोचा। मुझे बस इतना ही पता था कि इसकी प्रस्तावना की धुन नीरस है और इसका शीर्षक रहस्यमय है। जब मैं छोटा था, तब हमारे घर में इसकी प्रस्तावना की रिकॉर्डिंग थी। इसका संचालन टोस्कानिनी ने किया था। क्लॉडियो अब्बाडो के युवा, प्रवाहमय और समकालीन प्रदर्शन की तुलना में, टोस्कानिनी के प्रदर्शन में एक अलग ही तीव्रता थी, मानो किसी शक्तिशाली दुश्मन को भीषण युद्ध के बाद धीरे-धीरे गला घोंटकर मार डाला जा रहा हो। लेकिन क्या 'द थीविंग मैगपाई' सचमुच एक चोरी करने वाली मैगपाई की कहानी थी? अगर कभी हालात सामान्य हुए, तो मुझे पुस्तकालय जाकर संगीत के विश्वकोश में इसका पता लगाना होगा। अगर उपलब्ध हो तो मैं शायद ओपेरा की पूरी रिकॉर्डिंग भी खरीद लूँ। या शायद नहीं। तब तक शायद मुझे इन सवालों के जवाब जानने की परवाह ही न हो।
सीटी बजाता हुआ वेटर रोबोट की तरह पूरी नियमितता से सीधे आगे बढ़ता रहा, और मैं एक निश्चित दूरी पर उसके पीछे-पीछे चलता रहा।

मुझे बिना सोचे-समझे ही पता था कि वह कहाँ जा रहा है। वह कमरा नंबर 208 में कटी सार्क की ताज़ी बोतल, बर्फ और गिलास पहुँचाने जा रहा था। और सचमुच, वह कमरा नंबर 208 के सामने आकर रुक गया। उसने ट्रे को अपने बाएँ हाथ में लिया, कमरे का नंबर देखा, सीधा खड़ा हुआ और दरवाज़े पर एक औपचारिक दस्तक दी। तीन बार दस्तक, फिर तीन बार।
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि अंदर से कोई जवाब आ रहा है या नहीं। मैं फूलदान के पीछे छिपकर वेटर को देख रहा था। समय बीतता गया, लेकिन वेटर वैसे ही खड़ा रहा, मानो सहनशक्ति की सीमाओं को चुनौती देने की योजना बना रहा हो। उसने दोबारा दस्तक नहीं दी, बल्कि दरवाजे के खुलने का इंतजार किया। आखिरकार, मानो किसी प्रार्थना का उत्तर मिला हो, दरवाजा अंदर की ओर खुलने लगा।

डालता था। कोई भी उन पर हाथ नहीं उठा सकता था। नियमित सेना इकाइयों से खदान की सुरक्षा के लिए भेजे गए सैनिक, अपनी नाक के नीचे हो रही घटनाओं को अनदेखा करने का नाटक करते थे। तब तक, सेना भी बोरिस को छू नहीं सकती थी। सैनिक पृष्ठभूमि में रहकर, रेलवे स्टेशन और अपनी बैरकों की निगरानी करते रहे, खदान और शिविर में चल रही घटनाओं के प्रति उदासीनता का रवैया अपनाते रहे।
बोरिस के चुने हुए पहरेदारों में से उसका सबसे पसंदीदा कैदी "तातार" के नाम से जाना जाता था, जो कथित तौर पर मंगोलियाई कुश्ती चैंपियन रह चुका था। वह बोरिस के साथ परछाई की तरह चिपका रहता था। उसके दाहिने गाल पर जलने का एक बड़ा निशान था, जिसके बारे में लोग कहते थे कि उसे यातना से मिला था। बोरिस ने अब जेल के कपड़े पहनना छोड़ दिया था और वह एक साफ-सुथरी छोटी सी कुटिया में रहने लगा था, जिसे एक महिला कैदी उसके लिए साफ रखती थी। निकोलई (जो अब किसी भी बात पर बोलने से कतरा रहा था) के अनुसार, उसके कई परिचित रूसी रातों-रात गायब हो गए थे। आधिकारिक तौर पर उन्हें लापता या दुर्घटना में शामिल बताया गया था, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि बोरिस के गुंडों ने उनका काम तमाम कर दिया था। बोरिस के आदेशों का पालन न करने या उसे खुश न करने पर अब लोगों की जान खतरे में थी। कुछ लोगों ने शिविर में हो रहे अत्याचारों के बारे में सीधे पार्टी केंद्र में शिकायत करने की कोशिश की, लेकिन उसके बाद उन्हें फिर कभी नहीं देखा गया। "मैंने सुना है कि उन्होंने एक सात साल के बच्चे को उसके माता-पिता को काबू में रखने के लिए मार डाला। उन्होंने उसे सबके सामने पीट-पीटकर मार डाला," निकोलई ने पीले पड़े चेहरे के साथ मुझसे फुसफुसाते हुए कहा।

जापानियों को, अपने श्रम की देखरेख स्वयं करनी थी, उन रूसियों की जगह जो कभी यह काम करते थे।
बेशक, असंतोष केवल युद्धबंदियों में ही पनपा। जहाँ कभी हमारा एक छोटा सा समाज था जो अपने दुखों को समान रूप से बाँटता था, वहाँ अन्याय की भावना पनपने लगी, और उसके साथ ही गहरी नफरत और संदेह भी। बोरिस की सेवा करने वालों को हल्के काम और विशेष सुविधाएँ दी गईं, जबकि जो लोग ऐसा नहीं करते थे उन्हें कठोर जीवन जीना पड़ता था—अगर जीने की अनुमति भी मिलती थी तो। कोई भी शिकायत करने के लिए आवाज नहीं उठा सकता था, क्योंकि खुले विरोध का मतलब मौत था। किसी को बर्फीले शेड में फेंक दिया जा सकता था जहाँ वह ठंड और भूख से मर जाता था, या सोते समय उसके चेहरे पर गीला तौलिया दबा दिया जाता था, या खदान में काम करते समय उसकी खोपड़ी को कुल्हाड़ी से चीर दिया जाता था। वहाँ नीचे, आप किसी शाफ्ट के तल में जा सकते थे। खदान के अंधेरे में क्या होता था, यह कोई नहीं जानता था। लोग बस गायब हो जाते थे।
मुझे इस बात का बहुत दुख था कि मैंने बोरिस और कर्नल को मिलवाया था। बेशक, अगर मैं इसमें दखल न देता, तो बोरिस किसी न किसी तरह से हमारे बीच घुसपैठ कर ही लेता, और नतीजे भी वैसे ही होते, लेकिन इन विचारों से मेरा दर्द कम नहीं हुआ। मैंने एक बहुत बड़ी गलती कर दी थी।
एक दिन अचानक मुझे उस इमारत में बुलाया गया जिसे बोरिस अपना दफ्तर इस्तेमाल करता था। मैंने उसे बहुत समय से नहीं देखा था। वह एक मेज पर बैठा चाय पी रहा था, ठीक वैसे ही जैसे उसने मुझे थाने के दफ्तर में देखा था। उसके पीछे, कमर में बड़ी कैलिबर की स्वचालित पिस्तौल लिए, सावधान मुद्रा में खड़ा था वह तातार। जब

मैं कमरे में दाखिल हुआ, बोरिस ने मंगोलियाई की ओर मुड़कर उसे जाने का इशारा किया। हम दोनों अकेले रह गए।
"तो फिर, लेफ्टिनेंट मामिया, मैंने अपना वादा निभा दिया है, आप देख सकते हैं।"
मैंने जवाब दिया, "हाँ, बिल्कुल।" उसने जो कहा था, दुर्भाग्य से वह सच था। उसने मुझसे जो भी वादा किया था, वह सब पूरा हो गया था। यह शैतान के साथ किए गए समझौते जैसा था।
“आपके पास अपनी स्वायत्तता है, और मेरे पास अपनी शक्ति,” उन्होंने मुस्कुराते हुए और बाहें फैलाते हुए कहा। “हम दोनों को वह मिल गया जो हम चाहते थे। कोयले का उत्पादन बढ़ गया है, और मॉस्को खुश है। इससे ज़्यादा भला क्या चाहिए? मध्यस्थ के रूप में काम करने के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ, और बदले में मैं आपके लिए कुछ करना चाहूँगा।”
मैंने जवाब दिया, ऐसी कोई आवश्यकता नहीं थी।
“लेफ्टिनेंट, आपको इतना दूर रहने की कोई ज़रूरत नहीं है। हम दोनों का रिश्ता बहुत पुराना है,” बोरिस मुस्कुराते हुए बोला। “मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ यहाँ काम करें। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे सहायक बनें। दुर्भाग्य से, यहाँ सोचने-समझने वाले लोगों की बहुत कमी है। आपका एक हाथ भले ही न हो, लेकिन मैं देख सकता हूँ कि आपका तेज़ दिमाग इसकी भरपाई कर देता है। अगर आप मेरे सचिव के रूप में काम करेंगे, तो मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा और यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास करूँगा कि आपको यहाँ आराम मिले। इस तरह, आप सुरक्षित रहेंगे और जापान वापस जाने का रास्ता भी तय कर लेंगे। मेरे साथ मिलकर काम करना आपके लिए फ़ायदेमंद ही होगा।”

आम तौर पर, मैं ऐसे प्रस्ताव को तुरंत ठुकरा देता। मेरा अपने साथियों को धोखा देने और बोरिस के सहायक के रूप में काम करके आराम से जीवन बिताने का कोई इरादा नहीं था। और अगर उसे ठुकराने का मतलब मेरी हत्या करवाना होता, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होती। लेकिन जैसे ही उसने अपना प्रस्ताव रखा, मेरे मन में एक योजना बनने लगी।
मैंने पूछा, "आप मुझसे किस तरह का काम करवाना चाहते हैं?" बोरिस ने मेरे लिए जो योजना बनाई थी, वह आसान काम नहीं था। निपटाने के लिए कामों की कोई सीमा नहीं थी, जिनमें सबसे बड़ा काम बोरिस की निजी संपत्ति का प्रबंधन था। बोरिस मॉस्को और अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस द्वारा शिविर में भेजे जा रहे खाद्य पदार्थों, कपड़ों और चिकित्सा सामग्री का लगभग चालीस प्रतिशत हिस्सा खुद ही हड़प लेता था, उन्हें गुप्त गोदामों में जमा करता था और अलग-अलग खरीदारों को बेच देता था। वह कोयले से भरी पूरी रेलगाड़ियाँ भी काला बाजार के माध्यम से भेजता था। ईंधन की भारी कमी थी और उसकी मांग कभी खत्म नहीं होती थी। वह रेलकर्मियों और स्टेशन मास्टर को रिश्वत देता था और अपने फायदे के लिए मनमाने ढंग से रेलगाड़ियाँ चलाता था। भोजन और पैसे से रेल की रखवाली कर रहे सैनिक उसकी हरकतों पर आंखें मूंद लेते थे। इन "व्यापारिक" तरीकों के कारण बोरिस ने एक बड़ी दौलत जमा कर ली थी। उसने मुझे समझाया कि यह अंततः गुप्त पुलिस के परिचालन पूंजी के रूप में इस्तेमाल होने वाली थी। "हमारी गतिविधि," जैसा कि उसने इसे नाम दिया था, के लिए सार्वजनिक रिकॉर्ड से बाहर बड़ी रकम की आवश्यकता थी, और वह अब उन गुप्त निधियों को "इकट्ठा" करने में लगा हुआ था। लेकिन यह झूठ था। कुछ पैसा शायद मॉस्को जा रहा था, लेकिन मुझे पूरा यकीन था कि आधे से ज़्यादा पैसा बोरिस

की निजी संपत्ति में बदल रहा था। जहाँ तक मुझे पता था, वह पैसा विदेशी बैंक खातों में भेज रहा था और सोना खरीद रहा था।
पता नहीं क्यों, उसे मुझ पर पूरा भरोसा था। उसे यह ख्याल ही नहीं आया कि मैं उसके राज़ बाहर लीक कर सकता हूँ, जो मुझे अब बहुत अजीब लगता है। वह हमेशा अपने साथी रूसियों और दूसरे गोरे लोगों पर शक करता था, लेकिन मंगोलियाई या जापानी लोगों पर वह पूरी तरह भरोसा करता था। शायद उसे लगा होगा कि अगर मैं उसके राज़ बता भी दूँ, तो भी मैं उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता। आख़िर मैं ये राज़ किसे बताता? मेरे आस-पास हर कोई उसका सहयोगी या उसका मातहत था, हर किसी का बोरिस के बड़े अवैध मुनाफ़े में अपना छोटा सा हिस्सा था। और बोरिस द्वारा उनके खाने, कपड़े और दवाइयों को अपने निजी फ़ायदे के लिए इस्तेमाल करने की वजह से सिर्फ़ शिविर के बेबस कैदी ही पीड़ित हुए और मरे। इसके अलावा, सभी चिट्ठियों पर रोक थी और बाहरी लोगों से किसी भी तरह का संपर्क प्रतिबंधित था।
और इस तरह मैं बोरिस का ऊर्जावान और वफादार निजी सचिव बन गया। मैंने उनके अव्यवस्थित बही-खातों और स्टॉक रिकॉर्ड को पूरी तरह से व्यवस्थित किया, माल और धन के प्रवाह को सुव्यवस्थित और स्पष्ट किया। मैंने वर्गीकृत बही-खाते बनाए जिनमें एक नज़र में किसी भी वस्तु की मात्रा और स्थान तथा उसकी कीमत में उतार-चढ़ाव का पता चल जाता था। मैंने रिश्वत लेने वालों की एक लंबी सूची तैयार की और प्रत्येक के लिए "आवश्यक खर्चों" की गणना की। मैंने बोरिस के लिए सुबह से शाम तक कड़ी मेहनत की, जिसके परिणामस्वरूप मेरे जो कुछ थोड़े-बहुत दोस्त थे, वे भी मुझसे दूर हो गए। लोग मुझे (शायद मजबूरीवश) एक नीच इंसान समझते थे, एक ऐसा व्यक्ति जिसने बोरिस का वफादार चापलूस बनने के लिए खुद को बेच दिया था।

का प्रयोग करता है, उसका अंत निश्चित है। मैं तो अपनी कल्पना का प्रयोग कभी नहीं करता। मेरा काम दूसरों को उनकी कल्पना का प्रयोग करवाना है। यही मेरी रोजी-रोटी है। इस बात को हमेशा याद रखना। जब तक आप यहाँ हैं, कम से कम अगर कभी कुछ कल्पना करने लगें, तो मेरा चेहरा याद करना और खुद से कहना, ‘नहीं, ऐसा मत करो।’” कल्पना करना घातक हो सकता है।’ ये मेरी आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण सलाह है। कल्पना करने का काम किसी और पर छोड़ दें। आधा साल इसी तरह बीत गया। अब 1947 का पतझड़ समाप्त हो रहा था, और मैं बोरिस के लिए अपरिहार्य हो गया था। मैं उसकी गतिविधियों के व्यावसायिक पक्ष का प्रभारी था, जबकि द टार्टर हिंसक पक्ष का प्रभारी था। गुप्त पुलिस ने अभी तक बोरिस को मॉस्को वापस नहीं बुलाया था, लेकिन तब तक वह वापस जाना नहीं चाहता था। उसने शिविर और खदान को लगभग अपना बेदाग इलाका बना लिया था, और वहाँ वह आराम से रहता था, अपनी निजी सेना की सुरक्षा में लगातार एक विशाल संपत्ति जमा कर रहा था। शायद, उसे केंद्र में वापस लाने के बजाय, मॉस्को के अभिजात वर्ग ने उसे वहीं रखना बेहतर समझा, ताकि साइबेरिया में अपनी पकड़ मजबूत कर सकें। बोरिस और मॉस्को के बीच पत्रों का निरंतर आदान-प्रदान होता रहता था—ज़ाहिर है, डाकघर का इस्तेमाल नहीं होता था: पत्र गुप्त संदेशवाहकों के हाथों ट्रेन से पहुँचते थे। ये हमेशा बर्फीली आँखों वाले लंबे आदमी होते थे। जब भी उनमें से कोई कमरे में आता, कमरे का तापमान गिरता हुआ सा लगता था।
इस बीच, खदान में काम करने वाले कैदी बड़ी संख्या में मरते रहे, और उनके शव पहले की तरह ही खदान की सुरंगों में फेंके जाते रहे। बोरिस ने प्रत्येक कैदी की क्षमता का गहन आकलन किया, शारीरिक रूप से कमजोर लोगों से कड़ी मेहनत करवाई और शुरुआत में ही उनका

भी मैं सतर्क रहा, सही समय का इंतज़ार करता रहा। अगर इस दुनिया में कहीं भी कोई भगवान है, तो मुझे विश्वास था, वह मौका मुझे ज़रूर मिलेगा।
1948 की शुरुआत में, शिविर में यह अफवाह फैल गई कि जापानी युद्धबंदियों को आखिरकार घर जाने की अनुमति दी जाएगी, कि वसंत में हमें वापस लाने के लिए एक जहाज भेजा जाएगा। मैंने बोरिस से इसके बारे में पूछा।
“यह सच है, लेफ्टिनेंट मामिया,” उन्होंने कहा। “अफवाह सच है। आप सभी को बहुत जल्द स्वदेश वापस भेज दिया जाएगा। विश्व जनमत के कारण, हम आपको ज़्यादा समय तक काम पर नहीं रख पाएंगे। लेकिन मेरे पास आपके लिए एक प्रस्ताव है, लेफ्टिनेंट। आप इस देश में युद्धबंदी के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र सोवियत नागरिक के रूप में रहना कैसा चाहेंगे? आपने मेरी बहुत सेवा की है, और आपके स्थान पर किसी और को ढूंढना मेरे लिए बहुत मुश्किल होगा। और आप भी, मेरे साथ रहकर जापान में गरीबी और कठिनाइयों का सामना करने से कहीं ज़्यादा सुखद समय बिताएंगे। मुझे बताया गया है कि वहाँ खाने को कुछ नहीं है। लोग भूख से मर रहे हैं। यहाँ आपके पास पैसा, औरतें, सत्ता—सब कुछ होगा।”
बोरिस ने यह प्रस्ताव पूरी गंभीरता से रखा था। वह जानता था कि मुझे जाने देना खतरनाक हो सकता है, क्योंकि मैं उसके सारे राज़ जानती थी। अगर मैं उसे मना कर देती, तो वह मुझे चुप कराने के लिए मेरी जान से मार सकता था। लेकिन मुझे डर नहीं था। मैंने उसके इस नेक प्रस्ताव के लिए उसे धन्यवाद दिया, लेकिन कहा कि मैं अपने माता-पिता और बहन की चिंता में जापान लौटना पसंद करूंगी। बोरिस ने एक बार कंधे उचकाए और कुछ नहीं कहा।

मैं पास से गुजरा, मैंने होल्स्टर से बंदूक निकाल ली। उसका छोटा आकार मेरी हथेली में बिल्कुल फिट बैठता था, और उसके वजन और संतुलन से उसकी उत्कृष्ट कारीगरी स्पष्ट थी। मैं बोरिस के सामने खड़ा हुआ और सेफ्टी खोल दी। फिर, पिस्तौल को अपने घुटनों के बीच पकड़कर, मैंने अपने दाहिने हाथ से स्लाइड खींची और एक कारतूस चैंबर में डाल दी। मैंने अपने अंगूठे से बंदूक का हथौड़ा पीछे खींचा। जब बोरिस ने उससे निकली हल्की, सूखी सी आवाज़ सुनी, तो उसने ऊपर देखा और पाया कि मैं बंदूक उसके चेहरे पर ताने खड़ा हूँ।
उसने सिर हिलाया और आह भरी।
“लेफ्टिनेंट, आपके लिए बुरा हुआ, लेकिन बंदूक में गोलियां नहीं हैं,” उन्होंने अपने फाउंटेन पेन का ढक्कन लगाते हुए कहा। “वजन से पता चल जाएगा। इसे थोड़ा ऊपर-नीचे हिलाकर देखिए। 7.65 मिलीमीटर के आठ कारतूसों का वजन अस्सी ग्राम होता है।”
मुझे उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ। बिना किसी झिझक के मैंने बंदूक की नली उसकी कनपटी पर तान दी और ट्रिगर दबा दिया। बस एक क्लिक की आवाज़ आई। वह सही था: बंदूक में गोली नहीं थी। मैंने बंदूक नीचे रख दी और होंठ दबा लिए, कुछ सोच नहीं पा रहा था। बोरिस ने डेस्क की दराज खोली और मुट्ठी भर गोलियां निकालकर मुझे दिखाने के लिए अपनी हथेली पर रख लीं। उसने मुझे फंसा लिया था। सारा नाटक एक चाल थी।
“मुझे बहुत पहले से पता था कि तुम मुझे मारना चाहते हो,” उसने धीमी आवाज़ में कहा। “तुमने खुद को ऐसा करते हुए कल्पना की होगी, अपने मन में अनगिनत बार इसकी तस्वीर बनाई होगी, है ना? मुझे यकीन है कि मैंने तुम्हें बहुत पहले ही सलाह दी थी कि अपनी कल्पना का इस्तेमाल कभी मत करना। इससे सिर्फ तुम्हारी जान ही

जा सकती है। खैर, छोड़ो। ऐसा कोई तरीका ही नहीं है जिससे तुम मुझे मार सको।”
बोरिस ने अपनी हथेली से दो गोले निकाले और उन्हें मेरे पैरों पर फेंक दिया। वे फर्श पर घिसटते हुए मेरे पास आ गिरे।
“ये असली गोलियां हैं,” उसने कहा। “यह कोई चाल नहीं है। इन्हें बंदूक में डालो और मुझे गोली मार दो। यह तुम्हारा आखिरी मौका होगा। अगर तुम सचमुच मुझे मारना चाहते हो, तो ध्यान से निशाना लगाओ। लेकिन अगर निशाना चूक गया, तो तुम्हें वादा करना होगा कि तुम मेरे राज़ कभी किसी को नहीं बताओगे। तुम्हें दुनिया में किसी को भी नहीं बताना है कि मैं यहाँ क्या कर रहा था। यही हमारा छोटा सा समझौता है।”
मैंने उसे सिर हिलाकर सहमति दी। मैंने अपना वादा कर दिया था। पिस्तौल को फिर से अपने घुटनों के बीच पकड़कर, मैंने रिलीज़ बटन दबाया, मैगज़ीन निकाली और उसमें दो कारतूस लोड किए। एक हाथ से यह करना आसान नहीं था—वह हाथ लगातार कांप रहा था। बोरिस ने शांत भाव से मेरी हरकतों को देखा। उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान भी थी। जैसे ही मैंने मैगज़ीन को वापस पिस्तौल के हैंडल में डाला, मैंने उसकी आँखों के बीच निशाना साधा, अपने हाथ को कांपने से रोका और ट्रिगर दबा दिया। बंदूक की गर्जना से कमरा हिल गया, लेकिन गोली बोरिस के कान के पास से गुजरी और दीवार से जा टकराई। सफेद, चूर-चूर प्लास्टर चारों ओर उड़ गया। मैं सिर्फ छह फीट की दूरी से चूक गया था। मैं कोई खराब निशानेबाज नहीं था। जब मैं ह्सिन-चिंग में तैनात था, तब मैंने बड़े उत्साह से निशाना लगाने का अभ्यास किया था। और हालांकि अब मेरे पास सिर्फ दाहिना हाथ था, लेकिन वह ज्यादातर लोगों से ज्यादा मजबूत था, और वाल्थर एक ऐसी संतुलित पिस्तौल थी जिससे सटीक और स्थिर निशाना

लगाया जा सकता था। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं चूक गया। मैंने एक बार फिर बंदूक का हथौड़ा उठाया और निशाना साधा। मैंने एक गहरी सांस ली और खुद से कहा, "तुम्हें इस आदमी को मारना ही होगा।" उसे मारकर मैं अपने जीवन को सार्थक बना सकता था।
“अब निशाना साधो, लेफ्टिनेंट मामिया। ये तुम्हारी आखिरी गोली है।” बोरिस अब भी मुस्कुरा रहा था।
उसी क्षण, तातार दौड़ता हुआ कमरे में आया, उसकी बड़ी पिस्तौल तनी हुई थी।
“इस मामले से दूर रहो,” बोरिस उस पर चिल्लाया। “मामिया को मुझे गोली मारने दो। और अगर वह मुझे मारने में कामयाब हो जाता है, तो जो चाहो करो।”
तातार ने सिर हिलाया और अपनी बंदूक का मुंह मेरी ओर कर दिया। मैंने अपने दाहिने हाथ में वाल्थर पिस्तौल को कसकर पकड़ा और उसे सीधा आगे बढ़ाते हुए बोरिस की तिरस्कारपूर्ण, आत्मविश्वास भरी मुस्कान के बीचोंबीच निशाना साधा और शांत भाव से ट्रिगर दबा दिया। पिस्तौल झटका खाकर उठी, लेकिन मैंने उसे स्थिर रखा। निशाना एकदम सटीक लगा था। लेकिन गोली फिर से बोरिस के सिर को छूकर निकल गई, इस बार उसके पीछे लगी दीवार घड़ी के लाखों टुकड़े हो गए। बोरिस ने पलक तक नहीं झपकाई। अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर, वह अपनी सांप जैसी आँखों से मुझे घूरता रहा। पिस्तौल ज़मीन पर गिर पड़ी।
कुछ पल के लिए कोई हिला-डुला नहीं, न ही कोई बोला। लेकिन थोड़ी देर बाद बोरिस अपनी कुर्सी से उठा और झुककर उस वाल्थर पिस्तौल को उठाया जहाँ से वह मुझसे गिर गई थी। हाथ में पकड़ी पिस्तौल को कुछ देर तक ध्यान से देखने के बाद उसने उसे कोट रैक पर लगे उसके

होल्स्टर में वापस रख दिया। फिर उसने मुझे दिलासा देने के लिए मेरी बांह पर दो बार थपथपाया।
“मैंने तुमसे कहा था ना कि तुम मुझे मार नहीं सकते?” बोरिस ने कहा। उसने अपनी जेब से सिगरेट का एक पैकेट निकाला, होठों के बीच एक सिगरेट रखी और लाइटर से उसे जलाया। “तुम्हारे निशाने में कोई गलती नहीं थी। बस तुम मुझे मार नहीं सके। तुम मुझे मारने के काबिल नहीं हो। यही एकमात्र कारण है कि तुमने अपना मौका गंवा दिया। और अब, दुर्भाग्य से, तुम्हें मेरे श्राप को अपने वतन वापस ले जाना होगा। सुनो: तुम जहाँ भी रहो, कभी खुश नहीं रह सकते। तुम कभी किसी से प्यार नहीं करोगे और न ही कोई तुमसे प्यार करेगा। यही मेरा श्राप है। मैं तुम्हें नहीं मारूंगा। लेकिन मैं तुम्हें दया भाव से नहीं छोड़ रहा हूँ। मैंने वर्षों में कई लोगों को मारा है, और आगे भी कई लोगों को मारूंगा। लेकिन मैं कभी किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं मारता जिसे मारने की कोई ज़रूरत न हो। अलविदा, लेफ्टिनेंट मामिया। एक हफ्ते बाद, तुम इस जगह से नखोदका बंदरगाह के लिए रवाना हो जाओगे। तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो। हम दोनों फिर कभी नहीं मिलेंगे।”
मैंने बोरिस द मैनस्किनर को आखिरी बार तभी देखा था। उसके एक हफ्ते बाद, मैं उस यातना शिविर से निकलकर ट्रेन से नाखोदका चला गया। वहाँ कई उतार-चढ़ावों से गुज़रने के बाद, आखिरकार मैं अगले साल की शुरुआत में जापान पहुँच गया।
सच कहूँ तो, श्री ओकाडा, मुझे नहीं पता कि मेरी यह लंबी, विचित्र कहानी आपके लिए क्या मायने रखेगी। शायद यह एक बूढ़े आदमी की बड़बड़ाहट से ज़्यादा कुछ नहीं है। लेकिन मैं आपको अपनी कहानी सुनाना चाहता था—मुझे सुनाना ही था। जैसा कि आप मेरा पत्र पढ़कर समझ गए होंगे, मैंने अपना जीवन पूरी तरह से हार में

[illegible]

एक खतरनाक जगह

•

टेलीविजन देखने वाले लोग

•

खोखला आदमी
दरवाजा अंदर की ओर खुलने लगा। दोनों हाथों में ट्रे पकड़े हुए वेटर ने हल्का सा झुककर अंदर चला गया। मैं फूलदान की छाया में छिपकर उसके बाहर आने का इंतज़ार करता रहा और सोचता रहा कि उसके बाहर आने पर मैं क्या करूँगा। उसके बाहर आते ही मैं अंदर जा सकता था। कमरा नंबर 208 में ज़रूर कोई था। अगर हालात पहले की तरह ही बिगड़ते रहे (जो कि हो ही रहा था), तो दरवाजा खुला होना चाहिए। दूसरी तरफ, मैं फिलहाल कमरे के बारे में भूलकर वेटर के पीछे जा सकता था। इस तरह शायद मैं उस जगह तक पहुँच जाऊँ जहाँ उसे होना चाहिए था।
मैं दोनों विकल्पों के बीच दुविधा में था, लेकिन अंत में मैंने वेटर के पीछे जाने का फैसला किया। कमरा नंबर 208 में कुछ खतरनाक मंडरा रहा था, कुछ ऐसा जिसके घातक परिणाम हो सकते थे। मुझे अंधेरे में तेज खटखटाहट और किसी चाकू जैसी चीज की हिंसक सफेद चमक की याद बहुत अच्छी तरह से ताजा थी। मुझे और सावधान रहना होगा। पहले मुझे देखना होगा कि वेटर मुझे कहाँ ले जाता है। फिर मैं कमरे में वापस आ सकता था। लेकिन मैं ऐसा कैसे करता? मैंने अपने हाथ जेब में डाले और वहाँ अपने बटुए, खुले पैसे और रुमाल के साथ एक छोटा बॉलपॉइंट पेन मिला। मैंने पेन निकाला और यह सुनिश्चित करने के लिए अपने हाथ पर एक रेखा खींची कि उसमें स्याही है। मैं वेटर के पीछे जाते समय दीवारों पर निशान लगाने

के लिए इसका इस्तेमाल कर सकता था। फिर मैं उन निशानों का पीछा करते हुए कमरे में वापस आ सकता था। यह काम करना चाहिए।
दरवाजा खुला और वेटर खाली हाथों से बाहर आया। उसने ट्रे समेत सब कुछ कमरे के अंदर ही छोड़ दिया था। दरवाजा बंद करने के बाद, वह सीधा खड़ा हुआ और 'द थीविंग मैगपाई' की धुन गुनगुनाते हुए उसी रास्ते पर वापस चल पड़ा जिससे वह आया था। मैं बड़े फूलदान की छाया में अपनी जगह से उठा और उसके पीछे चल दिया। गलियारा जहाँ भी दो भागों में बँटता, मैं क्रीम रंग की दीवार पर एक छोटा सा नीला X बना देता। वेटर ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उसके चलने के तरीके में कुछ खास बात थी। मानो वह होटल वेटरों के चलने के स्टाइल की विश्व प्रतियोगिता में एक मॉडल के रूप में काम कर रहा हो। उसकी चाल मानो कह रही थी, "होटल के वेटर को ऐसे ही चलना चाहिए: सिर ऊपर, जबड़ा आगे निकला हुआ, कमर सीधी, 'द थीविंग मैगपाई' की धुन पर तालबद्ध तरीके से हाथ हिलाते हुए, गलियारे में लंबे-लंबे कदम बढ़ाते हुए।" वह कई मोड़ों पर मुड़ा, कई छोटी सीढ़ियों से ऊपर-नीचे गया, जहाँ रोशनी कहीं तेज थी तो कहीं धीमी, दीवारों में बने गड्ढों के पास से गुजरा जहाँ अलग-अलग तरह की परछाइयाँ बन रही थीं। मैंने उससे उचित दूरी बनाए रखी ताकि कोई मुझे देख न सके, लेकिन उसका पीछा करना ज़्यादा मुश्किल नहीं था। कोने पर मुड़ते समय वह एक पल के लिए गायब हो सकता था, लेकिन उसकी तेज़ सीटी की वजह से उसे खोने का कोई खतरा नहीं था।
जैसे सैल्मन मछली धारा के विपरीत दिशा में प्रवास करते हुए अंततः शांत तालाब तक पहुँचती है, वैसे ही वेटर अंतिम गलियारे से निकलकर होटल की लॉबी में आया, उसी भीड़भाड़ वाली लॉबी में जहाँ मैंने नोबोरू वटाया को टीवी पर देखा था। लेकिन इस बार लॉबी में सन्नाटा पसरा हुआ था, बस कुछ ही लोग एक बड़े टीवी के सामने बैठकर

एनएचके का समाचार देख रहे थे। लोगों को परेशान न करने के लिए वेटर ने लॉबी के पास आते ही सीटी बजाना बंद कर दिया था। अब वह सीधे लॉबी के फर्श को पार करके "केवल स्टाफ के लिए" लिखे दरवाजे के पीछे गायब हो गया।
समय बिताने का बहाना करते हुए, मैं लॉबी में इधर-उधर घूमने लगा, कुछ अलग-अलग सोफे पर बैठा, छत की ओर देखा, और अपने पैरों के नीचे बिछे कालीन की मोटाई जाँची। फिर मैं एक पेफोन के पास गया और उसमें एक सिक्का डाला। यह फोन भी कमरे वाले फोन की तरह ही खराब था। मैंने होटल का फोन उठाया और उसमें "208" डायल किया, लेकिन यह फोन भी खराब था।
उसके बाद, मैं टीवी देख रहे लोगों से थोड़ी दूर एक कुर्सी पर जाकर बैठ गया, ताकि उन्हें चुपचाप देख सकूँ। समूह में बारह लोग थे, नौ पुरुष और तीन महिलाएँ, जिनमें से अधिकतर तीस और चालीस वर्ष की आयु के थे, और दो संभवतः पचास वर्ष की आयु के आसपास थीं। सभी पुरुषों ने सूट या स्पोर्ट्स कोट, पारंपरिक टाई और चमड़े के जूते पहने हुए थे। कद और वजन में कुछ अंतर को छोड़कर, उनमें कोई खास पहचान नहीं थी। तीनों महिलाएँ तीस वर्ष की आयु के आसपास थीं, अच्छे कपड़े पहने हुए और सलीके से मेकअप किया हुआ था। ऐसा लग रहा था जैसे वे किसी हाई स्कूल रियूनियन से लौट रही हों, सिवाय इसके कि वे अलग-अलग बैठी थीं और एक-दूसरे को जानने का कोई संकेत नहीं दे रही थीं। वास्तव में, समूह के सभी लोग अजनबी लग रहे थे, जिनका ध्यान संयोगवश एक ही टीवी स्क्रीन पर टिका हुआ था। न तो विचारों का आदान-प्रदान हुआ, न ही नज़रें मिलीं और न ही सिर हिलाकर अभिवादन किया गया।
मैं उनसे कुछ दूरी पर स्थित अपने कमरे में बैठकर कुछ देर तक समाचार देखता रहा। खबरें मेरे लिए कोई खास दिलचस्प नहीं थीं—

बैठ गया और रिपोर्टर की बातों पर ध्यान देने लगा। नोबोरू वाटाया के साथ कुछ हुआ था, लेकिन मुझे खबर की शुरुआत पता नहीं चली थी। थोड़ी देर में तस्वीर गायब हो गई और रिपोर्टर स्क्रीन पर आ गया। उसने टाई और ओवरकोट पहना हुआ था और वह एक बड़ी इमारत के प्रवेश द्वार पर हाथ में माइक लिए खड़ा था।
“…उन्हें टोक्यो महिला चिकित्सा विश्वविद्यालय अस्पताल ले जाया गया, जहां वे इस समय गहन चिकित्सा कक्ष में हैं, लेकिन हमें केवल इतना पता है कि अज्ञात हमलावर द्वारा खोपड़ी में फ्रैक्चर किए जाने के बाद से उन्हें होश नहीं आया है। अस्पताल अधिकारियों ने इस बारे में टिप्पणी करने से इनकार कर दिया है कि उनके घाव जानलेवा हैं या नहीं। उनकी स्थिति पर विस्तृत रिपोर्ट कुछ समय बाद जारी की जाएगी। टोक्यो महिला चिकित्सा विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार से रिपोर्टिंग…”
प्रसारण स्टूडियो में वापस आ गया, जहाँ एंकर ने अभी-अभी दिए गए संदेश को पढ़ना शुरू किया। “अभी-अभी मिली खबरों के अनुसार, प्रतिनिधि नोबोरू वटाया को जानलेवा हमले में सिर पर गंभीर चोटें आई हैं। युवा हमलावर आज सुबह ग्यारह बजकर साढ़े ग्यारह बजे टोक्यो के मिनाटो वार्ड स्थित उनके कार्यालय में घुस गया और उन लोगों की मौजूदगी में, जिनसे प्रतिनिधि वटाया उस समय मिल रहे थे, बेसबॉल बैट से उनके सिर पर कई जोरदार वार किए, जिससे उन्हें गंभीर चोटें आईं।”
स्क्रीन पर उस इमारत की तस्वीर दिखाई गई जिसमें नोबोरू वाटाया का कार्यालय स्थित था।
“उस व्यक्ति ने प्रतिनिधि वटाया के कार्यालय में फोन करने वाले के रूप में खुद को पेश किया और एक लंबे गत्ते के पाइप में बल्ला

लेकर आया। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि उस व्यक्ति ने पाइप से बल्ला निकाला और बिना किसी चेतावनी के हमला कर दिया।” स्क्रीन पर वह कार्यालय दिखाई दे रहा था जहां अपराध हुआ था। कुर्सियां फर्श पर बिखरी पड़ी थीं और पास ही खून का एक काला धब्बा दिखाई दे रहा था।
“हमला इतनी अचानक हुआ कि प्रतिनिधि वटाया और उनके साथ मौजूद अन्य लोगों को विरोध करने का मौका ही नहीं मिला। प्रतिनिधि वटाया के बेहोश होने की पुष्टि करने के बाद, हमलावर बेसबॉल बैट पकड़े हुए घटनास्थल से भाग गया। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि लगभग तीस वर्ष के उस व्यक्ति ने गहरे नीले रंग का कोट, गहरे नीले रंग की ऊनी स्की टोपी और काले रंग का चश्मा पहना हुआ था। उसकी लंबाई लगभग पाँच फुट नौ इंच थी और उसके दाहिने गाल पर चोट का निशान था। पुलिस उस व्यक्ति की तलाश कर रही है, जो भीड़-भाड़ में गायब हो गया है और उसका कोई निशान नहीं दिख रहा है।” स्क्रीन पर अपराध स्थल पर पुलिस और फिर अकासाका की एक चहल-पहल भरी सड़क का दृश्य दिखाया गया।
बेसबॉल बैट? चेहरे पर निशान? मैंने अपने होंठ काट लिए। “नोबोरू वाटाया अर्थशास्त्रियों और राजनीतिक टिप्पणीकारों के बीच एक उभरते सितारे थे, जब इस वसंत में उन्होंने अपने चाचा, संसद के लंबे समय से सदस्य रहे योशिताका वाटाया की विरासत संभाली और प्रतिनिधि सभा के लिए चुने गए। तब से एक प्रभावशाली युवा राजनेता और वाद-विवादकर्ता के रूप में व्यापक रूप से सराहे गए, नोबोरू वाटाया संसद के एक नवोदित सदस्य थे जिनसे बहुत उम्मीदें थीं। पुलिस अपराध की दोहरी जांच शुरू कर रही है, यह मानते हुए कि यह या तो राजनीतिक रूप से प्रेरित हो सकता है या किसी प्रकार की व्यक्तिगत प्रतिशोध। इस ताजा खबर को दोहराते

हुए: प्रतिनिधि सभा के प्रमुख नवोदित सदस्य नोबोरू वाटाया को आज सुबह एक अज्ञात हमलावर द्वारा किए गए हमले के बाद सिर में गंभीर चोटों के साथ अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उनकी हालत के बारे में अभी कोई जानकारी नहीं है। और अब, अन्य समाचारों में

— ”

ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी ने उसी समय टेलीविजन बंद कर दिया था। उद्घोषक की आवाज़ अचानक रुक गई और लॉबी में सन्नाटा छा गया। लोग अपने तनावग्रस्त हाव-भाव को ढीला करने लगे। यह स्पष्ट था कि वे नोबोरू वटाया के बारे में समाचार सुनने के उद्देश्य से ही टेलीविजन के सामने एकत्रित हुए थे। टीवी बंद होने के बाद कोई हिला तक नहीं। किसी ने कोई आवाज़ नहीं की।
नोबोरू वाटाया पर बल्ले से किसने हमला किया होगा? हमलावर का हुलिया बिल्कुल मुझसे मिलता-जुलता था—नीली वर्दी और टोपी, चश्मा, गाल पर निशान, कद, उम्र—और बेसबॉल का बल्ला। मैंने अपना बल्ला महीनों तक कुएं के तल में रखा था, लेकिन वह गायब हो गया था। अगर उसी बल्ले से नोबोरू वाटाया की खोपड़ी कुचली गई, तो किसी ने उसे इसी मकसद से लिया होगा।
तभी समूह में मौजूद एक महिला की निगाह मुझ पर टिक गई—एक दुबली- पतली, मछली जैसी दिखने वाली, उभरी हुई गाल की हड्डियों वाली महिला। उसने अपने लंबे कान के बीचोंबीच सफेद बालियां पहन रखी थीं। वह अपनी कुर्सी पर घूमकर काफी देर तक उसी मुद्रा में बैठी रही, मुझे देखती रही, अपनी निगाहें हटाती नहीं और न ही अपने चेहरे के भाव बदलती। फिर उसके बगल में बैठा गंजा आदमी, उसकी निगाहों का पीछा करते हुए, मेरी ओर मुड़ा और मुझे देखा। कद-काठी में वह स्टेशन के पास वाली सफाई की दुकान के मालिक जैसा दिखता था। एक-एक करके बाकी लोग भी मेरी ओर मुड़ गए, मानो उन्हें पहली

बार एहसास हुआ हो कि मैं उनके साथ हूं। उनकी टकटकी भरी निगाहों के बीच, मैं अपने गहरे नीले रंग के जैकेट और टोपी, अपनी पांच फुट नौ इंच की लंबाई, अपनी उम्र और अपने दाहिने गाल पर निशान के प्रति सचेत हुए बिना नहीं रह सकी। ऐसा लग रहा था कि ये सभी लोग भी जानते थे कि मैं नोबोरू वटाया का जीजा हूं और मैं न केवल उसे नापसंद करती हूं बल्कि उससे घृणा करती हूं। मैं यह उनकी आंखों में देख सकती थी। मैं सोच रहा था कि क्या करूँ, और कुर्सी के आर्मरेस्ट पर मेरी पकड़ और मज़बूत हो गई। मैंने नोबोरू वटाया को बेसबॉल बैट से नहीं पीटा था। मैं उस तरह का इंसान नहीं था, और वैसे भी, मेरे पास अब वो बैट था ही नहीं। लेकिन मुझे पूरा यकीन था कि वे मेरी बात पर विश्वास नहीं करेंगे। वे तो बस वही मानते हैं जो वे टीवी पर देखते हैं।
मैं कुर्सी से धीरे से उठा और उस गलियारे की ओर चल पड़ा जिससे मैं लॉबी में आया था। मुझे उस जगह से जल्द से जल्द निकलना था। मेरा वहाँ स्वागत नहीं था। मैंने अभी कुछ ही कदम बढ़ाए थे कि मुड़कर देखा तो कई लोग अपनी कुर्सियाँ छोड़कर मेरे पीछे आ रहे थे। मैंने अपनी गति बढ़ाई और सीधे लॉबी पार करके गलियारे में चला गया। मुझे कमरा नंबर 208 में वापस जाना था। मेरा मुँह सूख रहा था।
मैं आखिरकार लॉबी पार करके गलियारे में पहला कदम रख ही रहा था कि अचानक, बिना किसी आवाज के, होटल की सारी बत्तियाँ बुझ गईं। मानो किसी ने कुल्हाड़ी से वार किया हो, मानो अंधेरा छा गया हो। मेरे पीछे से किसी ने चीख मारी, आवाज मेरी उम्मीद से कहीं ज्यादा करीब थी, उसमें घृणा भरी हुई थी।
मैं अंधेरे में आगे बढ़ता रहा, दीवार का सहारा लेकर सावधानी से धीरे-धीरे कदम बढ़ा रहा था। मुझे उनसे दूर जाना था। तभी मैं एक

छोटी मेज से टकरा गया और अंधेरे में कुछ गिर गया, शायद कोई फूलदान। वह लुढ़कते हुए ज़मीन पर जा गिरा। टक्कर से मैं कालीन पर चारों हाथों-पैरों के बल गिर पड़ा। मैं जल्दी से उठा और गलियारे में आगे बढ़ने लगा। तभी, मेरे कोट का किनारा ज़ोर से खींचा गया, जैसे किसी कील में फंस गया हो। मुझे समझने में थोड़ा समय लगा कि क्या हो रहा है। कोई मेरा कोट खींच रहा था। बिना झिझक के, मैंने उसे उतार दिया और अंधेरे में आगे बढ़ गया। मैं एक कोने से मुड़ा, सीढ़ियों पर लड़खड़ा गया और दूसरे कोने पर मुड़ा, इस दौरान मेरा सिर और कंधे हर चीज़ से टकराते रहे। एक जगह, मेरा पैर सीढ़ी पर फिसल गया और मेरा चेहरा दीवार से टकरा गया। हालांकि, मुझे कोई दर्द नहीं हुआ: बस कभी-कभी आँखों के पीछे हल्की सी चुभन महसूस हुई। मैं उन्हें यहाँ पकड़ने नहीं दे सकता था।
किसी भी तरह की रोशनी नहीं थी, यहां तक कि होटलों में बिजली गुल होने पर जलने वाली आपातकालीन बत्तियां भी नहीं थीं। इस अंधकारमय रास्ते को चीरते हुए आगे बढ़ने के बाद, मैं रुक गया, सांस लेने की कोशिश कर रहा था और पीछे से आने वाली आवाज़ों को सुनने की कोशिश कर रहा था। लेकिन मुझे सिर्फ अपने दिल की तेज़ धड़कन सुनाई दे रही थी। मैं थोड़ी देर आराम करने के लिए घुटनों के बल बैठ गया। शायद उन्होंने पीछा करना छोड़ दिया था। अगर मैं अब इस अंधेरे में आगे बढ़ता, तो शायद मैं भूलभुलैया की गहराई में खो जाता। मैंने यहीं दीवार के सहारे खड़े होकर खुद को शांत करने का फैसला किया।
बत्ती किसने बंद की होगी? मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि यह महज़ एक संयोग था। यह ठीक उसी समय हुआ जब मैं गलियारे में कदम रख रहा था और लोग मेरे पीछे-पीछे आ रहे थे। शायद वहाँ मौजूद किसी ने मुझे खतरे से बचाने के लिए ऐसा किया होगा। मैंने अपनी ऊनी टोपी

उतारी, रुमाल से पसीना पोंछा और टोपी वापस पहन ली। मुझे अपने शरीर के अलग-अलग हिस्सों में दर्द महसूस होने लगा था, लेकिन मुझे कोई चोट नहीं लगी थी। मैंने अंधेरे में अपनी घड़ी की चमकती हुई सुइयों को देखा, तभी मुझे याद आया कि घड़ी ग्यारह बजकर साढ़े ग्यारह मिनट पर रुक गई थी। यही वह समय था जब मैं कुएँ में उतरा था, और यही वह समय भी था जब किसी ने नोबोरू वटाया को उसके दफ्तर में बेसबॉल बैट से पीटा था।
क्या मैंने ही यह किया होगा?
इस अंधेरे में, मुझे यह एक और काल्पनिक संभावना लगने लगी। शायद, ऊपर, असल दुनिया में, मैंने सचमुच उसे बल्ले से मारा था और उसे बुरी तरह घायल कर दिया था, और मैं ही अकेला था जिसे इसके बारे में पता नहीं था। शायद मेरे अंदर की तीव्र नफरत ने अनजाने में पहल करके वहाँ जाकर उसे बुरी तरह पीटा था। क्या मैंने चलना कहा? मुझे तो ओडाक्यू लाइन से शिंजुकु जाना पड़ता और वहाँ से मेट्रो पकड़कर अकासाका जाना पड़ता। क्या मैं बिना जाने ऐसा कर सकता था? नहीं, बिलकुल नहीं—जब तक कि मेरा कोई दूसरा रूप मौजूद न हो। "श्री ओकाडा," पास ही अंधेरे में किसी ने कहा।
मेरा दिल धड़क उठा। मुझे बिलकुल भी पता नहीं था कि आवाज़ कहाँ से आई थी। मैंने अँधेरे में चारों ओर देखा, लेकिन ज़ाहिर है मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया।
“श्रीमान ओकाडा।” फिर वही आवाज़ आई। एक आदमी की धीमी आवाज़। “चिंता मत कीजिए, श्रीमान ओकाडा, मैं आपके साथ हूँ। हम यहाँ पहले भी मिल चुके हैं। क्या आपको याद है?”
मुझे याद था। मैं उस आवाज़ को पहचानता था। वह बिना चेहरे वाले आदमी की आवाज़ थी। लेकिन मुझे सावधान रहना था। मैं जवाब देने के लिए तैयार नहीं था।

“श्री ओकाडा, आपको जितनी जल्दी हो सके इस जगह से निकलना होगा। बत्तियाँ जलते ही वे आपको ढूंढने आ जाएँगे। मेरे पीछे आइए: मुझे एक शॉर्टकट पता है।”
उस आदमी ने एक छोटी सी लाइट जलाई। उससे हल्की रोशनी निकली, लेकिन इतनी काफी थी कि मुझे पता चल गया कि मुझे कहाँ कदम रखना है। "इधर आओ," उस आदमी ने मुझे इशारा किया। मैं फर्श से उठा और उसके पीछे-पीछे भागा।
"आप ही वो व्यक्ति होंगे जिन्होंने मेरे लिए लाइट बंद की थी, क्या ऐसा ही है?" मैंने पीछे खड़े उस आदमी से पूछा।
उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन उन्होंने इससे इनकार भी नहीं किया।
मैंने कहा, "धन्यवाद। बाल-बाल बच गए।"
उन्होंने कहा, "वे बहुत खतरनाक लोग हैं। आपकी सोच से कहीं ज्यादा खतरनाक।"
मैंने उनसे पूछा, "क्या नोबोरू वाटाया सचमुच किसी तरह की पिटाई में घायल हुए थे?"
“टीवी पर यही कहा गया था,” उस व्यक्ति ने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए उत्तर दिया।
मैंने कहा, "मैंने ऐसा नहीं किया। मैं उस समय अकेले कुएं में था।"
“अगर आप ऐसा कहते हैं, तो मुझे यकीन है कि आप सही हैं,” उस आदमी ने सहज भाव से कहा। उसने एक दरवाजा खोला और अपने पैरों पर टॉर्च की रोशनी डालते हुए दूसरी तरफ की सीढ़ियों पर धीरे-धीरे चढ़ने लगा। वह सीढ़ी इतनी लंबी थी कि बीच रास्ते में ही मुझे समझ नहीं आया कि हम चढ़ रहे हैं या उतर रहे हैं। मुझे तो यह भी यकीन नहीं था कि यह सीढ़ी है।

"क्या आपके पास कोई ऐसा व्यक्ति है जो इस बात की गवाही दे सके कि आप उस समय कुएं में थे?" उस व्यक्ति ने पीछे मुड़े बिना पूछा।
मैंने कुछ नहीं कहा। ऐसा कोई व्यक्ति था ही नहीं।
“ऐसे में आपके लिए सबसे समझदारी भरा कदम भाग जाना ही होगा। उन्होंने खुद ही तय कर लिया है कि आप ही दोषी हैं।”
"कौन हैं वे?"
सीढ़ियों के ऊपर पहुँचकर वह आदमी दाईं ओर मुड़ा और थोड़ी दूर चलने के बाद एक दरवाज़ा खोलकर गलियारे में आ गया। वहाँ रुककर वह आवाज़ें सुनने लगा। “हमें जल्दी करनी होगी। मेरी जैकेट पकड़ लो।”
मैंने आदेशानुसार उसकी जैकेट का निचला किनारा पकड़ लिया। बिना चेहरे वाले उस आदमी ने कहा, “वे लोग हमेशा टीवी से चिपके रहते हैं। इसीलिए यहाँ आपको इतना नापसंद किया जाता है। वे आपकी पत्नी के बड़े भाई को बहुत पसंद करते हैं।”
मैंने पूछा, "क्या आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ?"
"जी हां, बिल्कुल करता हूं।"
"तो फिर, क्या आपको पता है कि कुमिको इस समय कहां है?"
उस आदमी ने कुछ नहीं कहा। मैंने उस आदमी के कोट का पिछला हिस्सा कसकर पकड़ रखा था, मानो हम अंधेरे में कोई खेल खेल रहे हों। हम एक और कोने से मुड़े, एक छोटी सी सीढ़ी से नीचे उतरे, एक छोटे से गुप्त दरवाजे से गुजरे, एक कम छत वाले गुप्त रास्ते से होते हुए एक और गलियारे में पहुँच गए। उस बेचेहरे आदमी का अजीबोगरीब, जटिल रास्ता किसी विशाल कांस्य प्रतिमा के भीतर की अंतहीन यात्रा जैसा लग रहा था।
“श्री ओकाडा, मैं आपको बता दूं। मुझे यहां होने वाली हर बात की जानकारी नहीं है। यह बहुत बड़ा स्थान है, और मेरी जिम्मेदारी का

क्षेत्र लॉबी तक ही सीमित है। ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं है।”
क्या आप सीटी बजाने वाले वेटर के बारे में जानते हैं?
“नहीं, मुझे नहीं पता। यहाँ कोई वेटर नहीं है, न सीटी बजाने वाला, न ही कोई और। अगर आपने यहाँ कहीं किसी वेटर को देखा भी होगा, तो वह असल में वेटर नहीं था: वह कोई और था जो वेटर होने का नाटक कर रहा था। मैं आपसे पूछना भूल गया, लेकिन आप कमरा नंबर 208 में जाना चाहते थे, क्या यह सही है?”
“हाँ, यह सही है। मुझे वहाँ एक खास महिला से मिलना है।”
उस आदमी के पास कहने को कुछ नहीं था। उसने उस औरत के बारे में या मेरे उससे क्या संबंध है, इस बारे में कोई जानकारी नहीं मांगी। वह एक ऐसे व्यक्ति के आत्मविश्वास भरे कदमों से गलियारे में आगे बढ़ता रहा, मानो उसे रास्ते की पूरी जानकारी हो, और मुझे एक जटिल मार्ग पर नाव की तरह घसीटता चला रहा हो।
अचानक, बिना किसी चेतावनी के, वह एक दरवाजे के सामने आकर रुक गया। मैं पीछे से उससे टकरा गया, जिससे वह लगभग गिर ही गया। टक्कर लगते ही उसका शरीर अजीब तरह से हल्का और हवादार सा महसूस हुआ, मानो मैं किसी खाली टिड्डे के खोल से टकरा गया हो। उसने झट से खुद को संभाला और अपनी जेब की टॉर्च से दरवाजे पर लिखा नंबर 208 रोशन किया।
“यह दरवाजा बंद नहीं है,” उस आदमी ने कहा। “यह टॉर्च अपने साथ ले जाओ। मैं अंधेरे में वापस आ सकता हूँ। अंदर जाते समय दरवाजा बंद कर देना और किसी के लिए भी मत खोलना। तुम्हारा जो भी काम हो, उसे जल्दी निपटाकर वापस वहीं चले जाओ जहाँ से आए हो। यह जगह खतरनाक है। तुम यहाँ घुसपैठिए हो और सिर्फ मैं ही तुम्हारी मदद कर रहा हूँ। यह मत भूलना।”

मैंने पूछा, "तुम कौन हो?"
चेहरेविहीन व्यक्ति ने मुझे टॉर्च ऐसे थमा दी मानो कोई बैटन सौंप रहा हो। “मैं खोखला आदमी हूँ,” उसने कहा। चेहराविहीन चेहरा मेरी ओर करके, वह अंधेरे में मेरे बोलने का इंतज़ार करता रहा, लेकिन मुझे सही शब्द नहीं मिल रहे थे। अंततः, बिना कोई आवाज़ किए, वह गायब हो गया। एक पल पहले वह मेरे ठीक सामने था, अगले ही पल अंधेरे में समा गया। मैंने उसकी दिशा में रोशनी डाली, लेकिन अंधेरे से केवल धुंधली सफेद दीवार ही दिखाई दी।

•

जैसा उस आदमी ने कहा था, कमरा नंबर 208 का दरवाज़ा खुला हुआ था। मेरे हाथ में दरवाज़े का हैंडल बिना आवाज़ किए घूम गया। मैंने सावधानी बरतते हुए टॉर्च बंद कर दी, फिर जितना हो सके चुपचाप अंदर चला गया। पहले की तरह, कमरा एकदम शांत था, और मुझे अंदर कुछ भी हिलता हुआ महसूस नहीं हुआ। बर्फ की बाल्टी के अंदर पिघलती बर्फ की हल्की सी चटकने की आवाज़ आई। मैंने टॉर्च चालू की और दरवाज़ा बंद करने के लिए मुड़ा। ताले के बंद होने की सूखी धातु जैसी आवाज़ कमरे में असामान्य रूप से तेज़ सुनाई दी। बीच में रखी मेज़ पर कटी सार्क की बंद बोतल, साफ़ गिलास और ताज़ी बर्फ से भरी बाल्टी रखी थी। फूलदान के बगल में रखी चांदी के रंग की ट्रे पर टॉर्च की रोशनी एक मोहक चमक के साथ वापस पड़ी, मानो वह बहुत लंबे समय से मेरा इंतज़ार कर रही हो। ऐसा लगा जैसे जवाब में, फूलों के पराग की खुशबू एक पल के लिए तेज़ हो गई हो। मेरे आस-पास की हवा घनी हो गई, और गुरुत्वाकर्षण बल बढ़ता हुआ प्रतीत हुआ। दरवाज़े से पीठ टिकाकर, मैंने टॉर्च की रोशनी में अपने आस-पास की हलचल को देखा।

यह जगह खतरनाक है। तुम यहाँ घुसपैठिए हो, और मैं ही अकेला हूँ जो तुम्हारा साथ दे रहा हूँ। यह बात मत भूलना।
अंदर के कमरे से एक महिला की आवाज आई, “मुझ पर वह रोशनी मत डालो। क्या तुम वादा करते हो कि मुझ पर वह रोशनी नहीं डालोगे?”
मैंने कहा, "मैं वादा करता हूँ।"

जुगनू की रोशनी

•

जादू तोड़ना

•

एक ऐसी दुनिया जहाँ सुबह अलार्म घड़ियाँ बजती हैं

मैंने कहा, "मैं वादा करता हूँ," लेकिन मेरी आवाज़ में एक बनावटीपन था, जैसे जब आप अपनी ही आवाज़ की रिकॉर्डिंग सुनते हैं।
मैं चाहता हूं कि तुम यह कहो: कि तुम मुझ पर अपनी रोशनी नहीं डालोगे।
मैं तुम पर रोशनी नहीं डालूंगा। मैं वादा करता हूं।
“क्या तुम सचमुच वादा कर रहे हो? क्या तुम मुझे सच बता रहे हो?” मैं तुम्हें सच बता रहा हूँ। मैं अपना वादा नहीं तोड़ूंगा। ठीक है, तो अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप दो व्हिस्की के गिलास बर्फ के साथ भरकर यहाँ ले आएं। ढेर सारी बर्फ डालना, कृपया।
उसकी आवाज़ में हल्की सी चंचल, बचकानी तुतलाहट थी, लेकिन असल में वह एक परिपक्व, भावुक महिला की आवाज़ थी। मैंने पेनलाइट को मेज पर लंबाई में रखा और उसकी रोशनी में दो व्हिस्की की बोतलें भरने लगा, पहले अपनी सांसों को स्थिर करने के लिए कुछ पल रुके। मैंने कटी सार्क की सील तोड़ी, चिमटे से दोनों गिलास भरे और बर्फ के टुकड़ों पर व्हिस्की डाली। मुझे अपने हाथों से किए जा रहे हर काम के बारे में पूरी तरह सोचना पड़ रहा था। हर हरकत के साथ दीवार पर बड़ी-बड़ी परछाइयाँ बन रही थीं।

मैं अपने दाहिने हाथ में व्हिस्की की दो बोतलें पकड़े और बाएं हाथ में टॉर्च की रोशनी से रास्ता बनाते हुए अंदर के कमरे में दाखिल हुआ। हवा पहले से थोड़ी ठंडी लग रही थी। अंधेरे में भागते हुए मुझे पसीना आ गया होगा, और अब ठंडक महसूस होने लगी थी। मुझे याद आया कि मैंने रास्ते में अपना कोट उतार दिया था।
अपने वादे के मुताबिक, मैंने लाइट बंद की और उसे अपनी जेब में रख लिया। फिर, मैंने छूकर एक व्हिस्की की बोतल नाइट टेबल पर रखी और अपनी बोतल बिस्तर के पास वाली कुर्सी पर ले गया। घोर अंधेरे में भी मुझे कमरे का लेआउट याद था।
मुझे चादरों के आपस में सरकने की आवाज़ सुनाई दी। वह बिस्तर पर उठकर सिरहाने से टिक गई, अब उसके हाथ में गिलास था। उसने गिलास को हल्का सा हिलाया, बर्फ को मिलाया और व्हिस्की का एक घूंट लिया। अंधेरे में, ये सब किसी रेडियो नाटक के ध्वनि प्रभावों की तरह लग रहे थे। मैंने अपने हाथ में रखी व्हिस्की की खुशबू को सूंघा, लेकिन मैंने पिया नहीं।
“काफी समय हो गया,” मैंने कहा। मेरी आवाज़ पहले की तुलना में कुछ हद तक मेरी अपनी लग रही थी।
“क्या ऐसा है?” उसने कहा। “मुझे यकीन नहीं है कि इसका क्या मतलब है: ‘समय’ या ‘काफी समय’।”
मैंने कहा, "जहां तक मुझे याद है, ठीक एक साल और पांच महीने हो गए हैं।"
“अच्छा, अच्छा,” उसने अप्रभावित भाव से कहा। “मुझे ठीक से याद नहीं आ रहा…”
मैंने अपना गिलास फर्श पर रख दिया और पैर मोड़कर बैठ गई। "पिछली बार जब मैं आई थी तब तुम यहाँ नहीं थे, है ना?"
“बेशक मैं यहीं था। यहीं। बिस्तर पर। मैं हमेशा यहीं रहता हूँ।”

मुझे यकीन है कि मैं कमरा नंबर 208 में था। यही कमरा नंबर 208 है, है ना?
उसने अपने गिलास में बर्फ घुमाई और हल्की सी हंसी हंसते हुए कहा, "और मुझे यकीन है कि आपको इतना यकीन नहीं था। आप किसी और कमरे नंबर 208 में थे, यह तो पक्का है।"
उसकी आवाज़ में कुछ अस्थिरता थी, जिससे मुझे थोड़ी बेचैनी महसूस हुई। शायद शराब का असर उस पर हो रहा था। मैंने अपनी ऊनी टोपी उतारकर अपने घुटने पर रख दी।
मैंने उससे कहा, "फोन की बैटरी खत्म हो गई थी, तुम्हें पता है।" “हां, मुझे पता है,” उसने थोड़ी निराशा के साथ कहा। “उन्होंने इसे काट दिया। उन्हें पता था कि मुझे फोन करना कितना पसंद था।” क्या वे ही लोग हैं जिन्होंने आपको यहां रोक रखा है?
“हम्म, मुझे आश्चर्य हो रहा है। मुझे सच में नहीं पता,” उसने हल्की हंसी के साथ कहा। हवा में हलचल के कारण उसकी आवाज थोड़ी कांप रही थी।
उसकी ओर देखते हुए मैंने कहा, "मैं बहुत लंबे समय से तुम्हारे बारे में सोच रहा हूँ। जब से मैं पिछली बार यहाँ आया था। सोच रहा हूँ कि तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रही हो।"
"मजेदार लग रहा है," उसने कहा।
मैंने हर तरह की संभावनाओं की कल्पना की, लेकिन मैं अभी किसी भी बात को लेकर निश्चित नहीं हो सकता। मैं अभी भी कल्पना के चरण में हूँ।
“वाह, वाह,” उसने प्रभावित होकर कहा। “तो आप अभी किसी भी बात को लेकर निश्चित नहीं हो सकते, आप अभी कल्पना के चरण में हैं।”

“हाँ, बिल्कुल,” मैंने कहा। “और मैं तुम्हें यह भी बता दूँ: मुझे लगता है कि तुम कुमिको हो। पहले तो मुझे इसका एहसास नहीं हुआ, लेकिन अब मुझे और भी ज़्यादा यकीन हो रहा है।”
“ओह, क्या आप?” उसने कुछ पल रुककर, मुस्कुराते हुए कहा। “तो मैं कुमिको हूँ, है ना?”
एक पल के लिए, मैं दिशाहीन हो गया, मानो मैं जो कुछ भी कर रहा था वह सब गलत था: मैं गलत जगह पर गलत व्यक्ति से गलत बातें कहने आ गया था। सब कुछ समय की बर्बादी थी, एक अर्थहीन भटकाव। लेकिन मैंने अंधेरे में खुद को संभाला। वास्तविकता की जाँच करने के लिए, मैंने अपनी गोद में रखी टोपी पर हाथ रख दिए।
“हाँ, मुझे लगता है कि तुम कुमिको हो। क्योंकि फिर तो सारी कहानियाँ आपस में मेल खाने लगती हैं। तुम यहीं से मुझे फ़ोन करती रहती थी। तुम मुझे कोई राज़ बताने की कोशिश कर रही थी। कुमिको का राज़। एक ऐसा राज़ जो असली कुमिको मुझे बता नहीं पाई। तो ज़रूर तुम उसके लिए ये कर रही थी—गुप्त इशारों में।”
कुछ देर तक वह चुप रही। फिर उसने व्हिस्की का एक और घूंट लेने के लिए अपना गिलास उठाया और बोली, “मुझे आश्चर्य हो रहा है। लेकिन अगर आप यही सोचते हैं, तो आप सही हो सकते हैं। शायद मैं सचमुच कुमिको हूँ। हालांकि, मुझे अभी भी यकीन नहीं है। तो, अगर यह सच है... अगर मैं सचमुच कुमिको हूँ... तो मुझे उसकी आवाज़ में आपसे बात करने में सक्षम होना चाहिए। है ना? इससे मामला थोड़ा पेचीदा हो जाता है, लेकिन क्या आपको कोई आपत्ति है?”
“नहीं, मुझे कोई आपत्ति नहीं है,” मैंने कहा। एक बार फिर मेरी आवाज़ में कुछ हद तक शांति और वास्तविकता का भाव गायब सा लग रहा था।

अंधेरे में उसने गला साफ किया। "तो चलिए शुरू करते हैं। पता नहीं ये काम करेगा या नहीं।" फिर हल्की सी हंसी। "लेकिन ये आसान नहीं है। क्या आपको जल्दी है? क्या आप थोड़ी देर यहाँ रुक सकते हैं?"
मैंने कहा, "मुझे सच में नहीं पता।"
“एक मिनट रुकिए। माफ़ कीजिए। अहम्… मैं एक मिनट में तैयार हो जाऊँगा।”
मैंने इंतजार किया।
“तो। तुम मुझे ढूंढते हुए यहाँ आए थे। तुम मुझसे मिलना चाहते थे, क्या यही बात है?” कुमिको की गंभीर आवाज अंधेरे में गूंज उठी।
उस गर्मी की सुबह के बाद से मैंने कुमिको की आवाज़ नहीं सुनी थी, जब मैंने उसकी पोशाक की ज़िप बंद की थी। उसने कानों के पीछे नया इत्र लगाया हुआ था, किसी और का। वह उस दिन घर से निकली और फिर कभी वापस नहीं आई। अँधेरे में आई वह आवाज़ असली थी या नकली, इसने मुझे एक पल के लिए उस सुबह की याद दिला दी। मुझे इत्र की खुशबू आ रही थी और कुमिको की पीठ की सफ़ेद त्वचा दिखाई दे रही थी। अँधेरे में वह याद घनी और भारी थी—शायद वास्तविकता से भी ज़्यादा घनी और भारी। मैंने अपनी टोपी पर अपनी पकड़ मज़बूत कर ली।
मैंने कहा, "सच कहूं तो, मैं तुम्हें देखने नहीं आया था। मैं तुम्हें वापस लाने आया था।"
उसने अंधेरे में एक हल्की सी आह भरी। "तुम मुझे वापस लाने के लिए इतने बेताब क्यों हो?"
मैंने कहा, "क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूँ। और मुझे पता है कि तुम भी मुझसे प्यार करते हो और मुझे चाहते हो।"

"तुम तो काफी आत्मविश्वास से भरी लग रही हो," कुमिको ने कहा—या यूं कहें कि कुमिको की आवाज़ ने। उसकी आवाज़ में व्यंग्य का कोई भाव नहीं था—लेकिन स्नेह का भी कोई भाव नहीं था।
मुझे बगल वाले कमरे में रखी बर्फ की बाल्टी में रखी चीजों के हिलने की आवाज सुनाई दी।
मैंने कहा, "लेकिन अगर मुझे तुम्हें वापस पाना है, तो मुझे कुछ पहेलियाँ सुलझानी होंगी।"
“अब इस तरह की चीजें शुरू करने में थोड़ी देर नहीं हो गई है क्या? मुझे लगा था कि आपके पास इतना समय नहीं है।”
वह सही थी। समय बहुत कम बचा था और सोचने के लिए बहुत कुछ था। मैंने अपने माथे से पसीना पोंछा। मैंने खुद से कहा, शायद यही मेरा आखिरी मौका है। मुझे सोचना ही होगा।
मैंने कहा, "मैं चाहता हूं कि तुम मेरी मदद करो।"
“मुझे आश्चर्य हो रहा है,” कुमिको की आवाज़ सुनाई दी। “हो सकता है मैं आपकी मदद न कर पाऊं। लेकिन मैं कोशिश करने को तैयार हूं।”
“पहला सवाल तो यह है कि तुमने मुझे क्यों छोड़ा? मैं असली वजह जानना चाहता हूँ। मुझे पता है तुम्हारे पत्र में क्या लिखा था— कि तुम्हारा किसी और आदमी से रिश्ता हो गया था। मैंने उसे पढ़ा, बेशक। बार-बार पढ़ा। और शायद यह कुछ हद तक स्पष्टीकरण का काम करता है। लेकिन मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि यही असली वजह है। यह पूरी तरह सच नहीं लगता। मैं यह नहीं कह रहा कि यह झूठ है, लेकिन मुझे लगता है कि यह सिर्फ एक तरह का रूपक है।”
“एक रूपक?!” वह सचमुच हैरान लग रही थी। “शायद मुझे समझ नहीं आ रहा, लेकिन अगर दूसरे पुरुषों के साथ सोना किसी चीज़ का रूपक है, तो मैं जानना चाहूंगी कि वह क्या है।”

“मैं कहना चाह रहा हूँ कि मुझे यह महज़ एक स्पष्टीकरण मात्र लगता है। इससे कोई निष्कर्ष नहीं निकलता। यह बस ऊपरी तौर पर ही बात करता है। जैसे-जैसे मैंने आपका पत्र पढ़ा, मुझे यह बात और भी स्पष्ट होती गई। इसके पीछे कोई और कारण ज़रूर होगा जो ज़्यादा बुनियादी हो—ज़्यादा वास्तविक हो। और इसमें लगभग निश्चित रूप से नोबोरू वटाया का हाथ है।”
मुझे अंधेरे में उसकी निगाहें मुझ पर टिकी हुई महसूस हुईं और यह सोचकर मैं चौंक गया कि शायद वह मुझे देख पा रही हो।
"नोबोरू वाटया शामिल है? कैसे?" कुमिको की आवाज में पूछा।
खैर, अंत में, मेरे साथ जो कुछ भी हुआ है, वह बेहद जटिल रहा है। तरह-तरह के किरदार सामने आए हैं, और एक के बाद एक अजीबोगरीब घटनाएं घटी हैं, इस हद तक कि अगर मैं उन्हें क्रम से सोचने की कोशिश करूं, तो मैं भूल ही जाऊंगी। हालांकि, दूर से देखने पर, उन सभी के बीच का संबंध बिल्कुल स्पष्ट है। असल बात यह है कि तुम मेरी दुनिया से नोबोरू वटाया की दुनिया में चली गई हो। यही बदलाव महत्वपूर्ण है। भले ही तुमने किसी दूसरे पुरुष या पुरुषों के साथ शारीरिक संबंध बनाए हों, वह तो बस एक गौण बात है। एक दिखावा। मेरा कहने का यही मतलब है।
उसने अंधेरे में अपना गिलास थोड़ा झुकाया। ध्वनि के स्रोत की ओर ध्यान से देखते हुए, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उसकी हलचल की एक धुंधली झलक देख पा रहा हूँ, लेकिन यह स्पष्ट रूप से एक भ्रम था। “लोग हमेशा सच बताने के लिए संदेश नहीं भेजते, श्री ओकाडा,” उसने कहा। आवाज़ अब कुमिको की नहीं थी। न ही वह उसकी पहले वाली मासूम आवाज़ थी। यह एक नई आवाज़ थी, जो किसी और की थी। इसमें एक सधी हुई, समझदारी भरी लय थी। “…ठीक वैसे ही जैसे लोग हमेशा दूसरों

से मिलकर अपना असली रूप नहीं दिखाते। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं, श्री ओकाडा?”
लेकिन फिर भी, कुमिको मुझसे कुछ कहने की कोशिश कर रही थी। चाहे वह सच हो या झूठ, वह मुझसे कुछ उम्मीद कर रही थी, और मेरे लिए वही सच था।
मुझे अपने चारों ओर अंधेरा घना होता हुआ महसूस हुआ, ठीक वैसे ही जैसे शाम की लहरें बिना किसी आवाज़ के अपने चरम पर पहुँच जाती हैं। मुझे जल्दी करनी थी। मेरे पास ज़्यादा समय नहीं बचा था। बत्ती जलने के बाद वे मुझे यहाँ ढूँढ़ने आ सकते थे। मैंने हिम्मत करके अपने मन में धीरे-धीरे पनप रहे विचारों को शब्दों में व्यक्त करने का फैसला किया।
“यह पूरी तरह से मेरी कल्पना है, लेकिन मेरा अनुमान है कि वटाया परिवार की वंश परंपरा में किसी प्रकार की वंशानुगत प्रवृत्ति थी। किस प्रकार की प्रवृत्ति थी, यह मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता, लेकिन किसी न किसी प्रकार की प्रवृत्ति तो थी—कुछ ऐसा जिससे आप डरते थे। इसीलिए आप बच्चे पैदा करने से डरते थे। जब आप गर्भवती हुईं, तो आप घबरा गईं क्योंकि आपको चिंता थी कि कहीं यह प्रवृत्ति आपके बच्चे में भी न आ जाए। लेकिन आप मुझसे यह रहस्य नहीं बता सकीं। पूरी कहानी यहीं से शुरू हुई।”
उसने कुछ नहीं कहा, बस चुपचाप अपना गिलास नाइट टेबल पर रख दिया। मैंने आगे कहा: “और मुझे पूरा यकीन है कि तुम्हारी बहन की मौत खाने से नहीं हुई। नहीं, यह उससे कहीं ज़्यादा असामान्य था। उसकी मौत के लिए नोबोरू वटाया ज़िम्मेदार था, और तुम यह बात अच्छी तरह जानती हो। तुम्हारी बहन ने मरने से पहले शायद तुम्हें इसके बारे में कुछ कहा होगा, तुम्हें किसी तरह की चेतावनी दी होगी। नोबोरू वटाया के पास शायद कोई विशेष शक्ति थी,

और वह जानता था कि उस शक्ति के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील लोगों को कैसे ढूँढ़ना है और उनसे कुछ कैसे निकलवाना है। उसने उस शक्ति का इस्तेमाल क्रेता कानो पर विशेष रूप से हिंसक तरीके से किया होगा। वह किसी न किसी तरह ठीक हो गई, लेकिन तुम्हारी बहन नहीं। आख़िरकार, वह उसी घर में रहती थी: उसके पास भागने के लिए कोई जगह नहीं थी। वह इसे और सहन नहीं कर सकी और उसने मरने का विकल्प चुना। तुम्हारे माता-पिता ने हमेशा उसकी आत्महत्या को गुप्त रखा है। क्या यह सच नहीं है?”
कोई जवाब नहीं आया। महिला ने अंधेरे में अपनी उपस्थिति मिटाने की कोशिश में चुप्पी साधे रखी।
मैंने आगे कहा: “उसने यह कैसे किया और क्या अवसर था, मुझे इसका कोई अंदाजा नहीं है, लेकिन किसी समय नोबोरू वटाया ने अपनी हिंसक शक्ति को तेजी से बढ़ा दिया। टेलीविजन और अन्य मीडिया के माध्यम से, उसने समाज पर अपनी बढ़ी हुई शक्ति का प्रयोग करने की क्षमता प्राप्त कर ली। अब वह कुछ ऐसा उजागर करने की कोशिश कर रहा है जिसे जनता का एक बड़ा हिस्सा अपने अवचेतन के अंधकार में छिपाए हुए है। वह इसका उपयोग अपने राजनीतिक लाभ के लिए करना चाहता है। यह एक अत्यंत खतरनाक चीज है, जिसे वह उजागर करने की कोशिश कर रहा है: यह हिंसा और रक्त से बुरी तरह सना हुआ है, और यह सीधे इतिहास की सबसे गहरी अंधेरी जगहों से जुड़ा हुआ है, क्योंकि इसका अंतिम परिणाम बड़े पैमाने पर लोगों को नष्ट करना और मिटा देना है।”
उसने अंधेरे में आह भरी। "क्या आप मुझे एक और व्हिस्की पिला सकते हैं?" उसने धीरे से पूछा।

मैं नाइट टेबल के पास गया और उसका खाली गिलास उठा लिया। अंधेरे में भी मैं इतना काम आसानी से कर सकता था। मैं दूसरे कमरे में गया और टॉर्च की मदद से बर्फ के साथ एक नया व्हिस्की गिलास भरा। “आपने अभी जो कुछ भी कहा, वह पूरी तरह से आपकी अपनी कल्पना की उपज थी, है ना?” उसने पूछा।
“हाँ, सही है। मैंने कुछ अलग-अलग विचारों को एक साथ जोड़ दिया है,” मैंने कहा। “मैं इनमें से किसी भी बात को साबित नहीं कर सकता। मेरे पास यह दावा करने का कोई आधार नहीं है कि मैंने जो कहा है वह सच है।”
लेकिन फिर भी, मैं बाकी बातें सुनना चाहूंगा—अगर बताने के लिए और भी कुछ है तो।
मैं अंदर वाले कमरे में वापस गया और गिलास को नाइट टेबल पर रख दिया। फिर मैंने टॉर्च बंद कर दी और अपनी कुर्सी पर लौट आया। वहाँ मैंने अपना पूरा ध्यान अपनी कहानी के बाकी हिस्से को बताने पर केंद्रित किया।
“तुम्हें ठीक से पता नहीं था कि तुम्हारी बहन के साथ क्या हुआ था, बस इतना पता था कि मरने से पहले उसने तुम्हें किसी तरह की चेतावनी दी थी। उस समय तुम इतने छोटे थे कि समझ नहीं पाए थे कि वह चेतावनी किस बारे में थी। लेकिन तुम्हें कुछ हद तक समझ आ गया था। तुम जानते थे कि नोबोरू वटाया ने किसी तरह तुम्हारी बहन को अपवित्र किया था और उसे चोट पहुँचाई थी। और तुम्हें अपने खून में किसी गहरे राज़ की मौजूदगी का एहसास था, कुछ ऐसा जिससे तुम बच नहीं सकते थे। और इसलिए, उस घर में, तुम हमेशा अकेले रहते थे, हमेशा तनाव में रहते थे, अपनी दबी हुई, अनिश्चित चिंता से अकेले ही जूझते रहते थे, ठीक उन जेलीफिश की तरह जिन्हें हमने एक्वेरियम में देखा था।”

कॉलेज से स्नातक होने के बाद—और अपने परिवार के साथ सारी परेशानियों के बाद—आपने मुझसे शादी की और वटाया का घर छोड़ दिया। हमारा जीवन शांत था, और हर गुजरते दिन के साथ, आप धीरे- धीरे अपनी गहरी चिंता को भुलाने में सक्षम होती गईं। आप समाज में एक नए व्यक्ति के रूप में निकलीं, और धीरे-धीरे ठीक होती गईं। कुछ समय के लिए ऐसा लगा जैसे सब कुछ आपके लिए ठीक हो जाएगा। लेकिन दुर्भाग्य से, यह इतना आसान नहीं था। एक समय ऐसा आया जब आपने महसूस किया कि आप अनजाने में उस अंधकारमय शक्ति की ओर खिंची चली जा रही हैं जिसे आपने पीछे छोड़ दिया था। और जब आपको एहसास हुआ कि क्या हो रहा है, तो आप भ्रमित हो गईं। आपको समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। इसीलिए आप सच्चाई जानने की उम्मीद में नोबोरू वटाया से बात करने गईं। और आपने माल्टा कानो से मदद की उम्मीद में संपर्क किया। केवल मुझसे ही आप खुलकर बात नहीं कर पाईं।
“मेरा अंदाज़ा है कि यह सब तुम्हारे गर्भवती होने के बाद शुरू हुआ। मुझे यकीन है कि यही निर्णायक मोड़ था। शायद इसीलिए मुझे सपोरो के गिटार वादक से पहली चेतावनी उसी रात मिली, जिस रात तुमने गर्भपात कराया था। गर्भवती होने से तुम्हारे अंदर दबी हुई कोई भावना जागृत हो गई होगी। और नोबोरू वटाया इसी का इंतज़ार कर रहा था। शायद यही एक तरीका है जिससे वह किसी स्त्री के साथ यौन संबंध बना सकता है। इसीलिए जब तुम्हारे अंदर यह प्रवृत्ति उभरने लगी, तो वह तुम्हें मेरे पास से वापस अपने पास खींचने के लिए इतना दृढ़ था। उसे तुम्हें पाना ही था। नोबोरू वटाया को तुम्हारी ज़रूरत थी ताकि तुम वही भूमिका निभा सको जो तुम्हारी बहन ने कभी उसके लिए निभाई थी।”

जब मैंने बोलना समाप्त किया, तो उस खालीपन में गहरी खामोशी छा गई। मैंने कुमिको के बारे में अपनी कल्पना से जो कुछ भी सीखा था, उसे शब्दों में व्यक्त कर दिया था। इसका कुछ हिस्सा उन अस्पष्ट विचारों से आया था जो तब तक मेरे मन में थे, और बाकी बातें अंधेरे में बोलते हुए मेरे दिमाग में आकार ले चुकी थीं। शायद अंधेरे की शक्ति ने मेरी कल्पना के खाली स्थानों को भर दिया था। या शायद इस महिला की उपस्थिति ने मदद की थी। दोनों ही मामलों में, मेरी कल्पना का कोई ठोस आधार नहीं था।
“बहुत ही दिलचस्प कहानी,” महिला ने कहा। उसकी आवाज़ में फिर से लड़कियों जैसी तुतलाहट आ गई थी। उसकी आवाज़ में बदलाव की गति बढ़ती जा रही थी। “वाह वाह वाह। तो मैंने तुम्हें छोड़कर अपने अपवित्र शरीर के साथ छिपने का फैसला किया। यह धुंध में वाटरलू ब्रिज, ऑल्ड लैंग साइन, रॉबर्ट टेलर और विवियन ली की याद दिलाता है—”
मैंने उसकी बात काटते हुए कहा, "मैं तुम्हें यहाँ से ले जाऊँगा। मैं तुम्हें घर ले जाऊँगा, उस दुनिया में जहाँ तुम रहती हो, जहाँ टेढ़ी पूंछ वाली बिल्लियाँ रहती हैं, छोटे-छोटे आँगन होते हैं, और सुबह अलार्म बजता है।"
“और आप यह कैसे करेंगे?” महिला ने पूछा। “आप मुझे यहाँ से कैसे निकालेंगे, श्रीमान ओकाडा?”
मैंने कहा, "परियों की कहानियों की तरह। जादू तोड़कर।"
“ओह, मैं समझ गया,” आवाज़ ने कहा। “लेकिन ज़रा रुकिए, श्रीमान ओकाडा। आपको लगता है कि मैं कुमिको हूँ। आप मुझे कुमिको समझकर घर ले जाना चाहते हैं। लेकिन अगर मैं कुमिको नहीं हूँ तो? तब आप क्या करेंगे? हो सकता है आप किसी और को घर ले जाने की तैयारी कर

रहे हों। क्या आप अपने इस कदम को लेकर पूरी तरह आश्वस्त हैं? क्या आपको एक बार और सोच-विचार नहीं कर लेना चाहिए?”
मैंने अपनी जेब में रखी टॉर्च को मुट्ठी में कसकर पकड़ लिया।
मैंने सोचा, ये कुमिको के अलावा और कोई नहीं हो सकता। लेकिन मैं इसे साबित नहीं कर सका। आखिरकार, ये महज़ एक अनुमान ही निकला। मेरी जेब में रखे हाथ से पसीना टपक रहा था।
मैंने फिर से रूखी आवाज़ में कहा, "मैं तुम्हें घर ले जाऊंगा।
मैं यहाँ यही करने आया हूँ।"
मुझे चादरों में हलचल सुनाई दी। वह बिस्तर पर अपनी करवट बदल रही थी।
"क्या आप यह बात निश्चित रूप से कह सकते हैं? बिना किसी संदेह के?" उसने मुझसे पुष्टि के लिए जोर देते हुए पूछा।
“हां, मैं यकीन से कह सकता हूं। मैं तुम्हें घर ले जाऊंगा।”
"और आपको इस बारे में कोई दूसरा विचार नहीं है?"
“नहीं, बिल्कुल नहीं। मैंने अपना मन बना लिया है,” मैंने कहा। इसके बाद वह काफी देर तक चुप रही, मानो किसी बात की सच्चाई परख रही हो। फिर, हमारी बातचीत के इस चरण के अंत में, उसने एक गहरी साँस छोड़ी।
“मैं तुम्हें एक तोहफा देने जा रही हूँ,” उसने कहा। “यह कोई बहुत बड़ा तोहफा नहीं है, लेकिन शायद काम आ जाए। अभी लाइट मत जलाना, बल्कि धीरे-धीरे इधर हाथ बढ़ाकर नाइट टेबल तक पहुँचना।”
मैं अपनी कुर्सी से उठा और उस खालीपन की गहराई को भांपते हुए, मैंने अपना दाहिना हाथ अंधेरे में फैलाया। हवा के तीखे कांटे मेरी उंगलियों पर चुभ रहे थे। और फिर मैंने उस चीज़ को छुआ। जब मुझे एहसास हुआ कि वह क्या है, तो मानो हवा मेरे गले में अटक गई। वह "उपहार" एक बेसबॉल बैट था।

मैंने हैंडल पकड़ा और बल्ले को सीधा फैलाया। यह लगभग निश्चित रूप से वही बल्ला था जो मैंने गिटार केस वाले युवक से लिया था। हैंडल और वज़न दोनों सही थे। यही होना चाहिए था। लेकिन जब मैंने इसे और ध्यान से छुआ, तो पाया कि ब्रांड के ठीक ऊपर कुछ चिपका हुआ था, किसी तरह का कचरा। यह किसी इंसान के बाल जैसा लग रहा था। मैंने इसे अपनी उंगलियों के बीच लिया। मोटाई और कठोरता से लग रहा था कि यह सचमुच किसी इंसान का बाल ही होगा। बल्ले पर ऐसे कई बाल चिपके हुए थे, जिन पर जमा हुआ खून जैसा कुछ दिख रहा था। किसी ने इस बल्ले से किसी दूसरे व्यक्ति—शायद नोबोरू वटाया—के सिर पर वार किया था। मेरे गले में अटकी हवा को बाहर निकालने में मुझे बड़ी मुश्किल हुई।
“यह तुम्हारा बल्ला है, है ना?” उसने पूछा।
“शायद,” मैंने शांत रहने की कोशिश करते हुए कहा। गहरे अंधेरे में मेरी आवाज़ कुछ अलग सी लगने लगी थी, मानो यहाँ नीचे कोई और मेरी जगह बोल रहा हो। मैंने गला साफ़ किया और यह सुनिश्चित करने के बाद कि मैं ही बोल रहा हूँ, मैंने आगे कहा: “लेकिन लगता है किसी ने इसका इस्तेमाल किसी को पीटने के लिए किया है।”
महिला चुप रही। बैठते हुए मैंने बल्ला नीचे किया और उसे अपने पैरों के बीच दबा लिया। मैंने कहा, “मुझे यकीन है कि आप जानती हैं कि क्या हो रहा है। किसी ने इस बल्ले से नोबोरू वटाया की खोपड़ी कुचल दी है। मैंने टीवी पर जो खबर देखी, वह सच थी। नोबोरू वटाया अस्पताल में गंभीर हालत में हैं। उनकी मौत भी हो सकती है।”
“वह मरने वाला नहीं है,” कुमिको की आवाज़ में कोई भाव नहीं था। मानो वह किसी किताब से कोई ऐतिहासिक तथ्य बता रही हो। “हो सकता

है कि उसे होश न आए। हो सकता है कि वह अंधेरे में भटकता रहे, लेकिन वह किस तरह का अंधेरा होगा, यह कोई नहीं जानता।”
मैंने अपने पैरों के पास पड़ा गिलास टटोला और उसे उठा लिया। मैंने उसका सारा तरल अपने मुँह में डाला और बिना सोचे समझे पी गया। वह बेस्वाद तरल मेरे गले से नीचे उतर गया। मुझे बिना किसी कारण के ठंडक महसूस हुई, फिर एक अप्रिय अनुभूति हुई जैसे कोई दूर से लंबे अंधेरे में धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ रहा हो। जैसा कि मुझे पता था, मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा।
मैंने कहा, "हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। अगर हो सके तो बस इतना बता दो: हम कहाँ हैं?"
“तुम पहले भी यहाँ आ चुके हो, और तुम यहाँ तक सुरक्षित और बिना किसी चोट के पहुँच गए थे। तुम्हें पता होना चाहिए कि यह जगह कहाँ है। और वैसे भी, अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। महत्वपूर्ण बात यह है कि—”
तभी दरवाजे पर दस्तक हुई—एक कठोर, सूखी सी आवाज, जैसे कोई दीवार में कील ठोक रहा हो, दो ज़ोरदार दस्तकें और फिर दो और। यह वही दस्तक थी जो मैंने पहले सुनी थी। महिला चौंक गई।
"तुम्हें यहाँ से निकलना होगा," उसने कुमिको की स्पष्ट आवाज में कहा। "अगर तुम अभी जाओगी, तो दीवार के पार जा सकती हो।"
मुझे पता नहीं था कि मैं जो सोच रहा था वह सही था या गलत, लेकिन मुझे यह जरूर पता था कि जब तक मैं यहाँ हूँ, मुझे इस चीज को हराना ही होगा। यही वह युद्ध था जो मुझे लड़ना था।
मैंने कुमिको से कहा, "इस बार मैं भाग नहीं रहा हूँ। मैं तुम्हें घर ले जाऊंगा।"
मैंने अपना गिलास ज़मीन पर रखा, ऊनी टोपी पहनी और घुटनों के बीच से बल्ला उठाया। फिर मैं धीरे-धीरे दरवाजे की ओर बढ़ा।

बस एक असली चाकू

•

जिस बात की भविष्यवाणी की गई थी
मैं फर्श पर धीरे-धीरे चल रहा था और कदमों की आवाज नहीं होने दे रहा था। मैं दरवाजे की ओर बढ़ा। बल्ला मेरे दाहिने हाथ में था। मैं अभी चल ही रहा था कि फिर से दस्तक हुई: दो दस्तकें, फिर दो और। इस बार पहले से ज़्यादा ज़ोर से और हिंसक। मैंने खुद को दीवार से सटा लिया ताकि दरवाजा खुलने पर मैं उसके पीछे छिप सकूँ। वहीं मैं इंतज़ार करता रहा, अपनी सांसों को काबू में रखते हुए।
जब दस्तक की आवाज़ धीमी पड़ गई, तो चारों ओर फिर से गहरी खामोशी छा गई, मानो कुछ हुआ ही न हो। फिर भी, मुझे दरवाजे के दूसरी तरफ किसी की मौजूदगी का एहसास हो रहा था। वह व्यक्ति मेरी ही तरह वहाँ खड़ा था, अपनी साँसों को काबू में रखते हुए, सुनने की कोशिश कर रहा था, साँसों की आवाज़ या दिल की धड़कन सुनने की, या किसी विचार की हलचल को समझने की। मैंने अपनी साँसों को आसपास की हवा में हलचल पैदा न करने देने की कोशिश की। मैं यहाँ नहीं हूँ, मैंने खुद से कहा। मैं यहाँ नहीं हूँ। मैं कहीं भी नहीं हूँ। ताले में चाबी घूमी। वह हर हरकत अत्यंत सावधानी से कर रहा था, हर क्रिया को करने में लगने वाले समय को इतना खींच रहा था कि उससे निकलने वाली आवाज़ें आपस में अलग-थलग हो जाएँ, उनका अर्थ खो जाए। दरवाज़े का हैंडल घूमा, और उसके बाद कब्ज़ों के घूमने की लगभग सुनाई न देने वाली आवाज़ आई। मेरे दिल की धड़कन तेज़ होने लगी। मैंने इस बेचैनी को शांत करने की कोशिश की, लेकिन नाकाम रहा।

कमरे में किसी के आने से सन्नाटा छा गया। मैंने अपनी पाँचों इंद्रियों को सचेत किया और किसी अनजान चीज़ की हल्की सी गंध महसूस की—मोटे कपड़ों, दबी हुई साँसों और खामोशी में डूबी बेचैन नसों का एक अजीब मिश्रण। क्या उसके हाथ में चाकू था? मुझे यही मानना पड़ा। मुझे उसकी चमकीली सफेद रोशनी याद आ गई। अपनी साँस रोककर, अपनी मौजूदगी को मिटाते हुए, मैंने बल्ले पर अपनी पकड़ और मज़बूत कर ली।
अंदर घुसते ही उस व्यक्ति ने दरवाज़ा बंद कर दिया और अंदर से ताला लगा दिया। फिर वह दरवाज़े की तरफ पीठ करके खड़ा रहा, इंतज़ार करता और देखता रहा। बल्ले पर मेरे हाथ पसीने से भीगे हुए थे। मैं अपने हाथों को अपनी पैंट पर पोंछना चाहता था, लेकिन ज़रा सी भी हरकत घातक परिणाम ला सकती थी। मुझे वीरान पड़े मियावाकी घर के बगीचे में खड़ी मूर्ति याद आ गई। यहाँ अपनी उपस्थिति मिटाने के लिए, मैंने खुद को उस पक्षी की छवि में समाहित कर लिया। वहाँ, धूप से सराबोर गर्मी के बगीचे में, मैं एक पक्षी की मूर्ति था, अंतरिक्ष में जमा हुआ, आकाश को घूरता हुआ। वह व्यक्ति अपनी टॉर्च लेकर आया था। उसने उसे जलाया और उसकी सीधी, पतली किरण अंधेरे को चीरती हुई आगे बढ़ी। रोशनी तेज़ नहीं थी। यह उसी तरह की पेनलाइट से आ रही थी जो मेरे पास थी। मैंने इंतज़ार किया कि जैसे ही वह कमरे में दाखिल हुआ, रोशनी मेरे ऊपर से गुज़र जाए, लेकिन उसने हिलने की कोई कोशिश नहीं की। रोशनी कमरे की चीज़ों को एक-एक करके रोशन करने लगी—फूलदान में रखे फूल, मेज़ पर रखी चांदी की ट्रे (जो फिर से अपनी मोहक चमक बिखेर रही थी), सोफ़ा, फ़र्श पर रखा लैंप…। रोशनी मेरी नाक के पास से गुज़री और मेरे जूतों की नोक से कुछ इंच आगे ज़मीन पर आकर रुक गई, मानो किसी साँप की जीभ की तरह कमरे के हर कोने को चाट रही हो।

मुझे ऐसा लगा जैसे अनंत काल बीत गया हो। डर और तनाव तीव्र पीड़ा के साथ मेरे मन में घर कर गए।
सोचना मना है। मैंने खुद से कहा, तुम्हें सोचने की इजाज़त नहीं है। तुम्हें अपनी कल्पना का इस्तेमाल करने की इजाज़त नहीं है। लेफ्टिनेंट मामिया ने अपने पत्र में यही लिखा था। यहाँ कल्पना करना घातक हो सकता है।
आखिरकार, टॉर्च की रोशनी धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। वह आदमी अंदर के कमरे की ओर जाता हुआ प्रतीत हुआ। मैंने बल्ले पर अपनी पकड़ और मज़बूत कर ली। तभी मैंने देखा कि मेरे हाथों का पसीना सूख गया था। बल्कि, मेरे हाथ अब ज़रूरत से ज़्यादा सूख चुके थे।
उस आदमी ने एक धीमा कदम आगे बढ़ाया, फिर रुक गया। फिर एक और कदम। ऐसा लग रहा था जैसे वह अपना संतुलन देख रहा हो। अब वह पहले से कहीं ज़्यादा मेरे करीब था। मैंने गहरी साँस ली और रोक ली। दो और कदम, और वह वहाँ पहुँच जाएगा जहाँ मैं उसे चाहती थी। दो और कदम, और मैं इस चलते-फिरते बुरे सपने का अंत कर पाऊँगी। लेकिन तभी, बिना किसी चेतावनी के, रोशनी गायब हो गई। घोर अंधेरे ने सब कुछ फिर से निगल लिया। उसने अपनी टॉर्च बंद कर दी थी। मैंने अंधेरे में तेज़ी से सोचने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी काम नहीं किया। एक अजीब सी सिहरन मेरे शरीर में दौड़ गई। उसे एहसास हो गया था कि मैं वहाँ हूँ।
मैंने खुद से कहा, "हिलो। बस खड़े मत रहो।" मैंने बाईं ओर हटने की कोशिश की, लेकिन मेरे पैर हिल नहीं रहे थे। मेरे पैर ज़मीन से ऐसे चिपक गए थे, जैसे पक्षी की मूर्ति के पैर। मैं आगे की ओर झुका और बड़ी मुश्किल से अपने अकड़े हुए ऊपरी शरीर को बाईं ओर झुका पाया। तभी, किसी चीज़ ने मेरे दाहिने कंधे पर ज़ोर से

टक्कर मारी, और जमी हुई बारिश की तरह कोई कठोर और ठंडी चीज़ मेरी हड्डियों तक चुभ गई।
उस झटके से मानो मुझे होश आ गया और मेरे पैरों का लकवा दूर हो गया। मैं बाईं ओर उछला और अंधेरे में छिपकर अपने प्रतिद्वंदी को महसूस करने लगा। मेरे शरीर में खून तेज़ी से दौड़ रहा था, हर मांसपेशी और कोशिका ऑक्सीजन के लिए तड़प रही थी। मेरा दाहिना कंधा सुन्न हो रहा था, लेकिन मुझे कोई दर्द नहीं था। दर्द बाद में आएगा। मैं बिल्कुल स्थिर रहा, और वह भी। हम अंधेरे में एक-दूसरे के सामने खड़े थे, अपनी सांसें थामे हुए। न कुछ दिखाई दे रहा था, न कुछ सुनाई दे रहा था।
फिर, बिना किसी चेतावनी के, चाकू आया। वह मेरे चेहरे के पास से ऐसे गुजरा जैसे कोई मधुमक्खी हमला कर रही हो, नुकीला सिरा मेरे दाहिने गाल पर ठीक उसी जगह लगा जहाँ निशान था। मुझे त्वचा फटने का एहसास हुआ। नहीं, वह भी मुझे देख नहीं पा रहा था। अगर देख पाता, तो मुझे बहुत पहले ही खत्म कर चुका होता। मैंने अंधेरे में बल्ला घुमाया, उस दिशा में निशाना लगाया जहाँ से चाकू आया था, लेकिन वह हवा में ही लहराता हुआ निकल गया, किसी को नहीं लगा। हालाँकि, मेरा बल्ला अच्छा था, और उसकी तेज आवाज ने मुझे थोड़ा आराम दिया। हम अभी भी बराबरी पर थे। चाकू ने मुझे दो बार काटा था, लेकिन ज्यादा चोट नहीं आई थी। हम दोनों एक-दूसरे को देख नहीं पा रहे थे। और हालाँकि उसके पास चाकू था, मेरे पास मेरा बल्ला था।
एक बार फिर, हमारी आपसी अंधापन में, साँस रोके हुए, हम एक-दूसरे को महसूस कर रहे थे, किसी हलचल के संकेत का इंतज़ार कर रहे थे। मुझे अपने चेहरे से खून टपकता हुआ महसूस हो रहा था, लेकिन अजीब तरह से मुझे डर नहीं लग रहा था। ये तो बस एक चाकू है, मैंने खुद

खड़ा रहा, बल्ले को पकड़े हुए, उसे अपने सामने फैलाए हुए। तभी मुझे एहसास हुआ कि मैं काँप रहा हूँ। पूरी तरह से। और इसे रोकना नामुमकिन था। मैं एक कदम पीछे हटा और अपनी जेब से टॉर्च निकाली। “नहीं!” अँधेरे में एक आवाज़ आई। “इसे मत देखो!” कुमिको की आवाज़ अंदर के कमरे से मुझे पुकार रही थी, मुझे देखने से रोकने की कोशिश कर रही थी। लेकिन मुझे देखना ही था। मुझे उसे देखना ही था। मुझे जानना ही था कि यह क्या है, अँधेरे के बीचोंबीच पड़ी वह चीज़ जिसे मैंने अभी-अभी बुरी तरह पीटा था। मेरे दिमाग का एक हिस्सा समझ रहा था कि कुमिको मुझे क्या करने से मना कर रही है। वह सही थी: मुझे उसे नहीं देखना चाहिए। लेकिन अब मेरे हाथ में टॉर्च थी, और वह हाथ अपने आप चलने लगा।
“प्लीज़, मैं आपसे विनती कर रही हूँ, रुक जाइए!” वह चीखी। “अगर आप मुझे वापस घर ले जाना चाहते हैं, तो इसे मत देखिए!”
मैंने दांत भींच लिए और फेफड़ों में भरी हवा को धीरे से बाहर निकाल दिया। फिर भी कंपकंपी कम नहीं हुई। हवा में एक घिनौनी गंध फैली हुई थी—दिमाग, हिंसा और मौत की गंध। यह मैंने ही किया था: मैंने ही हवा को ऐसी गंध से भर दिया था। मैंने सोफे को ढूंढा और उस पर गिर पड़ा। कुछ देर तक मैंने पेट में उठ रही मतली से संघर्ष किया, लेकिन मतली जीत गई। मैंने पेट का सारा सामान कालीन पर उल्टी कर दिया, और जब वह निकल गया तो पेट का तरल पदार्थ, फिर हवा और लार भी बाहर आ गई। उल्टी करते समय मैंने बल्ला फर्श पर गिरा दिया। मुझे अंधेरे में उसके लुढ़कने की आवाज सुनाई दी।
पेट की ऐंठन कम होने पर मैंने अपना रुमाल निकालकर मुँह पोंछना चाहा, लेकिन मेरा हाथ हिल नहीं रहा था। मैं सोफे से उठ नहीं पा रही थी। अंदर के अंधेरे कमरे की ओर देखते हुए मैंने कहा, "चलो घर चलते हैं। अब सब खत्म हो गया है। चलो चलते हैं।"

उसने कोई जवाब नहीं दिया।
वहाँ अब कोई नहीं था। मैं सोफे पर बैठ गया और अपनी आँखें बंद कर लीं।
मुझे महसूस हो रहा था कि मेरी ताकत मुझसे छिन रही है—मेरी उंगलियों से, मेरे कंधों से, मेरी गर्दन से, मेरे पैरों से… मेरे ज़ख्मों का दर्द भी धीरे-धीरे कम होने लगा। मेरा शरीर अपना भार और सार खो रहा था। लेकिन इससे मुझे ज़रा भी चिंता या डर नहीं हुआ। बिना किसी विरोध के, मैंने खुद को—अपने शरीर को—उस विशाल, गर्म चीज़ के हवाले कर दिया जो स्वाभाविक रूप से मुझे अपने आलिंगन में ले रही थी। तब मुझे एहसास हुआ कि मैं जेली की दीवार से गुज़र रही हूँ। मुझे बस खुद को उस कोमल प्रवाह में सौंप देना था। मैं अब कभी यहाँ वापस नहीं आऊँगी, मैंने दीवार से गुज़रते हुए खुद से कहा। सब कुछ खत्म हो गया था। लेकिन कुमिको कहाँ थी? वह कहाँ चली गई? मुझे उसे कमरे से वापस लाना था। इसीलिए मैंने उस आदमी को मारा था। इसीलिए मुझे उसकी खोपड़ी तरबूज़ की तरह चीरनी पड़ी थी। इसीलिए मैंने… लेकिन मैं अब और सोच नहीं पा रही थी। मेरा दिमाग शून्यता के गहरे सागर में डूब गया था।

•

जब मुझे होश आया, तो मैं फिर से अंधेरे में बैठा था। हमेशा की तरह मेरी पीठ दीवार से लगी हुई थी। मैं कुएं की तलहटी में लौट आया था।
लेकिन यह कोई सामान्य कुएँ का तल नहीं था। यहाँ कुछ नया था, कुछ अपरिचित। मैंने यह समझने की कोशिश की कि क्या हो रहा है। ऐसा क्या अलग था? लेकिन मेरी इंद्रियाँ लगभग पूरी तरह से निष्क्रिय थीं। मुझे अपने आसपास का अधूरा सा ही एहसास हो रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे किसी गलती से मुझे गलत पात्र में डाल दिया गया

हो। हालाँकि, समय बीतने के साथ-साथ मुझे धीरे-धीरे समझ आने लगा कि यह क्या था।
पानी। मैं पानी से घिरा हुआ था।
कुआँ अब सूखा नहीं था। मैं कमर तक पानी में बैठा था। मैंने खुद को शांत करने के लिए कई गहरी साँसें लीं। ये कैसे हो सकता है? कुएँ से पानी निकल रहा था—लेकिन ठंडा नहीं। बल्कि गर्म लग रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी गर्म पानी के कुंड में नहा रहा हूँ। तभी मुझे अपनी जेब जाँचने का ख्याल आया। मैं जानना चाहता था कि टॉर्च अभी भी वहीं है या नहीं। क्या मैं उसे दूसरी दुनिया से अपने साथ वापस लाया था? क्या वहाँ जो हुआ था और इस दुनिया के बीच कोई संबंध था? लेकिन मेरा हाथ हिल नहीं रहा था। मैं अपनी उंगलियाँ भी नहीं हिला पा रहा था। मेरे हाथों और पैरों की सारी ताकत खत्म हो गई थी। मेरे लिए खड़ा होना नामुमकिन था।
मैंने शांत मन से अपनी स्थिति का आकलन करना शुरू किया। सबसे पहले तो, पानी केवल मेरी कमर तक ही था, इसलिए डूबने की कोई चिंता नहीं थी। हाँ, मैं हिल-डुल नहीं पा रहा था, लेकिन शायद इसलिए क्योंकि मेरी सारी ताकत खत्म हो चुकी थी। कुछ समय बीतने पर मेरी ताकत वापस आ जाएगी। चाकू के घाव ज़्यादा गहरे नहीं लग रहे थे, और लकवे ने कम से कम मुझे दर्द से तो बचा लिया था। मेरे गाल से खून बहना बंद हो गया था।
मैंने अपना सिर दीवार से टिकाया और खुद से कहा, "सब ठीक है, चिंता मत करो। शायद सब कुछ खत्म हो गया था। अब मुझे बस अपने शरीर को यहाँ थोड़ा आराम देना था, फिर अपनी असली दुनिया में लौटना था, ज़मीन के ऊपर वाली दुनिया में, जहाँ सूरज की रोशनी भरपूर थी... लेकिन यह कुआँ अचानक पानी क्यों देने लगा? यह इतने लंबे समय से सूखा पड़ा था, बिल्कुल बेजान, फिर भी अब इसमें जान आ गई थी। क्या

इसका मेरे वहाँ किए गए काम से कोई संबंध हो सकता है? हाँ, शायद हो सकता है। किसी चीज़ ने पानी की धारा में रुकावट डालने वाली किसी चीज़ को ढीला कर दिया हो।"

•

इसके कुछ ही समय बाद, मुझे एक अशुभ तथ्य का सामना करना पड़ा। पहले तो मैंने इसे सच मानने से इनकार कर दिया। मेरे मन ने कई संभावनाएँ गढ़ीं जिनसे मैं ऐसा कर सकूँ। मैंने खुद को समझाने की कोशिश की कि यह अंधेरे और थकान के कारण हुआ भ्रम है। लेकिन अंत में, मुझे इसकी सच्चाई स्वीकार करनी पड़ी। मैंने चाहे खुद को कितना भी धोखा देने की कोशिश की, यह बात मेरे मन से नहीं निकली।
पानी का स्तर बढ़ रहा था।
पानी अब मेरी कमर से ऊपर उठकर मेरे मुड़े हुए घुटनों के नीचे तक आ गया था। यह धीरे-धीरे हो रहा था, लेकिन हो रहा था। मैंने फिर से अपने शरीर को हिलाने की कोशिश की। पूरी ताकत लगाकर मैंने अपनी पूरी शक्ति का इस्तेमाल करने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मैं बस अपनी गर्दन को थोड़ा सा झुका सका। मैंने ऊपर देखा। कुएं का ढक्कन अभी भी मजबूती से लगा हुआ था। मैंने अपनी बाईं कलाई पर बंधी घड़ी को देखने की कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिली।
पानी एक छेद से अंदर आ रहा था—और ऐसा लग रहा था जैसे उसकी गति बढ़ती जा रही हो। पहले जहाँ पानी धीरे-धीरे रिस रहा था, अब वह लगभग उफान पर था। मैं उसकी आवाज़ सुन सकता था। जल्द ही पानी मेरे सीने तक पहुँच गया। अब यह कितना गहरा होने वाला था?
श्री होंडा ने मुझसे कहा था, "पानी से सावधान रहना।" मैंने उनकी भविष्यवाणी पर कभी ध्यान नहीं दिया था। सच है, मैं उसे भूली भी

नहीं थी (इतनी अजीब बात कोई भूल नहीं सकता), लेकिन मैंने उसे कभी गंभीरता से नहीं लिया था। श्री होंडा कुमिको और मेरे लिए बस एक मामूली घटना थे। कभी-कभार जब कोई बात होती, तो मैं मज़ाक में उनके शब्द दोहरा देती: "पानी से सावधान रहना।" और हम हंसते थे। हम जवान थे, और हमें भविष्यवाणियों की कोई ज़रूरत नहीं थी। बस जीना ही अपने आप में एक भविष्यवाणी थी। लेकिन श्री होंडा सही थे। मुझे ज़ोर से हंसने का मन कर रहा था। पानी बढ़ रहा था, और मैं मुसीबत में थी।
मैंने मेई कासाहारा के बारे में सोचा। मैंने अपनी कल्पना का इस्तेमाल करते हुए उन्हें कुएं का ढक्कन खोलते हुए देखा— बिल्कुल वास्तविकता और स्पष्टता के साथ। छवि इतनी वास्तविक और स्पष्ट थी कि मैं मानो उसमें प्रवेश कर गया था। मैं अपना शरीर हिला नहीं सकता था, लेकिन मेरी कल्पना शक्ति काम कर रही थी। मैं और क्या कर सकता था?
“हे, मिस्टर विंड-अप बर्ड,” मेई कासाहारा ने कहा। उनकी आवाज़ कुएँ के पूरे हिस्से में गूंज उठी। मुझे एहसास नहीं था कि पानी से भरे कुएँ की आवाज़ बिना पानी वाले कुएँ से ज़्यादा गूंजती है। “तुम नीचे क्या कर रही हो? फिर से सोच रही हो?”
मैंने ऊपर की ओर देखते हुए कहा, “मैं कोई खास काम नहीं कर रहा हूँ। अभी मेरे पास समझाने का समय नहीं है, लेकिन मैं अपना शरीर हिला नहीं पा रहा हूँ और यहाँ पानी बढ़ता जा रहा है। यह अब सूखा कुआँ नहीं रहा। मैं डूब सकता हूँ।”
“बेचारे मिस्टर विंड-अप बर्ड!” मेई कासाहारा ने कहा। “कुमिको को बचाने की इतनी कोशिश में तुमने अपनी सारी ऊर्जा झोंक दी। और शायद तुमने उसे बचा भी लिया होगा। है ना? और इस प्रक्रिया में तुमने कई लोगों की जान भी बचाई। लेकिन तुम खुद को नहीं बचा सके।

और कोई भी तुम्हें नहीं बचा सका। दूसरों को बचाने में तुमने अपनी सारी ताकत और अपना भाग्य लगा दिया। तुम्हारे सारे बीज कहीं और बोए गए थे, और अब तुम्हारा थैला खाली है। क्या तुमने कभी इससे ज़्यादा अन्याय सुना है? मिस्टर विंड-अप बर्ड, मुझे तुम्हारे लिए दिल से बहुत सहानुभूति है। यह सच है। लेकिन आखिरकार, यह तुम्हारा खुद का फैसला था। क्या तुम समझ रहे हो मेरा मतलब?”
मैंने कहा, "हाँ, मैं करता हूँ।"
मुझे अपने दाहिने कंधे में हल्की सी पीड़ा महसूस हुई। तब मैंने खुद से कहा, "सच में ऐसा हुआ था। चाकू ने मुझे सचमुच काट दिया था। उसने मुझे असली चाकू की तरह काटा था।"
"क्या आपको मरने से डर लगता है, मिस्टर विंड-अप बर्ड?" मेई कासाहारा ने पूछा।
“हाँ, बिल्कुल,” मैंने कहा। मेरी आवाज़ कुएँ में गूँज रही थी। यह मेरी आवाज़ थी, और साथ ही नहीं भी। “अंधेरे कुएँ में यहाँ मरने के बारे में सोचकर मुझे सच में डर लगता है।”
“तो अलविदा, बेचारे मिस्टर विंड-अप बर्ड,” मेई कासाहारा ने कहा। “माफ़ कीजिए, मैं आपके लिए कुछ नहीं कर सकती। मैं बहुत दूर हूँ।” मैंने कहा, "अलविदा, मे कासाहारा। तुम बिकिनी में बहुत खूबसूरत लग रही थीं।"
मेई कासाहारा की आवाज बहुत धीमी थी जब उसने कहा, "अलविदा, बेचारे मिस्टर विंड-अप बर्ड।"
कुएँ का ढक्कन फिर से कसकर बंद हो गया। छवि धुंधली पड़ गई। लेकिन कुछ नहीं हुआ। छवि किसी चीज़ से जुड़ी नहीं थी। मैंने कुएँ के मुँह की ओर चिल्लाकर कहा, "मे कासाहारा, जब मुझे तुम्हारी ज़रूरत है, तुम कहाँ हो?"

•

बत्तख लोगों की कहानी

•

परछाईं और आंसू

•

(मे कासाहारा का दृष्टिकोण: 6)
नमस्कार, श्रीमान विंड-अप बर्ड।
अरे, क्या ये चिट्ठियाँ वाकई तुम्हें परेशान कर रही हैं?
मतलब, मैं तुम्हें ढेरों चिट्ठियाँ लिख रही हूँ, और अब मुझे सच में शक होने लगा है कि क्या वो तुम तक पहुँचती भी हैं या नहीं। मैं जो पता इस्तेमाल कर रही हूँ वो बस नाम का है, और मैं लिफ़ाफ़े पर किसी का पता नहीं लिखती, तो शायद वो कहीं डाकघर में "खोई हुई चिट्ठियों" वाली अलमारी में पड़ी हों, बिना पढ़ी और धूल से ढकी हुई। अब तक तो मैं यही सोचती थी: ठीक है, अगर वो तुम तक नहीं पहुँच रही हैं, तो क्या हुआ? मैं इन चिट्ठियों को लिखती रही हूँ, लेकिन ज़रूरी ये था कि मैं अपने विचारों को कागज़ पर उतार लूँ। मुझे लिखना आसान लगता है अगर मुझे लगता है कि मैं तुम्हें लिख रही हूँ, मिस्टर विंड-अप बर्ड, पता नहीं क्यों। अरे हाँ, ऐसा क्यों है?
लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप इस पत्र को अवश्य पढ़ें। मेरी आशा और प्रार्थना है कि यह पत्र आप तक पहुँच जाए।
अब मैं बत्तख जैसे लोगों के बारे में लिखने जा रहा हूँ। हाँ, मुझे पता है कि मैंने उनका ज़िक्र पहली बार किया है, लेकिन चलिए शुरू करते हैं।
मैंने आपको पहले भी बताया था कि जिस कारखाने में मैं काम करता हूँ, उसकी एक बहुत बड़ी ज़मीन है, जिसमें जंगल, तालाब और बहुत

कुछ है। वहाँ टहलना बहुत अच्छा लगता है। तालाब काफ़ी बड़ा है, और वहीं बत्तखें रहती हैं, शायद कुल मिलाकर बारह बत्तखें होंगी। मुझे नहीं पता कि उनका परिवार कैसे बना है। मुझे लगता है कि उनके अपने कुछ आपसी संबंध होंगे, कुछ सदस्य आपस में अच्छे से रहते होंगे और कुछ से नहीं, लेकिन मैंने उन्हें कभी लड़ते नहीं देखा।
दिसंबर का महीना है, इसलिए तालाब पर बर्फ जमनी शुरू हो गई है, लेकिन इतनी मोटी नहीं। ठंड होने पर भी, इतना खुला पानी बचा रहता है कि बत्तखें थोड़ा-बहुत तैर सकें। मुझे बताया गया है कि जब इतनी ठंड हो जाती है कि मोटी बर्फ जम जाए, तो कुछ लड़कियाँ यहाँ आइस स्केटिंग करने आती हैं। तब बत्तखों को (हाँ, मुझे पता है यह अजीब मुहावरा है, लेकिन मुझे इसे इस्तेमाल करने की आदत हो गई है, इसलिए यह मुँह से निकल ही जाता है) कहीं और जाना पड़ेगा। मुझे आइस स्केटिंग पसंद नहीं है, इसलिए मैं उम्मीद कर रही हूँ कि बर्फ न जमे, लेकिन मुझे नहीं लगता कि इससे कोई फायदा होगा। मेरा मतलब है, देश के इस हिस्से में बहुत ठंड पड़ती है, इसलिए जब तक वे यहाँ रहते रहेंगे, बत्तखों को इस ठंड को सहना ही पड़ेगा।
आजकल मैं हर सप्ताहांत यहाँ आता हूँ और बत्तखों को देखने में समय बिताता हूँ। ऐसा करते-करते पता ही नहीं चलता कि दो-तीन घंटे कैसे बीत जाते हैं। मैं ठंड में बाहर निकलता हूँ, सिर से पैर तक पूरी तरह तैयार होकर, जैसे कोई ध्रुवीय भालू का शिकारी हो: टाइट्स, टोपी, स्कार्फ, बूट, फर से सजा कोट। और घंटों एक चट्टान पर अकेले बैठकर, खोया-खोया सा, बत्तखों को देखता रहता हूँ। कभी- कभी उन्हें बासी रोटी खिला देता हूँ। ज़ाहिर है, यहाँ और कोई नहीं है जिसके पास इतना समय हो कि वो ये सब पागलपन कर सके।

शायद आपको पता न हो, मिस्टर विंड-अप बर्ड, लेकिन बत्तखें बहुत ही प्यारी होती हैं, उनके साथ समय बिताना बहुत अच्छा लगता है। मैं उन्हें देखते-देखते कभी नहीं थकता। मुझे समझ नहीं आता कि बाकी लोग इतनी दूर जाकर, ढेर सारा पैसा खर्च करके कोई बेवकूफी भरी फिल्म क्यों देखते हैं, जबकि वे इन बत्तखों का आनंद ले सकते हैं। कभी-कभी वे हवा में उड़ती हुई आती हैं और बर्फ पर उतरती हैं, लेकिन उनके पैर फिसल जाते हैं और वे गिर जाती हैं। ये तो किसी टीवी कॉमेडी जैसा लगता है! वे मुझे हँसा देती हैं, भले ही आसपास कोई और न हो। बेशक, वे मुझे हँसाने के लिए कोई मसखरापन नहीं कर रही होतीं। वे अपनी जिंदगी को गंभीरता से जीने की पूरी कोशिश कर रही होती हैं, और कभी-कभी बस गिर जाती हैं। मुझे ये बहुत अच्छा लगता है।
बतख जैसे दिखने वाले लोगों के पैर चपटे और नारंगी रंग के होते हैं, जो देखने में बहुत प्यारे लगते हैं, जैसे उन्होंने छोटे बच्चों के बारिश के जूते पहने हों। लेकिन मुझे लगता है कि ये बर्फ पर चलने के लिए नहीं बने हैं, क्योंकि मैंने उन्हें हर जगह फिसलते और गिरते देखा है, और कुछ तो अपने नितंबों के बल गिर भी जाते हैं। शायद उनमें फिसलन रोधी तलवे नहीं लगे हैं। तो शायद सर्दियों का मौसम बतख जैसे दिखने वाले लोगों के लिए उतना मज़ेदार नहीं होता। मुझे हैरानी होती है कि वे बर्फ और ऐसी ही चीज़ों के बारे में अंदर ही अंदर क्या सोचते होंगे। मुझे लगता है कि उन्हें बर्फ से इतनी नफरत भी नहीं होगी। उन्हें देखकर तो मुझे ऐसा ही लगता है। वे सर्दी के मौसम में भी काफी खुश नज़र आते हैं, शायद मन ही मन बड़बड़ाते होंगे, "फिर से बर्फ? चलो कोई बात नहीं..." बतख जैसे दिखने वाले लोगों के बारे में मुझे यही एक और बात अच्छी लगती है।

यह तालाब घने जंगल के बीचोंबीच है, हर चीज़ से बहुत दूर। इस मौसम में (सिवाय मेरे!) कोई भी इतनी दूर चलकर यहाँ तक आने की ज़हमत नहीं उठाता, सिवाय बहुत गर्म दिनों के। मैं जंगल के रास्ते पर चलता हूँ, और मेरे जूते हाल ही में हुई बर्फ़बारी से जमी बर्फ़ पर चरचराते हैं। मुझे चारों ओर बहुत सारे पक्षी दिखाई देते हैं। जब मैंने कॉलर ऊपर कर रखा है, स्कार्फ़ ठुड्डी के नीचे चारों ओर लपेटा हुआ है, मेरी साँस से हवा में सफ़ेद धुएँ के गुबार उठ रहे हैं, मेरी जेब में रोटी का एक टुकड़ा है, और मैं जंगल के रास्ते पर चलते हुए बत्तखों के बारे में सोच रहा हूँ, तो मुझे एक बहुत ही सुखद और आरामदायक एहसास होता है, और मुझे याद आता है कि मुझे इतने लंबे समय से इतनी खुशी महसूस नहीं हुई है। ठीक है, बत्तख जैसे लोगों के बारे में इतना ही काफी है।
सच कहूँ तो, मुझे एक घंटा पहले आपके बारे में एक सपना आया था, श्रीमान विंड-अप बर्ड, और मैं यहीं बैठकर आपको यह पत्र लिख रही हूँ। अभी (मैंने अपनी घड़ी देखी) ठीक 2:18 बज रहे हैं। मैं हमेशा की तरह रात दस बजे से थोड़ा पहले बिस्तर पर गई, बत्तखों को "शुभ रात्रि" कहा और गहरी नींद में सो गई, लेकिन फिर थोड़ी देर पहले मैं अचानक जाग गई—धड़ाम! असल में, मुझे यकीन नहीं है कि यह सपना था। मतलब, मुझे याद नहीं कि मैं सपने में क्या देख रही थी। शायद मैं सपना नहीं देख रही थी। लेकिन जो भी था, मुझे आपके कान के बिल्कुल पास आपकी आवाज़ सुनाई दी। आप मुझे बार-बार बहुत तेज़ आवाज़ में पुकार रहे थे। उसी आवाज़ ने मुझे चौंका कर जगा दिया। जब मैंने आँखें खोलीं तो कमरा अँधेरा नहीं था। खिड़की से चाँदनी अंदर आ रही थी। पहाड़ी के ऊपर एक विशाल चाँद, मानो स्टेनलेस स्टील की ट्रे हो, लटका हुआ था। वह इतना बड़ा था कि ऐसा लग रहा था जैसे मैं हाथ बढ़ाकर उस पर कुछ लिख सकती हूँ। और

खिड़की से आती रोशनी किसी बड़े, सफेद पानी के कुंड जैसी लग रही थी। मैं बिस्तर पर बैठ गई, दिमाग खपाते हुए, यह समझने की कोशिश कर रही थी कि अभी-अभी क्या हुआ। तुम इतनी तीखी, साफ आवाज़ में मेरा नाम क्यों पुकार रहे थे? मेरा दिल बहुत देर तक धड़कता रहा। अगर मैं अपने घर में होती, तो कपड़े पहनकर—चाहे आधी रात ही क्यों न हो—तुम्हारे घर की ओर दौड़ पड़ती, मिस्टर विंड-अप बर्ड। लेकिन यहाँ, पहाड़ों में लाखों मील दूर, मैं कहीं दौड़ नहीं सकती थी, है ना?
तो फिर आपको पता है मैंने क्या किया?
मैं नग्न हो गई। उम्म। मुझसे मत पूछो क्यों। मुझे खुद भी ठीक से नहीं पता। इसलिए चुप रहो और बाकी की बातें सुनो। खैर, मैंने अपने सारे कपड़े उतार दिए और बिस्तर से उठ गई। और मैं सफेद चांदनी में फर्श पर घुटनों के बल बैठ गई। हीटर बंद था और कमरा ठंडा रहा होगा, लेकिन मुझे ठंड नहीं लग रही थी। खिड़की से आती चांदनी में कुछ खास बात थी, और वह मेरे शरीर को एक पतली, सुरक्षात्मक, त्वचा से चिपकी हुई परत में लपेट रही थी। कम से कम मुझे तो ऐसा ही महसूस हुआ। मैं कुछ देर तक वहीं नग्न पड़ी रही, खोई-खोई सी, लेकिन फिर मैंने बारी-बारी से अपने शरीर के अलग-अलग हिस्सों को चांदनी में नहलाने के लिए आगे किया। पता नहीं, बस यही सबसे स्वाभाविक लगा। चांदनी इतनी खूबसूरत थी कि मैं खुद को रोक नहीं पाई। मेरा सिर, कंधे, बांहें, स्तन, पेट, टांगें, नितंब और, आप जानते हैं, आसपास का सारा शरीर: एक-एक करके, मैंने उन्हें चांदनी में डुबोया, जैसे स्नान कर रही हो।
अगर किसी ने मुझे बाहर से देखा होता, तो उन्हें बहुत अजीब लगता। मैं शायद पूर्णिमा की रात में पागलों की तरह हरकतें कर रहा होता। लेकिन ज़ाहिर है, किसी ने मुझे नहीं देखा। वैसे, अब सोचता

हूँ तो लगता है शायद वो मोटरसाइकिल वाला लड़का कहीं से मुझे देख रहा होगा। खैर, कोई बात नहीं। वो तो मर चुका है। अगर वो देखना चाहता, और अगर उसे इससे तसल्ली होती, तो मुझे उसे देखने देने में कोई हिचक नहीं होती।
लेकिन खैर, कोई मेरी तरफ नहीं देख रहा था। मैं चांदनी रात में बिल्कुल अकेला था। और बीच-बीच में, मैं अपनी आँखें बंद कर लेता और बत्तख जैसे लोगों के बारे में सोचता, जो शायद तालाब के पास कहीं सो रहे होंगे। मैं उस गर्मजोशी और खुशी के एहसास के बारे में सोचता जो मैंने और बत्तख जैसे लोगों ने दिन के उजाले में साथ मिलकर बनाया था। क्योंकि, आखिरकार, बत्तख जैसे लोग मेरे लिए एक तरह से जादुई, सुरक्षा कवच और ताबीज की तरह हैं।
उसके बाद मैं काफी देर तक वहीं घुटनों के बल बैठी रही, बिल्कुल अकेली, नग्न अवस्था में, चांदनी में। रोशनी ने मेरी त्वचा को एक जादुई रंग दे दिया था, और मेरे शरीर की एक गहरी काली परछाईं फर्श पर, दीवार तक फैल रही थी। वह मेरे शरीर की परछाईं जैसी नहीं लग रही थी, बल्कि किसी अधिक परिपक्व स्त्री की परछाईं जैसी थी। वह मेरी तरह कुंवारी नहीं थी, उसमें मेरे जैसे कोण और उभार नहीं थे, बल्कि वह अधिक भरी हुई और गोल थी, उसके स्तन और निप्पल कहीं अधिक बड़े थे। लेकिन वह मेरी ही परछाईं थी—बस लंबी और अलग आकृति वाली। जब मैं हिलती, तो वह भी हिलती। कुछ देर तक, मैंने अलग-अलग तरीकों से हिलने की कोशिश की और बहुत ध्यान से यह देखने की कोशिश की कि मेरे और मेरी परछाईं के बीच क्या संबंध है, यह समझने की कोशिश की कि यह इतनी अलग क्यों दिखती है। लेकिन अंत में, मैं इसे समझ नहीं पाई। जितना अधिक मैं देखती, उतना ही यह अजीब लगता।

अब आता है वो हिस्सा जिसे समझाना वाकई मुश्किल है, मिस्टर विंड-अप बर्ड। मुझे शक है कि मैं इसे समझा पाऊँगा, लेकिन फिर भी कोशिश करता हूँ।
खैर, संक्षेप में कहूँ तो, अचानक ही मैं फूट-फूटकर रोने लगी। मतलब, अगर किसी फिल्म का सीन होता, तो कुछ ऐसा होता: “मे कासाहारा: यहाँ, बिना किसी चेतावनी के, हाथों से चेहरा ढककर, ज़ोर-ज़ोर से रोने लगती है और फूट-फूटकर गिर पड़ती है।” लेकिन ज़्यादा हैरान मत होइए। मैंने अब तक आप लोगों से ये बात छुपा रखी थी, लेकिन सच तो ये है कि मैं दुनिया की सबसे बड़ी रोने वाली इंसान हूँ। मैं छोटी-छोटी बातों पर रो देती हूँ। ये मेरी छुपी हुई कमज़ोरी है। इसलिए मेरे लिए, बिना किसी वजह के अचानक रो पड़ना कोई हैरानी की बात नहीं थी। वैसे तो, आमतौर पर मैं थोड़ा रो लेती हूँ और फिर खुद को रोक लेती हूँ। मुझे रोना बहुत आसान लगता है, लेकिन मैं उतनी ही आसानी से रुक भी जाती हूँ। लेकिन आज रात, मैं खुद को रोक ही नहीं पाई। बस, बात बिगड़ गई, और बस। मुझे नहीं पता था कि मुझे रोना क्यों शुरू हुआ, इसलिए मुझे ये भी नहीं पता था कि खुद को कैसे रोकूँ। आँसू ऐसे बह निकले, जैसे किसी बड़े घाव से खून बहता है। मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि मैं कितना रो रही हूँ। मुझे सचमुच चिंता होने लगी थी कि अगर यही सिलसिला जारी रहा तो कहीं मैं डिहाइड्रेटेड होकर ममी न बन जाऊं।
मैं सचमुच अपने आँसुओं को चाँदनी के सफेद कुंड में टपकते हुए देख और सुन सकती थी, जहाँ वे ऐसे समा गए मानो हमेशा से प्रकाश का हिस्सा रहे हों। गिरते हुए, आँसुओं ने चाँद की रोशनी को पकड़ लिया और सुंदर क्रिस्टल की तरह चमक उठे। तभी मैंने देखा कि मेरी परछाई भी रो रही थी, साफ, तीखे आँसू बहा रही थी। क्या आपने कभी आँसुओं की परछाई देखी है, श्रीमान विंड-अप बर्ड? वे साधारण

परछाइयों जैसी बिल्कुल नहीं होतीं। बिलकुल भी नहीं। वे किसी दूसरी, दूर की दुनिया से यहाँ आती हैं, खासकर हमारे दिलों के लिए। या शायद नहीं। तभी मुझे यह एहसास हुआ कि मेरी परछाई के जो आँसू बह रहे थे, वे शायद असली थे, और मेरे जो आँसू बह रहे थे, वे सिर्फ परछाइयाँ थीं। मुझे यकीन है, श्रीमान विंड-अप बर्ड, आप नहीं समझते। जब एक सत्रह साल की नग्न लड़की चाँदनी में आँसू बहा रही हो, तो कुछ भी हो सकता है। यह सच है।
तो लगभग एक घंटे पहले इस कमरे में यही सब हुआ था। और अब मैं अपनी डेस्क पर बैठा हूँ, पेंसिल से आपको पत्र लिख रहा हूँ, श्रीमान विंड-अप बर्ड (बेशक, अपने कपड़े पहने हुए!)।
अलविदा, मेरे प्यारे पक्षी। मुझे ठीक से कहना नहीं आता, लेकिन जंगल में रहने वाले बत्तख लोग और मैं आपके सुरक्षित और खुशहाल रहने की प्रार्थना कर रहे हैं। अगर आपको कुछ हो जाए, तो मुझे फिर से ज़ोर से पुकारने में संकोच मत करना।
शुभ रात्रि।

दो अलग-अलग प्रकार की खबरें

•

वह चीज़ जो गायब हो गई
"दालचीनी तुम्हें यहाँ लेकर आई है," जायफल ने कहा।
जब मैं जागा तो सबसे पहले मुझे दर्द महसूस हुआ, अलग-अलग, विकृत रूपों में। चाकू के घाव में दर्द था, और मेरे शरीर के सभी जोड़ों, हड्डियों और मांसपेशियों में दर्द था। अंधेरे में भागते समय मेरे शरीर के अलग-अलग हिस्से किसी न किसी चीज़ से टकरा गए होंगे। फिर भी, इन अलग-अलग दर्दों का स्वरूप पूरी तरह स्पष्ट नहीं था। वे दर्द के करीब तो थे, लेकिन उन्हें ठीक से दर्द नहीं कहा जा सकता था।
फिर मुझे एहसास हुआ कि मैं फिटिंग रूम के सोफे पर लेटी हुई थी, मैंने गहरे नीले रंग का पजामा पहना हुआ था जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था और एक कंबल ओढ़े हुए थी। पर्दे खुले थे और खिड़की से सुबह की तेज धूप अंदर आ रही थी। मैंने अंदाज़ा लगाया कि लगभग दस बज रहे होंगे। यहाँ ताज़ी हवा थी और समय आगे बढ़ रहा था, लेकिन ये सब क्यों होता है, यह मेरी समझ से परे था।
“सिनेमन तुम्हें यहाँ लाया है,” नटमेग ने कहा। “तुम्हारे घाव ज़्यादा गंभीर नहीं हैं। कंधे पर लगा घाव काफ़ी गहरा है, लेकिन सौभाग्य से किसी बड़ी रक्त वाहिका को चोट नहीं पहुँची। चेहरे पर लगे घाव तो बस मामूली खरोंच हैं। सिनेमन ने बाकी घावों को सुई और धागे से सिल दिया है ताकि निशान न पड़ें। वह इसमें माहिर है। तुम कुछ दिनों में खुद ही टांके निकाल सकते हो या डॉक्टर से निकलवा सकते हो।”

मैंने बोलने की कोशिश की, लेकिन मेरी आवाज़ नहीं निकल रही थी। मैं बस सांस अंदर ले पा रहा था और उसे कर्कश आवाज़ के साथ बाहर निकाल पा रहा था।
“अभी हिलने-डुलने या बोलने की कोशिश मत करना,” नटमेग ने कहा। वह पास ही एक कुर्सी पर पैर मोड़कर बैठी थी। “सिनेमन कहती है कि तुम कुएँ में बहुत देर तक रहे—बाल-बाल बच गए। लेकिन मुझसे मत पूछो कि क्या हुआ। मुझे कुछ नहीं पता। आधी रात को मुझे फोन आया, मैंने टैक्सी बुलाई और तुरंत यहाँ आ गई। उससे पहले क्या हुआ, मुझे कुछ नहीं पता। तुम्हारे कपड़े पूरी तरह भीगे हुए और खून से सने थे। हमने उन्हें फेंक दिया।”
नटमेग ने हमेशा की तरह सादे कपड़े पहने थे, मानो वह सचमुच घर से जल्दी में निकली हो। उसने एक धारीदार कमीज़ के ऊपर क्रीम रंग का कश्मीरी स्वेटर और जैतून के हरे रंग की ऊनी स्कर्ट पहनी थी, कोई गहने नहीं थे और बाल पीछे बंधे हुए थे। वह थोड़ी थकी हुई लग रही थी, लेकिन बाकी सब कुछ देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी कैटलॉग की तस्वीर हो। उसने अपने होठों के बीच एक सिगरेट रखी और उसे अपने सुनहरे लाइटर से जलाया, हमेशा की तरह एक साफ, सूखी क्लिक की आवाज़ आई, फिर उसने आँखें सिकोड़कर धुआँ अंदर खींचा। लाइटर की आवाज़ सुनकर मैंने खुद को तसल्ली दी कि मैं सच में मरी नहीं थी। सिनेमन ने मुझे ऐन मौके पर कुएँ से बाहर निकाल लिया होगा। “सिनेमन चीजों को एक खास तरीके से समझता है,” नटमेग ने कहा। “और तुम्हारे या मेरे विपरीत, वह हमेशा घटनाओं के घटित होने की संभावनाओं के बारे में गहराई से सोचता रहता है। लेकिन उसने भी यह कल्पना नहीं की थी कि कुएं में पानी इतनी अचानक लौट आएगा। यह उन कई संभावनाओं में से एक भी नहीं थी जिन पर उसने विचार किया

था। और इसी वजह से, तुम बाल-बाल बच गए। मैंने उस लड़के को पहली बार इतना घबराते हुए देखा था।”
यह कहते हुए उसने हल्की सी मुस्कान बिखेरी।
“वह तुम्हें बहुत पसंद करता होगा,” उसने कहा।
उसके बाद उसने क्या कहा, मैं सुन नहीं पाई। मेरी आँखों के पीछे गहरा दर्द महसूस हुआ और पलकें भारी हो गईं। मैंने उन्हें बंद कर लिया और मैं अंधेरे में डूब गई, मानो लिफ्ट में बैठी हो।

•

मेरे शरीर को ठीक होने में पूरे दो दिन लग गए। जायफल हर समय मेरे साथ रहा। मैं खुद से उठ नहीं पा रही थी, बोल नहीं पा रही थी, मुश्किल से खा पा रही थी। बस संतरे के रस के कुछ घूंट और डिब्बाबंद आड़ू के कुछ टुकड़े ही खा पा रही थी। जायफल रात को घर जाता और सुबह वापस आता। यह ठीक था, क्योंकि मैं पूरी रात और दिन का ज़्यादातर समय गहरी नींद में सोती रही। ज़ाहिर है, मुझे ठीक होने के लिए नींद की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी।
मैंने सिनेमन को कभी नहीं देखा। ऐसा लगता था मानो वह जानबूझकर मुझसे बच रहा हो। जब भी वह नटमेग को छोड़ने या लेने आता, या खाना- कपड़े पहुँचाता, तो मुझे उसकी कार के गेट से अंदर आने की आवाज़ सुनाई देती थी—पोर्श इंजन की वह खास गहरी गड़गड़ाहट, क्योंकि उसने मर्सिडीज़ चलाना बंद कर दिया था—लेकिन वह खुद अंदर नहीं आता था। वह नटमेग को दरवाजे पर सामान देता और फिर चला जाता। “हम जल्द ही इस जगह से छुटकारा पा लेंगे,” नटमेग ने मुझसे कहा। “मुझे फिर से महिलाओं की देखभाल खुद ही करनी पड़ेगी। खैर, यही मेरी किस्मत है। मुझे तब तक काम करते रहना होगा जब तक मैं पूरी तरह से थक न जाऊं—खाली न हो जाऊं। और तुम: शायद अब तुम्हारा हमसे कोई वास्ता नहीं रहेगा। जब यह सब खत्म हो जाएगा और तुम ठीक

हो जाओगे, तो बेहतर होगा कि तुम हमें जितनी जल्दी हो सके भूल जाओ। क्योंकि… ओह, हाँ, मैं तुम्हें बताना भूल गई। तुम्हारे जीजा के बारे में। नोबोरू वटाया।”
नटमेग बगल वाले कमरे से एक अखबार लाकर मेज पर फैला दिया। “सिनेमन इसे थोड़ी देर पहले लाया था। तुम्हारे जीजाजी कल रात नागासाकी में बेहोश हो गए। उन्हें वहाँ के अस्पताल ले जाया गया, लेकिन तब से वे बेहोश हैं। उन्हें नहीं पता कि वे ठीक होंगे या नहीं।”
नागासाकी? मुझे उसकी बात समझ में नहीं आ रही थी। मैं बोलना चाहता था, पर शब्द मुंह से नहीं निकल रहे थे। नोबोरू वाटाया को नागासाकी में नहीं, अकासाका में गिरना चाहिए था। नागासाकी ही क्यों?
“उन्होंने नागासाकी में भाषण दिया,” नटमेग ने आगे कहा, “उसके बाद वे आयोजकों के साथ रात का खाना खा रहे थे, तभी अचानक वे बेहोश हो गए। उन्हें पास के अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टरों का मानना है कि यह किसी तरह का स्ट्रोक था—शायद उनके मस्तिष्क की किसी रक्त वाहिका में जन्मजात कमजोरी के कारण। अखबार में लिखा है कि वे कुछ समय तक बिस्तर पर ही रहेंगे, और अगर उन्हें होश भी आ गया तो शायद वे बोल नहीं पाएंगे, इसलिए शायद उनके राजनीतिक करियर का यहीं अंत हो गया। कितना दुख की बात है: वे इतने युवा थे। मैं अखबार यहीं छोड़ रही हूँ। जब आप ठीक महसूस करें तो इसे पढ़ लें।”
इन तथ्यों को सच्चाई के रूप में स्वीकार करने में मुझे कुछ समय लगा। होटल की लॉबी में मैंने टीवी पर जो समाचार देखे थे, वे दृश्य अभी भी मेरे दिमाग में स्पष्ट रूप से छपे हुए थे—अकासाका में नोबोरू वाटाया का कार्यालय, चारों ओर पुलिस, अस्पताल का

मुख्य द्वार, रिपोर्टर का गंभीर चेहरा, उसकी आवाज़ तनावग्रस्त। धीरे-धीरे, मैं खुद को यह समझाने में कामयाब हो गया कि मैंने जो देखा वह केवल दूसरी दुनिया की खबर थी। मैंने वास्तव में, इस दुनिया में, नोबोरू वाटाया को बेसबॉल बैट से नहीं पीटा था। वास्तव में, पुलिस मुझसे पूछताछ नहीं करेगी और न ही मुझे इस अपराध के लिए गिरफ्तार किया जाएगा। वह सबके सामने, सार्वजनिक रूप से, स्ट्रोक से गिर पड़े थे। इसमें कोई अपराध शामिल नहीं था, अपराध की कोई संभावना नहीं थी। यह जानकर मुझे बहुत राहत मिली। आखिरकार, टेलीविजन पर वर्णित हमलावर मुझसे आश्चर्यजनक रूप से मिलता-जुलता था, और मेरे पास कोई पुख्ता सबूत नहीं था।
परलोक में किसी को पीट-पीटकर मार डालने और नोबोरू वटाया के बेहोश होने के बीच ज़रूर कोई न कोई संबंध था। मैंने साफ़ तौर पर उसके अंदर कुछ मार डाला था या उससे गहराई से जुड़ी किसी चीज़ को। शायद उसे इसका आभास हो गया था। हालाँकि, मैंने जो किया उससे नोबोरू वटाया की जान नहीं गई। वह मौत के मुँह से बच निकला। मुझे उसे मौत के मुँह में धकेल देना चाहिए था। अब कुमिको का क्या होगा? क्या वह उसके जीवित रहते हुए उससे छुटकारा नहीं पा पाएगी? क्या वह अपनी अचेतन अवस्था से उस पर अपना जादू चलाता रहेगा? मेरे विचार यहीं तक सीमित रहे। मेरी चेतना धीरे-धीरे क्षीण होती चली गई, जब तक कि मैं नींद में आँखें बंद नहीं कर लीं। मुझे एक तनावपूर्ण, खंडित सपना आया। क्रेता कानो अपनी गोद में एक शिशु को लिए हुए थी। मैं शिशु का चेहरा नहीं देख पा रहा था। क्रेता कानो के बाल छोटे थे और उसने कोई मेकअप नहीं किया था। उसने मुझे बताया कि शिशु का नाम कोर्सिका है और शिशु के पिता का आधा हिस्सा मैं हूँ, जबकि आधा लेफ्टिनेंट मामिया हैं। उसने कहा कि वह क्रीट नहीं गई थी, बल्कि जापान में ही रहकर बच्चे को जन्म

दिया और पाला-पोसा था। उसने हाल ही में शिशु के लिए एक नया नाम चुना था और अब वह लेफ्टिनेंट मामिया के साथ हिरोशिमा की पहाड़ियों में सब्जियाँ उगाते हुए शांतिपूर्ण जीवन जी रही थी। इनमें से कोई भी बात मेरे लिए आश्चर्य की बात नहीं थी। कम से कम मेरे सपने में तो मैंने यह सब पहले ही देख लिया था।
मैंने पूछा, "जब मैंने माल्टा कानो को आखिरी बार देखा था, तब से वह कैसी है?"
क्रेता कानो ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उसने मुझे उदास निगाहों से देखा और फिर गायब हो गई।

•

तीसरे दिन सुबह आखिरकार मैं खुद बिस्तर से उठने में कामयाब हो गई। चलना अभी भी मेरे लिए बहुत मुश्किल था, लेकिन धीरे-धीरे मेरी बोलने की क्षमता वापस आ गई। जायफल ने मेरे लिए चावल का दलिया बनाया। मैंने उसे और थोड़े से फल खाए।
मैंने उससे पूछा, "बिल्ली कैसी है?" यह बात मुझे कुछ समय से परेशान कर रही थी।
“चिंता मत करो, सिनेमन उसका ख्याल रख रहा है। वह हर रोज तुम्हारे घर आकर उसे खाना खिलाता है और उसका पानी बदलता है। तुम्हें बस अपनी चिंता करनी है।”
आप इस जगह से कब छुटकारा पाने वाले हैं?
“जितनी जल्दी हो सके। शायद अगले महीने के आसपास। मुझे लगता है कि आपको भी इसमें से कुछ पैसे मिलेंगे। शायद हमें इसे उस कीमत से कम में बेचना पड़ेगा जितने में हमने इसे खरीदा था, इसलिए आपको ज्यादा नहीं मिलेगा, लेकिन आपका हिस्सा आपके द्वारा मॉर्गेज पर चुकाई गई राशि का एक अच्छा प्रतिशत होगा। इससे आपका कुछ समय तक गुजारा हो जाएगा। इसलिए आपको पैसे की ज्यादा चिंता

करने की जरूरत नहीं है। आखिर आप इसके हकदार हैं: आपने यहां कड़ी मेहनत की है।”
क्या इस घर को गिरा दिया जाएगा?
“शायद। और वे शायद कुएं को फिर से भर देंगे। अब जब उसमें से पानी निकलने लगा है, तो यह एक तरह से बर्बादी ही लगती है, लेकिन आजकल कोई भी उस तरह का बड़ा, पुराने ज़माने का कुआँ नहीं चाहता। वे आमतौर पर बस एक पाइप और एक इलेक्ट्रिक पंप लगा देते हैं। यह ज़्यादा सुविधाजनक है और कम जगह भी लेता है।”
मैंने कहा, "मुझे नहीं लगता कि अब इस जगह पर कोई बुरी नज़र लगी है। यह शायद फिर से एक साधारण सी ज़मीन बन गई है, न कि वह 'फांसी का घर'।"
“शायद तुम सही हो,” नटमेग ने कहा। वह झिझकी, फिर अपने होंठ दबाए। “लेकिन अब इसका मुझसे या तुमसे कोई लेना-देना नहीं है। है ना? वैसे भी, ज़रूरी बात यह है कि तुम अब आराम करो और उन चीज़ों के बारे में चिंता मत करो जिनका कोई महत्व नहीं है। पूरी तरह ठीक होने में थोड़ा समय लगेगा।”
नटमेग ने मुझे सुबह के अखबार में छपा नोबोरू वाटाया का लेख दिखाया, जो वह अपने साथ लाई थी। यह एक छोटा सा लेख था। अभी भी बेहोश नोबोरू वाटाया को नागासाकी से टोक्यो के एक बड़े विश्वविद्यालय अस्पताल में ले जाया गया था, जहाँ उन्हें गहन चिकित्सा कक्ष में रखा गया था, उनकी हालत में कोई बदलाव नहीं आया था। रिपोर्ट में इससे ज्यादा कुछ नहीं लिखा था। उस समय मेरे मन में कुमिको का ख्याल आया। वह कहाँ हो सकती है? मुझे घर वापस जाना था। लेकिन मुझमें इतनी दूर चलने की ताकत नहीं थी।
अगली सुबह देर से मैं बाथरूम के सिंक तक पहुंचा और तीन दिन बाद पहली बार आईने में खुद को देखा। मैं बहुत बुरा दिख रहा था—थके

हुए इंसान से ज़्यादा एक अच्छी तरह से संरक्षित लाश जैसा। जैसा कि नटमेग ने कहा था, मेरे गाल पर लगे कट को पेशेवर दिखने वाले टांकों से सिला गया था, घाव के किनारों को सफेद धागे से अच्छी तरह से बांधा गया था। यह कम से कम एक इंच लंबा था, लेकिन ज़्यादा गहरा नहीं था। अगर मैं मुंह बनाने की कोशिश करता तो थोड़ा खिंचाव महसूस होता था, लेकिन दर्द बहुत कम था। मैंने अपने दांत साफ किए और अपनी दाढ़ी पर इलेक्ट्रिक शेवर का इस्तेमाल किया। मुझे अभी भी रेज़र चलाने का डर था। जैसे ही दाढ़ी के बाल झड़ने लगे, मुझे आईने में अपनी छवि पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। मैंने शेवर नीचे रखा और ध्यान से देखा। निशान गायब हो गया था। उस आदमी ने मेरे दाहिने गाल पर कट लगाया था। ठीक उसी जगह जहां निशान था। कट तो था, लेकिन निशान गायब हो गया था। वह मेरे गाल से बिना किसी निशान के गायब हो गया था।

•

पाँचवें दिन की रात को मुझे फिर से स्लेज की घंटियों की हल्की आवाज़ सुनाई दी। सुबह के दो बजने वाले थे। मैं सोफे से उठी, पजामे के ऊपर एक कार्डिगन पहना और फिटिंग रूम से बाहर निकल गई। रसोई से गुज़रते हुए मैं सिनेमन के छोटे से दफ्तर में गई और अंदर झाँका। सिनेमन कंप्यूटर के अंदर से मुझे फिर से बुला रही थी। मैं डेस्क पर बैठ गई और स्क्रीन पर संदेश पढ़ा।
अब आपको "द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल" प्रोग्राम तक पहुंच प्राप्त हो गई है। एक दस्तावेज़ (1–17) चुनें।
मैंने #17 पर क्लिक किया, और मेरे सामने एक दस्तावेज़ खुल गया।

विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल #17 (कुमिको का पत्र)

•

मुझे तुम्हें बहुत सी बातें बतानी हैं। सब कुछ बताने में शायद बहुत समय लग जाएगा—शायद सालों। मुझे बहुत पहले ही तुमसे खुलकर सब कुछ बता देना चाहिए था, ईमानदारी से सब कुछ कबूल कर लेना चाहिए था, लेकिन दुर्भाग्य से मुझमें ऐसा करने का साहस नहीं था। और मुझे अब भी यह निराधार उम्मीद थी कि चीजें इतनी बुरी नहीं होंगी। नतीजा हम दोनों के लिए यह बुरा सपना साबित हुआ है। यह सब मेरी गलती है। लेकिन अब स्पष्टीकरण देने का समय नहीं है। हमारे पास इसके लिए पर्याप्त समय नहीं है। इसलिए मैं यहाँ सबसे पहले तुम्हें सबसे महत्वपूर्ण बात बताना चाहता हूँ।
और वह यह है कि मुझे अपने भाई नोबोरू वाटाया को मारना होगा। मैं अब अस्पताल के उस कमरे में जा रही हूँ जहाँ वह सो रहा है, ताकि मैं उसकी जीवन रक्षक प्रणाली का प्लग निकाल सकूँ। उसकी बहन होने के नाते, मुझे नर्स की जगह उसके साथ रात बिताने की अनुमति होगी। किसी को पता चलने में थोड़ा समय लगेगा कि उसे लाइफ सपोर्ट सिस्टम से हटा दिया गया है। डॉक्टर ने मुझे कल ही दिखाया था कि यह कैसे काम करता है। मेरा इरादा तब तक इंतजार करने का है जब तक मुझे यकीन न हो जाए कि उसकी मृत्यु हो गई है, और फिर मैं पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दूंगी। मैं उन्हें बताऊंगी कि मैंने वही किया जो मुझे सही लगा, लेकिन इससे ज्यादा कोई स्पष्टीकरण नहीं दूंगी। मुझे शायद मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा और हत्या का मुकदमा चलाया जाएगा। मीडिया हंगामा खड़ा कर देगा, और लोग गरिमापूर्ण मृत्यु और ऐसे ही अन्य मामलों पर अपनी

राय देंगे। लेकिन मैं चुप रहूंगी। मैं कोई स्पष्टीकरण या बचाव नहीं दूंगी। इस सब में केवल एक ही सच्चाई है, और वह यह है कि मैं एक इंसान, नोबोरू वटाया की जान लेना चाहती थी। वे शायद मुझे जेल में डाल देंगे, लेकिन यह सोचकर मुझे डर नहीं लगता। मैं पहले ही सबसे बुरे हालातों से गुजर चुकी हूँ।

•

अगर तुम न होते तो मैं बहुत पहले ही पागल हो गया होता। मैं खुद को पूरी तरह से खोखला करके किसी और के हवाले कर देता और ऐसी हालत में पहुँच जाता जहाँ से उबरना नामुमकिन होता। मेरे भाई नोबोरू वटाया ने कई साल पहले मेरी बहन के साथ ठीक यही किया था, और उसने आत्महत्या कर ली थी। उसने हम दोनों को अपवित्र किया। सच कहें तो, उसने हमारे शरीर को अपवित्र नहीं किया। उसने जो किया वह उससे भी कहीं ज़्यादा बुरा था।
मुझसे कुछ भी करने की आज़ादी छीन ली गई थी, और मैंने खुद को एक अंधेरे कमरे में अकेले बंद कर लिया था। किसी ने मुझे जंजीरों से नहीं बांधा था और न ही मेरी निगरानी के लिए कोई पहरेदार तैनात किया था, लेकिन मैं भाग भी नहीं सकता था। मेरे भाई ने मुझे और भी मज़बूत जंजीरों और पहरेदारों से जकड़ रखा था—ये जंजीरें और पहरेदार मैं खुद ही था। मैं ही वह जंजीर था जो मेरे टखने में चुभ रही थी, और मैं ही वह निर्दयी पहरेदार था जो कभी सोता नहीं था। मेरे अंदर, ज़ाहिर है, एक ऐसा 'स्व' था जो भागना चाहता था, लेकिन साथ ही एक कायर, भ्रष्ट 'स्व' भी था जिसने वहाँ से भागने की सारी उम्मीद छोड़ दी थी, और पहला 'स्व' दूसरे पर कभी हावी नहीं हो सका क्योंकि मैं मन और शरीर से इतना दूषित हो चुका था। मैंने तुम्हारे पास वापस जाने का अधिकार खो दिया था—सिर्फ इसलिए नहीं कि मेरे भाई, नोबोरू वटाया ने मुझे दूषित किया था, बल्कि

इसलिए भी कि उससे पहले ही मैंने खुद को इतना दूषित कर लिया था कि उसकी भरपाई नहीं हो सकती थी।
मैंने आपको अपने पत्र में बताया था कि मैं एक पुरुष के साथ सोई थी, लेकिन उस पत्र में मैंने सच नहीं कहा था। मुझे यहाँ आपके सामने सच कबूल करना होगा। मैं सिर्फ एक पुरुष के साथ नहीं सोई थी। मैं कई अन्य पुरुषों के साथ सोई थी। इतने ज़्यादा कि गिनती भी नहीं की जा सकती। मुझे खुद नहीं पता कि मैंने ऐसा क्यों किया। अब पीछे मुड़कर देखने पर मुझे लगता है कि शायद यह मेरे भाई का प्रभाव था। हो सकता है उसने मेरे अंदर कुछ ऐसा खोल दिया हो, कुछ समझ से परे चीज़ निकाल ली हो, और मुझे एक के बाद एक पुरुषों के हवाले कर दिया हो। मेरे भाई में ऐसी शक्ति थी, और भले ही मुझे यह स्वीकार करने में बुरा लगता हो, हम दोनों किसी अंधेरी जगह में ज़रूर एक-दूसरे से जुड़े हुए थे।
बहरहाल, जब तक मेरा भाई मेरे पास आया, तब तक मैं खुद को इतना दूषित कर चुका था कि उसे साफ करना नामुमकिन था। अंत में, मुझे यौन रोग भी हो गया। इन सबके बावजूद, जैसा कि मैंने अपने पत्र में लिखा था, उस समय मुझे कभी यह महसूस नहीं हुआ कि मैं आपको किसी भी तरह से नुकसान पहुंचा रहा हूँ। जो मैं कर रहा था, वह मुझे पूरी तरह स्वाभाविक लग रहा था—हालाँकि मैं कल्पना ही कर सकता हूँ कि यह मेरा असली रूप नहीं था जो ऐसा महसूस कर रहा था। क्या यह सच हो सकता है? क्या जवाब वाकई इतना सरल है? और अगर ऐसा है, तो फिर मेरा असली रूप क्या है? क्या मेरे पास यह निष्कर्ष निकालने का कोई ठोस आधार है कि जो मैं अब यह पत्र लिख रहा हूँ, वही मेरा "असली रूप" है? मैं अपने "स्वयं" में इस बात पर कभी दृढ़ विश्वास नहीं कर पाया, और न ही आज कर पाता हूँ।

•

मैं अक्सर तुम्हारे सपने देखती थी—स्पष्ट कहानियाँ वाले जीवंत सपने। इन सपनों में, तुम हमेशा मुझे बेसब्री से खोज रहे होते थे। हम एक भूलभुलैया में होते थे, और तुम लगभग मेरे पास आ जाते थे। “एक कदम और बढ़ाओ! मैं यहीं हूँ!” मैं चिल्लाना चाहती थी, और काश तुम मुझे ढूंढ लेते और अपनी बाहों में ले लेते, तो यह बुरा सपना खत्म हो जाता और सब कुछ पहले जैसा हो जाता। लेकिन मैं कभी भी इतनी ज़ोर से चिल्ला नहीं पाती थी। और तुम मुझे अंधेरे में नहीं देख पाते और सीधे मेरे आगे निकल जाते और गायब हो जाते। हमेशा ऐसा ही होता था। फिर भी, उन सपनों ने मुझे सहारा और हिम्मत दी। कम से कम मेरे पास सपने देखने की शक्ति तो थी, मुझे पता था। मेरा भाई मुझे ऐसा करने से नहीं रोक सकता था। मैं महसूस कर सकती थी कि तुम मेरे करीब आने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रहे थे। शायद किसी दिन तुम मुझे ढूंढ लोगे, मुझे गले लगाओगे, मुझ पर चिपकी गंदगी को साफ कर दोगे, और मुझे उस जगह से हमेशा के लिए ले जाओगे। शायद तुम श्राप को तोड़ दोगे और मुहर लगा दोगे ताकि असली मुझे फिर कभी वहाँ से जाना न पड़े। इसी तरह मैं उस ठंडी, अंधेरी जगह में, जहाँ से निकलने का कोई रास्ता नहीं था, आशा की एक छोटी सी लौ को जीवित रख पाई—इसी तरह मैं अपनी आवाज़ के थोड़े से अंश को बचा पाई।
मुझे आज दोपहर इस कंप्यूटर का पासवर्ड मिल गया। किसी ने इसे स्पेशल डिलीवरी से भेजा था। मैं यह संदेश अपने भाई के दफ्तर में रखे कंप्यूटर से भेज रहा हूँ। आशा है यह आप तक पहुँच जाएगा।

•

समय खत्म हो चुका है। टैक्सी बाहर मेरा इंतज़ार कर रही है। मुझे अब अस्पताल जाना होगा, अपने भाई को मारने और अपनी सज़ा भुगतने के लिए। अजीब बात है, अब मुझे अपने भाई से नफ़रत नहीं है। इस बात

से मुझे शांति मिल रही है कि मुझे इस दुनिया से उसका जीवन मिटाना होगा। मुझे यह उसके लिए भी करना होगा। और अपने जीवन को अर्थ देने के लिए भी।
बिल्ली का अच्छे से ख्याल रखना। मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि उसे वापस पाकर मैं कितनी खुश हूँ। तुमने बताया कि उसका नाम मैकरेल है? मुझे अच्छा लगा। वह हमेशा हमारे बीच पनपी अच्छी यादों का प्रतीक था। हमें उसे उस समय नहीं खोना चाहिए था।

•

अब मैं और नहीं लिख सकता। अलविदा।

अलविदा

•

"मुझे बहुत खेद है कि मैं आपको बत्तख जैसे लोगों को नहीं दिखा सका, श्रीमान विंड-अप बर्ड!"
मेई कासाहारा सचमुच दुखी लग रही थी।
मैं और वो तालाब के किनारे बैठे उस पर जमी मोटी बर्फ की चादर को देख रहे थे। तालाब बड़ा था, और उस पर आइस स्केट के ब्लेडों से हज़ारों छोटे-छोटे कट लगे हुए थे। मे कासाहारा ने इस सोमवार की सुबह खास मेरे लिए काम से छुट्टी ली थी। मेरा इरादा रविवार को उससे मिलने का था, लेकिन एक ट्रेन दुर्घटना के कारण मुझे एक दिन की देरी हो गई। मे कासाहारा ने फर से सजे कोट में खुद को लपेटा हुआ था। उसकी चमकीली नीली ऊनी टोपी पर सफेद धागे से ज्यामितीय डिज़ाइन बना हुआ था और उस पर एक छोटा सा पोम-पोम लगा हुआ था। उसने टोपी खुद बुनी थी, और उसने कहा कि अगली सर्दी से पहले वो मेरे लिए भी ऐसी ही एक टोपी बनाएगी। उसके गाल लाल थे, उसकी आँखें आसपास की हवा की तरह चमकदार और साफ थीं, जिससे मुझे बहुत खुशी हुई: आखिर वो सिर्फ सत्रह साल की थी—उसके अंदर असीमित बदलाव की संभावनाएं थीं।
“तालाब जम जाने के बाद बत्तखें सब कहीं और चली गईं। मुझे यकीन है कि आपको वे बहुत पसंद आतीं। बसंत में वापस आना, ठीक है? मैं तुम्हें उनसे मिलवा दूँगा।”
मैं मुस्कुराई। मैंने एक दुपट्टा कोट पहना हुआ था जो उतना गर्म नहीं था, साथ में गालों तक एक स्कार्फ लपेटा हुआ था और हाथ जेब में थे। जंगल में कड़ाके की ठंड थी। ज़मीन पर सख्त बर्फ जमी हुई

थी। मेरे स्नीकर्स फिसल रहे थे। इस यात्रा के लिए मुझे किसी तरह के नॉन-स्लिप बूट्स खरीदने चाहिए थे।
“तो आप यहाँ कुछ और समय तक रुकने वाले हैं?” मैंने पूछा।
“मुझे ऐसा लगता है। कुछ समय बीतने के बाद शायद मैं दोबारा पढ़ाई शुरू करना चाहूँ। या शायद न भी करूँ। मुझे नहीं पता। शायद मैं शादी ही कर लूँ—नहीं, ऐसा नहीं है।” उसने हल्की सी सफेद साँस छोड़ते हुए मुस्कुराया। “लेकिन खैर, अभी तो मैं यहीं रहूँगी। मुझे सोचने के लिए और समय चाहिए। कि मैं क्या करना चाहती हूँ, कहाँ जाना चाहती हूँ। मैं समय लेकर इन सब बातों पर विचार करना चाहती हूँ।”
मैंने सिर हिलाया। "शायद आपको वास्तव में यही करना चाहिए," मैंने कहा।
"बताइए, मिस्टर विंड-अप बर्ड, क्या आपने भी मेरी उम्र में इन सब चीजों के बारे में सोचा था?"
हम्म। शायद नहीं। मैंने उनके बारे में थोड़ा बहुत सोचा तो होगा, लेकिन मुझे याद नहीं कि मैंने उनके बारे में इतनी गंभीरता से सोचा हो जितना आप सोचते हैं। मुझे लगता है कि मैंने बस यही सोचा था कि अगर मैं पहले की तरह ही जीती रहूँगी, तो सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, है ना? दुर्भाग्य से।
मेई कासाहारा ने मेरी आँखों में देखा, उनके चेहरे पर शांत भाव थे। फिर उन्होंने अपने दस्ताने पहने हुए हाथों को अपनी गोद में एक के ऊपर एक रख लिया।
“तो, आखिरकार उन्होंने कुमिको को जेल से बाहर नहीं निकलने दिया?” उसने पूछा।
मैंने कहा, “उसने बाहर जाने से इनकार कर दिया। उसे लगा कि भीड़ उस पर हमला कर देगी। जेल में रहना ही बेहतर है, जहाँ उसे शांति

और सुकून मिल सके। वह मुझसे मिल भी नहीं रही है। जब तक सब कुछ सुलझ नहीं जाता, वह किसी से भी मिलना नहीं चाहती।”
“मुकदमा कब शुरू होगा?”
“बसंत ऋतु में कभी। कुमिको ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। वह फैसले को स्वीकार करेगी, चाहे जो भी हो। मुकदमा लंबा नहीं चलेगा, और सजा निलंबित होने की अच्छी संभावना है—या, सबसे खराब स्थिति में, हल्की सजा मिलेगी।”
मेई कासाहारा ने अपने पैरों के पास पड़ा एक पत्थर उठाया और उसे तालाब के बीचोंबीच फेंक दिया। वह बर्फ पर से टकराता हुआ दूसरी तरफ जा गिरा।
और आप, मिस्टर विंड-अप बर्ड—क्या आप फिर से घर पर रहकर कुमिको का इंतजार करेंगे?
मेंने सिर हिलाया।
“यह तो अच्छी बात है… या नहीं?”
मैंने ठंडी हवा में अपना एक बड़ा सफेद बादल बना लिया। "मुझे नहीं पता—शायद हमने इसी तरह से मामले सुलझाए।"
मैंने खुद से कहा, हालात इससे कहीं ज्यादा खराब हो सकते थे। तालाब के चारों ओर फैले घने जंगल में दूर कहीं एक चिड़िया की आवाज़ सुनाई दी। मैंने ऊपर देखा और चारों ओर नज़र दौड़ाई, लेकिन कुछ भी सुनाई नहीं दिया। कुछ भी दिखाई नहीं दिया। बस एक कठफोड़वा के पेड़ के तने में छेद करने की सूखी, खोखली सी आवाज़ आ रही थी।
मैंने कहा, "अगर कुमिको और मेरा बच्चा हुआ, तो मैं उसका नाम कोर्सिका रखने की सोच रहा हूँ।"
“कितना प्यारा नाम है!” मेई कासाहारा ने कहा।

•

जब हम दोनों साथ-साथ जंगल में चल रहे थे, तो मे कासाहारा ने अपना दाहिना दस्ताना उतारकर अपना हाथ मेरी जेब में डाल दिया। इससे मुझे कुमिको की याद आ गई। सर्दियों में जब हम साथ चलते थे, तो वह अक्सर ऐसा ही करती थी, ताकि ठंड के दिनों में हम एक ही जेब साझा कर सकें। मैंने मे कासाहारा का हाथ अपनी जेब में थामे रखा। वह एक छोटा सा हाथ था, और किसी एकांत आत्मा की तरह गर्म था।
"आप जानते हैं, मिस्टर विंड-अप बर्ड, हर कोई सोचेगा कि हम प्रेमी हैं।"
"आप शायद सही हो सकते हैं।"
"तो मुझे बताओ, क्या तुमने मेरे सारे पत्र पढ़े?"
“तुम्हारे पत्र?” मुझे बिलकुल भी समझ नहीं आया कि वह क्या कह रही थी। “माफ़ कीजिए, लेकिन मुझे आपसे कभी एक भी पत्र नहीं मिला। मुझे आपका पता और फ़ोन नंबर आपकी माँ से मिला। जो आसान नहीं था: मुझे झूठ को काफ़ी बढ़ा-चढ़ाकर बताना पड़ा।”
“अरे नहीं! वे सब कहाँ चले गए? मैंने तुम्हें पाँच सौ पत्र लिखे होंगे!” मेई कासाहारा ने आकाश की ओर देखा।

•

उस दोपहर बाद, मे कासाहारा मुझे स्टेशन तक छोड़ने आई। हम बस से शहर गए, स्टेशन के पास एक रेस्तरां में पिज्जा खाया और उस छोटी तीन डिब्बों वाली डीजल ट्रेन का इंतज़ार किया जो आखिरकार स्टेशन पर आई। प्रतीक्षालय में लाल रंग से चमकते बड़े लकड़ी के चूल्हे के चारों ओर दो-तीन लोग खड़े थे, लेकिन हम दोनों ठंड में प्लेटफार्म पर ही खड़े रहे। आसमान में एक साफ, तीक्ष्ण किनारों वाला सर्दियों का चाँद जमा हुआ सा लग रहा था। वह एक नया चाँद था, जिसकी घुमावदार आकृति किसी चीनी तलवार जैसी थी। उस चाँद के नीचे, मे कासाहारा अपने पंजों पर खड़ी हुई और मेरे गाल पर चुंबन

किया। मैं उसके ठंडे, पतले होंठों को उस जगह छूते हुए महसूस कर सकता था जहाँ मेरा निशान था।
“अलविदा, मिस्टर विंड-अप बर्ड,” उसने धीरे से कहा। “मुझसे मिलने के लिए इतनी दूर आने के लिए धन्यवाद।”
मैंने अपने हाथ जेब में गहरे डाले हुए थे और उसकी आँखों में देख रहा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ।
जब ट्रेन आई, तो उसने अपनी टोपी उतार दी, एक कदम पीछे हटकर मुझसे कहा, "अगर तुम्हें कभी कुछ हो जाए, मिस्टर विंड-अप बर्ड, तो बस मुझे और बत्तखों को बहुत जोर से पुकार देना, ठीक है? मुझे और बत्तखों को।"
मैंने कहा, "अलविदा, मे कासाहारा।"

•

ट्रेन के स्टेशन से निकल जाने के काफी देर बाद तक चांद मेरे सिर के ऊपर छाया रहा, हर मोड़ पर ट्रेन के मुड़ने पर वह दिखता और गायब हो जाता। मेरी नज़र चांद पर टिकी रही, और जब भी वह नज़र से ओझल होता, मैं खिड़की से गुज़रते छोटे-छोटे कस्बों की रोशनी को देखता रहता। मुझे मे कासाहारा की याद आई, नीली ऊनी टोपी पहने, बस में अकेली, जो उसे पहाड़ियों में स्थित उसके कारखाने वापस ले जा रही थी। फिर मुझे बत्तख जैसे दिखने वाले लोगों की याद आई, जो कहीं घास की छाया में सो रहे थे। और आखिर में, मुझे उस दुनिया की याद आई जहाँ मैं वापस जा रहा था।
“अलविदा, मे कासाहारा,” मैंने कहा। अलविदा, मे कासाहारा: ईश्वर करे कि कोई सदा तुम्हारी रक्षा करे।
मैंने आंखें बंद कीं और सोने की कोशिश की। लेकिन काफी देर बाद जाकर मुझे ठीक से नींद आई। किसी अनजान जगह पर, जहां कोई नहीं था, मैं कुछ पल के लिए सो गया।

***** [redacted] *****

sjeet

[illegible] [illegible] [illegible] 1949 [illegible] [illegible] [illegible]

हारुकी मुराकामी की पुस्तकें कल्पना
आफ्टर डार्क
आफ्टर द क्वेक
ब्लाइंड विलो, स्लीपिंग वुमन
डांस डांस डांस
द एलिफेंट वैनिशेस
हार्ड-बॉयल्ड वंडरलैंड एंड द एंड ऑफ द वर्ल्ड काफ्का ऑन द शोर
नॉर्वेजियन वुड
साउथ ऑफ द बॉर्डर, वेस्ट ऑफ द सन
स्पुतनिक स्वीटहार्ट
ए वाइल्ड शीप चेज़
द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल
गैर-काल्पनिक कथा
भूमिगत: टोक्यो गैस हमला और जापानी मानसिकता मैं दौड़ने के बारे में क्या बात करता हूँ

हारुकी मुराकामी की अन्य रचनाएँ
अंधेरे के बाद
मुरकामी की विशिष्ट हास्य शैली और मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि यहाँ असाधारण, सामंजस्यपूर्ण निपुणता के साथ प्रस्तुत की गई है। 'काफ्का ऑन द शोर' और 'द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल' को अंतरराष्ट्रीय बेस्टसेलर बनाने वाली उनकी कलात्मक प्रतिभा को, हृदयस्पर्शी भावों के साथ मिलाकर, मुरकामी ने अपनी अब तक की सबसे मनमोहक रचनाओं में से एक का निर्माण किया है। फिक्शन/978-0307-27873-9
भूकंप के बाद
1995 के कोबे भूकंप के समय पर आधारित, मुराकामी के पात्र एक ऐसी जगह से निकलते हैं जहाँ मानवीय और अमानवीय का मिलन होता है। एक इलेक्ट्रॉनिक्स विक्रेता, जिसे उसकी पत्नी अचानक छोड़कर चली गई है, एक रहस्यमय पैकेज पहुँचाने के लिए सहमत होता है—और उसे अपने वास्तविक स्वरूप की एक झलक मिलती है। एक व्यक्ति, जिसे ईश्वर का पुत्र मानकर पाला-पोसा गया है, एक अजनबी का पीछा करता है जो शायद उसका मानवीय पिता हो भी सकता है और नहीं भी। एक वसूली एजेंट से एक विशालकाय बोलने वाला मेंढक मिलने आता है जो टोक्यो को विनाश से बचाने में उसकी मदद मांगता है।
कथा साहित्य/साहित्य/978-0-375-71327-9
अंधी विलो, सोती हुई औरत
कहानियों का यह उत्कृष्ट संग्रह मुराकामी की लेखन शैली पर महारत को बखूबी दर्शाता है। इसमें जीवंत कौवे, एक अपराधी बंदर और एक बर्फीला आदमी, साथ ही वे सपने जो हमें आकार देते हैं और वे चीजें जिनकी हम कामना करते हैं, शामिल हैं। चाहे इटली में एक आकस्मिक पुनर्मिलन हो, ग्रीस में एक रोमांटिक निर्वासन हो, या

रोजमर्रा की जिंदगी की जकड़न हो, मुराकामी के पात्र गहरे दुख, कामुकता, जुगनू की चमक, या उन लोगों के बीच की अकल्पनीय दूरियों का सामना करते हैं जो सबसे करीब होने चाहिए।
कथा साहित्य/लघु कथाएँ/978-1-4000-9608-4
नाचो नाचो नाचो
अपनी रहस्यमय ढंग से गायब हुई प्रेमिका की तलाश में, मुराकामी का नायक यौन हिंसा और आध्यात्मिक भय के एक ऐसे भंवर में फंस जाता है, जिसमें उसका सामना वेश्याओं से होता है, वह एक प्यारी किशोरी मानसिक रोगी का संरक्षक बनता है, और एक जर्जर लेकिन भविष्यवक्ता भेड़-आदमी से रहस्यमय निर्देश प्राप्त करता है। कथा साहित्य/साहित्य/978-0-679-75379-7
हाथी गायब हो जाता है
अपनी विलक्षणता और विचित्रता के साथ, मुराकामी कहानियों के इस संग्रह को सामान्य जीवन पर एक दृढ़ प्रहार के रूप में प्रस्तुत करते हैं। एक व्यक्ति अपने प्रिय हाथी को अचानक गायब होते देखता है; एक नवविवाहित जोड़ा भूख के ऐसे प्रकोप से ग्रस्त हो जाता है कि वे आधी रात को मैकडॉनल्ड्स लूट लेते हैं; एक युवती को पता चलता है कि वह एक छोटे हरे राक्षस के लिए अप्रतिरोध्य हो गई है जो उसके पिछवाड़े से सुरंग खोदकर निकलता है।
कथा साहित्य/साहित्य/978-0-679-75053-6
हार्ड-बॉयल्ड वंडरलैंड और दुनिया का अंत
जापान के सबसे लोकप्रिय कथाकार मुराकामी पश्चिमी दुनिया के दिलों में अपनी छाप छोड़ते हैं। वे पाठकों को एक ऐसे वृत्तांत में खींच लाते हैं जिसमें एक विक्षिप्त डेटा प्रोसेसर, एक सनकी वैज्ञानिक, उसकी निर्भीक पोती, बॉब डायलन और कई गुंडे,

पुस्तकालयाध्यक्ष और भूमिगत राक्षस आपस में टकराते हैं, जिससे एक अद्भुत प्रभाव उत्पन्न होता है।
कथा साहित्य/साहित्य/978-0-679-74346-0
काफ्का ऑन द शोर
यह पुस्तक दो असाधारण पात्रों के इर्द-गिर्द घूमती है: एक किशोर लड़का, काफ्का तामुरा, जो घर से भाग जाता है—शायद किसी भयानक ओडिपस संबंधी भविष्यवाणी से बचने के लिए या अपनी लंबे समय से लापता माँ और बहन की तलाश में—और एक बूढ़ा सीधा-सादा व्यक्ति, नाकाता, जो युद्धकालीन बीमारी से उबर नहीं पाया और अब काफ्का की ओर ऐसे कारणों से आकर्षित होता है जिन्हें वह समझ नहीं पाता। जैसे-जैसे उनके रास्ते मिलते हैं, मुराकामी पाठकों को एक ऐसी दुनिया में ले जाते हैं जहाँ बिल्लियाँ बातें करती हैं, मछलियाँ आकाश से गिरती हैं, और आत्माएँ अपने शरीर से निकलकर प्रेम करती हैं या हत्या करती हैं।
कथा साहित्य/साहित्य/978-1-4000-7927-8
नॉर्वे की लकड़ी
टोक्यो में पढ़ने वाला कॉलेज छात्र तोरू, नाओको नाम की एक खूबसूरत और अंतर्मुखी युवती से बेहद प्यार करता है। लेकिन उनके रिश्ते पर सालों पहले उनके सबसे अच्छे दोस्त की दुखद मौत का साया है। जैसे-जैसे नाओको अपनी ही दुनिया में सिमटती जाती है, तोरू एक बेहद स्वतंत्र और यौन रूप से मुक्त युवती की ओर आकर्षित होने लगता है।
कथा साहित्य/साहित्य/978-0-375-70402-4
सीमा के दक्षिण में, सूर्य के पश्चिम में
एक समृद्ध परिवार में जन्मे हाजिमे अधेड़ उम्र तक पहुँच चुके हैं और उन्हें लगभग किसी चीज की कमी नहीं है। युद्ध के बाद के

वर्षों में उन्हें एक सुखद वैवाहिक जीवन, दो बेटियाँ और एक शानदार करियर मिला है। फिर भी, अपनी सफलता को लेकर एक तरह की बनावटीपन की भावना उनकी खुशी को खतरे में डालती है। और शिमामोतो नाम की एक बुद्धिमान, अकेली लड़की की बचपन की याद उनके दिल पर उदासी की छाया डालती है।
कथा साहित्य/साहित्य/978-0-679-76739-8
स्पुतनिक स्वीटहार्ट
कॉलेज के छात्र, जिसका नाम केवल "के" बताया गया है, को अपनी सहपाठी सुमिरे से प्यार हो जाता है। लेकिन लेखन के प्रति समर्पण के कारण सुमिरे किसी भी व्यक्तिगत रिश्ते में नहीं पड़ पाती, जब तक कि उसकी मुलाकात मियू से नहीं होती, जो उससे उम्र में बड़ी और अधिक परिष्कृत व्यवसायी महिला है। जब सुमिरे ग्रीस के तट से दूर एक द्वीप से लापता हो जाती है, तो "के" को खोज दल में शामिल होने के लिए कहा जाता है और वह खुद को अशुभ और डरावने दृश्यों से घिरा हुआ पाता है।
कथा साहित्य/साहित्य/978-0-375-72605-7
भूमिगत
20 मार्च, 1995, सोमवार का दिन था, जब आसमान सुहावना था। उसी दिन औम शिनरिक्यो नामक धार्मिक पंथ के पाँच सदस्यों ने टोक्यो मेट्रो प्रणाली पर सारिन नामक जहरीली गैस से रासायनिक हमला किया, जो साइनाइड से छब्बीस गुना अधिक घातक थी। अकल्पनीय घटना घटित हुई, एक प्रमुख शहरी परिवहन प्रणाली आतंकवादी हमले का निशाना बन गई। इसके पीछे के कारणों का पता लगाने के प्रयास में, मुराकामी ने उस भयावह घटना से प्रभावित लोगों से बात की—एक मेट्रो प्राधिकरण कर्मचारी से, जो इस घटना में बच जाने के अपराधबोध से ग्रस्त था, एक फैशन विक्रेता से, जो हमलावरों से

कहीं अधिक मीडिया के प्रति द्वेष रखता था, और एक युवा पंथ सदस्य से, जो हमले की कड़ी निंदा करता है, हालांकि उसने औम पंथ नहीं छोड़ा है। इन और कई अन्य आवाजों के माध्यम से, मुराकामी जापानी मानसिकता के रोचक पहलुओं को उजागर करते हैं। फिक्शन/978-0-375-72580-7
जब मैं दौड़ने के बारे में बात करता हूँ तो मैं किन चीजों के बारे में बात करता हूँ
न्यूयॉर्क सिटी मैराथन की ट्रेनिंग के दौरान, हारुकी मुराकामी ने अपनी प्रगति का एक जर्नल लिखने का फैसला किया। नतीजा एक खूबसूरत संस्मरण है जो दौड़ने और लिखने के प्रति उनके गहरे लगाव को दर्शाता है, जिसमें जीवंत यादें और अंतर्दृष्टि भरी हुई हैं, जिनमें वह अहम पल भी शामिल है जब उन्होंने लेखक बनने का निश्चय किया। कभी हास्यपूर्ण तो कभी गंभीर, कभी चंचल तो कभी दार्शनिक, 'व्हाट आई टॉक अबाउट व्हेन आई टॉक अबाउट रनिंग' इस कुशल लेकिन बेहद निजी लेखक के प्रशंसकों और उन लोगों के लिए भी ज्ञानवर्धक और ज्ञानवर्धक है जो खेल-कूद में इसी तरह की संतुष्टि पाते हैं।
संस्मरण/दौड़ना/978-0-307-38983-1
एक बेतहाशा भेड़ का पीछा
एक युवा विज्ञापन अधिकारी को एक पोस्टकार्ड मिलता है और वह उस पर बनी तस्वीर का इस्तेमाल एक बीमा कंपनी के विज्ञापन के लिए कर लेता है। उसे इस बात का एहसास नहीं होता कि उस देहाती दृश्य में एक विकृत भेड़ भी है जिसकी पीठ पर एक तारा बना हुआ है। इस तस्वीर का इस्तेमाल करके उसने अनजाने में एक काले कपड़े पहने हुए व्यक्ति का ध्यान आकर्षित कर लिया है, जो उसे एक धमकी भरा अल्टीमेटम देता है: भेड़ को ढूंढो या गंभीर परिणाम भुगतो।

कथा साहित्य/साहित्य/978-0-375-71894-6
विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल
विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल एक जासूसी कहानी, एक टूटते हुए विवाह का वृत्तांत और द्वितीय विश्व युद्ध के दफन रहस्यों का पर्दाफाश है। टोक्यो के एक उपनगर में, तोरू ओकाडा नाम का एक युवक अपनी पत्नी की लापता बिल्ली की तलाश कर रहा है। जल्द ही वह टोक्यो की शांत सतह के नीचे छिपी एक रहस्यमयी दुनिया में अपनी पत्नी की भी तलाश करने लगता है।
कथा साहित्य/साहित्य/978-0-679-77543-0

विंटेज इंटरनेशनल आपकी स्थानीय किताबों की दुकान पर उपलब्ध है, या www.randomhouse.com पर जाएं।

पहला विंटेज इंटरनेशनल संस्करण, अक्टूबर 1998
कॉपीराइट © 1997 हारुकी मुराकामी द्वारा
अंतर्राष्ट्रीय और पैन-अमेरिकन कॉपीराइट समझौतों के तहत सभी अधिकार सुरक्षित हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में विंटेज बुक्स, रैंडम हाउस, इंक., न्यूयॉर्क के एक प्रभाग द्वारा और साथ ही कनाडा में रैंडम हाउस ऑफ कनाडा लिमिटेड, टोरंटो द्वारा प्रकाशित। मूल रूप से जापान में 1994 और 1995 में शिंचोसा लिमिटेड, टोक्यो द्वारा नेजिमाकी-दोरी कुरोनिकुरु के रूप में तीन अलग-अलग खंडों में प्रकाशित। कॉपीराइट © 1994, 1995 शिंचोसा लिमिटेड। यह अनुवाद मूल रूप से 1997 में अल्फ्रेड ए. नोपफ, इंक., न्यूयॉर्क द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका में हार्डकवर में प्रकाशित किया गया था।
इस कृति के दो अध्याय मूल रूप से द न्यू यॉर्कर में "द ज़ू अटैक" (31 जुलाई, 1995) और "अनदर वे टू डाई" (20 जनवरी, 1997) के रूप में प्रकाशित हुए थे।
अल्फ्रेड बिर्नबाम ने मुरकामी के संग्रह 'द एलिफेंट वैनिशेस' में शामिल 'द विंड-अप बर्ड एंड ट्यूजडेज वुमेन' के अपने अनुवाद में 'विंड-अप बर्ड' शब्द गढ़ा था।
लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस ने नॉफ संस्करण को निम्नलिखित रूप में सूचीबद्ध किया है:
मुराकामी, हारुकी, [तारीख]
[नेजिमाकी-डोरी कुरोनिकुरु. अंग्रेज़ी]
विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल: एक उपन्यास / हारुकी मुराकामी द्वारा; लेखक की सहभागिता के साथ जे रूबिन द्वारा जापानी से अनुवादित

और रूपांतरित।
पृष्ठ सेमी.
ईआईएसबीएन: 978-0-307-76270-2
I. रूबिन, जे, [दिनांक]. II. शीर्षक.
PL856.U673N4513 1997
895.6′35—dc21
मैरियन एट्लिंगर द्वारा खींची गई तस्वीर ©
रैंडम हाउस की वेबसाइट का पता: www.randomhouse.com v3.0